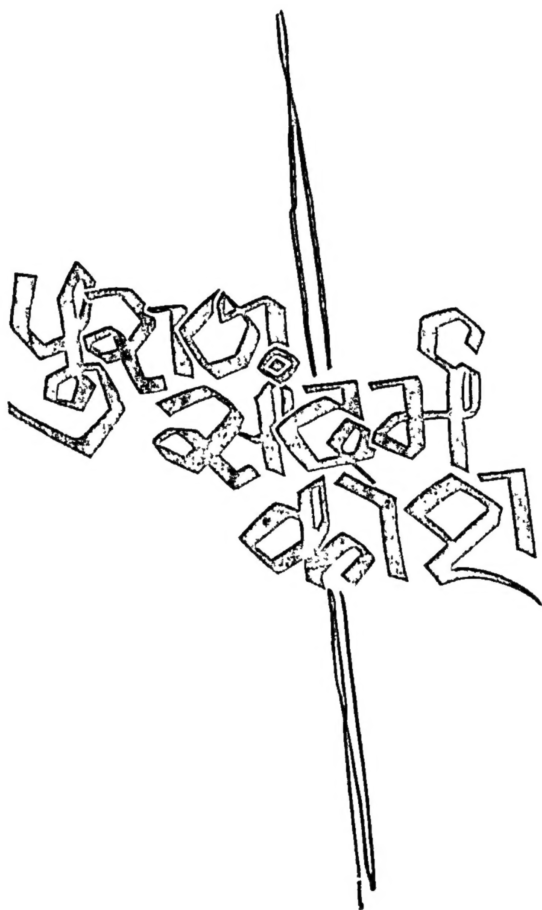


पुराण संदर्भ कोश

(पुराणों में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों की व्याख्या)

पद्मिनी मेनन



ग्रन्थम

रामबाग, कानपुर

ग्रन्थम

मूल्य : २५.००

पुस्तक : पुराण संदर्भ कोश
लेखिका : पद्मिनी मेनन
प्रकाशक : ग्रंथम, रामबाग, कानपुर–१२
प्रकाशनकाल : दिसम्बर, १९६९
संस्करण : प्रथम
मुद्रक : संघ-साथी प्रेस, कानपुर–१२
आवरण मुद्रक : मनोहर प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर–१२

अभिमत

(डॉ० मुन्शीराम शर्मा डी० लिट्)

मुनिवर व्यास आर्य संस्कृति और साहित्य के उद्धारकर्ताओं में प्रमुख हैं। महाभारत युद्ध की लपटों में जब वीर और विद्वान दोनों ही समाप्त हो गए, तब महर्षि व्यास ने ही एक ओर वेदत्रयी का उद्धार किया और दूसरी ओर इतिहास एवं पुराण का। वेदत्रयी ज्ञानकाण्ड के सम्वर्धन के लिए उपयुक्त सिद्ध हुई और इतिहास पुराण के पठन-पाठन ने आर्य वीरत्व को सुरक्षा दी। यह कार्य जहाँ हमारी संस्कृति का प्रतिष्ठापक बना वहाँ उसने साहित्य को भी सम्वर्धना एवं गरिमा प्रदान की। पुराकाल में ऐसा कई बार हुआ था। एक बार द्वादश वर्षीय अनावृष्टि के कारण जब ऋषि मंडली उपयुक्त शरीर साधनों की खोज में इधर-उधर बिखर गई तब वाग्देवी के वरद पुत्र वात्स्यायन सारस्वत ने लुप्त ज्ञान-विज्ञान का उद्धार किया था और ऋषियों को हृदयंगम कराया था।

आर्य जाति ने वेदों को निखिल धर्मों का मूल माना है। समस्त वाङ्मय उसी से निःसृत हुआ है। मनु ने वेद के अनुकूल शास्त्रों को प्रामाणिकता दी है, और कहा है—वेदश्चक्षुः सनातनम्। तथा—वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। इतिहास और पुराण इसी वेद के उपबृंहण के लिए निर्मित हुए थे। महर्षि व्यास ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट घोषणा की है :–

इतिहास पुराणाभ्याम् वेद समुपबृंहयेत। जो इतिहास और पुराण का विद्वान नहीं है, वह वेदत्रयी को अवगत करने में असमर्थ रहेगा। भारतवर्ष में इतिहास और पुराणों के विद्वान पुराकाल से चले आ रहे हैं, इन्हें ऐतिहासिक, पौराणिक, पुराविद् वृत्तविद् आदि अभिधान दिए गए हैं। अथर्वांगिरसभी: इन्हीं का नाम है। आथर्वण कार्य कोरा पौरोहित्य नहीं था। उसमें उपाध्याय के पुनीत कार्य का भी संयोजन था। इसीलिए महात्मा कौटिल्य ने अथर्वांगिरसों को धर्मशास्त्र का प्रवक्ता, इतिहासवेत्ता तथा पुराण विशारद भी कहा है।

पुराण भारतवर्ष के विश्वकोष (Ensyclopaedia) जैसे इनसाइक्लोपीडिया में समय के अनुकूल परिवर्तन होते रहते हैं और नवीन ज्ञान का समावेश होता रहता है, वैसे ही पुराणों में होता रहा है। भविष्य पुराण में अंग्रेजी राज्यकाल तक की घटनाओं तक का समावेश है। पुराण की 'पुरानवम् भवति' की परिभाषा भी दी गई है।

पुराणों के द्वारा पुरातन नवीन बनता रहता है। एक विद्वान ने पुराण को पुरा+न भी लिखा है। जिसका अर्थ है प्राचीन प्राचीन नहीं। वह प्राचीन का नवीन कलेवर में जन्म है। इन परिभाषाओं में भी विश्वकोष की विशेषताओं का समावेश हुआ है। पुराण का लक्षण करते हुए व्यास जी लिखते हैं, सर्गश्च प्रति सर्गश्च वंशो-भवन्त राणि च, ऋषीणाम् चरितम् चैव पुराण पंच लक्षणम्। सर्ग सृष्टि की उत्पत्ति है। विसर्ग उत्पत्ति के उपरांत सृष्टि का विस्तार है। वंश में राजर्षियों के चरित आते हैं। मन्वन्तर काल विज्ञान है और ऋषियों के चरित्र आध्यात्मिक निधि माने गए हैं। इस पुराण लक्षण में ज्ञान तथा विज्ञान दोनों का समावेश है। जिसे पुराण का ज्ञान नहीं है, वह वेद का अर्थ नहीं समझ सकेगा। महर्षि व्यास का ही कथन है—बिभेति अल्प श्रुताद्। वेदो मामयं प्रहरिष्यति। जो अल्पश्रुत हैं, बहुश्रुत नहीं हैं, ज्ञान-विज्ञान में जिनका प्रवेश नहीं है, न जिन्हें सृष्टि विद्या का ज्ञान है, और न पुराकालीन स्वर्ण सभ्यता का, राजाओं और ऋषियों के आचरण का, उनसे वेद भय-भीत होता है कि कहीं यह मुझे मार न डाले। अतः इतिहास-पुराण का ज्ञान वेद के समझने के लिए अपरिहार्य है। मनु ने वेद को चक्षु कहा है। चक्षु दर्शन का साधक है। इन्द्रियों में चक्षु इन्द्रिय की प्रधानता इसीलिए मान्य है कि वह दर्शन कराती है। जो दर्शन से शून्य होगा वह कर्तव्य से भी वंचित रहेगा। पुराण की यह महत्ता उसके अपने विषयों के कारण है जो वैदिक प्रकाश को हम सबके समक्ष प्रस्तुत करते रहते हैं।

जिन्होंने पुराणों का पर्यालोचन किया है, वे जानते हैं कि उनमें ज्ञान-विज्ञान की कितनी सामग्री सन्निहित है। पुराणों की संख्या इस समय अठारह मानी जाती है, किन्तु किसी समय उनकी संख्या पचास थी। महर्षि व्यास ने अपने शिष्य रोमहर्षण को पुराण संहिता का ज्ञान कराया था। इन पुराणों में कुछ विषय तो एक समान हैं, जैसे—सृष्टि विद्या तथा मन्वन्तरों का ज्ञान। कतिपय आख्यान भी एक समान हैं। ऋषियों और राजाओं के चरित्र भी न्यूनाधिक मात्रा में सभी के अन्तर्गत हैं। अध्यात्म भी इनमें ओत-प्रोत है। अपने अतीत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के लिए पुराण हमें जो सामग्री प्रदान करते हैं, वह अतीव मूल्यवान है।

प्रस्तुत संदर्भ कोष इस दिशा में एक उपयोगी ग्रन्थ है। पुराणों के अभिधानों, आख्यानों, ऐतिहासिक उपलब्धियों तथा लौकिक तत्वों के परिज्ञान के लिए यह वस्तुतः संदर्भ कोष ही है। लेखिका ने जिस प्रयत्न से इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है, वह सराहनीय है। इस विषय के अधिक विवेचन के लिए पाठक पारजीटर द्वारा लिखित The Ancient Indian historical traditions ग्रन्थ से सहायता ले सकते हैं।

स्वर्गीय पं० भगवद्दत्त जी ने भी पुराणों के पर्यालोचन से अधिक लाभ उठाया था। यह सामग्री उनके 'वैदिक वाङ्मय का इतिहास' तथा 'भारतवर्ष का बृहत इतिहास' के दो भागों में सन्निहित है। श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य की महाभारत–मीमांसा भी देखने योग्य है।

लेखिका अहिन्दी प्रान्तवासिनी होते हुए भी हिन्दी मे इतना मूल्यवान ग्रन्थ प्रस्तुत कर सकी, यह उनके लिए तो श्रेयस्कर है ही, हम हिन्दी भाषाभाषियों के लिए भी प्रेरणाप्रदायक है। हिन्दी साहित्य में जो अन्तर्कथाएँ आदि काल से ही निबद्ध होती रही है, उनके ज्ञान के लिए भी यह संदर्भ कोश अतीव लाभदायक सिद्ध होगा। आशा ही नहीं विश्वास है कि हिन्दी भाषाभाषी इस ग्रन्थ का समुचित आदर करेंगे और लेखिका के सत्प्रयास को सफल बनाने में उद्योगशील होंगे।

प्राक्कथन

हिन्दी में कोई पुस्तक लिखने का यह मेरा पहला उद्यम है। कुछ साल से खाली बैठी थी। मान्यवर बड़े भाई की प्रेरणा से इस ग्रन्थ को लिखना शुरू किया। मुझे विश्वास है कि पुराणों में पाए जाने वाले शब्दों का एक कोश बनाना आसान काम नहीं है। आधुनिक युग में शिक्षित भारतीयों के बच्चे अधिकांश रूप से अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में भेजे जाते हैं। परिणाम-स्वरूप वे बड़े होने पर भी, अपने ही देश के प्राचीन और पुराण पुरुषों, तीर्थों, श्रेष्ठ व्यक्तियों के बारे में कुछ नहीं जानते। इस पुस्तक के लिखने में मेरा केवल यही उद्देश्य रहा है कि ऐसे युवक-युवतियाँ इस को पढ़ कर थोड़ी जानकारी प्राप्त कर सकें। विद्वानों को अनुसन्धान के लिए इससे सहायता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि यह उनके लिए नहीं लिखा गया है। इस में पौराणिक व्यक्तियों और बातों का न सन्दर्भ दिया गया है, न उन पुराणों के नाम जिनमें ये पाए जाते हैं। एक और बात यह है कि भिन्न-भिन्न पुराणों में और भिन्न-भिन्न युगों में पौराणिक देवों और पुरुषों के नामों में थोड़ी बहुत भिन्नता पाई जाती है। आशा है कि पाठक इस भिन्नता को स्वीकार करेंगे। यदि आधुनिक युग के शिक्षित युवक जन इस पुस्तक से थोड़ा लाभ उठा सकेंगे तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूंगी।

—पद्मिनी मेनन

अ

अ–भारत की सभी भाषाओं का पहला अक्षर, स्वर। इस अक्षर के अनेक अर्थ हैं जैसे विष्णु, ब्रह्मा, शिव, युद्ध आदि।

अं–कामदेव ।

अंग–(१) छठे मन्वन्तर के मनु चाक्षुप के पौत्र। अनेक काल निस्सन्तान रहकर यज्ञ करके एक पुत्र को पाया वेन। पुत्र की दुष्टता के कारण विरक्त होकर राज्य छोड़कर तपस्या करने वन चले गये। (२) ययाति के वंशज राजा वलि और उनकी पत्नी सुदेष्णा के छः लड़कों में से एक। इन्होंने अपने नाम से अंगराज्य स्थापित किया। इनके पुत्र धनपान थे। (३) अंगराज्य जो आजकल- के भागलपुर के पास था। अर्जुन तीर्थयात्रा के समय अंगराज्य में गये थे। सीतादेवी की खोज में वानर सेना अंग-राज्य में गयी थी।

अंगद–(१) किष्किन्धा के वानर राजा वलि और तारा का पुत्र था। वलि की मृत्यु के वाद युवराज बना। श्री राम का मित्र था और दूत बनकर रावण के पास गया था। बड़ा शूर-वीर था। और राम-रावण युद्ध में अनेक राक्षसों को मारा था। (२) श्री राम के छोटे भाई शत्रुघ्न और उनकी पत्नी श्रुतकीर्ति का एक पुत्र। श्रीरामचन्द्र के महाप्रयाण के पहले शत्रुघ्न ने अपने पुत्र अंगद को अंगराज्य के सिंहासन पर विठाया। (३) कौरव पक्ष का एक वीर योद्धा। (४) श्रीकृष्ण के भाई गद का एक पुत्र।

अंगन्यास–पूजा, हवन आदि कर्म आरंभ करने से पहले मन्त्रों द्वारा शरीर के मुख्य अंगों को स्पर्श करके दैवी शक्ति का अनुभव करने की कोशिश की जाती है। मन्त्र सहित अंगों को स्पर्श करने की विधि को अंगन्यास कहते हैं। (दे: न्यास)

अंगराग–शरीर पर लगाने का सुगन्धित लेप।

अंगारक–(१) एक राक्षस जिसकी पुत्री अंगारवती थी। (२) मंगल ग्रह को अंगारक कहते हैं।

अंगारका–कश्यप ऋषि और पाताल लोक की असुर कन्या सुरसा की लड़की सिंहिका है। इसका दूसरा नाम है अंगारका (दे:सिंहिका)

अंगारपर्ण–एक गन्धर्व राजा जो चित्ररथ के नाम से विख्यात थे। ये अर्जुन के बड़े मित्र थे और इन्होंने अर्जुन को अनेक रथ और अश्व दिये थे।

अंगारवती–अंगारक नामक असुर की रूपवती पुत्री। उज्जैन के राजा महेन्द्रवर्मा से इनकी शादी हुई और इनकी पुत्री थी राजा उदयन की पत्नी वासवदत्ता।

अंगिरा–ब्रह्मा के मानसपुत्रों में से एक। सृष्टि की चिन्ता में मग्न ब्रह्मा के अवयवों से मरीचि आदि दस पुत्र हुए जो महान ऋषि बन गये। मुख से ऋषि अंगिरा का जन्म हुआ। ये बड़े हीं तेजस्वी ऋषि हैं। इनकी कई पत्नियाँ हैं जिनमें प्रधानतया तीन हैं। उनमें से मरीचि की कन्या सुरूपा से वृहस्पति का, कर्दम ऋषि की कन्या स्वराट से गौतम, वामदेव आदि पाँच पुत्रों का, और मनु की पुत्री पथ्या से विष्णु आदि तीन पुत्रों का जन्म हुआ। अग्नि की कन्या आग्नेयी से अंगिरस नामक पुत्रों की उत्पत्ति हुई। इनके अनुग्रह से शूरसेन के निस्संतान राजा चित्रकेतु

को पुत्र लाभ हुआ। (दे: चित्रकेतु)

नहुष के पतन के बाद देवेन्द्र स्वर्ग को वापस आये। देवताओं से घिरे देवेन्द्र का स्वागत अंगिरा ने अथर्ववेद के मन्त्रों से किया। इससे संतुष्ट होकर देवेन्द्र ने अथर्वांगिरस की उपाधि दी।

अग्नि ने एक बार महर्षि का अनादर किया। क्रुद्ध होकर महर्षि ने शाप दिया। कहा जाता है कि तभी से अग्नि से धुआं निकलने लगा।

अंश–द्वादशादित्यों मे से एक, मरीचि का पौत्र, कश्यप ऋषि का पुत्र। कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री अदिति के अर्यमा, मित्र, वरुण, शक्र, अंश, भग, विवस्वान्, पूषा, सविता, विष्णु, त्वष्टा नाम के बारह पुत्र हुए जो द्वादशादित्य कहलाते हैं।

अंशक–सूर्य वंश के राजा सुदास की पत्नी का महर्षि वसिष्ठ के द्वारा नियोग से उत्पन्न पुत्र। इसका पुत्र मूलक था।

अंशावतार–ससार मे दुष्ट निग्रह तथा शिष्ट परिपालनार्थ और साधु-संरक्षण के लिए भगवान विष्णु और अन्य देवताओं का पूर्ण रूप से अथवा अंशरूप से अवतार होता है। पूर्णरूप अवतार को पूर्णावतार कहते है जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण; अंशरूप अवतार को अंशावतार कहते हैं। रामायण के सभी वानर देवताओं के अंशावतार थे। कृष्ण की पत्नियां देवांगनाओं की अवतार थीं।

अंशु–(१) किरण (२) पोशाक।

अंशुमति–एक गन्धर्व कन्या।

अंशुपति–सूर्य।

अंशुमान–सूर्य वंश के राजा सगर के पुत्र असमंजस के पुत्र। कपिल महर्षि की क्रोधाग्नि में सगर महाराजा के साठ हजार पुत्रों के नाश के बाद अंशुमान अश्वमेध के घोड़े और पितृव्यों को खोजते-खोजते पाताल में आये। वहां भगवान् विष्णु को कपिल देव के रूप में देखकर अंशुमान ने प्रणाम किया और स्तुति की। भगवान ने प्रसन्न होकर उनको घोड़ा दिया और कहा कि तुम्हारे पितृव्य पवित्र गंगाजल से तर जायेंगे। अपने पुत्र दिलीप को राज्य सौंप कर गंगा को भूमि में लाने के लिये तपस्या करने लगे, लेकिन सफलता प्राप्त होने से पहले मर गये।

अकम्पन–सुमालि और केतुमती का पुत्र, एक प्रबल राक्षस।

अकूपार–(१) एक कच्छप जो हिमालय पर्वत में इन्द्रद्युम्न नामक सरोवर में रहता है। इसको आदि कूर्म भी कहते है। (२) समुद्र (३) सूर्य।

अकृतव्रण–परशुराम के एक शिष्य जो ज्ञानी ऋषि थे।

अकुल–सुषुम्ना नाड़ी के अधोभाग में स्थित कमल।

अकुला–देवी का नाम।

अक्रूर–वृष्णिवंश के श्वफल्क और काशी राजकुमारी गान्दिनी के पुत्र। श्रीकृष्ण के मामा और बड़े भक्त थे। कंस की आज्ञा मानकर अक्रूर ही श्रीकृष्ण और बलराम को मथुरा लिवा लाने के लिये ब्रज में आये थे।

अक्रोध–(१) पुरुवंश के एक राजा (२) पुलस्त्य और हविर्भू के पुत्र जिन्होंने अगले जन्म में दक्षिणाग्नि का रूप लिया।

अखण्ड–निरन्तर, अविराम।

अखण्ड पाठ– रामायण या श्रीभागवत का अविराम पाठ करना। भागवत का सात दिनों में अखण्ड पाठ कर समाप्त होता है जिसे सप्ताह पारायण कहते हैं। नौ दिनों तक अखण्ड पाठ कर वाल्मीकि रामायण समाप्त किया जाता है जिसे नवाह्न-पारायण कहते है। श्री तुलसी रामायण का अखण्ड पाठ एक ही दिन में समाप्त होता है।

अखिलेश–सम्पूर्ण जगत के ईश्वर, परमात्मा।

अगस्त्य–कश्यप वंश के एक ब्रह्म ज्ञानी तपस्वी महर्षि। एक बार मित्र और वरुण दोनों देवता घूम रहे थे। रास्ते में उर्वशी को देखकर उनको काम-विकार हुआ। उनका शुक्र एक घड़े में रखा गया और उससे दो शिशु पैदा हुए अगस्त्य और वसिष्ठ। घड़े में जन्म होने से ये कुंभ-योनिज कहलाते हैं। अगस्त्य ने विदर्भ राजकुमारी लोपामुद्रा से विवाह किया था। विन्ध्य पर्वत गर्व के कारण सबसे ऊँचा पर्वत होने के लिये बढने लगा। अगस्त्य विन्ध्य पर पैर रख कर उसके दक्षिण की ओर गये और कहा कि जब तक वापस न आऊँ तब तक नही बढ़ना। महर्षि दक्षिण में आश्रम बना कर रहे, विन्ध्य का बढ़ना रुक गया। राजा नहुष को घमण्डी होने के कारण शाप देकर अजगर बनाया। अगस्त्य ने ही शाप देकर राजा इन्द्रद्युम्न को गजराज बनाया। जब कालकेय समुद्र में जा छिपा, अगस्त्य ने समुद्र का पानी पीकर सुखा दिया जिससे कालकेय नामक राक्षस मारा गया।

अगस्त्यकूट–दक्षिण भारत में अगस्त्य पर्वत के जिस शिखर पर बैठ कर अगस्त्य तपस्या करते थे उसको अगस्त्यकूट कहते है।

अगस्त्यतीर्थ–दक्षिण समुद्र के पांच तीर्थो मे से एक। पुरातन काल में इन तीर्थो में ऋषि-मुनि तपस्या करते थे।

अगस्त्य पर्वत–दक्षिण भारत का एक पर्वत।

अगस्त्याश्रम–भारत के कई स्थानों में अगस्त्य के नाम से आश्रम पाये जाते हैं जहाँ कहा जाता है कि महर्षि ने तपस्या की थी।

अगिर–स्वर्ग

अग्नायी–अग्नि की पत्नी स्वाहा देवी।

अग्नि– (१) वैदिक काल में अग्नि देवता की बड़ी प्रतिष्ठा थी और पूजा होती थी। उसी काल से सभी पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन, संस्कार, कर्म आदि में अग्नि का विशिष्ट महत्व होता आया है। अग्नि को साक्षी रख कर पुरातन काल में राजा महाराजा सत्य और असत्य की परीक्षा ली जाती थी। (२) शरीर पंचभूतों से बना है, उनमें से एक। (३) अष्ट दिक्पालकों में से एक जो दक्षिण पूर्व के पालक हैं। अग्नि सभी देवताओं के प्रतीक माने जाते हैं, इसलिए अग्नि में आहुति देने से सभी देवता सन्तुष्ट होते है। भगवान विष्णु का मुँह माना जाता है। अग्नि के पुत्र स्वारोचिष दूसरे मनु थे। अग्नि की पत्नी स्वाहा देवी है।

अग्निकुण्ड–अग्नि को स्थापित रखने का स्थान।

अग्निकुमार–स्कन्ददेव का एक नाम (दे: स्कन्द)।

अग्निकेतु–एक राक्षस जो रावण का मित्र था।

अग्निक्रिया–अन्त्येष्टि क्रिया।

अग्निजात–(१) विष्णु (२) कार्तिकेय।

अग्निजिह्वा—अग्नि की लपट।

अग्नितीर्थ–सरस्वती के किनारे एक पुण्य तीर्थ।

अग्निपरीक्षा-प्राचीन काल में सत्य स्थापित करने के लिये अग्नि में प्रवेश कर परीक्षा ली जाती थी।

अग्निपुराण–अठारह पुराणों में से एक; अग्नि भगवान ने मुनियों और देवताओं को सनातन ब्रह्मविद्या पर जो उपदेश दिये थे उनका संग्रह है।

अग्निपूर्ण–सूर्यवंश के एक राजा।

अग्निबाहु–(१) स्वायम्भुव मनु के एक पुत्र (२) चौदहवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक (३) धुआं।

अग्निमणि–सूर्यकान्त मणि।

अग्निमित्र–(१) वायु (२) कवि कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्र' के नायक। मालविका उनकी पत्नी थी।

अग्निमुख–(१) कश्यप और असुर कन्या सुरसा के पुत्र शूरपद्म का पुत्र (२) देवता (३) ब्राह्मण।

अग्निलोक—सुमेरु पर्वत पर स्थित देवलोकों में से एक ।

अग्निवधू—दक्ष की पुत्री, अग्नि की पत्नी स्वाहा ।

अग्निवर्ण—श्रीराम के पुत्र कुश के वंशज राजा सुदर्शन के पुत्र, इनके पुत्र शीघ्र थे ।

अग्निवेश्य—ये महान ऋषि थे और कानीन या जातुकर्ण्य नाम से प्रसिद्ध हुए । इन्हीं से अग्निवेश्यायान नामक ब्राह्मणों की जाति का आविर्भाव हुआ । ये द्रोणाचार्य और राजा द्रुपद के गुरु थे ।

अग्निशाला—वह स्थान जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाती है ।

अग्निशिरतीर्थ—एक पुण्य तीर्थ ।

अग्निषोम—अग्नि और सोम मिलकर एक देवता हुए, उनका नाम ।

अग्निष्टोम—चाक्षुष मनु के एक पुत्र ।

अग्निस्तोम—एक प्रकार का यज्ञ ।

अग्निहोत्र—(१) अदिति के पाँचवें पुत्र सविता और उनकी पत्नी प्रश्नी के एक पुत्र जो पवित्र अग्नि में आहुति देने की क्रिया के अधिष्ठान देवता हैं । (२) अग्निदेव की प्रीति के लिये दी जाने वाली एक बलि ।

अग्निहोत्रि—वररुचि के एक पुत्र ।

अग्नीन्ध्र—वैवस्वत मनु के पुत्र प्रियव्रत और विश्वकर्मा की पुत्री बर्हिष्मती के एक पुत्र । इनका पूर्वचित्ती नामक एक अप्सरा से विवाह हुआ और उनके नौ पुत्र हुए । ये जम्बूद्वीप के पहले चक्रवर्ती बने । इस द्वीप को नौ वर्षों में विभाजित कर अपने नौ पुत्रों को एक-एक वर्ष के राजा बनाये । अपने पुत्रों के नाम ही इन वर्षों के रखे-नाभि, किम्पुरुष, हरिवर्ष, इलाव्रत, रम्यक, हिरण्मय, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल ।

अग्रणी—(१) भगवान विष्णु का एक नाम, मुमुक्षुओं को उत्तम पद पर ले जानेवाले भगवान (२) एक अग्नि का नाम ।

अग्र्यपूजा—राजसूय यज्ञ में सौत्य नामक अहस्स पर श्रेष्ठ अग्र्यपूजा विधि होती है । सम्मिलित ऋषि-मुनि और राजाओं में जो सब प्रकार से सबसे श्रेष्ठ हैं उनकी सबसे पहले पूजा होती है । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सहदेव की राय से युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण की अग्र्यपूजा की थी जिससे क्रुद्ध होकर चेदि नरेश शिशुपाल ने भगवान की बड़ी निन्दा की । इस अवसर पर भगवान ने शिशुपाल को मारा ।

अघ—अघासुर, यह असुर बकासुर और पूतना का भाई था जो कंस का सेवक था । श्रीकृष्ण को मारने के लिये यह एक अजगर के रूप में मुँह फाड़ कर व्रज में ऐसी जगह पर पड़ा रहा जहाँ श्रीकृष्ण गोपकुमारों के साथ खेलते थे । सब बालक अनजाने में उसके लम्बे मुँह में चले गये । अपने मित्रों को बचाने के लिये कृष्ण भी उसके अन्दर घुसे और इतने बढ़े कि उसका पेट फट गया और सब बालक सुरक्षित बाहर निकले ।

अघमर्षण—(१) विन्ध्य पर्वत पर एक पवित्र तीर्थ । दक्ष प्रजापति ने श्री हरि को प्रसन्न करने के लिये पापनाशी इस सरोवर पर कठिन तपस्या की थी । (२) एक महान ऋषि ।

अघमर्षण सूक्त—ऋग्वेद का एक गीत जो सन्ध्या-प्रार्थना के समय गाया जाता है ।

अघोर—(१) शिव (२) पंचोपनिषदों में से एक—तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात, वामदेव, ईशान ।

अघोरपंथ—शिव का अनुयायी मार्ग ।

अचल—(१) विष्णु का एक नाम (२) गान्धार नरेश सुबल का एक पुत्र ।

अच्युत—भगवान विष्णु का नाम, अपने महत्व और स्वरूप से जिसका कभी पतन न हो उसे अच्युत कहते हैं । काम, क्रोध आदि छः भाव-विकारों से रहित ।

अज–(१) विष्णु का नाम, जिनका जन्म नहीं है। (२) अकार विष्णु का वाचक है, उनसे उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा।(३)सूर्यवंश के प्रसिद्ध राजा रघु के पुत्र अज थे। इनके पुत्र अयोध्या के प्रसिद्ध महाराजा दशरथ थे। (४) तीसरे मनु उत्तम के एक पुत्र।(५) पुरुरवा के एक पुत्र(६)जनक वंश के ऊर्ध्वकेतु के पुत्र, इनके पुत्र पुरुजित थे।

अजक–कश्यप और दनु का एक पुत्र।

अजगव–एक धनुष जो पृथुमहाराजा के पास था।

अजनाभ–(१)भारतवर्ष का दूसरा नाम(२)एक पर्वत।

अजप–वह ब्राह्मण जो सन्ध्योपासना नियमित रूप से न करता हो।

अजमीढ़–(१) महाराजा युधिष्ठिर का अपर नाम। (२) पुरुवंश के राजा हस्ति के पुत्र, इनके पुत्र बृहदिपु थे। (३) एक पांचाल राजकुमार।

अजमुखी–कश्यप ऋषि और असुर कन्या सुरसा की पुत्री। इसने महर्षि दुर्वासा से विवाह किया था और इल्वल और वातापि नामक दो असुर पुत्र हुए।

अजर–देवता, जिसे कभी बुढ़ापा न आवे।

अजा–(१) देवी का नाम (२) माया।

अजातशत्रु–(१)विष्णु का नाम, जिनका कोई शत्रु नहीं है। (२) महाराजा युधिष्ठिर का विशेषण।

अजामिल–कन्याकुब्ज का एक ब्राह्मण जो ब्राह्मण वृत्ति, बूढ़े माँ-बाप, कलत्र-पुत्र आदि को छोड़कर वेश्या के संग में कुमार्ग पर चला। वेश्या से उसके कई पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा था नारायण। रोगशय्या पर पड़े उसको यमदूत लेने आये। उनका भयंकर रूप देखकर भयभीत होकर वह अपने पुत्र नारायण को बुलाने लगा। भगवान का नाम होने से उसी समय विष्णुदूत वहाँ आये और यमदूतों के पाश से अजामिल को छुड़ाया। स्वप्न की तरह अजामिल सब देखता रहा। दूतों के चले जाने पर उसको होश आया और अपने अपवित्र जीवन पर दुःख हुआ। वेश्या का परित्याग कर सन्मार्ग पर चल कर उसने सद्गति पायी।

अजित–महाविष्णु का नाम। चाक्षुष मन्वन्तर में वैराज और उनकी पत्नी शम्भूति के पुत्र होकर भगवान का अंशावतार हुआ। उस समय उनका नाम अजित था। भगवान ने क्षीरसागर के मंथन में देवासुरों की सहायता की।

अजिन–हिरण का चमड़ा। वानप्रस्थ आश्रम-वासियों को अजिन वस्त्र के रूप में पहनना पड़ता है, ऐसी विधि है।

अजैकपात–एकादश रुद्रों में से एक।

अञ्जन–(१) एक पर्वत (२) असुरों का एक हाथी (३) काजल।

अञ्जना–हनुमान की माँ, वानर श्रेष्ठ केसरि की पत्नी और कुञ्जर नामक वानर की पुत्री थी। पूर्व जन्म में देवस्त्री थी जो शाप के कारण वानरी बनी। हनुमान् के जन्म से शापमोक्ष मिला।

अञ्जलिकावेध–हाथी को काबू में लाने की विद्या।

अणिमाण्डव्य–बचपन का नाम माण्डव्य था। बाल्यावस्था में चिड़ियों और मक्खियों को पकड़ कर तार में पिरो देते थे। बड़े होने पर आश्रम बनाकर मौन व्रत रखकर तपस्या कर प्रसिद्ध हो गये। एक बार राजमहल में चोरी हुई। राजकिंकरों ने इनको भूल से चोर समझ कर शूली पर चढ़ाया। माण्डव्य बहुत काल तक शूलाग्र पर जीवित रहे, इसलिए इनका नाम अणिमाण्डव्य पड़ा। मृत्यु पर काल से ज्ञात हुआ कि बचपन में चिड़ियों को तार में पिरोने के पाप के लिये शूली पर

चढ़ना पड़ा। अबोध बालक के अनजाने में किये छोटे पाप के लिये इतना बड़ा दण्ड देने से माण्डव्य ने यम को शूद्र कुल में जन्म लेने का शाप दिया। महामना विदुर यम का अवतार थे।

अणु–(१) भगवान विष्णु का नाम, अति सूक्ष्म (२) एक राजकुमार।

अण्ड–(१) सृष्टि के पहले प्रलय जल में प्रजा के बीजरूप एक अण्ड हुआ (२) अण्डकोश।

अतल–चौदह लोकों में से एक। विराट रूप भगवान् की जांघ का ऊपरि भाग समझा जाता है। इस अतल में मयपुत्र नल रहता है। जम्भाई लेते उसके मुँह से स्वैरिणी, कामिनी, पुश्चली नाम के स्त्रीगण निकले जो अतल में प्रवेश करनेवाले पुरुष को हाटक नामक रसायन पिलाकर कामासक्त बनाते हैं और उसकी कामपूर्ति करते हैं।

अतिकाय–(१) रावण का एक पुत्र (२) विशाल-काय।

अतिथि–श्रीराम के पुत्र कुश के पुत्र। इनके पुत्र निषध थे।

अतिनाम–छठे मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

अतिबला–विश्वामित्र मुनि श्रीराम और लक्ष्मण को, राक्षसो का नाश करके यज्ञ की रक्षा करने के लिये वन ले गये। बालकों को भूख और प्यास न लगे, इसके लिये मुनि ने उनको बला' और 'अतिबला' नाम के दो मन्त्र बता दिये।

अतिबाहु–कश्यप और दक्षपुत्री प्राधा का पुत्र एक गन्धर्व। इनके भाई हाहा, हूहू, तुम्बुरु आदि हैं।

अतिरथ–(१) एक अद्वितीय योद्धा जो अपने रथ में बैठा हुआ ही युद्ध करता है। (२) अंग देश के राजा सत्कर्म के पुत्र। इन्होंने कर्ण का पालन-पोषण किया था।

अतिरात्र–(१) मनु के एक पुत्र (२) एक प्रकार का यज्ञ।

अतिलोम–एक असुर जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया।

अतिशृंग–स्कन्ददेव के एक पार्षद का नाम।

अतीन्द्र–विष्णु का नाम, स्वयंसिद्ध ज्ञान, ऐश्वर्य आदि के कारण इन्द्र से भी बढ़े-चढ़े।

अतीन्द्रिय–महाविष्णु का नाम, इंद्रियों से भी अतीत, पहुँच के बाहर।

अतुल–अनुपम, बेजोड़।

अत्याग्निस्तोम–एक प्रकार का यज्ञ।

अत्रि–ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक, सप्त-र्षियों में से एक। प्रसिद्ध पतिव्रता अन-सूया इनकी पत्नी है। अनसूया जी भगवान कपिलदेव की बहन और कर्दम-देवहूति की कन्या है। अत्रि महर्षि ब्रह्मवादियों में श्रेष्ठ थे। जब ब्रह्माजी ने प्रजा-विस्तार के लिये आज्ञा दी तब महर्षि अपनी पत्नी अनसूया सहित ऋषि नामक पर्वत पर तप करने लगे। जगत्पति भगवान के शरणापन्न होकर इन्होंने घोर तप किया जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीनों वर देने के लिए प्रकट हुए और पुत्रलाभ का वर दिया। उन तीनों के अंश से तीन पुत्र हुए, विष्णु के अंश से दत्तात्रेय, ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा और शिव के अंश से दुर्वासा हुए। भगवान श्री रामचन्द्र जी ने वनवास के समय इनका आतिथ्य स्वी-कार किया था। अनसूया ने जगज्जननी सीता को अनेक प्रकार के दिव्याभूषण और कपड़े और सती धर्म का महान उपदेश दिया था।

अथर्व–(१) चार वेदों में से एक। इसमें शत्रुनाशक अनेक मन्त्र हैं। (२) अग्नि और सोम का उपासक पुरोहित।

अथर्वण–वशिष्ठ के एक पुत्र।

अथर्वा–(१) वेदाचार्य (२) शिवजी का नाम।

अथर्वांगिरा–दे: अंगिरा।

अदिरथ–ययाति वंश के एक राजा।

अदिति–दक्ष प्रजापति की पुत्री, मरीचिपुत्र

कश्यप ऋषि की पत्नी । इनके पुत्र एकादश रुद्र, अष्टवसु आदि हैं । भगवान विष्णु वामन नाम से इनके पुत्र होकर जन्में ।

अधृत–भगवान विष्णु का नाम, जिनको कोई भी धारण नहीं कर सकता ।

अदृश्य–विष्णु का नाम, समस्त ज्ञानेन्द्रियों के अविषय ।

अदृश्यन्ती–वशिष्ठ की पुत्रवधू, पराशर मुनि की माँ ।

अदृष्ट–दैवी आपत्ति ।

अद्र–सूर्य वंश के एक राजा ।

अद्रि–(१) पहाड़ (२) पत्थर (३) सूर्य ।

अद्रिकन्या–श्री पार्वती ।

अद्रिका–एक देवस्त्री जो ब्राह्मण शाप से मछली बन गई । यमुना नदी में रहते समय चेदि राजा वसु उधर आये । अपनी पत्नी की याद में विचाराधीन होने से इन्द्रियस्खलन हुआ । शुक्र यमुना में गिरने पर अद्रिका ने खा लिया । एक मछुए ने उसको पकड़ा । पेट चीरने पर उसके पेट में में एक लड़का और एक लड़की मिली । समाचार पाकर राजा ने लड़के का राजमहल में पालन-पोषण किया जो बाद में मत्सराज के नाम से प्रसिद्ध हुआ । लड़की मछुए के पास ही रही । यही है प्रसिद्ध व्यास ऋषि की माँ सत्यवती । इनके अपार नाम थे । मत्सगंधा और काली । बच्चों के जन्म से अद्रिका को शाप मोक्ष मिला ।

अद्युत–नवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम ।

अधर्म–(१) झूठ, कपट, चोरी, व्यभिचार, हिंसा, अभक्ष्य भक्षण, आदि जितने भी पाप कर्म हैं, जिनका फल शास्त्रों में दुःख बतलाया है, अधर्म है । (२) अधर्मों का मूर्तीकरण, इसकी पत्नी निऋति और भय, महाभय, मृत्यु आदि सन्तान है ।

अधिदैव–हिरण्मय पुरुष, अज, अमर ब्रह्म ही सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ और प्रजापति आदि नामों से जाने जाते हैं । जड़-चेतनात्मक सम्पूर्ण विश्व के ये ही प्राण-पुरुष हैं । सभी देवता इन्हीं के अंग हैं । ये ही सबके अधिष्ठाता, अधिपति और उत्पादक हैं । इसी से इनका नाम "अधिदैव" है । स्वयं भगवान ही अधिदैव के रूप में प्रकट होते हैं ।

अधिभूत—अपरा प्रकृति और परिणाम से उत्पन्न जो विनाशशील तत्व है, जिसका प्रतिक्षण क्षय होता है उसका नाम क्षरभाव हैं । यही 'क्षरभाव' शरीर, इन्द्रिय, मन बुद्धि अहंकार, भूत तथा विषयों के रूप में प्रत्यक्ष हो रहा है और जीवों के आश्रित है । अर्थात जीवरूपा चेतन परा प्रकृति ने इसको धारण कर रखा है । इसका नाम अधिभूत है । (दे: प्रकृति)

अधियज्ञ–भगवान ही सब यज्ञों के भोक्ता और प्रभु हैं । समस्त फलों का विधान वे ही करते है, इसलिए अधियज्ञ हैं ।

अधिरथ–अंग वंश के सत्कर्म के पुत्र, सूत । इनकी पत्नी राधा थी, इन दोनों ने कुन्तीपुत्र कर्ण को पाला ।

अधृष्या–एक नदी ।

अधोक्षज–विष्णु का नाम ।

अध्वर्यु–यज्ञ में यज्ञवेदी को माप कर बनाना, यज्ञ के बर्तन करना, लकड़ी और जल लाना और आग जलाना आदि अध्वर्यु का नाम है ।

अनघ–(१) महाविष्णु का नाम, पापरहित । (२) वशिष्ठ का एक पुत्र (३) एक गन्धर्व ।

अनंग–(१) कामदेव का नाम, शिवजी की कोपाग्नि में जल मरने से काम अंग रहित हो गये । (२) आकाश (३) वायु ।

अनन्त(१) विष्णु का नाम, जिनके स्वरूप, शक्ति ऐश्वर्य, सामर्थ्य और गुणों का कोई भी पार नहीं पा सकता–ऐसे अविनाशी गुण, प्रभाव और शक्तियों से युक्त भगवान । (२) कश्यप ऋषि और कद्रू के पुत्र नागों में से एक प्रमुख

नाग, महाविष्णु की शय्या के रूप में रहते हैं। इन्हीं के अवतार थे लक्ष्मण और बलराम। सहस्रफण वाले इन्हीं अनन्त के फण पर सारा ब्रह्माण्ड टिका है। इनका अपर नाम आदि शेष है। (दे: शेष)

अनन्तजित–विष्णु का नाम, युद्ध और क्रीड़ा आदि में समस्त भूतों को जीतने वाले।

अनन्तविजय–युधिष्ठिर के शंख का नाम।

अनन्तशयन–(१) विष्णु का नाम (२) फाल्गुन तीर्थ का नाम।

अनन्ता–(१) पृथ्वी (२) पार्वती।

अनन्यमन–एकाग्रचित्त से ध्यान करने वाला।

अनमित्र–वृष्णिवंश के राजकुमार युधाजित के पुत्र। इनके पुत्र निम्न थे।

अनघ–(१) निष्पाप (२) विष्णु का नाम (३) ग्यारहवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

अनरण्य–इक्ष्वाकुवंश के एक राजा त्रसदस्यु के पुत्र थे। इनके पुत्र हर्यश्व थे।

अनर्घ्य—महाविष्णु का विशेषण, अत्युत्तम।

अनल–(१)अग्निस्वरूप भगवानविष्णु(२)अपार शक्ति और सम्पत्ति से युक्त भगवान विष्णु।

अनला–दक्ष की एक पुत्री।

अनवद्यांगी–लक्षणयुक्त अवयवों वाली देवी।

अनवद्या–कश्यप ऋषि की पत्नी, एक अप्सरा।

अनसूया–(१) ब्रह्मा के पुत्र अत्रि महर्षि की पत्नी, पतिव्रता शिरोमणि और तपोनिष्ठा थी।(दे: अत्रि)(२)कालिदास के'शाकुन्तलम' नाटक में शकुन्तला की एक सखी।

अनादिनिधन–जन्म-मृत्यु से रहित, विष्णु का नाम।

अनामित्र—एक महर्षि, इनके पुत्र थे छठे मन्वन्तर के मनु चाक्षुष।

अनाहत चक्र–हृदय में स्थित है जहां नस-नाड़ियां शरीर की सब दिशाओं को जाती हैं। यह बारह दलों का कमल है जिसके बीच में ब्रह्मा का ध्यान किया जाता है।

अनिकेत–(१) महाविष्णु का नाम। (२) गृहहीन।

अनिरुद्ध—(१) श्रीकृष्ण के पौत्र, प्रद्युम्न और रुक्मि की पुत्री रुक्मवती के पुत्र। इन्होंने बाणासुर की कन्या उषा का परिणय किया था। (दे: उषा) (२) महाविष्णु का नाम, सच्ची भक्ति के बिना किसी से भी न रुकने वाले भगवान् (३) स्वतन्त्र।

अनिर्देश्य–अवर्णनीय, परमात्मा की उपाधि।

अनिल–(१) प्राणरूप से वायु स्वरूप भगवान विष्णु। (२) अष्टवसुओं में से एक (३) वायुदेव (४) त्रिदोषों में से एक।

अनिलबन्धु–अग्नि।

अनिलात्मज–वायु का पुत्र हनुमान और भीमसेन।

अनीकनी–अक्षौहिणी सेना का एक विभाग।

अनीश्वर–निरीश्वर, नास्तिक।

अनीह–कुशवंश के राजा देवानीक के पुत्र, इनके पुत्र पारियात्र थे।

अनु–ययाति महाराज और शर्मिष्टा के एक पुत्र। इनके सभानर, चक्षु और परोक्ष नाम के तीन पुत्र हुए। (२) यदुवंश के राजकुमार कपोतरोम के पुत्र। इनके पुत्र अन्धक थे।

अनुचक्र–स्कन्ध देव का एक पार्षद।

अनुत्तम–सर्वोत्कृष्ट भगवान् विष्णु।

अनुपम–सर्वोत्तम भगवान का विशेषण।

अनुपमा–(१) देवी का विशेषण (२) दक्षिण-पश्चिम प्रदेश की हथिनी।

अनुमती–महर्षि अंगिरा की पुत्री।

अनुविन्द–(१) अवन्ति राज्य के दो राजकुमार विन्द और अनुविन्द थे। ये वसुदेव की बहन राजाधिदेवी और जयसेन के पुत्र थे। ये श्रीकृष्ण के शत्रु थे। इनकी इच्छा के विरुद्ध श्री कृष्ण ने इनकी बहन मित्रविन्दा से विवाह किया। (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

अनुष्टुप–(१) एक छन्द का नाम (२)सूर्य के सात अश्वों में से एक ।
अनुह्लाद–हिरण्यकशिपु का एक पुत्र, प्रह्लाद का भाई ।
अनूप–प्राचीन भारत का एक देश ।
अनृत–असत्य; अधर्म और हिंसा का पुत्र ।
अनेन–(१) पुरूरवा के पुत्र आयु के पुत्र (२) इक्ष्वाकुवंश के राजा पुरञ्जय के पुत्र, इनके पुत्र पृथु थे ।
अन्तक–यम ।
अन्तःकरण–हृदय, आत्मा, विचार और भावना का स्थान । अपनी चित्तवृत्तियों के कारण अन्तःकरण मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार इन चार नामों से कहा जाता है । इनको अन्तःकरण चतुष्टय कहते हैं । सङ्कल्प-विकल्प के कारण मनुष्य, पदार्थ का निश्चय करने के कारण बुद्धि, 'अहं-अहं' (मैं-मैं)ऐसा अभिमान करने से अहङ्कार और अपना चिन्तन करने के कारण वह चित्त कहलाता है ।
अन्तरिक्ष–ऋषभदेव के नौ पुत्र दिव्य योगि बने, उनमें से एक । नौ योगि थे कवि, हरि, अन्तरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस, और करभाजन । इन्होंने लोगों को भगवान की महिमा सिखायी । (२)मुरासुर का एक पुत्र जो श्री कृष्ण से मारा गया (३) इक्ष्वाकुवंश के राजा पुष्कर के पुत्र, इनके पुत्र सुतपा थे ।
अन्तर्धान–(१) महाराजा पृथु के पुत्र विजिताश्व का दूसरा नाम । इन्होंने इन्द्र से अन्तर्धान होने की विद्या सीखी थी, इसलिए यह नाम पड़ा । (२) कुबेर का अस्त्र ।
अन्त्येष्टि–सोलह संस्कारों में से एक जो मृत्यु के बाद किया जाता है ।
अन्ध–कश्यप और कद्रू का पुत्र एक नाग ।
अन्धक–(१) यदुवंश के सात्वत के एक पुत्र । इनके कुकुर, भजमान, शुचि और कम्बलबर्हिश नाम के पुत्र हुए । इनसे अन्धक वंश चला । (२) यदुवंश का एक राजकुमार जो अनु का पुत्र था, इसका पुत्र दुन्दुभि था । (३) एक असुर जिसको शिव जी ने मारा ।
अन्धकार–क्रौंच द्वीप का एक पहाड़ ।
अन्धकूप–एक नरक ।
अन्धतामिस्र–एक नरक ।
अन्ध्र–(१) आधुनिक आन्ध्र प्रदेश । (२)एक राजवंश का नाम ।
अन्ध्रक–अन्ध्र देश के राजा ।
अन्नदेवता–भोजन की सामग्री का अधिष्ठान देवता ।
अन्नपूर्णा–दुर्गा देवी, सम्पन्नता की देवी ।
अन्नप्राश–सोलह संस्कारों में से एक जब कि नवजात शिशु को पहली बार विधिवत् अन्न खिलाया जाता है । यह प्रायः छठे महीने में किया जाता है ।
अन्नमयकोश–भौतिक शरीर अथवा स्थूल शरीर जो अन्न पर ही आधारित है । अन्न के बिना यह नष्ट हो जाता है । यह त्वचा, चर्म, मांस रुधिर, अस्थि, मल आदि का समूह है ।
अपराजित–(१) विष्णु का नाम, शत्रुओं द्वारा पराजित न होने वाले भगवान् (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र(३) एकादश रुद्रों में से एक(४) कालकेय वंश का एक असुर राजा ।
अपरा प्रकृति–देखिए प्रकृति ।
अपर्णा–श्री पार्वती का नाम । तपस्या करते समय हिमवान की पुत्री ने पत्ते भी खाना छोड़ दिया ।
अपवर्ग–(१) समाप्ति (२) मोक्ष (३)दान ।
अपान्तरतम–त्रिलोक ज्ञानी एक ऋषि । भगवान विष्णु की आज्ञा के अनुसार इन्होंने वेदों का विभाजन और क्रमीकरण किया था ।
अप्रतिरथ–पूरु वंश के ऋतेयु के एक पुत्र, इनके पुत्र कण्व थे ।
अप्रतिष्ट–एक नरक ।

अप्रमत्त–महाविष्णु का नाम, अधिकारियों को उनके कर्म के अनुसार फल देने में कभी प्रमाद न करने वाले भगवान् ।

अपसरा–अमृत मंथन के समय क्षीरसागर से निकली अत्यन्त सुन्दर स्त्रियाँ, ये देवलोक में रहती हैं ।

अब्ज–कमल ।

अब्जयोनि–ब्रह्मा का विशेषण ।

अब्दि–समुद्र

अब्दिज–(१) चन्द्रमा (२) शंख (३) अमृत ।

अब्दिशयन–महाविष्णु ।

अभय–(१) इष्ट के वियोग और अनिष्ट के संयोग की आशंका से मन में जो कायरतापूर्ण विकार होता है उसका नाम है भय । भय के सर्वथा अभाव का नाम अभय है । (२) राजा इध्मजिह्व ने प्लक्ष द्वीप को अपने सात पुत्रों में बाँट दिया था । उस द्वीप के एक विभाग का नाम ।

अभिचारविधि–दुष्कर्म की पूर्ति के लिए (जैसे शत्रुसंहार, किसी दूसरे पर आपत्ति लाना आदि) अभिचारविधि के द्वारा दक्षिणाग्नि में आहुति डाली जाती है ।

अभिजित–श्रुति के अनुसार दो आषाढ़ और श्रवण नक्षत्रों के बीच का मुहूर्त ।

अभिमन्यु–(१) अर्जुन ने भगवान् श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से विवाह किया था । उन्हीं के पुत्र अभिमन्यु थे । मत्स्यदेश के राजा विराट की सुन्दरी कन्या उत्तरा से इनका विवाह हुआ था । प्रद्युम्न और अर्जुन से अस्त्रशिक्षा प्राप्त की थी । ये असाधारण वीर थे । महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्य ने एक दिन चक्रव्यूह की ऐसी रचना की कि पाण्डव पक्ष के कोई भी वीर उसमें घुस न सके । जयद्रथ ने सबको परास्त कर दिया था । अर्जुन दूसरी ओर लड़ रहे थे । व्यूह को भेद कर अकेले ही युवक अभिमन्यु उसमें घुस गये और असंख्य वीरों का संहार किया । द्रोणाचार्य, कर्ण, कृपाचार्य अश्वत्थामा, बृहद्बल और कृतवर्मा–इन छः महारथियों ने एक साथ सोलह साल के उस वीर बालक के साथ युद्ध किया । अन्त में दुश्शासन के लड़के ने गदा से वार कर उनको मारा । प्रसिद्ध महाराजा परीक्षित इनके पुत्र थे । (२) मनु के एक पुत्र ।

अभिशाप–शाप देना ।

अभिषेक–(१) राजतिलक करना (२) देवमूर्ति पर जल, दूध, दही, मधु आदि डालकर अभिषेक किया जाता है ।

अभिसारिका–वह स्त्री जो अपने प्रिय से नियमित स्थान पर मिलने जाती है ।

अभू–विष्णु का नाम; अजन्म जिनका जन्म नहीं होता ।

अमन्यु–प्रियव्रत महाराजा के वंशज एक राजा ।

अमर–देवता, जिनकी मृत्यु नहीं होती ।

अमरकोश–अमर सिंह द्वारा रचित संस्कृत का एक प्रसिद्ध कोश ।

अमरतरु–एक दिव्य वृक्ष, इन्द्र के स्वर्ग का वृक्ष ।

अमरपर्वत–भारत का एक प्राचीन पर्वत ।

अमर प्रभु–देवताओं के स्वामी, भगवान विष्णु ।

अमरमूल–संजीवनी जड़ी ।

अमरावती–इन्द्र की राजधानी ।

अमर्क–शुक्राचार्य के दो पुत्र षण्ड और अमर्क थे । ये भक्त प्रह्लाद के गुरु थे ।

अमर्षण–कुरु वंश के राजा सन्धि के पुत्र । इनके पुत्र महस्वान थे ।

अमावास्य–कृष्ण पक्ष का अन्तिम दिन जब सूर्य और चन्द्र एक ही राशि में आते हैं ।

अमित–पुरुरवा के वंशज जय के पुत्र ।

अमितौज–पांचाल देश के एक राजकुमार जो बड़े भारी पराक्रमी और बल सम्पन्न वीर थे ।

अमित्रजित्–इक्ष्वाकुवंश के राजा सुतपा के पुत्र । इनके पुत्र बृहद्राज थे ।

अमूर्ति–भगवान विष्णु का विशेषण ।

अमृत–(१) कभी न मरने वाले भगवान् विष्णु का नाम। (२) क्षीर सागर से प्राप्त एक विशिष्ट वस्तु जिसका पान करने वाला जरा-मृत्यु से मुक्त हो जाता है (३) औषधि। (४) ब्राह्मण के जीविकोपार्जन का एक मार्ग (दे- मृत)।

अमृतप्रभ–आठवें मन्वन्तर का एक देव गण।

अमृत मंथन–महर्षि दुर्वासा के शाप से इन्द्रादि देवताओं का सब ऐश्वर्य नष्ट हो गया, और वे जराक्रान्त हो गये। अपने ऐश्वर्य को पुनः प्राप्त करने के लिए देवताओं ने भगवान् विष्णु की आज्ञा के अनुसार असुरों से मिल-कर क्षीर सागर को मथ कर अमृत निकाला। इसके लिए मन्दर पर्वत को वेत्र बनाया, वासुकि रस्सी बना। जब मन्दर पर्वत सागर में डूबने लगा तब भगवान ने कच्छप का अवतार लेकर उसको अपनी पीठ पर टिकाया। भगवान् का ही एक अंश धन्वन्तर मूर्ति के रूप में अमृत कलश लेकर सागर से निकला। अमृत मंथन के समय सागर से हलाहल विष और उच्चैश्रवा, ऐरावत, कौस्तुभ लक्ष्मी देवी, अपसरायें, चन्द्रमा, कामधेनु, वारुणी, आदि उत्कृष्ट वस्तुएँ निकलीं।

अमृतवपु–महाविष्णु का नाम, जिनका कलेवर कभी नष्ट न हो ऐसे नित्य विग्रह भगवान।

अमृतांशु–चन्द्रमा, जिसकी किरणें अमृत के समान शीतल और सुखप्रद हैं।

अमेयात्मा–विष्णु का नाम, सीमा रहित।

अमोघ–(१) विष्णु का नाम, भक्तों के द्वारा पूजन, श्रवण, अथवा स्मरण किये जाने पर उन्हें वृथा न करके पूर्णरूप से उनका फल प्रदान करने वाले ईश्वर। (२) एक यक्ष का नाम। (३) बृहस्पति के कुल में उत्पन्न एक अग्नि।

अम्बर–(१) आकाश, अन्तरिक्ष (२) वस्त्र (३) समुद्र की परिधि से युक्त पृथ्वी, (४) एक प्रकार का सुगन्धित मणि।

अम्बर मणि–सूर्य।

अम्बरीष–राजर्षि अम्बरीष वैवस्वत मनु के पौत्र, महाराजा नाभाग के प्रतापी पुत्र थे। इन्होंने चक्रवर्ती साम्राट होने पर भी सब भोग ऐश्वर्य को नाशवान समझकर अपना सारा जीवन परमात्मा के चरणों में अर्पण कर दिया था। इनकी असीम भक्ति के कारण भक्तपरायण भगवान् विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र को इनकी रक्षा के लिए नियुक्त किया था। भगवान् की कृपा से दुर्वासा का प्रचण्ड कोप भी इनका कुछ अनिष्ट न कर सका। किन्तु दुर्वासा को ही अपनी प्राणरक्षा के लिये तीनों लोकों में दौड़ना पड़ा। इतना ही नहीं अन्त में राजा की ही शरण में आना पड़ा।

अम्बष्ट–(१) हाथी की देख-रेख करने वाला (२) कौरव पक्ष का एक राजा। (३) एक देश का नाम।

अम्बा–काशी राजा की तीन पुत्रियां थी अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका। शान्तनु पुत्र भीष्म सत्यवती पुत्र विचित्रवीर्य के लिए इन तीनों राजकुमारों को हस्तिनापुर ले आये। अम्बिका और अम्बालिका से विचित्रवीर्य का विवाह हो गया। अम्बा ने भीष्म से कहा कि उसने पहले से ही साल्व राजा को मन से वरण किया है। तब भीष्म ने अम्बा को छोड़ दिया। साल्व ने उसको यह कह कर अस्वीकार किया कि भीष्म ने विचित्रवीर्य के लिए उसका कर ग्रहण किया था। अम्बा भीष्म के पास फिर से गई, लेकिन भीष्म ने उसको स्वीकार नहीं किया। भीष्म से प्रतिशोध लेने के लिए वह श्री परशुराम के पास गई। परशुराम भीष्म के गुरु थे। दोनों के बीच कठोर युद्ध हुआ, वे तुल्य विजयी रहे। अपनी इच्छा-पूर्ति में विघ्न देख कर अम्बा ने तपस्या की। शिव ने वरदान दिया कि वह द्रुपदराज कुल

में जन्म लेकर भीष्म का वध करेगी। मृत्यु के बाद अम्बा द्रुपराज की पुत्री बन कर पैदा हुई। पुत्र की कामना करने वाले राजा ने उसको पुत्र घोषित किया और पुत्र की तरह पाला। आगे जाकर यक्ष से पुरुषत्व प्राप्त कर लिया और शिखण्डि नाम से प्रसिद्ध हुई। शिखण्डि ने महाभारत युद्ध में भीष्म को मारा।

अम्बालिका—(१) दे:-अम्बा, धृतराष्ट्र।

अम्बिका—(१) दे-अम्बा, धृतराष्ट्र। (२) श्री पार्वती का नाम (३) भद्र महिला।

अम्बिका वन—गन्धवती नदी के किनारे एक पुण्य वन जहाँ-शिव और पार्वती का मन्दिर है। यहाँ श्रीकृष्ण और बलराम एक बार नन्द आदि गोपों के साथ दर्शनार्थ गये थे। वहाँ एक अजगर ने नन्दगोप को काटा। श्री कृष्ण ने अपने पिता की रक्षा की।

अम्बुज—(१) कमल (२) चन्द्रमा (३) कपूर (४) शंख।

अम्बुनिधि—समुद्र।

अम्बुपति—(१) वरुण (२) समुद्र।

अम्बुवाह—बादल।

अम्बुवाहिनी—एक पुण्य नदी।

अम्बोरुह—(१) कमल (२) विश्वामित्र का एक पुत्र।

अयति—राजा नहुष के एक पुत्र, ययाति के भाई थे।

अयन—(१) जाना, हिलना (२) राह, पथ (३) सूर्य का मार्ग, सूर्य की विषुवत् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर गति। इस मार्ग का काल छः मास है (दे: उत्तरायन, दक्षिणायन।)

अयुताजित—ययाति वंश के भजमान के पुत्र।

अयुतायु—(१) इक्ष्वाकुवंश के एक राजा, राजा ऋतुपर्ण के पिता। (२) राजा सिन्धु द्वीप के पुत्र (३) मगध देश के राजा श्रुतश्रवा के पुत्र, इनके पुत्र निरमित्र थे।

अयोध्या—कोसल की राजधानी। इक्ष्वाकु वंश के राजाओं की राजधानी थी और इसने बहुत प्रसिद्धि पायी। श्री रामचन्द्रजी के जन्म से अयोध्या एक पुण्य भूमि मानी जाती है।

अयोध्या काण्ड—रामायण का एक काण्ड।

अयोनि—(१) देवी का नाम, योनि रहित, कारण रहित। (२) जिनकी योनि (जन्म) अ (विष्णु) से है।

अयोनिजा—जनक पुत्री सीता।

अयोमुख—एक राक्षस।

अरणि—(१) यज्ञ, होम आदि में आग पैदा करने के लिए दो लकड़ियों को रगड़ते हैं, इनको अरणि कहते हैं (२) सूर्य (३) आग।

अरण्य—इक्ष्वाकु वंश के एक राजा।

अरण्यकाण्ड—रामायण का एक काण्ड जिसमें श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के वनवास का विवरण दिया गया है।

अरण्यपर्व—महाभारत का एक पर्व।

अरविन्दाक्ष—विष्णु का नाम, कमल के समान सुन्दर आँखों वाले।

अरा—शुक्र महर्षि की पुत्री। एक बार इक्ष्वाकु वंश के राजा दण्ड उस वन में गये जहाँ शुक्र मुनि अपनी पुत्री के साथ रहते थे। सुन्दर अरा को देखकर कामासक्त दण्ड ने उसका चारित्र भंग किया। क्रुद्ध शुक्र महर्षि ने दण्ड के राज्य का अग्नि वर्षा से नाश किया। वह राज्य घोर वन बन गया और उसका नाम दण्डकारण्य हो गया।

अरिद्योत—अन्धक वंश के दुन्दुभि के पुत्र, इनके पुत्र पुनर्वसु थे।

अरिमर्दन—(१) वृष्णिवंश के श्वफल्क और गान्दिनी के एक पुत्र, अक्रूर के भाई। (२) महाविष्णु का नाम।

अरिष्ट—कंस का एक अनुचर दैत्य। श्रीकृष्ण को मारने के लिए यह बैल बनकर व्रज में

गया और बादल की तरह गरज कर सबको डराता रहा। भगवान् श्री कृष्ण ने उसका सींग पकड़कर पृथ्वी पर गिराया और सींग उखाड़ कर उसको मार डाला।

अरिष्टनेमि–(१) महाविष्णु का नाम (२) एक असुर (३) कश्यप और विनता का एक पुत्र। (४) अज्ञातवास के समय सहदेव का नाम। (५) जनक वंश के राजा पुरुजित के पुत्र, इनके पुत्र श्रुतायु थे।

अरिष्टा–दक्ष प्रजापति की पुत्री, कश्यप की पत्नी। इनके पुत्र हैं गन्धर्व।

अरुण–(१) कश्यप ऋषि और विनता के पुत्र, गरुड़ के भाई, सूर्य के रथ के सारथि हैं और सूर्य की ओर मुँह कर के बैठते हैं। पीठ दिखाकर वे सूर्य भगवान की अवहेलना नहीं करना चाहते हैं। अरुण के श्येनी के गर्भ से सम्पाति और जटायु नाम के दो पुत्र हुए। अरुण एक बार स्त्री के वेष में इन्द्र की नाट्यशाला में गये। उनके सौंदर्य पर मोहित इन्द्र का उनसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो बलि के नाम से विख्यात हुआ। उसी रूप से मोहित सूर्य से उनका पुत्र सुग्रीव हुआ। (२) सूर्यवंश के राजा हर्यश्व के पुत्र अरुण थे। इनके पुत्र त्रिशबन्ध और पौत्र त्रिशंकु थे। (३) सोना (४) केसर (५) ग्यारहवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

अरुणा–(१) एक नदी का नाम (२) कश्यप ऋषि और दक्षपुत्री प्राधा की पुत्री एक अपसरा।

अरुणोदा–मन्दर पर्वत पर आम का एक विशाल और दिव्य वृक्ष है। इसके रसीले पके फलों के नीचे गिरने से सुगन्धित और सुस्वादु रस की एक लाल नदी सी बहती है जिसका नाम अरुणोदा है। इलावृत के पूर्व भाग को यह सींचती है।

अरुन्धती–कर्दम प्रजापति और मनुपुत्री देवहूति की पुत्री, वशिष्ठ की पत्नी। प्रभातकालीन तारा।

अरुन्धती वट–एक पुण्य तीर्थ।

अर्क–(१) विष्णु का नाम, ब्रह्मादि पूज्य पुरुषों के भी पूज्य। (२) सोम वंश के राजा पुरुज के पुत्र, इनके पुत्र गर्म्यश्व थे। (३) सूर्य का नाम (४) प्रकाश किरण।

अर्घ्य–देवता, ऋषि, मुनि और पूज्य अथितियों का अर्घ्य दे कर स्वागत किया जाता है।

अर्चक–पुजारी, आराधना करने वाला।

अर्चना–पूजा।

अर्चि–किरण।

अर्चिमार्ग–ब्रह्मविद योगी देवयान से, जिसको अर्चि-मार्ग कहते हैं, जो शुक्र और प्रकाशमय है, जाकर मुक्ति पाते हैं। उनका पुनर्जन्म नहीं होता। निरन्तर जाज्वल्यमान अग्नि देवता, और दिन, शुक्ल पक्ष और उत्तरायण के अधिष्ठान देवता 'योगि की आत्मा' को इस मार्ग से ले जाकर ब्रह्म तक पहुँचाते हैं।

अर्चिष्मति–मुनि अंगिरा की एक पुत्री।

अर्चिष्मान–विष्णु का नाम; चन्द्र सूर्य आदि समस्त ज्योतियों को देदीप्यमान करनेवाली अतिशय प्रकाशमय अनन्त किरणों से युक्त।

अर्चा–राजा वेन की भुजा को मथने पर एक युगल निकला, एक स्त्री और एक पुरुष। पुरुष भगवान के अंशावतार पृथु थे और स्त्री लक्ष्मी देवी की अंशसंभवा अर्चा थी।

अर्जुन–(१) कुरुवंश के कुन्ती देवी के पुत्र। कुन्ती के पति महाराजा पाण्डु मुनि के शाप से स्त्री प्रसंग नहीं कर सकते थे। कुन्ती को दुर्वासा ऋषि ने दिव्य मन्त्रों का उपदेश दिया था। पाण्डु की अनुमति से इन मन्त्रों के द्वारा कुन्ती के धर्मदेव, वायुदेव और इन्द्र से क्रमशः धर्मपुत्र, भीमसेन और अर्जुन नाम के तीन पुत्र हुए। कुन्ती को ये मन्त्र कन्यावस्था में मिले थे। अर्जुन बड़े वीर, शूर, पराक्रमी, धनुर्विद्या में अग्रगण्य, श्रीकृष्ण के अत्यन्त

प्रिय सखा और भक्त थे। ये द्रोणाचार्य के शिष्य थे और द्रुपद राजा को परास्त कर द्रोणाचार्य को गुरु दक्षिणा दी, द्रुपदराजपुत्री द्रौपदी को स्वयंवर में पाया था, श्रीकृष्ण की वहन सुभद्रा से विवाह किया था। अर्जुन का द्रौपदी से श्रुतकीर्ति, सुभद्रा से प्रसिद्ध अभिमन्यु, उलूपी से इरावान, मणिपुर की राज कन्या से बभ्रुवाहन नाम के पुत्र हुए। अपने भाइयों के साथ अर्जुन ने कौरवों से अनेक कष्ट सहे। शिव की तपस्या कर उनसे पाशुपतास्त्र वरदान में पा लिया। खाण्डव दहन में अग्नि की सहायता कर प्रसिद्ध गाण्डीव धनुष पाया। अपने पुत्र वीर अभिमन्यु की मृत्यु का वदला जयद्रथ को मारकर लिया। ये नर ऋषि के अवतार माने जाते है। (२) हैहय वंश के कृतवीर्य के पुत्र अर्जुन जो सप्त द्वीपों के अधीश्वर बने। इन्होंने हरि के अंशावतार भगवान दत्तात्रेय से योग और अनेक सिद्धियाँ प्राप्त की। यज्ञ, दान, तप, योग, वीर्य आदि में कोई उनका सामना नहीं कर सकता था। अनेक काल तक ओज, वल और वीरता से युक्त ये राज्य करते रहे। उनके हजारों पुत्र हुए जिनमे पाच को छोड़ कर परशुराम से मारे गए। (३) एक वृक्ष का नाम। नारद मुनि के शाप से कुवेर के पुत्र नल कूवर और मणिग्रीव अर्जुनवृक्ष बन कर व्रज मे रहते थे। (४) पाचवें मनु रैवत के एक पुत्र।

अर्जुनपाल—यादव वंश का एक राजकुमार।

अर्थ—(१) विष्णु का नाम; सुख स्वरूप होने के कारण सबके द्वारा प्रार्थनीय। (२) लौकिक सम्पत्ति।

अर्थार्थि—चार प्रकार के भक्तों में से एक (दे : भक्त)।

अर्धनारीश्वर—भगवान शिव का नाम। भक्तवत्सल भगवान अपने वाम भाग में श्री पार्वती को स्थान देकर अर्धनारीश्वर बने।

अर्भुत—(१) एक पर्वत (२) एक असुर।

अर्यमा—(१) कश्यप और अदिति के एक पुत्र, द्वादशादित्यों में से एक (२) पितरों में मुख्य। कण्यवाह, अनल, सोम, यम, अर्यमा, अग्निष्वात्त और वर्हिषद्-ये सात पितृगण हैं। इन में अर्यमा नामक पितर समस्त पितरों में प्रधान होने से उनमें श्रेष्ठ माने गये हैं। भगवान् ने उनको अपना स्वरूप वतलाया है। पृथु महाराजा के समय अर्यमा को वछड़ा बना कर गोरूपी पृथ्वी से मिटटी के वर्तन में पितरों ने कण्य रूपी दूध निकाला।

अर्वावसु—एक महर्षि, रैभ्य नामक मुनि के पुत्र थे।

अर्हण—पूजा, सम्मान।

अलकनन्दा—भगवान विष्णु ने वामनावतार लेकर त्रिविक्रम के रूप में वलि के यज्ञ में दूसरा कदम नापने के लिए जब वायाँ पैर उठा कर रखा तव उनके अंगूठे के नाखून के लगने से ब्रह्माण्ड का ऊपरि भाग छिद गया और कारण जल उसमें से धारा के रूप में निकला। ब्रह्मा ने अपने कमण्डलु के जल से भगवान के पैर धोये। यह धारा जिसका नाम भगवद्पती है आगे चलकर गंगा के से नाम प्रसिद्ध हुई। ब्रह्मलोक से यह चार धाराओं में सीता अलकनन्दा, चक्षु और भद्रा के नाम से चारों तरफ बहकर समुद्र में गिरती है। यह अलनन्दा उत्तर खण्ड में हिमालय प्रदेशों में वहती है। इसके तट पर सुप्रसिद्ध वदरीनाथ मन्दिर स्थित है।

अलकापुरी—(१) कैलास पर्वत पर विश्वकर्मा के द्वारा बनायी गयी कुबेर की नगरी (२) यह वसुधारा का उद्भव स्थान है और गंगा की एक शाखा है। वद्रि-विशाल में भगीरथ करक और सतोपंथ नामक दो पहाड़ियों के बीच में से यह नदी निकलती है।

अलम्बुष–एक राक्षस राजा, ऋष्यशृंग नामक राक्षस का पुत्र । भीमसेन के पुत्र घटोत्कच ने इसको मारा था ।

अलम्बुषा–(१) कश्यप और प्राधा की पुत्री एक अप्सरा । दधीचि महर्षि से इसको सारस्वत नामक एक पुत्र हुआ जो वेद पारांगत थे । इन्द्र के शाप से अलम्बुषा मर्त्ययोनि में राजा कृतवर्मा की पुत्री मृगावती के नाम से पैदा हुई । विधूम नामक वसु भी इन्द्र के शाप से सहस्त्रानीक नामक राजा होकर जन्मे । इन दोनों का विवाह हुआ और इन्हीं के पुत्र थे कौशाम्बी के प्रसिद्ध राजा उदयन (२) करूप वंश के तृणविन्दु की पत्नी । इनके अनेक पुत्र और इड़विडा नाम की एक पुत्री हुई ।

अलर्क–(१) पुरूरवा के वंशज कुवलयाश्व के पुत्र । ये तरुण अवस्था में साठ हजार वर्षों तक भूमण्डल में रहे । इनके पुत्र शान्ति थे । (२) काशी, करूप आदि देशों में एक राजा थे । राजवैभव से विरक्त होकर ध्यानयोग द्वारा इन्होंने परम पद प्राप्त किया ।

अलम्बु–वसिष्ट और ऊर्जा के एक पुत्र ।

अलौकिक–असाधारण, लोकोत्तर ।

अल्ला–मुसलमानों के ईश्वर ।

अवतंस–कर्णभूषण श्रेष्ठ ।

अवतार–जब-जब संसार में धर्म की हानि होती है, दुष्टों का संहार करने और साधु सन्तों की रक्षा करने के लिये भगवान विष्णु पूर्ण या अंश रूप से मनुष्य, पशु, पक्षी आदि के रूप में पृथ्वी पर जन्म लेते हैं । इनको अवतार कहते हैं । मुख्य दस अवतार है–मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, बलभद्र, श्रीकृष्ण और कल्कि । इनमें कल्कि अवतार कलियुग के अन्त में होगा ऐसी श्रुति है । कोई-कोई भगवान बुद्ध को दश अवतारों में मानते हैं । श्री राम और श्रीकृष्ण भगवान के पूर्ण अवतार स्वयं भगवान ही हैं । शेष सब भगवान के अंश से हुए हैं इसलिये अंशावतार कहते हैं जैसे कपिल देव, दत्तात्रेय आदि ।

अवभृत–यज्ञ की समाप्ति पर करने वाला स्नान ।

अवन्ति–(१) प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध देश । उज्जैनी (आधुनिक उज्जैन) इसकी राजधानी थी । यह सात पुण्य स्थानों में से एक है । (२) एक नदी का नाम ।

अवन्तिका–उज्जैन के राजा उदयन के मन्त्री यौगन्धरायण की पुत्री ।

अवध–अयोध्या ।

अवधूत–विरक्त, सन्यासी ।

अवधूतोपाख्यान–श्रीकृष्ण के पूर्वज यदु महाराजा को परम भाग्यवान् अवधूत ब्राह्मण दत्तात्रेय जी ने अपने अट्ठाइस गुरुओं के बारे में जो कथाएँ बतायीं इसको अवधूतोपाख्यान कहते हैं । अवधूत पृथ्वी, सूर्य, हरिण, मछली, पिङ्गलावेश्या, कुरर पक्षी, सर्प आदि से शिक्षा ग्रहण करके मुक्तभाव से संसार में स्वच्छन्द विचरण कर सके ।

अवनी–(१) पृथ्वी (२) नदी ।

अवनीपति–राजा ।

अवरवा–देवी का नाम ।

अविद्या–(१) अज्ञान, मूर्खता (२)आध्यात्मिक अज्ञान, भ्रम, माया । इसी माया के द्वारा व्यक्ति दृश्य संसार को अविनाशी और वास्तविक समझता है और ब्रह्म के सत्य सत्व को जानता नहीं ।

अविक्षित–(१) राजा कुरु का एक पुत्र (२) करूप वंश के राजा करन्धम के पुत्र, इनके पुत्र मरुत्त थे ।

अवीचि–एक नरक ।

अव्यक्तजन्मा–ब्रह्मा का विशेषण ।

अव्यय–महाविष्णु का नाम, कभी विनाश को प्राप्त न होने वाले ।

अशनि–(१) इन्द्र का वज्र (२) बिजली की चमक ।

अशरीर–(१) कामदेव (१) परमात्मा (३) शरीर रहित ।

अशरीरवाक्–कभी-कभी मनुष्य की चेष्टाओं पर विचार कर या भविष्य घटना के सूचना रूप आकाश से एक शब्द सुनाई देता है, उसको अशरीरवाक् कहते हैं। वसुदेव और देवकी के विवाह के बाद जब कंस इन दोनों को रथ पर बिठाकर बड़े प्रेम से ले जा रहे थे तब एक अशरीरवाक् हुआ कि देवकी का आठवां पुत्र कंस को मारेगा ।

अशोक–विष्णु का नाम, सब प्रकार से शोक रहित । (२) महाराजा दशरथ के एक मन्त्री (३) एक वृक्ष का नाम जिसके नीचे लंका में सीता देवी बैठी थी ।

अशोकवाटिका–लंका का एक रम्य उद्यान । सीता देवी का हरण कर रावण ने देवी को इसी वाटिका में रखा था ।

अश्मक–(१) अयोध्या के राजा कल्मापपाद की पत्नी मदयन्ती का पति की अनुमति से वंश वृद्धि के लिये वसिष्ठ से उत्पन्न पुत्र गर्भस्थ शिशु कई साल तक जब बाहर नहीं आया तब वसिष्ठ ने रानी के उदर पर पत्थर मारा, इसलिये शिशु का नाम अश्मक हो गया।(२) एक महर्षि (३) गोदावरी और माहिष्मती नदियों के बीच का देश ।

अश्मकी–यादव वंश की एक कन्या जिसका विवाह पुरु वंश के एक राजकुमार से हुआ।

अश्व–कश्यप ऋषि और दक्षपुत्री ताम्रा के पुत्र अश्व, ऊँट आदि थे ।

अश्वकेतु–गान्धार नरेश का एक पुत्र ।

अश्वतीर्थ–कन्नौज के पास एक पुण्य तीर्थ ।

अश्वत्थ–पीपल का वृक्ष । गीता में भगवान अपने को वृक्षों में अश्वत्थ कहते हैं। यह समस्त वनस्पतियों में राजा और पूजनीय माना जाता है । पीपल की जड़ में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्तों में भगवान हरि, फलों में सब देवताओं से युक्त अच्युत सदा निवास करते हैं। इसकी सेवा मनुष्यों के हजार पापों का नाश करती है। कफ, वात, पित्त, वमन, खाँसी, विषदोष, कुष्ठ आदि अनेकों रोगों में इसके पत्ते, फल और छाल उपयोग में आते हैं ।

अश्वत्थामा–(१) द्रोणाचार्य और कृपी के पुत्र थे । ये शास्त्र विद्या में अति निपुण, युद्धकला में प्रवीण, बड़े ही सूर वीर महारथी थे । अपने पिता द्रोणाचार्य से अस्त्र विद्या सीखी थी। महाभारत युद्ध में अनेक वीरों को मारा, सोते हुए पांचाली के पुत्रों, धृष्टद्युम्न आदियों का वध किया था । इन्होंने ही अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भस्थ शिशु का नाश करने के लिये आग्नेयास्त्र भेजा था । ये सात चिरंजीवियों में माने जाते हैं। ये आठवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक होंगे । (२) एक हाथी का नाम ।

अश्वपति–(१) मद्रदेश के राजा, पतिव्रता सावित्री के पिता । (२) कश्यप और दनु का एक पुत्र ।

अश्वमुख–(१) किन्नर (२) देवदूत ।

अश्वमेध–एक महायज्ञ । अश्व के माथे पर जयध्वज बांध कर यथेष्ट विचरने को छोड़ देते हैं। जिस जिस देश से होकर घोड़ा निर्विघ्न जाता है वह देश जीता समझा जाता है । कोई अश्व को रोके तो युद्ध होता है । सौ अश्वमेध सफलतापूर्वक करने पर इन्द्र पद प्राप्त होता है ।

अश्वशिर–(१) भगवान हयग्रीव (२) दधीचि महर्षि ने अश्विनीकुमारों को ब्रह्मविद्या, नारायण कवच आदि का उपदेश दिया था। यह उपदेश महर्षि ने अश्व के सिर से दिया था इसलिये इनको अश्वशिरा कहते हैं । इस

ज्ञान से अमरत्व मिलता है ।

अश्वसेन—एक सर्प जो खाण्डव वन में जल मरा ।

अश्वहृदय—घोड़ों को काबू में लाने का मंत्र ।

अश्विनी—(१) सत्ताइस नक्षत्रों में से एक । पहला नक्षत्र । (२) एक अपसरा जो सूर्य की पत्नी बनी और घोड़े के रूप में छिपी रही । अश्विनी कुमारों की माँ थी । किसी मत के अनुसार सूर्य पत्नी संज्ञा का ही रूप है ।

अश्विनीकुमार—ये दोनों सत्य और दस्त्र नाम से सूर्य के अपनी पत्नी संज्ञा से (अश्व के रूप में) उत्पन्न माने जाते है । कहीं इनको कश्यप ऋषि और अदिति के पुत्र, तथा कहीं ब्रह्मा के कानों से उत्पन्न भी माने जाते हैं । कल्पभेद से सभी वर्णन यथार्थ हैं । ये दोनों भाई देव वैद्य हैं । इन्होंने दध्यङ्मुनि से ज्ञान प्राप्त किया था । राजा शर्याति की पुत्री एवं च्यवन महर्षि की पत्नी सुकन्या पर प्रसन्न होकर इन्होने वृद्ध और अन्धे च्यवन को नेत्र और नवयौवन प्रदान किया था ।

अश्विनीतीर्थ—एक पुण्य तीर्थ जिसमें स्नान करने से सौन्दर्य बढ़ता है ।

अष्टक—पूरुवंश के एक राजा ।

अष्टकाश्राद्ध—पितरों के प्रीत्यर्थ रामेश्वर में किया जानेवाला एक श्राद्ध ।

अष्टगुण—ब्राह्मणों में अवश्य पाने योग्य गुण जैसे दया, शान्ति, अनसूया, शौच, अनायास, मंगल, अकार्पण्य, अस्पृहा ।

अष्टदिक—पूर्व, दक्षिणपूर्व, दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम, उत्तर-पश्चिम, उत्तर, उत्तर-पूर्व ।

अष्टदिक्पाल—आठ दिशाओं के आठ पालक, इनकी आठ पुरियाँ है जो सुमेरु पर्वत पर स्थित है । ये क्रमशः हैं :— पूर्व के इन्द्रदेव (अमरावती); दक्षिण पूर्व के अग्निदेव (तेजोवती); दक्षिण के यमदेव (संयमनी); दक्षिण-पश्चिम के निऋति (कृष्णाञ्जना); पश्चिम के वरुण (श्रद्धा वती); उत्तर-पश्चिम के वायुदेव (गन्धवती); उत्तर के कुबेर (अलकापुरी); उत्तर-पूर्व के ईश (यशोवती) हैं ।

अष्टदिक्गज—आठों दिशाओं के आठ गजवीर हैं :—(१) ऐरावत (२) पुण्डरीक, (३) वामन (४) कुमुद (५) अञ्जन, (६) पुष्पदन्त (७) सार्वभौम और (८) सुप्रतीक ।

अष्टनाग-वासुकि, तक्षक, काकोटक, शंख, गुलिक पद्म, महापद्म, अनन्त ।

अष्टमंगल्य—(१) मृगराज, गाय, नाग, कलश, व्यजन वैजयन्ती, भेरी और दीप । (२) कुश, दर्पण, दीप, कलश, वस्त्र, अक्षत, सुमंगली युवती अथवा कन्यका, स्वर्ण ।

अष्टमूर्ति—आठ मूर्तियों से युक्त । (१) देवी—लक्ष्मी, मेघा, धरा, पुष्टि, तुष्टि, गौरी, प्रभा, धृति । (२) भूमि, जल, वायु, अग्नि, आकाश सूर्य, चन्द्र और होता । (३) भूमि, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार ये भगवान की आठ प्रकार की प्रकृति है ।

अष्टवसु—धर्मदेव के पुत्र । भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न-भिन्न नाम हैं :—द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, द्वेष, वसु, और विभावसु ।

अष्टविध विवाह—ब्राह्म, दैव, आर्ष, गान्धर्व, प्राजापत्य, आसुर, राक्षस और पैशाच ।

अष्टसिद्धि—योगियों ने अठारह प्रकार की सिद्धियाँ बतलायी हैं । जिनमें आठ प्रधान हैं । तीन सिद्धियाँ शारीरिक 'अणिमा, महिमा, लघिमा' इन्द्रियों की एक सिद्धि है 'प्राप्ति' । लौकिक और पारलौकिक पदार्थों का इच्छानुसार अनुभव करने वाली सिद्धि 'प्राकाम्य' है । माया और उसके कार्यों को इच्छानुसार संचालित करना 'ईशिता' नाम की सिद्धि है । विषयों में रहकर भी उनमें आसक्त न होना 'वशिता' है । जिस सुख की कामना करे उसकी सीमा तक पहुँचना 'कामावसायिता' नाम की आठवीं सिद्धि है ।

अष्टांगहृदय—वाभटाचार्य का रचित एक वैद्य

ग्रन्थ ।

अष्टादश पुराण–ब्राह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म और मत्स्य ।

अष्टादशविद्या–चार वेद, (ऋक, यजु, साम, अथर्व), छः वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द) मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व (संगीत), अर्थशास्त्र ।

अष्टावक्र–उद्दालक मुनि की पुत्री सुजाता का विवाह उनके शिष्य कहोडक से हुआ । उनके पुत्र थे अष्टवक्र । जब ये गर्भस्थ थे पिता का वेदोच्चारण सुन कर कहा कि मुझे कण्ठस्थ हो गया, लेकिन आपके उच्चारण में गलती है । कुपित पिता ने शाप दिया कि बुद्धि के अनुरूप तुम्हारा शरीर भी वक्र होगा । जब शिशु का जन्म हुआ तब शरीर वक्र था । इनकी वक्रता का उपहास करने से देव-स्त्रियाँ शाप के फलस्वरूप मनुष्य स्त्रियाँ बनीं । कहा जाता है कि ये ही भगवान श्रीकृष्ण की पत्नियाँ बनीं ।

असंख्येय–विष्णु का नाम; नाम और गुणों की संख्या से शून्य ।

असत–अविद्यमान, सत्ताहीन, अव्यक्त परमात्मा ।

असमञ्जस–महाराजा सगर और केशिनी के पुत्र । पूर्व जन्म मे ये योगी थे, लेकिन कुसंगति में पड गये । अपने पूर्व जन्म की बातें याद होने पर भी निर्दयी की तरह रहते थे और क्रूर कर्म करते थे जिससे पिता ने राज्य से निर्वासित किया । अपनी योग सिद्धि के द्वारा नदी में फेंके गये बच्चों को पुनः जीवित किया और राज्य छोड़कर गये । इनके पुत्र राजा अंशुमान थे ।

असिक्नी– (१) पंचजन्य नामक प्रजापति की पुत्री और दक्ष की पत्नी । इनका दूसरा नाम पाँचजनी था । इनके पहले दस हजार पुत्र हुए जो आकृति और प्रकृति में एक समान थे और हर्यश्व से पुकारे जाते थे । नारद जी के उपदेश से वे विरक्त हो गये और पिता की इच्छा के अनुसार प्रजावृद्धि नहीं की । दक्ष ने दूसरी बार असिक्नी द्वारा शबलाश्व नामक हजार पुत्रों को जन्म दिया । ये भी नारद के उपदेश से भाइयों के समान विरक्त हो गये । तीसरी बार दक्ष ने असिक्नी द्वारा साठ पुत्रियों को प्राप्त किया । (२) पंजाब की एक नदी जिसको चन्द्रभागा और चिनाब भी कहते हैं ।

असित–देवर्षि नारद, असित, देवल और व्यास ये चारों भगवान के यथार्थ तत्व को जानने वाले, उनके महान प्रेमी भक्त और परम ज्ञान महर्षि हैं । ये अपने काल के बहुत ही पूजित और महान सत्यवादी महापुरुष माने जाते हैं । ये नित्य ही भगवान की महिमा गाया करते हैं और उसका विस्तार करते हैं । असित मुनि कश्यप ऋषि के पुत्र थे । ये ब्रह्म वेत्ता और ब्रह्म का उपदेश करनेवाले थे । असित के उनकी पत्नी एक पर्णा के गर्भ से महातपस्वी योगाचार्य 'देवल' नामक पुत्र उत्पन्न हुए । दोनों पिता-पुत्र बड़े ही प्रवीण थे ।(२) चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष (३) शनिग्रह ।

असितगिरि—नीलगिरि ।

असितध्वज–कश्यप और विनता का एक पुत्र ।

असित पर्वत–आनर्त देश में नर्मदा के किनारे का एक पर्वत ।

असिपत्र वन–एक वन ।

असुर–कश्यप और दिति के पुत्र, राक्षस, दैत्य ।

असुरा–कश्यप और दक्ष पुत्री प्राधा की एक पुत्री (२) रात्रि ।

असिलोम–महिषासुर का एक सेनापति ।

अस्ताचल–पश्चिम पहाड़ ।

अस्ति–मगध के राजा जरासंध की पुत्री, कंस की पत्नी ।

अहंकार–पचीस तत्वों में से एक। भगवद् शक्ति के कारण विकार को प्राप्त महत् तत्व से अहंकार की उत्पत्ति होती है। यही संकर्षण मूर्ति है। यही वैकारिक, तैजस और तामस इस तरह सत्वादि गुण, संबंध से तीन माना गया है। मन, इन्द्रिय, और पंच महाभूत इनकी उत्पत्ति है। अहंकार सत्वगुण से शान्त रजोगुण से घोर, और तमोगुण से विमूढ़ कहा जाता है। शरीर के अन्दर चक्षु आदि इन्द्रियों में चिदाभास के तेज से ज्यादा अन्तःकरण 'मैं पन' का अभिमान करता है। इसको अहंकार कहते हैं। विषयों की अनुकूलता से यह सुखी और प्रतिकूलता से दुःखी होता है। सुख और दुःख इस अहंकार के ही धर्म हैं।

अहं–प्रकाश रूप भगवान विष्णु।

अहंयाति–सोमवंश के राजा संयाति के पुत्र। इनके पुत्र राजा रौद्राश्व थे।

अहल्या–पूरुवंश की राजकुमारी, राजा मुग्दल की पुत्री, गौतम ऋषि की पत्नी। इन्द्र ने धोखा देकर अहल्या से समागम किया जिसका पता लगने पर गौतम ऋषि ने दोनों को शाप दिया। अहल्या शिला बन कर अनेक काल तक तपस्या करती रही। गौतम ने कहा था त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्र के चरण स्पर्श से उसका शाप मोक्ष होगा। विश्वामित्र के साथ राक्षसों का वध कर राम लक्ष्मण के साथ जनक राजधानी को जाते समय रास्ते में एक सूना आश्रम दिखाकर विश्वामित्र ने उन्हें अहल्या की कहानी सुनाई। शिला पर श्री रामचन्द जी का पैर पड़ते ही एक सुन्दर स्त्री प्रत्यक्ष हुई। अहल्या भगवान की स्तुति कर पति लोक चली गई।

अहिंसा–किसी भी प्राणी को कभी भी लोभ, मोह या क्रोधपूर्वक अधिक मात्रा में, मध्य-मात्रा में, या थोड़ा सा भी किसी प्रकार का कष्ट स्वयं देना, दूसरे से दिलवाना या कोई किसी को कष्ट देता हो तो उसका अनुमोदन करना; हर हालत में अहिंसा है। इस प्रकार की हिंसा का किसी भी निमित्त से मन, वाणी शरीर द्वारा न करना—ये सभी अहिंसा के भेद हैं।

अहोरात–दिन और रात, लगातार।

अक्ष–(१) रावण और मन्दोदरी का पुत्र, यह हनुमान से मारा गया। (२) एक प्रकार के वृक्ष के बीच (३) एक खेल, जुआ।

अक्षमाला–अक्षों की माला, प्रायः शिवभक्त इसको पहनते हैं, यह पवित्र मानी जाती है।

अक्षयपात्र–द्रौपदी के साथ जब पांचों पाण्डव वनवास के लिए गए तब अनेक ऋषि-मुनि और ब्राह्मण भी इनके साथ गए। इनको खिलाने-पिलाने के लिये धर्मपुत्र के पास संपत्ति नहीं थी। धर्मपुत्र ने सूर्य की तपस्या की। सूर्य ने प्रसन्न होकर धर्मपुत्र को एक पात्र दे कर कहा कि जब तक द्रौपदी भोजन नहीं करती, तब तक उसमें से सब प्रकार के भोज्य पदार्थ निकलेंगे। इस पात्र को अक्षयपात्र कहते हैं।

अक्षर–जिसका कभी किसी भी कारण से विनाश न हो उसे अक्षर कहते हैं। परब्रह्म, परमात्मा भगवान् विष्णु।

अक्षसूत्र–आपस्तम्ब नामक महर्षि की पतिव्रता पत्नी।

अक्षहृदय–एक मन्त्र जिसके प्रभाव से एक पेड़ के पत्ते, फूल, आदि कितने हैं, यह बिना गिने बता सकता है। अयोध्या नरेश ऋतुपर्ण ने यह मन्त्र छद्मवेषी नल को बताया था।

अक्षौहिणी–एक बड़ा सेना विभाग। इसमें २१८७० रथ, उतने हाथी, ६५६१० घोड़े और गदा, शंख, खड्ग, धनुषबाण, शतघ्नी (लकड़ी का गोल डण्डा जिसमें लोहे की कीलें गढ़ी हो) आदि शस्त्रों से सज्जित १०९३५० पदादि होते हैं।

आ–ब्रह्मा का नाम

आकाश–(१) आसमान, (२) मुक्त स्थान, (३) ब्रह्म।

आकाश दीप–कार्तिक मास में दीवाली पर लक्ष्मी या विष्णु का स्वागत करने के लिए ऊपर टंकी हण्डी पर रखा हुआ दीपक।

आकाशवाणी–देखिये अशरीर वाक्।

आकूति–ब्रह्मा के पुत्र स्वायंभू मनु और शतरूपा की पुत्री, रुचि प्रजापति की पत्नी। उनके एक लड़की और लड़का पैदा हुआ। लड़का साक्षात् यज्ञ स्वरूप भगवान् विष्णु का अंशावतार था और यज्ञ से विख्यात हुआ। लड़की थी दक्षिणा (जो यज्ञ-यागादियों में दी जाती है) और लक्ष्मी देवी की अंशसंभवा थी। स्वायंभू मनु ने पुत्रिका विधि से यज्ञ को अपने पुत्र के समान पाला।

आकृति–प्राचीन भारत का एक राजा।

आगम–(१) ज्ञान (२) परम्परागत सिद्धान्त (३) आना (४) जन्म (५) धर्मग्रंथ (६) चार प्रकार के प्रमाणों में से अन्तिम जिसे नैय्यासिक 'शब्द' या 'आप्तवाक्या' कहते हैं।

आगस्तिनोस–ईसाई मत का एक संत, पुण्यात्मा।

आग्निवेश्य–द्रोणाचार्य के गुरु एक महर्षि, धनुर्वेद के आचार्य थे।

आग्नीन्ध्र–स्वायंभू मनु के पुत्र प्रियव्रत के पुत्र। जम्बूद्वीप के अधिपति थे। पूर्वचित्ति नाम की अप्सरा इनकी पत्नी थी। इनके नाभि, किंपुरुष हरिवर्ष, इलाव्रत, रम्यक, हिरण्मय, कुरु, बृहदश्व और केतुमाल नाम के नौ पुत्र हुए। आग्नीन्ध्र ने जम्बुद्वीप के नौ भाग कर एक एक विभाग का राजा एक-एक पुत्र को बनाया।

आग्नेयास्त्र–एक दिव्य अस्त्र जिसका देवता अग्नि है।

आचमन–पूजा, यागादि से पहले भक्त आचमन करता है। हथेली में थोड़ी मात्रा में जल लेकर तीन बार पीता है। फिर हाथ धो कर पूजा करता है।

आचार्य–आध्यात्मिक गुरु।

आजगर–एक मुनि।

आजगर व्रत–अजगर के समान एक बार बहुत सारा खा कर कई दिनों तक पड़ा रहना। यदृच्छया हाथ में आया हुआ भोजन ही खाना, यदि न मिले तो भूखा रहना।

आजानुबाहु–घुटनों तक लम्बी बाहों वाला, उत्तम पुरुष का लक्षण।

आज्ञाचक्र–भ्रू मध्य में दो दलवाला पद्म। श्री गुरु इस पद्म में बैठकर आज्ञा देते हैं, इसलिये इसको आज्ञाचक्र कहते हैं।

आत्रेय–एक सिद्धि मुनि जो एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक जा सकते थे।

आत्रेयी–(१) ध्रुव वंश के मनु के पुत्र कुरु की पत्नी। इनके छ. पुत्र थे। (२) अत्रि मुनि की पत्नी अनसूय का अपर नाम (३) एक नदी का नाम।

आत्मदेव–तुङ्गभद्रा तट पर निवास करने वाले सत्यवादी और सत्कर्मपरायण एक ब्राह्मण जो सर्ववेद विशारद थे। इनके पुत्र थे प्रसिद्ध गोकर्ण और धुन्धुकारी।

आत्मबोध–(१) आध्यात्मिक ज्ञान (२) आत्मा का ज्ञान (३) श्री शंकराचार्य की एक कृति।

आत्मयोनि–विष्णु का नाम, जिनका कारण दूसरा कोई नहीं–ऐसे स्वयं योनिरूप भगवान।

आत्म विद्या–वह विद्या जिससे यह ज्ञान होता

है कि आत्मा ही ब्रह्म है ।

आत्मसंयम—अपनी इन्द्रियों को काबू में रखना ।

आत्मा—अहंकार आदि विकार, सुख-दुःख आदि अनुभव जिसके द्वारा अनुभव किए जाते हैं और जो स्वयं अनुभव नहीं किया जाता है, जो सबका साक्षीरूप रहता है, उसे आत्मा कहते हैं । जो आत्मा स्वयं प्रकाश, अन्न मयादि पाचों कोशों से पृथक तथा जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं का साक्षी हो कर भी निर्विकार, निर्मल और नित्यानन्द स्वरूप है उसे वास्तविक आत्मा समझना चाहिए। विद्वानों का कहना है कि आत्मा ही परमात्मा है ।

आदाम—ईसाई मत के अनुसार सृष्टि का पहला मनुष्य ।

आदिकवि—(१) प्रथम कवि ब्रह्मा जिन्होंने संसार के सर्वप्रथम काव्य (वेद) की रचना की और उसका ज्ञान दिया । (२) वाल्मीकि का विशेषण जिन्होंने सर्वप्रथम कविता (रामायण) लिखी ।

आदिकारण—विश्व का प्रथम कारण जो वेदान्तियों के अनुसार 'ब्रह्म' है और वैशेषिकों के अनुसार 'अणु' है ।

आदिकाव्य—प्रथम काव्य वाल्मीकि रामायण । क्रौंच दम्पति के एक पक्षी को व्याध के द्वारा मारा देख वाल्मीकि को दुष्ट व्याध पर क्रोध और क्रौंच पक्षी की दुरवस्था देख शोक हुआ । विकाराधीन होकर उनके मुँह से जो शब्द निकले वे काव्य रूप में थे। उसके बाद ब्रह्मा के आदेश से उन्होंने रामायण की कथा काव्य में लिखी ।

आदिकूर्म—क्षीर सागर मथते समय मन्दर पर्वत नीचे जा रहा था उसको उठाकर स्थिर रखने के लिये भगवान् विष्णु 'कूर्म' का अवतार लेकर सागर के अन्दर रहे । इस कूर्म को आदि कूर्म कहते हैं ।

आदिदेव—परमात्मा, नारायण, विष्णु, शिव ।

आदित्य—(१) विष्णु का नाम (२) कश्यप मुनि और अदिति के बारह पुत्रों को आदित्य कहते हैं । (३) साधारण प्रयोग में आदित्य से सूर्य का ही अर्थ होता है ।

आदित्यकेतु—धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

आदित्यवर्ण—एक राजा ।

आदित्यहृदय—शत्रु संहारक एक मन्त्र जिससे आदित्य की स्तुति होती है । राम-रावण युद्ध के समय अगस्त्य महर्षि ने यह स्तोत्र श्रीराम को बताया था ।

आदिदैव— सब के आदि कारण और दिव्य स्वरूप महाविष्णु ।

आदिपर्व—महाभारत का प्रथम पर्व ।

आदि बद्रि—बद्रीनाथ में कर्ण प्रयाग के पास एक पुण्य स्थल ।

आदिशिशिर—व्यासपुत्र शाकल्य के एक शिष्य ।

आनक—(१) यादव वंश का एक राजकुमार, वसुदेव का भाई । कंस की बहन कंका इसकी पत्नी थी और सत्यजित और पुरुजित पुत्र थे । (२) एक प्रकार का बाजा, ढोल । (३) गर्जने वाला बादल ।

आनकदुन्दुभि—वसुदेव के जन्म के समय आनक और दुन्दुभि बजी थी, इसलिये उनका नाम आनकदुन्दुभि भी है ।

आनन्द—अनामित्र नामक ऋषि के पुत्र । ये छठे मन्वन्तर के मनु चाक्षुष के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

आनन्द लहरी—श्री शंकराचार्य रचित स्तोत्रों का एक ग्रन्थ ।

आनर्त—(१) वैवस्वत मनु के पुत्र शर्याति के एक पुत्र (२) एक नगरी का नाम (आधुनिक गुजरात) जिसको आनर्त के पुत्र रेवत ने बनवाया । (३) रंगमंच (४) युद्ध ।

आन्ध्र—दक्षिण भारत का एक प्रदेश जो पौराणिक काल में प्रसिद्ध था ।

आप–अष्ट वस्तुओं में एक ।

आपगा–एक नदी ।

आपस्तम्ब–एक महर्षि ।

आपूरण–कश्यप वंश का एक सर्प ।

आप्तकाम–(१) परमात्मा (२) जिसने अपनी इच्छा पूर्ण कर ली ।

आभिचार–अभिशाप, जादू ।

आभीर–सिन्धु-सरस्वती के तट पर निवास करने वाले म्लेच्छ जाति के लोग ।

आयति–महामेरु की एक पुत्री जिससे भृगु महर्षि के पुत्र धाता ने विवाह किया था । इनके पुत्र मृकण्ड ऋषि थे ।

आयु–(१) यदुवंश के एक राजकुमार अनु के पौत्र, इनके पुत्र थे सात्वत, वृष्णि, अन्धक आदि । (२) पुरुरवा के एक पुत्र ।

आयुर्वेद–धन्वन्तरि महर्षि ने चिकित्सा संप्रदाय के बारे में जो शास्त्र लिखा था उसको आयुर्वेद कहते हैं ।

आयुष्मान–(१)हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रह्लाद का पुत्र ।(२) नवें मन्वन्तर में भगवान विष्णु एक आयुष्मान के पुत्र ऋषभ नाम से जन्म लेंगे ।

आरब्ध–ययाति के वंशज सेतु पुत्र इनके पुत्र गान्धार थे ।

आरुणि–(१) आयोध धौम्य ऋषि के एक शिष्य, उद्दालक (२) कश्यप और विनता का एक पुत्र (३) उपनिषदों में में एक ।

आरुषी–मनु की पुत्री, च्यवन महर्षि की पत्नी । और्व ऋषि इनके पुत्र थे ।

आर्चिक–ऋक्वेद की व्याख्या करनेवाला ।

आर्द्रा–छठा नक्षत्र । केरल में पौष मास में स्त्रियां आर्द्रा नक्षत्र के दिन व्रत रखती हैं और शिव दर्शन विशिष्ट मानती हैं (देखिए तिरुवातिरा)

आर्य–(१) उत्तर-पश्चिम से उत्तर भारत में आकर रहनेवाले लोग जो सुसंस्कृत थे । वेदों में इनकी चर्चा है । (२) आदरणीय, (३) स्वामी (४) गुरु (५) मित्र ।

आर्यक–(१) एक नाग । दुर्योधन ने भीमसेन को विष दे कर जब समुद्र में डाला, भीमसेन पाताल पहुँचे । वहां आर्यक ने भीमसेन की रक्षा की थी और वासुकि के पास पहुँचाया । (२) आदरणीय पुरुष (३) दादा ।

आर्यपुत्र–(१) प्राचीन काल में रानियां और राजकुमारियां अपने पतियों को आर्यपुत्र कह कर सम्बोधन करती थीं (२) आदरणीय ।

आर्यभट्ट–एक प्रसिद्ध ज्योतिशास्त्रज्ञ ।

आर्यावर्त–(१) भारत का दूसरा नाम । (२) विन्ध्य और हिमालय के बीच की पुण्यभूमि ।

आर्ष–(१) एक प्रकार का विवाह, वर पक्ष से एक जोड़ी गाय को ले कर कन्या का विवाह किया जाता है (२) ऋषि सम्बन्धी ।

आर्ष्टिषेण–एक महर्षि, कठिन तपस्या कर वेदज्ञ हो गये ।

आवरण–ऋषभदेव के पौत्र, भरत और पांचजनी पुत्र ।

आवर्तन–विष्णु का नाम, संसार चक्र को चलाने के स्वभाव वाले ।

आवाहन–भक्त पूजा शुरु करने से पहले मन्त्र बोल कर इष्टदेव का पार्थिव मूर्ति में आवाहन करता है । इससे यह संकल्प होता है कि देव उस मूर्ति में उपस्थित हो गये ।

आविर्होत्र–ऋषभदेव के नौ सन्यासी पुत्रों में से एक । वे सब बड़े भाग्यवान् और निपुण थे । आत्मविद्या के सम्पादन में बड़ा परिश्रम किया था । ये योगीश्वर भगवान के परम प्रेमी भक्त और सूर्य के समान तेजस्वी थे ।(दे० अन्तरिक्ष)

आशिस–आशीर्वाद, मंगल कामना ।

आश्रम–(१) भगवान विष्णु का नाम, सबको आश्रय देने वाले ।(२)सनातन धर्म के अनुसार चार आश्रम हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास । प्रत्येक आश्रम के प्रत्येक नियम और

व्यवहार है। ऐसी श्रुति है कि विराट पुरुष के उरु स्थल से गृहस्थाश्रम, हृदय से ब्रह्मचर्याश्राम, वक्षस्थल से वानप्रस्थाश्राम और मस्तक से सन्यास आश्रम की उत्पत्ति हुई। (३) पर्णशाला, कुटिया।

अश्वलायन–विश्वामित्र के एक ब्रह्मवादी पुत्र, ऋषि।

आषाढ़–(१) एक मास का नाम (२) कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री क्रोधवशा के पुत्र थे क्रोधवश। इनका पुनर्जन्म आषाढ नामक राजा था। (३) एक नक्षत्र। (४) शिवजी का नाम।

आसन–अधिक काल तक सुखपूर्वक जिस प्रकार बैठा जाय उसे आसन कहते है। आसन अनेक प्रकार के हैं। उनमें से आत्मसंयम चाहने वाले पुरुष के लिए सिद्धासन, पद्मासन, स्वस्तिकासन—ये तीन बहुत उपयोगी माने गए हैं। कोई भी आसन हो मेरुदण्ड, मस्तक और ग्रीवा को सीधा अवश्य रखना चाहिए। स्वास्थ्य को कायम रखने के भी कई आसन हैं जैसे शीर्षासन, भुजंगासन, सर्वांगासन आदि। ध्यान करने के लिए जिस आसन से दीर्घकाल तक सुखपूर्वक बैठ सके, वही आसन उत्तम है।

आसुर–एक प्रकार का विवाह। पिता से कन्या का मोल देकर जो विवाह होता है, उसको आसुर विवाह कहते हैं।

आसुरी–(१) एक ब्रह्मवादी ऋषि। सांख्य दर्शन के आचार्य थे। कहा जाता है कि इनको आध्यात्मिक ज्ञान अपनी पत्नी कपिला से मिली (२) एक प्रकृति का एक भेद (दे–प्रकृति)

आस्तिक–महर्षि जरत्कारू और उनकी पत्नी जरत्कारू के पुत्र थे। ये बड़े ज्ञानी ऋषि थे। इन्होंने ही सर्पों की रक्षा के लिये जनमेजय के सर्पसत्र को रोका था। माँ के गर्भ से ही इन्होंने अपने पिता, भगवान शिव और श्रीपार्वती से ज्ञानोपदेश प्राप्त किया था। ये जितेन्द्रिय, तेजस्वी, वेदज्ञ और विष्णु भक्त थे।

आहुक–यादव वंश के पुनर्वसु के पुत्र, देवक और उग्रसेन इनके पुत्र थे।

आहुकी–यादव वंश के पुनर्वसु की पुत्री, आहुक की बहन।

आहुति–(१) यज्ञ और होम करते समय होमकुण्ड की अग्नि में घी आदि सामग्रियों की आहुति दी जाती है। (२) बलिदान।

आहा–एक गन्धर्व।

इ

इ–(१) कामदेव (२) क्रोध (३) करुणा।

इकबाल–एक प्रसिद्ध मुस्लिम कवि।

इंगुदी–एक औषधि का वृक्ष।

इड़विड़ा–विश्रवा की पत्नी, यक्षराज कुबेर की माँ।

इडस्पति–दूसरे मन्वन्तर के देवताओं में से एक।

इड़ाला–(१) पृथ्वी (२) गाय (३) एक देवी का नाम।

इड़ावत्सर–तीस दिनों का एक मास, ऐसे १२ मासों का एक इड़ावत्सर होता है।

इतिकर्तव्यतामूढ़– किं कर्तव्य विमूढ़, व्याकुल, असमंजस में पड़ा हुआ।

इतिहास–(१) भगवान के अनेक अवतारों की लीलाओं की कथा जैसे रामायण, महाभारत

आदि (२) परम्परा से प्राप्त उपाख्यान समूह।

इध्म–दूसरे मन्वन्तर [स्वारोचिष] के देवगणों में से एक।

इध्मजिह्व–स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत और सुरूपा के एक पुत्र, प्लक्षद्वीप के पहले चक्रवर्ती थे। द्वीप के इन्होंने सात भाग किए जिनको वर्ष कहते हैं। एक-एक वर्ष को अपने सात पुत्रों में से एक-एक को सौंप दिया।

इध्मवाह्–अगस्त्य ऋषि और लोपामुद्रा के एक पुत्र। इनका नाम त्रिदस्यु था। जब लोपामुद्रा गर्भवती थी तब ऋषि ने पूछा कि तुम्हें साधारण हजार पुत्र चाहिये या सौ-सौ पुत्रों, की महिमा रखने वाले दस पुत्र, या हजार पुत्रों की महिमा रखने वाला एक पुत्र चाहिये। लोपामुद्रा ने एक पुत्र को मांगा। गर्भ में शिशु सात साल रहे। जन्मते ही शिशु वेद-मन्त्रों का उच्चारण करने लगा। जब कुछ बड़ा हुआ तो अपने पिता के होम के लिए लकड़ियाँ (इध्म) इकट्ठा करने लगा, इसलिए शिशु का नाम इध्मवाह हो गया।

इन्दीवर–कमल।

इन्दु–(१) चन्द्रमा (२) कपूर।

इन्दुकला–चन्द्रमा की कला।

इन्दुकान्त–चन्द्रकान्त मणि।

इन्दुचूड़–शिव का विशेषण।

इन्दुमती–(१) पूर्णिमा (२) महाराजा अज की पत्नी।

इन्दुमौलि–शिव।

इन्दुवासर–सोमवार।

इन्दुशेखर–शिव।

इन्द्र–(१) कश्यप ऋषि और अदिति के पुत्र। ये देवताओं के राजा हैं। सौ अश्वमेध समाप्त करने वाले इन्द्रपद को प्राप्त करते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर में एक एक इन्द्र होते हैं। इन्द्र के बारे में महाभारत और भागवत में अनेक कथायें हैं। वैदिक काल में इन्द्र सबसे मुख्य और पूज्यनीय माने जाते थे। ये दस्यु के नाशक, ऋषि मुनियों के रक्षक और वर दायक के रूप में दिखते हैं। लेकिन पुराणों और इतिहासों में वर्णित इंद्र स्त्रियों में विशेष आसक्ति रखने वाले, हमेशा अपने इन्द्रपद की चिन्ता से चिन्तित और भयभीत, किसी की कठिन तपस्या करने पर उसमें विघ्न डालने में परिश्रम करते और उपाय सोचते हुये दिखते हैं। इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी या शचि है, पुत्र जयन्त, वलि, अर्जुन आदि हैं, नगर अमरावती है। वज्र इनका आयुध है। (२) वर्षा का देवता (३) शासक।

इन्द्रगोप–एक प्रकार का कीड़ा जो सफेद या लाल रंग का है।

इन्द्रजित–(१) लंका नरेश रावण और मंदोदरी का पुत्र। पैदा होते ही मेघ गर्जन के समान गम्भीर शब्द शिशु ने निकाला, इसलिये शिशु का नाम मेघनाद रखा गया। बड़ा होने पर अपने पिता के साथ देवासुर युद्ध में भाग लिया और इन्द्र को जीत लिया, इसलिये इन्द्रजीत नाम पड़ा। शिव की प्रसन्नता के लिये याग किया था। परम शिव ने प्रसन्न हो कर 'समाधि' नाम की विद्या दी जिससे वह अदृश्य रह सका। इन्द्रजीत अतीव पराक्रमशाली, युद्धवीर था। राम-रावण युद्ध में इसने अनेकों वानरों को मौत के घाट उतारा। इसकी शक्ति लगकर लक्ष्मण बेहोश हो गये थे। अन्त में लक्ष्मण के साथ युद्ध कर रंगभूमि में वीरगति पायी।

इन्द्रतीर्थ–सरस्वती नदी के किनारे एक पुण्य स्थान जहाँ इन्द्र ने सौ यज्ञ किये थे।

इन्द्रतोया–गन्धमादन पर्वत के पास से निकलने वाली एक नदी जहाँ स्नान कर तीन रात बिताने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

इन्द्रदैवत–पुत्र जन्म के लिये यह यज्ञ किया जाता है।

इन्द्रधनुष–(१) इन्द्र का धनुष (२) बरसात के दिनों में जब सूरज निकलता है तब कभी-कभी सूर्य की दूसरी तरफ सात रंगों की धनुषाकृति निकलती है। इसको इन्द्रधनुष कहते हैं।

इन्द्रद्युम्न–(१) गन्धमादन पर्वत के समीपस्थ एक सरोवर जहाँ नाडीजंघ नामक एक बकुल और आकूपार नामक कछप रहते थे। (२) द्रविड़ देश में पाण्ड्यदेश के राजा थे और बड़े विष्णु भक्त थे। वृद्धावस्था में कुलाचल पर्वत में एक कुटिया बनाकर तपस्या करते थे। एक बार मौन व्रत धारण कर भगवान का ध्यान कर रहे थे। उस समय महामुनि अगस्त्य शिष्य गणों के साथ वहाँ आए। राजा को मौन और अपने को आथित्य सत्कार से वंचित देखकर मुनि कुपित हुए और शाप दिया कि वह अज्ञानान्धकार में पड़े गज का जन्म लें। शाप को अपनी तकदीर समझ कर राजा ने हाथी का जन्म ले लिया। इन्हीं गजराज की रक्षा भगवान विष्णु ने मगर के मुँह से की और उन्हें मोक्ष दिया (दे. गजराज, गजेन्द्र मोक्ष) (३) एक मुनि का नाम।

इन्द्रध्वज–वर्षा होने के किये इन्द्र के प्रीत्यर्थ होम करते समय पहले ध्वजा लगाया जाता है, इसको इन्द्रध्वज कहते हैं। वर्षा के देवता इन्द्र माने जाते हैं।

इन्द्रनील–एक प्रकार का कीमती पत्थर।

इन्द्रपूजा–(१) इसको इन्द्रोत्सव भी कहते हैं। सोमवंशी राजा वसु के समय से आरम्भ हुआ। वसु ने दीर्घकाल तक तपस्या की। इन्द्र ने संतुष्ट होकर एक वेणु दण्ड दिया। उसे भूमि में गाड़कर वसु ने पूजा की। इन्द्र ने हंस के रूप में वसु को दर्शन दिया था, इसलिये यष्टि के ऊपर हंस का रूप रख कर पुष्पमाला, धूप, दीप, चन्दन आदि से पूजा की। तब से इन्द्रपूजा प्रचलित हो गई। (२) नन्द गोप आदि व्रजवासी इन्द्र पूजा करते थे। श्रीकृष्ण के कहने के अनुसार एक बार व्रजवासियों ने इन्द्र की पूजा न कर गोवर्धन पर्वत की विधिवत् पूजा की।

इन्द्रप्रस्थ–पाण्डवों की राजधानी, आधुनिक दिल्ली। पाण्डव अर्धराज्य के अवकाशी थे। धृतराष्ट्र ने इस बात को मान कर खाण्डव प्रस्थ वन में इनको भेजा। वहाँ असुर शिल्पि मय ने श्रीकृष्ण और महर्षि व्यास के उपदेश के अनुसार इन्द्रलोक के समान एक सुन्दर नगर बनाया जिसका नाम इन्द्रप्रस्थ है। खाण्डव दहन के समय अर्जुन ने मय की रक्षा की थी। यह नगर इतना सुन्दर और अद्भुत था कि वहाँ स्थल-जल का भ्रम होता था। यहीं दुर्योधन राजसूय यज्ञ के बाद स्थल-भ्रम से जल में गिर पड़ा था।

इन्द्रलोक–इन्द्र का लोक, स्वर्ग, जहाँ इन्द्र और अन्य देवता रहते हैं।

इन्द्रवाह–इक्ष्वाकु वंश के राजा ककुत्थ। ककुत्थ बड़े योद्धा और वीर थे, इसलिये इन्द्र ने असुरों से युद्ध करने के लिये इनको स्वर्ग बुलाया। ककुत्थ ने इन्द्र को एक बैल बनाकर उस पर चढ़कर असुरों से युद्ध किया। इन्द्र को वाहन बनाने के कारण उसका नाम इन्द्रवाहन हो गया।

इन्द्रसावर्णि–इस कल्प के चौदहवें मन्वन्तर के मनु। इनके उरु,गम्भीरबुद्धि आदि पुत्र होंगे। इस मन्वन्तर में पवित्र और चाक्षुस देवगण होंगे और शुचि इन्द्र होंगे। अग्नींध्र, मगध अग्निबाहु, शुची, मुक्त, शुद्ध और अजित सप्तर्षि होंगे। सत्रायण नाम से विनता और वृहत्भानु के पुत्र भी होकर भगवान जन्म लेंगे।

इन्द्रसूनु–(१)जयन्त (२)अर्जुन (३) वानरराज बलि।

इन्द्रसेन–(१)असुर राजा वलि का अपरनाम। (२) नल महाराजा के पुत्र का नाम। (३)राजा परीक्षित के एक पुत्र का नाम। (४)मनु के वंशज कुर्च के पुत्र, इनके पुत्र सत्यश्रवा थे।

इन्द्रसेना–(१)नल महाराज का पुत्री का नाम। (२) द्रौपदी के पूर्वजन्म का नाम।

इन्द्राणी–इन्द्र की पत्नी। कश्यप ऋषि और दक्षपुत्री दनु का असुर पुत्र था पुलोम। पुलोम की पुत्री शची से इन्द्र का विवाह हुआ। पुलोमा की पुत्री होने से शची के दूसरे नाम थे पौलोमी और पुलोमजा।

इन्द्रिय–शरीर के वह अवयव जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। ज्ञानेन्द्रिय दो प्रकार के हैं, ज्ञानेन्द्रिय (कान, त्वचा, आँखें, नाक, कान) और कर्मेन्द्रिय (पायु, उपस्थ, हाथ, पाँव और मुख)

इन्द्रिय ज्ञान–चेतना।

इन्द्रिय निग्रह–इन्द्रियों का नियन्त्रण।

इन्द्रोद–शुनक मुनि के पुत्र शौनका अपर नाम।

इन्द्रोत्सव–देखिए : इन्द्रपूजा।

इम्मान्वल–ईसाई मत के एक देवदूत जिन्होंने क्रिस्तु का नाम जोसफ को बताया था।

इरा–(१) दक्ष की पुत्री, कश्यप ऋषि की पत्नी। कहा जाता है कि तृण वर्ग का जन्म इनसे हुआ (२) पृथ्वी (३) वाणी की देवी सरस्वती।

इरावती– (१) कश्यप ऋषि और क्रोधवशा की पौत्री। इरावती का पुत्र ऐरावत है। (२) एक पुण्य नदी।

इरावान–अर्जुन और नागकन्या उलूपी का पुत्र। वनवास के समय एक दिन अर्जुन स्नान करने के लिए गंगा में उतरे। वहाँ नागकन्या उलूपी को देखकर एक दूसरे पर मोहित हो गए। उनका विवाह हुआ और उनका पुत्र इरावान जन्मा। इरावान ने पाण्डव पक्ष में मिलकर कौरवों से युद्ध किया। अलम्बुष के हाथ वह मारा गया।

इला–(१) ध्रुव की पत्नी और वायुदेव की पुत्री, उनका पुत्र है उत्कल। (२) वैवस्वत मनु और श्रद्धा की पुत्री, सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु की बहन। जब मनु निस्सन्तान थे पुत्र की कामना से वसिष्ठ मुनि के द्वारा मित्रावरुणों के प्रीत्यर्थ एक यज्ञ किया। कहा जाता है कि मित्रावरुणों के प्रसाद से पुत्र लाभ होता है। यज्ञ में जब ऋगवेद मन्त्रों का उच्चारण कर देवताओं का आह्वान कर रहे थे, व्रतनिष्ठा श्रद्धा ने उनसे प्रार्थना की कि मेरे पुत्री हो। अध्वर्यु के निरीक्षण में होता आहुति देने जा रहे थे, मन विचलित हुआ। पुत्र के बदले मनु की पुत्री पैदा हुई। यही इला है। मनु ने गुरु वसिष्ठ से यह बात बतायी। वसिष्ठ ने अपनी योगिक शक्ति के द्वारा भगवान विष्णु की शरण ली और उनके वरदान से इला को पुरुषत्व मिला और सुद्युम्न नाम हो गया।

एक बार राजकुमार सुद्युम्न ने अपने मित्रों के साथ शिकार के लिये मेरु पर्वत के जंगलों में उस जगह में प्रवेश किया जो शिव और पार्वती की क्रीड़ा भूमि थी। शिव से पार्वती को वर मिला था कि जो कोई उस जंगल में प्रवेश करेगा वह स्त्री बनेगा। इसलिये जंगल में घुसते ही सुद्युम्न और मित्रों ने अपने को स्त्री रूप में देखा। सुद्युम्न फिर से इला हो गया। अपनी सखियों के साथ वन में घूमते समय राजकुमारी ने सोम के पुत्र बुद्ध को देखा। दोनों एक दूसरे के रूप सौन्दर्य से आकृष्ट हो गये, विवाह हुआ और पुरुरवा नामक पुत्र पैदा हुआ। सुद्युम्न की स्थिति का परिचय पाकर वसिष्ठ ने शिव की स्तुति की और उनके वर से इला को बारी-बारी से एक एक महीने के लिये पुरुषत्व और स्त्रीत्व मिला। सुद्युम्न ने

कई साल तक राज्य किया, लेकिन अपने स्त्रीत्व से लज्जित होकर पुरुरवा को राज्य सौंप कर वह तपस्या करने वन चला गया। (२)एक नदी का नाम(३)पृथ्वी(४)गाय।

इलावर्ष—इलाव्रत। जम्बू द्वीप में नौ वर्ष हैं जो आठ-आठ पर्वतों से विभाजित और घिरे हैं। सब के बीच का वर्ष है इलावर्ष। इसके बीच में पर्वतों का राजा सुनहला सुमेरु पर्वत स्थित है। इसके उत्तर में पूर्व-पश्चिम की तरफ नील, श्वेत और शृंगवान पर्वत हैं; और दक्षिण में पूर्व-पश्चिम की तरफ निषाध, हेमकूट और हिमालय पर्वत हैं। इस वर्ष में भगवान संकर्षण को छोड़कर कोई पुरुष नहीं रहता क्योंकि शिव जी ने पार्वती को वर दिया था कि इस में जो कोई प्रवेश करेगा वह स्त्री बन जायगा।

इलास्पद—एक पुण्य नदी।

इल्वल—हिरणयकशिपु का मित्र एक असु (दे: वातापि)

इषुमान्—उग्रसेन की पुत्री कंसवती और वसुदेव के भाई देवश्रावा का एक पुत्र।

इक्षुमती—एक नदी का नाम।

इक्षुमालिनी—एक नदी का नाम।

इक्ष्वाकु—सूर्यवंशी राजाओं में अति प्रसिद्ध राजा, जिनसे सूर्यवंश का नाम इक्ष्वाकुवंश भी हो गया। ये वैवस्वत मनु और श्रद्धा के पुत्र थे। इनके सौ पुत्र हुए जिनमें विकुक्षि, निमि और दण्डक प्रथम हे।

इक्षुरसोद—मनु के पुत्र प्रियव्रत ने देखा कि सूर्य भूलोक के एक हिस्से पर प्रकाश डालता है, दूसरा हिस्सा अन्धकार में ही रहता है। अपनी अमानुषिक शक्ति और प्रभु के वरदान के प्रभाव से अपने चैत्ररथ में बैठकर अन्धकार को भी प्रकाशमय बनाने के विचार से सूर्य की गति से ही सूर्य के पीछे सात बार पृथ्वी की चक्कर लगाई। रथ के चक्र से जो गढ़े बन गये वे सात समुद्र हो गये जिससे भूखण्ड सात द्वीपों में विभाजित किया गया। सात समुद्रों में से एक है। इक्षुरसोद जो प्लक्षद्वीप को घेर कर स्थित है। यह प्लक्षद्वीप जितना चौड़ा है।

ई

ई—(१) कामदेव (२) क्रोध (३) शोक (४) तुर्यस्वरूप और एकाक्षरमयी देवी।

ईद—मुसलमानों का एक त्योहार।

ईश—(१) महादेव का नाम। (२) ध्रुव के पुत्र वत्सर और उनकी पत्नी स्ववींथी के पुत्र।

ईशान—(१) शिव (२) सूर्य (३) विष्णु, सर्व भूतों के नियन्ता।

ईशानी—दुर्गा देवी।

ईश्वर—(१)सर्वशक्तिमान भगवान(२)मालिक स्वामी।

उ

उ—शिव का नाम। ओम के (अ, इ, म,) तीन अक्षरों में से दूसरा।

उक्थ—(१) सामवेद का एक भाग (२) यज्ञ की सात विधियों में से एक। सात विधियाँ हैं—अग्निस्तोम, अत्याग्निस्तोम, उक्थ, षोडशी, अतिरात्र, आप्तर्याम और वाजपेय।

उगाता—यज्ञ करनेवाले मुख्य कर्मचारियों में से एक होता, अध्वर्यु, उगाता, ब्रह्मा।

उग्र—(१) शिव का नाम (२) असुर राजा शूरपद्म का सेनापति (३) प्रजापति कवि का

एक पुत्र (४) विष्णु का एक नाम।

उग्रकर्मा–(१) शाल्व देश का एक राजा (२) एक केकय राजा का सेनापति (३) भृगुकुल के मुनि सुतपा का पुत्र।

उग्रतेज–(१) शिव का नाम (१) एक सांप।

उग्रदर्श–महिषासुर का एक सेनापति।

उग्रश्रवा–(१)धृतराष्ट्र का एक पुत्र(२)महर्षि लोमहर्ष का पुत्र (३) पतिव्रता शीलावती का पति।

उग्रसेन–(१)यदुकुल के आहुक के पुत्र। मथुरा के राजा। इनके कंस आदि नौ पुत्र और कंसा आदि पाँच पुत्रियाँ थीं। (२)राजा जनमेजय का एक भाई। (३) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

उग्रायुध–दुष्यन्त के पुत्र भरत के वंशज नीप के पुत्र। इनके पुत्र क्षेम्य थे।

उच्चाटन–एक प्रकार का जादू-टोना।

उच्चैश्रवा–क्षीरसागर के मथन के समय अनेक वस्तुएँ सागर से निकलीं। उनमें से एक उच्चैश्रवा नामक प्रसिद्ध घोड़ा था जो चन्द्रमा के समान सफेद था। दानवों के राजा बलि ने उसको ले लिया।

उज्जीवन्त पर्वत–सौराष्ट्र देश में पिण्डारक क्षेत्र में स्थिति एक पर्वत।

उज्जैयिनी—मालवा प्रदेश में वर्तमान उज्जैन। इनकी बहुत पौराणिक प्रधानता है। हिन्दुओं की सात पुण्य नगरियों में से एक है। प्राचीन नाम अवन्ती है—अयोध्या, मथुरा, काशी, काञ्ची, अवन्ती, पुरी और द्वारका—ये सात पुण्य स्थान हैं। बलराम और श्रीकृष्ण ने अवन्ती में सान्दीपनी मुनि के आश्रम में रह कर अध्ययन किया था।

उञ्छवृत्ति–अनाजों का ढेर निकलने पर जो दाने छूट जाते हैं उनको चुनकर उपजीवन करने को उञ्छवृत्ति कहते हैं। पुराणों में ब्राह्मणों के लिये उञ्छावृत्ति एक माननीय उपजीवन-मार्ग बताया गया है।

उड्–एक देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा।

उडुपति–नक्षत्रों का राजा, चन्द्रमा।

उत्तंग–एक मुनि।

उतत्य–महर्षि अंगिरा और उनकी पत्नी श्रद्धा के एक पुत्र जो स्वारोचिष मन्वन्तर में विख्यात हुए। उतत्य ने सोम की पुत्री भद्रा से विवाह किया और उनके पुत्र हैं बृहस्पति।

उत्कल(१) ध्रुव और वायुपुत्री इला के एक पुत्र।(२)एक देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा। (३) एक असुर का नाम।

उत्कोच–एक पुण्य तीर्थ जहाँ धौम्य महर्षि तपस्या करते थे। पाण्डवों ने यहीं पर धौम्य को पुरोहित बनाया।

उत्क्रान्तिदा–मृत्यु का शक्ति नामक आयुध।

उत्भव–विष्णु का नाम, जगत की उत्पत्ति के कारण।

उत्सव–मन्दिरों में मनाया जाता है। मन्दिर की मूर्ति की प्रतिष्ठा की वर्षगाँठ के अवसर पर कई दिन तक उत्सव मनाया जाता है।

उत्तंक– (१) आयोघ धौम्य के शिष्य वेद नामक मुनि के शिष्य। गुरु-दक्षिणा के रूप गुरुपत्नी ने उनसे पौष्य राजा की रानी के कुण्डल माँगे। अनेक कष्ट सहकर उत्तंग ने गुरुपत्नी को कुण्डल ला कर दिया। (२) महाराजा जनमेजय को उत्तंग मुनि ने यह समाचार दिया था कि तक्षक ने उनके पिता परीक्षित महाराजा को काटा था। उन्हीं के उपदेश से जनमेजय ने सर्प सत्र आरम्भ किया था।

उत्तंस–(१) मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला एक आभूषण (२) श्रेष्ठ।

उत्तम(१)महाविष्णु का नाम, सर्वश्रेष्ठ।(२) स्वायंभुव मनु के पुत्र उत्तानपाद और पत्नी सुरुचि के पुत्र, ध्रुव के छोटे भाई। हिमालय पर्वतों में शिकार खेलते समय एक यक्ष से मारे गये। (३) चाक्षुष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक (४) तीसरे मन्वन्तर के मनु

का नाम । ये महाराजा प्रियव्रत के पुत्र थे । इनके पुत्र पवन, सृञ्जय, यज्ञहोत्र आदि थे । वसिष्ठ मुनि के प्रमद आदि पुत्र सप्तर्षि थे। इस मन्वन्तर के सत्य, वेदश्रुत और भद्र देव गण थे और इन्द्र का नाम सत्यजित था । धर्मदेव और उनकी पत्नी सूनृता के पुत्र सत्य सेन नाम से भगवान ने सत्यव्रत नामक देवगण के साथ जन्म लिया ।

उत्तमांग—शरीर का सब से श्रेष्ठ अंग, सिर ।

उत्तमौजा—पाण्डवों के एक मित्र, बड़े योद्धा थे । भारत युद्ध में कई वीरों को हराया, अंत में अश्वत्थामा से मारे गये ।

उत्तर—(१) विराट देश के राजकुमार । इन्होंने भारत युद्ध में भाग लेकर वीरगति पाई । (२) एक दिशा का नाम जिसके पालक कुबेर हैं । (२)एक मीमासा का नाम, उत्तर मीमांसा ।

उत्तरकाशी—पौराणिक काल से अति प्रसिद्ध पुण्य स्थान । यहां श्री विश्वनाथ का एक प्रसिद्ध क्षेत्र है । यह भागीरथी के तीर पर वरुणा और अस्सि नदियों से-वेष्ठित है । यहां एकादश रुद्रों का एक मन्दिर है। ऋषि-मुनियों का पुण्य स्थल है । दुर्योधन आदि कौरवों ने पाण्डवों का वध करने के लिये यहां लाखा-गृह बनवाया था। यहीं पर किरातरूपी शिव और अर्जुन का युद्ध हुआ था ।

उत्तरकुरु—जम्बू द्वीप का एक देश । जहां धर्म-पुत्र के राजसूय यज्ञ के सिलसिले में अर्जुन गये थे और बहुत चीजें इकट्ठी की थीं । यह सिद्ध पुरुषों का वासस्थान कहा जाता है और यहां मर्त्य का प्रवेश करना मुश्किल है। इसलिये यहां अतुल सम्पत्ति और अमूल्य रत्न धन आदि हैं ।

उत्तर कोसल—भारत का एक विभाग जिसको भीमसेन ने जीता था ।

उत्तर खण्ड—हिमालय प्रदेशों के बदरीनाथ केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि अति पुण्य स्थानों को मिलाकर उत्तर खण्ड कहते है । यह ऋषियों की पुण्य भूमि, देवताओं का प्रिय माना जाता है । पुराणों में यह पवित्र भूमि, देवभूमि, ब्रह्मर्षि देश, केदार खण्ड, बदरिकाश्रम आदि नामों से प्रसिद्ध है। यहां अनेक पावन क्षेत्र और तीर्थ हैं ।

उत्तर ज्योतिष—भारत के पश्चिम भाग में स्थित एक प्राचीन नगर जिसको नकुल ने जीता था ।

उत्तर पांचाल—भारत का एक प्राचीन देश (आधुनिक पंजाब के आस-पास) यहाँ के राजा थे द्रुपद (दे. द्रुपद)

उत्तर रामायण—रामायण का अन्तिम काण्ड । चौदह साल के वनवास के बाद श्रीरामचन्द्र जी का अयोध्या लौट आने पर अभिषेक होता है । तबसे उनके महानिर्वाण तक की कथा इसमें है ।

उत्तरा—विराट देश की राजकुमारी, वत्सराज की पुत्री, उत्तर की बहन, अभिमन्यु की पत्नी, महाराजा परीक्षित की माँ । अज्ञात-वास के समय अर्जुन बृहन्नला से हिजड़े के रूप में विराट देश में रहते थे । तब उत्तरा ने बृहन्नला से नाच-गाना सीखा ।

उत्तरायण—जब सूर्य की गति मध्यरेखा से लेकर उत्तर की ओर होती है तब उत्तरायण होता है । मकर से कर्क संक्रांति तक का काल है । जब सूर्य की गति दक्षिण की ओर होती है तब दक्षिणायन होता है । दिन और रात में फरक आता है । दक्षिणायन में रातें लम्बी और दिन छोटे होते हैं । जबकि उत्तरायण में रातें छोटी और दिन लम्बे होतेहैं ।

उत्तरीय—ऊपर पहनने का एक वस्त्र ।

उत्तानपाद—स्वायंभू मनु के एक पुत्र । इनकी दो रानियाँ सुनीती और सुरुची थीं । सुनीती के पुत्र ध्रुव और सुरुची के पुत्र उत्तम थे । (दे: ध्रुव)

उत्तानवर्हि–वैवस्वत मनु के वंशज एक राजा।
उत्तारण–विष्णु का नाम ।
उत्थानैकदशी–एक विशिष्ट एकादशी । पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु इसी दिन योगनिद्रा से जागकर सृष्टि का विचार करते हैं ।
उत्कल–राजा सुद्युम्न के पुत्र ।
उत्पल–कमल ।
उत्पलनेत्र–कमल के समान नेत्रों वाले भगवान।
उदक क्रिया–मृत पूर्वजों या पितरों का जल से तर्पण करना ।
उदकसुता–लक्ष्मी देवी ।
उदपानतीर्थ– (१) द्वारका, श्री कृष्ण की राजधानी । (२) सरस्वती के किनारे एक पुण्य तीर्थ ।
उदयन–(१) सोमवंश के प्रसिद्ध राजा । राजा सहस्त्रानीक और रानी मृगावती के पुत्र । इनकी दो रानियां थी पद्मावती और वासवदत्ता । (२)अगस्त्य मुनि का नाम ।
उदयाचल–उदय गिरि, इसके पीछे से सूर्य का उदय होना माना जाता है ।
उदर्क–महिपासुर का सेनापति ।
उदर्चि–(१) कामदेव (२) शिव ।
उदान–पञ्च प्राणों में से एक जो कण्ठ से आविर्भूत होकर सिर में प्रविष्ट होता है। अन्य चार प्राण हैं :—प्राण, अपान, समान, और व्यान ।
उद्दालक–आयोध धौम्य का आरुणि नामक शिष्य ।
उद्गीत–(१) सामवेद के मन्त्रों का गायन । (२)'ओम' जो परमात्मा का तीन अक्षरों का नाम हैं । (३)भरत वंश के राजा ऋषिकुल्य के पुत्र ।
उद्दावसु–महाराजा निमि के पुत्र जनक के पुत्र । इनके पुत्र नन्दिवर्धन थे ।
उद्दाम–(१) यम (२)वरुण ।
उद्धव-(१)श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त और मन्त्री थे इनका जन्म यादव वंश में हुआ । ये वृहस्पति के शिष्य अति बुद्धिमान थे । श्री कृष्ण ने मथुरा आने पर विरह पीड़ित मां-बाप और गोपियों को सान्त्वना देने के लिए उद्धव को दूत बनाकर वृन्दावन में भेजा । उद्धव का विचार था कि मुझसे बढ़कर भगवान का कोई भक्त नहीं है । भक्तवत्सल भगवान ने उनका यह घमण्ड भी चूर करना चाहा । भक्ति में उन्मत्त गोपियों को ज्ञानोपदेश देने उद्धव वृन्दावन में पहुँचे। लेकिन वहां जाकर उन्होंने देखा कि मनुष्य, पशु-पक्षी ही नहीं, वृन्दावन के कण-कण, फूल, पौधे, पेड़ आदि भी श्री कृष्ण प्रेम में इतने तन्मय हैं कि उनको अपनी सुध-बुध नहीं थी, 'सर्वंकृष्णमयं' देखा । वहाँ उद्धव और गोपियों के बीच जो संवाद हुआ उसको लेकर विख्यात भक्त कवि सूरदास ने 'भ्रमर-गीत' लिखा ।
असीम बलशाली यादव वंश का नाश कर, अपनी लीलाओं को समाप्त कर श्रीकृष्ण वैकुण्ठ जाने वाले थे । इस बात को जानकर उद्धव ने भगवान से प्रार्थना की कि मुझे भी साथ ले चलिये । भगवान ने अपने भक्त को दिव्य उपदेश दिए 'उद्धवोपाख्यान' अथवा 'उद्धव सन्देश' से भागवत में प्रसिद्ध है। भगवान के कहने के अनुसार वे सब कुछ छोड़कर तपस्या करने बदरिकाश्रम गये । (२) यज्ञाग्नि (३)पर्व ।
उद्भव–विष्णु का नाम ।
उद्वह–वायु के सात स्तरों में से चौथा ।
उद्वाह–विवाह ।
उन्मत्तवेश–शिव ।
उपकीचक–विराट राजा की पत्नी सुदेष्णा के कीचक के अतिरिक्त सौ भाई थे जो उपकीचक कहलाते थे । ये भीमसेन से मारे गये ।
उपगुप्त–(१) चन्द्रवंश का एक राजा (२) एक प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु । (३) जनक वंश के

राजा उपगुरु के पुत्र जो अग्निसम्भव थे ।

उपगु–रूजनक वंश के राजा सत्यरथ के पुत्र, इनके पुत्र,उपगुप्त थे ।

उपग्रह–राहु, केतु आदि छोटे ग्रह ।

उपचार–अतिथि और बड़ों के सेवा-सत्कार, शुश्रूषा आदि के षोडशोपचार होते हैं–आसन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, लेपन, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, शीतल जल, वस्त्र, आभूषण, माला, सुगन्ध, आचमनीय, सतल्प ।

उपदेव–(१) यदुवंश के अक्रूर का एक पुत्र । (२)मथुरा के उग्रसेन के भाई देवक का एक पुत्र, देवकी का भाई ।

उपदेवा–देवक की पुत्री, देवकी की बहन, वसुदेव की पत्नी । कल्पवर्ष आदि दस राजा इनके पुत्र थे ।

उपनन्द–(१) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (२) एक साँप ।

उपनयन–सोलह संस्कारों में से, जनेऊ पहनाना, वेदाध्ययन की दीक्षा देना । उपनयन संस्कार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का होता है । इसके बाद ये यज्ञोपवीत पहनते हैं ।

उपनिषद–ब्रह्म के प्रतिपादन में वेद की सार गर्भ बातों का समाहार । परमात्मा के साक्षात्कार के लिए कर्म, उपासना, ज्ञान इनकी व्याख्या करते तीन काण्ड है वेद में । कर्म शरीर को, उपासना से मन को, ज्ञान से बुद्धि को पवित्र करके उसकी पूर्णता जब होती है तब अमरत्व या परमात्मा का साक्षात्कार होता है । कर्मकाण्ड, उपासना या भक्तिकाण्ड और ज्ञानकाण्ड-सभी भगवत-प्राप्ति के मार्ग हैं । ज्ञान काण्ड वेदों का सार, वेद का अन्त, अथवा वेदांत कहा जाता है । उपनिषद इसके प्रतिपाद्य विषय हैं । मुख्यतः एक सौ आठ उपनिषद हैं; उनमें भी श्रेष्ठ दस कहे जाते हैं । वे हैं–ईशावास्योपनिषद, केनोपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डकोपनिषद, माण्डूक्योपनिषद, तैत्तरीयोपनिषद, ऐतरेयोनिषद, छान्दोग्योपनिषद, बृहदारण्योपनिषद ।

उपपातक–पाप दो प्रकार के हैं, महापाप और उपपातक ।

उपपुराण–पुराण असंख्य हैं, उनमें अठारह प्रधान हैं । बाकी पुराणों को उपपुराण कहते हैं ।

उपप्लव–(१) विपत्ति, दुर्घटना (२) सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण, (३) राहु ।

उपप्लव्य–एक नगर का नाम । अज्ञातवास के बाद पाण्डव इस नगर में रहते थे और यहीं से युद्ध की तय्यारी की थी ।

उपबर्हण–देवर्षि नारद के पूर्व जन्म का नाम । इस कल्प के पहले ब्रह्म कल्प में नारद उपबर्हण नामक एक गन्धर्व थे । वे बड़े सुन्दर और स्त्रियों के प्रिय, गन्धर्वों में मान्य थे । एक बार दक्ष, मरीचि आदि पूजनीय पुरुषों ने गन्धर्वों और अपसराओं को यज्ञ में गाने के लिये बुलाया था । स्त्रियों सहित उपबर्हण भी वहाँ गये, अनुमति लिये बिना ही अश्लील गीत गाने लगे । प्रजापतियों ने कुपित होकर नारद को शूद्र कुल में जन्म लेने का शाप दिया । शूद्र जन्म लेने पर भी वेदज्ञ संतमुनियों की संगति में आकर नारद ऊँचे उठें और उन्होंने ब्रह्मा के पुत्र होकर जन्म लिया ।

उपमन्थनी–अग्नि को उद्दीप्त करनेवाली लकड़ी ।

उपमन्यु–(१) आयोध धौम्य का एक प्रधान शिष्य । (२) व्याघ्रपाद नामक एक मुनि का पुत्र ।

उपयाज–(१) उपयाज और याज दोनों भाई थे और महर्षि थे । इन दोनों ने पांचाल राजा द्रुपद के लिये सन्तानार्थ यज्ञ किया था । तभी द्रुपद राजा के पुत्र दृष्टद्युम्न और पुत्री द्रौपदी हुई । (२)यज्ञ के अतिरिक्त यजुर्वेदीय मन्त्र ।

उपरक्त–ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा ।

उपरिचरवसु–वृष्णिवंश में इनका जन्म हुआ ।

इनका नाम वसु था। एक बार इन्द्र के कहने पर इन्होंने तपस्या की। इससे प्रसन्न होकर इन्द्र ने उनको एक विमान दिया जिसमें बैठ कर वसु आकाश में घूमा करते थे। इसप्रकार ऊपर चलते रहने से इनका नाम उपचरिवसु पड़ा। वसु ने ही सबसे पहले इन्द्रोत्सव मनाना शुरु किया था।

उपवास–(१) उपवास का अर्थ है भगवान के उप (पास)वास, अर्थात् सब प्रकार से पापाचारों और दुष्कर्मों से मन को फेर कर मन में सदा सच्चिदानन्दा भगवान का चिन्तन करना, भगवत्-भक्ति रसपूर्ण पुस्तकों का पारायण करना, सत्संग करना आदि है। उपवास कई तरह के हैं। निर्जल उपवास जिसमें पानी भी नहीं पिया जाता, दूसरा जिसमें भक्त फलाहार करता है। ब्रह्मचर्य रखना आवश्यक है। मांस, मत्स्य, नाग, शहद, स्त्रीप्रसंग, फूल आभूषण पहनना, शृंगार करना, अन्तर आदि लगाना मना है। पान खाना, दिन में सोना भी वर्जनीय है। (२) यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करना।

उपवीत–यज्ञोपवीत जनेऊ।

उपवेद–वेदों में निचले दर्जे का ग्रंथ समूह। उपवेद गिनती में चार हैं और प्रत्येक वेद का एक उपवेद है। ऋग्वेद के साथ आयुर्वेद, (कई विद्वानों का मत है कि यह अथर्ववेद का उपवेद है), यजुर्वेद के साथ धनुर्वेद या सैनिक शिक्षा, सामवेद के साथ गान्धर्ववेद या संगीत और अथर्ववेद के साथ स्थापत्यशास्त्र वेद या यान्त्रिकी संलग्न है।

उपशम–ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण।

उपशिष्य–शिष्य का शिष्य।

उपश्रुति–रात को सुनाई देनेवाली निद्रादेवी की भविष्यसूचक देववाणी।

उपश्लोक(१) श्रीकृष्ण और सैरन्ध्री (कुब्जा) का पुत्र जो शास्त्राभ्यास करके सांख्य योग के आचार्य बने। (२) ब्रह्मसावर्णि मनु के पिता का नाम।

उपसुन्द–एक राक्षस, निकुंभ का पुत्र, सुन्द का भाई।

उपाकर्म–वर्षारम्भ के पश्चात् वेदपाठ के उपक्रम से पूर्व किया जानेवाला अनुष्ठान।

उपाङ्ग–विज्ञान का गौण भाग, वेदांगों के परिशिष्ठ स्वरूप लिखा गया ग्रंथ समूह। ये चार हैं पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र।

उपाय चतुष्टय–शत्रु से किये जानेवाले चार उपाय-साम, दाम, दान, दण्ड।

उपेन्द्र–विष्णु, इन्द्र के छोटे भाई, वामन स्वरूप भगवान।

उमा–पार्वतीदेवी, हिमवान और मेना की पुत्री, शिव की पत्नी। अकार, उकार, मकरात्मक प्रणव स्वरूप देवी।

उमापति–शिव।

उरग–(१) पुराणों में वर्णित मानवमुखवाला अर्धदिव्य साँप। (२) एक सर्प विभाग। कश्यप और क्रोधवशा की पुत्री सुरसा के पुत्र।

उरग शत्रु–गरुड़, मोर।

उरगारि–गरुण, मोर।

उरगेन्द्र–शेष नाग या वासुकि।

उरगभूषण–शिव का विशेषण।

उरण–एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था।

उरुक्षिप–इक्ष्वाकु वंश के राजा बृहद्रण के पुत्र, इनके पुत्र वत्सवृद्ध थे।

उरुक्रम–वामनावतार के रूप में महाविष्णु।

उरुगाय–महाविष्णु का नाम जिनकी कीर्ति और नाम असंख्य लोगों से गाया जाता है।

उरुश्रवा–मनुवंश के राजा सत्यश्रवा के पुत्र, देवदत्त थे।

उर्वशी–इन्द्रलोक की एक प्रसिद्ध अपसरा। नर और नारायण ऋषि बदरिकाश्रम तपस्या कर रहे थे। इन्द्र को डर लगा कि ये इन्द्रपद के लिये तपस्या कर रहे हैं। तपस्या भंग करने

के लिये उसने कामदेव को नियुक्त किया । कामदेव ने रती देवी, मलयानिल, वसन्त ऋतु आदि के साथ बदरिकाश्रम में आकर अनेक हाव-भाव से ऋषियों का मन विचलित करने की कोशिश की । नारायण मुनि ने आँखें खोलीं और सामने कामदेव को सुर सुन्दरियों समेत देखा । अपनी योगमाया से उन्होंने उन सुन्दरियों से परम सुन्दर एक अपसरा की सृष्टि की जो उनकी उरु से निकली और उर्वशी से प्रसिद्ध हुई । ऋषि ने उसको कामदेव के पास इन्द्रलोक भेजा और वहाँ की एक प्रमुख अप्सरा बनी । महाराजा पुरुरवा के सौन्दर्य गुणों का वर्णन सुनकर उनकी पत्नी बनी ।

उर्वी–पृथ्वी ।

उर्वीश–ईश्वर, राजा ।

उर्वीधर–शेषनाग ।

उलूक–(१) शकुनि का पुत्र, सहदेव से मारा गया । (२) एक यक्ष (३) इन्द्र (४) कणाद मुनि (५) उलूक देश का राजा ।

उलूपी–एक नाग कन्या जो अर्जुन की पत्नी बनी, इनका पुत्र इरावान था ।

उल्का–आकाश में रहनेवाला एक तप्त तत्व ।

उत्कल-वैवस्वत्मनु के एक पुत्र ।

उल्मुक–(१) छठे मन्वन्तर के मनु चाक्षुप और नड्वला के एक पुत्र । इनकी पत्नी पुष्करिणी थी और उनके अंग आदि छः पुत्र थे (दे: अंग) (२) वृष्णि वंश के एक वीर राजकुमार ।

उशनस्–भृगु महर्षि के पुत्र, शुक्राचार्य, राक्षसों के गुरु (दे: शुक्राचार्य) ।

उशाना–यदुवंश के धर्म के पुत्र, जिन्होंने सौ अश्वमेघ यज्ञ किया । इनके पुत्र रुचक थे ।

उशीक–यदुवंश के राजा कृति के पुत्र, इनके पुत्र चेदि थे ।

उशीनर (१) चन्द्रवंश के एक प्रसिद्ध राजा । ये राजा महामना के पुत्र थे । इनके शिवि, वन, शामि और दक्ष नामक चार पुत्र हुए । (२) एक देश का नाम ।

उष्णिक–सूर्य के सात घोड़ों में से एक—गायत्री बृहति, उष्णिक, जगति, त्रिष्टुप, पंक्ति ।

उषस–प्रभात ।

उषा–(१) प्रभातकाल । (२) एक मुनि कन्या साल्वराजा ने विदर्भ पर आक्रमण कर राजा को मार डाला । विदर्भ की गर्भवती रानी ने नदी के किनारे एक पुत्र को जन्म दिया । रानी जब पानी पीने के लिये नदी में उतरी तब एक मगर ने उनको खा लिया । उषा नाम की एक मुनि कन्या ने उस बालक का पालन-पोषण किया । (३) बाणासुर की पुत्री और श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध की पत्नी । उषा ने स्वप्न में एक सुन्दर तरुण को देखा और उसके साथ कामकेलि की । नींद खुलने पर स्वप्न टूटा और उषा विरहताप से अतीव कातर हुई । उसकी सखी चित्रलेखा चित्ररचना में अति कुशल थी और अनेक सुन्दर प्रसिद्ध सुन्दर तरुणों का चित्र खींचकर उषा को दिखाने लगी । अनिरुद्ध का चित्र देख कर उषा लज्जित हो गई । अपनी योगमाया से चित्रलेखा द्वारका से अनिरुद्ध को उठाकर उषा के पास ले आयी । अन्तःपुर के सब लोगों से छिपकर अनिरुद्ध उषा के साथ रहे । कुछ दिनों के बाद परिचारकों द्वारा बाणासुर को यह बात मालूम हो गयी और अनिरुद्ध को देखा । अनिरुद्ध ने बड़ी वीरता की, किन्तु बाणासुर के बलाधिक्य के कारण बन्धनस्त हो गया । नारद से समाचार पाकर श्रीकृष्ण और बलराम यादव सैन्य के साथ शोणितपुर में आये, भयङ्कर युद्ध हुआ, भगवान से बाणासुर पराजित हो गया । शिव के प्रसाद से भगवान ने उसको मारा नहीं । बाणासुर ने अनिरुद्ध को अपनी कन्या के साथ श्रीकृष्ण की भेंट की ।

ऊ–(१) शिव (२) चन्द्रमा।

ऊर्ज–(१)वसिष्ठ के एक पुत्र, स्वारोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक :–ऊर्ज, प्राण, वृहस्पति, अत्रि, दत्तत्रोय, स्तम्भ और च्यवन। (२)ध्रुव के पुत्र वत्सर के छः पुत्रों में से एक। (३)हैहय राजवंश का एक राजा।

ऊर्जस्वती–स्वायम्भू मनु के पुत्र प्रियव्रत की पुत्री। प्रियव्रत और विश्वकर्मा की पुत्री बर्हिष्मती के दस वीर पुत्र और सबसे छोटी ऊर्जस्वती नाम की एक पुत्री हुई। ऊर्जस्वती का विवाह शुक्राचार्य से हुआ और उनकी पुत्री थी देवयानी जो ययाति महाराज की पत्नी बनी।

ऊर्णनाभ–धृतराष्ट्र का एक पुत्र जिसको भीमसेन ने मारा।

ऊर्णा–स्वायंभुव मन्वन्तर के मरीचि ऋषि की ऊर्णा नाम की पत्नी थी। इनके छः महान पुत्र हुए। ब्रह्मा का उपहास करने के कारण इनको दैत्य जन्म लेना पड़ा।

ऊर्णायु–एक गन्धर्व।

ऊर्ध्वकेतु–जनकवंश के राजा सनध्वज के पुत्र, इनके पुत्र अज थे।

ऊर्ध्वबाहु–पाँचवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

ऊर्ध्वरेत–अनवरत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला।

ऊर्मिला–जनक महाराजा की पुत्री, सीता की बहन, दशरथ पुत्र लक्ष्मण की पत्नी। चौदह साल वनवास के लिये जब श्रीराम और सीता के साथ लक्ष्मण वन को चले गये, ऊर्मिला को तीव्र विरह दुःख सहना पड़ा। यह दीर्घकाल उसने तपस्विनी के समान रह कर बिताया। वनवास के बाद जब तीनों अयोध्या लौट आये तब उसका पति से मिलन हुआ। उनके दो पुत्र तक्षक और चित्रकेतु हुए। श्रीराम की आज्ञा के अनुसार लक्ष्मण ने पूर्व दिशा के राक्षसों को मारा और अगति नामक एक नगर बसाया। इसका राजा तक्षक को बनाया। पश्चिम में चन्द्रमती नामक नगर बसा कर वहाँ चित्रकेतु का राज्याभिषेक किया।

ऊष्मा–पंजजन्य नामक अग्नि का पुत्र।

ऋ

ऋक्–वेद का एक विभाग। सृष्टि के प्रारंभ में भगवान के मुख से जो वेद निकला वह ऋक्यजु साम और अथर्व–इन चारों का बना था। ऋक् का अर्थ है देवताओं की स्तुति करना।

ऋगवेद–सनातन धर्म का नीव स्वरूप सबसे पुराण ग्रन्थ है। पाद्मकल्प में भगवान विष्णु के नाभिरन्ध्र से निकले दिव्य-पद्म से सर्ववेदमय ब्रह्मा का आविर्भाव हुआ। अपने अधिष्ठान पद्म की उत्पत्ति की खोज में ब्रह्मा ने चारों दिशाओं में अपना मुँह घुमाया। उस समय वे कमल दल के समान सुन्दर प्रकाशमय और दीर्घ नेत्रों वाले चतुर्मुख बन गये। कहा जाता है कि ब्रह्मा के एक-एक मुख से क्रमशः ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद निकले। त्रेतायुग में ब्रह्मा ने इन वेदों को अपने पुत्रों को दिया। द्वापर युग में ये ऋषियों के करगत हुए। उस समय धर्म परिपालनार्थ भगवान

नारायण का अंशावतार व्यास के रूप में हुआ। व्यासदेव ने वेद के चार भाग करके अपने पुत्रों और शिष्यों को दिये। शाल्यमुनि को ऋगवेद मिला। (२) पूरुवंश के राजा अजमीढ़ के पुत्र। इनके पुत्र संवरण थे।

ऋच्–(१)ऋगवेद का मन्त्र(२)ऋक् संहिता।

ऋच संहिता–ऋगवेद के सूक्तों का क्रमवद्ध संग्रह।

ऋचीक–(१) भृगुकुल में जन्म। परशुराम के पितामह। इन्होंने महाराजा ययाति के वंशज कुशाम्भु के पुत्र गाधी के पास आकर राजकुमारी सत्यवती से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। गाधी ने कुशिक वंश की महिमा का वर्णन कर कहा कि लड़की के मूल्य के लिए एक हजार घोड़े, जिनका एक कान काला हो, चाहिये। ब्राह्मण ने वरुण के प्रसाद से गंगा से हजार घोड़े लाकर दिये और सत्यवती से विवाह किया। पुत्र की कामना करने वाली पत्नी और सास की प्रार्थना के अनुसार पुत्र जन्म के लिए व देवताओं की प्रीति के लिए ब्राह्मण ने मन्त्रोच्चारण कर दो अलग बरतनों में चरू रखा। सत्यवती की माँ ने सोचा कि अधिक प्रेम अपनी पत्नी से होने के कारण उसका चरु अधिक महत्व का होगा। माँ की प्रेरणा से सत्यवती ने अपना चरु माँ को दिया और माँ का स्वयं खा लिया। जब यह बात ऋचीक को मालूम हो गई तब उन्होंने कहा कि—'तुमने बड़ी भारी गलती की, तुम्हारा शत्रुनाशक, घोर और वीर पुत्र होगा, और तुम्हारा ब्रह्मवेत्ता भाई होगा'। सत्यवती की प्रार्थना पर उन्होंने वर दिया कि तुम्हारे पुत्र के बदले पौत्र ऐसा होगा। सत्यवती के जमदग्नि नामक पुत्र हुए जिनके पुत्र थे क्षत्रिय संहारी परशुराम। सत्यवती के भाई थे विश्वामित्र। पुत्र जन्म के बाद सत्यवती सकललोक पावनी कौशिकी नाम की नदी बन गई। यही नदी है आधुनिक कोशी। (२) द्वादशादित्यों में से एक। (३) एक राजा का नाम।

ऋजु–वसुदेव और देवकी का एक पुत्र।

ऋण चतुष्टय–हर व्यक्ति के चार प्रकार के ऋण हैं जिनसे उसको मुक्त होना चाहिये। ऋषि ऋण जिमसे ब्रह्मचर्य और वेदाध्ययन से मुक्ति मिलती है; देव ऋण जो यज्ञ से चुकाया जाता है; पितृ ऋण जो श्राद्धादि से चुकाया जाता है और मनुष्य ऋण जिससे सत्यधर्म आदि के आचरण से मुक्ति मिलती है।

ऋत–(१) दिव्य नियम,सचाई, पावन प्रथा। (२) एकादश रुद्रों में से एक।

ऋतधाम–(१) बारहवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।(१)वसुदेव के भाई कंक का एक पुत्र।

ऋतध्वज–चन्द्रवंश के एक राजा।

ऋतम्भरा–जम्बुद्वीप की एक नदी।

ऋतु–(१) वर्ष का एक भाग। ऋतुएँ छः हैं–शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हिम। कभी-कभी शिशिर और हिम को मिलाकर हेमन्त नाम से पुकारते हैं। (२) विष्णु का नाम।

ऋतुपर्ण—अयोध्या के राजा, इक्ष्वाकु वंशज अयुतायु के पुत्र। अपना राज्य छिन जाने पर निषध देश के राजा नल ने आपदग्रस्त होकर वन में घूमते समय दावानल से कार्कोटक नामक सर्पराज की रक्षा की जिसने नल को काट कर विकृत किया। नल ऋतुपर्ण महाराजा के पास आकर उनके सारथी बने। नल अश्वों को काबू में लाने और उनको हवा की गति से दौड़ाने की विद्या अश्वहृदय जानते थे। कुण्डिनपुर के राजा नेअपनी पुत्री दमयंती की प्रार्थना पर ऋतुपर्ण के पास संदेश भेजा कि उसके दूसरे दिन दमयन्ती का दूसरा विवाह होगा। दूतों के वर्णन से दमयन्ती को सन्देह हो गया था सारथी के वेष में नल ही ऋतुपर्ण

के यहाँ रहते हैं। एक ही दिन में राजा को विदर्भ पहुँचाने के लिए नल तैयार हो गए। रास्ते में नल ने अश्वहृदय ऋतुपर्ण को बताया और उनसे अश्व विद्या सीखी। कुण्डिनपुर आने पर दमयन्ती का सन्देह विश्वास में परिणत हो गया कि ऋतुपर्ण का सारथी नल ही है। उन दोनों का मिलन हुआ और राजा ऋतुपर्ण भी इससे अत्यन्त सुखी हुए।

ऋतुमती–रजस्वला स्त्री।

ऋतुमान–तामस मन्वन्तर में भगवान विष्णु ने हरि का अवतार लेकर गजेन्द्र को मोक्ष दिया। यह गजेन्द्र अपने साथियों और हाथिनियों के साथ क्रीड़ा करने के लिये वरुण देवता के विख्यात उद्यान ऋतुमान में गए थे।

ऋतेयु–पूरुवंश के राजा रौद्राश्व के पुत्र, इनके पुत्र रन्तिभार थे।

ऋत्विज्–यज्ञ के पुरोहित के रूप में कार्य करने वाले चार मुख्य ऋत्विज हैं (दे: अध्वर्यु)। बड़े-बड़े संस्कारों में ऋत्विजों की संख्या सोलह तक होती है।

ऋद्ध–विष्णु का नाम।

ऋद्धि–(१) वरुण की पत्नी (२) विभूति (३) पार्वती देवी (४) लक्ष्मी देवी।

ऋभु–(१) एक देवता गण (२) ब्रह्मा के एक पुत्र जो अपार पण्डित और ब्रह्मचारी थे।

ऋमण्व–जमदग्नि और रेणुका का एक पुत्र।

ऋषपर्वा–वृत्रासुर का एक मित्र। एक दानव।

ऋषभ–(१) चन्द्रवंश के एक राजा जो द्रोण के नेतृत्व में भारत युद्ध में कौरवों के पक्ष में रहे। (२) मेरु पर्वत के पास एक पर्वत। (३) एक नाग जो महाराजा जनमेजय के सर्पसत्र में मर गया। (४) संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। (५) कुशवंश के राजा कुशाग्र के पुत्र, इनके पुत्र सत्यहित थे।

ऋषभकूट–एक पहाड़ का नाम।

ऋषभतीर्थ–अयोध्या के पास एक प्राचीन तीर्थ।

ऋषभदेव–महाराज प्रियव्रत के पौत्र, नाभि और मेरु देवी के पुत्र जो भगवान का अंशांश माने जाते है। जन्म के समय इनके शरीर पर दैवी चिन्ह थे। ओज, बल, श्री, यश, वीर्य, शौर्य आदि पुरुष श्रेष्ठ के लक्षणों से युक्त होने के कारण इनका ऋषभदेव नाम हुआ। इनसे स्पर्धा रख कर इन्द्र ने एक बार उनके राज में वर्षा नहीं की। अपनी योगमाया से ऋषभदेव ने अजनाभ नामक अपने राज्य में खूब वर्षा की। अपने आचरण द्वारा अपनी प्रजा को सुशिक्षा दी। इन्द्रदत्त सुन्दरी जयन्ती से उनका विवाह हुआ और सौ पुत्र हुए जिनमें सबसे बड़े थे भरत। वे बड़े ज्ञानी थे और भगवत् प्राप्ति का उपदेश अपने पुत्रों को दिया। योग की साधना में बाधा पड़ते देख कर अपने पुत्र भरत को राज्य सौंप कर चले गए। अजगर, बैल, कौआ, मृग आदि का जैसा जीवन बारी-बारी से बिताया। मल-मूत्र से लिपटे रहने पर भी उनके शरीर की सुगन्ध अस्सी मील तक व्याप्त थी। परमात्मा की प्रेरणा से वे मुँह में एक पत्थर डालकर अपने शरीर की चिन्ता किए बिना पागल की तरह भूमण्डल पर घूमते रहे। इस भ्रमण के बीच में बाँसों की रगड़ से निकली एक दावानल में पड़ कर उनका शरीर जल कर राख हो गया।

ऋषभध्वज–शिव।

ऋषि–पुण्यात्मा मुनि। ये वेद मन्त्रों के आचार्य हैं। कहा जाता है कि परम ज्ञानी, दीर्घचक्षु इन ऋषियों के मुँह से ही अन्तःदृष्टि के, प्रभाव और ज्ञान प्रकाश के प्रचोदन से वेदोक्तियाँ निकालीं। भारत ऋषियों का राज्य था। आज भी यह विश्वास प्रचलित है कि भारत में अनेक ऋषि गुप्त रूप से रहते हैं। उनके चैतन्य और ज्ञान प्रकाश के कारण अनेक कष्टों और आक्रमणों का शिकार बन कर भी भारत

का अधःपतन नहीं हुआ ।

ऋषिकुल्या–एक पवित्र नदी ।

ऋषिगंगा–नीलकण्ठ से निकलेवाली एक नदी जो बद्री नाथ में अलकनन्दा से मिलती है ।

ऋषिगिरि–मगध की राजधानी गिरिव्रज के पास का एक पर्वत ।

ऋषिबिल–सीता देवी की खोज में अंगद के नेतृत्व में जो वानर सेना दक्षिण को गई, विन्ध्या की पर्वत श्रेणियों के निकट आयी । वहाँ ऋषि विल नामक एक गुफा थी (दे: स्वयंप्रभा)

ऋषिपंचमी–भाद्रप्रद कृष्ण पंचमी को होनेवाला एक पर्व । यह स्त्रियों के लिये विशेपता रखता है ।

ऋषियज्ञ–पांच महायज्ञों में से एक (दे: पंच यज्ञ) ।

ऋषिस्तोम–(१) ऋषियों का स्तुतिगान । (२) एक दिन में समाप्त होनेवाला एक विशेष यज्ञ ।

ऋषीक–इन्द्रिय ।

ऋषीकेश–श्रीकृष्ण या विष्णु का नाम, इन्द्रियों के स्वामी ।

ऋष्य–मगध देश के राजा देवाधिति के पुत्र । इनके पुत्र दिलीप थे ।

ऋष्यकेतन–(१) अनिरुद्ध (२) कामदेव ।

ऋष्यमूक–पम्पा सरोवर के निकटस्थ एक पर्वत जहाँ कुछ दिनों तक श्रीराम और लक्ष्मण सुग्रीव के साथ रहे । बलि के भय से इसी पर्वत पर सुग्रीव अपने मन्त्रियों के साथ रहते थे ।

ऋष्यशृंग–महर्षि विभाण्ड के पुत्र एक मुनि । विभाण्ड का वीर्य एक बार उर्वशी को देखकर स्खलित हुआ और उसे जल के साथ एक मृगी ने पिया । उससे एक बालक पैदा हुआ । माता के समान शिशु के सींग थे । इसलिये विभाण्ड ने पुत्र का नाम ऋष्यशृंग रखा । पिता ने पुत्र का पालन-पोषण जंगल में ही किया जिससे वयस्क होने तक ऋष्यशृंग ने किसी दूसरे मनुष्य को नहीं देखा । जब अनावृष्टि के कारण अंग देश नष्टसा हो गया तो राजा रोमपाद ने ब्राह्मणों के परामर्श के अनुसार कुछ सुन्दरियों के द्वारा राज्य में बुलाया । ऋष्यशृंग ने उस समय तक किसी स्त्री को देखा नहीं था । इस अदृष्टपूर्व सृष्टि से वे मोहित हो गये । रोमपाद ने अपनी दत्तक पुत्री शान्ता का (दशरथ महाराजा की पुत्री थी) विवाह इनसे कर दिया । ऋष्यशृंग के आगमन से राज्य में पर्याप्त वर्षा हुई । विश्वविख्यात अयोध्यापति महाराजा दशरथ ने पुत्र-लाभ की इच्छा से अपने कुलगुरु वसिष्ठ के उपदेशानुसार ऋष्यशृंग से पुत्रेष्ठि का अनुष्ठान करवाया जिससे उनके श्री राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न नामक चार पुत्र हुए । ये आठवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक होंगे ।

ऋक्ष–(१) रीछ (२) एक पर्वत (३) नक्षत्र ।

ऋक्षनाथ–(१) तारों का नाथ चन्द्रमा (२) रीछों का स्वामी जाम्बवान ।

ॠ

ॠ–(१) भैरव (२) एक राक्षस ।

ए

ए–विष्णु ।

एक–(१) सब प्रकार के भेदों से रहित अद्वितीय विष्णु । (२) अनुपम । (३) महाराजा पुरुरवा के पुत्र राय के पुत्र ।

एक कुण्डल–(१) बलभद्र (२) शेषनाग (३) कुबेर ।

एक चक्र–(१) एक गाँव का नाम । वनवास के समय पाण्डव यहाँ रहते थे । उस समय

भीमसेन ने वक नामक राक्षस को मारा।(२) कश्यप प्रजापति और दनू का एक पुत्र-राक्षस।
एकताल–(१) नृत्य (२) एक वाद्य यन्त्र।
एकदन्त–गणपति।
एकनाथ स्वामी–महाराष्ट्र के एक दिव्य तपस्वी थे। इन्होंने कठिन तपस्या की थी।
एक पिंग–कुबेर, एक आँख पीली है।
एकलव्य–भील पुत्र। द्रोणाचार्य से शास्त्र-विद्या सीखने गया, लेकिन भील पुत्र होने के कारण द्रोण ने उसे स्वीकार नहीं किया। अपनी झोपड़ी में ही द्रोणाचार्य की एक मूर्ति बना कर श्रद्धा से शस्त्र-विद्या स्वयं सीखी और अर्जुन से भी प्रवीण हो गया। द्रोण को यह बात अर्जुन से मालूम हो गयी और अपने प्रिय शिष्य की ख्याति रखने के लिये एकलव्य से गुरु दक्षिणा के रूप दाहिने हाथ का अंगूठा माँगा। एकलव्य ने प्रसन्नता से गुरु दक्षिणा दी और अमर हो गया।
एकशृंग–विष्णु।
एकाक्ष–(१) एक राक्षस (२) शिव।
एकादश रुद्र–मन्यु, मनु, महिनस, महान्, शिव ऋतुध्वज, उग्ररेता, भव, काल, वामदेव, धृतव्रत। दूसरे मत के अनुसार इनके नाम हैं अज, एकपाद अहिर्बुध्य, त्वष्टा, रुद्र, हर, शंभु, अम्बक, अपराजित, ईशान, त्रिभुवन।
एकादशी–चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष का ग्यारवाँ दिन, विष्णु सम्बन्धी पुनीत दिवस जिस दिन उपवास रख कर ईश्वर चिन्तन करने से भगवत् प्राप्ति होती है।
एकाम्बरनाथ–शिव का नाम।
एण–एक प्रकार का काला बारासिंघा हरिण।
एणाजिन–मृग चर्म जिसे सन्यासी पहनते हैं।
एदन–क्रिस्तु मत के अनुसार संसार का पहला उद्यान जिसकी ईश्वर ने सृष्टि की। इसी बाग में आदि दम्पति आदम और हव्वा रहती थी।
एरका–एक प्रकार की घास। श्रीकृष्ण ने स्वर्गारोहण के पहले यादव कुल का संहार करना चाहा। भगवान से प्रेरित सप्तऋषि एक दिन उस उपवन में पहुँचे जहाँ श्रीकृष्ण के पुत्र-पौत्र खेल रहे थे। उन्होंने साम्ब को स्त्री-वेष पहना कर मुनियों से पूछा कि यह गर्भवती है। इसका लड़का होगा कि लड़की। त्रिकाल दर्शी ऋषि कुपित हुए और कहा कि इसके मूसल पैदा होगा जो यदुकुल नाशक होगा। साम्ब के कपड़ों में से एक मूसल निकला। यादव कुमारों ने उग्रसेन के पास जाकर श्री कृष्ण की उपस्थिति में सब बातें बतायी। उग्रसेन की आज्ञा से वह मूसल चूर-चूर किया गया और समुद्र में डाला गया। वह चूर्ण लहरों के द्वारा किनारे लाया गया। उसमें से एरका नाम की घास पैदा हुई। इन्हीं घासों के शर बनाकर यदुकुल के सभी योद्धा आपस में लड़ कर मरे।

ऐ

ऐ–शिव।
ऐडविड–राजा भागीरथ के वंशज दशरथ के पुत्र। इनके पुत्र विश्वसह थे।
ऐतरेय–एक महापण्डित और ज्ञानी।
ऐतिह्य–परम्परा प्राप्त शिक्षा, उपाख्यानात्मक वर्णन।
ऐन्द्र–(१) ऋगवेद का मन्त्र जिसमें इन्द्र को सम्बोधित किया जाता है (२) पूर्व दिशा (३) दुर्गा की उपाधि।
ऐन्द्रि–(१) इन्द्र का पुत्र जयन्त, (२) अर्जुन (३) बलि।
ऐरावत–(१)इरावती का पुत्र, इन्द्र का हाथी (दे: इरावती) (२) पाताल निवासी नाग जाति का एक मुखिया। (३) पूर्व दिशा का

दिक्गज ।

(२) मंगल ग्रह ।

ऐल– (१) इला और बुध के पुत्र पुरूरवा ।

ऐहिक–इस लोक से सम्बन्ध रखनेवाला ।

ओ

ओ–ब्रह्मा ।

ओंकार–देखिए ओम् ।

ओघवती–(१) एक नदी (२) मनु के वंशज ओघवान की पुत्री, इसके पति राजा सुदर्शन थे ।

ओघवान–मनु के वंशज राजा प्रतीक के पुत्र । इनके ओघवती नाम की एक पुत्री और ओघवान नाम के एक पुत्र हुए ।

ओड्र–एक देश का नाम (आधुनिक उड़ीसा)

ओणम्–केरल का एक देशीयोत्सव । केरलियों का एक प्रसिद्ध त्योहार है और भाद्रपद महीने के उत्तरापाद, श्रवण, श्रविष्ट या घनिष्ट शतभिष, इन चार दिनों में मनाया जाता है। ऐतिह्य है कि राजा बलि के समय राज्य में समृद्धि, सुख, आराम था । विष्णु भगवान ने वामनावतार लेकर बलि को सुतल लोक में भेज दिया, लेकिन इनको भगवान से वर मिला कि वर्ष में एक बार प्रजा को देखने आयेंगे । लोगों का विश्वास है कि इन दिनों बलि महाराज पधारते हैं और उनके स्वागत के उपलक्ष्य मे उत्सव मनाया जाता है । दूसरा मत है कि कृषि प्रधान केरल के लोगों के, फसल कटने के बाद खुशी मनाने के दिन हैं ।

ओम्–अ, उ, म–ये तीन अक्षर मिलकर बना है । वेदपाठ के आरम्भ और अन्त पर किया जानेवाला पावन उच्चारण या मन्त्रों के आरम्भ में बोला जाता है । एकाक्षर मन्त्र है । अकार विष्णु, उकार शिव और मकार ब्रह्मा का वाचक है ।

ओषधीश–वनस्पतियों का अधिदेवता या पोषक चन्द्रमा ।

औ

औतरेय–उत्तरा के पुत्र महाराजा परीक्षित ।

औत्तानपाद–ध्रुव ।

और्व– भृगुवंश एक प्रसिद्ध ऋषि । भृगुवंश का नाश करने के लिये कार्तवीर्य के पुत्र गर्भस्थ शिशुओं की हत्या करने लगे । उस वंश की आरुषी नाम की स्त्री ने अपने गर्भस्थ शिशु को जंघा (उरु) में छिपा लिया । जांघ से जन्म होने के कारण बालक का नाम और्व हो गया । अपने क्रोध से उठी ज्वाला से और्व ने सारे संसार को भस्म कर देना चाहा, लेकिन भार्गवों (उनके पितरों) की इच्छा से क्रोधाग्नि को समुद्र में फेंक दिया जो घोड़े के रूप में गुप्त पड़ी रही और बड़वाग्नि से जानी जाती है ।

औशीनर–उशीनर का पुत्र ।

औषसी–प्रभात काल ।

क

क–(१) कई अर्थ हैं जैसे ब्रह्मा, विष्णु, कामदेव, अग्नि, सूर्य, आत्मा, मन, बादल आदि । (२) सुखस्वरूप भगवान विष्णु ।

कंस–मथुरा का राजा, उग्रसेन का पुत्र, श्रीकृष्ण

का मामा । देवकी का विवाह वसुदेव के साथ सम्पन्न होने पर कंस अपनी प्रिय बहन और बहनोई को रथ पर बिठाकर स्वयं चला कर जा रहा था । तब आकाशवाणी हुई कि देवकी का आठवां पुत्र कंस को मारेगा । कस उसी समय देवकी को मारने के लिये तैयार हो गया, लेकिन वसुदेव के विनती करने पर दोनों को कारागार में डाल दिया और उनपर कड़ा पहरा लगा दिया । देवकी के बच्चा होते ही कंस उसको छीन कर मौत के घाट उतार देता था । इस प्रकार देवकी के छः बच्चों का काम तमाम कर दिया । इधर कंस का अत्याचार बढ़ता गया, सज्जन लोग संत्रस्त हो गए । दुष्ट निग्रह करने के लिये भगवान विष्णु ने अनन्त के साथ अवतार लेने का निश्चय किया । देवकी का सातवां गर्भ संकर्षित कर गोकुल में वसुदेवपत्नी रोहिणी के उदर में रखा गया और जो लडका हुआ वह संकर्षण या बलराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ । देवकी के आठवें पुत्र होकर स्वयं भगवान ने जन्म लिया लेकिन अपनी माया से कृष्ण गोकुल में बलराम के साथ नन्द के यहां पलते रहे । कंस को यह बात मालूम होने पर उसने अनेकों राक्षसों को दोनों कुमारों की हत्या करने भेजा । वे सब कृष्ण के द्वारा मारे गए । अन्त में अक्रूर को भेजकर दोनों बालक मथुरा में बुलाये गये । मथुरा में कंस श्रीकृष्ण से मारा गया ।

कंसवती–उग्रसेन की पुत्री, कंस की बहन, वसुदेव के भाई देवश्रवा की पत्नी । सुवीर और इषुमान इनके पुत्र थे ।

कंसा–उग्रसेन की पुत्री, कंस की बहन, वसुदेव के भाई देवभाग की पत्नी । इनके चित्रकेतु और बृहद्बल नामक दो पुत्र हुये ।

कंसारि–श्रीकृष्ण ।

ककुत्स्थ–सूर्यवंश के एक राजा पुरञ्जय । त्रेतायुग में असुरों को परास्त करने के लिए देवों की प्रार्थना पर स्वर्ग गए । यह शर्त थी कि इन्द्र बैल के रूप में आकर अपने ककुत्स्थ पर राजा को बिठा कर ले चलें । इन्द्र ने ऐसा किया और पुरञ्जय ने असुरों को पराजित किया । तबसे इनका नाम ककुत्स्थ हो गया ।

ककुद–(१) शिखर (२) बैल के ऊपर का कूबड़ ।

ककुद्मि–वैवस्वत मनु के पौत्र, शर्याति के पौत्र रैवतक । इनके पिता का नाम आनर्त था । इनकी पुत्री रेवती के साथ बलराम का विवाह हुआ ।

ककुभ–(१) दिशा (२) चम्पक पुष्पों की माला (३) वीणा के सिर पर मुड़ी हुई लकड़ी ।

कङ्क–(१) अज्ञातवास के समय विराट देश में धर्मपुत्र इस नाम से ब्राह्मण के वेष में रहते थे । (२) यादव वंश के उग्रसेन का एक पुत्र, कंस का भाई (३) शूरसिंह और महिषा का एक पुत्र, वसुदेव का भाई ।

कङ्कण–कंगना, विवाह सूत्र ।

कङ्का–राजा उग्रसेन की पुत्री, कंस की बहन, वसुदेव के भाई आनक की पत्नी । इनके सत्यजित और पुरुजित नाम के दो पुत्र हुए ।

कच–(१) बाल (२) बादल (३) बृहस्पति का एक पुत्र । देवासुर युद्ध में देवता बहुधा हारा करते थे । जितने असुर मरते थे उनको उनके गुरु शुक्राचार्य मृत संजीवनी मन्त्र से जिलाते थे । यह मन्त्र केवल शुक्राचार्य जानते थे । यह मन्त्र प्राप्त करने के लिये देवों ने कच को शुक्राचार्य के पास भेजा । राक्षसों से दो बार कच की मृत्यु हुई, लेकिन शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री देवयानी की, जो कच से प्रेम करने लगी थी, प्रार्थना से कच को जिलाया । तीसरी बार राक्षसों ने कच को मार कर उसका शरीर जलाकर राख को मदिरा में मिलाकर शुक्राचार्य को पिलाया । इस बार कच की प्राणरक्षा करने के लिये शुक्राचार्य को कच को मन्त्र सिखाना पड़ा । कच

पुनर्जीवित हो गया, लेकिन देवयानी का प्रग इसलिये ठुकराया कि गुरू की पुत्री होने के कारण उसकी छोटी बहन के समान है। देवयानी ने कच को शाप दिया कि उसका सीखा हुआ मन्त्र शक्तिहीन होगा। कच ने भी उसे शाप दिया कि कोई भी ब्राह्मण उससे विवाह नहीं करेगा, वह क्षत्रिय की पत्नी बनेगी। (दे: देवयानी)

कचमाल–धुआँ ।

कच्छपि–सरस्वती की वीणा।

कञ्ज–(१) कमल, (२) ब्रह्मा, (३) अमृत।

कञ्जनाम–विष्णु।

कञ्जन–(१) एक प्रकार का पक्षी (२) कामदेव।

कटिसूत्र–करधनी या मेखला।

कठ–वैशम्पायन के शिष्य का नाम, यजुर्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक।

कठोपनिषद–दस मुख्य उपनिषदों में से एक।

कण्ठीरव–(१) सिंह (२) मदमस्त हाथी।

कण्डू–एक महर्षि, मारिषी के पिता।

कण्व–(१) कश्यप के कुल में पैदा हुए एक प्रसिद्ध मुनि। कण्वाश्रम· चम्पाल नदी के किनारे स्थित था। शकुन्तला का पालन पोषण कण्व ने ही किया था। (२) पूरुवंश के राजा अप्रतिरथ के एक पुत्र। इनके पुत्र मेधाथिति से प्रक्षण आदि ब्राह्मण हुए।

कथक–(१) मुख्य अभिनेता (२) कहानी सुनानेवाला।

कथाकली–केरल की एक नाट्य कला जिसमें नृत्त और अभिनय दोनों है। पौराणिक कथाएँ इसका इतिवृत्त होता है।

कथावशेष–जिसका केवल 'वृत्तांत' ही बाकी रह गया है। अर्थात् मृत्यु।

कथा सरित्सागर–संस्कृत भाषा की एक पुस्तक जिसमें अनेक कथायें हैं। इसके रचयिता काश्मीर देशवासी सोमदेव भट्ट हैं।

कदम्ब–एक प्रकार का वृक्ष। बादलों की गरज के साथ इसकी कलियों का खिलना प्रसिद्ध है। श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं में कदम्ब वृक्ष का प्रमुख स्थान था। गोपबालाओं के वस्त्र चुराकर कृष्ण ने कदम्ब वृक्ष पर रखे थे। कदम्ब वृक्ष पर चढ़कर श्रीकृष्ण कालिय सर्प का दर्प निकालने के लिए यमुना में कूदे थे। देवलोक से अमृत लाते समय गरुड़ कदम्ब वृक्ष पर विश्राम करने बैठा था।

कदली–(१) केले का पेड़ (२) एक प्रकार का मृग।

कदलीवन–कुबेर पर्वत पर स्थित उद्यान जहाँ हनुमान रहते हैं।

कद्रू–कश्यप की पत्नी, दक्ष प्रजापति की पुत्री, नागों की माँ।

कनक–(१) सोना (२) धतूरे का वृक्ष।

कनकाचल—कनक गिरि, सुमेरु पर्वत।

कनखल–हरिद्वार के पास गंगा के किनारे स्थित एक पुण्यतीर्थ, लक्ष्मण ने इस देश के भीलों को जीत कर यहाँ अपने पुत्र तक्षक का राज्याभिषेक किया।

कनीन–वैवस्वत मनु के वंशज देवदत्त के पुत्र अग्निवेश्य का अपर नाम। इनका एक और नाम जातुकर्ण्य था।

कनीयसी–आयु में छोटी।

कन्दर्प–(१) कामदेव (२) प्रेम।

कन्दर्प दहन–शिव।

कन्यका— (१) कन्या, अविवाहित लड़की, कुमारी। (२) एक प्रकार की नायिका।

कन्या–(१) अविवाहित लड़की या पुत्री। (२) छठी राशि अर्थात् कन्या राशि (३) दुर्गा।

कन्याकुब्ज–एक देश का नाम, वर्तमान कन्नौज।

कन्याकुमारी–भारत का दक्षिणतम देश, एक पुण्य क्षेत्र।

कन्याग्रहण–विवाह में कन्या को स्वीकार करना।

कन्यादान–कन्या का विवाह करना ।

कन्याधन–दहेज ।

कन्यापुत्र–क्रिस्तु देव ।

कपटभिक्षु–कपट तापस, पाखण्डी सन्यासी ।

कपर्दि–शिव की उपाधि ।

कपालमोचन–सरस्वती नदी के किनारे एक पुण्य स्थान ।

कपालमालि–शिव ।

कपालि– (१)शिव,(२)नीच जाति का पुरुष ।

कपिकेतन–अर्जुन ।

कपिञ्जल–पपीहा ।

कपिध्वज—अर्जुन ।

कपित्थ–एक प्रकार का वृक्ष ।

कपिल–(१) ब्रह्मा के पुत्र कर्दम प्रजापति और मनुपुत्री देवहूति के पुत्र, भगवान का अंशावतार होने से कपिल वासुदेव भी कहलाते हैं। ये सांख्य योग के आचार्य थे और इन्होंने अपनी माँ को ज्ञानोपदेश देकर मुक्ति का मार्ग दिखाया । सगर महाराजा के साठ हजार पुत्र इनकी क्रोधाग्नि में जलकर भस्म हो गये थे । (२) अग्नि का एक रूप (३) एक राक्षस ।

कपिलतीर्थ—एक पुण्य तीर्थ ।

कपिला–(१) भूरी गाय । (२)एक प्रकार का सुगन्धित द्रव (३) दक्ष प्रजापति की पुत्री, कश्यप मुनि की पत्नी । (४) एक नदी ।

कपिलाश्व–इक्ष्वाकुवंश के राजा कुवलयाश्व के एक पुत्र ।

कपिलोपाख्यान–कपिल ऋषि ने अपनी माँ देवहूति को सांख्ययोग का जो उपदेश दिया था, उसे कहते हैं ।

कपोतरोम–अन्धक वंश के विलोमा के पुत्र, इनके पुत्र अनु थे ।

कफ–शरीर के तीन रसों में से एक, शेष दो हैं वात और पित्त ।

कबन्ध–(१) एक राक्षस जिसका धड़ ही था, सिर नहीं था । उसका मुँह पेट में था । वह पर्वताकार, भयानक और बलवान था । छाती पर उसकी लम्बी चौड़ी आँखें थीं । पहले यह रूप सम्पन्न गन्धर्व था । एक तेजस्वी ऋषि स्थूला शिर के क्रोध का पात्र होने से यह रूप प्राप्त हुआ । अपने लम्बे हाथों के वलय में आनेवाले जीव-जन्तुओं को खाता था । दण्डक वन में श्रीराम और लक्ष्मण इसके करवलय में आ गये । उन्होंने उसके दोनों हाथ काट डाले । उनका परिचय पाने पर राक्षस ने उनसे प्रार्थना की कि एक गड्ढे में मुझे डाल कर जला दीजिए । राम और लक्ष्मण ने ऐसा ही किया । उस अग्नि से एक तेजस्वी पुरुष निकला और उसने सुग्रीव के निवास स्थान को बता कर कहा कि सीता की खोज में सुग्रीव सहायता करेगा । (२) बादल (३) धूमकेतु (४) राहु ।

कबीर–कवि कबीरदास, ये दिव्य और भक्त थे । श्रीरामानन्द के शिष्य थे । कर्मकाण्ड के विरोधी रहस्यवादी कवि थे ।

कमठ–(१) एक ऋषि (२) कछुआ (३)जल का घड़ा ।

कमण्डलु–जलपात्र जो सन्यासी रखते हैं ।

कमल–(१) फूलों में श्रेष्ठ(२) सारस पक्षी ।

कमला–लक्ष्मीदेवी ।

कमलापति–महाविष्णु ।

कमलिनी–कमलों का समूह ।

कम्बलबर्हिष—यदुवंश के अन्धक के पुत्र ।

कम्बु–(१)शंख(२) शरीर की नस(३)कड़ा ।

कम्बुकण्ठी—शंख जैसी गर्दनवाली

कम्बुग्रीव(१) शंख के समान तीन रेखाओं से युक्त गर्दनवाला ।(२)एक भद्र राजा का पुत्र ।

कम्बोज–(१) एक प्रकार का हाथी (२) एक देश का नाम ।

कयाधु–हिरण्यकशिपु की पत्नी, प्रह्लाद की माता ।

करकमल– करपङ्कज, करपद्म, कमल जैसा

हाथ ।

करकिसलय–कोंपल जैसा कोमल हाथ ।

करताल–एक प्रकार का वाद्य यन्त्र ।

करतोय–एक पुण्य नदी ।

करन्धम–(१) इक्ष्वाकु वंश के राजा खनिनेत्र के पुत्र । इनके पुत्र अविक्षित थे ।(२)ययाति के पुत्र तुर्वसु के वंशज त्रिभानु के पुत्र । ये बड़े उदारनिधि थे, इनके पुत्र मरुत थे ।

करपीडन–विवाह ।

करभा–कलिंग देश की राजकुमारी, पूरु वंश के राजा अक्रोध की पत्नी ।

करम्भ–(१) एक असुर(२)दही मिला आटा या अन्य भोज्य पदार्थ ।

करम्भि–यदुवंश के शकुनि के पुत्र, इनके पुत्र देवरात थे ।

करवीर–(१) तलवार (२) चेदि देश का एक नगर (३) द्वारका के समीप एक जंगल (४) एक पुण्य तीर्थ(५)महामेरु के पास एक पर्वत ।

कराल–भयंकर ।

कराला–दुर्गा का भयानक और प्रचण्ड रूप ।

करीव–गोबर या कण्डों की आग ।

करूप–प्राचीन भारत का एक देश ।

करेणु–(१) हाथिनी (२) कर्णिकार वृक्ष(२) हस्तिविज्ञान के प्रवर्तक पालकाप्य की माता ।

करेणुमती–शिशुपाल की पुत्री जिससे नकुल ने विवाह किया था । इनके पुत्र निरामित्र थे ।

कर्क–(१) कर्क या चतुर्थ राशि(२) जलकुंभ (३) दर्पण ।

कर्कट–कर्क राशि ।

कर्कर–(१) एक नाग (२) दर्पण ।

कर्कोट–देखिए काकोटक ।

कर्पूर–एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष ।

कर्ण–महाभारत में वर्णित कौरव पक्ष के एक महारथी । जब कुन्ती अपने पितृगृह में रहती थी, दुर्वासा के मन्त्र की परीक्षा करने सूर्य भगवान का स्मरण कर एक मन्त्र पढ़ा । सूर्य भगवान उसी समय प्रत्यक्ष हुए और कुन्ती के रोकने पर भी उससे एक पुत्र उत्पन्न किया और अनुग्रह किया कि उसका कन्यात्व नष्ट न होगा । अविवाहिता कुन्ती ने लोक-लाज के भय से नवजात शिशु को एक पेटिका में रखकर नदी में बहाया । निस्सन्तान सारथी अधिरथ को यह शिशु मिला । अधिरथ और उसकी पत्नी राधा ने मिलकर बालक को कर्ण नाम देकर पालन-पोषण किया । सूर्यदेव के अनुग्रह से कर्ण अति तेजस्वी थे, उनकी छाती पर कवच और कानन के कुण्डल जन्म से ही मिले थे । उनका एक और नाम राधेय भी था । परशुराम, कृपाचार्य आदि महापुरुषों से इन्होंने अस्त्रविद्या सीखी थी । दुर्योधन ने कर्ण को अंगराज्य का राजा बनाया जब कि पाण्डवों ने उनका राधेय, सारथिपुत्र कहकर अपमान किया । कर्ण जीवनपर्यन्त दुर्योधन के मित्र और अभ्युदयकांक्षी रहे और पाण्डवों के शत्रु । अपनी दानशीलता के कारण वे दानवीर कर्ण कहलाये । भारत युद्ध के समय अर्जुन की रक्षा के लिये इन्द्र ने ब्राह्मण का वेप धारण कर कर्ण के पास जाकर कवच और कुण्डल माँगे । कवच और कुण्डल कर्ण के सर्व ऐश्वर्य और विजय के कारण रहे । यह जानकर भी वे इन्द्र को न नहीं कर सके । अपना सर्वनाश निश्चित जानकर भी उन्होंने इन्द्र को कवच और कुण्डल दिये । भीष्म और द्रोण के पतन के पश्चात् कर्ण ने कौरव सेना का सेनाधिपत्य लिया और अपनी युद्धकुशलता प्रकट की । कुन्ती ने जब उनके जन्म के वृत्तान्त को कर्ण से कहा, वे विचलित नहीं हुए और अपने को राधापुत्र कहने में अभिमान किया । कुन्ती की प्रार्थना पर अर्जुन को छोड़कर बाकी चार पाण्डवों की जीव रक्षा का वचन दिया । तीन दिनों के युद्ध के बाद कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में धंस गया था और वे अर्जुन के द्वारा

3969

मारे गये ।(२)कान (३) नाव का पतवार।

कर्णधार–मल्लाह ।

कर्णपर्व–महाभारत का एक पर्व ।

कर्ण प्रयाग–यहाँ पिंडार नामक नदी अलकनन्दा से मिलती है । यहाँ कर्ण ने सूर्य भगवान की प्रीति के लिये यज्ञ किया था । यह उमा देवी का एक मन्दिर है ।

कर्णभूषण–कान का गहना ।

कर्णवेध–सोलह संस्कारों में से एक, कान का छेदना ।

कर्णाटक–दक्षिण भारत का एक देश ।

कर्णिका–(१) कानों की बाली (२) एक देव-कन्या(३)कमल का फूल(४)मध्यमा अंगुली ।

कर्णिकार–एक फूल का नाम ।

कर्णिकार वन–सुमेरु पर्वत के उत्तर का एक वन जहाँ हमेशा फूलों की भरमार रहती है ।

कर्ता–(१) निर्माता, करनेवाला(२)ब्रह्मा(३) विष्णु ।

कर्दम–एक प्रजापति । ब्रह्मा के पुत्र प्रजापति पुहल के पुत्र थे । इनकी पत्नी मनुपुत्री देवहूति थी और पुत्र थे भगवान के अंशावतार कपिल महर्षि । इनकी नौ पुत्रियां भी थीं ।

कर्मठ–(१) परिश्रमी (२)केवल धार्मिक अनुष्ठानों में संलग्न ।

कर्मकाण्ड–वेद का वह विभाग जो यज्ञीय कृत्यों संस्कारों तथा उनके उचित अनुष्ठान से उत्पन्न फल से सम्बन्ध रखता है ।

कर्मजित–मगध देश के राजा बृहत्सेन के पुत्र इनके पुत्र सृतञ्जय थे ।

कर्मत्याग–सांसारिक कर्तव्य और धर्मानुष्ठान को छोड़ देना ।

कर्मदोष–मानवी कृत्यों का दुष्परिणाम ।

कर्मनाशा–काशी और विहार के मध्य बहनेवाली एक नदी जिसमें स्नान करने से दुष्कर्मों का नाश होता है ।

कर्मपथ–धर्मानुष्ठान का पथ ।

कर्मफल–पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल ।

कर्मबन्धन–जन्म-मरण का बन्धन । कर्मानुष्ठान का फल शुभ हो या अशुभ, कर्मफल भोगने के लिये जीव को जन्म लेना पड़ता है ।

कर्मभूमि–धर्मानुष्ठान की भूमि, भारतवर्ष । इस भूमि में जन्म लेकर मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल भोगने के लिये स्वर्ग नरकादि लोकों में जाते हैं । भगवत् प्राप्ति भी इसी भूमि में जन्म लेकर तदनुसार कर्म करने से होती है । मोक्षेच्छु देवता लोग भी इसी भूमि में जन्म लेना चाहते हैं ।

कर्ममीमांसा–संस्करादि अनुष्ठानों का विचार विमर्श ।

कर्मयोग–शास्त्र विहित उत्तम क्रिया का नाम 'कर्म' है और समभाव का नाम 'योग' है । इसलिये ममता, आसक्ति, काम, क्रोध आदि द्वन्द्व से रहित होकर जो समतापूर्वक स्वभाव और परिस्थिति के अनुसार शास्त्रविहित कर्तव्य कर्मों का आचरण करता है वह कर्मयोग है । इसी को समत्वयोग, बुद्धियोग, तदर्थकर्म, मदर्थकर्म आदि कहते हैं ।

कर्मविपाक–कर्मों की परिपक्वावस्था, पूर्व जन्म में किये गये कर्मों का फल ।

कर्मसन्यासी–वह सन्यासी जो कर्मफल का ध्यान न करते हुए धर्मानुष्ठानों को करता है ।

कर्मेन्द्रिय–कर्म करनेवाली इन्द्रियां जो पांच हैं–वाक्, हाथ, पैर, पायु, उपस्थ ।

कलकण्ठी–(१) मधुर कण्ठवाली (२) कोयल (३) राजहंस ।

कलहंस–(१) परमात्मा (२) राजहंस ।

कलपिंग–(१) एक पक्षी (२) एक पुण्य स्थान

कलशोद्भव–अगस्त्य मुनि ।

कला–(१) चन्द्रमा की एक रेखा (२) समय का माप (३) किसी वस्तु का एक छोटा टुकड़ा ।(४)ललित कला, शिल्पकला आदि । (५)कर्दम प्रजापति और देवहूति की नौ पुत्रियों

में से एक। ये मरीचि ऋषि की पत्नी थी और इनके कश्यप और पूर्णिमा नाम के दो पुत्र हुए।

कलाप–(१) वस्तुओं का समूह (२) एक ऋषि का नाम।

कलापग्राम–हिमालय प्रदेशों का एक पुण्य स्थान जहां अनेक योगी रहते हैं।

कलावती–चौंसठ कलाओं से युक्त देवी।

कलि–(१) मूर्तरूप कलियुग, इसने राजा नल को कठिन यातना दी थी। परीक्षित महाराजा ने इसको अपने कावू में रखा और उसको रहने का निश्चित स्थान बताया (२) संग्राम, झगड़ा (३) सृष्टि का चौथा युग।

कलिंग–एक देश, आधुनिक उत्कल।

कलिन्द–एक पर्वत जिससे कालिन्दी नदी निकलती है।

कल्कि–भगवान विष्णु का दसवां अवतार। पुराणों के अनुसार कलियुग के अन्त में जब अधर्म की पराकाष्ठा होगी, तब दुष्टों का नाश करने के लिये शाम्बल नाम ग्राम में यशस नाम के ब्राह्मण के पुत्र होकर भगवान विष्णु यशस के नाम से जन्म लेंगे। इन्हीं का नाम कल्कि होगा। कल्कि अवतार के अवसान में कलियुग का अन्त होगा और नैमित्तिक प्रलय होगा।

कल्प–(१) उचित, योग्य (२) सृष्टि की अवधि का माप (३) सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग मिलाकर एक हजार चतुर्युगों का एक कल्प है। यह ब्रह्मा का एक दिन है जो मनुष्यों के ४३२०००००० वर्ष के समान है। (४) छः वेदांगों में से एक जिसमें यज्ञ का विधि-विधान निहित है तथा जिसमें यज्ञानुष्ठान तथा धार्मिक संस्कारों के नियम बतलाये गये हैं। (५) शिशिमार नामक प्रजापति की लड़की भ्रमी और ध्रुव का पुत्र।

कल्पकवन–कैलास पर स्थित शिव का उद्यान।

कल्पतरु–कल्पवृक्ष, कल्पद्रुम, स्वर्गीय वृक्षों में से एक जो सर्वाभीष्टदायी है।

कल्पेश्वर–केदार नाथ में भगवान सदाशिव के पैर का ही भाग है। भगवान के बाकी अवयव हिमालय के चार ओर पुण्य क्षेत्रों में पूजे जाते हैं जैसे बाहु तुंगनाथ में, मुख रुद्रनाथ में, नाभि मठ-महेश्वर में और जटा कल्पेश्वर में केदारनाथ को मिलाकर ये पांच केदार से प्रसिद्ध हैं (दे: केदारनाथ)।

कवचपत्र–भोज पत्र का पेड़, पाकर वृक्ष।

कवश–एक ऋषि। इनके पुत्र तुरु महाराजा परीक्षित के पुत्र महाराजा जनमेजय के अश्वमेध यज्ञों में ऋत्विक बने।

कवि–(१) चतुर, बुद्धिमान (२) असुरों के गुरु शुक्राचार्य का अपर नाम (३) ब्रह्मा (४) वैवस्वत मनु के एक पुत्र (५) ऋषभदेव के नौ पुत्र योगी बने, उनमें से एक (दे: अन्तरिक्ष) वे बड़े निपुण, ज्ञानी और जीवनमुक्त थे।

कविरथ–कौशाम्बी के राजा चित्ररथ के पुत्र, इनके पुत्र वृष्टिमान थे।

कव्य–मृत पितरों के लिये अन्न की आहुति।

कव्यवाह–अग्नि।

कश्मीर–एक देश का नाम।

कश्यप–(१) एक ऋषि। ब्रह्मा के पुत्र माने जाते है, दूसरा मत है कि ये कर्दम प्रजापति की पुत्री कला और मरीचि महर्षि के पुत्र थे। ये प्रजापति थे और इनकी पत्नियां थीं दक्ष की पुत्रियां। अदिति और दिति इनकी पत्नियां थीं। इसलिये ये देवता और राक्षस दोनों के पिता थे। दक्ष की पुत्रियों की इनसे देव, दानव, सांप, पक्षी, मनुष्य, पशु आदि असंख्य और विविध प्रकार की सन्तानें हुईं।

कषाय–(१) कसैला, गहरा लाल (२) एकप्रकार की औषधि। (३) सांसारिक विषयों में आसक्ति।

कस्तूरी–मश्क, एक सुगन्धित द्रव्य।

कस्तूरी मृग–वह हिरण जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

कह्लार–श्वेत कमल।

कहोडक–एक ऋषि।

कक्ष—(१) लता (२) कमरा (३) तारा।

कक्षीवान्–एक प्रसिद्ध ऋषि।

काक–कौआ।

काकभुशुण्डी–भुशुण्ड मुनि। पहले अयोध्या में शूद्र कुल में पैदा हुए। अकाल पड़ने पर अयोध्या से उज्जैनी आये। वहाँ एक श्रेष्ठ ब्राह्मण से मुलाकात हुई जिन्होंने उन्हें पुत्र की तरह रखा, सदुपदेश दिया और शंभुमन्त्र सिखाया। बड़े शिवभक्त और विष्णुविरोधी हो गए। अपने ज्ञान से अन्धे होकर एक दिन गुरु की भी अवहेलना की जिससे शिव ने क्रुद्ध होकर अजगर आदि तामस जन्म लेने का शाप दिया। गुरु की प्रार्थना करने पर शिव ने अनुग्रह कर कहा कि सहस्त्र जन्म तो लेना पड़ेगा, लेकिन जन्मते और मरते दुःख नहीं होगा। आखिरी जन्म अवध में होगा जब विष्णु के प्रसाद से मुक्ति होगी। आखिरी जन्म में राम के सगुण भक्त हो गये और श्रीराम की प्राप्ति के लिये अनेक ऋषिमुनियों के पास गये। सब ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने को कहा। अन्त में लोमश ऋषि के पास गये। भुशुण्डी की सगुणोपासना की हठ देखकर पहले मुनि ने शाप दिया कि तुम कौआ बनोगे। इससे भी जब वे विचलित न हुए, मुनि ने श्रीराम की भक्ति के बारे में कहा और कौए के रूप में ही भुशुण्डी को भगवान का दर्शन हुआ। इसलिये उन्होंने कौए के शरीर को नहीं छोड़ा और काकभुशुण्डी कहलाने लगे। इन्होंने ही रामचरित को गरुड़ को सुनाया था। सुमेरु पर्वत के उत्तर में नील शैल पर वृक्ष हैं, वट, पीपल, पाकर और आम। भुशुण्डी चिरंजीवी हैं। ऐसा कहा जाता है कि वे पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान करते हैं, पाकर के नीचे जप, आम्रवृक्ष के नीचे मानस पूजा और वटवृक्ष के नीचे हरिकथा।

काकली–(१) एक मधुर स्वर (२) एक वृत्त का नाम।

काकुत्स्थ–श्रीराम, ककुत्स्थ वंश में जन्म लेने से यह नाम पड़ा।

काकोल–(१) पहाड़ी कौआ (२) सांप (३) नरक का एक भाग।

काञ्चन–(१) सोना, प्रभा (३) धतूरे का पौधा (४) सम्पत्ति।

काञ्चन गिरि–मेरु नाम का पहाड़।

काञ्ची–(१) काञ्चीपुरम्–पुण्य स्थानों में से एक। दक्षिण में स्थित यहाँ देश पुरातन काल में चोल राजाओं की राजधानी थी। (२) मेखला या करधनी।

काण्ड–(१) अंश, खंड (२) ग्रंथ का भाग (३) बाण (४) अनिष्टकर।

कातर–(१) हतोत्साह (२) दुःखी (३) भयभीत।

कात्यायन–(१) एक ऋषि जिन्होंने श्रौतसूत्र या गृह्यसूत्र की रचना की है (२) एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर अनुपूरक लिखे हैं।

कात्यायनी (१) दुर्गा का नाम (२) एक प्रौढ़ा विधवा।

कादम्ब–(१) कलहंस (२) कदम्ब वृक्ष का फूल।

कादम्बरी–(१) कदम्ब वृक्ष के फूलों से खींची हुई शराब (२) सरस्वती (३) मदमस्त हाथी की कनपटियों से बहने वाला मद (४) संस्कृत के प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट की एक रचना जिसकी नायिका का नाम कादम्बरी है।

कादम्बिनी–बादलों की पंक्ति।

काननाग्नि–दावानल।

काननौकस–(१) जंगलवासी (२) बन्दर (३) ऋषि-मुनि।

कानीन–अविवाहिता स्त्री का पुत्र।

कान्त–(१) इष्ट, प्रिय, मनोहर (२) प्रेमी, पति

(३)वसन्त ऋतु ।

कान्ता–(१) प्रेमिका(२) बड़ी इलायची(३) पृथ्वी ।

कान्तार–विशाल जंगल ।

कान्ती–(१)सौन्दर्य, शोभा(२)दुर्गा का नाम ।

कापट्य–दुष्टता, धोखेबाजी ।

कापालिक–शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत विशिष्ट सम्प्रदाय का अनुयायी जो मनुष्य की खोपड़ियों की माला पहनते हैं और उन्हीं में खाते-पीते हैं ।

कापिल–(१) कुश द्वीप का एक विभाग (२) कपिल मुनि द्वारा प्रस्तुत सांख्यदर्शन का अनुयायी । (२) भूरा रंग ।

कापिल शास्त्र–कपिल मुनि द्वारा प्रस्तुत सांख्य-शास्त्र ।

काम–(१) स्नेह, अनुराग(२)इच्छा(४) चार पुरुषार्थों में से एक (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) (४) कामदेव (५) प्रद्युम्न (जो कामदेव के अवतार माने जाते हैं)(६)भोग आसक्ति(७) शिव का नाम (८) स्वाहा देवी के एक पुत्र एक अग्नि का नाम । (९) धर्म और दक्ष-पुत्री संकल्प का पुत्र ।

कामकेलि–कामक्रीड़ा, संभोग ।

कामकोटिपीठ–दक्षिण भारत में श्री शंकराचार्य का पीठ ।

कामजित्–(१) शिव (२)स्कन्द की उपाधि ।

कामदा–कामधेनु ।

कामदुधा–इच्छाओं को पूरी करनेवाली काल्पनिक गाय ।

कामदेव–प्रेम का देवता (२) केतुमाल वर्ष में भगवान विष्णु श्री लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिये सौन्दर्य की मूर्ति कामदेव के रूप में रहते हैं और उस वर्ष प्रजापति की पुत्रियों (जो रात की अधिष्ठात्री देवियाँ हैं और पुत्रों जो दिन के अधिष्ठान देवता हैं) को प्रसन्न रखते हैं । (३) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–इन चारों पुरुषार्थों को चाहने वाले मनुष्यों द्वारा अभिलषित समस्त कामनाओं के अधिष्ठाता भगवान् विष्णु ।

कामधेनु–(१) समस्त गौओं में श्रेष्ठ गौ । यह देवता और मनुष्य सभी की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली है । इसकी उत्पत्ति समुद्र मथन से हुई । इसलिये भगवान ने इसको अपना स्वरूप बतलाया है ।

कामपत्नी–कामदेव की स्त्री, रति ।

कामपाल–बलराम ।

कामरूप–(१) इच्छानुकूल रूप धारण करने वाला (२) सुन्दर (३) बंगाल के पूर्व में असम के पश्चिम में स्थित एक जिला ।

कामशास्त्र–रतिशास्त्र ।

कामसूत्र-वात्स्यायन मुनि द्वारा रचित रतिशास्त्र ।

कामा–(१)दुर्गा की उपाधि (२) पुरुवंश पृथुश्रुवा की पुत्री ।

कामाक्षी–सुन्दर आँखोंवाली स्त्री ।

कामाख्या–असम देश में गोहाटी से ५ मील दूरी पर एक प्रसिद्ध क्षेत्र है । कामाख्या मन्दिर । उसकी अधिष्ठात्री देवी का नाम ।

काम्बोज–भारत के उत्तर-पश्चिम का एक प्रदेश आधुनिक काबुल है । कबोज, उस देश के निवासी । (२)काम्बोज देश के घोड़े की वक जाति (३) पुन्नाग वृक्ष ।

काम्य–(१) अभीष्ट (२) सुन्दर ।

काम्यकवन–एक जंगल । वनवास के समय पाण्डव इस वन में भी रहते थे ।

काय–(१) शरीर (२) मूलधन ।

कायक्लेश–शरीर का कष्ट ।

कायचिकित्सा–आयुर्वेद के आठ विभागों में से तीसरा

कायस्थ–(१)एक जाति (लेखक जाति) (२) आँवले का वृक्ष ।

कारन्धम–दक्षिण समुद्र के पाँच तीर्थों में से एक ।

कारणजल–सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मूल जल ।

कारणशरीर–शरीर का आन्तरिक बीजारोपण ।

कारण्डव–एक प्रकार का बतक ।

कारस्कर–एक प्रकार का वृक्ष जिसका बीज बहुत कड़ुआ है ।

कारुणिक–दयालु ।

कारुण्य–दया, कृपा ।

कारुष–(१)प्राचीन भारत का एक देश ।(२) वैवस्वत मनु का पुत्र ।

कार्कश्य–कठोरता ।

कार्कोटक–(१) पूर्व सागर के पास का एक पर्वत (२) कश्यप मुनि और दक्ष पुत्री कद्रू का पुत्र एक विषैला साँप । (दे: कर्कोट)

कार्तवीर्य–कृतवीर्य का पुत्र, हैहय देश का राजा, जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी । दत्तात्रेय के वर प्रसाद से इसको हजार भुजाएँ स्वर्णमय रथ, दिग्विजय, शत्रुओं द्वारा अपराजय आदि वर प्राप्त हुए । वायुपुराण के अनुसार उसने धर्म और न्यायपूर्वक ८५००० वर्ष तक राज्य किया और अनेक यज्ञ किये । रावण को अपनी नगरी में पशु की भाँति कारागार में डाल दिया था । परशुराम के पूज्य पिता जमदग्नि महर्षि की हत्या करने से परशुराम ने इन्हें मार डाला । कार्तवीर्य को सहस्रार्जुन भी कहते हैं ।

कार्तिक–(१)कार्तिक महीना जब कि पूरा चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र के निकट रहता है (अक्टूबर-नवम्बर महीना) (२) स्कन्द का नाम ।

कार्तिकेय–स्कन्द देव, क्योंकि उनका पालन-पोषण छ: कृत्तिकाओं द्वारा हुआ था, शिव जी के पुत्र हैं । शिव ने अपना वीर्य अग्नि में फेंका जिसने इसे सहन न कर सकने के कारण गंगा में फेंक दिया । इसलिये स्कन्द को अग्निभू और गंगा पुत्र भी कहते हैं । इसके पश्चात यह वीर्य छ: कृत्तिकाओं में, जब वे गंगा में स्नान करने गईं, प्रवेश किया जिससे वे गर्भवती हुईं और उनका एक-एक पुत्र पैदा हुआ । बाद में इन छ: पुत्रों को रहस्यमय ढंग से जोड़ कर एक बालक कर दिया जो छ: सिर, बारह हाथ, बारह आँखोंवाला था । इसलिये स्कन्द को षडानन या षड्मुख भी कहते हैं । दूसरी कहानी के अनुसार गंगा ने शिववीर्य को सरकण्डों में फेंक दिया, इसी कारण स्कन्द देव शरवणभव भी कहलाते हैं ।

कार्पट–(१) चिथड़ा (२) अभियोक्ता ।

कार्पटिक–तीर्थयात्री ।

कार्मुक–(१) धनुष (२) काम करने योग्य ।

कार्ष्ण–विष्णु या कृष्ण से सम्बन्ध रखनेवाला ।

कार्ष्णि–कृष्ण का पुत्र, प्रद्युम्न ।

काल–(१) समय (२) ऋतु (३)नौ द्रव्यों में से एक(४) मृत्यु का देवता यम (५)नियति (६) शनिग्रह ।

कालकन्या–काल की पुत्री जो पति की खोज में लोकों में घूमती है । भयंकर प्रकृति के कारण उसका दुर्भगा नाम भी है । उसने नारद मुनि को पति बनाना चाहा । उसकी प्रार्थना को अस्वीकार करने पर उसने महर्षि को शाप दिया कि वह एक जगह ज्यादा देर न ठहर सकेंगे । नारद जी के उपदेशानुसार उसने यवनों के प्रति भय को अपना पति बनाना चाहा । भय ने उसको अपनी बहन बना लिया और भाई प्रज्वर के साथ राजा पुरञ्जन की राजधानी पर आक्रमण किया । कालकन्या ने पुरञ्जन को अपना दास बना लिया ।

कालका–कश्यप ऋषि की पौत्री, दनु के पुत्र वैश्वानर की पुत्री ।

कालकूट–भयंकर हलाहल विष । समुद्र-मन्थन से प्राप्त विष जिसको लोक-कल्याण के लिये शिव ने पिया था ।

कालकेतु–कश्यप ऋषि और दक्षपुत्री दनु का प्रतापी पुत्र जो असुरों का राजा बना ।

कालकेय–कश्यप और कालिका के असुर पुत्र । ये संख्या में करीब साठ हजार थे । देवलोक के समीप हिरण्यपुर में रहते थे । निवात-कवच

नामक असुरों के साथ देवताओं को उपद्रव पहुँचाते थे । इन्द्र ने अपने वीर पुत्र अर्जुन को स्वर्ग बुलाया । अर्जुन ने इससे घोर युद्ध कर इनको मारा ।

कालकूत–(१) सूर्य (२) परमात्मा ।

कालचक्र–(१) समय का चक्र । समय सदा घूमते हुए चक्र के समान वर्णित किया जाता है । (२) जीवन की परिस्थितियाँ ।

कालचोदित–यमदूतों द्वारा बुलाया गया ।

कामञ्जर–(१) महामेरु पर्वत के निकटवर्ती एक पर्वत (२) शिव की उपाधि ।

कालटि–आदि शंकराचार्य का जन्म स्थान । यह केरल में पेरियार के किनारे स्थित है ।

कालत्रय – तीन काल, भूत, वर्तमान और भविष्य ।

कालदण्ड–मृत्यु । ·

कालनर–सोमवंश के राजा सभानर के पुत्र, इनके पुत्र सृञ्जय थे ।

कालनाभ–(१) विष्णु (२) एक राक्षस ।

कालनियोग–भाग्य निर्णय ।

कालनेमि–(१)–समय चक्र का घेरा (२) रावण का चाचा जिसने हनुमान को मृत-संजीवनी लाने जाने समय रोका था और हनुमान से मारा गया था । (३) सौ हाथों वाला एक राक्षस जिसे विष्णु ने मारा था ।

कालपाश–मृत्यु या यम का जाल ।

कालभक्ष–शिव का विशेषण ।

कालभैरव–शिव ।

कालयवन–यवनों का राजा, यादवों का शत्रु । अपने समान प्रबल शत्रु की खोज में वह घूमता रहा । नारद मुनि ने श्री कृष्ण के बारे में सुन कर करोड़ों म्लेच्छों के साथ मथुरा पर आक्रमण किया । श्रीकृष्ण का पीछा करता हुआ, उनकी माया से प्रेरित होकर वह एक गुफा में पहुँचा जहाँ राजा मुचकुन्द सो रहे थे । कालयवन राजा की नेत्राग्नि में जल मरे ।

कालरात्रि–(१) अन्धेरी रात (२) विश्व की समाप्तिसूचक महाप्रलय की रात ।

कालहस्ति–दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध शिव मन्दिर, आन्ध्र प्रदेश में है ।

कालसर्प–काला और अत्यन्त विषैला सर्प ।

कालसूत्र–समय या मृत्यु की डोरी ।

कालाग्निरुद्र–प्रलय के समय संसार का संहार करने के लिये शिव भयंकर रूप धारण करते हैं । तब वे कालाग्नि रुद्र कहलाते हैं ।

कालाप–(१) साँप का फण (२) एक प्राचीन महर्षि (३) राक्षस ।

कालिका–(१) दुर्गा (२) दक्ष की पुत्री कश्यप की पत्नी, इसके पुत्र कालकेय कहलाते थे ।

कालिग–कलिंग देश का राजा ।

कालिदास–भारतीय महाकवियों में अग्रगण्य । विक्रमादित्य महाराजा के नवरत्नों में से एक थे । ये पहले मूर्ख थे, बाद में काली के प्रसाद से अपार पण्डित बने । इन्होंने रघुवंश, कुमार-सभव, मेघसन्देश, ऋतु संहार आदि महा-काव्य और खण्ड काव्य और मालविकाग्नि विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान शाकुन्तलम आदि नाटक भी लिखे ।

कालिन्दी–पुण्य नदियों में से एक, अपर नाम यमुना है । कालिन्द पवत से निकलने के कारण कालिन्दी नाम पड़ा । इसकी अधिष्ठात्री देवी कालिन्दी है, जिसके साथ श्रीकृष्ण का विवाह हुआ और दस पुत्र हुए । वृन्दावन में रहते श्रीकृष्ण और बलराम ने गोप-गोपागनाओं के साथ कालिन्दी के किनारे अनेक क्रीड़ायें कीं ।

कालिन्दी द्वीप–पराशर मुनि ने अपने तपोबल से कालिन्दी नदी के बीच एक द्वीप की सृष्टि की जहाँ उनका और सत्यवती का पुत्र व्यास जी का जन्म हुआ ।

कालिय–प्रजापति कश्यप और दक्षपुत्री कद्रू का पुत्र, नागों में श्रेष्ठ नाग । गरुण के भय

से कालिय सपरिवार कालिन्दी की गोद में रहता था जहां सौभीर मुनि के शाप से गरुड़ का प्रवेश नहीं था। कालिय की विषज्वाला से आस-पास के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य आदि जल जाते थे। श्रीकृष्ण ने कालिय का मर्दन किया और बाद में वर दिया कि तुम्हारे सिर पर मेरा पदचिन्ह देखकर गरुड़ तुम्हारा अनिष्ट न करेगा। कालिय सपरिवार रमणक द्वीप में रहने लगे।

काली–(१) पार्वती देवी (२) व्यास ऋषि की माता सत्यवती का अपर नाम (३) काले बादलों की पंक्ति (४) कालिमा (५) भीमसेन की एक पत्नी जिससे उनका सर्वगत नामक पुत्र हुआ।

कालीन–(१)ऋतु के अनुकूल।

कालेय–काले चन्दन की लकड़ी।

कालवरी–जेरुसलम का एक पहाड़, जहां क्रिस्तु की हत्या हुई।

कावेरी–दक्षिण भारत की एक पुण्य नदी।

काव्य–ऋषि या कवि के गुणों से युक्त (२) राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य (३) कविता (४) बुद्धिमत्ता (५) तामस मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

काशी–(१) भारत के प्रमुख पुण्य क्षेत्रों में से एक। यह गंगा के किनारे स्थिति है और यहां विश्वनाथ जी का प्रसिद्ध क्षेत्र है। अगणित भक्तजन प्रतिदिन भगवान के दर्शन करते हैं। यहां आज भी प्रसिद्ध मन्दिर और घाट हैं। विश्वास है कि काशी में मरने वालों को मुक्ति मिलती है। इसका पौराणिक नाम वाराणसि है (दे: वाराणसि)। (२) पुरुरवा के वंशज राजा काश्य के पुत्र। इनके पुत्र राष्ट्र थे।

काशीश्वरतीर्थ–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य तीर्थ जिसमें स्नान करने से सब प्रकार के रोगों का शमन होता है।

काश्मीर मण्डल–एक पुण्य स्थल।

काश्य–(१) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज सेनजित के पुत्र (२) पुरुरवा के वंशज क्षत्रवृद्ध के पुत्र, इनके पुत्र काशी थे। (३) एक मदिरा।

काश्यप–(१) कण्व मुनि को काश्यप कहते हैं। (२) कश्यप के पुत्र।

काश्यपि–(१)गरुड़ और अरुण का विशेषण। (२) भूमि।

काषाय–गेरुए रंग में रंगा हुआ। इस रंग के वस्त्र सन्यासी पहनते हैं।

काष्टा–कश्यप ऋषि की पत्नी, इससे घोड़े, गधे आदि जानवर पैदा हुए।

काष्ठा–(१) काल की माप (२) सीमा।

किम्पुरुष–(१) जम्बू द्वीप नौ भागों में विभाजित है, एक एक भाग को वर्ष कहते हैं। इनमें से एक का नाम किम्पुरुष है। इसके पार्श्व में निषाध, हेमकूट, हिमालय आदि पर्वत स्थिति हैं। (२) महाराजा प्रियव्रत के पुत्र अग्नीन्ध्र के एक पुत्र का नाम। ये जम्बूद्वीप के किम्पुरुषवर्ष के राजा थे। (३) कुछ कुछ पुरुष के समान प्रतीत होनेवाले देवता गण।

किंशुक–ढाक का पेड़, जिसके फूल बड़े सुन्दर, परन्तु निर्गन्ध होते है।

किङ्किण–यदुवंश के राजकुमार भजमान का पुत्र।

किङ्किर–(१)कोयल (२) कामदेव (३) मधुमक्खी।

किञ्जल्क–कमल।

किन्देव–देवलोक के गायक। श्रम और स्वेदादि दुर्गन्ध से रहित होने के कारण कुछ-कुछ देवता के समान और कुछ-कुछ मनुष्य के समान हैं।

किन्नर–पुराणोक्त पुरुष जिसका सिर घोड़े का तथा शेष शरीर मनुष्य का है।

किम्–विष्णु का नाम, विचारणीय ब्रह्मस्वरूप।

किरात–(१) एक पतित पहाड़ी जाति जो

शिकार कर अपनी जीविका चलाती है (२) प्राचीन भारत का एक जन-स्थान (३) किरात वेषधारी शिव । अर्जुन की शक्ति और पराक्रम की परीक्षा लेने भगवान शिव ने किरात के वेष में आकर अर्जुन की तपस्या को भंग किया और युद्ध में पराजित किया । अर्जुन की वीरता से सन्तुष्ट भगवान ने उनको पाशुपतास्त्र देकर अनुग्रहीत किया ।

किरातार्जुनीय—अर्जुन ने वनवास काल में शिव धनुष पाने के लिये शिव की तपस्या की। अर्जुन का शक्ति-परीक्षण करने के लिये शिव एक किरात और श्री पार्वती एक किराती के वेष में आये । अर्जुन और शिव के बीच में घोर युद्ध हुआ । अर्जुन की वीरता देख कर शिव ने प्रसन्न होकर विख्यात पाशुपतास्त्र दिया । इस कथा को किरातार्जुनीय कहते हैं ।

किराती—किरात की स्त्री के वेष में श्रीपार्वती ।

किरीट-मुकुट ।

किरीटी—किरीटमाली, अर्जुन का विशेषण । अर्जुन के मस्तक पर देवराज इन्द्र का दिया हुआ सूर्य के समान प्रकाशमय दिव्य मुकुट सदा रहता था, इससे उनका नाम किरीटी हुआ ।

किशोर—(१) सूर्य (२) बालक ।

किष्किन्धा—प्राचीन काल में दक्षिण भारत में स्थित एक देश जिसमें वानर राज्य करते थे।

कीकट—(१) एक राजा का नाम (२) एक देश का नाम (३) कृपण ।

कीचक—विराट राजा का स्याला । कीचक लम्पट था । पाण्डव और द्रौपदी अज्ञात रूप में विराट देश में रहते थे । कामातुर होकर कीचक ने द्रौपदी को अपनाना चाहा। द्रौपदी ने यह बात भीमसेन से बतायी । भीमसेन ने कीचक का काम तमाम कर दिया ।

कीर्तन—(१) भगवान का भजन गाना (२) कथन (३) यश गान ।

कीर्ति—(१) दक्ष प्रजापति और मनुपुत्री प्रसूति की पुत्री । इसका धर्मराज के साथ विवाह हुआ (२) यश (३) प्रकाश, प्रभा (४) भगवान की विभूति ।

कीर्तिमान—(१) वसुदेव और देवकी का पहला पुत्र (२) यशस्वी ।

कु—पृथ्वी ।

कुकुर—यदुवंश के अन्धक के पुत्र, इनके पुत्र वह्नि थे ।

कुक्कुटेश—स्कन्ददेव का नाम, इनका वाहन मोर है ।

कुक्षि—(१) पेट (२) एक असुर राजा ।

कुङ्कुम—केसर ।

कुङ्कुमाद्रि—एक पहाड़ का नाम ।

कुचेल—श्रीकृष्ण के बाल सखा सुदामा । सान्दीपनि मुनि के पास विद्याभ्यास करते समय श्रीकृष्ण और बलराम के साथ सुदामा भी वहाँ अध्ययन करते रहे थे । बाद में गृहस्थाश्रम स्वीकार किया । ये बड़े दरिद्र थे, प्रायः मैले कपड़े पहनते थे, इसलिये कुचेल नाम पड़ा । श्रीकृष्ण के प्रसाद से इनकी दरिद्रता मिटी । ये भगवान के बड़े भक्त थे ।

कुज—(१) मंगल ग्रह (२) एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था ।

कुञ्जन नाम्बियार—केरल के पहले जनकीय कवि मलयालम में "तुल्लल्" नामक नाट्यकला, जो प्रायः मन्दिरों में दिखाई जाती है, का प्रस्थान इन्होंने किया था । पौराणिक कथाओं को लेकर इन्होंने हास्यरस प्रधान कवितायें लिखी हैं ।

कुञ्जर—(१) हाथी (२) सर्वोत्तम या श्रेष्ठ पीपल का वृक्ष (४) हस्त नामक नक्षत्र ।

कुञ्जिकुट्टन तम्पुरान्—ये केरल के कोट्टुङ्ङल्लूर नामक देश के राजा थे । मलयालम के महाकवि थे । इन्होंने मलयालम और संस्कृत में अनेक रचनायें कीं । इनकी सबसे प्रसिद्ध

कृतियां मलयालम में महाभारत और श्रीमत्-भागवत हैं।

कुटक–भारतवर्ष का एक पर्वत।

कुटज–(१) अगस्त्य ऋषि (२) एक वृक्ष का नाम।

कुणि–वृष्णि वंश के जय के पुत्र, इनके पुत्र युगन्धर थे।

कुण्डल–(१) कान का आभूषण (२) प्राचीन भारत का एक जनस्थान।

कुंडलि–(१) विष्णु का नाम (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (३) जन्मपत्री।

कुण्डलिनी–(१) मूलाधार में स्थित शक्ति। तीन लपेटों मे नीचे सिर कर सोई हुई सी यह शक्ति रहती है। प्राणाकार और जीव-शक्तिमय यह कुण्डलिनी कमल तन्तु के समान कृश और बिजली के समान प्रकाशमय है। ध्यान लगाकर योगी लोग इस कुण्डलिनी के सिर को ऊपर करते हैं। (२) कुण्डलों से विभूषित (३) सांप (४) वरुण का नाम।

कुण्डिनपुर–एक नगर का नाम, विदर्भ देश की राजधानी। यहां की राजकुमारी थी महाराज नल की पत्नी दमयन्ती। और श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी।

कुण्डोदर–(१) जनमेजय का एक पुत्र (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

कुतप–(१) सूर्य (२) अग्नि (३)ब्राह्मण(४) कुश घास।

कुन्तल–(१) सिर के बाल (२)एक देश और उसके निवासी।

कुन्तिभोज–एक यादव राजकुमार, कुन्ति देश के राजा। निस्सन्तान होने के कारण इन्होंने कुन्ती को गोद लिया था।

कुन्ती–शूरसेन नामक यादव और मारिषा की पुत्री, वसुदेव की बहन। इनका नाम पृथा था। कुन्तिभोज ने गोद लिया था, इसलिये कुन्ती नाम पड़ा। दुर्वासा महर्षि की परिचर्या करने से इनको पांच मन्त्र मिले थे। मन्त्र की परीक्षा लेने के लिये सूर्य का ध्यान कर एक मन्त्र जपा। सूर्यदेव प्रत्यक्ष हुए और कुन्ती को उनसे एक तेजस्वी बालक उत्पन्न हुआ जो बाद में कर्ण के नाम से अति विख्यात हुआ। कुन्ती पाण्डु महाराजा की पहली पत्नी थी। शाप के कारण पाण्डु सन्तानोत्पादन नहीं कर सकते थे। इसलिये उनकी अनुमति से दुर्वासा से प्राप्त मन्त्रों का प्रयोग कर कुन्ती ने धर्मदेव, वायु और इन्द्र से क्रमशः युधिष्ठिर भीमसेन और अर्जुन को जन्म दिया। शेष एक मन्त्र उन्होंने सपत्नी माद्री को बताया जिसके प्रयोग से माद्री ने अश्विनी देवताओं का आवाहन कर नकुल और सहदेव नामक दो पुत्रों को प्राप्त किया। पाण्डु की मृत्यु के बाद कुन्ती अपने और माद्री के पुत्रों के साथ हस्तिनापुर में रहने लगी। कौरवों के हाथ उनको अनेक कष्ट उठाने पड़े। पुत्रों के वन-वास के समय कुन्ती हस्तिनापुर में ही रही। अनेक यातनायें सहनी पड़ीं।

कुन्तीपुत्र–कर्ण, युधिष्ठिर, भीमसेन और अर्जुन।

कुन्द–(१) विष्णु का नाम, कश्यप जी को पृथ्वी प्रदान करने वाले(२)चमेली का भेद।

कुन्दर–हिरण्यक्ष को मारने के लिये पृथ्वी को विदीर्ण करनेवाले विष्णु भगवान।

कुबेर–पुलस्त्य ऋषि के पौत्र और विश्रवा और इड़विड़ा के पुत्र। रावण के सौतेले भाई हैं। शिव के प्रसाद से ये धन और उत्तर दिशा के स्वामी हुए। ये यक्ष और किन्नरों के राजा तथा शिव के मित्र हैं। ब्रह्मा ने इनको पुष्पक दिया जिसको रावण ने छीन लिया। ये अलकापुरी में रहते हैं और नल-कूबर और मणिग्रीव इनके पुत्र थे।

कुबेरतीर्थ–सरस्वती के किनारे एक पुण्य प्रदेश जहां कुबेर ने तपस्या की थी।

कुब्जा–कंस का अंगलेपन तैयार करने वाली एक सेविका, जिसका शरीर तीन स्थानों में वक्र था । जब श्रीकृष्ण और बलराम मथुरा की सड़कों पर जा रहे थे, रास्ते में कुब्जा मिली। उनके मांगने पर कुब्जा ने कंस के लिये तैयार किया हुआ उबटन बड़ी प्रसन्नता से इनको दिया । श्रीकृष्ण अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसकी वक्रता दूर कर दी जिससे वह एक सुन्दर स्त्री बन गई ।

कुब्जाभ्रक–एक पुण्य स्थल ।

कुमार–(१) ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार नामक ऋषि (२) स्कन्ददेव का अपर नाम (३) बालक (४) राजकुमार (५) अग्नि ।

कुमार कोटि–एक पुण्य स्थान ।

कुमारधारा–ब्रह्मसर से निकलनेवाली एक नदी ।

कुमारी–(१) दस से बारह वर्ष के बीच की लड़की (२) अविवाहिता तरुणी (३) दुर्गा (४) एक नदी ।

कुमारी पूजा–नवरात्री के दिनों में एक दिन देवी के कुमारी रूप की पूजा होती है ।

कुमुद–(१) एक प्रमुख वानर-जो सीता देवी की खोज में गया था । (२) एक सांप (३) एक पर्वत (४) लाल कमल (५) सफेद कमल (६) भगवान विष्णु का नाम, कु अर्थात् पृथ्वी को उनका भार उतार कर प्रसन्न करने वाले ।

कुमुदमालि–स्कन्ददेव का एक पार्षद ।

कुमुद्वती–(१) कुमुद नामक नाग की छोटी बहन । कुमुद ने अपनी बहन को श्रीराम के पुत्र कुश को प्रदान किया था । (२) किरात देश के राजा विमर्शन की पत्नी ।

कुमुदिनी पति–चन्द्रमा ।

कुमोदक–महाविष्णु का विशेषण ।

कुम्बा–यज्ञभूमि का अहाता ।

कुम्भ–(१) घड़ा (२) हाथी के मस्तक का ललाट स्थल (३) योग दर्शन में श्वास को स्थगित करने के लिये नाक और मुख-विवर को बन्द करना (४) कुम्भकर्ण के दो पुत्र कुम्भ और निकुम्भ थे । सुग्रीव ने कुम्भ को युद्ध में मारा (५) प्रह्लाद का एक पुत्र (६) प्रसिद्ध मेला और पर्व जो बारह साल में एक बार आता है, तब पूर्ण कुम्भ होता है । छः साल का कुम्भ अर्धकुम्भ कहलता है । इस पर्व पर तीर्थ-स्थानों पर, विशेषकर हरिद्वार और त्रिवेणी के संगम पर भक्तजन स्नान कर पुण्य लाभ करते हैं ।

कुम्भक–देखिए प्राणायाम ।

कुम्भकर्ण–पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा और सुमाली की पुत्री कैकसी का दूसरा पुत्र, रावण का भाई, एक महाकाय राक्षस । इन्द्रादि देवताओं और ऋषि-मुनियों को बहुत तंग करता था । इन्द्रपद प्राप्त करने के लिये ब्रह्मा की तपस्या की । देवों की प्रार्थना से सरस्वती देवी उसकी जिह्वा पर बैठ गई जिससे कुम्भकर्ण ने ब्रह्मा से 'इन्द्रपद' के स्थान पर 'निन्द्रापद' मांगा इसलिये वह छः महीने लगातार सोता था और फिर एक दिन जागता और भोजन करता था । राम-रावण युद्ध में इसने हजारों वानरों को मारा और अन्त में राम के हाथ मारा गया ।

कुम्भकार–(१) कुम्हार (२) एक वर्ण संकर जाति ।

कुम्भकोण–एक नगर का नाम ।

कुम्भज–कुम्भयोनि, कुम्भसम्भव (१) अगस्त्य और वसिष्ठ का विशेषण (२) कौरव और पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्य का नाम ।

कुम्भरेता–एक अग्नि का नाम ।

कुम्भलग्न–दिन का वह समय जब कि राशि-क्षितिज के ऊपर उदय होता है ।

कुम्भाण्ड–बाणासुर का मन्त्री । इसकी पुत्री थी चित्रलेखा जो बाणासुर की कन्या उषा की सखी थी ।

कुम्मिल–(१) चोर (२) साला (३) गर्भ पूरा होने से पहले उत्पन्न बालक ।

कुम्भीनस–(१) एक राक्षस (२) एक प्रकार का विषैला सांप ।

कुम्भीनसी–(१) सुमालि राक्षस और केतुमति की पुत्री ।(२)गन्धर्वराज चित्ररथ की पत्नी ।

कुम्भीपाक–एक प्रकार का नरक जिसमें पापी जन कुम्हार के बर्तनों की भांति पकाये जाते हैं ।

कुरंग–(१) हरिण (२) महामेरु के पास एक पर्वत ।

कुरंगनाभि–कस्तूरी ।

कुरर–(१) क्रौंच पक्षी(२) महामेरु के निकटवर्ती एक पहाड़ ।

कुरु–(१) वर्तमान दिल्ली के निकट, भारत के उत्तर में स्थित एक देश (२) प्रियव्रत महाराज के पुत्र अग्नीन्ध्र का एक पुत्र । (३) सोमवंश के प्रसिद्ध राजा कुरु जिनके पुत्र-पौत्रादि कौरव के नाम से प्रख्यात हुये । (४) एक महर्षि (५) एक पुरोहित ।

कुरुजांगल–प्राचीन भारत का एक देश जिसकी राजधानी हस्तिनापुरी थी ।

कुरुतीर्थ–कुरुक्षेत्र के पास एक तीर्थ ।

कुरुवर्ष–जम्बू द्वीप के जिस विभाग पर अग्नीन्ध्र के पुत्र कुरु राज्य करते थे । उसको कुरु वर्ष कहते हैं ।

कुरुविन्द–(१) पद्मराग मणि (२) दर्पण ।

कुरुवृद्ध–भीष्म पितामह ।

कुरुक्षेत्र–सरस्वती नदी के दक्षिण भाग और दृषद्वती नदी के उत्तर भाग के मध्य में यह पुण्य क्षेत्र स्थित है । यह स्थान अम्बाला से दक्षिण और दिल्ली से उत्तर की ओर है । इसकी लम्बाई-चौड़ाई पाँच योजन थी । इस समय भी इसका स्थान यही है । इसका एक नाम स्यमन्तपंचक था । यहाँ प्रसिद्ध महाभारत का युद्ध हुआ । शास्त्रों में कहा है कि यहाँ अग्नि, रुद्र, ब्रह्मा आदि देवताओं ने तप किया था और यहाँ मरने वालों को उत्तम गति मिलती है । इसलिए इसका नाम धर्मक्षेत्र और पुण्यक्षेत्र भी है । यहाँ और इसके आस-पास अनेक पुण्यतीर्थ और पवित्र स्थान हैं ।

कुलकुण्ड–मूलाधार कर्णिका के मध्य में कमल की डण्डी के बीच के छेद के समान विन्दु ।

कुलघ्न–कुल का नाश करने वाला ।

कुलदीप–वह संतान जिससे कुल का नाम उजागर हो ।

कुलदेवता–कुल का संरक्षक देवता ।

कुलधर्म–अपने कुल का धर्म ।

कुलनन्दन–अपने कुल को प्रसन्न करने वाला पुत्र ।

कुलनायिका–वाममार्गी शाक्तों की तान्त्रिक पूजा के उत्सव के अवसर पर जिस लड़की की पूजा की जाय, वह ।

कुलपरम्परा–वंश को बनानेवाली पीढ़ियों की श्रेणी ।

कुलपति–(१) कुटुम्ब का मुखिया (२) वह ऋषि जो दस हजार विद्यार्थियों का पालन-पोषण करते हैं तथा उन्हें शिक्षा देते हैं ।

कुलवृद्ध–परिवार का बूढ़ा तथा अनुभवी वृद्ध पुरुष ।

कुलाचल–उन मुख्य सात महापर्वतों में से एक जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खण्ड में विद्यमान माने जाते हैं । उन पर्वतों के नाम हैं, महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्ष, विन्ध्य और पारियात्र । द्रविड़ देश के प्रख्यात राजा इन्द्रद्युम्न ने इसी कुलाचल पर्वत पर तपस्या की थी और यहीं पर अगस्त्य ऋषि ने उनको गज का जन्म लेने का शाप दिया था । (दे : इन्द्रद्युम्न)

कुलिक–(१) उत्तम कुल में उत्पन्न (२) एक सांप ।

कलिन्द–एक देश तथा उसके शासकों का नाम।
कुलिर–राशि चक्र में चौथी राशि, कर्क राशि।
कुलिश–इन्द्र का वज्र।
कुलीन–अच्छे कुल में उत्पन्न।
कुल्या–(१) साध्वी स्त्री (२) छोटी नदी।
कुवलयापीड–एक मदमस्त हाथी जिसके द्वारा कंस ने श्रीकृष्ण और बलराम को मथुरा पहुँचने पर मारना चाहा, परन्तु श्रीकृष्ण ने इस हाथी को मार कर इसके दाँत उखाड़ दिये।
कुवलाश्व–इक्ष्वाकु वंश के राजा शानस्त के पुत्र। अपने सौ पुत्रों के साथ असुर धुन्धु को मारा और धुन्धुमार से प्रसिद्ध हुए।
कुश–(१) एक प्रकार की घास (दर्भ) जो पवित्र मानी जाती है और बहुत से धर्मानुष्ठानों में जिसका होना आवश्यक समझा जाता है। (२) अयोध्या के महाराजा श्री राम और सीतादेवी के एक पुत्र। कुश और लव युगल थे और उनका जन्म वाल्मीकि के आश्रम में हुआ था। मुनि ने राजकुमारों को अस्त्र-शस्त्र और विद्या का अभ्यास कराया। उनको रामायण की कथा को सुरीले स्वर से गाने को सिखाया था। श्री रामचन्द्र जी के अश्वमेध यज्ञ में ये दोनों राजकुमार गये और उनका गाना सुनकर और उनके रूप की सौम्यता देख कर सबको विश्वास हो गया कि ये दोनों श्रीराम के पुत्र हैं। वाल्मीकि महर्षि से उनका परिचय पाकर श्री राम ने अपने पुत्रों को सहर्ष स्वीकार किया। श्रीराम ने कुश को कुशावर्त का राजा बनाया, बाद में श्री राम के महाप्रयाण के बाद वे अयोध्या को लौट आये। (३) एक महर्षि (४) यदुवंश के राजा विदर्भ और भोज्या का एक पुत्र।
कुशद्वीप–सात महाद्वीपों में से एक सुरोद और घृतोद सागरों के बीच में स्थित यह द्वीप ७४,००,००० मील चौड़ा है।
कुशध्वज–(१) सीता देवी के पिता जनक के छोटे भाई। इनकी लड़कियाँ थीं श्रुतकीर्ति और माण्डवी जिनके साथ शत्रुघ्न और भरत का विवाह हुआ था। (२) बृहस्पति का एक पुत्र।
कुशधारा–एक नदी।
कुशप्लव–एक पवित्र स्थान।
कुशल–(१) समृद्ध (२) दक्ष (३) कल्याण (४) क्रौंच द्वीप के समीप एक देश।
कुशस्थली–समुद्र के बीच में एक नगर जिसका प्राचीन नाम द्वारका था। वैवस्वत मनु के पुत्र के पौत्र रेवत ने इसको सबसे पहले बनाया था। बरसों बाद यह समुद्र में डूब गया। द्वापर युग में जब जरासंध और काल-अक्षौहिणी सेनाओं के साथ मथुरा पर आक्रमण करने आये तब श्रीकृष्ण ने शिल्पिमय के द्वारा समुद्र में द्वारका का निर्माण कर यादवों को वहाँ बसाया। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के साथ ही यह समुद्र में डूब गया। वह स्वर्ग से भी सुन्दर सकल ऐश्वर्य, समृद्धि से परिपूर्ण था। गुजरात के पश्चिम भाग में आज भी द्वारका नाम का नगर है जो पुण्य धामों में एक समझा जाता है।
कुशाग्र–कुरु वंश के राजा बृहद्रथ के पुत्र, इनके पुत्र ऋषभ थे।
कुशाम्ब–कुरु वंश के राजा उपचरिवसु के पुत्र।
कुशावती–एक नगरी का नाम जो श्रीराम के पुत्र कुश की राजधानी थी।
कुशावर्त–(१) ऋषभदेव के एक पुत्र (२) प्राचीन भारत का एक पुण्य क्षेत्र।
कुशिक–(१) एक कुरुवंशीय राजा जिनके पौत्र थे विश्वामित्र (२) एक महर्षि का नाम।
कुशीलव–वाल्मीकि का विशेषण।
कुशुम्भ–(१) सन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु (२) महामेरु के चारों तरफ के पहाड़ों में से

एक ।

कुशेशय–(१) कुश द्वीप का एक पर्वत (२) सारस पक्षी (३) कमल ।

कुसीद–(१) व्यास महर्षि का एक शिष्य (२) वह कर्जा या वस्तु जो व्याज सहित लौटायी जाय ।

कुसुमाकर–वसन्त, ऋतुओं का राजा । वसन्त सब ऋतुओं में श्रेष्ठ और सबका राजा है । इसमें बिना ही जल के वनस्पतियाँ हरी-भरी और नवीन पत्तों और पुष्पों से सुसज्जित होती हैं । इसमें न अधिक गरमी रहती है और न अधिक सरदी । इस ऋतु में प्रायः सभी जीव खुश रहते हैं । इसलिए गीता में भगवान ने इसको अपना स्वरूप बतलाया है ।

कुसुमाञ्जन–पीपल की भस्म जो अंजन की भाँति प्रयुक्त होती है ।

कुसुमाञ्जलि–अञ्जलि (मुट्ठी) भर फूल ले कर भगवान की प्रतिमा पर अर्चना करना ।

कुसुमायुध–(१) कुसुम बाण पुष्पहार (२) कामदेव ।

कुसुम्भ–(१) केशर, कमण्डलु ।

कुसुम्भि–द्वारका के पास एक जंगल ।

कुस्तुभ–(१) विष्णु (२) समुद्र ।

कुह–(१) कुबेर (२) सौवीर देश का राजा ।

कुहर–(१) गुफा (२) सामीप्य (३) कलिंग देश का एक राजा ।

कुहू–(१) चान्द्रमास का अन्तिम दिन, अमावस्या (२) इस दिन की अधिष्ठात्री देवी (३) अंगिरा की पुत्री (४) कोयल की कूक ।

कुक्षेयु–पूरुवंश के राजा रौद्राश्व और घृताची नाम की अप्सरा के दस पुत्रों में से एक ।

कूट–(१) जालसाजी, धोखा (२) पहाड़ की चोटी (३) श्रीकृष्ण और बलराम को मारने के लिये कंस ने अनेक मल्लों को तैयार किया था, उनमें से एक ।

कूटस्थ–विष्णु का नाम, अचल, अपरिवर्तनीय और शाश्वत ।

कूणिका–(१) सींग (२) वीणा की खूँटी ।

कूपार–समुद्र, सागर ।

कूर्च–(१) मुट्ठी भर कुश घास (२) दम्भ मनु वंशज राज मिदवान के पुत्र, इनके पुत्र इन्द्रसेन थे ।

कूर्म–(१) कछुआ (२) विष्णु का दूसरा अवतार (कूर्मावतार) ।

कूर्मधारा–बद्री वन के पाँच तीर्थों में से एक । कहा जाता है कि भगवान का अंशावतार कूर्म इस कुण्ड में छोड़ा गया । इस धारा का पानी बहुत शीतल और सुखप्रद है ।

कूर्मपुराण–अठारह पुराणों में से एक ।

कूल–(१) सेना का पिछला भाग (२) किनारा ।

कृत–(१) पुरुरवा के वंशज जय के पुत्र, इनके पुत्र हर्यवन थे (२) वसुदेव और रोहिणी का एक पुत्र ।

कृतक–वसुदेव और मदिरा का एक पुत्र ।

कृतकर्मा–जिसने अपना काम कर लिया है, परमात्मा सन्यासी ।

कृतकृत्य–सन्तुष्ट, तृप्त ।

कृतञ्जय–इक्ष्वाकु वंश के अन्तिम राजाओं में राजा बृहद्रथ के पुत्र, इनके पुत्र रणञ्जय थे ।

कृतद्युति–शूरसेन के राजा चित्रकेतु की पत्नी ।

कृतध्वज–जनक महाराजा के वंशज राजा धर्मध्वज के पुत्र । इनके पुत्र केशिध्वज थे ।

कृतनिश्चय–दृढ़प्रतिज्ञ ।

कृतमाला–दक्षिण भारत की एक पुण्य नदी : द्रविड़ देश के राजा सत्यव्रत जब इसी कृतमाला नामक नदी में तर्पण कर रहे थे तब भगवान विष्णु एक छोटी मछली के रूप में उनकी अञ्जली के पानी में आ गए थे । (दे : सत्यव्रत)

कृतयुग–चार युगों में से युग जिसमें धर्म के चारों पाद थे । इसको सत्ययुग भी कहते हैं ।

कृतवर्मा–(१) वृष्णिवंश के एक राजकुमार जो

श्री कृष्ण के भक्त और मित्र थे। ये हृदीक के पुत्र थे (२) वृष्णिवंश के घनक के पुत्र।

कृतवीर–कार्तवीर्य का पिता, यदुवंश के घनक का पुत्र।

कृतश्रम–(१) युधिष्ठिर की सभा का एक महर्षि (२) अध्येता

कृताग्नि–यदुवंश के राजा घनक का पुत्र।

कृतायु–यदुवंश का एक राजकुमार।

कृताश्व–एक मुनि, इन्होंने दक्षप्रजापति की दो पुत्रियों से विवाह किया।

कृति–(१) यदुवंश के राजा बभ्रु के पुत्र, इनके पुत्र उशीक थे।
(२) भरत वंश के राजा सन्नतिमान के पुत्र जिन्होंने हिरण्यनाभ से योगविद्या सीखी थी।
(३) एक पाँचाल राजकुमार जिनके पुत्र उपरिचरवसु थे।

कृतिरथ–जनक वंश के राजा प्रतीपक के पुत्र, इनके पुत्र देवमीढ़ थे।

कृतिरात–जनक वंश के राजा महाधृति के पुत्र, इनके पुत्र महारोम थे।

कृतेयु–पूरु वंश के राजा रौद्राश्व और घृताची नाम की अपसरा के दस पुत्रों में से एक।

कृतौज–यदुवंश के घनक का पुत्र।

कृत्तिका–(१) नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र (२) छः तारे जो देव सेनापति कार्तिकेय की परिचर्या करने वाली अपसराओं के रूप में वर्णित हैं। (३) एक पवित्र स्थान।

कृत्तिकाभव–चाँद।

कृत्या–एक राक्षसी। अथर्व वेद के आभिचार मन्त्रों द्वारा उत्पन्न पिशाचिनी। श्रीकृष्ण का वध करने के लिये काशीनरेश ने एक कृत्या का सृजन किया था जिसका नाश भगवान ने किया (२) अम्बरीष महाराजा का नाश करने के लिये दुर्वासा ऋषि ने एक कृत्या की सृष्टि की। भगवान के आयुध श्रीचक्र ने उसका नाश किया।

कृप–ये गौतमवंशीय महर्षि शरद्वान के पुत्र थे। इनकी बहन कृपी और माता जानपदी नाम की अपसरा थी। शन्तनु महाराज ने कृपा करके इनका पालन-पोषण किया। ये वेद शास्त्र के ज्ञाता, सद्गुणों से सम्पन्न धनुर्विद्या में बड़े निपुण थे। द्रोणाचार्य से पहले कौरव, पाण्डव और यादवों को धनुर्विद्या सिखाते थे। समस्त कौरवों के नाश होने पर भी वे जीवित रहे और परीक्षित महाराजा को भी अस्त्रविद्या सिखायी। वे कौरव पक्ष की ओर से महाभारत युद्ध में लड़े थे। वे बड़े ही वीर और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में निपुण थे। इसलिये उनके नाम के साथ 'समितिञ्जय' लगाया जाता था।

कृपी–कृपाचार्य की बहन, द्रोणाचार्य की पत्नी अश्वत्थामा की माता।

कृमि–(१) कीड़ा (२) गधा (३) अंगराज्य का एक राजा।

कृमि भोजन–एक नरक का नाम।

कृमी–(१)उशीनर की पत्नी(२)एक नदी।

कृमीर–एक राक्षस जिसको भीमसेन ने मारा था।

कृश–(१) एक मुनि (२) दुर्बल, क्षीण।

कृशद्रथ–शिवि महाराज के वंश का एक राजकुमार।

कृशाणु–अग्नि।

कृशाश्व–(१) मनु के पुत्र दिष्ट के वंशज राजा संयम के पुत्र, इनके भाई देवज थे।
(२) इक्ष्वाकु वंश के बर्हणाश्व के पुत्र। इनके पुत्र सेनाजित थे।

कृष–(१) हल चलाना (२) आकृष्ट करना।

कृष्ण–(१) भगवान विष्णु के मुख्य अवतारों में नौवाँ। वसुदेव और देवकी के पुत्र, कंस के भानजा थे। 'कृष' धातु का अर्थ है आकर्षण करना और 'ण' आनन्द वाचक है।

भगवान नित्यानन्द स्वरूप हैं, इसलिए वे सबको अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसलिए इनका नाम कृष्ण है। गोकुल में नन्द और यशोदा ने कृष्ण और बलराम का पालन-पोषण किया था और उनका बचपन वृन्दावन में बीता। कंस के द्वारा उनकी हत्या के लिए भेजे गये पूतना, बक, अरिष्ट आदि क्रूर राक्षसों को कृष्ण ने मारा और अन्त में कंस का भी वध किया। उनके साथी थे गोकुल के गोप बालक और वे गोपियों के साथ जिनमें राधा प्रमुख थी, यमुना पुलिन पर, नाच-गान और रास करते थे। कृष्ण ने कंस, नरकासुर, शिशुपाल आदि शत्रुओं का नाश किया, सज्जनों की रक्षा की। पाण्डवों के, विशेषकर, अर्जुन के परम मित्र, उपदेष्टा और हितैषी थे। गर्भस्थ परीक्षित राजकुमार की रक्षा कर पाण्डव वंश का नाश होने से बचाया। महाभारत युद्ध के बाद प्रभास क्षेत्र में अतुल बलशाली यादवों का नाश करवाया। वहीं पर भगवान, जरस नामक शिकारी के, पक्षी के धोखे में, शिकार हो गए। उनकी १६००८ पत्नियां थीं जिनमें रुक्मिणी, सत्यभामा आदि आठ पत्नियां प्रमुख थीं। राधा उनकी अत्यंत प्रिय थी। उनके एक-एक पत्नी से दस-दस पुत्र हुए। (२) काला, श्याम (३) काला हरिण।

कृष्ण काष्ठ—एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, काला अगर।

कृष्ण द्वैपायन—व्यास महर्षि का नाम।

कृष्ण पर्वत—कुशद्वीप का एक पर्वत।

कृष्ण पक्ष—चान्द्र मास का अन्धकारमय पक्ष जब कि चन्द्रमा की कलाओं का प्रतिदिन ह्रास होता है।

कृष्ण मृग—काला हरिण।

कृष्ण वर्ण—(१) काला रंग (२) राहु।

कृष्ण सार—काला मृग।

कृष्णा—(१) पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी का नाम (२) कृष्ण की बहन सुभद्रा का नाम (३) दक्षिण भारत की एक पुण्य नदी (४) कृष्ण वर्ण की स्त्री।

कृष्णाजिन—काले हरिण का चमड़ा।

केकय—एक देश और उसके निवासी का नाम। केकय राजकुमारी कैकेयी अयोध्या के महाराज दशरथ की पत्नी थी।

केतु—(१) सौर मण्डल का एक ग्रह। पुराणों के अनुसार कश्यप ऋषि और सिंहिका का एक पुत्र एक राक्षस था जिसने अमृत मंथन के समय देवताओं की पंक्ति में बैठकर अमृत पान करने की कोशिश की थी और जिसका गला भगवान ने चक्रायुध से काट डाला। राक्षस का कबंध केतु बन गया और शिर राहु। दैवी कृपा से राहु को ग्रह का स्थान मिल गया। (२) पताका, झण्डा (३) मुख्य, नेता (४) प्रकाश की किरण। (५) धूम-केतु, पुच्छलतारा (६) शिवजी का नाम (७) तामस मनु के एक पुत्र।

केतुमती—सुमालि की पत्नी और प्रहस्त की माँ।

केतुमान—पाण्डवों का मित्र एक राजा (२) राजा अम्बरीष के एक पुत्र।

केतुमाल—(१) जम्बूद्वीप का एक वर्ष (२) महाराज अग्नीन्ध्र और पूर्व चित्ती के एक पुत्र जो केतुमाल वर्ष के राजा बने। ये महाराज प्रियव्रत के पौत्र थे।

केतुवर्मा—त्रिगर्त राज्य का एक राजकुमार।

केदार—उत्तर खण्ड का एक प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र जो हिमालय की चोटियों में स्थिति है। यह मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थिति है। यहां भगवान शिव बैल के रूप में पाण्डवों से भाग कर आये और अदृश्य रूप से रहे। यहाँ सिर्फ बैल का पिछला भाग ही दिखता है। यहीं पर शकुनि के पुत्र वृकासुर ने शिव की तपस्या की और वर लाभ प्राप्त किया था।

केदारनाथ–भगवान शिव ।

केन्द्र–(१) वृत्त का मध्य विन्दु (२) प्रधान स्थान (३) जन्म कुण्डली में लग्न से पहला चौथा, सातवां और दसवां स्थान ।

केयूर–बाजूबन्ध, बाहों में पहनने का एक आभूषण ।

केरल–भारत के दक्षिण पश्चिम में स्थित एक राज्य ।

केवल–मनुपुत्र दिष्ट के वंशज राजा सौन्ध्रेय के पुत्र, इनके पुत्र तृण विन्दु थे ।

केशव–(१) एक प्रकार की किरण (२) सिर के बाल ।

केशव–(१) महाविष्णु का नाम, क, अ, ईश और व—इन चार अक्षरों के मिलने से 'केशव' पद बनता है । क—ब्रह्मा, अ–विष्णु, ईश–शिव, ये तीनों जिसके व–वपु अर्थात् स्वरूप हों उसको केशव कहते हैं ।

जगत् के सृजन, संरक्षण और संहार करने वाले सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर (२) सुन्दर बालों वाला ।

केशि–(१)कश्यप और दनु का पुत्र एक राक्षस । श्रीकृष्ण और बलराम को मारने के लिये कंस ने इसको व्रज से भेज दिया था । केशि एक बड़े घोड़े का रूप धारण कर व्रज में गया और श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया । (२) वसुदेव और भद्रा का एक ही पुत्र केशि हुआ ।

केशनी–(१)सुन्दर जूड़े वाली स्त्री (२)अंगिरा के पुत्र सुधन्वा की पत्नी । (३) पूरुवंश के राजा अजमीढ़ की पत्नी (४) कश्यप और प्राधा की एक पुत्री (५) महाराजा नल की पत्नी दमयन्ती की सखी (६) महाराजा सगर की एक पत्नी जिसके पुत्र असमंजस थे ।

केसर–(१) एक पर्वत(२)हिमालय के जंगलों में प्राप्त एक फूल जो अत्यधिक सुगन्धित है ।

केशरि–(१) सिंह (२) श्रेष्ठ, सर्वोत्तम (३) हनुमान के पिता का नाम ।

कैकय–केकय देश का राजा ।

कैकसि–सुमालि नामक राक्षस और केतुमती नाम की गन्धर्व कन्या की पुत्री, विश्रवा की पत्नी, रावण की मां ।

कैकेय–पूरुवंश के राजा शिवि के पुत्र ।

कैकेयी–केकय देश की राजकुमारी, दशरथ की इष्टपत्नी, भरत की मां । (दे : भरत दशरथ)

कैटभ–कैटभ और मधु दो भाई थे । कहा जाता है कि ये भगवान विष्णु के कान के मल से पैदा हुए । इनके अत्याचारों और उत्पातकों से पीड़ित देवताओं की रक्षा करने के लिए भगवान ने इनको मारा ।

कैटभारि–भगवान विष्णु का नाम ।

कैरव–सफेद कुसुम जो चन्द्रोदय के समय निकलता है ।

कैरवी–चांदनी, ज्योत्सना ।

कैलास-हिमालय की एक चोटी । शिवजी पार्वती समेत यहां रहते हैं, इसलिए अति पवित्र है ।

कैवल्य–(१)मुक्ति, मोक्ष(२)परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता ।

कोंकण–एक देश का नाम । सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखण्ड ।

कोक–चक्रवाक पक्षी (२) कोयल (३) विष्णु का नाम ।

कोकामुख–एक पुण्य क्षेत्र ।

कोटिकास्य–दशरथ महाराजा का एक सामन्त राजा ।

कोटितीर्थ–रामेश्वर के पास एक पुण्य तीर्थ ।

कोण–(१) किनारा (२) मंगल ग्रह ।

कोदण्ड–भगवान का धनुष ।

कोदण्डपाणी–श्रीराम का विशेषण ।

कोपवेग--एक ऋषि ।

कोलगिरि–एक पर्वत ।

कोविदार--एक वृक्ष का नाम ।

कोश–(१) धन, दौलत (२) पात्र (३) विधि

में एक प्रकार की अग्नि परीक्षा (४) अण्ड-कोश।

कोशनाथा–दुर्गा का नाम; सम्पत्ति, कोशों की देवी, पंचकोशों की नाथा।

कोषाध्यक्ष–कुबेर का विशेषण।

कोशल–कोशल। सरयू नदी के किनारे का शहर अयोध्या इसकी राजधानी थी। मनु ने इस नगर की स्थापना की। इक्ष्वाकु वंश के राजा यहीं रहते थे।

कोशलेश–श्री रामचन्द्र का विशेषण।

कौटिल्य–(१) कुटिलता, दुष्टता (२) 'चाणक्य नीति' नामक नीतिशास्त्र के सुप्रसिद्ध प्रणेता चाणक्य। चन्द्रगुप्त महाराज के मित्र, मन्त्री और मुद्राराक्षस नाटक का एक महत्वपूर्ण पात्र।

कौणप–(१) पिशाच, राक्षस (२) वासुकि के कुल का एक सांप।

कौतुक–(१) विवाह के पूर्व वैवाहिक कंगन बांधने की प्रथा (२) उत्सव।

कौन्तेय–कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण।

कौमुद–कार्तिक का महीना।

कौमुदी–(१) चांदनी, चन्द्रिका (२) कार्तिक मास की पूर्मिणा।

कौमुदीपति–चन्द्रमा।

कौमोदकी–भगवान विष्णु की गदा।

कौरव–चन्द्रवंश के प्रसिद्ध राजा कुरु की संतान।

कौल–(१) कुल से सम्बन्ध रखने वाला (२) वाममार्गी सिद्धान्तों के अनुसार 'शक्ति' की पूजा करने वाला।

कौत्स–वरतन्तु ऋषि के एक शिष्य। गुरु दक्षिणा देने के लिए ये महाराजा रघु की यज्ञशाला में गये। सर्वस्व दान देने के कारण राज भण्डार खाली था। ऋषि को तृप्त करने के लिए राजा ने कुबेर पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उस रात को कुबेर ने कनक वर्षा से राजभण्डार भर दिया। रघु महाराज ने कौत्स को चौदह करोड़ अशर्फियाँ दीं।

कौशल्या–कौशल्या, दशरथ महाराजा की ज्येष्ठ महिषि तथा श्रीराम की मां। ये बड़ी साध्वी पतिपरायणा, धर्मनिष्ठ थीं। सब प्रजाओं की माननीया थीं।

कौशाम्बी–(१) गंगा के किनारे स्थित एक प्राचीन नगर जिसे कुश के पुत्र कुशाम्ब ने बसाया था। यह नगर वत्स देस की राजधानी थी। (२) दुर्गादेवी का नाम।

कौस्तुभ–एक अमूल्य रत्न जो अमृतमंथन के समय क्षीरसागर से मिला और भगवान विष्णु ने अपने वक्षस्थल पर धारण किया है।

क्रतु–(१) यज्ञ (२) ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक (३) विष्णु का नाम (४) स्वायम्भुव मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

क्रतुराज–राजसूय यज्ञ।

क्रथ–(१) एक महर्षि (२) यदुवंश के राजा विदर्भ और भोज्या के एक पुत्र, इनके पुत्र कुन्ति थे।

क्रमपाठ–वेद मन्त्रों को सस्वर उच्चारण करने की विशेष रीति।

क्रव्याद–पितरों में एक विभाग।

क्राथ–(१) एक प्रसिद्ध राजा (२) वानरों का एक नेता (३) एक सांप।

क्रिया–(१) दक्ष प्रजापति की पुत्री, धर्मदेव की पत्नी, (२) श्राद्ध (३) धार्मिक संस्कार (४) उपचार।

क्रियाकलाप–हिन्दू धर्मशास्त्र में निहित समस्त कार्य।

क्रियान्वित–शास्त्रोक्त सत्कर्मो का करने वाला।

क्रियापर–अपने कर्तव्य-पालन में लगा हुआ।

क्रियालोप–आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परित्याग।

क्रूरलोचन–शनि ग्रह का विशेषण।

क्रोध–(१) कोप, गुस्सा (२) एक असुर।

क्रोधन–(१) एक महर्षि (२) कुरुवंश के राजा अयुत के पुत्र।

क्रोधवशा–दक्षपुत्री, कश्यप की पत्नी। इनके असुर पुत्रों को क्रोधवशा कहते हैं।

क्रोधहन्ता–कश्यप का पुत्र एक असुर, वृत्तासुर का भाई।

क्रोष्टा–यदु के एक पुत्र। इनके पुत्र व्रजिनवान थे।

क्रौंच–एक पर्वत। कहते है कि कार्तिकेय और परशुराम ने इसे वींध दिया था।

क्रौंचद्वीप–सातद्वीपों मे से एक। घृत और क्षीर सागरों के बीच में स्थित यह द्वीप १,२८,००,००० मील चौड़ा है।

क्रौंचपदी–एक पुण्य स्थल।

क्रौंचव्यूह–युद्ध में सेना को क्रौंच पक्षी की आकृति में खड़ी करते हैं। भीष्म ने ऐसा एक व्यूह रचा था।

क्रौंची–दक्षपुत्री ताम्रा और कश्यप की पुत्री।

क्लीं–कामबीज।

क्लींकारी–कामबीज रूपिणी देवी।

ख

ख–शून्य।

खग–(१) पक्षी (२) वायु (३) सूर्य (४) ग्रह (५) एक नाग।

खग–कुश वंश के राजा वज्रनाभ के पुत्र थे। इनके पुत्र विधृति थे।

खगपति–गरुड़।

खगपुष्प–आकाश कुसुम। असंभव वात।

खगमणि–सूर्य।

खट्वांग–(१) इक्ष्वाकु वंश के विश्वसह के पुत्र थे। संसार की निस्सारता समझकर सब कुछ छोड़कर भगवान की शरण ली। इनके पुत्र दीर्घबाहु थे। (२) शिव।

खण्ड–शिव, परशुराम।

परशुखण्डिनी–पृथ्वी।

खनक–(१) सेंध लगानेवाला (२) चूहा (३) जब पान्डव कुन्ती के साथ लाखा भवन में रहते थे, तब उसको जलाने की योजना दुर्योधनादि ने की। इसका समाचार खनक नामक दूत के द्वारा विदुर ने पाण्डवों के पास भेजा।

खनित्र–वैवस्वत मनु के पुत्र दिष्ट के वंशज प्रमति के पुत्र। इनके पुत्र चाक्षुष थे।

खनिनेत्र–(१) सूर्य वंश का एक राजा जो अत्याचारी होने से राज्य से निर्वासित किया गया। (२) वैवश्वत मनु के पुत्र दिष्ट के वंशज रम्भ के पुत्र, इनके पुत्र करन्धम थे। खनिनेत्र धर्मनिष्ठ राजा थे।

खनपान–सोम वंश के राजा अङ्ग जिन्होंने अङ्ग वंश की स्थापना की, उनके पुत्र दिविरथ थे।

खम्–(१) आकाश (२) स्वर्ग (३) खेल (४) एक बिन्दु (५) ब्रह्मा (७) ज्ञानेन्द्रिय (७) अभ्रक।

खर–(१) एक राक्षस, विश्रवा और राका का पुत्र, रावण का सौतेला भाई। इसके भाई थे दूषण और त्रिशिरा। जनस्थान में रहकर यह ऋषि मुनियों पर अत्याचार करते थे और उनके यज्ञ हवनों में बाधा डालते थे। राम और लक्ष्मण ने इनको परास्त किया था। वनवास के समय पंचवटी में लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा का अंगच्छेद होने पर खर और दूषण ने श्रीराम और लक्ष्मण पर आक्रमण किया। इस युद्ध में ये दोनों श्रीराम के हाथ से मारे गये। (२) कठोर (३) तीखा (४)

खच्चर ।

खरंजंघा—स्कन्ददेव की एक दासी ।

खश—भारत के उत्तर में स्थित एक पहाड़ी प्रदेश तथा उसके निवासी ।

खाण्डव—कुरुक्षेत्र के पास एक वन जिसे श्रीकृष्ण और अर्जुन की सहायता से अग्नि ने जलाया था । यह इन्द्र का प्रिय वन था और इन्द्र इसकी रक्षा करते थे । अग्नि ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को आवश्यक आयुध जैसे गाण्डीव धनुष, अक्षय तरकस, कपिध्वज वाला रथ, वरुण से दिलवाया था । रथ में बांधने के के लिए चार सफेद घोड़े भी दिए थे ।

खाण्डवप्रस्त—इन्द्रप्रस्त ।

खाण्डिक्य—जनकवंश के राजकुमार मितध्वज के पुत्र । ये कर्मकाण्ड में अत्यधिक विश्वास करते थे और अपने भाई केशिध्वज के डर से राज्य छोड़ कर चले गए ।

खुर—(१) घोड़े का पदचिन्ह (२) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य ।

खेचर—(१) सूर्य (२) बादल (३) पक्षी (४) राक्षस ।

ख्याति(१) यश, प्रतिष्ठा (२)नाम(३) वर्णन (४) तामस मनु का पुत्र ।

ख्याती—दक्ष प्रजापति की पुत्री जिसका विवाह भृगु महर्षि से हुआ ।

ग

ग—(१) गणपति (२) गन्धर्व ।

गगन—(१) आकाश, अन्तरिक्ष (२) स्वर्ग ।

गगन कुसुम-आकाश फूल, अवास्तविक वस्तु ।

गगनचर—आकाश में घूमने वाला पक्षी, सूर्य ।

गङ्गा—भारत की पवित्रतम नदी । चतुर्थ मन्वन्तर में भगवान ने कश्यप और अदिति के पुत्र होकर वामन के नाम से अवतार लिया । बलि का दर्प हरण करने के लिए उनसे तीन पग भूमि की भिक्षा मांगी । बलि ने स्वीकार किया । पहले पग में सारी पृथ्वी और पाताल को नाप लिया । दूसरा पग रखते समय वह अन्तरिक्ष और स्वर्ग को पार कर ब्रह्मलोक तक पहुँचा । भगवान के पवित्र चरण को देखकर ब्रह्मा ने अपने कमण्डल के जल से पाद-प्रक्षालन किया और वही पानी गंगा के रूप में बहने लगा । कहा जाता है कि देवकूल्या ही गंगा का रूप धारण कर भगवान के पाद से बहा । कर्दम की पुत्री कला और मरीचि ऋषि के पुत्र थे कश्यप और पूर्णिमा । पूर्णिमा की पुत्री थी देवकूल्या ।

गंगा शन्तनु महाराजा की पत्नी बनीऔर उनके आठ पुत्र हुए जिनमें भीष्म सबसे छोटे थे ।

गङ्गादत्त—भीष्म पितामह ।

गङ्गाद्वार—गंगा हिमालय से निकल कर सिन्धु गंगा समतल पर प्रविष्ट होती है । इस स्थान को गंगाद्वार कहते हैं ।

गङ्गाधर—(१) शिव । महाराजा भगीरथ की प्रार्थना पर जब गंगा का भूमि पर अवतरण हुआ, उसके प्रचण्ड वेग को शिव ने अपने सिर पर रोक लिया (२) समुद्र ।

गंगापुर—एक नगर का नाम ।

गंगापुत्र—भीष्म ।

गंगासागर—वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है ।

गंगाह्रद—कुरुक्षेत्र का एक ह्रद जहाँ स्नान करना पुण्य माना जाता है ।

गंगोत्री–यहां गंगा थोड़ी दूर तक उत्तर की ओर बहती है इसलिये गंगोत्री नाम पड़ा। यहाँ भगवती गंगा का एक प्रसिद्ध मन्दिर है और वह उस शिला पर स्थिति है जहाँ राजा भगीरथ ने महादेव की तपस्या की और जहाँ भूमि में देवी का अवतार हुआ। यह बड़ा पवित्र है और पाण्डवों ने यहाँ देव यज्ञ किया था।

गज–(१) हाथी। (२) एक विक्रमी वानर जो श्रीराम की वानर सेना में था। (३) लम्बाई की माप (४) एक राक्षस जिसे शिव ने मारा।

गजकर्ण--गणपति का विशेषण।

गजगामिनी--हाथी की सी मन्द और गौरवभरी चाल वाली स्त्री।

गजदन्त–गणपति का विशेषण।

गजपुर–हस्तिनापुर।

गजमुख--गजवदन, गणेश का विशेषण।

गजराज--उत्तम हाथी। गजेन्द्र।

गजसाह्व–हस्तिनापुर।

गजेन्द्रमोक्ष--पाण्ड्यराज इन्द्रद्युम्न शापग्रस्त होकर गज की योनी में पैदा हुए। भगवान विष्णु के प्रसाद से गजेन्द्र की मुक्ति हुई। [दे: इन्द्रद्युम्न]

गण--(१) शिव के सेवक (२) अक्षौहिणी का एक विभाग जिसमें २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पदाति सैनिक हैं।

गणनायक--(१) शिव (२) गणेश का विशेषण

गणपति--(१) शिव (२) शिव और पार्वती के पुत्र। वुद्धि के देवता और विघ्न-बाधाओं को दूर करने वाले हैं। इसलिये प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य के आरम्भ में इनकी पूजा होती है। उनका हाथी का मुख, दाँत आदि है। शिव और पार्वती हाथी के रूप में घूमते समय गणेश का जन्म हुआ। गणेश ने व्यास जी से सुन कर महाभारत लिखा।

गणराज्य--दक्षिण का एक साम्राज्य।

गणाम्बा--श्री पार्वती।

गण्डक--भारत का एक देश (२) बाधा।

गण्डिकी–एक नदी जो गंगा में मिल जाती है। यह नीपाल से निकलती है। सालग्राम शिला इसमें है।

गतचेतन--बेहोश।

गतप्राण--जीव रहित, मृत।

गतायु--(१) अत्यधिक वृद्ध। (२) निर्बल।

गति--(१) अवस्था, दशा स्थिति (३) उपाय (२) आश्रय, शरण (४) मार्ग (५) घटना (६) नक्षत्र पथ।

गतिहीन--अशरण, निस्सहाय।

गद–वसुदेव और देवरक्षिता का पुत्र।

गदा--(१) विष्णु का आयुध। कश्यप और अदिति का एक असुर पुत्र था गद। भगवान विष्णु ने उसको मारा। देवों के शिल्पि विश्वकर्मा ने उसकी हड्डी से एक आयुध बनाया और उसका नाम पड़ा गदा।

गदाधर–विष्णु।

गन्ध(१) बू (२) पृथ्वी का गुणात्मक लक्षण, पृथ्वी को 'गन्धवती' कहा गया है। (३) सुगन्ध।

गन्धकाण्ठ--अगर की लकड़ी।

गन्धदारु -अगर की लकड़ी।

गन्धधूलि--कस्तूरी।

गन्धमादन--(१) मेरु पर्वत के पूर्व में स्थित एक पुराण प्रसिद्ध पर्वत। नर नारायण ऋषि इसी पर्वत पर तपस्या करते थे। हनुमान यहाँ कदली वन में रहते थे जब सौगन्धिक पुष्प की खोज में जाते हुए भीम से उनकी मुलाकात हुई। (२) श्रीराम की वानर सेना का एक नायक। (३) एक राक्षस राजा।

गन्धमृग--कस्तूरी मृग।

गन्धराज--एक प्रकार की चमेली।

गन्धवती--(१)पृथ्वी(२)व्यास की माँ सत्यवती

जिसके शरीर से हमेशा सुगन्ध निकलती थी (३) चमेली का एक भेद (४) वायु भगवान की पुरी ।

गन्धवाहक–(१) वायु (२) कस्तूरी मृग ।

गन्धवृक्ष–साल का पेड़ ।

गन्धर्व–(१) स्वर्गीय गायक, अर्ध देवों का वर्ग । ये देवलोक में गान, वाद्य और नाट्याभिनय करते हैं । स्वर्ग में ये सबसे सुन्दर और अत्यंत रूपवान माने जाते हैं । 'गुह्यक' लोक से ऊपर और 'विद्याधर लोक' से नीचे इनका 'गन्धर्व लोक' है । महर्षि कश्यप की दो पत्नियां थी—मुनि और प्राधा । इन्हीं से अधिकांश अप्सराओं और गन्धर्वों की उत्पत्ति हुई । इनमें हाहा, हूहू, विश्वासु, तुम्बुरु और चित्ररथ आदि प्रधान हैं । (२) अश्व ।

गन्धर्वपाह–गन्धर्वों के प्रीत्यर्थ पुरातन काल में प्रचलित एक प्रकार का गान ।

गन्धर्वराज–चित्ररथ ।

गन्धर्वलोक–दे: गन्धर्व ।

गन्धर्वविजय–तिरुविताकूर के कार्तिक नक्षत्र में जन्मे रामवर्मा महाराजा की एक कृति जो खेली जाती है । आट्टकथा ।

गन्धर्वविवाह–आठ प्रकार के विवाहों में से एक । युवक और युवती की पारस्परिक रुचि और पूर्णत: प्रेम का परिणाम है । इसमें न किसी प्रकार की रीति-रस्म की आवश्यकता है और न सगे सम्बन्धियों की अनुमति की ।

गन्धर्ववेद–चार उपवेदों में से एक जिसमें संगीत कला का विवेचन है ।

गैब्रियल–एक देवदूत ! कहा जाता है इन्होंने मुहम्मद नबी का खुर-आन का उपदेश दिया था । बैबिल में लिखा है कि क्रिस्तु के जन्म की बात कन्या मेरी को इन्होंने बतायी थी ।

गभस्ति–अग्नि की पत्नी स्वाहा ।

गभीर–(१) घना (२) अगाध ।

गभीरात्मा–परमात्मा ।

गम्भीर बुद्धि–चौदहवें मनु इन्द्र सावर्णि के एक पुत्र ।

गम्भीरा–(१) दुर्गा का नाम, गणपति का भय दूर करनेवाली (२) एक नदी का नाम ।

गय–एक वानर श्रेष्ठ जो श्रीराम की वानर सेना में था (२) पुरूरवा का पौत्र एक राजा । (३) पृथुवंशज हविर्धान का एक पुत्र । (४) एक राक्षस (५) एक पर्वत (६) राजा सुद्युम्न के एक पुत्र ।

गयशीर्ष–गय पर्वत की एक चोटी ।

गया–बिहार का एक पुण्य क्षेत्र । यहाँ बुद्ध भगवान ने आत्मज्योति पायी । जिस जगह पर बैठकर बुद्ध भगवान ने तपस्या की थी उसको बुद्ध गया कहते हैं । यहाँ अनेक बुद्ध-मत क्षेत्र हैं । हिन्दुओं का विश्वास है कि गया में विष्णुपाने पर श्राद्ध करने से पितरों को मुक्ति मिलती है ।

गर–(१) विष (२) शरबत ।

गरल–विष, जहर ।

गरिमा–(१) आठ सिद्धियों में से एक (२) श्रेष्ठता ।

गरिमान–विष्णु का नाम, अतुल बलशाली ।

गरिष्ठ–अत्यन्त महत्वपूर्ण ।

गरुड़–(१) महाविष्णु का वाहन, पक्षियों का राजा । कश्यप और विनता का पुत्र, अरुण का भाई । भगवान का अनन्य भक्त होने के कारण विष्णु ने इसको अपना वाहन बनाया । एक बार विनता और उसकी सौत कद्रू में इन्द्र के घोड़े "उच्चैश्रवा" के रंग के विषय में झगड़ा हुआ । कद्रू ने धोखे से विनता को हराया जिसके फलस्वरूप विनता कद्रू की दासी बन गई । गरुड़ ने माता की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये स्वर्ग में जाकर देवताओं से युद्ध कर अमृत प्राप्त किया और माँ की दासता छुड़ाई । बाद में इन्द्र ने अमृत कलश साँपों से ले लिया । माँ की दासता के कारण

गरुण कद्रू के पुत्र सांपों का वैरी बन गया और उनको खाने लगा। (२) विशेष सैनिक व्यूह रचना।

गरुण गुफा—भगवान शंकराचार्य ने बद्रीनाथ की मूर्ति को नारद कुण्ड से निकाल कर तप्त कुण्ड के पास गरुण गुफा में पहले प्रतिष्ठित की थी।

गरुढ़ध्वज—विष्णु।

गरुण शिला—आदि केदारेश्वर मूर्ति के पास बदरीनाथ में यह शिला है। अपनी माँ विनता को दासत्व से मुक्त कर भगवान विष्णु का वाहन बनने के लिये गरुण बदरीनाथ में यहाँ आकर बैठा था।

गर्ग—(१) ब्रह्मा के पुत्र एक ऋषि, यादवों के कुलाचार्य। (२) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज मन्यु के एक पुत्र, इनके पुत्र शिवि थे।

गर्गस्त्रोत—एक तीर्थ।

गर्जन—(१) हाथियों की चिंघाड़ (२) बादलों की गरज।

गर्भ गृह—(१) घर का भीतरी कमरा। (२) मन्दिर का वह कक्ष जिसमें देवता की प्रतिमा स्थापित है।

गर्भ च्युति—जन्म।

गलील—गलील सागर के तीर पर फलप्रद एक प्रदेश। बाल्यकाल में, ख्रिस्तु यहाँ रहते थे। अनेक महात्माओं का जन्म यहाँ हुआ है।

गलील सागर—पलस्तीन के उत्तर में एक सागर।

गवैः—एक पराक्रमी वानर श्रेष्ठ जो श्रीराम के साथ ससैन्य रावण से युद्ध करने गया था।

गवल्गण—संजय के पिता।

गवाक्ष—श्रीराम के वानर सेनानायकों में से एक।

गाङ्ग—भीष्म और कार्तिकेय का अपरी नाम।

गाण्डीव—अर्जुन का दिव्य धनुष जो खाण्डव दाह से सन्तुष्ट होकर अग्नि ने अर्जुन को दिया था। इस परम दिव्य धनुष को ब्रह्मा जी ने हजार वर्ष, प्रजापति ने पाँच सौ वर्ष इन्द्र ने पच्चीस सौ वर्ष, चन्द्रमा ने पाँच सौ वर्ष और वरुण देव ने सौ वर्ष तक रखा था।

गाण्डीवधन्वा—अर्जुन।

गात्र—(१) शरीर। (२) वसिष्ट मुनि और ऊर्जा का एक पुत्र।

गाथा—गीत।

गाधि—विश्वामित्र के पिता। राजा कौशाम्ब ने इन्द्र सदृश एक पुत्र की कामना से कठोर तपस्या की। भयभीत इन्द्र ने स्वयं कौशाम्ब का पुत्र होकर जन्म लिया। यही पुत्र है गाधि।

गाधिसूनु—विश्वामित्र।

गान्दिनी—काशी की एक राजकुमारी श्वफल्क की पत्नी और अक्रूर की माँ।

गान्धर्व—(१) दिव्य गवैया (२) आठ प्रकार के विवाहों में से एक। युवती और युवक आपस में प्रेमबद्ध होकर माता-पिता या बन्धु-बान्धवों की अनुमति लिये बिना, विधि विधान के बिना विवाह करते हैं।

गान्धार—(१) भारत और पर्शिया के बीच का देश, वर्तमान कंधार। (२) भारतीय संगीत के सरगम के सात स्वरों में से तीसरा (३) अफगानिस्तान भी माना जाता है। (४) ययाति के पुत्र द्रुह्यु के वंशज आरब्द का पुत्र, इनका पुत्र धर्म था।

गान्धारी—गान्धार के राजा सुबल की पुत्री, कुरुवंशज राजा धृतराष्ट्र की पत्नी। इनके दुर्योधनादि सौ पुत्र और दुश्शला नाम की एक लड़की हुई। धृतराष्ट्र के जन्मान्ध होने के कारण पतिव्रता गान्धारी अपनी आँखों पर सदा पट्टी बाँधे रहती थीं।

गायत्र—गति सूक्त।

गायत्री—ऋग्वेद का सबसे पवित्र मन्त्र, २४

मात्रायें हैं। सूर्यदेव का मन्त्र है। वेदान्ती लोग इनको परब्रह्ममय समझते हैं। यह सर्व पापनाशी है, दानों सन्ध्याओं में जपने योग्य है। मन्त्र यह है—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्।

गारुणमन्त्र—सांपों के विष को उतारने का मन्त्र।

गरुण पुराण–अठारह पुराणों में से एक जिसमें महाविष्णु गरुण को उपदेश देते हैं।

गरुणास्त्र–गरुण के द्वारा अधिष्ठित अस्त्र।

गार्गी–गर्ग के वंश में पैदा हुई यज्ञावल्क महर्षि की प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी पत्नी।

गार्ग्य–(१) विश्वामित्र का एक पुत्र मुनि (२) भरत वंश के राजा शिवि के पुत्र, क्षत्रिय होने पर भी इनसे एक ब्राह्मण वंश निकला।

गार्हपत्य—(१) गृहपति के द्वारा स्थाई रूप से रखी जाने वाली तीन यज्ञाग्नियों में से एक। यह अग्नि पिता से प्राप्त की जाती है तथा सन्तान को सौंप दी जाती है। (२) गृहपति का पद और प्रतिष्ठा।

गार्हस्थ्य–गृहस्थ के जीवन की अवस्था।

गालव–(१) लोध्र वृक्ष। (२) विश्वामित्र का एक प्रसिद्ध शिष्य। (३) आठवें मन्वन्तर के सात ऋषियों में से एक।

गिरि–यदुवंश के श्वफल्क और गान्दिनी का एक पुत्र, अक्रूर का भाई।

गिरिक–उपरिचर वसु की पत्नी।

गिरिकंटक–इन्द्र का वज्र।

गिरिकर्णिका–पृथ्वी।

गिरि गंगा–एक नदी का नाम।

गिरिगह्वर–भारत के उत्तर पूर्व में स्थित एक देश।

गिरिजा—हिमालय की पुत्री, पार्वती। (२) मल्लिका लता। (३) गंगा नदी।

गिरिदुर्ग–पहाड़ी किला।

गिरिपति–शिव।

गिरिप्रस्थ–निषध देश का एक पर्वत।

गिरिराज–हिमालय।

गिरिव्रज–मगध के राजा जरासन्ध की राजधानी (आजकल का गिरिदी) इसका निर्माण पुरुवंशज कुश के पुत्र वसु ने किया था।

गिरि सुत–अय्यप्पा स्वामी का विशेषण।

गिरीश–शिव।

गीत—(१) भजन (२) घोषण किया हुआ।

गीतज्ञ गान कला में प्रवीण।

गीता–संस्कृत पद्य में लिखे गये कुछ धार्मिक ग्रन्थ जो विशेष रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हैं। उदाहरण के लिए भगवत गीता, शिव गीता राम गीता, गुरु गीता आदि। इनमें प्रधान भगवत गीता है और केवल गीता नाम लेने से इसी का भास होता है।

गीत बन्धन–संगीत के सस्वर पाठ के उपयुक्त एक काव्य।

गीत गोविन्द–भक्तोत्तम जयदेव द्वारा निर्मित एक गीतकाव्य। यह अत्यन्त मधुर है और इसका प्रतिपाद्य विषय राधा-माधव की लीला है। इसके गीत नाच-गान में भी प्रयुक्त होते हैं। केरल की कथाकली नृत्य में 'मेलपद' में इसके गीत गाये जाते हैं।

गीत गौरीपति–एक संस्कृत काव्य। १५वीं शताब्दी में जीवित भानुदत्त नामक कवि ने गीत गोविन्द के अनुकरण में इस काव्य की रचना की।

गीताञ्जली–महाकवि रवीन्द्र ठाकुर की प्रसिद्ध रचना।

गीताभाष्य–श्री शंकराचार्य के द्वारा रचित भगवत गीता की व्याख्या।

गीता रहस्य—श्री बालगंगाधर तिलक की भगवत गीता की व्याख्या।

गीर्वाण–वेदोक्तियां।

गुञ्जा–एक छोटी झाड़ी जिसके लाल बेर जैसे

जैसे फल लगते हैं। इसके फलों से बनी माला श्रीकृष्ण और गोपकुमार बाल्यावस्था में पहना करते थे।

गुडाका–तन्द्रा, निद्रा।

गुडाकेश–अर्जुन का विशेषण। अर्जुन ने निन्द्रा को अपने वश में कर लिया था।

गुणकेशी–इन्द्र के सारथी मातलि की पुत्री।

गुणगान–स्तुति, प्रशंसा।

गुणत्रय-प्रकृति के तीन धर्म अर्थात सत्व, रजस और तमस।

गुणवती–एक असुर कन्या, श्रीकृष्ण-पुत्र साम्ब की पत्नी।

गुणाढ्च–(१) गुणों से समृद्ध (२) बृहत्कथा का रचयिता

गुप्त काशी–केदारनाथ के मार्ग पर एक पुण्य तीर्थ। यहाँ चन्द्रशेखर, महादेव और अर्ध नारीश्वर के दो मुख्य मन्दिर है। इसके पास चन्द्रपुरी में चन्द्र और मन्दाकिनी नदियों का संगम है।

गुरु–(१) भारी (२) प्रशस्त, बड़ा (३) महत्वपूर्ण (४) श्रद्धेय (५) अध्यापक, धार्मिक गुरु (६) देवगुरु बृहस्पति (७) सप्ताह का एक दिन (८) भरत वंश के राजा संकृति के एक पुत्र, राजा रन्तिदेव के भाई।

गुरु उपदेश–गुरु के द्वारा दीक्षा।

गुरुकुल–गुरु का वासस्थान जहाँ गुरु के साथ शिष्य रहकर अध्ययन करता है।

गुरुगीता–गुरु की महिमा का प्रकीर्तन कर शिव जी पार्वती को सुनाते हैं। इसको लेकर रचित एक प्राचीन कृति।

गुरु दक्षिणा–आध्यात्मिक गुरु को दी जानेवाली दक्षिणा।

गुरु दक्षिणा पट्ट–एक प्राचीन मलयालम की पद्य रचना। श्रीकृष्ण यमपुरी में जाकर गुरु पुत्र को लाकर सान्दीपनि महर्षि को दक्षिणा रूप में देते हैं–यह है इस कृति का इतिवृत्त।

गुरुदिग्विजय–श्री शंकराचार्य जी के जीवन चरित्र पर आधारित एक कृति।

गुरुवायुपुरेश स्तव–केरल वर्मा वलिय कोयित्तम्बुरान की एक संस्कृत कृति जो गुरुवायूर के प्रसिद्ध मन्दिर के बारे में लिखी है।

गुरुवायु पुरेश स्तोत्र–केरल के मेलपत्तूर भट्टतिरी का निर्मित एक स्तोत्र (दे–मेपत्तूर भट्टतिरि)।

गुरुवायूर–केरल का एक अति प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र जहाँ श्रीकृष्ण की प्रतिष्ठा है। कहा जाता है इस मन्दिर में स्वयं विष्णु विराजमान है और भारत के कोने से असंख्य लोग दर्शन करने जाते हैं।

गुरुस्कन्द–एक पर्वत का नाम।

गुल्म–(१) वृक्षों का झुण्ड (२) दुर्ग (३) गुसैन्य दल जिसमें ४५ पदाति, २७ अश्वारोही और १ गजारोही होते हैं।(४)युद्ध शिविर।

गुह–(१) स्कन्ददेव का नाम (२) गंगा के किनारे श्रृंगवेरपुर नामक निषादराज का राजा। श्रीराम का बड़ा भक्त था। वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता को इसने गंगा पार उतारा था। जगल में काफी दूर साथ गया। वनवास से लौटते समय गुह भी श्रीरामचन्द्र के साथ अयोध्या गया। (२) एक जाति के लोग जो प्रायः जंगलों में रहते थे।

गुहा–गुफा, कन्दरा।

गुहम्बा–श्री पार्वती।

गुहाशय–परमात्मा।

गुह्यक–अर्ध देवों की श्रेणी जो कुबेर के सेवक और उनके कोष के पालक थे।

गुलिक–(१) एक व्याध जिसको उत्तुंग मुनि ने शिव कीक्ष सुनहली मूर्ति की चोरी करने और अपने को मारने के लिये तैयार देखकर पहले शाप देकर मारा था, बाद में मोक्ष दिया। (२) एक अशुभ ग्रह।

गुलिक काल–मद्रास प्रान्त में कोई शुभ कर्म इस समय पर नही किया जाता। यह डेढ़ घंटे तक का रहता है और हफ्ते के हर दिन में इस का समय अलग-अलग रहता है।

गृत्समद–(१) एक मुनि (२) पुरूरवा के पुत्र क्षत्रधृद्ध के पौत्र, सुहोत्र के पुत्र। इनके पुत्र शुनक थे।

गृध्र कूट–एक पहाड़।

गृध्र पति–गृध्रों का राजा, जटायु।

गृध्रवर–हिमालय की एक चोटी।

गृहदेवी–(१) घर की अधिष्ठात्री देवी (२) जरा नाम की राक्षसी।

गृहप्रवेश–नये घर में विधिपूर्वक प्रवेश करना।

गृह बलि–वैश्व देव यज्ञ में दी जाने वाली आहुति।

गृहस्थ–चार आश्रमों में दूसरा आश्रम स्वीकार करने वाला। ब्रह्मचार्याश्रम के बाद ब्रह्मचारी या तो सीधे विषय वासनाओं को त्याग कर वन में जाता है या अनुकूल स्वाभाववाली स्त्री से विवाह कर पुत्रोत्पन्न कर गार्हस्थ जीवन विताता है।

गृहधर्म–गृहस्थ के कर्तव्य।

गृहिणी–पत्नी, गृहपत्नी।

गेरु–पर्वतों से प्राप्त एक धातु।

गेहिनी–घर की स्वामिनी।

गैरेय–शिलाजीत।

गो–(१) गाय (२) प्रकाश की किरण (३) पृथ्वी।

गोकर्ण–(१)प्राचीन केरल की उत्तर सीमा का एक प्रदेश। यहाँ एक प्रसिद्ध शिवमन्दिर है। कहा जाता है कि रावण तपस्या करने के बाद शिवलिंग को लेकर रहा था। गणेश जी की चालाकी से लिंग इस जगह पर रखा गया जो बाद में वहीं स्थिर रूप से जम गया। (२) गाय का कान (३) साँप (४) तुंगभद्रा तट पर सत्यधर्म तत्पर आत्मदेव नामक एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी स्त्री थी धुंधुली। पुत्राभाव से ब्राह्मण दुखी थे। एक दिन उनको रास्ते में एक यति मिले. जिन्होंने उनको एक फल दे कर कहा कि पत्नी यह खायेगी तो पुत्र होगा। धुंधुली ने गर्भ धारण के कष्टों और प्रसवपीड़ा से डर कर उस फल को अपनी गाय को खिलाया। यह बात अपनी बहन को बतायी जिसने यह उपाय बताया कि वह अपने होनेवाले पुत्र को धुंधुली को देगी। नौ महीने के बाद गाय का एक पुत्र हुआ जिसके कान गाय के जैसे थे। आत्मदेव यह कुछ नही जानते थे। धुंधुली ने अपनी बहन के लड़के को अपना बताया। आत्मदेव ने गाय के पुत्र का गोकर्ण नाम रखा और धुंधुली के पुत्र का नाम धुंधुकारी (दे: धुंधुकारी)।

गोकामुख–एक पर्वत।

गोकुल–(१) यमुना के किनारे की व्रजभूमि। यही पर नन्द और यशोदा अन्य गोप-गोपियों के साथ रहते थे। श्रीकृष्ण और बलराम का बचपन यहीं बीता। (२) गौशाला।

गोकुलाष्टमी–श्रीकृष्ण का जन्म दिन।

गोग्रास–प्रायश्चित के रूप में गाय को घास का कौर देना।

गोचर–(१) इन्द्रियों का विषय (२)चारागाह (३) क्षितिज।

गोत्र–(१)कहा जाता है कि द्विज ऋषि मुनियों से सम्बन्धित है। एक-एक ऋषि का एक-एक गोत्र है। (२) पशुशाला (३) खेत।

गोदान–गाय का दान करना। गोदान से अक्षय पुण्य मिलता है।

गोदावरी–दक्षिण भारत की एक पुण्य नदी।

गोदोहन–गौओं को दुहने का समय।

गोदोहनी–वह बर्तन जिसमें दूध दुहा जाता है।

गोधन–गायों का समह।

गोधूलि–पृथ्वी की धूल (२) संध्या समय

(संध्या समय गायें चरने के बाद जंगलों से लौटती हैं। उनके चलने से धूल के बादल इकट्ठे हो जाते है, इसलिये इस समय का नाम 'गोधूलि' पड़ा)।

गोपति–(१) शिवि महाराजा का एक पुत्र (२) विष्णु का नाम (३) एक राक्षस जो श्रीकृष्ण से मारा गया।

गोपत्री–दुर्गा का नाम, प्रपंज की रक्षा करने वाली।

गोपाल–(१)श्रीकृष्ण(२) गोकुल के निवासी।

गोपाली–(१) एक अप्सरा (२) गोपी।

गोपाष्टमी–कार्तिक महीने के शुक्लपक्ष की अष्टमी। इस दिन से श्रीकृष्ण एक गोपाल बने। गायों का पालन करनेवाला तब तक सिर्फ बच्छड़ों की देख-भाल करते थे।

गोपिका गीत–श्रीकृष्ण गोपियों के साथ यमुना तट पर खेला करते थे। एक बार गोपियों के मन में घमण्ड हो गया कि श्रीकृष्ण हमसे प्रसन्न हैं, दास की तरह हमारा पीछा करते हैं। उनके मन में घमण्ड का भाव पैदा होते ही श्रीकृष्ण अदृश्य हो गये। गोपियों ने सारा जंगल, वन-उपवन छान डाला। लेकिन श्री कृष्ण नहीं मिले। विरह से अतीव कातर गोपियाँ यमुना के तट पर बैठ कर भगवान की बाल लीलाओं का स्मरण कर गाने लगी। यही गोपिका गीत है।

गोपी–ग्वाले की पत्नी।

गोमती–पुराण प्रसिद्ध एक नदी। इसी के किनारे पुराण प्रसिद्ध नैमिपारण्य स्थित है।

गोमन्त–द्वारका के समीप एक पर्वत।

गोमुख–(१) इन्द्र के सारथी मातलि का पुत्र (२) एक राक्षस।

गोरस–गाय का दूध, दही, छाछ आदि।

गोल– आकाश मण्डल, अन्तरिक्ष।

गोला—दुर्गा देवी।

गोलोक–एक दिव्य लोक जो भगवान विष्णु को अत्यन्त प्रिय है।

गोवर्धन–मथुरा के पास वृन्दावन में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत। इन्द्र पूजा को रोक कर श्रीकृष्ण ने अपने पिता और अन्य लोगों को इस पर्वत की पूजा करने को प्रेरित किया। विधिवत् गोवर्धन की पूजा हुई। इन्द्र ने क्रुद्ध होकर प्रलय काल के समान वृष्टि की जिससे वृन्दावन की सारी भूमि जल से अप्लावित हुई। अपने आश्रित गोप-गोपियों तथा गाय आदि जानवरों की रक्षा करने के लिये बालक कृष्ण गोवर्धन पर्वत को छोटी अंगुली से उठाकर छाते के समान उनके ऊपर पकड़े रहे। इन्द्र का गर्व चूर हो गया और उसने कृष्ण की स्तुति की।

गोवाट—गोशाला।

गोविन्द–भगवान विष्णु का नाम। वेद वाणी के द्वारा भगवान के स्वरूप की उपलब्धि होती है। इसलिये उनका नाम गोविन्द हुआ गोवर्धन पर्वत को छत्र के समान उठाकर वृन्दावनवासियों और गायों की रक्षा करने से श्री कृष्ण का गोविन्द नाम हुआ।

गोविन्द गिरी–क्रौंच द्वीप का एक पहाड़।

गोविन्द सिंह–सिखों के एक गुरु।

गोविन्द स्वामी–आदि शंकराचार्य के गुरु, गौडपाद के शिष्य।

गोशृंग–दक्षिण भारत का एक प्रधान पर्वत।

गोष्पद–(१) धरती पर बना गया गाय के पैर का चिह्न। (२)गाय के पद चिह्न में समा जाने वाले जल की मात्रा।

गोसव–एक यज्ञ।

गोहत्या–गोवध–यह महा पाप समझा जाता है।

गौड़–(१) एक देश का नाम (२) ब्राह्मणों का एक भेद।

गौडपाद–श्री शंकराचार्य के गुरु गोविन्दस्वामी के गुरु। इन्होंने माण्डूक्योपनिषद की कारिका लिखी है।

गौडी–(१) एक रागिनी (२) तीन काव्य रीतियों मे से एक।

गौतम–(१)एक प्रशस्त महर्षि। अहल्या इनकी पत्नी थी जिनका उद्धार श्रीराम ने किया था (दे: अहल्या)। जनक महाराजा के उपरोहित शतानन्द इनके पुत्र थे। (२)गौतम बुद्ध(३) न्याय दर्शन के प्रणेता (४) कृपाचार्य।

गौतम बुद्ध–बुद्धमत के स्थापक सिद्धार्थ। कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन और रानी माया देवी के पुत्र थे। बचपन से ही सुखानुभोग में उनकी आसक्ति नहीं थी। राजकुमार की विरक्ति दूर करने के लिये यशोधरा नाम की राजकन्या से विवाह करवाया और उनका राहुल नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। तब भी विरक्त होकर एक रात को राजमहल छोड़ गये और गया में बोधिवृक्ष के नीचे कठिन तपस्या की। उनकी तपस्या को भंग करने के लिये कामदेव आदि ने प्रयत्न किया। अंत में उनको परम ज्ञान प्राप्त हुआ और बुद्ध हो गये। जीव-जन्तुओं का दुःख हटाने के लिये उन्होंने बुद्ध मत स्थापित किया। बुद्ध मत का खूब प्रचार हुआ। पंचशील (झूठ न बोलना, चोरी न करना, हिंसा न करना, सुरापान न करना, व्यभिचार न करना) इस मत के मुख्य तत्व हैं।

गौतमी–(१) गौतम की पत्नी अहल्या (२) द्रोणाचर्य की पत्नी कृपी (३) दुर्गा (४)एक नदी (५)कालिदास के "शाकुन्तलम्" नाटक के कण्वाश्रम की एक तपस्विनी।

गौनर्द–महाभाष्य के प्रणेता पतंजलि मुनि का विशेषण।

गौमुख–यह गंगोत्री पर्वत श्रेणी का मुख है जहां पहुंचना अत्यधिक कठिन है। गंगा की एक मुख्य शाखा भागीरथी यहां से निकलती है। यह अति पवित्र और सुन्दर तीर्थ स्थान है।

गौर–(१) श्वेत, उज्ज्वल (२) पद्मकेसर(३) कुशद्वीप का एक पर्वत।

गौरवाह–एक राजा जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में गया था।

गौरास्य–एक प्रकार का काला बन्दर जिसका मुख सफेद है।

गौरी–(१) श्री पार्वती (२) वरुण की पत्नी (३)एक नदी (४) आठ वर्ष की आयु की कन्या (५) पृथ्वी (६) तुलसी का पौधा।

गौरीकांत–शिव।

गौरीकुण्ड–उत्तर खण्ड में बर्फीली मन्दाकिनी नदी के पास एक पुण्य तीर्थ। यहां पानी की दो धाराएँ है एक अत्यधिक गरम पानी की दूसरी अतीव शीतल पानी की है। महाराजा मान्धाता की पचास पुत्रियों का और ऋषि सौभरी का विवाह यहां हुआ था।

गौरीशंकर–हिमालय की सबसे ऊँची चोटी (एवरेस्ट) जो संसार के सब पर्वत शिखरों से ऊँची है।

गौरी सुत–(१) गणेश (२) कार्तिकेय।

ग्रन्थ–कृति, रचना, पुस्तक।

ग्रन्थिक–(१) विराटराज्य में अज्ञातवास के समय नकुल का नाम (१) ज्योतिषी।

ग्रह–(१) पकड़, ग्रहण (२) मगरमच्छ (३) ज्योतिश्शास्त्र के अनुसार सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नौ ग्रह हैं। इसके अलावा नक्षत्र मण्डल और ध्रुव नक्षत्र भी हैं।

ग्रहदशा–जन्म राशी की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, वह समय जब की उनका शुभाशुभ फल होता है।

ग्रहदेवता–ग्रह विशेष का अधिष्ठात्र देवता।

ग्रहनेमि–चन्द्रमा।

ग्रहपति–(१) सूर्य (२) चन्द्र।

ग्रह पीड़ा–ऐसा विश्वास है कि ग्रहों का प्रभाव मनुष्यों पर पड़ता है–कभी-कभी इनसे दुःख

होता है ।

ग्रह शान्ति–यज्ञ, जप, पूजादि के द्वारा ग्रह दोष की निवृत्ति करना और ग्रहों को प्रसन्न करना।

ग्रहण–(१) पकड़ना (२) स्वीकार करना (३) ग्रहण लगना–यह सूर्य और चन्द्र का होता है। सूर्य मण्डल और पृथ्वी के बीच चन्द्र के आने से सूर्य ग्रहण और सूर्य और चन्द्र के बीच में पृथ्वी के आने से चन्द्र ग्रहण होता है। पुराणों में इसकी कथा है कि अमृत-मंथन के बाद राहू नामक असुर ने देवों की पंक्ति में बैठकर अमृत-पान किया। विष्णु ने राहु का सिर काट लिया पर अमृत-पान के प्रभाव से दोनों टुकड़ों का नाश नहीं हुआ। सूर्य और चन्द्र ने ही विष्णु को राहु की उपस्थिति बनायी थी। बदला लेने के लिए राहु इन पर आक्रमण करता है। यही है ग्रहण।

ग्रामणि–(१) श्रेष्ठ (२) विष्णु का नाम।

ग्रामदेवता–ग्राम का रक्षक देवता।

ग्राह–(१) मगरमच्छ (२) स्वीकरण।

ग्रीव–कश्यप ऋषि और ताम्रा की पक्षिरूपिणी पुत्री।

ग्रीष्म–गरमी का मौसम (ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने)।

ग्रैवेयक–गले का आभूषण।

ग्लानि–अवसाद थकावट।

घ

घट–(१) मिट्टी का घड़ा (२) हाथी का मस्तक (३) कुम्भक प्राणायाम (४) कुम्भ राशी।

घटकर्पर–महाराजा विक्रमादित्य के नौ आस्थान कवियों में से एक।

घटोत्कच–भीमसेन और हिडिम्बी नाम की राक्षसी का पुत्र। अत्यन्त बलवान और पराक्रमी था। कौरवों के युद्ध में पाण्डवों की ओर से बड़ी वीरता के साथ लड़ा, परन्तु इन्द्र से प्राप्त शक्ति के द्वारा कर्ण से मारा गया।

घंटाकर्ण–शिव के भूत गणों में से एक।

घटोदर–एक असुर।

घन–बादल।

घनवाहन–(१) इन्द्र (२) शिव।

घनश्याम–श्रीराम और श्रीकृष्ण का विशेषण।

घर्म–(१) ताप गर्मी (२) अंग वंश का एक राजा। इनके पुत्र कृत थे।

घुणाक्षर–लकड़ी या पुस्तक के पत्रों में कीड़ों के द्वारा बनाई गई रेखाएँ जो कुछ-कुछ अक्षरों जैसी प्रतीत होती है।

घुणाक्षर न्याय–आकस्मिक घटना को सूचित करने वाला न्याय।

घृणा–(१) दया, तरस (२) अरुचि (३) निन्दा।

घृत–(१) घी (२) अंगदेश के घर्म का पुत्र।

घृतपृष्ट–मनुपुत्र प्रियव्रत का पुत्र।

घृत धारा–घी की अविच्छिन्न धारा।

घृतवती–एक नदी।

घृताची–(१) अति सुन्दर अप्सरा। राजा कुशनाभ की पत्नी। इनकी १०० लड़कियाँ हुईं जो अग्नि भगवान के शाप से कुब्जा हो गईं। बाद में ब्रह्मदत्त नामक ऋषि ने इनसे विवाह किया। इनकी वक्रता दूर कर दी।

घृतोद–घी का समुद्र, सात समुद्रों में से एक। कुश द्वीप को घेर कर यह सागर रहता है।

घृतेयु–अंगराज वंश का एक राजकुमार।

घोर–(१) ऋषि अंगिरा का एक पुत्र (२) भयंकर, प्रचण्ड।

घोरक–एक जनस्थान।

घोष–(१) कोलाहल (२) बादलों की गरज।

घोषवती–राजा उदयन की वीणा ।

घोषयात्रा–वैभव संपत्ति दिखाने पूरे धूम-धाम से होनेवाली यात्रा, राजा आदि लोगों की ।

घोषा–एक तपस्विनी ।

घ्राणेन्द्रिय–सूंघने की इन्द्रिय, नाक ।

घ्राण चक्षु–जो आँख का काम नाक से लेता है अर्थात् अंधा ।

च

च–(१) चन्द्रमा (२) संयोजन (३) कछुआ ।

चकोर–पक्षिविशेष, तीतर जाति का पक्षी । कहा जाता है कि चन्द्रमा की किरणें ही इसका आहार है ।

चकोर सन्देश–केरल के एक कवि का संस्कृत में रचित सन्देश काव्य ।

चक्र–(१) एक तीक्ष्ण गोल अस्त्र जो महाविष्णु का आयुध है । (२) दल (३) गाड़ी का पहिया (४) कालचक्र (५) नागराज वसुकि का पुत्र ।

चक्रतीर्थ–एक पुण्य स्थान, बदरीनाथ से तीन मील दूरी पर है ।

चक्रदेव–वृष्णिवंश का एक योद्धा ।

चक्रद्वार—एक पर्वत ।

चक्रधर, चक्रधारी–विष्णु ।

चक्रधर्म–विद्याधरों का एक नेता

चक्रहक–एक असुर ।

चक्रनदी–गण्डकी या गण्डक नदी । इसके किनारे पुलहाश्रम जो सालग्राम क्षेत्र से प्रसिद्ध है, स्थित है । इसी नदी के किनारे ऋषभ देव के पुत्र महाराज भरत तपस्या करते थे ।

चक्रपाणि–महाविष्णु ।

चक्रमण्डलि–सांप की एक जाति ।

चक्रराज–(१) भगवती दुर्गा के तीन चक्र हैं चक्रराज, किरिचक्र, गयचक्र । इनमें चक्रराज रय अधिक प्रधान है । (२) श्रीचक्र ।

चक्रवाक–चकवा पक्षी । इसका दर्शन शुभ शकुन माना जाता है ।

चक्रवात–(१) तूफान, आंधी (२) बवंडर ।

चक्रवात–एक पर्वत ।

चक्रवाल—(१) क्षितिज (२) पुराणों में वर्णित एक पर्वत–शृंखला जो भूमण्डल को दीवार की भाँति घेरे हुए तथा प्रकाश और अंधकार की सीमा समझा जाता है ।

चक्रव्यूह–सैन्यदल की मण्डलाकार स्थापना । इसके अन्दर घुसना मुश्किल होता है ।

चक्रहस्त—महाविष्णु ।

चक्री–(१) विष्णु (२) चक्रवर्ती राजा । (३) चकवा (४) सांप (५) कौआ ।

चक्रोद्धत—ययाति के वंशज एक राजा ।

चक्षु–(१) आंख (२) छठे मनु चक्षुष के पिता (३) महाराजा पुरु के पुत्र अनु के पुत्र ।

चक्षु श्रवण–सांप ।

चक्षुप–(१) सूर्य का नाम (२) सोमवंश का एक राजा ।

चञ्चरीक–भौंरा ।

चटुल–(१) चंचल (२) सुन्दर ।

चण्ड–(१) उग्र, क्रोधी (२) गरम (३) एक असुर । इसका भाई था मुण्ड । ये दोनों देवताओं और मनुष्यों को बहुत सताते थे । देवताओं की प्रार्थना पर श्री पार्वती के शरीर से अंशसंभवा रौद्रमूर्ति काली पैदा हुई । काली ने चण्डमुण्डासुरों की हत्या की । इसी लिए देवि का नाम चण्डिका हो गया ।

चण्ड कौशिक–गौतम का पौत्र एक मुनि । उनके आग्रह से मगधराज बृहद्रथ को जरा-

सन्य नामक पुत्र हुआ ।

चण्डबल–एक वीर वानर ।

चण्ड भानु–सूर्य ।

चण्डवेग–(१) गन्धर्वों का एक प्रमुख नेता । (२) श्री भागवत में पुरञ्जनो–पाख्यान में चण्डवेग काल (संवत्सर) के रूप में आता है ।

चण्डाल–एक नीच जाति ।

चण्डाल भिक्षुकी–बुद्धमत कथा के आधार पर केरल के प्रसिद्ध कवि कुमारनाशान की एक कविता । बुद्धदेव के शिष्य आनन्द नामक भिक्षु पर आसक्त मातंगी नामक चण्डाल कन्या को बुद्धदेव उपदेश देकर मोक्ष देते है ।

चण्डिका–दुर्गा देवी ।

चतुर–कुशल, पटु ।

चतुरंग–(१) अंगवश के राजा रोमपाद के पुत्र एक राजा । (२) एक प्रकार का शतरंज ।

चतुरंगिणी सेना—रथ, गज, अश्व, पदादि–ये चारों जिसमें हो उस सेना को कहते हैं ।

चतुरानन–ब्रह्मा–इनके चार मुख हैं ।

चतुरास्य–एक असुर ।

चतुरुपाय–साम, दाम, भेद, और दण्ड ।

चतुर्गति–सालोक्य, सामीप्य, सारुप्य, सायुज्य ।

चतुर्थी—चन्द्र पक्ष का चौथा दिन ।

चर्दन्त—इन्द्र का हाथी ऐरावत ।

चतुर्दशमनु—स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्तव, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि ।

चतुर्दशरत्न—लक्ष्मी, कौस्तुम्भ, पारिजात, सुरा धन्वन्तरि, चन्द्र, कामधेनु, इन्द्र का हाथी ऐरावत, रंभादि देवगनायें, उच्चैश्रवा, कालकूट विष, शार्ङ्ग, अमृत—ये समुद्र मंथन के

चतुर्दश लोक–भूलोक, भुवलोक, स्वर्ग, महलोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक ये सात उपरि लोक हैं । अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल,महातक, पाताल-ये सात अधोलोक हैं ।

चतुर्दश लोक साक्षी–सूर्य, चन्द्र, अग्नि, जल, हृदय, काल, दिन, रात, प्रातः सन्ध्या, धर्म, वायु, आकाश, भूमि ।

चतुर्दश विद्या–ऋक्, यजु, साम, वेद-ये चार वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द-ये तु वेदांग या शास्त्र, मीमासा, न्याय शास्त्र, धर्म शास्त्र पुराण ।

चतुर्भुज–विष्णु ।

चतुर्भाव–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

चतुर्मूर्ति–राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न रूप चार मूर्तियोंवाले विष्णु ।

चतुर्युग–सत्ययुग या कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग ।

चतुर्वर्ण–हिन्दुओं की चार जातियाँ, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।

चतुर्विध भोज-शास्त्रों में चार प्रकार का भोजन बताया गया है । (१)भक्ष्य–जो शीघ्र निगाल सके जैसे दलिया (२) भोज्य–निगलने से पहले चबाना चाहिए (३) लेह्य–चटनी की तरह चाट कर खाना चाहिए (४) चोष्य–आम और गन्ने की तरह चूस कर खाना चाहिए ।

चतुर्व्यूह–वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध–इन चार व्यूहों से युक्त महाविष्णु

चतुर्षष्टि कलामयी–चौंसठ कलाओं से युक्त देवी ।

चतुष्पथ–चौराहा ।

चतुष्पाद–(१) चार पैरोंवाले (२) चार चरण का श्लोक ।

चतुष्पाणि–विष्णु ।

चन्द्र–चन्द्रमा, कपूर ।

चन्द्र–(१) चन्द्रमा (२) चन्द्रग्रह (३) समास के अन्त में प्रयुक्त होते समय इसका अर्थ श्रेष्ठ, प्रमुख होता है । (४) अत्रि और अनुसूया का पुत्र जो ब्रह्मा का अंश माना जाता है । चन्द्र से ही चन्द्रवंश या सोमवंश की उत्पत्ति हुई (५) इक्ष्वाकु के वंशज राजा विश्वरान्धी के पुत्र, इनके पुत्र युवनाश्व थे ।

चन्द्रकला–चन्द्रमा की रेखा ।

चन्द्रकान्त–चन्द्रकान्त मणि । कहते हैं कि चन्द्रमा के प्रभाव से इस मणि से रस क्षरता है ।

चन्द्रकान्ता–(१) रात (२) चाँदिनी ।

चन्द्रगुप्त–(१) मौर्यवंश के प्रसिद्ध राजा जिनसे गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई ।(२) कार्तवीर का मन्त्री (३) एक असुर ।

चन्द्रग्रह–कर्कराशि, राशिचक्र में चौथी राशी ।

चन्द्रगोपाल–चन्द्रलोक, चन्द्रमण्डल ।

चन्द्रग्रहण–चन्द्रमा का राहुग्रस्त होना ।

चन्द्रचूड–शिव ।

चन्द्रदारा–चन्द्र की पत्नियाँ । चन्द्र ने दक्ष की २७ पुत्रियों से जो नक्षत्र थीं, विवाह किया । रोहिणी से चन्द्र का अधिक प्रेम होने से बाकी लड़कियों ने पिता से शिकायत की । दक्ष ने शाप दिया कि चन्द्र अनपत्य् और क्षयरोगी बनेगा । शाप की कठोरता से पुत्रियों के दुःखित होने पर दक्ष ने शाप मोक्ष दिया कि क्षय किसी काल में होगा । कहा जाता है कि चन्द्र की कलाओं के वृद्धि–क्षय का यही कारण है ।

चन्द्रद्युति–चाँदनी ।

चन्द्र नन्दन–बुध ।

चन्द्रनिभा–देवी का नाम, चन्द्र के समान शोभावाली

चन्द्रभागा–एक नदी ।

चन्द्रमण्डल–(१) चन्द्रलोक (२) श्रीचक्र (३) सहस्रार चक्र ।

चन्द्रमती–राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी, रोहिताश्व की माँ ।

चन्द्रमुखी–चन्द्रवदना, चन्द्रमा जैसा सुन्दर मुखवाली ।

चन्द्रवंश–पौराणिक काल का एक राजवंश । इसको सोमवंश भी कहते हैं । इसके स्थापक थे बुध ।

चन्द्रवती–एक असुर कन्या गुणवती की बहन । (दे : गुणवती) इसने प्रद्युम्न के भाई गद से विवाह किया ।

चन्द्रशिला–चन्द्रकान्त मणि ।

चन्द्रहास–(१) शिव से प्राप्त रावण की तलवार (२) एक चमकीली तलवार (३) केरल के एक राजा, सुधार्मिक के पुत्र । युधिष्ठिर के अश्वमेध के घोड़े के साथ घूमते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन इनके राज्य में गये थे और राजा ने उनका विधिपूर्वक सत्कार किया और उनके बड़े मित्र बन गये ।

चन्द्रांगद–नल महाराजा का पौत्र ।

चन्द्रलोक–जयदेव से विरचित एक अलंकार शास्त्र ।

चन्द्रापीड़–जनमेजय महाराजा का पुत्र ।

चन्द्राश्व–इक्ष्वाकु वंशज कुवलयाश्व का पुत्र ।

चन्द्रिका–चाँदनी ।

चन्द्रोत्सव–मलयालम में एक मणिप्रवाल काव्य । संस्कृत और मलयालम मिश्रित भाषा है । भिन्न-भिन्न वृत्तों में इसकी रचना हुई है ।

चपला–(१) अस्थिरा (२) धन की देवी लक्ष्मी ।

चमस–(१) सोमपान करने के लिये उपयुक्त चमचे के आकार में लकड़ी का यज्ञ पात्र (२) ऋषभ देव के एक पुत्र ।

चमू–सेना ।

चमूपति–सेनानाथ, सेनापति ।

चम्प–राजा हरिश्चन्द्र के वंशज (हरिश्चन्द्र के पौत्र) हरित के पुत्र । इन्होंने चम्पा नामक नगरी बसायी । इनके पुत्र सुदेव थे ।

चम्पक–(१) चम्पा नामक पौधा जिसके पीले

सुगन्धयुक्त फूल लगते है ।(२)एक विद्याधर।
चम्पकारण्य–उत्तर भारत का एक पुण्य स्थल।
चम्पकावती–गंगा के किनारे एक प्राचीन नगर, अंगदेश की राजधानी, वर्तमान भागलपुर ।
चम्पा–गंगा किनारे स्थित एक पुरातन पुरी। द्वापर युग में अतिरथ नामक सूत यहाँ रहता था जिसने कर्ण का पालन-पोषण किया । राजा चम्प ने यह नगरी बसायी।
चर–(१) दूत (२) खंजन पक्षी (३) सृष्टि की वह रचना जो हिलती–डुलती है (४) हिलता हुआ ।
चरक–(१) अवधूत (२) चरक नाम वैद्य ग्रन्थ का निर्माता
चरण कमल–कमल जैसे सुन्दर कोमल पैर ।
चरण पादुका–बद्रीनाथ में नीलकण्ठ पर्वत पर एक शिला पर भगवान का चरण चिन्ह बना है, इसलिये यह पवित्र स्थान माना जाता है।
चरण सेवा–सेवा, भक्ति, दण्ड–प्रणाम ।
चरणामृत–वह पानी जिसमें इष्ट देव की मूर्ति, किसी श्रद्धेय ब्राह्मण या ऋषि या आध्यात्मिक गुरु के पैर धोये जा चुके है ।
चरम काल–मृत्यु की घड़ी ।
चरमाद्रि–पश्चिम पर्वत । ऐसा विश्वास है कि सूर्य और चन्द्र इसके पीछे ही अस्त होते हैं।
चरु–उबले चावल आदि से देवताओं तथा पितरो की सेवा में प्रस्तुत करने के लिये तय्यार की गई आहुति ।
चर्मकार–संकर जाति का एक विभाग (चमड़े का काम करते हैं।)
चर्मवान–राजा सुबल का पुत्र, शकुनि का भाई।
चर्मण्वती–गंगा में जाकर मिलने वाली एक नदी, वर्तमान चम्बल नदी ।
चल्ना–(१) अस्थिरा (२) धन की देवी लक्ष्मी (३) एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।
चलपत्र–अश्वत्थ वृक्ष ।
चषक–(१) सुरापात्र (२) एक प्रकार की मदिरा (३) शहद ।
चाक्यार–केरल की एक जाति । इनकी जीविका मार्ग है "कूत्तू" कहना (दे : कुत्तू)
चाक्यार कूत्तू–केरल की एक कला जो आज-कल बहुत कुछ नष्ट होती जा रही है । चाक्यार पौराणिक कथाओं के आधार पर चम्पू रीति में रचित कथाओं को हास्य-विनोद के साथ व्याख्या कर श्रोताओं को सुनाते हैं। ये कृतियाँ संस्कृत में होती है । देव और मनुष्य इससे सन्तुष्ट होते है ।
चाक्षुष–(१) छठे मन्वन्तर के मनु (२) आखों से संबंध रखनेवाला(३)चौदहवें मन्वन्तर का देवगण (४) वैवस्त मनु के पुत्र दिष्ट के वंशज खनित्र के पुत्र। इनके पुत्र विविंशति थे।
चाणक्य–राजनीति के प्रख्यात प्रणेता विष्णु गुप्त । अपर नाम कौटिल्य । मौर्यवंशज चन्द्रगुप्त महाराजा के मन्त्री, गुरु, उपदेष्टा थे।
चाणूर–कंस का सेवक एक मल्ल । यह मल्लयुद्ध में अतीव निपुण था। अक्रूर के द्वारा निमन्त्रित श्रीकृष्ण और बलराम के मथुरा पहुँचने पर कंस ने उनको मारने के लिये चाणूर और मुष्ठिक को नियुक्त किया । लेकिन श्रीकृष्ण और बलराम ने इन दोनों को मार डाला ।
चाण्डाल–पतित, अधम ।
चातुर्मास्य–हर चार महीने के पश्चात् अनुष्ठेय यज्ञ । कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के आरंभ में किया जाता है ।
चातुर्वर्ण्य–सनातन धर्म के अनुसार चार जातियाँ है । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । इनके धर्म और कर्तव्य जो प्रत्येक वर्ण के प्रत्येक होते हैं ।
चान्द्रमास–चन्द्रमा कि तिथियों के अनुसार गिना जाने वाला महीना ।
चान्द्रव्रत–सौन्दर्य, सौभाग्य आदि प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जानेवाला व्रत
चान्द्रायण–एक व्रत या प्रायश्चित्तात्मक तपश्चर्या

जो चन्द्रमा की वृद्धि या क्षय से विनियमित है। इस व्रत के अनुसार दैनिक आहार पूर्णिमा से प्रतिदिन एक एक ग्रास घटता रहता है यहाँ तक कि अमावास्या के दिन निराहार व्रत रखा जाता है। उसके पश्चात् फिर शुक्ल पक्ष में एक-एक ग्रास बढ़ाकर पूर्णिमा तक फिर १५ ग्रास किया जाता है।

चामर–चौरी, यह मोर पंखे की भांति प्रयुक्त की जाती है और एक राजकीय चिन्ह समझी जाती है।

चामुण्डा–दुर्गा का रौद्ररूप।

चारण–(१) गवैया (२) गन्धर्व।

चारित्र–(१) शील व्यवहार (२) सतीत्व (३) विशिष्ट आचार।

चारुगुप्त–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का एक पुत्र

चारुचन्द्र–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र

चारुदेष्ण–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र

चारुनेत्र–सुन्दर आँखों वाला।

चारुभद्र–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

चारुमति–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी की पुत्री।

चारुवेष–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

चार्वाक–(१) महाभारत में वर्णित एक राक्षस जो दुर्योधन का मित्र और पाण्डवों का शत्रु था। (२) भौतिकवाद और नास्तिकता का स्थल रूप का प्रवर्तक एक मुनि जो वृहस्पति का शिष्य बताया जाता है। इसके सिद्धान्त को चार्वाक मत कहते हैं।

चावेर–केरल के उच्चकुलजात लोग जो पुरातन काल में देश सेवा या प्रभुसेवा में प्राण तक न्योछावर करने के लिये सदा सन्नद्ध रहते थे। शत्रुओं से लड़ने के लिये एक बार हथियार हाथ में लेने के बाद वे उसको नीचे नही रखते थे। युद्ध में वीर गति प्राप्त करने वाले चावेर के परिवार को राज्यकोष से अनेक प्रकार की सहायता और मान मिलता था।

चिकुर–(१) सर्पराज आर्यक का पुत्र (२) सिर के बाल।

चिक्षुर–महिषासुर का सेनानायक।

चित–(१) प्रत्यक्ष ज्ञान (२) हृदय। मन (३) आत्मा (४) ब्रह्म।

चित्घन–परमात्मा।

चित्स्वरूप–परमात्मा।

चिती–ज्ञानस्वरूपिणी देवी।

चितेयु–पुरुवंश का एक राजा।

चित्त–(१) सोचा हुआ (२) मन, हृदय।

चित्तवृत्ति–मन की अवस्था या स्वभाव।

चित्त वैकल्य–परेशानी, व्यग्रता।

चित्र–(१) भारत युद्ध में भाग लेनेवाला एक योद्धा (२) धृतराष्ट्र का पुत्र (३) रुचिकर (४) तस्वीर (५) असाधारण छवि।

चित्रकूट–मन्दाकिनी नदी के पास एक पर्वत। वनवास के समय श्रीराम, सीता और लक्ष्मण कुछ वर्ष यहाँ कुटिया बनाकर रहे थे। इसलिये यह पवित्र माना जाता है। यहीं पर इन्द्र के पुत्र जयन्त ने कौए के रूप में आकर सीता पर आक्रमण किया था और श्रीराम ने उसकी आँख फोड़ दी।

चित्रकेतु–(१) मथुरा के निकट शूरसेन नामक राज्य के राजा। अनेक काल निस्सन्तान रहे। ऋषि अंगिरा के अनुग्रह से पुत्र जन्म हुआ, लेकिन ईर्ष्या से सपत्नियों ने बालक की हत्या की। पुत्र शोक से संतप्त राजा को अंगिरा और नारद ने आकर ज्ञानोपदेश दिया। ज्ञान पाकर चित्रकेतु विष्णु भक्त हो गये और एक गन्धर्व प्रधान हो गये। एक बार शिवजी की अवहेलना करने से श्रीपार्वती ने असुर योनि में जन्म लेने के लिये शाप दिया और वृत्तासुर नामक असुर होकर जन्में। इन्द्र से युद्ध कर मारे गये। (२) द्रुपद राजा का पुत्र जो द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया। (३) गरुड़ का पुत्र।

(४) वसुदेव के भाई देवभाग और कंस की बहन कंसवती का एक पुत्र (५) लक्ष्मण का एक पुत्र ।

चित्रकेशी–एक अप्सरा ।

चित्रकेतु–यमराज के कार्यालय में मनुष्य के गुणों तथा अवगुणों को लिखनेवाला ।

चित्रपट–(१) तस्वीर (२) रंगीन कपड़ा ।

चित्रबाहु–धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

चित्रभानु–अग्नि (२) सूर्य (३) मदार का पौधा ।

चित्ररथ–(१) कश्यप और मुनि के १६ पुत्रों में से एक, एक गन्धर्व राजा । पांचाली स्वयंवर को जाते हुए अर्जुन से युद्ध कर हार गया और गन्धर्व पत्नियों की प्रार्थना पर अर्जुन ने उसको मारा नहीं । चित्ररथ अर्जुन का बड़ा मित्र हो गया । (२) राजा दशरथ का एक मन्त्री कौशाम्बी के राजा नेमिचक्र का पुत्र, इसका पुत्र कविरथ था (३) पुरुवंश के राजा धर्मरथ की पुत्री का पुत्र । इनका अपर नाम रोमपाद था जिन्होंने दशरथ पुत्री शान्ता को अपनी पुत्री बना ली । (४) यदुवंश के राजा रुशंकु का पुत्र, इनके पुत्र शशबिन्दु एक महायोगी थे ।

चित्रलेखा–(१) बाणासुर की पुत्री उषा की सहेली, विभाण्ड की पुत्री । उषा ने स्वप्न में एक सुन्दर राजकुमार से भेंट की और उसके प्रेम से पीड़ित हो गयी । चित्रलेखा ने अनेक राजकुमारों का चित्र खींचकर उषा को दिखाया और उससे पता लगा कि उषा का प्रेमी प्रद्युम्न कुमार अनिरुद्ध है । अपनी योगमाया से चित्रलेखा अनिरुद्ध को द्वारका से उषा के पास ले आयी । (२) एक देव कन्या ।

चित्रवर्मा–(१) धृतराष्ट्र का पुत्र (२) एक पांचाल राजकुमार ।

चित्रवाहु–मणिपुर का एक राजा ।

चित्रवाहा–एक नदी ।

चित्रशिखण्डि–सात ऋषियों (मरीचि, अंगिरा अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ का विशेषण ।

चित्रसेन–(१) वैवस्वत मनु के पुत्र नरिष्यन्त के पुत्र, इनके पुत्र दक्ष थे । (२) पुरुवंश का एक राजा (३) कर्ण का पुत्र (४) जरासंध का मन्त्री (५) त्रिगर्त के राजा सुशर्मा का भाई (६) एक सांप (७) तेरहवें मनु के एक पुत्र ।

चित्रसेना–(१) एक नदी (२) एक अप्सरा ।

चित्रा–(१) चन्द्रमास का चौदहवां नक्षत्र (२) एक देवकन्या ।

चित्रांगद–शन्तनु महाराजा और सत्यवती का पुत्र, भीष्म का भाई । नाम रूपता की एकता के कारण गन्धर्व राजा चित्रांगद ने इसको मारा ।

चित्रांगदा–(१) मणिपुर के राजा चित्रवाहु की पुत्री जो अर्जुन की पत्नी बन गई (२) एक देवकन्या ।

चित्रांगी–हैहय राजकुमारी ।

चित्रायुध–(१) चेदी राज्य का एक योद्धा (२) धृतराष्ट्र का पुत्र ।

चित्रिणी–विविध प्रकार के बुद्धिवैभव और श्रेष्ठताओं से युक्त स्त्री । रतिशास्त्र में वर्णित चार प्रकार की स्त्रियों (पद्मिनी, चित्रिणी शंखिनी, हस्तिनी) में से एक ।

चिदम्बर–(१) दक्षिणी भारत का एक पुण्य क्षेत्र (२) दक्षिण भारत के विजय नगर के सम्राट वेंकिट की सभा के एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि जिन्होंने 'राघव यादव पाण्डवीय' नामक काव्य की रचना की थी । इसमें तीन काण्ड हैं और इसमें श्रीराम, श्रीकृष्ण और पाण्डवों की कथायें प्रतिपादित हैं ।

चिदानन्द पण्डित–१३वीं शताब्दी के एक केरलीय पण्डित, मीमांसा शास्त्रज्ञ थे । मीमांसा

तत्वों के आधार पर इन्होंने 'नीतितत्वाविर्भाव' नामक एक ग्रंथ रचा था।

चिन्ता—(१) चिन्तन (२) शोकपूर्ण विचार

चिन्तातुर—व्याकुल

चिन्तातिलक—एक केरलीय व्याख्याता जिन्होंने शुकसन्देश काव्य की व्याख्या की थी।

चिन्तामणि—(१) एक दिव्य रत्न जिससे मन चाहा फल मिलता है (२) एक मंत्र (३) एक तमिल मंत्र शास्त्र (४) कृष्ण नदी के किनारे रहने वाली एक वेश्या। कहा जाता है श्री विल्वमंगल इसके पास जाया करते थे और उसके धर्मोपदेश से उनका मानसान्तर हो गया और सिद्ध योगी बने।

"चिन्ताविष्टयाया सीता"—केरल के महाकवि कुमारनाशान की एक पद्यकृति सीता के पुत्र कुश और लव वाल्मीक महर्षि के साथ श्रीराम के पास गये। तब वाल्मीकि आश्रम में अकेली बैठी सीता के हृदय के विविध विकारों पर आधारित रची हुई एक कृति है।

चिन्मय—विशुद्ध ज्ञानमय, परमात्मा।

चिर—दीर्घकाल तक रहने वाला

चिरकाल—दीर्घकाल

चिरंजीवि—जिनकी मृत्यु नहीं होती-अमर ये सात हैं—अश्वत्थामा, वलि, वेदव्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य परशुराम। कहा जाता है कि सिर पर तेल लगाने से पहले इनका ध्यान कर अगुली से सात बूंदतेल जमीन पर गिराने के वाद तेल लगाने से दीर्घायु होता है।

चिरपुष्प—वकुल वृक्ष।

चिरन्तर—पुराण

चिरायु—(१) दीर्घायु (२) एक राजा का नाम

चिलप्पति कारम्—अत्यन्त सुन्दर एक प्राचीन तामल ग्रन्थ। इसके रचयिता इलङ्कोटिवटिकल है जिन्होंने वाल्यावस्था में ही सर्वसंग परित्यागी होकर जैन मत स्वीकार किया और सन्यासी हो गए। यह तीन काण्डों में तीस गाथाओं में रचित है इसके नायक और नायिका 'कोवल' और 'कणिका' हैं। केरल के कई देवी क्षेत्रों में गायी जाने वाली गीत गाथायें है इस कृति का इतिवृत्ति।

चीन—(१) एक देश का नाम (२) एक प्रकार का हरिण

चीनाक—एक प्रकार का कपूर

चीर—(१) फटा पुराना कपड़ा (२) वल्कल (३) चौड़ी रेखा (४) चार लड़ियों के मोतियों का हार

चीरवास—(१) एक यक्ष जो कुबेर का सेवक था (२) एक राजा

चीरिणी—एक नदी

चीवर—(१) पोशाक, फटा कपड़ा (२) बौद्ध भिक्षु का वस्त्र

चूड़ा—(१) वालों की चोटी (२) मुर्गे या मोर की कलगी (३) मुकुट (४) चोटी या शिखर (५) मुण्डन संस्कार।

चूत—(१) आम का पेड़ (२) कामदेव के पांच वाणों में से एक।

चूली—एक मुनि। इन्होंने सोमदा नामक गंधर्व कन्या पर प्रसन्न होकर उससे विवाह किया और उनका ब्रह्मदत्त नामक पुत्र हुआ। कुशनाभ की सौ कुब्जा कुमारियों से ब्रह्मदत्त ने विवाह किया और उनका कूवड़ दूर हो गया।

चेङ्कुट्टुवन्—दूसरी शताब्दी में जीवित केरल एक प्रसिद्ध राजा जिनकी राजधानी 'तिरुवञ्चिकुलम्' थी। 'चिलप्पतिकारम्' के रचयिता इलङ्कोटिवटिकल के बड़े भाई थे।

चेदि—यदुवंश के राजा उशीक के पुत्र, इनके पुत्र थे राजा दमघोष।

चेदिप—राजा उपरिचरवसु के एक पुत्र जो चेदि देश के राजा थे।

चेन्तमिप्-तमिप की साहित्यिक भाषा ।

चेम्पक राम-स्वभाव शुद्धि । कृत्यनिष्ठा आदि सद्गुण सम्पन्न तिरुविताकूर के राजाओं को यह उपाधि दी जाती थी ।

चेम्पकेश्वरी-मध्य केरल का एक प्राचीन राज्य । यहाँ के राजा साहित्य, संगीत आदि कलाओं का पोषण करते थे । 'मेलपतूर भट्टातिरी' तुञ्चत्तेकत्तच्छन, कुञ्जन नम्बियार आदि कवियों का बहुत मान करते थे ।

चेकितान-(१) वृष्णिवंशीय यादव, महारथी योद्धा और बड़े शूर वीर थे । पाण्डवों की सात अक्षौहिणी सेना के सात सेनापतियों में से एक थे । ये महाभारत युद्ध में दुर्योधन के द्वारा मारे गये । (२) शिव ।

चेटी-दासी, सेविका ।

चेतन-(१) सचेत प्राणी, मनुष्य (२) आत्मा (३) परमात्मा ।

चेतना-(१) ज्ञान (२) संज्ञा (३) प्राण ।

चेदि-एक देश का नाम ।

चेदी-यदुवंश के एक राजा जिनसे चेदिवंश शुरू हुआ ।

चेदिराज-चेदि देश का राजा, शिशुपाल ।

चेन्नास नारायण तम्बूतिरी-कोषिक्कोड के मान विक्रम राजा की सभा के एक प्रसिद्ध कवि । 'तन्त्रसमुच्चय' नामक तन्त्र शास्त्र ग्रंथ इन्होंने बनाया ।

चेटराज-पुरातन केरल ।

चेरमान पेरुमाल-केरल के अन्तिम सम्राट जिन्होंने केरल को कई भागों में विभाजित किया ।

चेष्टा-(१) कर्म, व्यवहार (२) प्रयत्न (३) चाल, गति ।

चैतन्य-(१) प्राण, जीवन (२) परमात्मा (३) एक प्रसिद्ध वैष्णव संन्यासी जो बंगाल में पैदा हुए । इनका अपर नाम है श्रीकृष्ण चैतन्य और भगवान विष्णु का अवतार समझे जाते है । इनके बारे में अनेक अद्भुत कथायें प्रचलित हैं । ये १४८५ में पैदा हुए और १५३३ में स्वर्ग सिधार गये ।

चैतन्य कुसुम-(१) ज्ञान कुसुम (२) अहिंसावादी सद्गुण ।

चैत्य-(१) स्मारक (२) धार्मिक पूजा का स्थान, वेदी (३) यज्ञ मण्डप (४) देवालय (५) बौद्ध या जैन मन्दिर (६) गलर का वृक्ष ।

चैत्र-(१) एक महीने का नाम जिसमें चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र पुंज में रहता है । मार्च-अप्रैल के महीने में आता है । (२) चौथे मनु तामस का एक पुत्र ।

चैत्ररथ-कुबेर का उद्यान । सुमेरु पर्वत के चारों तरफ मन्दर, मेरुमन्दर, सुपार्श्व और कुमुद पर्वत है । इन पर्वतों पर क्रमश: नन्दन चैत्ररथ, वैभाजक और सार्वतोभद्र नाम के चार देवोद्यान है जहाँ यक्ष-किन्नर विहार करते हैं ।

चैत्रोत्सव-चैत्र मास में मनाया जाने वाला एक उत्सव । मथुरा में यह बड़े समारोह के साथ मनाया जाता था ।

चैद्य-चेदि राज्य के राजा शिशुपाल ।

चोल-दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश । यहाँ के राजा धर्मपुत्र के राजसूय यज्ञ में धन लेकर गये । भारत युद्ध मे पाण्डवों के पक्ष में से युद्ध किया था ।

चौड-मुण्डन संस्कार ।

च्यवन-(१) एक महर्षि । भृगु महर्षि और पुलोमा के पुत्र । पुलोमा जब गर्भवती थी एक राक्षस उसे उठा ले गया । तब बालक गर्भ से गिर गया । इसलिए च्यवन नाम पड़ा । ये बड़े तपस्वी थे । राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या से विवाह किया था । शर्याति एक बार पत्नी, पुत्री और अनुचरों के साथ उस वन में गये थे जहाँ मुनि तपस्या करते थे ।

मुनि दीमक से ढके थे, सिर्फ प्रकाशमय आँखें दिखाती थीं। राजकुमारी ने अनजाने में इन आँखों को एक लकड़ी से खोदा जिससे मुनि की आंखें फूट गईं। शाप से बचने के लिए राजा ने अपनी कन्या का दान मुनि को दिया। पतिव्रता सुकन्या की सेवा शुश्रूप से मुनि प्रसन्न हुए। एक दिन अश्वनी कुमारों के प्रसाद से जरा वाधित अन्धे मुनि रूपवान युवक बने। इसके प्रत्युपकार में शर्याति के यज्ञ में मुनि ने अश्विनी कुमारों को सोमपान कराया। वैद्य होने से ये सोमपान से वञ्चित थे। इस यज्ञ में विघ्न डालने के लिये जब इन्द्र आये मुनि ने अपनी तपः शक्ति से इन्द्र को हराया।

च्यवन और मनु पुत्री आरुषी का पुत्र है और्व। ये दूसरे मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक थे। (२) कुरुवंश के राजा सुहोत्र के पुत्र, इनके पुत्र उपचरि वसु थे।

छ

छ–अंश, खण्ड।

छटा–(१) शोभा (२) किरण समूह (३) राशि।

छत्रपति–(१) सम्राट, राज्य की मर्यादा के चिह्न स्वरूप राजा के ऊपर छत्र किया जाता है (२) जम्बू द्वीप के प्राचीन राजा का नाम।

छद्म–कपटवेश।

छन्द–(१) छ. वेदाङ्गों में से एक छन्द शास्त्र है। अन्य वेदाङ्ग है–शिक्षा, व्याकरण, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष। (२) कामना (३) चालाकी।

छन्दस्सारा—छन्द शास्त्रों का सार उपनिषद रूपिणी देवी।

छवि—(१) आभा (२) सौंदर्य (३) प्रकाश।

छागमुख—बकरी का मुख वाला। कार्तिकेय की उपधि।

छागवाहन–आग का देवता, अग्नि की उपाधि।

छात्र–विद्यार्थी, शिष्य।

छाया—(१) छाँह (२) प्रतिविम्बित मूर्ति (३) समरूपता (४) दुर्गा (५) विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा की प्रकृति या छाया। संज्ञा अपने पति सूर्य को बिना बताये पितृगृह चली गई। छाया से सूर्य की तीन सन्तान हुई–दो पुत्र सावर्णि और शनि और एक कन्या तपती।

छायाग्रह–दर्पण, शीशा।

छायासुत—शनि।

ज

ज–वंशज, पैदा हुवा।

जगत–संसार, विश्व।

जगति–सूर्य के सात घोड़ों में से एक।

जगती–(१) पृथ्वी (२) मनुष्य। (३) गाय।

जगदम्बा–दुर्गा।

जगद् प्राण–हवा।

जगद् योनि–(१) परमात्मा (२) विष्णु (३) शिव का विशेषण (४) ब्रह्म की उपाधि।

जगदसाक्षि–(१) परमात्मा (२) सूर्य।

जगदात्मा-परमात्मा।

जगद्धात्री–जगत की माँ श्री पार्वती।

जगदीश–विश्व का स्वामी, परमात्मा।

जगन्नाथ–विश्व का स्वामी, विष्णु ।

जगन्निवास–परमात्मा, विष्णु ।

जघन्य–अत्यन्त दुष्ट, अधम ।

जङ्गम–चर या हिलने डुलने वाला पदार्थ ।

जङ्गल–वन, एकान्त निर्जन स्थान ।

जङ्गारि–विश्वामित्र का एक पुत्र ।

जटा–बटे हुए बाल ।

जटाजूट–जटा के रूप में बटे हुए बालों का समूह ।

जटाधर–शिव ।

जटा पाठ–वेदाध्ययन की एक रीति ।

जटायु–कश्यप ऋषि के पुत्र अरुण और श्येनी का पुत्र, अर्ध दिव्य पक्षी। इसका बड़ा भाई था संपाति । जटायु अतीव शक्तिशाली, प्रतापी गीधराज था । दशरथ का मित्र था । जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था, तब सीता का करुण क्रन्दन सुनकर जटायू ने रावण से युद्ध किया, परन्तु वह सीता को रावण के पञ्जे से न छुड़ा सका । रावण ने चन्द्रहास से उसके पंखों पर वार किया । वह घायल हो गया और प्राणपीडा से तड़-पता रहा । सीता की खोज करते हुए राम लक्ष्मण उसके पास आये और सारी बातें उनसे कह कर उसने अन्तिम श्वास लिया । श्रीराम की गोद में मृत्यु होने से उसको मोक्ष मिला । राम और लक्ष्मण ने उसका विधि-पूर्वक अन्त्येष्टि संस्कार किया ।

जटासुर–एक असुर । वनवास के समय यह भीम को छोड़कर चारों पाण्डवों को और पांचाली को ब्राह्मण वेष में आकर उठा ले गया । भीम ने इसको मारकर इनकी रक्षा की । इसका पुत्र अलम्बुष या जिसको भीम के पुत्र घटोत्कच ने मारा ।

जटिल–पेचीदा, कठिन ।

जठर–(१) महामेरु पर्वत की पूर्व दिशा में स्थित एक पर्वत (२) कठोर (३) पेट, गर्भाशय (४) वेदपारंगत एक ब्राह्मण ।

जठराग्नि–पेट में स्थित अग्नि जो पचाने का काम करती है ।

जड़–(१) निश्चेतन, उदासीन (२) शीतल, जमा हुआ ।

जड़ भरत–ऋषभ देव के पुत्र भरत । अनेक साल भारत पर राज्य करने के बाद विरक्त होकर पुलस्त्याश्रम में रहने लगे । एक दिन एक नवजात हिरण के बच्चे की रक्षा की । प्रसव पीड़ा से हिरणी की मृत्यु हो गई । उस बच्चे के पालन-पोषण में इतनी श्रद्धा हो गई कि पूजा-पाठ सब कुछ भूल गये उसी बच्चे की चिन्ता में उनकी मृत्यु हुई और दूसरा जन्म हिरण होकर जन्मा । पूर्व जन्म का स्मरण होने के कारण ईश्वर चिन्तन में उसी आश्रम में रहे और जब मृत्यु हुई, एक ब्राह्मण कुल में पैदा हो गए । यहाँ भी उनको पूर्व जन्मों का स्मरण रहा । ईश्वर ध्यान मे विघ्न न पड़े, इसलिये जड़ के समान रहने लगे । पिता ने पुत्र को वेदाध्ययन कराने का बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु असफल रहे । पिता की मृत्यु के बाद घर छोड़ कर वे घूमते रहे । एक बार रास्ते में सौवीर राज के पालकी-वाहकों ने इनको पालकी ढोने के लिये पकड़ लिया । इनकी लापरवाही और अलसता पर राजा क्रुद्ध हो गये । राजा सन-कादि ऋषियों से ज्ञानोपदेश लेने जा रहे थे। राजा के क्रुद्ध होने पर भी जड़ भरत अवि-चलित मन से पहली बार तत्व की बातें कहने लगे । राजा ने उनकी महानता जान ली और अपना गुरु मानकर उनसे ज्ञानोपदेश स्वीकार किया ।

जन–मनुष्य, व्यक्ति ।

जनक–(१) जन्म देने वाला, पिता (२) मिथिला या विदेह के प्रसिद्ध राजा, सीता के धर्मपिता, उर्मिला के पिता । अपने प्रभूत

ज्ञान, पवित्र आचरण के लिये प्रसिद्ध थे। विदेह मुक्त थे।

जनदेव–एक राजा।

जननी–(१) माता (२) दया।

जनपद–(१) वंश, राष्ट्र, देश (२) राजधानी।

जनमेजय–(१) हस्तिनापुर के एक प्रसिद्ध राजा, राजा परीक्षित के पुत्र अर्जुन के पौत्र का पुत्र। परीक्षित सांप के काटने से मरे, इसलिये जनमेजय ने उसका प्रतिशोध करने के लिये एक व्यवस्था की गई। अनेक सर्प होम कुण्ड में गिर कर मरे। अन्त में आस्तिक ऋषि की प्रार्थना पर तक्षक और बचे हुए सर्पों के प्राण बचे। इस यज्ञ के कारण ही वैशम्पायन ने राजा को महाभारत की कथा सुनाई और प्रायश्चित करने के लिये राजा ने उसे ध्यानपूर्वक सुना। (२) पुरु महाराजा और कौसल्या का एक पुत्र, इनके पुत्र प्रचनिवान थे। (३) एक सर्प (४) तृणविन्दु के वंशज सुमति के पुत्र।

जनयित्री–माता।

जनरञ्जन—लोगों को सुख देना।

जनलोक–ऊपर के सात लोकों में से तीसरा जो विराटरूप भगवान का मुख माना जाता है।

जनश्रुति–किवदन्ती।

जनस्थान–दण्डकारण्य का एक भाग।

जनार्दन–विष्णु का नाम।

जन्तु–(१) जानवर (२) व्यक्ति (३) पुरुवंश के राजा सोमक के पुत्र।

जन्तुमती- पृथ्वी।

जन्म–(१) उत्पत्ति (२) जीवन।

जन्मकुण्डली–जन्म-पत्रिका में बनाया गया चक्र जिसमें जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति दिखाई गई है।

जन्मतिथि–जन्म दिन।

जन्मनक्षत्र–जन्म के समय का नक्षत्र।

जन्म पत्रिका—वह पत्रिका जिसमें जन्म लेने वाले बालक या बालिका के जन्म काल के नक्षत्र और ग्रहों की स्थिति आदि बतलाया है।

जन्म लगन–जन्म के समय का लगन।

जन्मसाफल्य–जीवन या जन्म लेने के उद्देश्यों की सिद्धि।

जन्मान्तर–दूसरा जन्म।

जन्मान्ध–जन्म से ही अन्धा।

जन्माष्टमी–भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्योहार।

जप–मन्त्रों का मन ही मन उच्चारण करना (२) मन ही मन देवताओं का नाम बार-बार लेना (३) तीसरे मन्वन्तर के देवगण।

जपमाला–जप करने की माला।

जमदग्नि–राजा कुशाम्ब की पुत्री सत्यवती और पुण्यात्मा ऋचीक मुनि के पुत्र, भृगु वंश में जन्मे। सत्यवती की प्रार्थना पर पुत्र जन्म के लिये ऋचीक ने सत्यवती और उसकी मां के लिये अलग-अलग हविपात्र तैयार किया। एक ब्रह्मतेज से पूर्ण, दूसरा क्षात्रतेज से जो सत्यवती की मां के लिये तैयार किया था। लेकिन मां और बेटी ने हविष को बदल कर खा लिया। ऋचिक को जब यह पता लगा तब सत्यवती से कहा कि उसका क्षेत्रतेज से पूर्ण पुत्र होगा। सत्यवती दु:खी हो गयी, तब ऋचीक ने कहा कि उसके पुत्र के बदले पौत्र क्षात्रतेज से पूर्ण जन्म लेगा। सत्यवती के पुत्र जमदग्नि ने सूर्यवंश प्रसेनजित्र की पुत्री रेणुका से विवाह किया और उनके पांच पुत्र हुए जिनमें परशुराम सबसे छोटे थे। एक दिन रेणुका नदी में जल लेने गई और वहां गन्धर्व राज चित्ररथ को अप्सराओं के साथ जलक्रीड़ा करते देखा। रेणुका के मन में मोह पैदा हुआ। आश्राम लौटने में देरी हुई। जमदग्नि

ने तपश्शक्ति से सब कुछ जान लिया । और अपने पुत्रों को उसका सिर काटने की आज्ञा दी । बड़े चारों पुत्रों ने आज्ञा न मानी जिससे पिता की क्रोधाग्नि में भस्म हो गये । परशुराम ने पिता की आज्ञापालन कर माँ का सिर काट दिया । पिता के वरदान माँगने को कहने पर माँ और भाइयों को पुनर्जीवित करने का वर माँगा । जमदग्नि ने ऐसा ही किया । हैहय वंश के कार्तवीरार्जुन के पुत्रों के हाथ जमदग्नि की मृत्यु हुई ।

जम्बु–जामुन का पेड़ । महामेरु पर्वत के दक्षिण में स्थित पेड़ ।

जम्बूद्वीप-पुराण प्रसिद्ध सप्तद्वीपों में से एक, लवण समुद्र से घिरा हुआ है । इसके अन्तर्गत भारतवर्ष, किम्पुरुष वर्ष, हरिवर्ष, इलावृत, हिरण्मय वर्ष आदि वर्ष हैं ।

जम्बुमाली–रावण का अनुचर, प्रहस्त का पुत्र। हनुमान से मारा गया ।

जम्भ–(१) दाँत (२) अंश (३) एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा (४) एक दूसरा राक्षस जो इन्द्र से मारा गया ।

जम्भारि–(१) आग (२) इन्द्र ।

जय–(१) विजय (२) संयम, दमन (३) पांचाल देश का एक योद्धा (४) अर्जुन का नाम (५) सूर्य का नाम (६) विष्णु का एक पार्षद । जय और विजय भगवान के दो पार्षद थे । एक बार सनकादि मुनि भगवान के दर्शन के लिये वैकुण्ठ गये । सातवाँ द्वार पर इनको पहचान कर पार्षदों ने मुनियों को रोका । कुपित होकर सनक मुनि ने उनको तीन जन्म असुर योनि में जन्म लेने का शाप दिया । उस समय भगवान् यहाँ आ गये । पार्षदों को दुःखी देखकर मुनियों ने कहा कि असुर योनि में जन्म लेना होगा । लेकिन भगवान का स्मरण न छूटेगा और हर जन्म में उनके हाथ मृत्यु होकर तीसरे जन्म के बाद भगवान के पास आयेंगे । इन्हीं जय और विजय के जन्म हैं हिरण्याक्ष और हिरण्य कशिपु । श्रीरामावतार में रावण और कुंभकर्ण और श्रीकृष्णवतार में शिशुपाल और दन्तवक्त्र (७) पुरू खा के वंशज सञ्जय के पुत्र, इनके पुत्र कृत थे । (८) यदुवंश के सात्यकि के पुत्र, इनके पुत्र कुणि थे ।

जयघोष–जीत का ढिंढोरा ।

जयदेव–बारहवीं शताब्दी के श्रीकृष्ण भक्त एक प्रसिद्ध कवि । इनका जन्म बंगाल में हुआ । इन्होंने कई रचनायें कीं, लेकिन श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के आधार पर 'गीतगोविन्द' की रचना कर ये अत्यन्त प्रसिद्ध हुए (दे: गीतगोविन्द) ।

जयद्बल–अज्ञातवास के समय सहदेव का नाम ।

जयध्वज–कार्तवीरार्जुन का पुत्र ।

जयत्सेन–(१) मगध राज्य का एक राजकुमार । पाण्डव पक्ष में मिलकर महाभारत युद्ध में भाग लिया था । (२) अज्ञातवास के समय नकुल ने यह नाम स्वीकार किया था । (३) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (४) पुरुवंश का एक राजा जिसने विदर्भ की राजकुमारी से विवाह किया ।

जयद्रथ–(१) सिन्धुदेश का राजा, धृतराष्ट्र की पुत्री दुश्शला से विवाह किया । वनवास के समय एक बार जंगल में पांचाली को अकेली पाकर उसके सौन्दर्य पर मोहित होकर उसे बलपूर्वक पकड़कर भागने लगा । समाचार पाकर पाण्डव आये और युद्ध में जयद्रथ को हराया और सिर मुड़ाकर छोड़ दिया । कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन संशप्तों के साथ युद्ध करने में लगे थे । भीष्म ने कौरव सेना को चक्रव्यूह में खड़ा कर दिया था । जिसमें अर्जुन पुत्र अभिमन्यु घुस गये थे । अभिमन्यु की सहायता के लिये जब युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव आदि योद्धा आगे बढ़े । जयद्रथ

ने चक्रव्यूह के द्वार पर उनको रोक रखा । अन्दर द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा आदि महारथियों से घेरे जाने पर अभिमन्यु वीरता के साथ लड़ते रहे और अन्त में वीरगति पाई । यह समाचार पाकर अर्जुन ने प्रतिज्ञा की कि सूर्यास्त से पहले जयद्रथ का वध करूंगा, नहीं तो अग्नि में प्रवेश करूंगा । कौरवपक्षीय वीरों ने जयद्रथ की रक्षा करने की बड़ी चेष्टा की, परन्तु भगवान श्रीकृष्ण के प्रभाव से उनकी सारी चेष्टायें व्यर्थ हो गई और सूर्यास्त से पहले ही अर्जुन ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया । जयद्रथ को वर मिला था कि जो उसका सिर जमीन पर गिरावेगा उसके सिर के उसी क्षण सौ टुकड़े हो जायेंगे । इसलिये भक्तवत्सल भगवान की आज्ञा पाकर अर्जुन ने जयद्रथ के कटे सिर को ऊपर ही ऊपर बाणों द्वारा ले जाकर स्यमन्तपञ्चक तीर्थ पर बैठे हुए जयद्रथ के पिता वृद्धक्षत्र की गोद में डाल दिया और उनके द्वारा भूमि पर गिरते ही उनके सिर के सौ टुकड़े हो गये । (२) भरत वंश के राजा बृहत्काय के पुत्र । इनके पुत्र विषाद थे ।

जयन्त—(१) अज्ञातवास के समय विराट राजधानी में भीमसेन जयन्त नाम से रहते थे । (२) एकादश रुद्रों में से एक (३) दशरथ का एक मन्त्री (४) इन्द्र का पुत्र (५) द्वादशादित्यों में से एक (६) शिव का नाम ।

जयन्ती—(१) इन्द्र की पुत्री, जयन्त की बहन (२) ऋषय नाम के राजा की पत्नी (३) दुर्गा ।

जयसेन—(१) मगध का एक राजकुमार । राजा सार्वभौम का पुत्र, इसका पुत्र राधिक था ।

(२) पुरुरवा के वंशज हीन के पुत्र, इनके पुत्र संकृति थे ।

जया—जयस्वरूपिणी दुर्गा ।

जयानीक—(१) विराट राजा का भाई (२) द्रुपद राजा का एक पुत्र ।

जयाश्व—द्रुपद राजा का एक पुत्र ।

जरत्कारु—एक महान तपस्वी ज्ञानी और प्रख्यात ऋषि । तपस्या करके इनका शरीर बिल्कुल शुष्क हो गया था, इसलिये इनका ऐसा नाम पड़ा । इनकी पत्नी का नाम भी जरत्कारु था जो सर्पराज वासुकी की बहन थी । इनके पुत्र थे प्रशस्त मुनि आस्तिक जिन्होंने राजा जनमेजय के सर्पसत्र को बन्ध करवाया था ।

जरा—(१) बुढ़ापा (२) एक राक्षसी ।

जराजीर्ण—वयोवृद्ध, दुर्बल ।

जरासंध—मगध देश के राजा बृहद्रथ के पुत्र । जब शिशु पैदा हुआ, तब शीश के स्थान पर दो मांस के टुकड़े थे जिनके सभी अंग एक-एक थे जैसे एक पांव, एक हाथ, एक आंख आदि । राणी ने घबड़ा कर टुकड़ों को जंगल में फेंक दिया । वहां जरा नामकी राक्षसी ने इन टुकड़ों को जोड़कर एक बालक का रूप दिया और राजा को दिया । जरा से संधित होने से बालक का नाम जरासंघ हुआ । कंस की पुत्रियां जरासंध की पत्नियां बनीं । ये श्रीकृष्ण के कट्टर विरोधी थे, सत्रह बार इक्कीस अक्षौहिणी के साथ श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया और हार गया । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ से संबधित दिक्-विजय करते समय श्रीकृष्ण, भीमसेन और अर्जुन ब्राह्मण वेष धारण कर मगध गये । श्रीकृष्ण की प्रेरणा से जरासंध और भीमसेन के बीच में द्वन्द्व युद्ध हुआ जिसमें भीमसेन ने जरासंध के दोनों पैर अलग कर बीच से फाड़ कर मार दिया ।

जरिता—खाण्डव दाह में संतप्त एक मादा पक्षी ।

जर्जर—क्षीण, जीर्ण ।

जलक्रिया–मृतकों को जल-तर्पण देना ।
जलक्रीड़ा–जल में विहार करना ।
जलचर–जल में रहने वाले जीव जन्तु ।
जलज–कमल ।
जलजा–लक्ष्मी ।
जलद–(१) बादल (२) कपूर ।
जलधर–(१) बादल (२) समुद्र ।
जलधार–शाकद्वीप का एक पर्वत ।
जलन्धर–एक असुर जो विष्णु से मारा गया।
जल प्रलय–जल के द्वारा विनाश ।
जल बालक–विन्ध्य पहाड़ ।
जलाञ्जलि–पितरों को जल–तर्पण देना ।
जलेयु–महाराजा पुरु के वंशज रौद्राश्व और घृताची नामक अपसरा के एक पुत्र ।
जवानिल–तेज हवा, आंधी ।
जह्नु–मगध देश के राजा पुण्यवान के पुत्र ।
जह्नु–पूरु वंशज सुहोत्र का पुत्र, एक महर्षि जिन्होंने गंगा को अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था। जब राजा भगीरथ की प्रार्थना से गंगा पृथ्वी में बहने लगी अतुल वेग और शक्ति से जाती हुई उसने जह्नु के आश्रम को भी आप्लावित किया। इससे कुपित होकर मुनि गंगा को पी गये। देवता ऋषियों ने और भगीरथ ने उनके क्रोध को शान्त कर दिया। जह्नु ने प्रसन्न होकर गंगा को अपने कानों के द्वारा बाहर निकाला। इसलिए गंगा जह्नु की पुत्री समझी गई और उसके जह्नवी, जह्नुकन्या, जह्नुनन्दिनी, जह्नुसुता आदि नाम पड़े।
जाङ्गल–(१) प्राचीन भारत का एक जनपद (२) देहाती (३) चकोर (४) हरिण का मांस ।
जाजलि–एक तपोनिष्ठ ब्राह्मण जिसने अपनी तपश्चर्या से अमानुषिक शक्ति प्राप्त की। अपने समान कोई नहीं है ऐसा उसका विश्वास था और वह घमण्डी हो गया।

जातकर्म–शिशु के जन्म पर किया जानेवाला संस्कार ।
जातरूपशिला–एक पर्वत । सीता की खोज में वानर सेना यहाँ आई थी ।
जातवेद–अग्नि का विशेषण ।
जाति–(१) जन्म के अनुसार अस्तित्व (२) वर्ग, श्रेणी (३) गोत्र (४) हिन्दुओं की प्राथमिक चार जातियां हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र (५) छन्दों की एक श्रेणी ।
जाति संकर–दो विभिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष का संयोग ।
जातिस्मर–(१) जिसको अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त याद हो। (२) एक तीर्थ ।
जातिस्मर तीर्थ–एक पुण्य तीर्थ ।
जाति हीन–नीच जाति का ।
जातुकर्ण्य–दे: अग्निवेश्य ।
जातुधान—राक्षस, पिशाच ।
जानकी–जनक महाराजा की पुत्री सीता, श्री राम की पत्नी ।
जानपद–(१) देहाती, ग्रामीण (२) देश ।
जानुजंघ–एक राजा ।
जाप–जप, प्रार्थना ।
जापक–एक ब्राह्मण जो हमेशा गायत्री मन्त्र जपा करते थे। मन्त्रोच्चारण में गलती होने से नरक भोगना पड़ा, लेकिन मन्त्र की देवी सावित्री की कृपा से स्वर्ग मिला ।
जाबाला–मुनि सत्यकाम की माँ ।
जाबाली–विश्वामित्र के पुत्र एक प्रसिद्ध मुनि, जिन्होंने श्रीराम को भार स्वीकार करने का उपदेश दिया था ।
जाम्बवती–ऋक्षराज जाम्बवान की पुत्री, श्रीकृष्ण की पत्नी ।
जाम्बवान–ब्रह्मा के पुत्र, ऋक्षराज, सुग्रीव के मन्त्रियों में से एक। कहा जाता है कि यह चिरञ्जीवी हैं। भगवान विष्णु ने वामनावतार में बलि से माँगे हुए तीन पद नापने के

लिए जब त्रिविक्रम का रूप धारण किया था, तब भगवान की महिमा की घोषणा करते हुए जाम्बवान ने उनकी इक्कीस बार परिक्रमा की। द्वापर युग में सत्राजित का भाई प्रसेनजित् स्यमन्तक मणि पहन कर शिकार करने गया। जंगल में शेर से मारा गया। शेर जब मणि लेकर जा रहा था तब जाम्बवान से मुठभेड़ हुई जिसमें जाम्बवान ने शेर को मार कर मणि लाकर अपने पुत्र को खेलने के लिये दिया। लोकापवाद को दूर करने के लिये श्रीकृष्ण मणि की खोज करते हुए जाम्बवान की गुफा में आये और वहाँ उनके साथ इक्कीस दिन तक घोर युद्ध हुआ। अन्त में जाम्बवान ने अपने स्वामी श्रीराम को श्रीकृष्ण के रूप में पहचान कर स्तुति की और मणि और अपनी पुत्री जाम्बवती को श्रीकृष्ण को सौंप दिया। ब्रह्मा के स्वेद जल से इसका जन्म हुआ इसलिए अम्बुजात नाम भी है।

जाम्बूनद—(१) सोने का आभूषण (२) सुमेरु पर्वत के पास एक पर्वत (३) पूरुवंश के राजा जनमेजय का पुत्र (४) जम्बूद्वीप की जम्बूनदी से सोना पैदा होता है। इस सोने का नाम है जाम्बूनद।

जाया—भार्या, पत्नी।

जारुधि—मेरु पर्वत को घेर कर स्थित एक पर्वत।

जारुथी—एक प्राचीन नगर।

जालकमालिनी—अवगुण्ठित स्त्री।

जालन्धरपीठ—श्री पार्वती का एक पीठ।

जाह्नवी—गंगा नदी का एक नाम (दे: जह्नु)।

जिगीषा—जीतने की इच्छा, चेष्टा।

जिगीषु—जीतने का इच्छुक।

जिज्ञासा—जानने की इच्छा।

जिज्ञासु—(१) जानने का इच्छुक (२) मुमुक्षु भगवान के भक्त चार प्रकार के हैं (दे: आर्त)। जिज्ञासु भक्त वह है जो धन, स्त्री, पुत्र, गृह आदि वस्तुओं की ओर रोग-संकटादि की परवाह न करके एक मात्र परमात्मा को तत्व से जानने की इच्छा से ही एकनिष्ठ होकर भगवान की भक्ति करता है। जिज्ञासु भक्तों में परीक्षित आदि अनेक भक्त हैं, लेकिन सब से अन्तिम भक्त उद्धव हैं।

जितवती—उशीनर राजा की पुत्री।

जितामित्र—विष्णु का नाम जिसने अपने शत्रुओं को जीता है।

जितात्मा—शरीर, इन्द्रिय और मन को जिसने पूर्ण रूप से अपने वश में कर लिया है उसे जितात्मा कहते हैं। ऐसा पुरुष सदा सर्वदा सभी अवस्थाओं में प्रशान्त या निर्विकार रहता है।

जितारि--(१) जिसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लिया है, भगवान विष्णु का नाम (२) पुरुवंश के एक राजा।

जिन—जैन मत के स्थापक महावीर।

जिनसेन--जैन हरिवंश नामक ग्रन्थ का रचयिता।

जिष्णु--(१) विजेता (२) सूर्य (३) इन्द्र (४) विष्णु (५) अर्जुन।

जीमूत--(१) बादल (२) इन्द्र का विशेषण (३) एक मल्ल जो विराट राजधानी में आया था और मल्लयुद्ध में भीमसेन से मारा गया। (४) एक ऋषि (५) वरुण ने वसुमना नामक राजा को जीमूत नामक एक अश्व दिया था (६) यदुवंश के व्योम के पुत्र, इनके पुत्र विकृति थे।

जीमतकूट—एक पर्वत।

जीमूतकेतु--(१) शिव जी का नाम (२) एक विद्याधर।

जीमूतवाह—(१) इन्द्र (२) नागानन्द नाटक का नायक, विद्याधरों का राजा, जीमूतकेतु का पुत्र था। अपनी दानशीलता और धर्माचरण के कारण प्रख्यात था। जब उसके

बंधु-बान्धवों ने उसके पिता पर आक्रमण किया, पुत्र के कहने पर पिता राज्य छोड़कर मलय-पर्वत पर चला गया । जीमूतवाह का मित्र था सिद्धों के राजा विश्वासु का पुत्र मित्रावसु और पत्नी मित्रावसु की बहन मलयवती थी । एक बार जीमूतवाह ने उस सांप का स्थान ग्रहण किया जिसे समझौते के अनुसार गरुड़ का ग्रास बनना था । गरुड़ की की चोंच की मार से खून बहने पर भी वह खुश रहा । यह देख कर गरुड़ को शक हुआ और सांप की जगह जीमूतवाह को देख कर उसकी दयालुता पर खुश होकर वर मांगने को कहा । जीमूतवाह ने यह वर मांगा कि गरुड़ आगे किसी सांप को न मारें और जो मारे गये हैं वे पुनर्जीवित हों । गरुड़ ने यह वरदान दिया ।

जीर्णोद्धार—पुराने को नया बनाना, विशेष कर किसी मन्दिर या धार्मिक स्थान की मरम्मत करना ।

जीव—(१) जीव (२) जीवधारी प्राणी (३) श्वास, प्राण (४) एक मरुत् का नाम ।

जीवन मुक्त—जिसने परमात्मा के सत्यज्ञान से पवित्र हो गया हो और पुनर्जन्म से मुक्ति पा ली हो, इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त किया हो ।

जीवल—अयोध्या नरेश ऋतुपर्ण का सारथी । नल जब बाहुक के नाम से राजा ऋतुपर्ण के पास रहते थे जीवल उनका मित्र बन गया ।

जीवात्मा—सूक्ष्म परब्रह्म जो सबके हृदय कमल में स्थित है ।

जीविका—जीने का साधन ।

जुहु—(१) ययाति के वंश का एक राजा (२) अग्नि में घी की आहुति देने के लिये काठ का बना अर्ध-चन्द्रकार चम्मच, स्रुवा ।

जैगीषव्य—एक ऋषि जिनसे भरत वंश के राजा विष्वकसेन ने अध्यात्म विद्या सीखी थी ।

जैत्र—(१) विजेता (२) विजय (३) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (४) एक रथ (५) धृष्टद्युम्न का शंख ।

जैत्र-यात्रा—दिक्विजय के लिए रथ पर चढ़ कर जो यात्रा की जाती है उसे जैत्र रथ कहते हैं ।

जैन—जैन मतावलम्बी जिनका सिद्धांत है कि मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा न करना ।

जैमिनी—प्रख्यात ऋषि, दार्शनिक और अपार पण्डित । इन्होंने महाभारत का खूब प्रचार किया । दर्शन सम्प्रदाय में 'पूर्व मीमांसा' लिखी ।

जोटिङ्ग—शिव ।

ज्ञ—बुद्धिमान, जाननेवाला ।

ज्ञप्ति—समझ, बुद्धि ।

ज्ञाति—एक ही गोत्र के व्यक्ति ।

ज्ञानचक्षु—बुद्धि की आंख ।

ज्ञानतत्व—वास्तविक तत्व, परमात्मा का ज्ञान ।

ज्ञानदा—सरस्वती का विशेषण ।

ज्ञाननिष्ठ—परमत्मा का ज्ञान प्राप्त करने पर तुला हुआ ।

ज्ञानयोग—सच्चा आत्मज्ञान या परमात्मानुभूति प्राप्त करने का एक मार्ग ।

ज्या—(१) धनुष की डोरी (२) पृथ्वी ।

ज्यामघ—यदुवंश के एक राजा । इनका पत्नी थी शैव्या जिससे राजा बहुत डरते थे । अनेक काल बीतने पर भी निस्सन्तान रहे । पुत्र प्राप्ति के लिये दूसरा विवाह करना चाहते थे, लेकिन पत्नी के भय से न कर सके । एक बार युद्ध में विजयी हो कर लौटते समय शत्रुराजा की कन्या को अपने साथ ले आया । राजा ने उसको अपनी पत्नी बनाना चाहा । लेकिन शैव्या ने उसके बारे में राजा से पूछा तब उससे डर कर राजा ने कहा कि तुम्हारी

पुत्रवधू होगी। राजा का पुत्र जन्मा जिसके साथ उस राजकन्या का विवाह हुआ।

ज्येष्ठ—(१) आयु में सबसे बड़ा (२) श्रेष्टतम प्रमुख (३) एक महीना (४) वेद का पारंगत एक मुनि।

ज्येष्ट पुष्कर—एक पुण्य तीर्थ।

ज्येष्ठा—(१) सबसे बड़ी बहन (२)एक नक्षत्र (३) अमंगल का देवता।

ज्योति—(१) शोभा (२) कार्तिकेय का एक पार्षद।

ज्योतिर्धाम—तामस मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक।

ज्योतिर्मय—ज्योति से भरा हुआ।

ज्योतिश्चक्र—ग्रहों का भ्रमण मार्ग। सूर्यादि ग्रह, अश्विन आदि नक्षत्र, मेष आदि राशि इनके आधाररूप आकाश में वृत्ताकार रूप से स्थित एक अदृश्य वस्तु।

ज्योतिष—(१) गणित (२) छः वेदांगों में से एक। नक्षत्रों और ग्रहों के स्थान की गणना करके पंचाग, मनुष्यों के कर्मफल, भविष्य आदि का चिन्तन इस शास्त्र के द्वारा किया जाता है।

ज्योतिष्मती—रात्री।

ज्योतिष्मान—सूर्य।

ज्योत्स्ना—चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी।

ज्यौ—बृहस्पति नक्षत्र।

ज्वालामालिनिका—(१) एक देवी(२) नित्या नाम से चतुर्दशी तिथि।

ज्वालामुखी—आग निकलने का स्थान।

झ

झञ्झारिणी—गंगा नदी।

झष—(१) मछली (२) मीन राशि (३) मरुस्थल।

झषध्वज—कामदेव।

झिल्लि—एक यादव।

झिल्लीक—दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश।

ट

टङ्कार—धनुष की डोर खींचने की ध्वनि।

टिट्टिम—एक असुर।

टिट्टिभ सर—वाल्मीकि के आश्रम के पास एक तीर्थ।

टीका—(१) भाष्य, व्याख्या (२) विवाह के पहले की एक विधि।

ड

डमरी—देवी की एक शक्ति।

डमरु—(१) शिव का वाद्य (२) एक प्रकार का बाजा, डुगडुगी। इस वाद्य यन्त्र को प्राय. कापालिक साधु बजाया करते हैं।

डाकिनी—पिशाचिनी, भूतनी।

डाकिनीश्वरी—दुर्गा का नाम, डाकिनी के रक्तवर्णा, त्रिलोचना आदि अनेक नाम हैं।

डामर—भयावह, दंगा।

डिम्भक—(१) एक छोटा बच्चा (२) एक राजकुमार जो बलराम से मारा गया।

डुण्डुभ—साँप की एक जाति जिनमें जहर नहीं होता।

ढ

ढक्का–बड़ा ढोल ।

ढाल–म्यान ।

ढुण्ढि–गणश की उपाधि।

ढोल–बडा ढोल, मृदंग ।

त

तटिलप्रभा–(१) स्कन्द की एक परिचारिका (२) बिजली ।

तटिल्लता–बिजली की कौंध जिसमें लहरें हों ।

तण्डुल–कूटने, छड़ने और पछोरने के बाद प्राप्त अन्न ।

तत्व–(१) वास्तविक स्थिति (२) तथ्य (३) मूल तत्व या प्रकृति ।

तत्वज्ञ–दार्शनिक, ब्रह्मज्ञान का वेत्ता ।

तत्वज्ञान–दार्शनिक ज्ञान, ब्रह्मज्ञान ।

तथागत–बुद्धदेव ।

तथ्य–यथार्थ, वास्तविकता ।

तत्पुरुष– मूल पुरुष, परमात्मा ।

तनय–(१) पुत्र (२) पुरूरवा के वंशज राजा कुश के चार पुत्रों में से एक ।

तनु–(१)–एक प्राचीन महर्षि (२) पतला (३) सुकुमार ।

तन्तु–(१) विश्वामित्र का एक ब्रह्मवादी पुत्र (२) डोर, रस्सी (३) सन्तान (४) परमात्मा ।

तन्तुलिकाश्रम–एक प्राचीन पुण्याश्रम ।

तन्त्र–(१) नियम, वाद, शास्त्र (२) कर्मकाण्ड पद्धति (३) जादू ।

तन्त्रवार्तिक–कुमारिल भट्ट का विरचित एक मीमांसा ग्रन्थ ।

तन्त्रसमुच्चय–केरल के चेन्नास नम्बूतिरि का एक ग्रन्थ जिसमें क्षेत्र निर्माण, देव प्रतिष्ठा, कलश आदि के बारे में बताया गया है ।

तन्त्रिपाल–अज्ञातवास के समय विराट देश में सहदेव इस नाम से रहते थे ।

तन्त्री–(१) धनुष की डोरी (१) वीणा की तार ।

तन्मय–(१) तद्रूप (२) तल्लीन ।

तन्मात्र–सूक्ष्म तथा मूल तत्व, शब्द, स्पर्श, रूप, रस गंन्ध ये पाँच तन्मात्राएँ हैं ।

तप–(१) तपस्या करना (२) एक उज्ज्वल देव (३) सूर्य (४) ग्रीष्म ऋतु (५) आत्मदमन ।

तपती–(१) विन्ध्य पर्वत से निकल कर बहने वाली एक नदी (२) सूर्य की पुत्री चन्द्रवंश के राजा ऋक्ष के पुत्र उत्पन्न हुए ।

तपन–(१) सूर्य (२) एक नरक का नाम (३) शिव का विशेषण ।

तपनात्मज–यम, कर्ण, सुग्रीव ।

तपलोक–चौदह लोकों में से एक, विराट पुरुष के भाल प्रदेश को तपलोक कहते हैं ।

तपश्चर्या–कठोर साधना ।

तपस्वी–(१) चाक्षुष मनु का एक पुत्र (२) बारहवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ।

तपस्थली–(१) धार्मिक कठोर साधना की भूमि (२) काशी ।

तपोधन–तपस्वी ।

तपोनिधि–संयासी ।

तपोबल–कड़ी साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त शक्ति ।

तपोमूर्ति–बारहवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ।

तपोराशि–संयासी ।

तपोवन–तपोभूमि, पवित्र वन जहाँ तपस्वी कठोर साधना और तपस्या करते हैं ।

तपोवृद्ध–तपस्या करते-करते वृद्ध हो गया हो।

तपस्या--धार्मिक कड़ी साधना ।

तपस्वी--तपोनिष्ठ ।

तप्त--(१) गर्म (२) दुःखी, पीड़ित ।

तप्तकुण्ड--बदरीनाथ का एक कुण्ड जिसका पानी हमेशा बहुत गरम रहता है और जिसमें से भाप निकलती रहती है। यह एक पुण्य तीर्थ है जिसमें स्नान करने से अतीव पुण्य मिलता है। इसमे अग्नि रहती है और स्नान करने से शरीर और मन पवित्र हो जाता है।

तप्तकुम्भ--२८ नरकों में से एक ।

तप्तमूर्ति–एक नरक ।

तम--(१) अन्धकार (२) राहु का विशेषण ।

तमघ्न--सूर्य, चाँद, विष्णु, शिव ।

तमस--(१) अन्धकार (२) एक नरक (३) अज्ञान (४) प्रकृति के तीन गुणों (सत्व, रजस और तमस्) में से एक ।

तमसा–एक पुण्य नदी। सुप्रसिद्ध वाल्मीकि का आश्रम इस नदी के किनारे पर था । यहाँ बैठकर आदि कवि ने रामायण की रचना की।

तमाल--(१) एक वृक्ष (इसकी छाल काली होती है) (२) तलवार ।

तमी–काली अंधेरी रात ।

तमिस्त्र--काला, अन्धकार ।

तमोगुण–प्रकृति के तीन गुणों में से एक ।

तमोपहा–अन्धकार को दूर करने वाली देवी।

तरणि--सूर्य ।

तरल–(१) एक प्राचीन जनपद (२) हिलता हुआ, चंचल (३) द्रवरूप ।

तरुणक--एक सांप ।

तर्क–(१) कल्पना करना (२) विचार विमर्श करना (३) एक शास्त्र ।

तर्जनी--अंगूठे के पासवाली अंगुली ।

तर्पण--(१) तृप्त करना (२) पितृयज्ञ, दिवंगत पूर्वजों के निमित्त किया जाता है ।

तलातल–सात अधोलोकों में से एक । यहाँ दानवेंद्र मय शिव के प्रसाद से मायावियों के आचार्य रूप रहते हैं। शिव की कृपा से सुदर्शन चक्र से उसका कोई भय नहीं है।

तक्ष–यदुवंश के राजकुमार वृक और दुर्वाक्षी का पुत्र ।

तक्षक–(१) कुश वंश के राजा प्रसेनजित के पुत्र, इनके पुत्र वृहद्बल थे । (२) सूत्रधार (३) पाताललोक के मुख्य नागों में से एक कश्यप और कद्रू का पुत्र। महाराजा परीक्षित तक्षक के काटने पर मरे थे । (४) लक्ष्मण और उर्मिला के एक पुत्र ।

तक्षशीला–भारत के उत्तर पश्चिम पर स्थित पुराण प्रसिद्ध एक देश। किसी समय यहाँ एक विश्रुत विश्वविद्यालय था ।

ताटङ्क–एक कर्णाभरण ।

ताटका–एक राक्षसी, सुकेतु की पुत्री, मुन्द की पत्नी, मरीच की माँ। गंगा के किनारे एक वन में रहती थी जिसका नाम ताटक वन था, विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा को जाते समय श्रीराम और लक्ष्मण के ताटक वन में प्रवेश करने पर ताटका क्रुद्ध हुई । घोर युद्ध हुआ जिसमें श्रीराम ने ताटका को मारा ।

ताड़पत्र–ताल वृक्ष का पत्र, प्राचीन काल में ताड़ पत्रों में लिखा जाता था ।

ताण्डव–नाच, नृत्य, विशेष कर शिवजी का प्रचण्ड नृत्य ।

ताण्डव मूर्ति–(१) शिव की नृत्य करती हुई मूर्ति (२) तमिष देश के एक ब्राह्मण कवि जिन्होंने "कैवल्य नवनीत" नामक अद्वैत तत्व-पूर्ण एक ग्रंथ लिखा ।

तात–(१) पिता (२) अपनी आयु से छोटों के प्रति प्रेम को प्रकट करने के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है ।

तादात्म्य–प्रकृति और पुरुष की अभिन्नता ।
तान्त्रिक–तन्त्र सिद्धान्तों का अनुयायी ।
तापत्रय–तीन प्रकार का सन्ताप जो मनुष्य को इस संसार में सहन करना पड़ता है जैसे आध्यात्मिक, आधिदैविक, और आधिभौतिक ।
तापद्रुम–इंगुदी वृक्ष ।
तापन–(१) सूर्य (२) ग्रीष्म ऋतु ।
तापस–संन्यासी, भक्त ।
तापसारण्य–एक पुण्य स्थल जहाँ ज्यादा तपस्वी लोग रहते हैं ।
तापी–(१) एक नदी जो सूरत के निकट समुद्र में गिरती है । (२) यमुना नदी ।
तामरस–(१) सोना (२) लाल कमल ।
तामस–(१)अन्धकार (२) दुर्जन (३) चौथे मनु ।
तामसिक–(१) अन्धकारयुक्त (२) अज्ञानी ।
तामिस्र–एक नरक ।
ताम्बूल–पान ।
ताम्र–मुरासुर का एक पुत्र जो महिषासुर का मन्त्री था ।
ताम्रकर्णी–दक्षिण भारत की एक पुण्य नदी ।
ताम्रपल्लव–अशोक वृक्ष ।
ताम्रलिप्त–एक देश का नाम ।
ताम्रवृक्ष–चन्दन वृक्ष एक भेद ।
ताम्रवती–एक पुण्य नदी ।
ताम्रोष्ट–एक यक्ष ।
तारक–(१) रक्षा करने वाला (२) श्रीराम नामक एक मंत्र । शिव के वर प्रसाद से इस मंत्र का उच्चारण कर जो काशी में मरता है उसको मुक्ति मिलती है । ऐसा विश्वास है कि काशी में मरनेवाले के कान में शिव इस तारक मंत्र का उच्चारण करते हैं ।
(३) श्रीराम का अनुचर एक वानर ।
(४)वज्रांग और वरांगी का पुत्र एक राक्षस ने तपस्या कर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था कि शिवपुत्र को छोड़कर कोई दूसरा उसे न मारेगा । यह देवताओं को बहुत सताने लगा । सती के देहत्याग के बाद शिव सर्वसंग परित्यागी होकर हिमालय पर तपस्या कर रहे थे । देवताओं की प्रार्थना पर भक्त पराधीन शिव ने हिमालय की पुत्री पार्वती से विवाह किया और स्कन्द या कार्तिकेय का जन्म हुआ । कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया । (दे: स्कन्द) ।
तारका–(१) तारा (२) उल्का ।
तारकाक्ष–तारकासुर का पुत्र, त्रिपुर दहन में शिव जी ने इसको मारा ।
तारकारि–सुब्रह्मण्य ।
तारा–(१) तारा (२) वानर राज वालि की पत्नी, अंगद की माँ (३) देवगुरु बृहस्पति की पत्नी । एक बार चन्द्र इसको उठा ले गया और उसने तारा को वापस नहीं दिया । देवतागण युद्ध के लिए तैयार हो गये । ब्रह्मा के कहने पर तारा बृहस्पति के पास भेजी गई । चन्द्र से उसका एक पुत्र हुआ बुध जिससे चन्द्रवंश की उत्पत्ति हुई । (४) आँख की पुतली ।
तारापति–चन्द्र ।
तारापथ–नक्षत्र मार्ग ।
तारामण्डल–(१)नक्षत्र लोक(२)राशिचक्र ।
तारामृग–मृगशिरा नामक नक्षत्र ।
तार्किक–दार्शनिक ।
तार्क्ष्य–(१) गरुड़ की उपाधि (२) गरुड़ का बड़ा भाई अरुण (३) साँप (४) शिव का नाम ।
ताल–(१) ताड़ का वृक्ष(२) संगीत में नियत मात्राओं पर ताली बजाना (३) एक वाद्य यन्त्र जो काँसे का बना है ।
तालकेतु–एक असुर जिसको महेन्द्र पर्वत पर श्रीकृष्ण ने मारा था ।
तालजंघ–कार्तवीर्यार्जुन का पौत्र ।
तालध्वज–बलराम का विशेषण ।

ताल पत्र–ताड़पत्र जिस पर लिखा जाता है ।

ताल वन–(१) वृन्दावन के पास ताल वृक्षों का एक समूह जहाँ श्रीकृष्ण और बलराम गोपकुमारों के साथ एक बार खेलने गये थे। वहाँ बलराम ने धेनुका को पछाड़ कर मारा जिसके फलस्वरूप गोपबालक चिरकाल से प्रतीक्षित ताल फल खा सके । (२) दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश ।

तिग्म–प्रचण्ड, गरम ।

तिग्मांशु–सूर्य ।

तितिक्षा–(१) दक्ष प्रजापति की पुत्री और धर्म की पत्नी (२) सहिष्णुता, त्याग ।

तितिक्षु–(१) सहनशील (२) तुर्वसु के वंशज (पुरु के पुत्र) उशीनर का पुत्र (३) पुरु महाराजा के पुत्र अनु के वंशज महामना का पुत्र ।

तित्तिरि–(१) तीतर (२) एक ऋषि (३) एक प्रकार का अश्व ।

तिथि–(१) दिवस (२) चन्द्र पक्ष में प्रथमा, द्वितीया आदि चौदह तिथियाँ हैं ।

तिमि–-(१) समुद्र (२) एक बड़ी मछली (३) सोमवंश के राजा दूर्व के पुत्र, इनके पुत्र बृहद्रथ थे ।

तिमिध्वज–एक असुर जिसने देवलोक पर आक्रमण किया था । इन्द्र की सहायता के लिये अयोध्या के महाराजा दशरथ स्वर्ग गये और इन्द्र-शत्रुओं को पराजित किया ।

तिमिर–अन्धकार ।

तिमिररिपु–सूर्य ।

तिरस्करिणी–(१)परदा(२)एक विद्या जिससे अन्तर्धान हो सकता है ।

तिरस्कृत--अपमानित ।

तिरुक्कुरल–तमिष साहित्य का अत्यन्त विशिष्ट एक ग्रंथ । तमिष के आदि कवि तिरुवल्लुवर की रचना है । एक आध्यात्मिक ग्रंथ है।

तिरुज्ञानसंबन्धर–दक्षिण के चार शैव मताचार्यो में से एक शिव भक्त, कवि और पण्डित थे । इन्होंने भक्तिपूर्ण अनेक गीत रचे हैं ।

तिरुनावाया–केरल में 'भारतपुषा' के तीर पर एक पुण्य स्थान ।

तिरुमङ्कयाषवार–विष्णु भक्त बारह आषवारों में से एक ।

तिरुवनन्तपुर–केरल की राजधानी । इसका नाम प्राचीन काल में 'अनन्तङ्काट '(अनन्त वन) था । यहाँ श्री पद्मनाभ स्वामी क्षेत्र में भगवान विष्णु की अनन्तशयन प्रतिष्ठा है इस प्रतिष्ठा के सामने एक बहुत बड़ा मण्डप है जो एक ही पत्थर का बना है और यह क्षेत्र प्रसिद्ध है ।

तिरुवल्लुवर–'तिरुक्कुरल' के रचयिता । इनका जन्म मद्रास में हुआ था । ये जाति में जुलाहा थे । इनकी पत्नी वासु की बड़ी पतिव्रता थी ।

तिरुवातिरा–आर्द्रा नक्षत्र जिसे केरल में तिरुवातिरा कहते हैं । केरल की स्त्रियाँ और बालिकायें मार्ग-शीर्ष मास के आर्द्रा नक्षत्र के दिन उपवास मनाती हैं । जिसको तिरुवातिरा कहते हैं । कहा जाता है कि गोपियाँ श्रीकृष्ण को पतिरूप में प्राप्त करने के लिये कात्यायिनी पूजा करती थीं और कामदहन के बाद संतप्त रती को भर्तृलाभ का वर श्री पार्वती ने इसी दिन दिया था । दीर्घसुमंगलि होने के लिये स्त्रियाँ इस दिन व्रत रखती हैं और भर्तृलाभ के लिये कुमारियाँ भी व्रत रखती हैं । इसके दस दिन पहले से प्रातः स्नान, ईश्वर पूजा आदि नियम से की जाती है ।

तिर्यक्योनि–पशु, पक्षी की सृष्टि ।

तिलक–(१) चन्दन या उबटन से किया गया चिह्न (२) विवाह निश्चित करने के लिये की जाने वाली एक विधि ।

तिलपर्ण–चन्दन की लकड़ी ।

तिलोत्तमा–कश्यप ऋषि और दक्षपुत्री प्राधा की पुत्री एक अप्सरा। कहा जाता है कि सुन्दोपसुन्द नाम के दो असुरों को मारने के लिये ब्रह्मा के आदेश पर विश्वकर्मा ने सब रत्नों और सुन्दर वस्तुओं का तिलांश ले कर तिलोत्तमा की सृष्टि की थी, प्राधा के द्वारा उसका जन्म हुआ। सुन्द और उपसुन्द को वर मिला था कि वे ही एक दूसरे को मार सकते हैं। दोनों भाई थे और वर प्रसाद से मस्त देवों और मनुष्यों को सताने लगे। तिलोत्तमा के सौन्दर्य पर मोहित होकर वे आपस में लड़े और एक दूसरे से मारे गये।

तिलोदक–तिल और जल, दोनों को मिलाकर पितरों का तर्पण किया जाता है।

तिलोदन–तिल और दूध से मिला भात।

तीर्थ–पुण्य स्थान। प्राचीन काल से भारतीयों का विश्वास है कि श्रद्धा-भक्ति से तीर्थों का दर्शन, स्नान, वास आदि करने से पाप कटते हैं और पुण्य मिलता है। भारतवर्ष के कोने कोने में तीर्थ हैं।

तीर्थकोटि–एक पुण्य तीर्थ।

तीर्थङ्कर–जैन धर्मशास्त्र के उपदेश। ये कुल चौबीस हैं।

तीर्थयात्रा–किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ जाना।

तीर्थराज–प्रयाग।

तीर्थसेवी–तीर्थों में वास करने वाला।

तुंगभद्रा–दक्षिण भारत की एक पुण्य नदी।

तुंगवेणा–एक प्राचीन नदी।

तुंगी–रात।

तुंगीपति–चन्द्रमा।

तुङ्कराम–एक विष्णु भक्त कवि, गायक, पूना के पास जन्म हुआ।

तुञ्जत् एपुत्तश्शन्–आधुनिक मलयालम भाषा के पिता। ये भक्त कवि थे। इन्होंने द्रविण पद दोनों पद और संस्कृत पद दोनों मिलाकर कवितायें लिखी है। इनकी मुख्य कृतियाँ हैं अध्यात्मरामाय किलिप्पाट्, महाभारतम् किलिप्पाट्, महाभागवतम् किलिप्पाट्, हरि-नाम-कीर्तन आदि।

तुम्बुरु–(१) एक मुनि (२) गन्धर्वों का प्रमुख गायक। कश्यप और प्राधा का पुत्र था और बड़ा विष्णु भक्त था।

तुरीय–आत्मा की चौथी अवस्था जिसमें वह ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के साथ तादाकार हो जाती है। आत्मा और परमात्मा एक हो जाते हैं।

तुर्य–तुरीय अवस्था।

तुर्वसु–महाराजा ययाति और देवयानी के एक पुत्र, इनके पुत्र वलि थे।

तुलसी–हिन्दुओं का सबसे पवित्र पौधा जिसके पत्ते भगवान् विष्णु को अत्यंत प्रिय हैं और उनकी पूजा में विशेष स्थान रखते हैं। कहा जाता है कि श्री लक्ष्मी देवी का ही अवतार है तुलसी। तुलसी के पत्ते, फूल, जड़, छाल, पूरा पौधा ही अति पावन हैं। तुलसी की लकड़ी से दाह संस्कार करने से उस आत्मा की मुक्ति होती है, ऐसा विश्वास है। इसके पत्ते का रस दवा का काम देता है।

तुलसीदास–प्रसिद्ध कवि और राम भक्त जो 'रामचरितमानस' लिखकर अमर हो गये। इनका जन्म उत्तर भारत में रामपुर में हुआ। उत्तर भारत में प्रत्येक हिन्दू घर में रामायण का पारायण होता है।

तुलसी विवाह–कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को बालकृष्ण की मूर्ति बनाकर उसके साथ तुलसी का विवाह मनाया जाता है।

तुल्लल–केरल की एक दृश्य कला जिसके प्रणेता थे कुञ्जन नाम्बियार। इसमें केरल की एक उपजाति नम्बियार का कोई विद्वान व्यक्ति वेषभूषा पहन कर इशारे के साथ गाता गाकर नाचता है। इसमें साथ देने के लिए

करताल, ढोल, आदि बजानेवाले होते हैं और ये भी गाना दुहराते हैं । पुराण प्रसिद्ध कविताओं को गीत रूप में गाकर नाच होता है ।

तुलादान–शरीर के बराबर तौल कर सोने या चाँदी का किसी ब्राह्मण के लिए दान देना ।

तुलाधार–(१) काशी के एक वैश्य व्यापारी थे, महान तपस्वी और धर्मात्मा थे । न्याय और सत्य का आश्रय लेकर क्रय-विक्रय रूप व्यापार करते थे । जाजलि महर्षि को इन्होंने धर्मोपदेश दिया था ।

तुलाभार–केरल के क्षेत्रों में की जाने वाली एक मनौती । कोई संकट आने पर, किसी कार्य की सिद्धि के लिए, भगवान के अनुग्रह के लिए यह मनौती की जाती है । अपनी अवस्था के अनुसार क्षेत्र में भगवान जी प्रतिष्ठा के सामने अपने वजन के बराबर तिल, गुण, चन्दन, केला, चूड़ा, नारियल आदि कोई चीज तौलकर मन्दिर में दी जाती है । तराजू के एक पलड़े पर जिसका तुलाभार होता है वह बैठता है, दूसरे पर चीज रखी जाती है ।

तुल्यदर्शी—समदर्शी, सब को सम दृष्टि से देखने वाले, भगवनान की उपाधि ।

तुषार–(१) शीतल, (२) ओस, वर्फ (३) एक प्रकार का कपूर, (४) प्राचीन भारत का एक जन स्थान ।

तुषार गिरि–हिमालय पर्वत ।

तुषार किरण–चन्द्रमा ।

तुषित–(१) उपदेवताओं का समूह जो गिनती में ३७ है । (२) दूसरे मन्वन्तर (स्वारोचिष) के देवों में से एक (३) मारीचि पुत्र पूर्णिमा और विरजा के बारह पुत्र जो स्वायम्भुव मन्वन्तर में तुषित नाम के देव बने ।

तुष्टि–(१) सन्तोष, तृप्ति (२) दक्ष की पुत्री और धर्म की पत्नी ।

तुष्टिमान–मथुरा के राजा उग्रसेन का एक पुत्र ।

तुहिन–(१) हिम, (२) शीतल, (३) चाँदनी ।

तुहिन किरण–चन्द्रमा ।

तृणप–(१) एक राजर्षि । (२) एक गन्धर्व ।

तृणविन्दु–एक महर्षि जिन्होंने ऋषितीर्थ में तपस्या की थी । (२) काम्यक वन का एक सरोवर (३) वैवस्वत मनु के वंशज विन्दु पुत्र । अलम्बुषा नाम की अपसरा इनकी पत्नी थी और इनके अनेक पुत्र और इडविड़ा नाम की एक पुत्री हुई ।

तृणावर्त–कंस का अनुयायी एक असुर । वह एक बार चक्रवात बन कर जोर से चल कर गोकुल में आया । बालक कृष्ण को मारने के लिये कंस ने उसे भेजा था । श्रीकृष्ण को उठा कर वह ऊपर ले गया । श्रीकृष्ण गरिमा सिद्धि से बहुत भारी हो गये और असुर ने अपने को उन्हें वहन करने में असमथ पाया । श्रीकृष्ण ने उसका गला घोंट कर मारा । यह ताराकासुर का पुत्र था ।

तृतीया–चन्द्र पक्ष का तीसरा दिन, तीज (२) एक नदी ।

तेज–(१) प्रकाश (२) शारीरिक सौन्दर्य (३) आत्मबल (४) वेग (५) अग्नि शिखा (६) वीर्य ।

तेजस्वती–उज्जैन की राजकुमारी ।

तेजस्वी–(१) पांच इन्द्रों में से एक (२)प्रभाव शील ।

तेजेयु–पुरु का पौत्र ।

तेजोवती–(१) देवी का नाम, आदित्य, चन्द्र आदि तेजाराशियों की आधारभूता देवी (२) महामेरु पर्वत पर स्थित इन्द्र की राजधानी ।

तेवारम्—तिरज्ञान संबन्धर अप्पर आदि तमिष के भक्त कवियों की शिव स्तुति ।

तैजस–(१) कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थल (२) उज्ज्वल ।

तैत्तिरि—कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक महर्षि ।

तैत्तिरीयोपनिषद–एक प्रधान उपनिषद ।

तैलद्रोण–तेल से भरी नाव । प्राचीन काल में मृत्यु के बाद कुछ दिन के लिये मृत देह को रखना हो तो एक नौका में तेल डालकर उस में मृत देह रखा जाता था । जब सत्राजित की हत्या हुई तब श्रीकृष्ण हस्तिनापुर में थे। सत्राजित की पुत्री सत्यभामा दुखी होकर पिता के मृतदेह को तैलद्रोण में रखकर पति के पास ले गई ।

तोटकाचार्य–श्री शंकराचार्य के एक शिष्य । इनका नाम पहले आनन्द गिरि था । इन्होंने जगन्नाथ में एक मठ स्थापित किया और वहाँ श्री शारदा देवी की प्रतिष्ठा की ।

तोमस–क्रिस्तुके १२ प्रमुख शिष्यों में से एक । इन्होंने भारत में आकर कई जगह गिरिजाघर स्थापित किये और क्रिस्तुमत का प्रचार किया । मद्रास में इनकी मृत्यु हुई ।

तोमर–(१) भाला (२) भारत का एक जनपद ।

तोरण–अलङ्कार की वस्तु जो द्वार पर लगायी जाती है ।

तोष–सन्तोष तृप्ति ।

त्यागराज–कर्णाटक संगीत के परम पूज्य आचार्य । मद्रास प्रान्त में तञ्जावूर के पास तिरुवारुर में इनका जन्म हुआ । इनके इष्ट देवता श्रीराम थे । भक्तिरस पूर्ण अनेक कीर्तन इन्होंने रचे हैं ।

त्र्यवस्था–जाग्रत्, स्वप्न, सुपुप्ति ।

त्र्यारुण–सूर्यवंश के एक राजा ।

त्र्यारुणि–दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज राजा दुरतिक्षय के पुत्र । इन्होंने ब्राह्मणत्व को पा लिया ।

त्रयी–(१) ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद, इन तीनों वेदों की समष्टि । (२) इन तीनों वेदों की आधारभूता वेदस्वरूपिणी देवी । (३) विवाहिता स्त्री जिसके पति और बाल-बच्चे जीवित हों ।

त्रसदस्यु–इक्ष्वाकु वंश के राजा जो बाद में तपस्या कर राजर्षि हो गये ।

त्रसरेणु–(१) प्राचीन काल में लोहों को मापने का सब से छोट माप (२) धूल का कण या अणु जो सूर्य किरण में हिलता हुआ दिखाई देता है ।

त्रिककुद्–सोमवंश के राजा शुचि के पुत्र, इनका अपर नाम धर्मसारथि था। इनके पुत्र ब्रह्मज्ञानी शान्तराय थे ।

त्रिककुद्धाम–ऊपर, नीचे और मध्य तीनों दिशाओं के आश्रयस्वरूप भगवान् विष्णु ।

त्रिकर्म–(१)ब्राह्मणों के तीन कर्म-त्याग करना, वेदाध्ययन, तथा दान (२) संचित, प्रारब्ध और आगामि मनुष्य के कर्म (३) सृष्टि, स्थिति और संहार ।

त्रिकाल–(१) भूत, भविष्य और वर्तमान (२) प्रातः मध्याह्न और सायंकाल ।

त्रिकालज्ञ–त्रिकालदर्शी, जो सिद्ध ऋषि और मुनि अपनी योगशक्ति से भूत, भविष्य और वर्तमान की बातें जान और देख लेते हैं ।

त्रिकालपूजा–मन्दिरों में सुबह, मध्याह्न और सायं काल जो पूजा होती है ।

त्रिकूट–दक्षिण समुद्र के बीच का एक पहाड़ जिस पर रावण की राजधानी लंका स्थित है ।

त्रिकूटा–त्रयों के समूह से युक्त देवी । त्रय हैं-ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर-त्रिमूर्ति, जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति–त्रयावस्था, सत्व, रज, तम-तीन गुण, वात, पित्त, कफ-तीन दोष, इडा, पिंगला, सुषुम्ना-तीन नाड़ियाँ ।

त्रिगर्त–(१) जलन्धर राज्य के राजा एक असुर (२) भारत के उत्तर-पश्चिम का देश ।

त्रिगुण–सत्व, रज और तम ।

त्रिगुणा–दुर्गा ।

त्रिगुणातीत–सत्वादि तीन गुणों से अतीत, जिनमें तीनों गुण व्याप्त न हों ऐसे भगवान्

विष्णु ।

त्रिजगत्(१) स्वर्गलोक, अन्तरिक्षलोक तथा भूलोक । (२) स्वर्गलोक, भूलोक तथा पाताललोक ।

त्रिजटा–रावण के महल की एक दासी जिसको रावण ने सीता की देख-रेख के लिये नियुक्त किया था । राक्षसी होने पर भी सरल स्वभाववाली थी । अशोक वाटिका में रहते समय सीता देवी को यह समय-समय पर सान्त्वना देती थी और दूसरी राक्षसी परिचारिकाओं को सीता से अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया करती थी ।

त्रित–गौतम महर्षि का एक पुत्र ।

त्रिदश–देवता, अमर ।

त्रिदशपति–इन्द्र ।

त्रिदशमंजरी–तुलसी का पौधा ।

त्रिदशवधू–अपसरा या देवस्त्री ।

त्रिदोष–शरीर के तीन दोष-वात, पित्त और कफ ।

त्रिधन्वा–सूर्यवंश के एक राजा ।

त्रिधारा–गंगा नदी ।

त्रिनाड़ी–इडा, पिंगला और सुषुम्ना ।

त्रिनेत्र–(१) शिव; शिव की तीन आखें है, सूर्य, चन्द्र और अग्नि के प्रतीक । (२) महिषासुर का एक मन्त्री ।

त्रिपदी–गायत्री छन्द ।

त्रिपर्ण–ढाक का पेड़ ।

त्रिपुटा–दुर्गा ।

त्रिपुण्ड्–चन्दन या राख की माथे पर बनाई हुई तीन रेखाएँ ।

त्रिपुर–स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी में मय नामक राक्षस द्वारा बनाये गये सोने, चाँदी और लोहे के तीन नगर । यहाँ तारकासुर के तीन पुत्र पुर बना कर रहते थे ।

त्रिपुर दहन–(१) तारकासुर के पुत्र कमलाक्ष, तारकाक्ष और विद्युन्मालि नाम के तीन असुर थे । इन्होंने कठोर तपस्या कर ब्रह्मा को सन्तुष्ट किया और यह वर प्रसाद प्राप्त किया कि ये तीन नगरों में एक बार पास-पास रहेंगे, फिर हजार साल अलग रहेंगे । फिर इकट्ठे हो जायेंगे । कोई भी शत्रु उनको तभी मारें जब वे पास पास रहेंगे और वह भी एक ही बार से । मय ने इनके लिये सोने, चाँदी और लोहे के तीन पुर बना दिये । वे तीनों लोकों में यथेष्ट घूम कर देवता और मनुष्यों को बहुत सताने लगे । देवताओं की प्रार्थना पर शिव असुरों का वध करने के लिये मान गये । असुर शक्ति पर विजय प्राप्त करने के लिये शिव ने देवताओं की शक्ति ले ली । और विश्वकर्मा ने सर्व देवमय एक रथ का निर्माण कर उनको दिया । चारवेद अश्व थे, मन्दर पर्वत धनुष, वसुकि डोर, और विष्णु बाण की नोक पर अग्नि और पीछे की ओर वायु । जब हजार वर्षों के बाद तीनों असुर इकठे हो गये शिव ने त्रिशूल से तीनों नगरों को विद्धकर डाला । दिव्य बाण भेजकर तीनों पुरों का दहन किया । तीनों असुर अग्नि में जल मरे । (२) शिव ।

त्रिपुर सुन्दरी–पार्वती देवी ।

त्रिपुरान्तक–शिव, त्रिपुरारि ।

त्रिभुवन–तीनलोक, स्वर्ग, भूमि और पाताल ।

त्रिभानु–ययाति के पुत्र तुर्वसु के पौत्र, इनके पुत्र उदारनिधि करन्वम थे ।

त्रिमूर्ति–(१) ब्रह्मा, विष्णु और शिव (२) वेद में अग्नि, वायु और सूर्य (३) क्रिस्तु मत के अनुसार पिता, पुत्र और पवित्रात्मा ।

त्रियुगीनारायण–केदारनाथ के पास एक पुण्य स्थान । ऐसा विश्वास है कि यहाँ अग्निकुण्ड पर शिव और पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ । यह अग्निकुण्ड सदा जलता रहता है । इस अग्नि की राख पावन मानी जाती है ।

यह पाँच कुण्डों में से एक है। बाकी चार हैं ब्रह्म कुण्ड, विष्णु कुण्ड, रुद्र कुण्ड और सरस्वती कुण्ड। यह महाविष्णु का पुण्य क्षेत्र है।

त्रिलोक–तीनों लोक, स्वर्ग, भूमि और पाताल।

त्रिवक्रा–कंस का अंग राज बनाने में कुशल एक कुब्जा (दे: कुब्जा)।

त्रिवर्ग–(१) पहले तीन वर्णो (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) का समाहार (२) सांसरिक जीवन के तीन पदार्थ धर्म, अर्थ, काम (३) सत्व, रज और तम (४) वृद्धि, स्थिति और नाश।

त्रिविक्रम–वामनरूप भगवान विष्णु।

त्रिविष्टप–(१) स्वर्ग (२) कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थल।

त्रिवेणी–प्रयाग में त्रिवेणी का संगम जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती मिलती हैं। यह एक अति पावन तीर्थ है।

त्रिशक्ति–इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति।

त्रिशंकु–अयोध्या के विख्यात सूर्यवंशी राजा, त्रिबन्ध के पुत्र, हरिश्चन्द्र के पिता। इनका पहला नाम सत्यव्रत था। सत्यपरायण और धर्मात्मा राजा होने पर भी अपने व्यक्तित्व से बहुत प्रेम रखते थे और सशरीर स्वर्ग जाना चाहा। इसके लिए अपने कुल गुरु वसिष्ठ से यज्ञ कराना चाहा। जब वसिष्ठ और उनके पुत्र इसके लिए तैयार नहीं हुए राजा ने उनको कायर कहा। उन्होंने राजा को चाण्डाल बनने का शाप दिया। राजा की दुर्दशा देखकर विश्वामित्र ने यज्ञ कर उनको स्वर्ग भेजा। आकाश मण्डल में इन्द्र ने उनको रोका और सिर के बल धकेल दिया। तेजस्वी विश्वामित्र ने अपने तपोबल से उनको वहीं रोका। राजा वहीं सिर के बल अटक गये। विश्वामित्र ने राजा के लिए वहीं एक स्वर्ग बनाया और राजा नक्षत्र-पुञ्ज के रूप में वहीं रहने लगे।

त्रिशंकु स्वर्ग–(१) राजा त्रिशंकु के लिये विश्वामित्र द्वारा बनाया गया स्वर्ग (२) एक लोकोक्ति; (न नीचे का, न ऊपर का) ऐसी अवस्था।

त्रिशिख–तामस मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

त्रिशिर–(१) त्वष्टा का पुत्र विश्वरूप एक असुर था। जिसके तीन सिर थे, इसलिये त्रिशिर नाम पड़ा। वह एक सिर से वेदोच्चारण, दूसरे से मदिरापान, तीसरे से दिशावलोकन करता था। इसको इन्द्र ने मारा। (२) खर और दूषण का भाई जिसको श्रीराम ने मारा।

त्रिशूल–भगवान शिव का आयुध।

त्रिशृङ्ग–त्रिकूट नामक पर्वत, महामेरु के उत्तर में स्थित है।

त्रिष्टुप–सूर्य भगवान के सात घोड़ों में से एक गायत्री, बृहति, उष्णीक, जगति त्रिष्टुप, अनुष्टुप और पंक्ति ये सात घोड़े हैं।

त्रिसन्ध्या–दिन के तीन संध्या काल; रात और प्रभात की मिलन वेला, प्रातः सन्ध्या, मध्याह्न सन्ध्या, दिन और सायंकाल की सन्ध्या सायं सन्ध्या।

त्रिस्थली–तीन पुण्य स्थान, काशी, प्रयाग और गया।

त्रिस्रोतस–गंगा नदी।

त्रुटि–(१) समय का अत्यन्त सूक्ष्म माप (२) हानि (३) छोटा हिस्सा।

त्रेता–चार युगों में से एक जिसमें श्रीरामचन्द्र जी का अवतार हुआ। यह १२,१७,००० वर्ष के बराबर है।

त्रैय्यारुण-इक्ष्वाकुवंश के राजा।

त्रैलोक्य–तीनों लोकों का समाहार।

त्रैविष्टप–(१) देवता (२) स्वर्ग।

त्र्यम्बक–शिव।

त्र्यक्षर–अ, उ, म् से युक्त ओम्।

त्र्यक्षरी–तीन अक्षरों की समाहार रूपा देवी।

तीन अक्षर हैं वाक्बीज, काल बीज और शक्तिबीज ।

त्वष्टा–(१) विश्वकर्मा का असुर पत्नी में उत्पन्न पुत्र विश्वरूप का पिता (२) संहार के समय सम्पूर्ण प्राणियों को क्षीण करने वाले भगवान विष्णु ।

थ

थ—(१) रक्षा (२) भय (३) भोजन ।

द

दंश–(१) काटना (२) सांप का डंक (३) एक असुर जो भृगुमुनि के शाप से भ्रमर बना था। इसी ने कर्ण की जांघ पर काटा था जब परशुराम उनकी गोद में सिर रख कर सोते थे ।

दण्ड–(१) याष्टिका, डण्डा । उपनयन संस्कार के समय ब्रह्मचारी को दिया जाता है (२) सन्यासी का दण्ड । (३) चतुरुपायों में से एक (४) काल का आयुध (५) सुमालि का पुत्र एक राक्षस (६) हाथी की सूँण्ड । (७) चम्पा नदी के किनारे एक पुण्य स्थान (८) इक्ष्वाकु वंश का एक राजा ।

दण्डक–(१) नर्मदा और गोदावरी के बीच में स्थित एक प्रसिद्ध देश (२) महाराजा इक्ष्वाकु के सौ पुत्रों में से एक ।

दण्डकारण्य–एक पुण्य वन । यहां श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ बहुत दिन रहे । (दे: अरा)

दण्डधार–(१) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (२) पाण्डवों का मित्र एक राजा ।

दण्डपाणि–(१) यम (२) स्कन्ददेव (३) सोमवंश के राजा वहीनर के पुत्र, इनके पुत्र निमि थे ।

दण्डी–(१) संस्कृत के एक विख्यात कवि जिन्होंने (दशकुमार चरितम्) लिखा । ये पल्लव राजधानी के आस्थान कवि थे। ये वेद शास्त्र के पण्डित थे । (२) जैन सन्यासी (३) यम (४) राजा का विशेषण ।

दत्त–(१) अत्रि महर्षि और अनसूया के पुत्र (दे: दत्तात्रेय) (२) वैश्यों के नाम के साथ लगाने वाली उपाधि । (३) हिन्दु शास्त्रों में वर्णित बारह प्रकार के पुत्रों में से एक ।

दत्तात्रेय–अत्रि महर्षि और अनसूया के पुत्र जो भगवान विष्णु के अंशावतार माने जाते हैं । इनके वरप्रसाद से कार्तवीरार्जुन को हजार भुजाएँ हुई ।

दधिमण्डोद–सात महा समुद्रों में से एक । यह समुद्र शाकद्वीप को घेर कर रहता है । शाक द्वीप के समान यह भी २,५६,००,००० मील चौड़ा है । इसके दूसरी ओर पुष्कर द्वीप है ।

दधिमुख–(१) एक वानर (२) कश्यप और कद्रू का पुत्र एक सांप ।

दधिवक्त्र–श्रीराम की वानर सेना का एक वानर ।

दधीच–(१) कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थान । ऋषि अंगिरा का जन्म यहीं हुआ था । (२) इन्द्र का वज्र ।

दधीचि–अर्थव मुनि और चित्ती (शान्ति के पुत्र इन्होंने कठिन तपस्या की थी, ब्रह्मविद्या के पारंगत थे । अश्व के सिर से अश्वनीकुमारों को ब्रह्मविद्या सिखाने से इनका अपर नाम

अश्वशिरा हो गया । अपनी शरीर की हड्डियाँ देवताओं को दी । इन्द्र वृत्रासुर को जीत न सके । नारायण कवच आदि मन्त्रों का जाप करने से दधीचि महर्षि में अतुल्य शक्ति थी । इसलिए इन्द्र ने दधीचि से हड्डियाँ माँगी । अपने शरीर का भी त्याग कर देवताओं की भलाई करने के लिए महर्षि ने शरीर छोड़ दिया । देवताओं की शिल्पि ने उनकी हड्डी से एक अमोघ वज्र बनाया जिससे इन्द्र वृत्रासुर और अन्य असुरों को मार सके।

दध्यान्न–दही और चावल मिलाकर तैयार किया हुआ अन्न । यह देवी को प्रिय है ।

दनु–(१) एक राजा (२) दक्ष प्रजापति की पुत्री, कश्यप प्रजापति की पत्नी, दानवों की माता (३) एक राक्षस ।

दन्तवक्त्र–करुष वंशज वृद्ध शर्मा और वसुदेव की बहन श्रुतदेवा का पुत्र । भगवान विष्णु के पार्षद विजय का पुनर्जन्म माना जाता है । पहले दो जन्मों में क्रमशः हिरण्याक्ष और कुंभकर्ण था । श्रीकृष्ण ने इसको मारा । (दे: जय) ।

दन्तशूक–एक नरक ।

दन्तीमुख–एक असुर, कार्तिकेय ने इसको मारा

दम–(१) आत्म नियन्त्रण, विषयों की ओर दौड़ने वाले कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेद्रिय दोनों को उनसे खींचकर अपने अधीन कर लेना, उन्हें मनमानी न करने देना 'दम' कहलाता है । (२) विदर्भ का राजकुमार, दमयन्ती का भाई (३) एक महर्षि । (४) सूर्यवंश के राजा मरुत्त, के पुत्र इनके पुत्र राज्यवर्धन थे ।

दमघोष–चेदि देश के राजा, इनकी पत्नी वसुदेव की बहन श्रुतश्रवा थी । इनके पुत्र प्रसिद्ध शिशुपाल थे ।

दमयन्ती–विदर्भ देश के राजा भीम की अनुपम सुन्दरी पुत्री । निषध देश के राजा नल के साथ इसका विवाह हुआ । नल महाराजा ने एक बार एक हंस की रक्षा की थी और उसके हाथ दमयन्ती के पास सन्देश भेजा । दमयन्ती के सौंदर्य और शक्ति गुण की ख्याति सुनकर नल उस पर मोहित थे । नल की वीरता, पौरुष और गुण ज्ञान सुन कर दमयन्ती भी उनसे आकृष्ट थी । दमयन्ती के इच्छुक कलि और द्वापर भी थे । लेकिन स्वयंवर में दमयन्ता ने नल के गले में वरमाला पहनायी । इस पर कुपित कलि और द्वापर ने नल के सौतेले छोटे भाई पुष्कर से मिलकर उनको जुए में हराया । नल और दमयन्ती को राज्य छोड़ना और अनेक कष्ट उठाने पड़े । नल दमयन्ती की भलाई सोचकर वन में उसको अकेली छोड़ गई । वह अनेक कष्ट सह कर चेदि देश में अपने मामा के राजमहल में पहुँच गई और छद्मवेष में रही । विदर्भ राजा भीमसेन से भेजे एक ब्राह्मण दूत से उसका पता लगाने पर भीमसेन ने अपनी पुत्री को अपने पास बुलाया । जब तक दमयन्ती का नल से पुनर्मिलन न हुआ वह अति दुःखी रही । (दे: नल) ।

दमि–एक पुण्य स्थान ।

दम्भोत्मव–एक पराक्रमी वीर राजा ।

दया–(१) दक्ष की पुत्र (२) करुणा ।

दरद–(१) एक प्राचीन देश (२) एक राजा (३) भय, पीड़ा ।

दरिद्र—(१) गरीब (२) ययाति का वंशज एक राजा, दुन्दुभि का पुत्र, और वसु का पिता ।

दर्दुर—(१) मेढक (२) दक्षिण में स्थित एक पहाड़ ।

दर्प–(१) ययाति के वंश का एक राजा (२) घमण्ड (३) धर्म और दक्षपुत्री क्रिया का पुत्र ।

दर्पदा–विष्णु का नाम, अपने भक्तों को विशुद्ध गौरव देने वाले ।

दर्पहा–विष्णु का नाम, धर्म विरुद्ध मार्ग में चलने वालों के घमण्ड को नष्ट करने वाले।

दर्भ–(१) एक प्रकार की पवित्र घास (कुशा) जो यज्ञानुष्ठान और तर्पण आदि के अवसर पर प्रयुक्त की जाती है (२) ययाति वंश का एक राजा।

दर्भि–एक ऋषि।

दर्व–एक राक्षस।

दर्शन–(१) देखना (२) आँख (३) उपनिषदों के आधार पर परब्रह्म के बारे में विचिन्तन कर छः ऋषियों ने छः तत्व शास्त्र के ग्रन्थ लिखे जो दर्शन कहलाते हैं। कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन, पतञ्जलि ऋषि ने योग दर्शन, गौतम ऋषि ने न्याय दर्शन, कणाद मुनि ने वैशेषिक, जैमिनि ऋषि ने पूर्व मीमासा, व्यास मुनि ने उत्तर मीमासा का (वेदान्त) का निर्माण किया।

दशकण्ठ–रावण।

दशकन्धर–रावण।

दशग्रीव–रावण।

दशद्रु–एक ऋषि।

दशपुर–एक प्राचीन देश का नाम, राजा रन्ति देव की राजधानी थी।

दशमुख–रावण।

दशरथ–(१) इक्ष्वाकु वंश के महाराज अज और राणी इन्दुमती के पुत्र, अयोध्या के सुप्रसिद्ध महाराजा थे। ये वीर योद्धा और पराक्रमी थे। इनकी तीन रानियाँ कौशिल्या, कैकेयी और सुमित्रा थी। इनकी पुत्री शान्ता अंग देश के राजा रोमपाद की दत्तक पुत्री थी। दीर्घकाल तक अपुत्र रहने पर गुरु वशिष्ठ के उपदेश से ऋष्य शृंग महर्षि से पुत्र कामेष्टि कर भगवान के पूर्णावतार श्रीराम को पुत्र रूप से प्राप्त किया। इनके भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न नाम के तीन और पुत्र हुए। असुरों से युद्ध करने के लिए इन्द्र की इच्छा करने पर ये स्वर्ग गए थे, साथ में कैकेयी भी थी। वहां एक अवसर पर कैकेयी ने इनकी प्राणरक्षा की जिससे राजा ने दो वर दिए। राजा जब बुढ़ापे को पहुँचने लगे तब श्री रामचन्द्र का अभिषेक करने की तैयारियां की। कुटिल मन्थरा की बातों में आकर कैकेयी ने धरोहर में रखे दोनों वर मांगे, एक से श्रीराम को चौदह साल का वनवास और दूसरे से अपने पुत्र भरत का अभिषेक। उस समय भरत और शत्रुघ्न ननिहाल में थे श्रीराम के साथ सीता और लक्ष्मण भी वन चले गये। पुत्र शोक से अत्यन्त पीड़ित महाराजा का देहान्त हो गया। (२) इक्ष्वाकु वंश के राजा मूलक के पुत्र, इनके पुत्र इडविड थे। (३) यदुवश के नवरथ के पुत्र थे। इनके पुत्र शकुनि थे।

दशरात्र–दस दिनों तक चलने वाला एक विशेष यज्ञ।

दशश्लोकी–श्री शंकराचार्य की एक लघु कृति। अपने गुरुगोविन्द स्वामी से पहली बार मिलते समय रची थी।

दशार्ण–प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध देश।

दशार्ह–यदुवंश के निवृति के पुत्र, इनकी वंश परंपरा को दशार्ह कहते हैं। यदुकुल में जन्म लेने से श्रीकृष्ण को भी दाशार्ह कहते हैं।

दशावतार चरित–कश्मीर के कवि क्षेमेंद्र का एक संस्कृत काव्य, जो महाविष्णु के दशावतारों का प्रतिपादन है।

दशावतार–भगवान विष्णु के मुख्य दस अवतार (दे: अवतार)

दशाश्व–महाराजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र।

दशाश्वमेध घाट–काशी में गंगा का एक प्रसिद्ध घाट।

दशास्य–रावण।

दस्त्र–(१) अश्विनी देवों में से एक, दूसरे का नाम नासत्य है। ये दोनों अश्विनी कुमार के

नाम से जाने जाते हैं। विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा के घोड़ी रूप से सूर्य के उत्पन्न पुत्र है। ये देवताओं के वैद्य है। दे: अश्विनी कुमार (२) अश्विनी नक्षत्र।

दस्यु–(१) उत्तर भारत के प्राचीन निवासी। आर्यों के आगमन से पहले ही से ये संस्कार सम्पन्न, युद्धकुशल, वीर थे। शिव और शक्ति की पूजा करते थे। (२) चोर, लुटेरा, दुष्कर्मियों का समूह।

दह–एकादश रुद्रों में से एक।

दक्ष–(१) योग्य, चतुर (२) प्रशस्त प्रजापति प्रजासृष्टि के लिये ब्रह्मा ने प्रजापतियों की सृष्टि की। उनके दक्षिणा-गुष्ट से दक्ष का जन्म हुआ। दक्ष ने मनुपुत्री प्रसूती से विवाह किया था। उनकी सोलह पुत्रियाँ थी जिनमें सबसे छोटी सती थी। सती का विवाह भगवान शिव से हुआ। दक्ष ने वाजपेय यज्ञ किया जिसमें प्रजापतियों में प्रधान होने के घमण्ड में भगवान शिव की भरी सभा में निन्दा की। उसके बाद से दोनों में वैमनस्य रहा। इसके बाद दक्ष ने बृहस्पति स्तव नामक महायज्ञ किया जिसमें सभी देवी-देवता, किन्नर गन्धर्व, अपसराएँ आदि बुलाये गये। केवल शिव को निमन्त्रण नहीं भेजा। पति की इच्छा के विरुद्ध सती पिता के यज्ञ में गई। लेकिन वहाँ शिव का भाग न देख कर पति की अवहेलना न सह सकने के कारण योगाग्नि में जल मरी। समाचार पाकर भगवान कुपित हुए और अपने अंशभूत वीरभद्र को भेजकर दक्षयाग का ध्वंस किया। वीरभद्र ने दक्ष का सिर काट कर होम कुण्ड में डाल दिया। बाद में देवताओं की प्रार्थना पर क्षिप्रसादि भगवान ने दक्ष को आशीर्वाद दिया और उनके शरीर से बकरे का सिर जोड़ दिया। इसके बाद दक्ष ज्यादा दिन जीवित न रहे। बाद में प्रचेतसों और कण्ठ मुनि की पुत्री मारिषा के पुत्र हो कर चाक्षुष मन्वन्तर में जन्में। वे सभी तेजस्वियों में तेजस्वी रहे। दक्ष की अपनी पत्नी पाञ्जजनी से पहले दस हजार पुत्र हुए जो हर्यश्व कहलाते थे। प्रजासृष्टि के लिये उनको नियुक्त किया लेकिन नारद के उपदेश से वे सर्वसंग परित्यागी बन गये। दक्ष ने दूसरी बार पाञ्जजनी से शनलाश्व नामक एक हजार पुत्रों को जन्म दिया जो नारद के उपदेश अपने भाइयों के अनुगामी हो गये। दक्ष ने कुपित होकर नारद को शाप दिया। अपनी पत्नी आसंम्नी से दक्ष ने साठ पुत्रियों को उत्पन्न किया। इनमें से दस धर्म की पत्नी बनीं, तेरह कश्यप ऋषि की, सत्ताइस चन्द्रमा को,-दो दो भूत, अंगिरा और कृणाश्व की, बाकी कश्यप की पत्नियाँ बनीं। इन्हीं पुत्रियों से संसार की भिन्न-भिन्न सृष्टियाँ हुईं। (३) मनुवंश के चित्रसेन के पुत्र, इनके पुत्र मिदवान थे।

दक्षकन्या–(१) सती (२) अश्विनी आदि नक्षत्र।

दक्षसावर्णि–नवें मन्वन्तर के मनु। भूतकेतु, दीप्त केतु आदि इनके पुत्र, पार, मरीचिगर्भ आदि देवगण, अद्भुत इन्द्र, सवन, द्युतिमान, हव्य, वसु, मधातिथि, ज्योतिष्मान और सत्य सप्तर्षि अत्युष्मा और अम्बुधारा के पुत्र ऋषभ नाम से भगवान का जन्म होगे।

दक्षिणा–(१) योग्य, निपुण (२) शिष्ट।

दक्षिण पांचाल–पांचाल राजा द्रुपद ने राजा होने पर अपने बाल्यकाल के मित्र द्रोणाचार्य का अपमान किया था। उसका बदला लेने के लिये गुरु दक्षिणा के रूप में पांचाल राजा को बाँध लाने को अर्जुन से कहा। अर्जुन द्रुपद को परास्त कर गुरु के पास ले आये। द्रोणाचार्य के कहने पर द्रुपद ने अपने राज्य के दो हिस्से किये। गंगा के उत्तर में स्थित उत्तर पांचाल द्रोण ने लिया, और दक्षिण में

स्थित दक्षिण पांचाल के राजा द्रुपद रहे ।

दक्षिणा–प्रजापति रुचि और मनुपुत्री आकूति के युगल हुए एक पुत्र और एक पुत्री । पुत्र यज्ञ भगवान विष्णु का अंश थे और पुत्री दक्षिणा यज्ञों में दी जाती दक्षिणा की अधिष्ठात्री थी, लक्ष्मीदेवी की असंभवा थी। पुत्रिका धर्म के अनुसार मनु ने यज्ञ को अपने पुत्र के समान पाला और दक्षिणा रुचि की पुत्री रही। बाद में भगवान यज्ञ ने दक्षिणा से विवाह किया और उनके बारह पुत्र हुए जो स्वायम्भू मन्वन्तर में तुषित नाम के देव हुए ।

दक्षिणाग्नि–दक्षिण की ओर स्थापित अग्नि । पांचजन्य नामक अग्नि से जन्म हुआ । शत्रुओं का नाश करने के लिये यजुर्वेद मन्त्रों का उच्चारण कर दक्षिणाग्नि में आहुति दी जाती है ।

दक्षिणाचल–दक्षिणी पहाड़, मलय पर्वत ।

दक्षिणामूर्ति–शिव ।

दक्षिणायन–दे: उतरायन ।

दाता–भृगु महर्षि और कर्दम प्रजापति की पुत्री ख्याति के पुत्र । मेरु पुत्री आयति उनकी पत्नी थी । इनके पुत्र मृकण्डु मुनि थे ।

दातुरुत्तम–विष्णु का नाम, कार्य कारण रूप सम्पूर्ण जगत को धारण करनेवाले एवं सर्वश्रेष्ठ भगवान ।

दान–समर्पण करना । प्राचीन काल से भारत में दान करना बड़ा पूण्य माना जाता था । जल, अन्न, सोना, चांदी, भूमि, कन्या, गौ आदि का दान दिया जाता है और प्रत्येक का विशिष्ट फल होता है । दान चार प्रकार के हैं । फलेच्छा में आसक्ति के बिना दिया हुआ दान नित्य दान, पाप शमन के लिये दिया हुआ दान नैमित्तिक दान, पुत्र, ऐश्वर्य, सम्पत्ति की इच्छा से किया गया दान काम्य दान और भगवद् प्रीत्यर्थ दिया दान विमल दान है ।

दानव–कश्यप प्रजापति और दक्षपुत्री दनु के पुत्रों को कहते हैं ।

दानवीर–कर्ण का विशेषण । परशुराम ।

दानवेन्द्र—एक दानव प्रमुख, काली ने इसको मारा ।

दन्त–(१) विदर्भ राज्य के राजा भीष्म का पुत्र, दमयन्ती का भाई (२) उदार (३) दानी ।

दान्ते–प्रसिद्ध ग्रीक तत्वशास्त्रज्ञ ।

दामोदर–श्रीकृष्ण, जिसके उदर में दाम है । श्रीकृष्ण ने मक्खन की चोरी की । मय्या यशोदा ने उनको ओखल से बांध दिया ।

दारिका–पुत्री ।

दारुक–(१) श्रीकृष्ण का सारथि (२) महिषासुर का अनुयायी जिसको भद्रकाली ने मारा था । (२) देवदारु का पेड़ ।

दारुण–(१)एक नरक(२)निर्दय(३)भयानक ।

दार्शनिक–दर्शन शास्त्रज्ञ ।

दाशरथि–दशरथ का पुत्र, श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न ।

दाशराज–शन्तनु महाराज की पत्नी सत्यवती का धर्मपिता ।

दाशार्ण–दशार्ण देश के निवासी ।

दाशार्ह–दशार्ह के वंशज, यादव ।

दिकगज–दे: अष्ट दिक्गज ।

दिक्नाग–(१)पृथ्वी की दशो दिशाओं के हाथी (२) कालिदास समकालीन एक कवि ।

दिगम्बर–(९) नंगा (२) शिव का विशेषण ।

दिग्विजय–आठों दिशाओं के राजाओं पर विजय पाना । राजसूय यज्ञ के पहले दिग्विजय करना पड़ता है ।

दिति–दक्ष प्रजापति की पुत्री जिसका विवाह कश्यप प्रजापति से हुआ । इसके पुत्र दैत्य कहलाते हैं जिनमें प्रमुख हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु थे ।

दितिज–दैत्य, राक्षस ।

दिनकर–सूर्य ।

दिनचर्या–प्रतिदिन का कार्यक्रम ।

दिनमणि–सूर्य ।

दिनेश–सूर्य ।

दिनक्षय–सायंकाल ।

दिलीप–(१) सूर्यवंश के प्रसिद्ध राजा । पुत्र-लाभ के लिए कुलगुरु वसिष्ठ की सलाह से बहुत दिन तक दिलीप और उनकी पत्नी सुदक्षिणा ने कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा-शुश्रुषा की । नन्दिनी के अनुग्रह से दिलीप के लोक विश्रुत पुत्र रघु पैदा हुए । इन्हीं रघु महाराज से रघुवंश चला और रघुवंश के राजा राघव कहलाने लगे ।
(२) कुरुवंश के राजा ऋष्य के पुत्र, इनके पुत्र प्रतीप थे ।

दिलीपाश्रम–एक पुण्य स्थान । यहाँ काशी राजकुमारी अम्बा ने तपस्या की थी ।

दिव–(१) स्वर्ग (२) आकाश (३) दिन (४) प्रकाश ।

दिवस्पति–(१) सूर्य (२) तेरहवें मन्वन्तर के इन्द्र ।

दिवानीक–इक्ष्वाकु वंश के राजा भानु के पुत्र । ये बड़े योद्धा थे । इनके पुत्र शूरवीर सहदेव थे ।

दिविरथ–(१) भरत वंश का एक राजा (२) अंग वंश के राजा खनपान के पुत्र ।

दिवोदास–(१) काशी के राजा जिन्होंने काशी नगरी बसाई । (२) भरतवंश के राजा भम्यश्वि के पुत्र, अहल्या के ... इनके पुत्र मसेन से के... मित्रेयु थे।

दिव्य–(१) स्वर्गीय, अलौकिक उपाय वि लाग्रा वंश के सात्वत के पुत्र ।

दिव्य गायक–गन्धर्व ।

दिव्य दृष्टि–प्राचीन काल में भारत के श्रद्धेय ऋषि मुनियों ने अपने योग बल से एक प्रकार की दिव्य दृष्टि पायी, जिसके प्रभाव से इह-लोक के दूर-दूर के दृश्यों को वे देख सकते थे । इस प्रकार की शक्ति भगवान ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को दी थी जिससे वे उनका विश्व-रूप देख सके । महाभारत के युद्ध के पहले व्यास के अनुग्रह से सञ्जय को दिव्य दृष्टि मिली जिससे कुरुक्षेत्र के युद्ध के सभी समाचार वे धृतराष्ट्र को बता सके । इस दृष्टि से दृश्य ही नहीं देखे जाते, मनुष्यों के विचार भी जाने जा सकते हैं ।

दिव्य पद्म–महाप्रलय के बाद अनन्तशायी भगवान विष्णु योगनिद्रा से जागे और उन्होंने अपने अन्दर विलीन समस्त चराचर वस्तुओं की सृष्टि करने की इच्छा की । उस समय उनकी नाभि से उन सब विलीन वस्तुओं के बीजरूप एक दिव्य पद्म मकुल रूप से निकला । उसके विकसित होने पर उसमें से ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए । पद्म से जन्म लेने के कारण ब्रह्मा का नाम पद्म पड़ा । नाभि से पद्म निकलने के कारण भगवान के पद्मनाभ, पंकजनाभ आदि नाम हैं । इसी पद्म को दिव्य पद्म, लोक पद्म आदि कहते हैं ।

दिव्य वर्ष–मनुष्यों का ३६५ दिन का एक वर्ष होता है । यह देवताओं का एक दिन होता है । ऐसे ३६५ दिन मिलाकर देवताओं का एक वर्ष होता है । उसको दिव्य वर्ष कहते हैं । मनुष्यो के ३६५ वर्षो का एक दिव्य वर्ष होता है ।

दिव्यविग्रहा–दिव्य विग्रह युत देवी । दिवि में अर्थात् आकाश में खड़ी हो कर जिसने युद्ध किया । चण्डिका देवी इस प्रकार शत्रुओं से लड़ी थी ।

दीननाथ–(१) ईश्वर का विशेषण, दरिद्रों और दुखियों के नाथ । (२) एक राजा जो बहुत काल निस्सन्तान रहे, बाद में विश्वामित्र के अनुग्रह से पुत्रलाभ हुआ ।

दीपमाला–दीपों की माला, रोशनी करना ।

दीपावली–हिन्दुओं का एक मुख्य त्योहार । एक मतानुसार श्रीकृष्ण के नरकासुर का वध

कर द्वारका लौटते इस दिन खुशियाँ मनाने और उनका स्वागत करने के लिए दीप-मालायें जलीं। दूसरे मतानुसार चौदह साल के बाद शत्रुओं का संहार कर सीता और लक्ष्मण समेत श्रीरामचन्द्र जी अयोध्या लौट आये। उस दिन सब घरों में दीपमालायें जलायी गईं, पटाखे जले। आज भी नये कपड़े पहन कर दीप जला कर इस दिन की स्मृति में लोग त्योहार मनाते हैं।

दीप्त–(१) तीसरे मनु उत्तम के एक पुत्र (२) जलाया हुआ।

दीप्त किरण–सूर्य।

दीप्तकेतु–नवें मनु दक्ष सावर्णि का एक पुत्र।

दीप्तिमान–आठवें मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक।

दीर्घ–मगध देश का एक राजा।

दीर्घजिह्व–(१) कश्यप ऋषि और दनु का एक पुत्र (२) सर्प।

दीर्घजंघ–(१) एक यक्ष (२) ऊँट।

दीर्घतपा–गौतम ऋषि का विशेषण।

दीर्घतमा–(१) ऋषि उतथ्य और ममता के पुत्र जो जन्मान्ध होने पर भी पण्डित थे (२) पुरुरवा के वंशज राष्ट्र के पुत्र। इनके प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि थे।

दीर्घनिद्रा–(१) लम्बी नींद (२) मृत्यु।

दीर्घबाहु–(१) श्रीराम, श्रीकृष्ण का विशेषण (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दीर्घलोचन–धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दीर्घसत्र–(१) जो सत्र या यज्ञ अनेकों वर्षों तक लगातार किया जाता है। नैमिषारण्य में ऋषि मुनियों ने एक ऐसा सत्र किया था जब सूत ने ऋषि सभा में भागवत, महाभारत आदि पुराणों की व्याख्या की थी। (२) कलिंग देश का एक राजा।

दीक्षा–किसी धर्म संस्कार के लिए किया जाने वाला व्रत।

दुःखहन्त्री–जन्म-मरण के दुःख का नाश करने वाली देवी।

दुग्ध सागर–दूध का सागर, क्षीर सागर। यह सात महा समुद्रों में से एक। यह क्रौंच द्वीप को घेर कर रहता है।

दुन्दुभि–दानवों के शिल्पि मय और हेमा नाम की अप्सरा का पुत्र था। यह अतुल पराक्रमी पर्वताकार हजारों हाथियों के समान बलवान था। वरलाभ से अतीव घमण्डी हुआ। उसने एक बार वरुण देव को युद्ध के लिए ललकारा। वरुण ने अपनी असमर्थता प्रकट की और असुर के लिये तुल्य बलशाली वानरों के राजा बालि को बताया। दुन्दुभि ने बालि को ललकारा, दोनों में कई दिनों तक घोर युद्ध हुआ। अन्त में दुन्दुभि मारा गया। (२) एक प्रकार का ढोल। वसुदेव के जन्म के समय दुन्दुभिवाद हुआ था। (३) यादव कुल में अन्धक का पुत्र इसका पुत्र अरिद्योत था। (४) एक प्रकार का विष।

दुरतिक्रम–विष्णु का नाम, जिनकी आज्ञा कोई उल्लघंन न कर सके।

दुरतिक्षय–महाराजा भरत के पौत्र महावीर्य के पुत्र, इनके पुत्र त्रय्यारुणि, कवि और पुष्करुणि थे। तीनों ने क्षत्रिय होने पर भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया।

दुराध–धृतराष्ट्र का पुत्र।

दुर्ग–महाविष्णु का नाम; कठिनता से प्राप्त होने वाले।

दुर्गम–(१) [illegible] कठिन (२) एक असुर जय–आठों जो [illegible] जन्मा था। भगवती पाना से युद्ध [illegible]

दुर्गा—(१) ब्रह्माण्ड की ईश्वरी। भक्तों की भावना के अनुसार देवी के अनेक रूप हैं जैसे पार्वती, अम्बिका, भद्रा काली, ललिता आदि। (२) नौ वर्ष की कन्या (३) सुबाहु नामक काशीराज के द्वारा प्रतिष्ठित देवी।

(४) एक नदी ।

दर्जय–(१) कश्यप और दनु का पुत्र (२) महाविष्णु का नाम (३) धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

दुर्दमन–सोमवंश के राजा शतानीक के पुत्र। इनके पुत्र उशीनर थे ।

दुर्निमित्त–अपशकुन ।

दुर्मद–(१) एक गन्धर्व (२) यादव वंश के राजा बृहत्सेन के पुत्र (३) वसुदेव और रोहिणी का एक पुत्र (४) वसुदेव और पौरवी का एक पुत्र ।

दुर्मना–ययाति पुत्र द्रुह्यु के वंशज धृष्ट के पुत्र, इनके पुत्र प्रचेता थे ।

दुर्मर्षण–वसुदेव के भाई सृञ्जय और उग्रसेन की पुत्री राष्ट्रपालिका का एक पुत्र ।

दुर्मुख–(१) रावण का एक योद्धा (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (३) एक प्रमुख नाग (४) एक वानर श्रेष्ठ ।

दुर्मुखी–एक राक्षसी ।

दुर्योधन–धृतराष्ट्र और गान्धारी का ज्येष्ठ पुत्र, कौरवों में श्रेष्ठ । बड़े वीर और राजनीतिज्ञ थे, पाण्डवों के आजन्म शत्रु । शुरु से ही पाण्डवों के नाश के लिये अनेक उपाय किये । इनके जन्म समय पर अनेक दुश्शकुन हुये थे । ब्राह्मणों ने बालक को कुल नाशक कह कर उसका त्याग करने को कहा । पुत्र-वत्सल पिता धृतराष्ट्र तैयार नहीं हुए । पाण्डवों के, खासकर भीमसेन से कठिन शत्रुता थी । उनके नाश के अनेक उपाय विफल होने पर उनको वाराणावत में लाक्षा गृह में ठहराया था । बाद में गृह जलाने का विचार था । विदुर की सहायता से पाण्डव वहाँ से बच कर चले गये । अपने मामा शकुनि की कुटिलता से जुए में पाण्डवों को हराकर सब कुछ छीन लिया, द्रौपदी का वस्त्राक्षेप करवाया और पाण्डवों को बारह साल वनवास और एक साल अज्ञातवास करना पड़ा । कुरुक्षेत्र के युद्ध में दोनों ओर के प्रायः सभी वीर मारे जाने पर भीमसेन के साथ द्वन्द्व युद्ध किया और वीर गति पायी ।

दुर्वासा–अत्रि महर्षि और कर्दम के पुत्र अनसूय के पुत्र जो शिव के अंशसंभव थे । बड़े क्रोधी और तपस्वी थे। उनके क्रोध के कारण अनेक स्त्री-पुरुषों को अनेक कष्ट झेलने पड़े । इनका क्रोध प्रायः लोकोक्ति-सा बन गया । शाप देने पर ऋषि-मुनियों का तपोबल कम हो जाता है । इनके बारे में यह कहा जाता है कि उनकी तपशक्ति घटती नहीं । इन्द्र ने इनकी दी हुई माला को ऐरावत पर डाल कर ऋषि का अपमान किया था । दुर्वासा ने इन्द्र को शाप दिया कि उनका और सब देवताओं का ऐश्वर्य नष्ट हो जायगा । कुन्ती की सेवा से सन्तुष्ट होकर दुर्वासा ने पुत्रलाभ का गुण रखनेवाले पांच मन्त्र कुन्ती को बता दिये । राजा अम्बरीष पर कुपित होकर इन पर कृत्या को छोड़ दिया, लेकिन भगवान के चक्रायुध के तेज से बचने के लिये तीनों लोकों में दौड़ना पड़ा । पति की चिन्ता में मग्न शकुन्तला को शाप दिया कि जिसकी चिन्ता में सुध-बुध खो बैठी हो, वह तुम्हें भूल जायगा । इसलिये शकुन्तला को बहुत अपमान और कष्ट सहना पड़ा ।

दुर्वाक्षी–यादव वंश के वृक की पत्नी । इसके तक्ष, पुष्कर, शाल आदि पुत्र हुए ।

दुर्विपाक–दुष्परिणाम, पूर्व जन्म, या, इस जन्म के किये हुए बुरे कर्मों का बुरा परिणाम ।

दुर्वृत्त–दुष्ट, बुरा आचारणवाला ।

दुश्शल–धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

दुश्शला–धृतराष्ट्र की पुत्री, सिन्धुराज जयद्रथ ने इससे विवाह किया था ।

दुश्शासन–धृतराष्ट्र का गान्धारी का दूसरा पुत्र।

यह दुर्योधन से भी दुष्ट था। दुश्शासन ही भरी सभा में एक वस्त्रा द्रौपदी को केश पकड़ कर घसीट लाया, उनका वस्त्रापहरण कर उनका अपमान किया था। आर्त रक्षक भगवान ने उनकी लाज रख ली। इस अवसर पर भीमसेन ने जो प्रतिज्ञा की थी, उसकी पूर्ति के लिए भीम ने भारत-युद्ध में दुश्शासन को मारकर उसके हृदय-रक्त से रंजित हाथ से द्रौपदी के केश बांधे। उस दिन की घटना के बाद द्रौपदी के केश खुले ही रहे।

दुष्कर्ण— धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दुष्यन्त सोमवंश के प्रसिद्ध राजा, रैभ्य के पुत्र। ये चक्रवर्ती राजा थे और प्रजापालन में अति निपुण। ये एक बार शिकार करते हुए कण्वाश्रम पहुँचे और वहाँ कण्व ऋषि की पालिता पुत्री शकुन्तला से गान्धर्व विवाह किया। कुछ दिनों में शकुन्तला को लिवा लाने का वचन देकर राजा अपनी राजधानी को लौट गये। शकुन्तला का सर्वदमन नामक पुत्र हुआ जो भगवान विष्णु का अंशांश संभव माना जाता है। कण्व ने शकुन्तला और पुत्र को दुष्यन्त के पास भेजा! लोक लाज से डर कर राजा ने शकुन्तला को स्वीकार नहीं किया। तब आकाशवाणी हुई कि शकुन्तला दुष्यन्त की विवाहित पत्नी है और सर्वदमन उनका पुत्र। दुष्यन्त और शकुन्तला ने वृद्धावस्था तक राज्य किया। सर्वदमन भरत नाम से चक्रवर्ती हुए और उन्होंने अतुल्य कीर्ति पायी। इनकी कथा को लेकर कुछ हेर-फेर के साथ कवि कालिदास ने अपना प्रसिद्ध 'शाकुन्तलम्' नाटक लिखा (दे: शकुन्तला)।

दुहित्री–पुत्री, बेटी।

दूरदर्शी–दूर की देखने वाला, बुद्धिमान।

दूर्व–सोमवंश के राजा नृपञ्जय के पुत्र, इनके पुत्र तिमि थे।

दूर्वा–भूमि पर फैलने वाली एक घास। यह देव पूजा के लिए पवित्र मानी जाती है, दूब।

दूषण–(१) निन्दा, आक्षेप (२) एक राक्षस। खर के साथ दण्डकारण्य में श्रीराम के साथ युद्ध कर मारा गया।

दृगत–ऋग्वेद काल के एक ऋषि।

दृढ़नेमि–सोमवंश के राजा सत्यधृति के पुत्र। इनके पुत्र सुपार्श्व थे।

दृढ़प्रतिज्ञ–(१)प्रण का पक्का (२)हर विपत्ति में भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला (३) भीष्म का विशेषण (४) एक ऋषि।

दृढ़भक्ति–असीम श्रद्धा, अटूट भक्ति।

दृढ़रथ–धृतराष्ट्र का पुत्र।

दृढ़रुचि–कुशद्वीप के राजा हिरण्य रेता का पुत्र।

दृढ़स्यू–अगस्त्य मुनि और कोपामुद्र के वेदाध्यायी पुत्र। इनका दूसरा नाम इध्मवाह था (दे: इध्मवाह)।

दृढ़ायु–पुरुरवा और उर्वशी का एक पुत्र।

दढ़ाश्व–इक्ष्वाकुवंश के राजा कुवलयाश्व के पुत्र।

दृषद्वती–एक नदी जो भारत की पूर्वी सीमा पर है और सरस्वती में मिलती है।

दृष्टदवान–एक राक्षस।

दृष्टकेतु–(१) चेदि देश के राजा शिशपाल का पुत्र, पाण्डवों का मित्र, महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से मारा गया। (२) केकय राज्य का एक राजा।

देदीप्यमान–(१) अत्यधिक चमकने वाला (२) सूर्य का विशेषण।

दव–देवता, स्वर्ग के निवासी। कश्यप और यक्ष पुत्री अदिति के पुत्र देव कहलाते हैं। इन में कई विभाग हैं। हर मत में देव हैं।

देवक–(१) यादव वंश में आहुक के पुत्र, श्री कृष्ण की माँ देवकी के पिता। उग्रसेन इनके भाई थे, देववान, उपदेव, सुदेव और देववर्धन इनके पुत्र थे। इनकी शान्तिदेवा, उपदेवा, श्रीदेवा, देवरक्षिता, सहदेवा, देवकी और सब

से बड़ी दृढ़देवा नाम की पुत्रियां थीं। (२) विदुर की पत्नी का पिता (३) युधिष्ठिर और पौरवी का पुत्र।

दवकी–देवक की पुत्री, वसुदेव की पत्नी, श्री कृष्ण की मां। (दे: कंस)। देवकी और वसुदेव के पहले कीर्तिमान, सुषेवा, भद्रसेन, भद्र, ऋजु, सम्भर्दन नाम के छै पुत्र हुए जो कंस से मारे गये। कंस की दुष्टता के कारण वे अपने पुत्रों बलराम और श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का सुख नहीं प्राप्त कर सकी। पुत्रों के मथुरा में आगमन करने के बाद ही वे पुत्र सुख का अनुभव कर सकीं।

देवकुण्ड–एक पुण्य तीर्थ।

दवकुल्या–स्वर्गीय गंगा, मरीचि के पुत्र पूर्णिमा की पुत्री जो दूसरे जन्म में सुरसरि गंगा बन कर भगवान के चरण कमलों से निकली।

दवकुसुम–(१) लौंग (२) पारिजात फूल।

देवकूट–एक पर्वत।

देवगण–देवों की एक श्रेणी, प्रत्येक मन्वन्तर के प्रत्येक देवगण हैं।

दवगायक–स्वर्गीय गायक, गन्धर्व।

दवगिरि–मेरु पर्वत के निकट का एक पर्वत।

ववगुरु–बृहस्पति।

देवगुह्य–आठवें मन्वन्तर में भगवान सार्वभौम के नाम से देवगुह्य और उनकी पत्नी सरस्वती के पुत्र होकर जन्म लेंगे।

देवज–सूर्यवंश के राजा संयम के पुत्र, कृशाश्व के भाई थे।

देवतरु–स्वर्गीय वृक्ष। मन्दार, पारिजात, सन्तान कल्प, हरिचन्दन आदि।

दवदत्त–(१) अर्जुन का शंख। निवातकवचादि दैत्यों के साथ युद्ध को जाते समय इन्द्र ने अर्जुन को यह शंख दिया था। इसका शब्द इतना भयङ्कर होता था कि उसे सुन कर शत्रुओं की सेना दहल जाती थी। (२) बुद्धदेव का एक शिष्य (३) मनुवंशज ऊरुश्रवा के पुत्र। इनके पुत्र अग्निवैश्य थे।

दवदारु–(१) एक पहाड़ (२) एक वृक्ष।

देवदानव–एक पवित्र स्थान।

देवदासी–(१) मन्दिर या देवों की दासी (२) वेश्या या कन्या जो मन्दिर में नाचने के लिए अर्पित की जाती है। पहले देव दासियों की प्रथा खूब प्रचलित थी। ये वास्तव में वेश्यायें नहीं होती। जब यह प्रथा दूषित हो चली इसको रोक दिया गया।

देव दुन्दुभि—देवों का ढोल।

देवदूत–देवों का दूत। सत्कर्म कर स्वर्ग जाने वालों को देवदूत आकर ले जाते है

देवद्युम्न–भरतवंश का एक राजा।

देवनदी–(१) स्वर्गीय नदी, गंगा (२) कोई भी पावन नदी।

देवनिन्दक–नास्तिक, ईश्वर की निन्दा करने वाला।

देवपथ–देवमार्ग, आकाश।

देवपाल–शाकद्वीप का एक पहाड़।

देव पुष्करिणी–एक पुण्य तीर्थ।

देव प्रतिम–देव की मूर्ति।

देव प्रतिष्ठा---मन्दिर को बना कर शास्त्र विधि के अनुसार देवी देव की मूर्ति की प्रतिष्ठा होती है।

दव प्रयाग–ऋषीकेश में कुछ दूरी पर स्थिति एक पुण्य क्षेत्र जहां भागीरथी और अलकनन्दा नदियों का संगम है। रावण वध के बाद श्री राम ने प्रायश्चित रूप में यहां हजार वर्ष तपस्या की यहां रघुनाथ जी का। एक प्रसिद्ध मन्दिर है।

देवप्रस्थ–भारत की उत्तर सीमा पर स्थिति एक नगरी।

देवबाहु–पांचवें मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक।

देवभाग–यदुवंश के शूरसेन और मारिषा का पुत्र, वसुदेव का भाई। इसकी पत्नी उग्रसेन की पुत्री कंसा थी और पुत्र चित्रकेत और

दृहद्वल थे ।

देवमीढ़–(१) सूर्यवंश के एक राजा । (२) जनक वंश के राजा कृतिरथ के पुत्र, इनके पुत्र विश्रुत थे (३) यादव प्रमुख हृदीक के पुत्र । उनके पुत्र शूरसेन और पौत्र वसुदेव थे ।

देवयानी–शुक्राचार्य और प्रियव्रत की पुत्री ऊर्ज्वस्वती की पुत्री । देवयानी और असुर राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्टा सहेलियों के साथ नदी में नहाने गईं । वहाँ हवा से उनके वस्त्र उड़ गये । जल्दी में शर्मिष्टा ने देवयानी के वस्त्र पहन लिये । इस वात पर दोनों में झगड़ा हुआ और शर्मिष्टा ने देवयानी को एक पुराने कुएं में धकेल दिया । उधर से ययाति महाराज जा रहे थे । देवयानी का रुदन सुन कर उन्होंने कुएं मे देखा तो एक विवस्त्रा नारी को देखा । उन्होंने अपना उत्तरीय देवयानी पर फेंक दिया और उसे हाथ पकड़ निकाल लिया । देवयानी ने कहा कि आपने मुझे वस्त्र दिया और पाणिग्रहण किया, आप ही मेरे पति हैं । कच के शाप के कारण मैं ब्राह्मण वे विवाह न कर सकूँगी ।(दे: कच)शर्मिष्टा की चेष्टा और ययाति के वारे में देवयानी ने अपने पिता से कहा । गुरु के डर से देवयानी को मनाने के लिये वृषपर्वा ने शर्मिष्टा और उसकी हजार दासियों को देवयानी की सेवा में नियुक्त किया । ययाति ने शुक्रमहर्षि की अनुमति से देवयानी से विवाह किया । पति के संग जाते समय देवयानी के साथ शर्मिष्टा और दासियां भी चलीं । देवयानी ने पति से निरोध किया था कि शर्मिष्टा से किसी प्रकार का मिलन न हो, देवयानी के यदु, तुर्वसु नाम के दो पुत्र हुए । शर्मिष्टा की प्रार्थना से ययाति के उससे अनु, द्रुह्यु और पूरु नाम के तीन पुत्र हुए । देवयानी यह जान कर कुपित होकर पिता के पास चली गई । शुक्राचार्य के शाप से ययाति जराग्रस्त हो गये । वाद में उनसे शापमोक्ष मिला कि वे अपनी जरा को दूसरे के यौवन से वदल सकते हैं । अपने पांचों पुत्रों से कहने पर शर्मिष्टा के छोटे पुत्र पूरु ने पिता से जरा लेकर अपना यौवन दिया । इस पर सन्तुष्ट होकर ययाति ने वर दिया कि पूरु ही महाराज वनेंगे । देवयानी के साथ ययाति महाराज ने अनेक काल सुख भोग किया, विरक्ति आने से यौवन अपने पुत्र पूरु को लौटा कर जरा ले ली, पुत्र को महाराजा वनाकर वन चले गये ।

देवयोनि–उपदेव, विद्याधर, यक्ष, गन्धर्व आदि ।

देवरक्षित–यदुवंश के देवक की पुत्री, देवकी की वहन, वसुदेव की पत्नी, इनके गद आदि नौ पुत्र हुए ।

देवराज–इन्द्र ।

देवरात–(१) मिथिला के राजा सुकेतु के पुत्र इनके पुत्र वृहद्रथ थे । (२) यदुवंश के करम्भि के पुत्र, इनके पुत्र देवक्षत्र थे ।

देवर्षि–जिनका देवलोक में निवास है उन ऋषियों को कहते हैं । भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान होना, तथा सव प्रकार से सत्य वोलना देवर्षि के लक्षण हैं । जो स्वयं भली भाँति ज्ञान को प्राप्त हैं, तथा जो स्वयं अपनी इच्छा से ही संसार से सम्वद्ध हैं, जो अपनी तपस्या के कारण इस संसार में विख्यात हैं, जो मन्त्रों के वक्ता हैं और जो ऐश्वर्य (सिद्धियों)के वल से सर्वत्र सव लोकों में विना किसी वाधा से आ जा सकते हैं, और जो सदा ऋषियों से घिरे रहते हैं, वे देवता, ब्राह्मण ऋषि सभी देवर्षि हैं जैसे नर-नारायण, वालखिल्य ऋषि, पुलह के पुत्र कर्दम, पर्वत, नारद, कश्यप के पुत्र असित, वत्सर आदि ।

देवल–(१) एक विख्यात ऋषि जो ब्रह्मवादी, महातपस्वी और योगाचार्य थे (दे:–असित) (२)प्रत्यूष नामक वसु का पुत्र (२)देवमूर्ति

का सेवक ।

देवलोक–स्वर्ग ।

देववती–(१)एक गन्धर्व कन्या । इक्ष्वाकु वंशज इन्द्रद्युम्न ने इससे विवाह किया था । (२) मणिमय नामक गन्धर्व की पुत्री जो सुकेश नामक राक्षस की पत्नी थी । इसके माल्यवान सुकेशि और मालि नामक तीन पुत्र हुए ।

दववर्धन–यदुवंश के देवक का एक पुत्र ।

देववर्णिनी–भरद्वाज मुनि की पुत्री, विश्रवा की पत्नी, कुबेर की मां ।

देववर्ष–(१) शाल्मलि द्वीप के प्रथम राजा यज्ञ बाहु के पुत्रों में से एक (२) शाल्मलि द्वीप के साप्त विभागों को वर्ष कहते हैं। देववर्ष उनमें से एक हैं ।

देववान–यादव वंश के देवक का एक पुत्र(२) यादव वंश के अक्रूर का एक पुत्र(३)बारहवें मनु रुद्रसावर्णि का पुत्र ।

देववाहन–(१) अग्नि (२)ययाति वंश के एक राजा ।

देववीती–राजा अग्नीन्ध्र के पुत्र केतुमाल की पत्नी ।

देववृद्ध–यदुवंशज सात्वत के पुत्र, इनके पुत्र बभ्रु थे ।

देवव्रत–(१) भीष्म (१) धार्मिक व्रत ।

देवश्रवा–यदुवंशज शूरसेन का पुत्र, वसुदेव का भाई । इसकी पत्नी उग्रसेन की पुत्री कंसवती थी और सुवीर और इषुमान पुत्र थे ।

देवसत्र–एक यज्ञ ।

देवसभा–इन्द्रसभा, सुधर्मा ।

दवसावर्णि–तेरहवें मन्वन्तर के मनु, चित्रसेन, विचित्र आदि इनके पुत्र होंगे । इस मन्वन्तर के देव सुकर्मा, सुत्रामा आदि, इन्द्र दिवस्पृति निर्मोक, तत्वदर्शी, निष्कम्प, धृतिमान,अव्यय और निरुत्सुक और सुतपा सप्तर्षि होंगे । इस मन्वन्तर में श्री हरि के अंशावतार योगेश्वर नाम से बृहती और देवहोत्र के पुत्र होकर जन्म लेंगे ।

देवसेना–(१) देवों की सेना(२)इन्द्र की पुत्री स्कन्ददेव की पत्नी ।

देवस्पति–तेरहवें मन्वन्तर के इन्द्र ।

देवस्वामी–कार्तिकेय ।

देवहूति–स्वायम्भू मनु की पुत्री, कर्दम प्रजापति की पत्नी, कपिल महर्षि की मां । इनकी कला अनसूया, श्रद्धा, हविर्भू, गति, क्रिया, ऊर्जा, चित्ति (शान्ति) और ख्याति नाम की नौ पुत्रियां हुईं जो ब्रह्मा के मानस पुत्रों की पत्नियां बनीं ।

देवहोत्र–तेरहवें मन्वन्तर में देवहोत्र और बृहती के पुत्र योगेश्वर नाम से भगवान का अंशावतार लेंगे ।

देवहृद–कालञ्जर पर्वत की चोटी पर एक तीर्थ ।

देवक्षत्र–यदुवंश के देवरात के पुत्र, इनके पुत्र, मधु थे ।

देवांश–भगवान का अंशावतार ।

देवातिथि-कुरुवंशीय एक राजा, क्रोधन का पुत्र इसका पुत्र ऋथ था ।

देवाधिदेव–उच्चतम देव, विष्णु, शिव ।

देवानीक–(१) कुशद्वीप में स्थित एक पर्वत (२) सूर्यवंश के राजा क्षेमधन्वा के पुत्र इनके पुत्र अनीह थे ।

देवाप–ययाति वंशज एक राजा ।

देवापि–पुरुवंशीय प्रतीप के पुत्र, शन्तनु महाराजा के बड़े भाई । राज वैभव छोड़कर वे योग का मार्ग स्वीकार कर कलापग्रम में रहने लगे ।

देवारण्य–ययाति वंशज एक राजा ।

देवासुर युद्ध–देवों और असुरों के बीच हमेशा युद्ध होता रहा है ।

विका–(१) राजा शैब्य की पुत्री, युधिष्ठिर की पत्नी, यौधेय की मां । (२)सह्य पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

देवी–(१) आदि शक्ति, भगवान की महामाया। देवी के अनेकों रूप और नाम हैं। दुर्गा, सरस्वती, पार्वती, लक्ष्मी, महामाया, काली आदि। (२) सम्मान सूचक उपाधि।

देवीपीठ–जब सती देवी ने यज्ञ शाला में शरीर त्याग दिया, कहा जाता है कि शिव मृत देह को लेकर उन्मत्त की भाँति घूमने लगे। भगवान शिव के इस मानसिक विकार को दूर करने के लिये भगवान विष्णु शर लेकर उनके पीछे जाते हुए देवी के मृत शरीर के टुकड़े करने लगे। जब शरीर का कुछ न बचा शिव स्वस्थ चित्त होकर कैलास चले गये। देवी के शरीर के एक सौ आठ टुकड़े हुए जो भारत के एक सौ आठ भागों में गिरे। इस लिये भारत में १०८ देवीपीठ हैं। इन पीठों के अलग-अलग नाम है और अधिष्ठात्री देवियों के नाम भी अलग-अलग हैं जैसे वाराणसी में विशालाक्षी, कन्याकुब्ज में गौरी, प्रभास में पुष्करावती, त्रिकुट में रुद्रसुन्दरी, चित्रकूट में सीता आदि।

देवी भागवत–अठारह पुराणों में से एक। इस में देवी की लीलाओं का वर्णन है। अनेक भक्त जन रामायण, भागवत जैसे इसका प्रतिदिन पारायण करते हैं।

देवीमाहात्म्य-मार्कण्डेय पुराण का एक प्रधान भाग इसमें मार्कण्डेयमुनिक्रोष्टूकि नाम के मुनि से देवी के प्रभाव के बारे में विस्तारपूर्वक कहते हैं।

देवोद्यान–नन्दन, चैत्ररथ, वैभ्राज, सर्वतोभद्र ये चार देवों के उद्यान हैं।

दैत्य–कश्यप और दिति के पुत्र, राक्षस, दैतेय।

दैत्यसेना–स्कन्द देव की पत्नी, देवसेना की बहन जिसका विवाह एक असुर से हुआ।

दैव–(१) दिव्य, स्वर्गीय (२) आठ प्रकार के विवाहों में से एक इसमें यज्ञ कराने वाला अपनी पुत्री को ऋत्विज को देता है। (३) परमात्मा।

दैवदोष–भाग्य की कठोरता।

दैवयोग–भाग्य, संयोग।

दौवारिक–द्वारपाल, पहरेदार।

द्यु–(१) अष्टवसुओं में से एक (२) दिन (३) आकाश।

द्युति–(१) प्रकाश, कांति (२) एक देवी (३) महिमा।

द्युतिमान–(१) इक्ष्वाकुवंश के एक राजा जिनके पुत्र विख्यात राजा सुवीर थे। (२) मद्रदेश के राजा जिनकी कन्या से सहदेव का विवाह हुआ। (३) भृगुवंश के एक मुनि जो नवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक होंगे।

द्युमत्सेन–शाल्व देश के राजा, सत्यवान के पिता शत्रु ने पराजित कर इनका राज्यापहरण किया। राजा अन्धे हो गये। अपनी पत्नी और पुत्र के साथ कानन में रहने लगे। वहीं सत्यवान का सावित्री से विवाह हुआ जिसके पातिव्रत्य के प्रभाव से इनको खोई हुई दृष्टि और राज्य वापिस मिला। (२) प्रियव्रत के वंशज एक राजा। (३) मगध के राजा शम के पुत्र, इनके पुत्र सुमति थे।

द्युमान–(१) स्वारोचिष मनु के एक पुत्र (२) पुरुरवा के वंशज राजा दिवोदास के पुत्र। ये शत्रुजित वत्स, ऋतध्वज, कुवलयाश्व आदि नामों से पुकारे जाते थे। इनके पुत्र अलर्क थे।

द्रविड–(१) दक्षिण में स्थित एक देश (२) एक जाति (३) प्रियव्रत वंशज एक राजा।

द्राविण–शाल्मल द्वीप की एक प्रमुख नदी (२) सम्पत्ति, धन।

द्राक्षारस–(१) अंगूर का रस (२) एक मदिरा (३) एक औषधि।

द्रविड–द्रविड देश के निवासी।

द्रुपद–पांचाल देश के राजा द्रुपद के पुत्र थे। यज्ञसेन नाम था। राजा पृषद और भरद्वाज मुनि में परस्पर मैत्री थी। द्रुपद भी बाल्या-

वस्था में भरद्वाजपुत्र द्रोण के साथ उनके आश्रम में रह कर धनुर्विद्या सीखी थी। इससे इनमें मैत्री हो गई। पृषद के परलोक गमन के बाद द्रुपद राजा हुए। आर्थिक कठिनाइयों से ग्रस्त द्रोण एक बार उनके पास गये और उन्हें अपना मित्र कहा। परन्तु द्रोण ने घमण्ड के कारण द्रोण का अपमान किया। द्रोण मन में क्षुब्ध होकर चले गये। द्रोण ने कौरवों और पाण्डवों को अस्त्रविद्या की शिक्षा देकर गुरुदक्षिणा में अर्जुन के द्वारा द्रुपद को पराजित कराकर अपने अपमान का बदला लिया और उनका आधा राज्य ले लिया (दे: दक्षिण पांचाल) द्रुपद ने ऊपर-ऊपर से द्रोण से प्रीति दिखाई, परन्तु उनके मन में क्षोभ बना रहा। उन्होंने द्रोण को मारने वाले पुत्र के लिए याज और उपयाज नामक ऋषियों के द्वारा यज्ञ करवाया। उसी यज्ञ की वेदी से धृष्टद्युम्न तथा कृष्णा का आगमन हुआ। यही कृष्णा द्रौपदी या याज्ञसेनी के नाम से प्रसिद्ध हुई। राजा बड़े ही शूर वीर और महारथी थे। महाभारत युद्ध में द्रोण के हाथ इनकी मृत्यु हुई।

द्रुम—(१) एक राजा (२) एक किन्नर (३) वृक्ष।

द्रुमसेन—एक राजा।

द्रुह्यु—राजा ययाति और शर्मिष्ठा के पुत्र, इनके पुत्र बभ्रु थे।

द्रेक्काण—राशि की अवधि का तीसरा भाग।

द्रोण—(१) पहाड़ी कौआ (२) एक वृक्ष (३) काष्ट पात्र (४) एक औषधि। (५) द्रोणाचार्य महर्षि जो भरद्वाज के पुत्र थे। पाण्डवों और कौरवों के धनुर्वेद गुरु थे। उन्होंने महर्षि अग्निवेश्य से और भी परशुराम से रहस्य समेत समस्त अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किए थे। ये वेद वेदाङ्ग के ज्ञाता, महान तपस्वी धनुर्वेद तथा शस्त्रास्त्र विद्या के अत्यन्त मर्मज्ञ और अनुभवी एवं युद्धकाल में नितान्त निपुण और परम साहसी महारथी वीर थे। इनका विवाह महर्षि शरद्वान की कन्या कृपी से हुआ था। इन्हीं के पुत्र हैं अश्वत्थामा। ये राजा द्रुपद के बाल सखा थे। (दे: द्रुपद) महाभारत युद्ध में इन्होंने पांच दिन तक सेनापति के पद पर रह कर बड़ा ही घोर युद्ध किया। अन्त में अपने पुत्र अश्वत्थामा का भ्रममूलक समाचार सुनकर उन्होंने शस्त्रास्त्र का परित्याग कर लिया और समाधिस्थ होकर भगवान का ध्यान करने लगे। उस समय धृष्टद्युम्न ने, जिसने द्रोण को मारने की प्रतिज्ञा की थी, उस अवसर से लाभ उठाकर उनका सिर काट लिया। प्राणत्याग होने पर उनके ज्योतिर्मय स्वरूप का ऐसा तेज फैला कि सारा आकाश मण्डल तेज राशि से परिपूर्ण हो गया (दे. एकलव्य) ये आठवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक होंगे।

द्रोणपर्व—महाभारत का एक प्रमुख पर्व।

द्रोणाचल—क्षीरसागर पर का एक महा पर्वत। यही पर संजीवनी औषधि की खोज में हनुमान जी आये थे। औषधि न मिलने पर लक्ष्मण जी की जीवन रक्षा के लिए पर्वत को ही उठा कर श्रीराम के पास आये।

द्रौणि—अश्वत्थामा।

द्रौपदी—पांचाल राजा द्रुपद की पुत्री (दे: द्रुपद) स्वयंवर में अर्जुन ने इनको प्राप्त किया। जब उन्होंने घर आकर कुन्ती से यह कहा कि आज हमने एक बड़ी अच्छी वस्तु पायी है, तब कुन्ती ने बिना देखे कहा कि आपस में बांट लो। कुन्ती की बात झूठी नहीं हो सकती थी। इसीलिये द्रौपदी पांचों पाण्डवों की पत्नी बनी। पाण्डवों के साथ इनको अनेक कठिनाइयां सहनी पड़ीं,

लेकिन सब दुर्दिनों और कष्टों में वीर नारी बनकर पतियों का साथ दिया। जब युधिष्ठिर जुए में अपने भाइयों, अपने को और पत्नी तक को हार गये। उस समय भरी सभा में एक वस्त्रा साध्वी द्रौपदी को केश से घसीट ला कर दुश्शासन ने अपमान करना चाहा। वे श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थी। हर विपत्ति में उनकी शरण लेती थी और भक्तवत्सल भगवान हमेशा इनकी रक्षा करते थे। इनके पाँच पाण्डवों से क्रमशः प्रतिविन्ध्य, श्रुतसेन,श्रुतकीर्ति, शतानीक और श्रुतकर्मा नाम के पांच पुत्र हुए जो अश्वत्थामा से मारे गये। ये अत्यधिक उदार थी। महाभारत युद्ध के बाद ये युधिष्ठिर के साथ राजसिंहासन पर बैठी। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के बाद पतियों के साथ सब कुछ छोड़ चली। द्रौपदी उन पांच सती स्त्रियों में (अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी) से एक है जो प्रातः स्मरणीय समझी जाती है। (दे: पांचाली)।

द्रौपदेय—द्रौपदी के पुत्र।

द्वन्द्व—(१) दो विरोधी गुणों या अवस्थाओं का जोड़ा (२) दो आदमियों का झगड़ा, युद्ध।

द्वादशचान्द्रमास—माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष।

द्वादशवन—कहा जाता है कि श्रीकृष्ण के प्रिय बारह वन थे :— भद्रवन, श्रीवन, लोहवन भाण्डीरवन, महावन, तालवन, वदरीवन, वकुलवन, कुमुदवन, काम्यवन, मधुवन, वृन्दावन।

द्वादशाक्ष—सुब्रह्मण्य का नाम, इनके छः मुख और बारह आँखें हैं।

द्वादशादित्य—भिन्न पुराणों के अनुसार इनके नामों में कुछ भिन्नता है। ये हैं-धाता, मित्र, वरुण, अर्यमा, रुद्र, भग, सूर्य; विवस्वान, पूषा और सविता।

द्वादशी—चान्द्रमास के शुक्ल और कृष्ण पक्षों का बारहवाँ दिन। एकादशी का व्रत रखने वाले द्वादशी के दिन पारण करके व्रत भंग करते हैं।

द्वापर—(१) चार युगों में से तीसरा, इस युग में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। (२) द्वापर युग का नाथ जो कलि का मित्र था और जिसके साथ मिलकर कलि ने पुष्कर से नल को पराजित करवाया।

द्वारका—श्रीकृष्ण की राजधानी। जब जरासन्ध और कालयवन एक ही समय मथुरा पर आक्रमण करने आ रहे थे, तब यादवों की रक्षा के लिये श्रीकृष्ण ने देवशिल्पि विश्वकर्मा से पश्चिम समुद्र में एक किला और शहर बनाया जो १७ योजना विस्तीर्ण था। इसमें अद्भुत वस्तुएँ और कारीगरी थी। सुन्दर वन, उपवन, वाटिकायें थीं, गगनचुम्बी गोपुर थे जो सोने से मढ़े थे। सुनहले आवास जिनमें अमूल्य हीरे, मोती, रत्न जड़े थे। इन्द्र ने सुधर्मा नामक सभा पारिजात नामक दिव्य वृक्ष, वरुण ने दूध के समान सफेद घोड़े जिनका एक कान काला था, कुबेर ने आठों सम्पत्तियाँ आदि भेज दिये। द्वारका की पूर्व दिशा में रैवत पर्वत के कुछ हिस्से, उत्तर में वेणुमन्द, पश्चिम से सुकक्ष, दक्षिण में लतावेष्टा आदि पर्वत स्थित हैं। इसके पास प्रभास तीर्थ था। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के बाद ही यह समुद्र में डूब गया। गुजरात प्रान्त का आधुनिक द्वारका इससे कुछ मील दूरी पर स्थित है।

द्वारावती—द्वारका।

द्विज—हिन्दुओं के पहले तीन वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। इनका यज्ञोपवीत संस्कार होता है जो उनका दूसरा जन्म माना जाता है। इसलिये ये द्विज कहलाते है।

द्विजिह्व–सांप । कद्रू की दासता से अपनी माता विनता को छुड़ाने के लिए गरुड़ ने स्वर्ग से अमृत ला कर कद्रू के पुत्र सांपों को दिया । उन्होंने कलश को जमीन पर कुश घास बिछा कर रखा । उस समय इन्द्र कलश ले गये । तब वहां पड़ी हुई अमृत की बूदों को सांप चाटने लगे जिससे उनकी जीभ चिर कर दो हिस्से हो गई तब से ये द्विजिह्व कहलाने लगे ।

द्वित–गौतम ऋषि का दूसरा पुत्र, एक ऋषि ।

द्विमीद–दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज, हस्ति के पुत्र इनके पुत्र यवीनर थे जो कीर्तिमान के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

द्विविद–नरकासुर का पुत्र । त्रेता युग में सुग्रीव का मन्त्री और मैन्द का भाई था । लक्ष्मण की वीरता और युद्ध पटुता देखकर द्विविद को उनके साथ युद्ध करने की इच्छा हुई । उस जन्म यह हो नहीं सकता था । इसलिये द्वापर युग में शत्रु पक्ष में जन्म हुआ और बलराम से द्वन्द्व युद्ध कर मारा गया ।

द्वीप–महाराजा प्रियव्रत ने एक बार ज्योतिर्मय रथ पर आरूढ़ होकर भगवान सूर्य का पीछा करते हुए सात बार पृथ्वी की चक्कर लगाई । रथ के चक्र से जो गड्ढे बने वे सात समुद्र हो गये और पृथ्वी सात हिस्सों, द्वीपों में बंट गई । ये हैं–जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुश द्वीप, क्रौंचद्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप । ये विस्तीर्ण में क्रमशः एक से एक दुगुना है और एक एक द्वीप उतने चौड़े सागर से वेष्टित है । समुद्रों के नाम हैं–क्षारोद, इक्षुरसोद, सुरोद, घृतोद, क्षीरोद दधिमण्डोद, शुद्धोद ।

द्वैतमत–वह दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार जीव और परमात्मा का भिन्न-भिन्न अस्तित्व है ।

द्वैतवन–एक जंगल का नाम, वनवास के समय पाण्डव यहां रहते थे ।

द्वैपायन–(१) व्यास महर्षि का नाम, द्वीप में जन्म होने से यह नाम पड़ा । (२) कुरुक्षेत्र का एक सरोवर जहां दुर्योधन छिपे थे ।

द्वैमातुर–(१) गणेश (२) जरासंघ ।

ध

ध–ब्रह्मा, कुबेर, धाता ।

धनक–हैहय वंश के राजा बृहत्सेन के पुत्र । इनके कृतवीर्य, कृताग्नि, कृतौजा और कृत-वर्मा के चार पुत्र हुए ।

धनञ्जय–(१) अर्जुन का नाम । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय अर्जुन अनेक राजाओं को जीत कर अपार धन लाये थे । इसलिये धनञ्जय नाम पड़ा । (२) एक प्रसिद्ध सर्प, कद्रू का पुत्र । त्रिपुर दहन में शिव के रथ से अश्वों को बांधने के लिये इस सर्प की रस्सी बनाई गयी । (३) अग्नि ।

धनद–(१) कुबेर का विशेषण (२) तामस मन्वन्त के सप्तर्षियों में से एक ।

धनपति–कुबेर ।

धनाध्यक्ष–कुबेर ।

धनुर्वेद–चार उपवेदों में से एक । आयुध विद्या से सम्बंधित एक शास्त्र । प्राचीन काल में इसकी प्राधान्यता के कारण एक वेद माना गया ।

धनुप–(१) एक अस्त्र (२) एक ऋषि ।

धनुपयज्ञ–एक यज्ञ जिसमें धनुप की पूजा होती है । कंस ने श्रीकृष्ण और बलराम को धनुप यज्ञ में भाग लेने के बहाने से मथुरा बुलाया था ।

धन्य–(१) धनी (२) सौभाग्यशाली (३) कृतकृत्य ।
धन्वन्तरि–(१) आयुर्वेदाचार्य । चन्द्रवंश के दीर्घतमा के पुत्र इनके पुत्र केतुमान थे (२) अमृत मन्थन के समय क्षीरसागर से अमृत का कलश लेकर भगवान के अंशरूप धन्वन्तरि मूर्ति प्रकट हुए (३) राजा विक्रमादित्य के नवरत्न कवियों में से एक ।
धर–(१) धर्म और धूम्रा का पुत्र एक वसु । (२) पहाड़ (३) कूर्मावतार विष्णु ।
धरणी–भूमि, पृथ्वी ।
धरणीपति–(१) राजा (२) महाविष्णु ।
धरणीसुत–(१) मंगल ग्रह (२) नरकासुर ।
धरणीसुता–जनक पुत्री सीता ।
धरसुता–हिमवान की पुत्री श्रीपार्वती ।
धरा–(१) पृथ्वी (२) अष्ट वसुओं में द्रोण की पत्नी ।
धरित्री–पृथ्वी, भूमि ।
धर्म–(१) ब्रह्मा के पुत्र, दैवी गुणों के देवता । दक्ष प्रजापति की तेरह लड़कियों से इनका विवाह हुआ । धर्म और दक्ष पुत्री मूर्ति के पुत्र थे । भगवान विष्णु के अंशरूप नर नारायण ऋषि । माण्डव्य के शाप से नर जन्म लेना पड़ा और द्वापर युग मे विदुर होकर जन्मे । धर्मदेव के पुत्र थे युधिष्ठिर । (२) कर्त्तव्य (३) धार्मिक गुण (४) इन्द्रिय निग्रह (५) यज्ञ ।
धर्मकेतु–(१) बुद्ध का विशेषण (२) पुरुरवा के वंशज सुकेतन के पुत्र, इनके पुत्र सत्य-केतु थे ।
धर्मचारिणी–पतिव्रता पत्नी ।
धर्मज्ञ–धर्म को जानने वाला, पुण्यात्मा ।
धर्मतीर्थ–एक पवित्र स्थान ।
धर्मनाथ–जैन मत तीर्थंकर ।
धर्मध्वज-जनक वंश के राजा कुशध्वज के पुत्र इनके मितध्वज और कृतध्वज नामक दो पुत्र हुए ।
धर्मपरायण–पुण्यात्मा, भक्त ।
धर्मपाल–महाराजा दशरथ के एक मन्त्री ।
धर्मपुत्र–युधिष्ठिर (दे:युधिष्ठिर ।) .
धर्मप्रस्थ-एक पुण्य तीर्थ ।
धर्मयुग–सत्य युग या कृत युग जिसमें धर्म के चारों पाद हैं ।
धर्मयूप–महाविष्णु ।
धर्मरथ–अंगराज वंश के एक राजा, दिविरथ के पुत्र, इनके पुत्र चित्ररथ थे ।
धर्मराज–(१) यम (२) युधिष्ठिर (३) राजा ।
धर्मलोप–(१) कर्त्तव्य का उल्लंघन (२) धर्म का नाश ।
धर्मवती–धर्मदेव की पत्नी । इनकी पुत्री धर्म-वती का विवाह ब्रह्मा के पुत्र मरीचि से हुआ ।
धर्मवीर–भलाई और पवित्राचरण मे वीर ।
धर्मवृद्ध–(१) धर्म और पवित्रता की आचरण की दृष्टि से वृद्ध (२) श्वफल्क और गन्दिनी का एक पुत्र ।
धर्मव्याध–निम्न जाति में जन्म लेने पर भी धर्म में निरत, महाज्ञानी, ब्रह्मनिष्णात व्याध थे । पूर्व जन्म में ब्राह्मण थे और धनुर्विद्या में कुशल एक राजा के मित्र थे । एक बार दोनों शिकार खेलने जंगल गये । वहाँ भूल से ब्राह्मण के अस्त्र से एक पेड़ के नीचे बैठ कर तपस्या करने वाले तपस्वी घायल हो गये । मृत्यु-पीड़ा से छटपटाते हुए महर्षि ने ब्राह्मण को शाप दिया कि तुम मांस बेचने वाले व्याध का जन्म लोगे । ब्राह्मण की प्रार्थना पर दयालु महर्षि ने यह अनुग्रह किया कि व्याध का जन्म लेने पर भी धर्म में अपार ज्ञान होगा और गुरु सेवा से मोक्ष मिलेगा । ब्राह्मण शापग्रस्त होकर मिथिला में जन्मे । मांस बेचकर अपना जीवन निर्वाह करने पर भी न जानवरों को मारते थे न उसका

मांस खाते थे । अपने बूढ़े मां-बाप की सेवा के व्रत का पालन कर धर्मपारंगत हो गये और अन्त मे मोक्ष प्राप्त किया । इन्होंने ही कौशिक नामक ब्राह्मण की तप शक्ति का अहंकार दूर कर दिया और उनको ब्रह्मविद्या, धर्म, इन्द्रिय निग्रह आदि के बारे में शिक्षा दी । कौशिक ने एक बार तप मे भंग करने वाले एक पक्षी को क्रोधाग्नि में भस्म किया। इससे गर्वित होकर वह भिक्षा के लिये एक घर गया । गृहस्वामिनी अपने पति की सेवा कर रही थी, इसलिए भिक्षा लेकर आने में देरी हो गई । ब्राह्मण ने उस पर भी अपने तपोबल का प्रभाव डालने के लिए लाल-लाल आखें दिखाई । जरा भी विचलित हुए बिना उस पतिव्रता ने कहा कि मैं पक्षी नहीं हू जो तुम्हारी क्रोधाग्नि में जल मरूँ । यह सुनकर ब्राह्मण को अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि यह मामूली स्त्री पक्षी की बात' कैसे जान गई । उस साध्वी ने कर्त्तव्य निष्ठा की महिमा बताकर धर्मोपदेश के लिए धर्म व्याध के पास उस ब्राह्मण को भेज दिया । ब्राह्मण ने जब देखा कि व्याध मास बेच रहे हैं उसके मन में हुआ कि यह क्या धर्मोपदेश देगा। धर्म व्याध ने कहा कि मुझे मालूम है कि आपको उस स्त्री ने भेजा है, काम पूरा कर घर चलेंगे । घर आकर उन्होंने वृद्ध माता-पिता की सेवा की, अतिथि का सत्कार किया फिर ज्ञानोपदेश दिया ।

धर्मशर्माभ्युदय–हरिश्चन्द्र नामक कवि का निर्मित जैन मत का काव्य । इसमें जैन मत के तीर्थंकर धर्मनाथ का चरित दिया है ।

धर्मशास्त्र–श्रुति, स्मृति आदि के सूत्रों के आधारित कर्त्तव्य कर्म, आचार आदि के बारे में बताने वाला शास्त्र । इनके प्रणेता मनु, याज्ञवल्क, पराशर, कात्यायन आदि ऋषि हैं । मनु-स्मृति आदि ।

धर्मसंहिता–धर्मशास्त्र ।

धर्मसारथि–चन्द्र वंश के राजा शुचि के पुत्र, इनका अपर नाम त्रिककुद था । इनके पुत्र सन्तराय थे ।

धर्मसावर्णि–ग्यारहवें मनु । सत्यधर्मा आदि इनके पुत्र होंगे । इस मन्वन्तर के विहंगम, कामगम, निर्वाण रुचि देवगण; वैधृति इन्द्र; हविष्मान, वपुष्मान, अरुण, अनघ, उरुधि, निश्चर और अग्नितेज सप्तर्षि होंगे । श्री हरि का अंशावतार धर्मसेतु के नाम से वैधृता और आर्यक के पुत्र रूप में होगा ।

धर्मसूत्र–मगध के राजा सुव्रत के पुत्र, इनके पुत्र शाम थे ।

धर्मसेतु–ग्यारहवें मन्वन्तर में वैधृता और आर्यक के पुत्र धर्मसेतु होकर भगवान का अशावतार होगा ।

धर्मक्षेत्र–(१) कुरुक्षेत्र (२) भारतवर्ष ।

धर्मांगद–(१) राजा रुक्मांगद और सन्ध्यावली के पुत्र, बड़े विष्णु भक्त थे । (दे: रुक्मांगद) (२) एक विष्णुभक्त ब्राह्मण ।

धर्मागम–धर्मशास्त्र ।

धर्मात्मज–युधिष्ठिर का विशेषण ।

धर्मात्मा–पुण्यात्मा ।

धर्माध्यक्ष–महाविष्णु का नाम; अनुरूप फल देने के लिए धर्म और अधर्म का निर्णय करने वाले ।

धर्मारण्य–एक पुण्य स्थान ।

धर्मेन्द्र–युधिष्ठिर ।

धर्मोपदेश–धार्मिक या नैतिक उपदेश ।

धवलागिरि–हिमालय की एक ऊँची चोटी ।

धाता–(१) सब का पालन-पोषण करने वाले भगवान (२) द्वादशादित्यों में से एक (३) भृगु महर्षि और ख्याति (कर्दम और देवहूति की पुत्री) के एक पुत्र । इनकी पत्नी मेरु पुत्री आयति थी और पुत्र मृकण्ड थे ।

धातु–मूल तत्व; पृथ्वी; जल, अग्नि, वायु और

आकाश ।

धातुरुत्तम–विष्णु का नाम, कार्य-कारण रूप सम्पूर्ण प्रपंच को धारण करने वाले एवं सर्वश्रेष्ठ ।

धातृ–(१) निर्माता, रचयिता (२) ब्रह्मा विष्णु ।

धात्री-(१) दाई, दाय (२) माता (३) पृथ्वी ।

धारण–एक नाग ।

धारणा–राज योग का एक अंग ।

धिषणा–(१) बुद्धि (२) सूक्त (३) पृथुवंश के हविर्द्धान की पत्नी । अग्नि से इनका जन्म हुआ ।

धी–(१) बुद्धि (२) यज्ञ ।

धीरा–देवी का विशेषण, अद्वैत बुद्धि को प्रदान करने वाली ।

धुन्धु–(१) मधु कैटभ नामक असुरों का असुर पुत्र । पितृहन्ता भगवान विष्णु को मारने के लिए उसने मरुधन्व नामक वन में तपस्या की। ब्रह्मा से वर प्राप्त किया कि देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, सर्पादि से अवध्य रहेगा । वह उज्जालक नामक वन में रह कर देवों पर अत्याचार करने लगा । उज्जालक में उत्तंग नामक मुनि तपस्या करते थे । उनकी प्रार्थना से इक्ष्वाकु वंश के कुवलयाश्व नामक राजा ने धुन्धु को मारा । इसलिये कुवलयाश्व का नाम धुन्धुमार विख्यात हो गया । (२) एक राजा ।

धुन्धुकारी–(देखिये गोकर्ण) गोकर्ण का भाई ।

धुन्धुमार–इक्ष्वाकु वंशज कुवलयाश्व का अपर नाम (दे: धुन्धु) ।

धुन्धुली–धुन्धुकारी की मां (दे: गोकर्ण) ।

धुरन्धर–(१) प्रवीण, कुशल (२) एक राज्य ।

धुरजटि–शिव ।

धूमयोनि–बादल ।

धूमावती–एक पवित्र स्थान ।

धूम्र–एक महर्षि ।

धूम्रकेतु–उल्का जो आपत्तिसूचक है ।

धूम्रकेश–एक प्रचेतस ।

धूम्रलोचन–सुंभ नामक असुर का एक सेनानी ।

धूम्रा–दक्ष की पुत्री, धर्म की पत्नी ।

धूम्राक्ष–(१) एक राक्षस जिसको हनुमान ने मारा । (२) इक्ष्वाकु वंश का एक राजा ।

धूर्त–(१) बदमाश (२) प्राचीन भारत का एक राजा ।

धृत–ययाति पुत्र द्रुह्यु के वंशज धर्म के पुत्र, इनके पुत्र दुर्मना थे ।

धृतकेतु–भृगुवंश के एक राजा ।

धृतदेवा–देवक की पुत्री, वसुदेव की पत्नी, इनका पुत्र विप्रष्ट था ।

धृतराष्ट्र–सोमवंश के महाराज शंतनु के पौत्र, कौरवों के पिता । शन्तनु के सत्यवती से दो पुत्र हुये, चित्रांगद और विचित्र वीर । चित्रांगद उसी नाम के गन्धर्व से मारे गये और विचित्र वीर ने काशीराजकुमारियों अम्बिका और अम्बालिका से विवाह किया । विचित्र-वीर की मृत्यु हुई । वंश की वृद्धि के उद्देश्य से सत्यवती ने अपने पुत्र व्यास महर्षि को पुत्रोत्पादन के लिये बुलाया । जटावल्कधारी व्यास के पास आने पर अम्बिका ने आंखें मूंद लीं । इसलिये जो पुत्र उत्पन्न हुआ वह जन्मान्ध रहा । यह धृतराष्ट्र थे । अम्बालिका डर से पीली हो गई और जो पुत्र हुआ वह पाण्डु रंग का था । यही पाण्डु थे । जन्मान्ध होने से ज्जेष्ठपुत्र होने पर भी धृतराष्ट्र राजा न बने, पाण्डु ही राजा बनें । धृतराष्ट्र ने गान्धार नरेश सुबल की पुत्री गन्धारी से विवाह किया और उनके एक सौ पुत्र (दुर्योधन आदि) और एक पुत्री दुश्शला हुई । पाण्डु अपनी पत्नियों के साथ वन चले गये । तब धृतराष्ट्र महाराजा बने और दुर्योधन को युवराज बनाया । अपने पुत्रों की कुचेष्टाओं

के कारण उनको जीवन भर अनेक यातनायें भोगनी पड़ीं। पुत्र वात्सल्य के कारण अपने पुत्रों को अत्याचार व अन्याय करने से रोक नहीं सके। इसीलिए पाण्डवों को भी अनेक यातनायें भोगनी पड़ीं। भारत युद्ध में एक पुत्र को छोड़ कर सभी मारे गये। विदुर के उपदेशों को उन्होंने कान नहीं दिया। अन्त में भगवान श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के बाद विदुर के ही उपदेश से गान्धारी और मन्त्री सञ्जय के साथ हस्तिनापुर छोड़ कर वन चले गये। वहाँ गंगाद्वार में कठिन तपस्या की और अंत में दावानल में जल कर मरे (२) एक गन्धर्व।

धृतवती–एक नदी।

धृतवर्मा–त्रिगर्त का राजा जो युद्ध में अर्जुन से मारा गया।

धृति–(१) धैर्य स्वरूपिणी देवी (२) दक्ष की पुत्री, धर्म की पत्नी (३) धैर्य (४) अंगवंश के राजा जयद्रथ और संभूति के पुत्र, इनके पुत्र धृतव्रत थे।

धृतिमान–(१) कुशद्वीप का एक विभाग (२) ययाति वंश का एक राजा।

धृष्ट–(१) वैवस्वत मनु के एक पुत्र (२) साहसी।

धृष्टकेतु–चेदि देश के राजा शिशुपाल के पुत्र महाभारत युद्ध में द्रोण के हाथ मारे गये। (२) द्रुपदराज पुत्र धृष्टद्युम्न का पुत्र (३) (३) जनक वंश के सुधृति के पुत्र, इनके पुत्र हर्यश्व थे। (४) केकय देश के राजा जिन्होंने वसुदेव की बहन ऋतुकीर्ति से विवाह किया और उनके सन्तर्दन आदि पांच केकय राजकुमार थे।

धृष्टद्युम्न–द्रोणाचार्य के शिष्य और पांचाल राजा द्रुपद के पुत्र (दे: द्रोण)। जन्म के समय इनके सिर पर मुकुट, शरीर पर कवच, बाहों में धनुष-बाण थे। आकाश वाणी हुई थी कि ये पाण्डवों का भय दूर करेंगे। धृष्टद्युम्न बड़े कूटनीतिज्ञ, युद्धवीर महारथी थे। महाभारत युद्ध में ये पाण्डवों के प्रधान सेनापति थे। रात को सोते समय अश्वत्थामा ने इनका वध किया। धृष्टद्युम्न के हाथ से द्रोण की मृत्यु हुई थी।

धृष्टबुद्धि–पहले एक दुराचारी वैश्य था, जो कुमार्ग पर चल कर घर-गृहस्थि, धन-सम्पत्ति सब गवां दिया।

धृष्टि–(१) महाराजा दशरथ के एक मन्त्री (२) यदुवंश के राजा कथ के पुत्र। इनके पुत्र निवृति है। (३) यदु वंशज भजमान का एक पुत्र।

धृष्णु–(१) एक ब्रह्मज्ञानी जो कवि के पुत्र थे (२) दिलेर, साहसी (३) वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

धेनु–(१) गाय (२) पृथ्वी (३) कामधेनु।

धेनुक–कंस का एक अनुचर। इसने कंस के आदेशानुसार बलराम और श्रीकृष्ण को मारने के लिये एक गधे का रूप धारण कर वृन्दावन के पास तालवन में रहता था। उधर न कोई जा सकता था या न तालफल खा सकता। बलराम और श्रीकृष्ण साथियों के साथ उधर गये। बलराम ने धेनुक को मारा।

धेनुकाश्रम–एक पवित्र स्थान।

धौम्य—एक महर्षि जो देवल ऋषि के भाई थे। ये पहले उत्कोच तीर्थ पर तपस्या करते थे। लाखा गृह से बचकर जाते समय पाण्डव चित्ररथ नामक गन्धर्व से मिले। उनकी राय के अनुसार पाण्डवों ने धौम्य महर्षि को पुरोहित बनाया।

ध्यान–(१) मन को वश में कर विषय विकारों से हटा कर एकाग्र होकर भगवान का चिन्तन करना ध्यान है। चित्त को अपने लक्ष्य ब्रह्म में दृढ़तापूर्वक स्थिर कर बाह्य इन्द्रियों को (उनके विषयों से हटा कर) अपने अपने

स्थानों पर स्थिर करके, शरीर को निश्चल और सीधा रख, ब्रह्म और आत्मा की एकता कर तन्मय भाव से मन ही मन आनन्दपूर्वक ब्रह्म का चिन्तन करना ध्यान है। इस प्रकार ध्यान करने से मोक्ष प्राप्ति होती है। (२) इष्ट देवता की व्यक्तिगत उपाधियों और अंग प्रत्यंग का एकाग्र चित्त होकर मानसिक चिन्तन करना। अपने आपको इष्टदेव में विलीनकर देना।

ध्रुव–(१) ब्रह्माप्रपौत्र, महाराजा उत्तानपाद और सुनीती के पुत्र (दे–उत्तानपाद) उत्तानपाद की दो राणियाँ सुनीती और सुरुचि थीं। प्रत्येक से एक-एक पुत्र ध्रुव और उत्तम हुए। एक दिन दोनों बालक खेल रहे थे। उत्तम दौड़कर अपने पिता की गोद में बैठ गये। पिता की गोद में बैठने की उत्कट इच्छा से ध्रुव भी आ गये। पास खड़ी सुरुची को यह काम पसन्द न आया। उसने क्रोधावेश होकर बालक को पिता की गोद से धकेल दिया और कहा कि यदि तुम राजा की गोद मे बैठना चाहते हो तो विष्णु की आराधना कर मेरे उदर से जन्म लेना। बालक का कोमल हृदय इससे घायल हुआ और रोते हुए माँ सुनीती के पास गये। पति से परित्यक्ता राणी ने अपनी दुरवस्था का ख्याल कर पुत्र से कहा कि छोटी माँ ने जो कुछ कहा, ठीक ही है। तुम भगवान की तपस्या कर उच्च पद पद प्राप्त करो। पाँच साल के ही होने पर भी ध्रुव विरागी होकर राजमहल के सुख भोग को छोड़कर वन की ओर निकले। जंगल के घोर जानवरों और अनेक तरह की कठिनाइयों से वे घबराये नहीं। रास्ते में नारद मुनि मिले। बालक को इस कठिन उद्यम से मोड़ने की मुनि ने बड़ी कोशिश की। लेकिन बालक के ध्रुव निश्चय को देखकर प्रसन्न हो कर उन्होंने मन्त्रोपदेश दिया। ध्रुव ने क्रमशः सब कुछ छोडकर (खान-पान आदि) यमुना के किनारे मधुवन में तपस्या की। भगवान सन्तुष्ट होकर प्रत्यक्ष हुए और बालक को सबसे ऊँचा स्थान ध्रुव लोक दिया और यह भी वर दिया कि कल्पान्त काल तक उस लोक में नक्षत्र रूप रहेंगे।

ध्रुव के चले जाने पर राजा अत्यन्त दुखी हुए और अपने कर्म पर पछताने लगे। नारद मुनि से सब बातें जान गये। ध्रुव के वन से लौटने पर धूम-धाम से उनका स्वागत हुआ और वे युवराज बनाये गये। सुरुचि का भी मानसान्तर हुआ। ध्रुव की दो राणियाँ थीं एक प्रजापति शिशुमार की पुत्री ब्रह्मी जिससे कल्प और वत्सर नामक दो पुत्र हुए। दूसरी वायु-पुत्री इला जिससे उत्कल नामक एक पुत्र जन्मा। उत्तानपाद के बाद दीर्घकाल तक ध्रुव ने राज्य शासन किया। (२) राजा नहुष का पुत्र (३) धर्मदेव और धूम्रा के पुत्र जो अष्टवसुओं में से एक थे। (४) स्थिर (५) ध्रुव तारा (६) आकाश (७) वसुदेव और रोहिणी का पुत्र।

ध्रुवलोक–ब्रह्माण्ड का सबसे ऊँचा स्थान जहाँ ध्रुव नक्षत्र स्थित है। यह विष्णु पद है। इस ध्रुवलोक को घेर कर सप्तऋषि नामक सात नक्षत्र सब लोकों की मंगल कामना करते हुए भगवान् का ध्यान करते हैं।

ध्रुवसन्धि—कोसल देश के एक राजा।

ध्वंस—नाश।

ध्वनि—(१) अष्टवसुओं में आप का पुत्र (२) काव्य के तीन मुख्य भेदों में से सबसे उत्तम काव्य। इससे संदर्भ का ध्वन्यार्थ अभिहित अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारक होता है।

न

न—गणश, वृन्द, मोति ।

नकुल—पाण्डवों में चौथा । पाण्ड की पत्नी माद्री का एक पुत्र । दुर्वासा महर्षि ने कुन्ती को पांच मन्त्र दिये थे जिनमें से चार मन्त्रों के प्रभाव से कुन्ती के चार पुत्र हुए । शाप ग्रस्त पाण्डू स्त्री, संभोग नही कर सकते थे । निस्सन्तान माद्री का दुःख देखकर कुन्ती ने उसको शेष एक मन्त्र वता दिया । अश्विनी-कुमारों का ध्यान कर माद्री ने इस मन्त्र का जप किया और उनसे उसके दो पुत्र हुए नकुल और सहदेव । पाण्डू की मृत्यु के बाद माद्री जब सती हुई नकुल और सहदेव का पालन पोषण कुन्ती ने ही किया । ये चौथे पाण्डव थे । पांचाली से इनका शतानीक नामक एक पुत्र हुआ । चेदी राज कन्या करेणुमती मे विवाह किया और उनका निरमित्र नाम का एकपुत्र हुआ । (२) नेवला ।

नक्त—(१) रात (२) एक प्रकार का व्र ।

नक्तम् चर—रात को घूमने वाला, राक्षस ।

नक्तश्चर पति—रावण ।

नक्षत्र—तारा । पृथ्वी से पांच लाख और चन्द्र मण्डल से तीन लाख योजन अथवा २४ लाख मील दूरी पर नक्षत्र रहते हैं । काल चक्र से वँधे ये मेरु की परिक्रमा करते हैं । प्रधान नक्षत्र संख्या में २४ हैं । ये हैं--अश्विनी भरणी, कृत्तिका, रोहिणी या ब्राह्मी, मृगशिरा या अग्रहायनी, पुनर्वसु या यमक, पुण्य, आश्लेषा, माघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा या राधा, अनुराधा, ज्येष्टा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तारापाढ़ा, श्रावण, श्रविस्ता, शतभिण, पूर्वा भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती । दोनों आपाढ़ और श्रावण नक्षत्रों के बीच अभिजित हैं । पुराणों के अनुसार पहले के २७ नक्षत्र दक्ष की कन्यायें मानी जाती हैं जिनका पाणिग्रहण चन्द्र से हुआ ।

नक्षत्र कल्प—अथर्ववेद का एक विभाग ।

नक्षत्रनाथ—नक्षत्रपति, चन्द्रमा ।

नक्षत्र नेमि—(१) समस्त नक्षत्रों का केन्द्र स्वरूप-चन्द्रमा, ध्रुव तारा, विष्णु ।

नक्षत्र पथ—आकाश ।

नक्षत्र माला—तारापुंज ।

नक्षत्र योग—एक-एक नक्षत्र के दिन में दान करने से तदनुसार फल मिलता है । इसको नक्षत्रयोग कहते हैं ।

नक्षत्री—चन्द्ररूप विष्णु ।

नग—(१) पहाड़ (२) वृक्ष (३) सूर्य ।

नगर प्रदक्षिण—जुलूस में देव मूर्ति का नगर के चारों ओर घुमाना ।

नगाधिप—(१) हिमालय पर्वत (२) इन्द्र ।

नगारि—इन्द्र ।

नग्नजित—(१) कोसल के राजा जिनकी कन्या सत्या का विवाह श्रीकृष्ण से हुआ । ये भगवान के वड़े भक्त थे । (२) प्रह्लाद का एक असुर साथी ।

नचिकेत—प्रसिद्ध महर्षि । यमराज ने नाचिकेत को मृत्यु के बारे में जो उपदेश दिये उनका समग्रह है कठोपनिषद । नचिकेत के पिता यज्ञ में कमजोर और दुवली गायों को दान में दे रहे थे । इससे दु.खी होकर वालक नचिकेत ने पिता से कहा कि 'यज्ञ में सर्वस्व दान दिया जाता है । आप मुझे किसको दान में दे रहे हैं । पिता पहले चुप रहे । पुत्र के वार-वार पूछने पर गुस्से में कहा कि तुम्हें यम को दे रहा हूँ । वालक यमलोक पहुँचा ।

यम की अनुपस्थिति में बालक को तीन दिन निद्रा और आहार के बिना वहाँ रहना पड़ा। जब यम लौटे, बालक पर खुश होकर तीन वर माँगने को कहा। पिता का क्रोध शमन, स्वर्ग प्राप्ति के मार्ग, मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति का ज्ञान–ये तीन वर माँगे। पहले दो वर यम ने मान लिये। तीसरा वर कठिन होने के कारण और कोई वर माँगने को कहा। बालक ने नहीं माना। उसके हठ करने पर यम ने आत्मा की अनश्वरता और ईश्वर तत्व के बारे में अनेक उपदेश दिये। उनका संग्रह है कठोपनिषद।

नट–नाचने वाला, अभिनेता।

नटराज–शिव।

नटराजनृत्य–शिव का ताण्डव नृत्य।

नटवर–श्रीकृष्ण।

नट्वला–चाक्षुष मनु की वधू।

नन्द—(१) नन्दगोप जिन्होंने बाल्यावस्था में बलराम और श्रीकृष्ण का पालन-पोषण किया था। अष्टवसुओं मे प्रमुख द्रोण और उनकी पत्नी धरा ने कोई अपराध किया जिससे ब्रह्मा ने शाप दिया कि वे ग्वाल का जन्म लेंगे। द्रोण ने प्रार्थना की कि मनुष्य जन्म लेते समय भगवान विष्णु के प्रति उनमें भक्ति का सर्वोत्तम भाव रहे। ब्रह्मा ने कहा कि भगवान विष्णु श्रीकृष्ण के रूप में उनका पालित पुत्र होकर रहेंगे, पुत्र पर उनका निस्सीम स्नेह रहेगा और उनको मुक्ति मिलेगी। ये ही द्रोण और धरा नन्द और यशोदा होकर गोकुल में जन्मे। ये वसुदेव के बड़े मित्र थे। इसलिये कंस के आतंक से डरकर अपने पुत्र श्रीकृष्ण और अपनी पत्नी रोहिणी को गोकुल में नन्द की रक्षा में छोड़ा। रोहिणी पुत्र बलराम का जन्म यहीं हुआ। नन्द को मालूम नहीं हो सका कि श्रीकृष्ण उनका औरस पुत्र नहीं है। अपने पुत्र के समान नन्द और यशोदा ने बलराम और श्रीकृष्ण का तब तक पालन-पोषण किया और उनकी बाल-लीलाओं से परमानन्द प्राप्त किया जब तक वे मथुरा नहीं गये। (२) विष्णु का नाम (३) कश्यप वंश का एक नाग (४) वसुदेव और मदिरा का एक पुत्र।

नन्दन—(१) सुमेरु पर्वत के चारों ओर चार पर्वत हैं। जिनके निकट चार दिव्योद्यान नन्दन चैत्ररथ, वैभ्राजक और सर्वतोभद्र हैं। यह देवलोक का उद्यान है जहाँ देवता लोग दिव्यांगनाओं के साथ विहार करते हैं। (२) पुत्र (३) विष्णु का नाम, खुश करनेवाला।

नन्द प्रयाग–उत्तर खण्ड में पाच प्रयागों में से एक है जहाँ पश्चिम में त्रिशूल पहाड़ से आती हुई मन्दाकिनी नदी अलकनन्दा से मिलती है। यहाँ चण्डिका, लक्ष्मी, नारायण, महादेव, गोपाल जी आदि देवी-देवताओं के मंदिर हैं।

नन्दा—(१) अलकनन्दा (२) चान्द्रमास की तीन शुभ तिथियाँ-प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी।

नन्द्राश्रम–एक पवित्र स्थान।

नन्दि–(१) विष्णु (२) शिव का वाहन एक बैल।

नन्दिकेश–शिव के भूत गणों में से एक प्रमुख।

नन्दिग्राम–एक पुण्य स्थान। श्रीराम के वनवास के समय भरत दण्डकारण्य से श्रीराम की पादुकाओं को लाकर इसी ग्राम में रहे। भरत ने राजमहल के सुख भोग और ऐश्वर्य का त्याग कर अयोध्या से दूर इस ग्राम में योगी बनकर इन पादुकाओं की पूजा कर राज्य का पालन किया था।

नन्दिनी–(१) पुत्री (२) कामधेनु की पुत्री जिसकी सेवा पुत्रलाभ के लिये दिलीप ने की थी। (३) गंगा का विशेषण।

नन्दिवर्धन–जनक वंश के एक राजा उदावसु

के पुत्र, इनके पुत्र सुकेतु थे ।

नन्दीश्राद्ध–पितरों और देवताओं की प्रीति के लिये किया जाता है ।

नबी–मुसलमानों के मत के प्रणेता ।

नभ –(१) आकाश, अन्तरिक्ष (२) पानी ।

नभग–सातवें मनु श्राद्धदेव के पुत्र ।

नभचर–देवता उपदेवता, सूर्य, चन्द्र, तारे, पक्षी आदि ।

नभमणि–सूर्य ।

नभस्वान–नरकासुर का एक पुत्र ।

नमस्कार–सादर प्रणाम, अभिवादन ।

नमस्यु–पूरु वश के राजा प्रवीर के पुत्र, इनके पुत्र चारुपाद थे ।

नमुचि–कश्यप ऋषि और दनु का पुत्र एक असुर । राजा बलि का अनुचर था। इसको वर मिला था कि न दिन में, न रात को, न गीले से, न सूखे से कोई उसे न मारेगा । इन्द्र ने उसको पानी के झाग से सन्ध्या समय सिर काट कर मार डाला ।

नम्बूतिरि–केरल के निवासी 'नायर' लोगों के बाद आर्यवर्ग के ये लोग केरल में आकर बसे । इतिहासकारों का मत है कि ये लोग गोदावरी, नर्मदा, कावेरी आदि नदियों के तीर प्रदेश से आये । ये वेदज्ञ, अपार पण्डित थे । इनका संस्कार केरलियों पर पड़ा । संस्कृत भाषा और आर्य संस्कार का प्रचार हुआ । इन लोगों ने केरलियों के आचार भी स्वीकार किये ।

नय–(१) नीति, शासन (२) सिद्धान्त ।

नर–(१) धर्म और दक्ष पुत्री मूर्ति के पुत्र (दे नर–नारायण) (२) तामस मनु के एक पुत्र (३) अर्जुन का पूर्वजन्म (४) एक गन्धर्व (५) सूर्यवंश के राजा सुधृति के पुत्र । इनके पुत्र केवल थे ।

नरक–मनुष्य के सभी कर्म सत्व, रज और तमो गुणों के प्रभाव से होते हैं । श्रद्धा के अनुसार उनकी कर्मगति होती है । पाप कर्मों का फल भोगने के लिये मनुष्य मृत्यु के बाद नरक नामक स्थान में जाते हैं । ये संख्या में २१ हैं और दक्षिण में भूगर्भ के नीचे ब्रह्माण्ड जल के ऊपर स्थित माने जाते हैं । पाप कर्म की तीव्रता के अनुसार नरक कर्ता को मिलता है ।

नरकासुर–भूमि देवी का पुत्र एक असुर । इसको वर मिला था कि भगवान विष्णु को छोड़कर कोई इसे नहीं मारेगा और वह भी भूमि की अनुमति के बिना नहीं मारेंगे । यह बड़ा वीर और पराक्रमी था । देवताओं में भय पैदा किया, इन्द्र का छत्र देवमाता अदिति के कुण्डल छीन लिये, देवों, मनुष्यों और गन्धर्वों की सुन्दर कन्याओं को और अप्सराओं को अपने अन्तःपुर में कैद कर रखा । ये कुल सोलह हजार थीं । प्राग्ज्योतिष नामक नगर इसकी राजधानी थी । अन्तःपुर की रक्षा नरकासुर के पुत्र करते थे । राजधानी की सीमा पर मुर नामक असुर ससैन्य पहरा देता था। इन्द्र की प्रार्थना पर श्रीकृष्ण सत्यभामा के साथ गरुणारूढ़ होकर प्रागज्योतिषपुर गये और नरकासुर के साथ युद्ध कर उसको मारा। सत्यभामा को भगवान इसीलिये ले गये क्योंकि सत्य भामा भूमिदेवी की अंशसंभवा मानी जाती थी । नरकासुर के पुत्र भगदत्त को राजा बनाया । जो युवतियां अन्तःपुर में कैद थीं, श्रीकृष्ण के दर्शनमात्र से इनके प्रेम में मुग्ध हो गयीं । और उनको अपना पति मान लिया । श्रीकृष्ण ने इन युवतियों के साथ द्वारका में जाकर विवाह किया । भूमि का पुत्र होने के कारण नरकासुर भौम भी कहलाता था ।

नरककुण्ड–नरक का गढ़ा जहां पापियों को अनेक प्रकार की यातनायें दी जाती हैं ।

नर-नारायण–धर्म और दक्ष पुत्री मूर्ति के दो पुत्र । ये भगवान के ही अंशरूप थे । दोनों ने बदरिकाश्रम में अनेक काल तपस्या की ।

जिस पर्वत पर नर ने तपस्या की उसको नर पर्वत और जिस पर नारायण ने तपस्या की उसको नारायण पर्वत कहते हैं। इनकी तपस्या से डरकर इन्द्र ने कामदेव को अपने दल-बल सहित भेजा था, लेकिन पराजित हुआ (दे:—ऊर्वशी) अर्जुन नर का रूप और श्रीकृष्ण नारायण का स्वरूप थे।

नरसिंह—नरहरि, नृसिंह। भगवान विष्णु का एक मुख्य अवतार जिनका मुँह शेर का था और शरीर मनुष्य का था। दिति के पुत्र हिरण्यकशिपु बड़े दुराचारी थे, विष्णु के घोर शत्रु थे। उनके राज्य में भगवान का नाम लेना तक दण्डनीय था। इनके पुत्र प्रह्लाद विष्णु के बड़े भक्त और ज्ञानी थे। प्रह्लाद जब बालक थे अध्ययन के लिये गुरुपुत्र नियुक्त किये गये। लेकिन प्रह्लाद ने गुरु की बातें न सीखी। भगवान का ध्यान करते थे। अपनी आज्ञा का उल्लंघन अपने ही पुत्र से होने पर हिरण्यकशिपु कुपित हुए और बालक को अनेक प्रकार के कष्ट दिये गये और उनकी हत्या करने की अनेक चेष्टाएँ की। भगवान की कृपा से ये सब निष्फल हो गयीं। अन्त मे पुत्र की हत्या करने पर तुले पिता ने भगवान की परीक्षा लेने के लिये खम्भे पर तलवार मारी। उस खम्भे से ब्रह्माण्ड कटाह को भी हिलाने वाले भयंकर शब्द के साथ एक अपूर्व रूप निकला जो आधा सिंह और आधा मनुष्य था। ब्रह्मा ने असुर राजा को वर दिया था कि कोई मनुष्य, जानवर, देवता, पशु पक्षी उन्हें न मारेगा, न किसी आयुध से न दिन में, न रात को, न ऊपर न नीचे से उन्हें मारेगा। इस प्रकार का कठिन वर देने के कारण भगवान को इस प्रकार का अदृष्टपूर्व अद्भुत रूप धारण करना पड़ा। वर की मर्यादा रखने के लिये नृसिंह भगवान ने देहली में बैठकर असुर को गोदी में लिटा कर सन्ध्या के समय नाखूनों से पेट चीर कर अन्तड़ियाँ बाहर निकालीं। इस भयंकर मूर्ति को देख कर ब्रह्मादि सभी देवता डर गये, यहाँ तक लक्ष्मी देवी भी डर गई। भयंकर होने पर भी वे दिव्य मूर्ति दया के सागर, भक्तवत्सल थे। प्रह्लाद की भक्ति से वे अतीव सन्तुष्ट हुए (दे प्रह्लाद, हिरणकाशिपु)।

नरसिंह शिला—बदरी विशाल में स्थित एक शिला है। ऋषि-मुनियों की प्रार्थना पर हिरण्यकशिपु के वध के बाद भगवान नृसिंह एक वृहत मूर्ति के आकार में यहा रहते हैं।

नरान्तक—नारायण का एक सेनापति।

नरिष्यन्त—वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

नर्तनप्रिय—(१) शिव (२) श्रीकृष्ण।

नर्मदा—(१)दक्षिण भारत की एक प्रमुख नदी। (२) राजा पुरु कुत्स की पत्नी नागकन्या (दे—पुरुकुत्स)।

नस्त्रेत—क्रिस्तु का जन्म स्थान।

नल—(१) निषध देश के विख्यात राजा। बड़े चरित्रवान वीर योद्धा, उदार, सर्व सद्‌गुण सम्पन्न थे। देवताओं में भी ईर्ष्या पैदा कर विदर्भ राजकुमारी दमयन्ती से विवाह किया। दमयन्ती को न मिलने के कारण निराश कलि और द्वापर ने मिलकर नल का नाश करने के लिये नल के सौतेले भाई पुष्कर से जुआ खिलाया और धोखे में हराया। कलि नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया था। नल की सारी सम्पत्ति और राज्य छीन लिया गया और वे पत्नी के साथ राज्य से निर्वासित किये गये। नल ने वन में दमयन्ती को यह सोच कर छोड़ कर चले गये कि अकेली होने पर कोई उसकी रक्षा करेगा। रास्ते में नल ने कार्कोटक नामक सर्प-श्रेष्ठ की जान बचायी। कार्कोटक ने उनको काट कर कुरूप बनाया। एक वस्त्र देकर यह कहा कि मैं कृतघ्न नहीं हूँ, यह विरूपता काम

आयगी । स्वरूप पाने के लिये यह वस्त्र पहन लेना । नल अयोध्या नरेश ऋतुपर्ण की राजधानी में पहुँचे और उनके सारथी बने । दमयन्ती के कल्पित दूसरे विवाह के लिये नल ऋतुपर्ण को एक ही दिन में ले गये । रास्ते में उनको अश्वहृदय बताकर उनसे अश्व विद्या सीखी । दमयन्ती और उनकी सखी केशिनी की कुशलता से नल को अपना प्रच्छन्न वेष छोडना पड़ा और दमयन्ती से उनका मिलन हुआ। पुष्पकर को पराजित कर अपनी सम्पत्ति और राज्य पुनः प्राप्त किया । (२) सुग्रीव की वानर सेना का एक प्रमुख वानर, विश्वकर्मा का पुत्र । वर प्रसाद के बल से नल से फेंका हुआ जल पत्थर जल के ऊपर तैरता रहता है । इसलिये जब श्रीराम सीता की खोज में लंका जाने लगे सेतु बन्धन करने के लिये वानरों के लाये हुए पत्थर-पहाड़ आदि नल ने ही समुद्र में फेंक कर पुल बनाया । (३) ययाति पुत्र यदु के प्रसिद्ध पुत्र ।

नलकूवर–कुबेर के दो पुत्र थे नलकूबर और मणिग्रीव । एक बार ये दोनों मदमस्त होकर देवांगनाओं के साथ जल-क्रीड़ा कर रहे थे । विष्णु दर्शन कर नारद उधर से निकले । देवांगनाओं ने घबड़ा कर वस्त्र पहन लिये । लेकिन नलकूवर और मणिग्रीव नग्नावस्था में ही क्रीडा करते रहे । नारद ने कुपित हो कर शाप दिया कि वे पेड़ बन जायेंगे । दुःखी होकर उनके प्रार्थना करने पर दयार्द्र महर्षि ने अनुग्रह किया कि द्वापर युग में श्रीकृष्ण के दर्शन से मोक्ष होगा । इसके अनुसार ये दोनों अनेक काल युगल अर्जुन पेड़ के रूप में गोकुल में रहे । श्रीकृष्ण जब बालक थे तब एक बार मक्खन की चोरी करने के अपराध में मैया यशोदा ने उनको ओखल से बांध दिया । ये ओखल को भी साथ घसीटकर उन दोनों वृक्षों के बीच से गये और दोनों वृक्ष गिर पड़े । उनमें से दो सुन्दर गन्धर्व निकले । नलकूवर और मणिग्रीव को शापमोक्ष मिला और वे भगवान की स्तुति कर अलकापुरी चले गये ।

नलतन्तु–विश्वामित्र का एक पुत्र ।

नलिनी–(१) कमल का पौधा (२) देवी का नाम (३) गंगा की उपनदी (४) जिस स्त्री के हाथ पैर नाक, मुँह आदि अत्यन्त सुन्दर हैं उसको नलिनी कहते है । (५) भरत वंश के राजा अजमीढ़ की पत्नी ।

नलन्दा–प्राचीन भरत का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ।

नवनिधि–कुबेर के नौ खजाने :–महापद्म, पद्म शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्दनील, खर्व ।

नवनीत चोर–श्रीकृष्ण ।

नवरत्न–(१)सुप्रसिद्ध नवरत्न-मोती, माणिक्य, हीरा गोमादक, वैडूर्य, विद्रुम, पद्मराग, मरतक, नील । (२) राजा विक्रमादित्य की पण्डित सभा में नौ कवि विख्यात थे । राजा बड़े ज्ञानी और पण्डित थे । ये नव कवि नवरत्न कहलाते थे । वे थे धन्वन्तरि, क्षपणक, अमर सिंह, शंकु, बेताल, भट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर,वररुचि ।

नवरात्री–(१) दशहरा के समय दुर्गा की पूजा नव रात्रि में की जाती है । भारत भर में यह पूजा होती है । पूजा विधि में प्रान्त-प्रान्त में थोड़ा फरक है । अश्विन मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम नौ दिन यह पूजा होती है । (२) श्रीराम नवमी के पहले नौ दिन से (प्रथमा से लेकर नवमी तक)नवरात्रि मनायी जाती है और श्रीराम के जन्म के उपलक्ष्य में व्रत भी रखा जाता है ।

नश्वर–अनित्य, क्षणभंगुर, विनाशकारी ।

नहुष–सोम वंश के प्रसिद्ध राजा पुरूरवा के पौत्र और अयुस के पुत्र । अयुस और उनकी पत्नी दीर्घकाल तक निस्सन्तान रहे । फिर

दत्तात्रेय महर्षि के अनुग्रह से पुत्रलाभ हुआ। लेकिन पुत्र का जन्म होने पर हुण्ड नामक एक असुर अन्तपुर से शिशु को चुरा कर ले गया और उसे पकाने को रसोइया को दिया। कोमल शिशु को देखकर रसोइये का दिल पसीजा और उसने बालक को वसिष्ठ के आश्रम के पास छोड़ दिया। वसिष्ठ ने शिशु का नाम नहुष रखा और पाला-पोसा। हुण्डासुर ने श्री पार्वती की पालिता पुत्री अशोक सुन्दरी से विवाह करना चाहा। अशोक सुन्दरी इसके लिये तैयार नहीं थी। श्रीपार्वती से उसको वर मिला कि नहुष उससे विवाह करेंगे। बड़े होने पर वसिष्ठ और देवदूतों से नहुष को अपना पूर्वचरित्त मालूम हो गया। नहुष ने हुण्डासुर को युद्ध में मार दिया और अशोक सुन्दरी से विवाह किया। वे बड़े प्रतापी, बलवान, बुद्धिशाली राजा थे। उनके ययाति, ययाति आदि छः पुत्र हुए। वृत्तासुर को मारने से इन्द्र को ब्रह्म हत्या का पाप लगा था। प्रायश्चित करने के लिये एक सरोवर मे जा छिपे। देवताओं ने नहुष को जो वैष्णव यज्ञ कर पवित्र हो गये थे, इन्द्र बनाया। इन्द्र पद पाकर मस्त नहुष इन्द्राणी पर आसक्त हुए। अपनी पालकी उठाने को सप्त ऋषियों को नियुक्त कर इन्द्राणी के घर जाते हुए नहुष ने 'सर्प, सर्प' (तेज, चलो तेज चलो) ऋषियों से कहा। कुपित होकर अगस्त्य मुनि ने राज सांप (सर्प) बन जाने का शाप दिया वे आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े और अनेक काल तक इस दुरवस्था मे पड़े रहे। युधिष्ठिर ने उनका उद्धार किया।

नाक—(१) स्वर्ग (२) आकाश।

नाकचर—देव।

नाकलोक—स्वर्ग।

नाकवनिता—अप्सरा।

नाग—(१) एक प्रकार का सांप (२) एक असुर (३) मेरु के पास एक पर्वत (४) हाथी।

नागकेतन—दुर्योधन का विशेषण।

नागचूड़ा—शिव।

नागतीर्थ—कुरुक्षेत्र का एक पुण्य क्षेत्र।

नाग नक्षत्र—अश्लेषा नक्षत्र। आश्विन महीने में इस नक्षत्र के दिन सांपों की पूजा होती है। केरल में सर्पपूजा बहुत प्रचलित है।

नागपंचमी—श्रावण शुक्ला पंचमी को मनाया जानेवाला एक त्योहार।

नागपाश—वरुणास्त्र। युद्ध मे इस अस्त्र के द्वारा शत्रुओं को नाग के पाश मे बांधा जाता है।

नागपुर—नैमिषारण्य में गोमती नदी के तट पर स्थित एक देश, आधुनिक नागपुर।

नागपुष्प—(१) चम्पक का पौधा। चम्पक फूल की अत्यधिक सुगंध के कारण कहा जाता है कि इस पौधे के पास सांप रहते हैं। (२) पुन्नाग वृक्ष।

नागबल—भीमसेन का विशेषण, हाथी के समान बलवान।

नागवेलि—पान की लता।

नाग भूषण—जिनके भूषण सांप है ऐसे भगवान शिव।

नागराज—(१) शेष नाग (२) वासुकि।

नागलोक—पाताल जहां नाग, सांप रहते है। यहां शंख, कुलीक, महाशंख, श्वेत, धृतराष्ट्र, शंखचूड़ा, देवदत्त आदि नागश्रेष्ठ रहते हैं जिनमें वासुकि प्रमुख हैं। इन नागों के पांच, दस- सौ, हजार, तक के फण होते हैं। उन पर के चमकते हुए रत्नों के कारण पाताल का अन्धकार दूर रहता है और वहां हमेशा उज्ज्वल प्रकाश रहता है। यह प्रदेश रत्नों से भरा है और सब जगह सोने और रत्न से अलंकृत है।

नागवीथी—दक्षपुत्री यामी और धर्म की पुत्री।

नागवृक्ष—सुगन्धित फूलों का एक वृक्ष।

नागशत–एक पर्वत जिस पर बैठ कर पाण्डू ने कुन्ती और माद्री के साथ तपस्या की थी।

नागारि–(१) गरुड़, (२) मोर।

नागार्जुन–चिरायु नामक राजा का मन्त्री।

नागार्जन कोंडा–आन्ध्र देश का एक नगर जो पुरातन काल में बुद्ध मत का केन्द्र था। अब भी वह बौद्ध अवशिष्टों के लिये प्रसिद्ध है।

नाचिकेत–अग्नि।

नाड़ी–(१) धमनी, शरीर में हजारों नाडियां हैं जो शरीर भर में व्याप्त है। (२) आधे मुहूर्त का समय।

नाड़ीचक्र–शरीर की नाडियों में दस मुख्य है। जिनके सहारे ध्यानस्थ होकर योगी पांच प्राणों को काबू में करते हैं। ये नाड़ियां नाभिस्थल से निकल कर सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हैं। ये चक्र के रूप में बन्धी रहती हैं। इनको नाडीचक्र कहते हैं। मुख्य नाडियां हैं इड़, पिंगला, सुषुम्ना आदि। इन पर कुछ चोट लगने से प्राण हानि तक होती है।

नाड़ीजंघ–कश्यप ऋषि का एक पुत्र पक्षी।

नाभ–महाराजा भगीरथ के पौत्र, इनके पुत्र सिन्धुद्वीप थे।

नाभाग–(१) सातवें मनु श्राद्धदेव के एक पुत्र, इक्ष्वाकू के भाई। (२) कुश वंश के राजा (३) वैवस्वत मनु के पुत्र नभग के पुत्र। ये बड़े सत्यवादी और ज्ञानी थे। इनके भाईयों ने इनकी अनुपस्थित में आपस में पैतृक सम्पत्ति बांट दी। अध्ययन के बाद ये गुरु के घर से लौट आये और अपने हिस्से में बूढ़े पिता को पाया। पिता के विदेश से उन्होंने अंगिरा के गोत्रज ब्राह्मणों को सूक्त बता कर उनको स्वर्ग जाने में मदद दी। बदले में उनको यज्ञ का शेष धन दिया गया। उस समय भगवान शिव, जो यज्ञशेष के स्वामी हैं, वहां उपस्थित हुए। नाभाग ने पिता से पूछ कर शिव से कहा कि यज्ञ शेष के अवकाशी आप ही हैं। उनकी सत्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर शिव ने उनको ब्रह्मज्ञान दिया और यज्ञ में बचा धन दिया। उन्हीं नाभाग के पुत्र थे विख्यात विष्णुभक्त महाराजा अम्बरीष।

नाभिज–ब्रह्मा जो महाविष्णु की नाभि से जन्में।

नाभिपद्म–महाविष्णु की नाभि से निकला दिव्य पद्म जिसमे ब्रह्मा का आविर्भाव हुआ। (दे:–दिव्य पद्म)।

नाभि–स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के पुत्र अग्नीन्ध्र और पूर्वचित्ती नाम की अप्सरा के पुत्र। इनकी पत्नी मेरुदेवी थी। इनके पुत्र थे भगवान के अंशसंभव ऋषभदेव।

नाभि–विष्णु का नाम।

नारद–देवर्षि नारद को भगवान का मन कहा गया है। ये परम तत्वज्ञ, परम प्रेमी भक्त, दिव्य ऋषि और अर्धरेता ब्रह्मचारी हैं। भक्ति के प्रधान आचार्य हैं। प्रह्लाद, ध्रुव, अम्बरीष आदि महान भक्तों को उन्होंने भक्तिमार्ग में प्रवृत्त किया और श्रीमद्भागवत तथा वाल्मीकि रामायण जैसे दो अनूठे ग्रन्थ भी इन्हीं की कृपा से संसार को प्राप्त हुए। ये पूर्व जन्म में दासी पुत्र थे। जब पांच वर्ष के थे मा की अकस्मात् मृत्यु हुई। बचपन से ही मां के साथ ज्ञानी मुनियों की सेवा करते थे, इसलिये विरक्ति का अंकुर मन में बोया गया। मां की मृत्यु के बाद संसार के बन्धनों से मुक्त होकर जंगल में भगवान के स्वरूप का ध्यान करने लगे। उस जन्म में उनको भगवान की एक झलक मिली। दूसरे कल्प में दिव्य विग्रह धारण कर ब्रह्मा के मानस पुत्र होकर उनकी जांघ में से जन्मे। अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर वीणा बजा कर भगवान के गुणों को गाते रहते हैं और कल्याण करते रहते हैं।

वेद और उपनिषदों के मर्मज्ञ, देवगणों से पूजित, इतिहास और पुराणों के विशेषज्ञ मेधावी, नीतिज्ञ, त्रिकालदर्शी, सकल शास्त्र, निपुण, संगीत विशारद, भगवान के अत्यन्त प्रिय भक्त हैं। देवता और मनुष्यों के बीच कलह का बीज बोने के कारण इनको 'कलह प्रिय' की उपाधि मिली है। वे ऐसा इसलिये करते थे कि सज्जनों का कल्याण होता था, दुर्जनों का गर्व नाश भी। साथ ही अपने प्रिय भगवान की लीलाओं का आनन्द भी मिलता था।

२–मेरु के पास एक पर्वत।

नारद कुण्ड–बदरि विशाल मे अलकनन्दा का का एक कुण्ड। इसमें से बदरी नाथ की मूर्ति पायी गई थी।

नारद भक्ति सूत्र–नारद की रची भक्ति विषयक मन्त्र-रूप में एक कृति।

नारद शिला–बदरी नाथ में तप्तकुण्ड और नारद कुण्ड के बीच में स्थित एक शिला। यहां की सबसे मुख्य शिला है।

नारद स्मृति–नारद ऋषि की रची एक आचार संहिता।

नारसिंहवपु–महाविष्णु, नरसिंह का रूप धारण करने वाले।

नाराच–लोहे का तीक्ष्ण बाण।

नारायण–(१) एक ऋषि (दे: नर-नारायण) (२) महाविष्णु जल में शयन करने वाले।

नारायण कवच–शत्रु नाश कारी, विपत्तियों को दूर करने वाला मन्त्र। इसका जप करने से सब स्थलों में सब प्रकार के शत्रुओं को जीत सकते हैं, सब तरह की आपत्तियों से बच सकते हैं। भगवान विष्णु के स्तुति स्वरूप इस मन्त्र का उपदेश त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप ने इन्द्र को दिया था। इसी के प्रभाव से इन्द्र वृत्र आदि असुरों को जीत सके।

नारायणाश्रम–एक पवित्र स्थान जहां नर-नारायणों का आश्रम था।

नारयणास्त्र–एक अमोघ अस्त्र जिसके देवता विष्णु हैं।

नारायणी–(१)लक्ष्मी देवी (२) दुर्गा।

नारायणी सेना–भगवान की अतुल बल शालिनी सेना। महाभारत के युद्ध में भगवान ने अपनी इस विपुल सेना को दुर्योधन के मांगने पर दिया था।

नारी–(१)मेरु देवी की पुत्री (२) स्त्री।

नारीकवच–अयोध्या नरेश मूलक का अमर नाम परशुराम के क्रोध से नारियों के द्वारा बचाये जाने से यह नाम पड़ा।

नारीतीर्थ–पांच पुण्य तीर्थ। पाच तीर्थ हैं-अगस्त्य तीर्थ, सौभद्रतीर्थ, पौलोम तीर्थ, कारङमती तीर्थ और भरद्वाज तीर्थ। इनमें वर्गा नाम की अपसरायें शापग्रस्त होकर मगर बन कर रहती थी। इसलिये नारी तीर्थ नाम पड़ा। एक बार तीर्थ यात्रा के समय अर्जुन ने इसमें स्नान किया। इससे अप्सराओं को शापमोक्ष मिला।

नालिकेर–नारियल।

नाव्याश्रम–महर्षि लोमपाद का आश्रम।

नास्तिक–निरीश्वरवादी।

नाहुष–नहुष के पुत्र, महाराज ययाति।

निऋति–(१) मृत्यु का देवता (२) एक अष्ट दिकपाल।

निकुंभ–(१) कुंभकर्ण का अति बलवान पुत्र, कुंभ इसका भाई था। निकुंभ हनुमान से और कुंभ सुग्रीव से मारे गये। (२) इक्ष्वाकु वंश का एक राजा, हर्यश्व का पुत्र (३) प्रह्लाद का पुत्र (४) शिव का एक भूत, अनुचर भूत।

निकुंमिला–लंका के समीप एक स्थान जहां रावण यज्ञ करते थे।

निखिलेश्वरी–समस्त प्रपंच की ईश्वरी, देवी।

निगम–(१) वेद का मूलपाठ (२) ऋषियों के

वचन ।

नितम्बू–एक महर्षि ।

नित्यक्लिन्ना–दया से सदा आर्द्र देवी, दयामूर्ति ।

नित्यबुद्धा–चिद्रूपिणी देवी जो हमेशा जाग्रतावस्था में रहती है ।

नित्यमुक्त–मायाजनित सुख दुखादि द्वैतभाव से मुक्त और शरीरजन्य विषय वासनाओं से जिसका कोई बन्धन नहीं है । ब्रह्म नित्यमुक्त है । इसलिए ब्रह्म से ऐक्यता प्राप्त करने वाला भी नित्यमुक्त है ।

नित्या–सदा सर्वदा स्थित देवी, अविनाशिनी ।

निदाघ–ब्रह्मा का पौत्र, पुलस्त्य का पुत्र । ब्रह्मा के पुत्र ऋभु से वेदाध्ययन किया और ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया ।

निधिध्यास–आत्म चिन्तन । भक्ति विषयक और ज्ञानपूर्ण बातें सुनकर और पढ़ कर उन पर एकाग्र चित्त से चिन्तन कर मनन करने को निधिध्यास कहते हैं ।

निद्रा–सुषुप्तावस्था ।

निधन–नाश, मृत्यु, अन्त ।

निविड़–क्रौंच द्वीप का एक पर्वत ।

निमि–(१) महाराज इक्ष्वाकु के प्रसिद्ध पुत्र । निमि ने कुलगुरु वशिष्ठ को यज्ञ में ऋत्विक बनने के लिये कहा । वशिष्ठ ने इन्द्र के सत्र में शामिल होने का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया था, अतः उनके लौटने तक रुकने को कहा । जीवन की क्षण भंगुरता को समझ कर निमि ने दूसरे पुरोहितों से सत्र शुरू किया । स्वर्ग से लौटने पर अपने शिष्य के इस कर्म से वशिष्ठ कुपित हो गये और शाप दिया कि तुम्हारा शरीर गिर जायगा । निमि ने प्रतिशाप दिया कि सत्यासत्य का विवेचन न करने के कारण आपका भी शरीर गिरेगा । निमि का शरीर गिर पड़ा, वशिष्ठ का भी । वशिष्ठ मित्रावरुणों और उर्वशी का पुत्र होकर जन्मे । सत्र की समाप्ति पर पुरोहितों की प्रार्थना पर देवता लोग निमि को जिलाने को तय्यार थे । लेकिन महाराज निमि इस असार संसार के क्षणस्थायी सुख-दुःख भोगना नहीं चाहते थे, भगवान के चरण-कमलों का ध्यान करना चाहते थे । देवताओं ने वर दिया कि शारीरियों की आँखों में रहो । इस तरह निमि शरीरधारियों की आँखों के पलकों में निमिष रूप रहने लगे । राजा के अभाव में अराजकत्व के डर से पुरोहितों ने निमि के शरीर को मथा और उसमें से जनक नामक एक राजकुमार पैदा हुए जिससे जनक वंश चला । विदेह के पुत्र होने से वे वैदेह कहलाने लगे । उनका एक और नाम था मिथिला, उन्होंने मिथिला नगरी बसायी थी और उनके वंशज मैथिलेश भी कहलाते थे । (२) अत्रिकुल का एक राजा (३) कौशाम्बी के राजा दण्डपाणी के पुत्र, इनके पुत्र क्षेमक थे ।

निमिष–(१) महाविष्णु का नाम, योगनिद्रा में मुंदे हुए नेत्रों वाले (२) काल माप, निमिष मात्र का समय ।

निम्न–वृष्णि वंश के अनमित्र के पुत्र ।

निम्नगा–पहाड़ी नदी ।

निम्लोच–सूर्यस्त ।

निम्लोचि–यादव वंश के भजमान के पुत्र ।

निम्लोचिनी–पश्चिमी दिशा के दिक्पालक वरुण देव की नगरी जो मानसोत्तर पर्वत पर स्थित है, यह मेरु पर्वत के पश्चिम में है ।

नियति–मेरु की पुत्री । भृगु और ख्याति के के पुत्र विधाता से विवाह हुआ नियति के प्राण नामक एक पुत्र हुये । प्राण प्रसिद्ध ऋषि मार्कण्डेय के पितामह थे ।

नियम–अष्टांग योग के आठ अंगों में से एक है । यह बहिरंग साधनों में से है । सब प्रकार से बाहर और भीतर की पवित्रता (शौच, प्रिय-अप्रिय, सुख-दुख आदि प्राप्त होने पर

सदा सर्वदा सन्तुष्ट रहना (संतोष), एकादशी आदि व्रत उपवास करना (तप), कल्याणप्रद शास्त्रों का अध्ययन तथा ईश्वर के नाम और गुणों का कीर्तन (स्वाध्याय); सर्वस्व ईश्वर के अर्पण करके उनकी आज्ञा का पालन करना (ईश्वर प्रणिधान इन पांचों का नाम नियम है।

नियुत–दस लाख।

नियुतायु—राजा श्रुतायु का पुत्र।

नियोग–(१) आदेश (२) प्राचीन काल में (वैदिक काल में) अपुत्र पुरुष या स्त्री अपनी स्त्री या पति से सन्तानोत्पत्ति न कर सके तो दूसरी स्त्री या पुरुष से पुत्रोत्पादन कर सकते थे। इसको नियोग कहते हैं। इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'क्षेत्रज्ञ' कहलाता था।

निरमित्र–(१) नकुल और करेणुमती का पुत्र (२) कौशाम्बी के राजा अयुतायु के पुत्र, इनके पुत्र सुनक्षत्र थे।

निरवद्य–विष्णु का नाम, अज्ञान रहित।

निरविन्द–एक पर्वत।

निरागा–इच्छा रहित देवी जिनकी कोई इच्छा पूर्ण होने को नहीं रहीं।

निराधार–महाविष्णु का नाम, जिनका कोई आधार नहीं है।

निराधारा–(१) देवी जिनका कोई आधार नहीं है। (२) निराधारा नामक पूजा स्वरूपिणी पराशक्ति की पूजा बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार की है। बाह्य पूजा भी वैदिक और तान्त्रिक दो प्रकार की है। उसी प्रकार आन्तरिक पूजा भी दो प्रकार की है साधारा और निराधारा। साधारा पूजा में प्रतिम आदि में देवी का आवाहन कर पूजा होती है निराधारा पूजा मानसिक होती है।

निरामय–(१) विष्णु का नाम, जिनको कोई दुःख या रोग नहीं है २) एक राजा।

निरालम्ब–(१। जिनका कोई और आश्रय नहीं है (२) भगवान विष्णु का विशेषण।

निराश्रय–विष्णु का विशेषण, जो सबके आश्रय हैं और जिनका कोई आश्रय नहीं है।

निरुपम–विष्णु का विशेषण, जिनकी उपमा किसी और से नहीं की जा सकती।

निर्गुण–विष्णु का विशेषण, जिन पर सत्व, रज, तम आदि गुणों का कोई प्रभाव नहीं है।

निर्मदा–अज्ञान जनित अविवेक से रहित देवी।

निर्मम–विष्णु का विशेषण जिनमें 'मम, मेरा' ऐसा ममत्व भाव नहीं है।

निर्मल–विष्णु का नाम, मल रहित, पाप रहित, शुद्ध सत्वा।

निर्माल्य–(१) शुद्धता (२) किसी देवता के चढ़ाने का अवशिष्ट फूल। देवता की मूर्ति पर समर्पित करने के बाद निकाला गया फूल या माला।

निर्वाण—विदेह मुक्ति, मोक्ष।

निर्विकार–विष्णु का विशेषण; राग, द्वेष, क्रोध आदि विकारों से रहित।

निर्विन्ध्या–ऋक्ष पर्वत के पास चट्टानों से टकराती हुई बहने वाली एक नदी। यहां बैठ कर अत्रि मुनि ने तपस्या की थी।

निर्वेद–शोक, विरक्ति, निराशा।

निवातकवच–रसातल में रहने वाले असुर, नागों की तरह बिलों में रहते हैं। कश्यप ऋषि और उनकी पत्नियों दिति और दनु के पुत्र हैं। इनके तीन विभाग हैं निवातकवच, कालकेय, हिरण्यपुरवासी। ये देवलोक में जाकर इन्द्रादि देवताओं पर अत्याचार करते थे। इन्द्र की प्रार्थना से अर्जुन ने स्वर्ग में जाकर इनसे युद्ध कर इनका नाश किया।

निवृत्तकर्म–वैदिक कर्म दो प्रकार के हैं। निवृत्त और प्रवृत्त। निवृत्त कर्म बाह्य संसार से मन को अन्दर की ओर खींच लेता है, जबकि प्रवृत्त कर्म मन को सांसारिक विषयों की ओर आकृष्ट करता है। निवृत्त कर्म से कर्ता

अमरत्व और मोक्ष पाता है, प्रवृत्त कर्म का कर्ता कर्म फल भोगने के लिये फिर से संसार में जन्म लेता है । अग्निहोत्र, पूर्णमास्य, वैश्व-देव, बलि कर्म आदि प्रवृत्त कर्म हैं । निवृत्त कर्मवाला आर्चिमार्ग से जाकर भगवान को प्राप्त करता है ।

निवृत्ति–(१)–शान्ति, वैराग्य विराम (२) यदुवंशज दृष्टि के पुत्र इनके पुत्र दशार्व थे ।

निवेद्य–किसी देव मूर्ति को भोग लगाना ।

निशठ–बलभद्र और देवकी का पुत्र ।

निशा–रात ।

निशाकर–(१) चन्द्र (२) अतीत पूज्य एक मुनि । पंख के जलने पर गिद्धराज संपाति विन्ध्याचल के ऊपर निशाकर मुनि के आश्रम के पास गिर गया था । महर्षि ने इसकी रक्षा की और संपाति कई साल मुनि के पास रहा । महर्षि ने रामायण की कथा सुनायी और कहा कि वानर सेना सीता की खोज में आयगी, उसको सीता का पता बताने पर फिर से पंख निकलेंगे ।(दे: संपाति) (३) कपूर ।

निशाचर–रात को घूमनेवाला । राक्षस, पिशाच, भूत, प्रेत आदि ।

निशाचरी–राक्षसी ।

निशापति–चन्द्रमा ।

निशापुष्प–सफेद कमलिनी, रजनी गंधा; रात को खिलती है ।

निशीथ (१) चन्द्रमा (२) ध्रुव के वंशज एक राजा

निशुंभ–कश्यप प्रजापति और दक्षपुत्री दिति के दो पुत्र शुंभ और निशुंभ थे । इनका जन्म पाताल में हुआ था । बडे होने पर भूलोक में आकर कठिन तपस्या कर ब्रह्मा से वर प्राप्त किया कि किसी स्त्री को छोड कर कोई उन्हें न मारे । वर प्रसाद से गर्विष्ठ होकर शुक्राचार्य के आशीर्वाद से शुंभ दैत्यों का राजा बना । बल और वीरता के मद से मस्त वे दोनों सब पर अत्याचार करने लगे, देवताओं पर भी आक्रमण कर देवलोक को अपने अधिकार में कर लिया, देवताओं ने देवी की स्तुति की । देवी के शरीर से कौशिकी देवी या काली निकली । देवी शुंभ और निशुंभ की राजधानी के पास एक पहाड़ी पर बैठ गई । ब्रह्मा की ब्राह्मी शक्ति, विष्णु की वैष्णवी शिव की शैव शक्ति और देवताओं की अपनी अपनी शक्तियां देवी में प्रविष्ट हो गईं । इस प्रकार वे सर्व देवमयी होकर सब प्रकार के शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हो गईं । देवी के रूप सौन्दर्य की प्रशंसा सुन कर असुरों ने देवी को अपनी पत्नी बनाना चाहा । देवी ने कहा कि मैंने प्रतिज्ञा की है कि जो पुरुष मुझे युद्ध में हरायेगा उसी से विवाह करूँगी । शुंभ ने अपने पराक्रमशाली सेनापतियों को (चिक्षुर, उदग्र, महाहनु, उग्रदर्श, चामर आदि) भेजा जो देवी के द्वारा मारे गये । उनकी मृत्यु पर शुंभ और निशुंभ देवी के पास गये, भयंकर युद्ध हुआ जिसमें दोनों असुर मारे गये ।

निषध–(१) एक देश का नाम जिसके राजा नल थे । (२) इलाव्रत का एक पर्वत जो दक्षिण में स्थित है (३) श्रीराम के पुत्र कुश का पौत्र ।

निषाद–(१) भारत की एक जंगली जाति (२) राजा अंग के पुत्र वेन महाक्रूर थे और प्रजाओं पर अत्याचार और उत्पीड़न करते थे । इसलिये ब्राह्मणों ने उनका वध किया । वेन निस्सन्तान वेन का शरीर मथा गया । उस समय वेन के शरीर से सारा कल्मष एक मनुष्य के रूप में निकला जो काला और कुरूप था । यही निषाद था । इसके वंशज निषाद कहलाते हैं जो ज्यादातर विन्ध्याचल में रहते हैं । (२) मेरु के पार्श्व में स्थित एक पर्वत (३) ब्राह्मण और शूद्रस्त्री के संकर से उत्पन्न पुत्र ।

निषाद नरेश–कालकेय के वंश में उत्पन्न क्रोधहन्ता से उत्पन्न एक राक्षस ।

निषादपति–गुह, श्रीराम का अनन्य भक्त था।

निषूदन–वध करने वाला।

निषेवण–पूजा, अनुष्ठान, आराधना।

निष्कुम्भ–एक असुर श्रेष्ठ।

निष्कृति–(१) वृहस्पति का पुत्र, एक अग्नि (२) प्रायश्चित।

निष्क्रमण–बाहर जाना। एक संस्कार जिसके अनुसार नवजात शिशु को चौथे महीने में पहली बार बाहर निकालते हैं।

निष्ठा–श्रद्धा, भक्ति।

निसंग–उदासीन, आसक्ति हीन (सन्यासी और विरक्त का विशेषण)।

निसर्ग–त्याग, वलिदान।

निसुन्द–एक असुर जो श्रीकृष्ण से मारा गया।

नीतिगोत्र–भृगुवंश का एक राजा।

नीप–(१) भारत का एक प्राचीन देश (२) कदम्ब वृक्ष (३) एक क्षत्रिय वंश।

नीराञ्जन–अर्चना के रूप, देव मूर्ति के सामने प्रज्वलित धूप घुमाना।

नील–(१) जम्बू द्वीप में इलाव्रत के उत्तर का एक प्रसिद्ध पर्वत। सुमेरु पर्वत की उत्तर दिशा में स्थित है। उसके सुवर्णमय सुन्दर शिखर हैं जिनमें चार मुख्य हैं। इन चार शिखरों में एक एक पर वरगद, पीपल,पाकर और आम का एक एक विशाल वृक्ष है। इस सुन्दर पर्वत पर काक भुशुण्डी रहते थे जिनका नाश कल्पान्त तक नहीं होता था (दे: काक भुशुण्डी) (२) श्रीरामचन्द्र की वानर सेना का प्रमुख वानर जो वायुदेव का पुत्र था। इस वानर ने दक्षिण समुद्र पर पुल वाँधने में नल नामक वानर की वड़ी सहायता की थी। (३) हैहय वंश का एक राजा (४) कश्यप ऋषि और दक्ष की पुत्री कद्रू का पुत्र एक प्रमुख नाग (५) भरतवंश के राजा अजमीढ़ और नलिनी के पुत्र। इनके पुत्र शान्ति थे।

नीलकण्ठ–(१) शिव जी का नाम। अमृत मंथन के समय जो कालकूट विष समुद्र से निकला, देवताओं की प्रार्थना करने पर भगवान् शिव ने उसको पी लिया। वह गले से नीचे नहीं उतरा। उस कठोर विष के प्रभाव से भगवान् का कण्ठ नीला हो गया। (२) नील कण्ठ नामक पक्षी। (३) एक पर्वत।

नीलगिरि–दक्षिण भारत में स्थित एक पहाड़।

नीली-(१)सोम वंश के राजा अजमीढ की पत्नी, राजा दुष्यन्त की माँ (२) नील का पौधा।

नूपुर–पैरों का आभूषण।

नृग–वैवस्वत मनु के पौत्र, इक्ष्वाकु के पुत्र थे। महाराजा नृग वड़े धर्मिष्ठ और दानशील थे। पुष्करतीर्थ के किनारे उन्होंने पयस्विनी, तरुण, कपिला गायों को जिनकी सींगें सोने से मढ़ी थीं और खुर चांदी से मढ़े थे, हजारों ब्राह्मणों को दान दिया। उस समय एक ब्राह्मण को दान दी हुई गाय भूल से राजा की गायों के झुण्ड में मिली और राजा ने अनजाने में उसको दूसरे ब्राह्मण को दान दिया। इस गाय को रास्ते में ले जाते समय पहला ब्राह्मण मिला और अपनी गाय कह कर लेने लगा। दोनों में झगड़ा हुआ और राजा के पास आये। राजा दोनों को अनेकों गायें देने को तैयार थे, क्योंकि वे ब्राह्मण के क्रोध से डरते थे। लेकिन वे माने नहीं और उन्होंने शाप दिया। मृत्यु के वाद राजा यम लोक पहुंचे। यम के पूछने पर पाप कर्म के फल पहले भोगने को तैयार हुए। शाप के अनुसार नृग वन कर एक अन्धकूप में गिरे। द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया।

नृचक्षु—ययाति वंश के राजा सुनीथ के पुत्र, इनके पुत्र सुखीनल थे।

नृपञ्जय–कौशाम्वी के राजा मेधावी के पुत्र, इनके पुत्र दूर्व थे।

नृहरि–नरसिंह (दे: नरसिंह)

नेत्र–यदुवंश के हैहय पुत्र धर्म के पुत्र थे। इनके

पुत्र कुन्ति थे ।

नेमि–चक्र, पृथ्वी ।

नेमिचक्र–सोमवंश के राजा असीमकृष्ण के पुत्र थे । हस्तिनापुर गंगा से आप्लावित होने पर इन्होंने कौशाम्बी नामक नगरी बसायी । इनके पुत्र चित्ररथ थे ।

नैक–भगवान विष्णु का नाम, उपाधि भेद से अनेक ।

नैकपृष्ट–प्राचीन भारत का एक देश ।

नैकशृंग–विष्णु का विशेषण; उपसर्ग, नाम, आख्यात, और निपात रूप चार सींगों को धारण करने वाला शब्द ब्रह्मरूप भगवान ।

नैमित्तिक प्रलय–(१) हजार चतुर युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है । उतनी ही लम्बी उनकी रात्रि है । दिन के अवसान में अपनी सृष्टि की सकल चराचर वस्तुओं का संग्रह करके ब्रह्मा आदि नारायण मूर्ति मे लीन होकर निद्रा में प्रवेश करते हैं । सब ओर प्रलय होता है । उस समय एकार्णव में भगवान अनन्तशायी ही रहते हैं । ब्रह्मा की निद्रा के कारण यह प्रलय होता है, इसलिये यह नैमित्तिक प्रलय कहलाता है । किसी विशेष निमित्त से होने वाला प्रलय ।

नैमिषारण्य–अत्यन्त प्रसिद्ध और पवित्र वनस्थली । आधुनिक नाम नीमसार है । यहाँ ऋषि मुनियों ने सरस्वती के तट पर बारह साल का दीर्घ सत्र किया था । इसमें असंख्य ऋषि-मुनि सम्मिलित हुये थे । इसी जगह पर व्यास ऋषि के शिष्य सूत महाभारत, श्री भागवत आदि पुराणों की व्याख्या कर महर्षियों को सुनाया था ।

नैमिषकुंज–कुरुक्षेत्र का एक पवित्र स्थान।

नैमिषेय–एक पुण्य स्थल । इस जगह पर पश्चिम गामिनी सरस्वती ने नैमिषारण्य के महर्षियों का दर्शन करके अपनी गति पूर्व की ओर कर ली थी ।

नैयायिक–न्याय दर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी, तार्किक ।

नैवेद्य–देवता को भेंट देने के लिये भोज्य पदार्थ ।

नैषध–निषद देश के राजा, महाराजा नल का विशेषण ।

नैष्ठिक–पूर्णरूप से निरन्तर त्यागमय, शुद्ध, पवित्र जीवन विताने वाला ।

नैसर्गिक–स्वाभाविक, सहज ।

नौबन्ध–हिमालय का एक शिखर । जब हयग्रीव वेदों को चुरा कर समुद्र की तह में जा छिपा, वेदों की रक्षा के लिये भगवान विष्णु ने मत्स्यावतार लिया । उस समय प्रलय हुआ था । इस मत्स्य की सींग पर बँधी एक नाव पर बैठ कर सप्त ऋषि और राजा सत्यव्रत जो अगले जन्म में मनु हुये, बच गये । इन्होंने अपनी नाव को हिमालय की एक शिखर, पर जो जहाँ पानी नहीं पहुँचा था, बांध लिया । इसलिये इसका नाम नौबन्ध पड़ा ।

न्यग्रोध–(१) वट वृक्षरूप भगवान विष्णु (२) उग्रसेन का एक पुत्र, कंस का भाई ।

न्यग्रोधतीर्थ—उत्तर भारत में दृषद्वती नाम की नदी के तीर पर एक पुण्य तीर्थ ।

न्यास–(१) स्थापित करना (२) धरोहर (३) शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में भिन्न भिन्न देवताओं का ध्यान, जो सामान्य रूप से मन्त्र पाठ के साथ साथ तदनुसार हाव भाव से किया जाता है । (दे:—अंगन्यास, करन्यास) ।

पंकज–कमल ।

पंकजन्मा—ब्रह्मा का विशेषण ।

पंकजनाभ–महाविष्णु ।

पंक्ति–श्रेणी, समूह ।

पंक्तिकण्ठ–रावण का विशेषण ।

पंक्तिग्रीव–रावण का विशेषण ।

पंक्तिरथ–दशरथ का विशेषण।

पक्ष—१५ दिनों का एक पक्ष है। चन्द्रमास में चन्द्र की वृद्धि और ह्रास के अनुसार दो पक्ष है–शुल्कपक्ष जबकि चन्द्र की कलाओं की वृद्धि होती है, और कृष्ण पक्ष जबकि कलायें घटती हैं।

पक्षछिद–पहाड़ के पंखों को काटने वाले इन्द्र का विशेषण।

पक्षभुक्ति–सूर्य एक पक्ष में तय करने की दूरी।

पक्षिवंश--कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री ताम्रा की पांच पुत्रियां हुई जिससे पक्षिवश की सृष्टि हुई। क्रौंची से उलूक वंश भासी से भास वश श्येनी से श्येन या गिद्ध, धृतराष्ट्री से हंस, चक्रवाक आदि, शुकी से शुक।

पञ्चकृत्यपरायणा–देवी का विशेषण जो सृष्टि स्थिति, सहार, तिरोधान और अनुग्रह आदि पाँच कृत्यों में परायणा है।

पञ्चकोश—आत्मा के पाँच प्रकार के कोश या शरीर हैं:—अन्नमय कोश या स्थूल शरीर, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश।

पञ्चगंगा–उत्तर भारत का एक पुण्य स्थल।

पञ्चगव्य–गौ से प्राप्त पांच पदार्थो(दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर) का समूह। इससे भगवान की मूर्ति का अभिषेक होता है।

पञ्चचूडा–एक अप्सरा।

पञ्चजन–एक राक्षस जिसने शखशुक्ति का रूप धारण किया था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

पञ्चजनी–विश्वरूप की एक पुत्री जिसके साथ चन्द्रवंश के राजा ऋशभ का विवाह हुआ था। इनके पांच पुत्र हुए।

पञ्चतत्व–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।

पञ्चतन्त्र—प्राचीन काल मे विष्णुशर्मा नामक एक कवि जिन्होंने जीवन से सम्बन्धित विविध विषयों के जटिल प्रश्नों को आसानी से बच्चों को सिखलाने के लिये कथारूप में एक ग्रंथ रचा था। इस ग्रन्थ का नाम है पञ्चतन्त्र। इसके पात्र बच्चों के मन तथा ध्यान को आकृष्ट करनेवाले पशु, पक्षी, जानवर, राजा रानी आदि।

पञ्चतन्मात्र–शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध-शरीर की घटना के मूल तत्वों में से पांच।

पञ्चतीर्थ–एक पुण्य तीर्थ।

पञ्चनद–भारत के उत्तर पश्चिम का एक देश जहां पांच नदियां बहती हैं। आधुनिक पंजाब ये पांच नदियां हैं शतद्रु (सतलज) विपाशा (व्यास),इरावती(रावी),चन्द्रभागा (चेनाव) और वितस्ता (झेलम) (२) कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थल।

पञ्चप्राण–पांच जीवनप्रद वायु-प्राण, अपान व्यान, उदान और समान। वृत्तिरूप से ये प्राण के ही भिन्न रूप हैं। प्राण हृदय में स्थित होकर श्वासोच्छास की क्रिया करता है। अपान अधोभाग में स्थित होकर मल-मूत्र विसर्जन में सहायता देता है, व्यान पूरे शरीर मे व्याप्त रहता है। उदान मृत्यु के समय शरीर से जीवात्मा को निकालता है। समान नाभिस्थल में रहता है और पाचन क्रिया बढ़ाता है।

पञ्चबाण–कामदेव।

पञ्चब्रह्म–(१)ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव, (२) ईशान, तत्पुरुष, घोर, वामदेव, सद्योजात, (३) क्षेत्रज्ञ, प्रकृति वुद्धि अहङ्कार मन, (४) श्रोत्र, त्वक-चक्षु, जिह्वा, उपस्थ (५)शब्द, स्पर्श रूप, रस, गन्ध आदि तन्मात्र (६) आकाश, भूमि, वायु, जल, अग्नि आदि पचभूत (७)वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, नरनारायण।

पञ्चब्रह्मासन–देवी का आसन, पीठ। इसके चार पैर ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु और ईश्वर हैं और

उनके ऊपर पीठ के रूप में सदा शिव हैं। ये देव अग्नि कोण आदि कोनों में स्थित है। ऊपर और नीचे स्तम्भ के रूप में और मध्य में पुरुष के रूप में स्थित हैं। देवी के पास ध्यानस्थ बैठे ये निमीलिताक्ष और निश्चल है।

पञ्चब्रह्मासनस्था—पञ्चब्रह्मासन में स्थित देवी।

पञ्चभूत–भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश प्रत्यक्ष लोक के ये पांच घटक हैं।

पञ्चम–संगीत स्वर या राग का नाम।

पञ्चमहायज्ञ–(१) ब्रह्मयज्ञ या ऋषियज्ञ, वेदों और ऋषिप्रोक्त शास्त्रों का अध्ययन या अध्यापन करना (२) पितृयज्ञतर्पण कर पितरों को सन्तुष्ट करना (३) देवयज्ञ देवताओं के प्रीत्यार्थ हवन होम आदि करना (४) भूतयज्ञ-प्राणिमात्र को पशु पक्षी आदि को अपने भोजन का एक भाग देना (५) मनुष्य यज्ञ-मनुष्यों की पूजा। पञ्चमहायज्ञ से लोक सेवा होती है।

पञ्चमी–(१) पञ्चम, महादेव की पत्नी। देवी का विशेषण (२) उत्तर भारत की एक नदी (३) चान्द्र पक्ष की पंचमी तिथि।

पञ्चयज्ञप्रिया–दुर्गा का विशेषण।

पंचयज्ञा–एक पुण्य स्थल।

पंचवक्त्रा–पांच मुखों वाली दुर्गा।

पंचवटी–यमुना नदी के निकट एक अति सुन्दर वनस्थली। यहां वनवास के समय श्रीराम, सीता और लक्ष्मण अनेक वर्ष रहे। बराबर वाले पांच वट वृक्ष यहां हैं, इस लिए यह नाम पड़ा।

पंचशिख–(१) एक अग्नि (२) एक महर्षि।

पंचाक्षर–शिव का नाम। नमः शिवाय, इस पंचाक्षर मन्त्र का जप करने से मोक्ष मिलता है।

पंचाग्नि–मनु नामक अग्नि और उनकी पत्नी निशा के अग्निरूप पांच पुत्र-वैश्वानर, विश्वपति, सन्निहित, कपिल और अग्रणी।

पंचाग्नि मध्यस्थ–चारों तरफ प्रज्वलित अग्नि और ऊपर प्रचण्ड सूर्य। कई तपस्वी और अभिलाषा पूर्ति के लिये राक्षस भी पंचाग्नि मध्यस्थ होकर तपस्या करते थे।

पंचाप्सर–एक पुण्य झील, तीर्थ यात्रा के समय बलराम ने यहां स्नान किया था।

पंचाल–एक देश।

पंचाशतपीठ–कामगिरि आदि देवी के पीठ।

पंचोपनिषद–तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात, वामदेव और ईशान। इन्ही नामों से भगवान शिव के पांच मुख माने जाते हैं।

पतञ्जलि–संस्कृत के प्रसिद्ध भाष्याकार एक मुनि जिन्होंने पाणिनी के व्याकरण सूत्रों की व्याख्या की। एक दार्शनिक।

पतग–(१) सूर्य (२) महामेरु के पास एक पर्वत।

पतगेन्द्र–गरुड़ का विशेषण।

पतिदेवता–वह स्त्री जो अपने पति को देवता समझती है।

पत्ति–सेना का एक छोटा हिस्सा जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार, और पांच पैदल सैनिक हों।

पत्नीशाला—यज्ञशाला का वह विभाग जो ऋत्विजों की पत्नियों के लिये निर्दिष्ट है।

पद्म–(१) कमल (२) कुबेर की एक निधि (३) एक प्रमुख नाग (४) एक बड़ी संख्या।

पद्मकोष–ब्रह्मा।

पद्मगर्भ–ब्रह्मा, जिनका जन्म पद्मरूपी गर्भ से हुआ।

पद्मनयन–विष्णु का विशेषण।

पद्मनाभ–(१) महाविष्णु का नाम, जगत के कारण रूप कमल को अपनी नाभि में स्थान देने वाले, हृदय कमल के अन्दर निवास करने वाले भगवान। (२) एक प्रमुख नाग।

पद्मनाभसहोदरी–विष्णु की बहन, देवी का विशेषण ।

पद्मपुराण–अष्टादश पुराणों में से एक ।

पद्मराग–नवरत्नों में से एक ।

पद्मसंभव–ब्रह्मा ।

पद्मसर–उत्तर भारत का एक प्राचीन सरोवर जो कमलों से भरा रहता था ।

पद्मा–सौभाग्य की देवी, महाविष्णु की पत्नी, लक्ष्मी ।

पद्मावती–(१) राजा उदयन की पत्नी (२) एक नदी (३) महालक्ष्मी का नाम ।

पद्मासन–(१) ब्रह्मा का विशेषण (२) ईश्वर ध्यान करने के लिए उपयुक्त एक विशिष्ट आसन ।

पद्मासना–ब्रह्मस्वरूपिणी देवी ।

पद्मासुर–एक असुर जिसका वध देवी ने किया था ।

पद्मिनी–(१) महालक्ष्मी का नाम (२) स्त्रियों के चार भेदों में प्रथम प्रकार की स्त्री ।

पद्मेश्य–महाविष्णु का विशेषण ।

पनस–(१) एक वानर सेनापति (२) कटहल

पन्नगारि–गरुड़ का विशेषण ।

पन्नगेन्द्र—शेष नाग ।

पन्नगेन्द्रशयन–महाविष्णु का नाम ।

पम्पा—ऋष्यमूक पर्वत के पास एक नदी जिसके पास बलि के डर से सुग्रीव अपने मन्त्रियों के साथ रहा था ।

पयस्विनी–भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध नदी ।

पयोव्रत–विष्णु की प्रीति के लिए फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष के पहले दस दिनों में यह व्रत रहा जाता है । श्रद्धा और भक्ति से इस व्रत का पालन करने से इच्छापूर्ति होती है । कश्यप ने इसकी विधि अदिति से बतायी । अदिति ने इस व्रत का श्रद्धा और निष्ठा से पालन किया और उनके उदर से भगवान से वामन के रूप में अवतार लिया ।

पयोष्णी–विन्ध्या पर्वत से निकलने वाली एक नदी । तपती नदी की पोषक नदी मानी जाती है ।

पर–परमात्मा, ब्रह्म ।

परदेवता–(१) उत्कृष्ट देवता । (२) बड़े बड़े घरानों में एक इष्ट देवता होता था जिसको परदेवता कहते हैं । आधुनिक काल में भी कई घरानों में परदेवता की पूजा होती है ।

परब्रह्म—परमात्मा, प्रपञ्च की मूल शक्ति ब्रह्म । सत, चित आनन्द स्वरूप अद्वितीय परमात्मा ।

परमगति–मोक्ष, निर्माण ।

परमज्योति—उत्कृष्ट ज्योति स्वरूप भगवान विष्णु ।

परमधाम—(१) महाविष्णु का नाम (२) भगवान का उत्तम आवास वैकुण्ठ ।

परमस्पष्ट–ज्ञान स्वरूप होने के कारण परमस्पष्ट रूप अवतार विग्रह में सबके सामने प्रत्यक्ष प्रकट होने वाले भगवान विष्णु ।

परमपुरुष–परमात्मा ।

परमहंस–उच्चतम कोटि का सन्यासी जिसने भावात्मक समाधि के द्वारा अपनी इन्द्रियों का दमन कर उनको वश्य में कर लिया हो । आधुनिक काल के परमहंस का उज्ज्वल उदाहरण श्रीराम कृष्ण परमहंस हैं ।

परमा–लक्ष्मी देवी ।

परमाणु–अणुओं में अणु, जो जाना नहीं जा सकता, ब्रह्म ।

परमात्मा–परम श्रेष्ट, नित्यशुद्ध, बुद्ध-मुक्त स्वभाव-वाले भगवान विष्णु ।

परमेश्वर–उत्कृष्ट ईश्वर, शिव, विष्णु ।

परमेष्ठ–ब्रह्मा का विशेषण, विष्णु, शिव, अग्नि ।

परमोदारा–उत्कृष्ट उदार स्वरूप भगवान ।

परशु–परशुराम का आयुध ।

परशुधर–परशुराम का विशेषण ।

परशुराम—जमदग्नि महर्षि और रेणुका के एक पुत्र। महाविष्णु के उग्रप्रभावपूर्ण अंशावतार माने जाते हैं। अपने पिता के आदेश पर माँ का वध किया, इसलिये कि वे जानते थे कि माँ को पुनर्जीवित करने की शक्ति पिता में है। हैहय राजाओं ने पिता का वध किया था। उसका बदला लेने के लिये परशुराम ने शवार राज्य को निक्षत्रिय किया था। क्षत्रिय वध के प्रायश्चित रूप परशुराम ने यज्ञ किया और अपना सर्वस्व ऋत्विज कश्यप ऋषि को दान दिया। रहने की जगह न रही जब कश्यप ऋषि की सलाह से दक्षिण समुद्र में शूर्प फेंका। जहाँ शूर्प गिरा उतनी जगह से वरुण ने समुद्र को हटाया। इस जगह का नाम शूर्पारक अथवा केरल हो गया। इस पुण्य भूमि का भी ब्राह्मणों को दान करके परशुराम तपस्या करने महेन्द्र गिरि को गये। सीता स्वयंवर के समय रामचन्द्र के शिव धनुष तोड़ने पर लक्ष्मण से वाद विवाद हुआ। बाद में श्रीराम के तत्व को पहचानकर वंदना कर तपस्या करने गये। शिव से शस्त्रास्त्र प्राप्त किया था। भीष्म और कर्ण को शस्त्राभ्यास करवाया था। (दे रेणुका, जमदग्नि कार्तवीरार्जुन)। ये आठवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक होंगे।

परशुरामकुण्ड—क्षत्रिय राजाओं के मारने से जो रक्त बहा कुरुक्षेत्र में उसका एक कुण्ड बना जिसका नाम स्यमन्तपञ्चक है। इसका दूसरा नाम है परशुराम कुण्ड।

परा—(१) परा रूपी देवी (२) परा प्रकृति। भगवान की चेतन प्रकृति जिससे यह सम्पूर्ण जगत् धारण किया जाता है।

पराकाशा—उत्कृष्ट आकाश रूप देवी, ब्रह्मस्वरूपिणी।

परात्पर—श्रेष्ठों में श्रेष्ठ भगवान।

परापरा—ब्रह्मस्वरूपिणी देवी।

पराभव—विनाश।

परामदा—उत्कृष्ट कीर्तिस्वरूपिणी देवी।

परार्ध—ब्रह्मा की आयु का आधा ११००० (हजार) चतुर्युगों का ब्रह्मा का एक दिन और उतना ही उनकी एक रात होती है। इस प्रकार २००० चतुर्युगों का उनका एक दिन और इस तरह के ३६५ दिनों का उनका एक वर्ष और ऐसे सौ वर्षों की उनकी आयु है। सौ वर्ष पूर्ण होने पर ब्रह्म प्रलय होता है। ब्रह्मा की आयु के दो परार्ध होते हैं जिनमें एक बीत गया। दूसरे परार्ध का ('५१वाँ वर्ष) पहला दिन (कल्प) चल रहा है। अब वराह कल्प चल रहा है।

परावसु—(१) एक गन्धर्व श्रेष्ठ (२) रैम्य मुनि के पुत्र एक मुनि।

पराविद्या—दे: अपरा विद्या।

पराशक्ति—देवी का विशेषण।

पराशर—(१) एक प्रसिद्ध ऋषि जो वसिष्ठ पुत्र शक्ति और अदृश्यन्ती नाम की अप्सरा के पुत्र थे। इनकी और मत्स्य कन्या सत्यवती के पुत्र थे सुप्रसिद्ध कृष्णद्वैपायन अथवा व्यास महर्षि। (२) एक नाग।

परिकर्म—पूजा, अर्चना।

परिक्रमा—प्रदक्षिणा, देवमूर्ति को या पूज्य जनों को दायीं तरफ कर चारों तरफ घूमना। यह आदर-सूचक क्रिया है।

परिग्रह—शरणार्थियों द्वारा सब ओर ग्रहण किये जानेवाले भगवान्।

परिप्लव—सोमवंशज मुखीनल के पुत्र, इनके पुत्र सुनय थे।

परिव्राज—अवधूत, सन्यासी जिसने सांसारिक सुख भोग और माया मोह का त्याग किया है।

परीक्षित—सोमवंश के अति विश्रुत, प्रतापी, धर्मिष्ठ राजा जो अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यू और उत्तरा के पुत्र थे। महाभारत

युद्ध के अवसान पर पाण्डुवंश का उन्मूल नाश करने के उद्देश्य से अश्वत्थामा ने द्रौपदी के पुत्रों की हत्या की और उत्तरा के गर्भस्थ शिशु का वध करने के लिये आग्नेयास्त्र भेजा। उस प्रज्वलित अस्त्र से संतप्त उत्तरा भक्तवत्स भगवान श्रीकृष्ण की शरण ली। भगवान ने अंगुष्टमात्र होकर उत्तरा के गर्भ में प्रवेश कर सुदर्शन चक्र से बालक की रक्षा की। यही शिशु पाण्डवों का वंशवर्धन हो गया। विष्णु से रक्षित होने से इनका नाम विष्णुरात भी हो गया। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण की वार्ता सुनकर युधिष्ठिर परीक्षित का राज्याभिषेक कर सब कुछ तज कर द्रौपदी और भाइयों के साथ वन चले गये। परीक्षित का विवाह भाद्रवती नामक राजकुमारी से हुआ और उनके जनमेजय, श्रुतसेन, उग्रसेन आदि पुत्र हुए। परीक्षित सर्वगुण सम्पन्न प्रजावत्सल राजा थे। एक बार शिकार खेलते भूख प्यास से थके वन में एक आश्रम में पहुँचे। वहाँ एक मुनि को आँखें बंद बैठे देखा। राजा के पूछने पर भी ध्यानस्थ मुनि शमीक कुछ न बोले। मुनि का तिरस्कार समझकर माया से प्रेरित राजा ने एक पास पड़े एक मृत साँप को उठाकर मुनि के गले मे डाल कर चलेग ये। दैव वैपरीत्य के कारण धर्मनिष्ठ राजा ने ऐसा किया शमीक के पुत्र गविजात को इसका पता लगा। क्रोध और दुःख से व्याकुल मुनिकुमार ने शाप दिया कि जिसने पिता के साथ ऐसा कुकर्म किया वह सातवें दिन तक्षक के काटने पर मरेगा। पुत्र के शाप की बात सुनकर मुनि अत्यन्त व्याकुल हुए और राजा के पास इसका समाचार भेजा। महल में वापिस आने पर राजा अपने दुष्कर्म के बारे में पछता रहे थे जब शाप का समाचार मिला। कुल गुरु और ज्ञानी ब्राह्मणों के उपदेश से शेष सात दिन भगवत् सम्बन्धी कथाएँ सुनने का निश्चय किया। उस समय दैवयोग से शुक ब्रह्मर्षि भी वहाँ आये। अनेक ऋषि मुनियों और लोगों के बीच में बैठकर राजा परीक्षित लगातार सात दिन भूख, प्यास, थकावट सब कुछ भूल कर भगवान की लीलाओं की कथा सुनते रहे। उसकी समाप्ति पर ध्यानस्थ राजा को तक्षक ने एक छोटे कृमि के रूप में आकर काट लिया। राजा का निधन हो गया और उनको मोक्ष मिला। (२) कुरु वंश में परीक्षित नाम के कई राजा थे।

परुष—खर का साथी एक राक्षस।

परोक्ष—(१) एक चन्द्रवंशी राजा उनके पुत्र (२) परमात्मा।

पर्जन्य—(१)बादल की भांति सब इष्ट वस्तुओं की वर्षा करने वाले भगवान विष्णु। (२) वृष्टि के देवता इन्द्र। (२) रैवत मन्वन्तर के सप्तर्षियों मे से एक।

पर्णकुटी—पर्णशाला, पत्तों से बनी ऋषि मुनियों की कुटिया।

पर्णशाला—(१) पर्णकुटी (२)गंगा और यमुना के बीच यामुन पर्वत की तराईयों में स्थित एक गाँव।

पर्णाद—(१)नल की खोज में दमयन्ती ने पर्णाद नामक ब्राह्मण को भेजा था (२) एक महर्षि।

पर्व—उत्सव।

पर्वणी—(१)पूर्णिमा अथवा शुक्ल प्रतिपदा(२) उत्सव।

पर्वत—(१) कृत युग में पर्वतों के पंख होते थे और वो इधर-उधर उड़ते रहते थे। अपने ऊपर इनके गिरने का डर ऋषि मुनियों को हमेशा रहता था। उनकी प्रार्थना पर इन्द्र ने वज्र से पर्वतों के पंख काट डाले। तभी से ये एक जगह स्थिर हो गये। वायु देवता ने अपने मित्र मैनाक को समुद्र के अन्दर

छिपा लिया । इसलिये सिर्फ उसके पंख रह गये। (२) एक मुनि (३) मरीचि का एक पौत्र । (४) सहदेव की पत्नी विजया के पिता ।

पर्वतराज–हिमालय पर्वत ।

पर्वतधारा–पृथ्वी ।

पर्वतात्मज–मैनाक पर्वत ।

पर्वतात्मजा–श्री पार्वती ।

पलाश–ढाक का पेड़ । ऋक्ष पर्वत में पलाश वन में बैठ कर अत्रि और अनसूया ने तप किया था ।

पवन–(१) पवित्र करने वाले भगवान विष्णु (२) वायु (३) तीसरे, मनु उत्तम के एक पुत्र ।

पवनभुक्–साँप ।

पवनसुत–हनुमान और भीमसेन का विशेषण ।

पवनात्मज–हनुमान और भीमसेन ।

पवमान–(१) अग्नि और स्वाहा के तीन पुत्र पावक, पवमान और शुचि । ये तीनों अग्नि देवता हैं और यज्ञ में दी हुई आहुतियों को स्वीकार करते हैं । इनसे ४५ अग्नि और हुए । ये सब मिलकर उनचास अग्नि देवता हैं जिनके नाम पर अग्नि की प्रीति के लिये यज्ञ किया जाता है । (२) एक पर्वत (३) एक प्रकार की यज्ञाग्नि जिसे गार्हपत्य कहते हैं । (४) पृथु महाराजा और शिखण्डिनी के पुत्रों में से एक–पावक, पवमान, शुचि, ये तीनों इन्हीं नामों के अग्नि देवताओं के पुनर्जन्म थे । वसिष्ठ के शाप से मनुष्य जन्म लेना पड़ा । योगाभ्यास करके शाप से मुक्ति मिली ।

पवित्र–(१) परिशुद्ध, पुनीत (२) कुश की दो पत्तियों का बना पवित्र जो यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठानों में अँगुली में पहना जाता है । यह चौथी अँगुली पर अँगूठी जैसा पहना जाता है । (३) जनेऊ ।

पशु–(१) द्वादशादित्यों में सविता और प्रश्नी का पुत्र जो पशुबलि का अधिष्ठान देवता है । (२) बलि पशु ।

पशुपति–(१) शिव (२) पशुओं का स्वामी ग्वाला ।

पशुपति नाथ–नेपाल का एक प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र ।

पाक–(१) गार्हपत्याग्नि (२) एक असुर जो इन्द्र से मारा गया ।

पाक शासन–इन्द्र का विशेषण ।

पाकारि–इन्द्र का विशेषण ।

पाक्कनार–प्रसिद्ध कवि और ज्योतिश्शास्त्र पण्डित वररुचि के चाण्डाल स्त्री में बारह पुत्र हुए, उनमें से एक । पाक्कनार बड़े पंडित थे और उनकी पत्नी चाण्डाली होने पर भी पतिव्रता थी । (दे: वररुचि) ।

पाञ्चजन्य–(१)महाविष्णु का शंख । श्रीकृष्ण और बलराम अपने गुरु सन्दीपनि मुनि को दक्षिणा देने के लिये समुद्र में उनके खोए हुए पुत्र की खोज में गये । समुद्र में शंख के रूप में स्वीकार किया (दूसरा मत है कि उसकी हड्डी से यह शंख बना) । इसलिये इसका नाम पाञ्चजन्य हो गया । उसका गंभीर शब्द यातुधान, प्रमथ, मात्रक ब्रह्मराक्षस आदि घोर जीवों को भगा देता है, शत्रुओं के मन में अतीव भय पैदा करता है और भक्त जनों के हृदय में आनन्द । (२) एक अग्नि (३) रैवतक पर्वत के पास एक जंगल ।

पाञ्चभौतिक-पञ्च भूतों से सम्बन्धित ।

पाञ्चाल–(१) भारत के एक देश पञ्चाल के शासक और निवासी । (२) एक महर्षि ।

पाञ्चालकन्या–द्रौपदी का विशेषण ।

पाञ्चाली–राजा द्रुपद की पुत्री, पाण्डवों की पत्नी । पाञ्चाली के पूर्व जन्म की कई कथाएँ प्रचलित हैं । एक के अनुसार यह एक शाप ग्रस्त अप्सरा थी जिसने तपस्या कर शिव

को सन्तुष्ट किया था। शिव के वर मांगने को कहने पर उसने पांच वार 'पति देहि' (पति दीजिए) कहा। शिव ने कहा कि तुमने पांच वार पति को मांगा, इसलिये अगले जन्म में पाञ्चाल राजा की कन्या होकर कृष्ण के नाम से जन्म लोगी और तुम्हारे पांच पति होंगे। पाञ्चाली को यह भी वर मिला कि पांच पति होने पर भी उसका कन्यात्व नष्ट नहीं होगा। पाँचों पतियों से एक-एक पुत्र हुआ। युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य, भीमसेन से सुतसोम अर्जुन से श्रुतकीर्ति, नकुल से शतानीक और सहदेव से शुतकर्मा। (दे:—द्रौपदी)

पाटला—दुर्गा का विशेषण।

पाटलिपुत्र—भारत का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर जो मगध की राजधानी थी। यह शोण और गंगा नदियों के संगम पर स्थित है और कुछ लोग इसे आधुनिक 'पटना' मानते हैं।

पाटलीकुसुम—एक प्रकार के लाल रंग के फूल जो देवी को प्रिय है।

पाटीर—(१) चदन (२) वादल।

पाठ—वेदाध्ययन, वेदपाठ, पुराणों का ब्राह्मणों द्वारा पाठ कराना।

पाणिनि—प्रसिद्ध वैयाकरण। इनका पाणनीय सवसे प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ है जो सब व्याकरणों की नीव समझा जाता है। पाणिनि के गुरु थे वर्ष जिनकी और जिनकी पत्नी की वे दिल लगाकर सेवा करते थे। गुरु पत्नी के आदेशानुसार उन्होंने शिव की तपस्या की और शिव ने संतुष्ट होकर व्याकरण का ज्ञान इनको दिया। इसलिये इनका व्याकरण अद्वितीय रहा।

पाण्डव—पाण्डु के पुत्र। सोमवंश के राजा पांडु ने श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव की वहन कुन्ती और माद्रदेश की राजकुमारी माद्री से विवाह कया। कुन्ती के तीन पुत्र युधिष्ठिर, भीमसेन और अर्जुन और माद्री के दो पुत्र नकुल और सहदेव थे। ये पाँचों मिलकर पांच पाण्डव हुए। पाण्डु की मृत्यु के वाद पाण्डव कुन्ती के साथ हस्तिनापुर में रहते थे। यहां कौरवों से उनको अनेक कष्ट सहने पड़े। दुर्योधनादियों ने इनको मार डालने के अनेक उपाय किये। धनुर्वेदाचार्य द्रोण से इन्होंने शस्त्राभ्यास किया। लाखा गृह में इनको जलाने का उपाय दुर्योधनादियों ने सोच रखा था, लेकिन विदुर की सहायता से वे बच गये। कुन्ती के आदेशानुसार पाँचों पाण्डवों ने द्रौपदी से विवाह किया। जुएँ में हार जाने से वारह साल वनवास और एक साल अज्ञातवास करना पड़ा। अनेक कष्ट सहे। युधिष्ठिर ने युद्ध का निवारण करने के अनेक प्रयत्न किये, लेकिन सफल नहीं हुए। अन्त में कुरुक्षेत्र की भूमि में महाभारत युद्ध हुआ जिसमें दुर्योधनादियों का विनाश और पाण्डवों की जीत हुई। युधिष्ठिर ने दीर्घकाल तक राज्य किया। श्रीकृष्ण के निर्माण के वाद अपने पौत्र परीक्षित का राजतिलक कर द्रौपदी के साथ पाँचों पाण्डव वन चले गये और उनका वहां स्वर्गवास हुआ।

पाण्डु—सोमवंश के विचित्रवीर्य की विधवा अम्बिका से व्यास ऋषि द्वारा पाण्डु का जन्म हुआ। वे कुन्ती और माद्री के पति, पाण्डवों के पिता थे। श्वेत रंग होने से यह नाम पड़ा। धृतराष्ट्र अन्धे होने के कारण राजा न वने। पाण्डु ही वने। दीर्घकाल तक उन्होंने राज शासन किया और जैत्र यात्रा कर भारत के प्राय: सभी देशों के राजाओं को पराजित किया। एक वार पत्नियों के साथ हिमाय के पहाड़ों में घूमते समय एक हरिण दम्पति को देखा। वह हरिण किन्दम नाम के ऋषि था जो हरिण के रूप में पत्नी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे। इस वात से अनभिज्ञ पाण्डु ने उस हरिण को वाण से मारा। मरते समय

ऋषि ने पाण्डु को शाप दिया कि स्त्री का स्पर्श करने पर उनकी मृत्यु होगी। इससे पाण्डु विरक्त से हो गये । निस्सन्तान पाण्डु की अनुमति से दुर्वासा के दिये दिव्य मन्त्रों से कुन्ती ने धर्म देव, वायु और इन्द्र से क्रमशः युधिष्ठिर, भीमसेन और अर्जुन नामक पुत्रों को जन्म दिया । कुन्ती के दिये एक मन्त्र से अश्विनी देवों का स्मरण कर माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया। एक बार माद्री के साथ अकेले घूमते पाण्डु विकाराधीन हो गये, पत्नी का स्पर्श करने पर उनकी मृत्यु हुई। अपने दोनों पुत्रों को कुन्ती को सौंप कर माद्री पति के साथ सती हुई (दे: कुन्ती, धृतराष्ट्र, माद्री)

पाण्डुकेश्वर—बदरीनाथ के पास एक पुण्य स्थल जहां महाराजा पाण्डु का आश्रम था और पांचों पाण्डवों ने तपस्या की थी।

पाण्ड्य—दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश जो पुराण प्रसिद्ध है। यहां के राजा बड़े प्रतापी होते थे और इनका राज्य बहुत दूर तक व्याप्त था।

पाताल—पृथ्वी के नीचे भूगर्त में सात लोक हैं जो एक के नीचे एक हैं और जो एक दूसरे से दस हजार योजन दूर है। पाताल सब से नीचे है। पाताल में नाग रहते हैं जिनमें श्रेष्ट शंख, कुलीक, महाशंख, श्वेत, धनञ्जय, धृतराष्ट्र, देवदत्त आदि हैं । इनका राजा वासुकि है। इन नागों के पांच से लेकर हज़ार तक के फण हैं। इन फणों पर चमकते छोटे-छोटे रत्नों के कारण पाताल का अन्धकार दूर हो जाता है और वहां हमेशा उजाला रहता है। नाग कन्यायें अतीव सुन्दर और तेजस्विनी हैं। सुगन्ध द्रव्यों के कारण उनके शरीर से सदा सुगन्ध निकलता है। यहां इस त्रिभुवन को अपने एक फण पर राई के दाने के समान धारण करते हुए अनन्त, भगवान के शय्यारूप नागश्रेष्ठ रहते हैं जिनको आदि शेष, संकर्षण आदि भी कहते हैं। ये अति मनोहर और तेजस्वी हैं । लोक कल्याण के लिये संकर्षण मूर्ति शुद्ध सत्व प्रधान रूप से सिद्ध, गन्धर्व, विद्याधर, ऋषि-मुनि आदियों से प्रकीर्तित, सर्वाभरण भूषित और एक कुण्डलधारी होकर रहते हैं। उनका करुण कटाक्ष सबको आनन्दित करता है।

पाताल रावण—एक राक्षस । यह लंकाधिप रावण से भिन्न है। माल्यवान का भतीजा है। विष्णु के भय से कुछ राक्षस पाताल गये थे, उनका नेता था पाताल रावण।

पातालवासी—राक्षस, नाग, दैत्य आदि।

पाथेय—भोज्य सामग्री जिसे यात्री राह में खाने के लिये ले जाता है।

पादपद्म—कमल के समान कोमल और सुन्दर पैर। प्रायः भगवान के पैरों के लिये यह विशेषण लगाया जाता है।

पादोदक—वह पानी जिससे भगवान की मूर्ति के चरण कमल अथवा किसी पुण्यात्मा के पाद कमल धोये गये हों। वह जल पवित्र माना जाता है।

पादप्रक्षालन—किसी पुण्यात्मा या मान्य व्यक्ति का पैर धोना।

पाद्य—देवमूर्ति की पूजा शुरू करते समय पहले जल अर्पण किया जाता है, देव के पैर धोने के संकल्प से । इस जल को पाद्य कहते हैं।

पापघ्न—पाप का नाश करने वाले भगवान्।

पापनाशक—स्मरण, कीर्तन, पूजन, ध्यान आदि करने से समस्त पाप समुदाय का नाश करने वाले भगवान् विष्णु।

पायसान्न—दूध और चावल की घनी खीर जो भगवान को प्रिय है और नैवेद्य रूप अर्पित की जाती है।

पारत्रिक—परलोक सम्बन्धी।

पारा—नवें मन्वन्तर का एक देवगण ।

पारमार्थिक—अध्यात्म ज्ञान से सम्बन्धित ।

पारमेष्ठ्य—सर्वोत्तम पद, ब्रह्मा का पद ।

पारलौकिक—लोकान्तर से, स्वर्ग आदि लोकों से संबन्धित ।

पारसीक—फारस देश का रहने वाला ।

पारा—कौशिकी नदी ।

पाराशर्य—पराशर का पुत्र, व्यास महर्षि ।

पारिक्षित—परीक्षित महाराजा के पुत्र महाराजा जनमेजय ।

पारिजात—(१) स्वर्ग का एक दिव्य वृक्ष जिसके फूल अत्यन्त सुगन्धित हैं । (१) ऐरावत कुल का एक नाग ।

पारिप्लव—(१) नाव (२) कुरुक्षेत्र के पास एक पुण्य नदी ।

पारियात्र—(१) महामेरु पर्वत के पश्चिम में स्थित एक पर्वत जो पुराण प्रसिद्ध है । गौतम ऋषि का आश्रम इस पर्वत पर था । (२) कुश वंश के राजा अनीह के पुत्र । इनके पुत्र बलस्थल थे ।

पार्थ—पृथा का पुत्र, युधिष्ठिर, भीमसेन और अर्जुन का विशेषण, अर्जुन विशेषरूप से पार्थ कहलाते थे ।

पार्थिव—राजा ।

पार्वण—पर्व के (अमावास्या के दिन) अवसर पर पितरों को आहुति देने की क्रिया या संस्कार ।

पार्वती—पर्वतराज हिमवान् की पुत्री, शिव की पत्नी । पार्वती के अनेक नाम और रूप हैं-उमा, दुर्गा, दाक्षायणी, ईश्वरी, शिवा, अपर्णा, कात्यायनी, गिरिजा, अम्बिका, राजराजेश्वरी, अन्नपूर्णा, चामुण्डी, काली, भैरवी, रुद्राणी आदि । तारकसुर, चण्डमुण्डासुर, शुंभ निशुंभ, महिषासुर आदि असुरों का वध करने के लिये देवी ने कई रूप धारण किये और इन रूपों के अनुसार इनके कई नाम हुए ।

पार्वतीनन्दन—गणेश और कार्तिकेय का विशेषण ।

पार्वतीय—एक विशेष पहाड़ी जाति के लोग । इन्होंने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भाग लिया था । द्रौपदी को ले जाते समय जयद्रथ से युद्ध करते समय इन लोगों ने पाण्डवों से युद्ध किया था । भारत युद्ध में पाण्डवों ने इनका पूरा नाश किया ।

पार्षत—राजा द्रुपद और उनके पुत्र धृष्टद्युम्न के पितृकुल सूचक नाम ।

पार्षती—द्रौपदी का विशेषण ।

पार्ष्णिक्षोम—एक विश्वदेव ।

पावक—(१) अग्नि और स्वाहा के एक पुत्र (दे: पवमान) (२) अष्टवसुओं में एक ।

पावन—(१) विष्णु का विशेषण, निर्मल (२) श्रीकृष्ण और मित्रविन्दा का एक पुत्र । (३) दीर्घतमा मुनि के एक पुत्र ।

पावनाकृति—निर्मल शरीर वाली देवी ।

पाश—(१) वरुण का अस्त्र (२) काम क्रोध आदि पाश जो आत्मा को बन्धन में डालते हैं ।

पाशहन्त्री—पाश, बन्धन का नाश करने वाली देवी ।

पाशहस्त—वरुण का विशेषण ।

पाशहस्ता—पाश, रस्सी जिनके हाथ में है, ऐसी देवी ।

पाशुपत—शिव का अनुयायी और पूजक ।

पाशुपतास्त्र—शिव का अस्त्र । वनवास के समय अर्जुन ने कठिन तपस्या कर शिव को सन्तुष्ट किया और यह अस्त्र वरदान में प्राप्त किया । (दे: पिनाक)

पिंगल—एक प्रसिद्ध ऋषि, संस्कृत के छन्द-शास्त्र के प्रणेता (२) कुबेर के एक कोष का नाम (३) सूर्य का एक अनुचर ।

पिंगला—(१) दक्षिण देश की हथिनी । (२) विदेह नगरी मिथिला की एक वेश्या थी ।

वह स्वेच्छाचारिणी और रूपवती थी । उसे पुरुष की नहीं धन की कामना थी । और जो भी सम्पन्न पुरुष अपने घर के सामने से निकलता हो तब सोचती थी कि यह धनी होगा और मुझे धन देकर उपभोग करने आ रहा है । एक रात को इस प्रकार धनी पुरुष की वाट जोहते-जोहते, उसके लिये उतावली होती रहकर आधी रात बीतने वाली थी । वह थक गई, चित्त व्याकुल हुआ । अपनी इस वृत्ति से उस समय उसको वैराग्य हुआ । वैराग्य की भावना जागृत होने पर ज्ञान का उदय हो गया । धनियों से मिलने की लालसा मिट गई, मन शांत हो गया और वह सो गई । आशा का त्याग करने से उसको सुख मिला । यह कथा दत्तात्रेय नामक युवक अवधूत ने श्रीकृष्ण के पूर्वज यदु से कही थी ।

पिंगलाक्ष–शिव का विशेषण ।

पिंगाक्ष–एक राक्षस ।

पिण्ड–श्राद्ध में पितरों को दिया जानेवाला चावलों का पिण्डा ।

पिण्डयज्ञ–श्राद्ध करके पितरों को पिण्ड दान देना ।

पिण्डारक–(१) द्वारका के पास एक पुण्य क्षेत्र । विश्वामित्र, असित, कण्व, वामदेव, दुर्वासा आदि इसी क्षेत्र में रहते थे जबकि यादव कुमार जम्बवती के पुत्र सम्ब को स्त्री वेष में सजाकर ले गये और उसके गर्भस्थ शिशु के बारे में पूछा था और ऋषियों ने कुपित होकर शाप दिया था । (२) कश्यप वंश का एक नाग ।

पितर–पितृ (१) मरीचि आदि ऋषियों ने पितरों की सृष्टि की । ये एक देवता विशेष हैं । इनमें अर्यमा मुख्य हैं अग्निष्वात्त, वर्हिषद, सौम्य, आज्यप पितरों के चार विभाग हैं । वे सग्निक (अग्नि के द्वारा तर्पण का जल लेनेवाले) या निरग्निक (तर्पण का जल किसी माध्यम के बिना स्वीकार करनेवाले) होते हैं । दक्षपुत्री स्वधा इनकी पत्नी है । उनकी धारिणी और वयुना नाम की दो पुत्रियाँ हुईं जो ब्रह्मवादिनी और ज्ञानी थीं । (२) पूर्वज । स्वर्गस्थ आत्माओं के मूर्त रूप पितरों की प्रीति के लिये अमावास्या आदि पर्वों पर श्राद्ध, तर्पण आदि किया जाता है ।

पितृकर्म–मृत पूर्व पुरुषों की सद्गति के लिये किया जानेवाला यज्ञ या श्राद्ध कर्म ।

पितृगण–पितर ।

पितृतीर्थ–(१) गया तीर्थ जहाँ पितरों के निमित्त श्राद्ध करना विशेष रूप से फलदायक है (२) अंगूठे और तर्जनी का मध्य भाग । इसके द्वारा तर्पण आदि करना पवित्र माना जाता है । (३) पितृलोक में कुम्भीपाक नरक का एक तीर्थ । कहा जाता है कि कुम्भीपाक नरक देखने जब दुर्वासा ऋषि गये उनके माथे के भस्म के कुछ कण गिरने से वहाँ एक पुण्य तीर्थ बन गया ।

पितृपक्ष–(१) पितृकुल के सम्बन्धी (२) आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकर्म करना विशेष महत्व रखता है ।

पितृपति–यम का विशेषण ।

पितृयज्ञ–(१) पञ्चमहायज्ञों में से एक, पितरों को प्रतिदिन तर्पण या जलदान करना ।

पितृयान–दक्षिणायन मार्ग, धूममार्ग या अंधकारमय मार्ग । धूमाभिमानी देवता अर्थात् अन्धकार के अभिमानी देवता दक्षिणायन से जानेवाले साधकों को रात्रि-अभिमानी देवता के पास पहुँचाता है । पृथ्वी के ऊपर समुद्र सहित सभी देशों में इसका अधिकार है । रात्रि-अभिमानी देवता का स्वरूप अन्धकारमय और पृथ्वीलोक में जहाँ रात्रि रहती है वहाँ उनका अधिकार है । यह पितृयान मार्ग से जानेवाले साधक को पृथ्वीलोक की सीमा से बाहर अन्तरिक्ष में कृष्णपक्ष के अभिमानी

देवता के पास पहुँचाता है। इसका स्वरूप भी अन्धकारमय होता है। पृथ्वी मण्डल की सीमा के बाहर अन्तरिक्ष लोक में जहां पन्द्रह दिन की रात रहती है वहां तक उसका अधिकार है। यह दक्षिणायन से जानेवाले साधक को दक्षिणायनाभिमानी देवता के अधीन कर देता है। इसका स्वरूप भी अन्धकारमय है। अन्तरिक्ष लोक के ऊपर जिन लोकों में छः महीने की रात रहती है वहां तक उसका अधिकार है। दक्षिणायन से स्वर्ग जानेवाले साधक को यह अपने अधिकार से पार करके पितृलोक के अभिमानी देवता को सौंप देता है। यह आकाशाभिमानी देवता चन्द्रमा के लोक में पहुँचाता है। यहां अपने पुण्य कर्मो का फल दिव्यरूप धारण कर भोगते हैं और फिर अपने कर्मानुसार योनि पाकर पृथ्वी में जन्म लेता है।

पिनाक—शिव का दिव्य धनुष जो इन्द्र धनुष के आकार में हैं। इस धनुष का शर है पाशुपत जो सूर्य के समान उज्ज्वल और कालानल के समान सर्वलोक को भस्म करनेवाला है। इसी शर से शिव ने त्रिपुर दहन किया था। इस शर को अर्जुन ने कठिन तपस्या कर शिव को सन्तुष्ट कर प्रसाद रूप में पाया था।

पिनाकी—शिव का विशेषण।

पिप्पलायन—ऋषभदेव के नौ पुत्र कवि, हरि, अन्तरिक्ष, प्रवुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस और करभाजन संन्यासी हो गये। ये आत्मविद्या में निपुण थे और अधिकारियों को परमार्थ वस्तु का उपदेश देते थे। वे प्रायः दिगम्बर ही रहते थे। कार्य-कारण, व्यक्त-अव्यक्त, भगवद्रूप जगत को अपने आत्मा से अभिन्न अनुभव करते हुए भी पृथ्वी पर स्वच्छन्द विचरण करते थे। वे सब जीवन मुक्त थे। अजनाभ वर्ष में महात्मा निमि के महायज्ञ में इन्होंने भाग लिया था। वे भगवान के परम प्रेमी भक्त और सूर्य के समान तेजस्वी थे। इन्होंने राजा को भागवत् धर्म का उपदेश दिया। यदु के संदेहों को दूर कर इन्होंने उनको परमज्ञान का उपदेश दिया था।

पिशाच—घृणा जनक क्रूर जीव जो कच्चा मांस खानेवाले हैं। भूत, प्रेत, शैतान आदि इनके नाम हैं। सभी मतों में पिशाचों का वर्णन है।

पिशिताशन—नरभक्षी।

पीठ (१) आसन, पूजाध्यान आदि करने के लिये बैठने की पीठ (२) वेदी (३) नरकासुर का एक सेनापति।

पीताम्बर—महाविष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि के वस्त्र।

पीताम्बरधारी—महाविष्णु, श्रीराम और श्री कृष्ण का विशेषण।

पीयूष—अमृत, सुधा।

पीयूष वर्ष—चन्द्रमा।

पीवर—तामस मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक।

पीवरी—गाय।

पुंसवन—स्त्री के गर्भ धारण के प्रथम चिन्ह प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है।

पुञ्चकस्थला—एक अप्सरा, मुख्य ग्यारह देवकन्याओं में से एक। यह बृहस्पति की परिचारिका थी। एक बार उनके कोप से शापग्रस्त होकर बंदरी का जन्म लेना पड़ा। वह अञ्जना नाम से पैदा हुई और केसरी नाम के वानर की पत्नी बनी। शिव का वीर्य बन्दरी रूप पार्वती धारण करना नहीं चाहती थी। इसलिये शिव ने अपने वीर्य को मरुत के द्वारा अञ्जना के उदर में स्थापित किया। अञ्जना के विश्वविश्रुत पुत्र हनुमान जन्में। बृहस्पति

के कहने के अनुसार शिवबीज धारण करने से वह शाप मुक्त हो गई और स्वर्ग चली गई । (दे: हनुमान) ।

पुण्डरीक–(१) श्रीराम के पुत्र कुश के वंशज नाम के पुत्र (२) सफेद कमल (३) अष्ट-दिग्गजों में से एक (४) कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थल (५) एक प्रकार का साँप ।

पुण्डरीकाक्ष–कमल के समान सुन्दर बड़ी आँखों वाले भगवान विष्णु ।

पुण्ड्र–भारत का एक प्राचीन देश ।

पुण्य–(१) दीर्घतमा नामक महर्षि का पुत्र, दूसरा पुत्र पावन था दोनों ज्ञानी थे । (२) स्मरण मात्र से पापों का नाश करनेवाले पुण्यस्वरूप भगवान विष्णु (३) धार्मिक या नैतिक गुण ।

पुण्कीर्ति–परम पावन कीर्तिवाले भगवान विष्णु ।

पुण्यकृत–(१) एक विश्वदेव (२) सद्गुण सम्पन्न ।

पुण्यक्षेत्र–पवित्र स्थान ।

पुण्यतोया–एक पुण्य नदी ।

पुण्यभूमि–आर्यावर्त ।

पुण्यलोक–वैकुण्ठ ।

पुण्यश्रवणकीर्तन–महाविष्णु का विशेषण, जिनके नाम गुण, महिमा और स्वरूप का श्रवण, कीर्तन और ध्यान परम पुण्य है । जिनका नामोच्चारण ही परम शुभ समझा जाता है ।

पुत्–नरक का एक विभाग जहाँ पुत्रहीन लोग जाते हैं ।

पुत्र–सन्तान, बेटा, पुं या पुत् नामक नरक से त्राता से पुत्र नाम हुआ ।

पुत्रकामेष्टि–पुत्र लाभ की इच्छा से किया जाने वाला एक यज्ञ । यह यज्ञ करने के बाद ही दशरथ महाराज को श्रीराम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न नामक पुत्र हुए ।

पुत्रिका–बेटी का बेटा, नाना द्वारा पुत्र के स्थान पर माना हुआ । स्वायम्भुव मनु ने अपनी पुत्री आकूति के पुत्र यज्ञ को पुत्रिका रूप में पाला था ।

पुनर्जन्म–जीव जब तक भगवान को प्राप्त नहीं होता तब तक कर्मवश अनेक योनियों में जन्म लेता रहता है इसलिये मृत्यु के बाद पूर्व कर्म के अनुसार देवता, मनुष्य, तिर्यक, जड़, चेतन आदि योनियों में जन्म लेना पुनर्जन्म कहलाता है ।

पुनर्वसु–(१) सत्ताइस नक्षत्रों में से सतवां नक्षत्र । (२) विष्णु, शिव का विशेषण (३) अन्धक वंश के अरिद्योक के पुत्र, इनके आहुक नाम के पुत्र और आहुकी नाम की पुत्री थी ।

पुरञ्जन–राजा प्राचीनबर्हि कर्मकाण्ड में निरत थे और अनेकों यज्ञ किये थे । एक बार नारद ने उनको समझाया कि यज्ञ से कोई स्थायी सुख नहीं मिलता । यज्ञ में बलि दी हुई पशुओं की एक प्रकार से हत्या ही होती है और उसका फल भोगना पड़ता है । कर्म के बन्धन से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से कृपालु ऋषि ने राजा को पुरञ्जन की कथा सुनाई । पुरञ्जन एक प्रसिद्ध राजा थे । अपने लिये सुख निवास की खोज में अपने मित्र अविज्ञात के साथ पृथ्वी में भ्रमण करते हुए एक अद्भुत शहर देखा जिसके चारों ओर सशक्त दीवारें और मीनारें थीं, पाताल से भी सुन्दर और सुअलंकृत था । वहाँ उन्होंने एक अत्यंत सुन्दर षोडशी कन्या को देखा जिसकी रक्षा पाँच फनवाला एक साँप करता था, जो दस परिचारकों से सेवित थी जिनकी सौ-सौ पत्नियाँ थीं । यह कन्या अभीष्ट रूप धारण कर सकती थी । उस नगरी के सौ फाटक थे । राजा और कन्या प्रेमबद्ध हो गये और राजा अपने मित्र को भूल गये । उस कन्या पुरञ्जनी के साथ महल में रहकर दाम्पत्य जीवन बिताते राजा अपनी सुध-बुध खो बैठे

और उनके कई पुत्र-पुत्रियां हुईं। इस प्रकार अपनी पत्नी के साथ रमण करते हुए और कुटुम्बास-ल रहते बुढ़ापा आ गया। गन्धर्व राज चण्डवेग अनेक गन्धर्वों और गन्धर्वात-रुणियों के साथ आकर उस नगरी का सर्व-नाश करने लगा। नागश्रेष्ठ प्रजागर ने उसकी रक्षा करने की कोशिश की, लेकिन निष्फल हुआ। काल की पुत्री पति की खोज में यवनों के पति भय से प्रार्थना करने लगी, वन भय ने उसको बहन के रूप में स्वीकार किया और कहा कि तुम्हारी आकृति के कारण कोई पति नहीं मिलेगा, लेकिन तुम सबको पति रूप में स्वीकार कर लेना। अपने भाई प्रज्वार और बहन के साथ उस नगरी में गया जरा रूप काल कन्या से आलिं-गित, गन्धर्वों और यवनों से पराजित राजा शिथिल हो गये, उस नगरी को छोड़ने को तैयार हो गये। प्रज्वार ने नगरी पर आग लगाई, उसका कोई रक्षक नहीं रहा। पुरंजन की मृत्यु हो गई।

पुरंजनी–देः पुरञ्जन।

पुरंजनोपाख्यान–राजा पुरञ्जन की जो कथा नारद ने प्राचीनबर्हि को सुनायी थी (देः पुर-ञ्जन) उसमें पुरञ्जन जीव है; जो शरीर रूपी महल में रहता है। अविज्ञात नामक मित्र भगवान् है क्योंकि वह ठीक तरह से जाने नहीं जाते। नौ फाटक शरीर के नौ द्वार हैं, दस परिचारक दशेन्द्रिय, "अहं, मम" का द्योतक बुद्धि पुरञ्जनी है जो जीव के आत्मसात् कर सुखभोग करता है। पांच प्राकोण हैं पांच फणवाला सांप। पाञ्चाल नामक नगरी पांच विषयों का द्योतक है। काल गन्धर्व राजा चण्डवेग है, दिन रात उसके अनुचर गन्धर्व और उनकी तरुणियां हैं। कालपुत्री बुढ़ापा है, यवनपति भय मृत्यु है, आधि-व्याधि यवन, शीत ज्वर और दाहज्वर भाय का भाई प्रज्वार है।

पुरंजय–वैवस्वत मनु के पौत्र, विकुक्षि के पुत्र। इनके अपर नाम इन्द्रवाहन और ककुत्स्थ थे (देः इन्द्रवाहन)।

पुरजित–शिव का विशेषण।

पुरन्दर—(१) इन्द्र (२) असुरों के पुरों का ध्वंस करने वाले शिव का विशेषण (३) पाञ्चजन्य नामक अग्नि का पुत्र (४) वर्तमान मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

पुरन्ध्रि—प्रौढ़ा, विवाहिता स्त्री।

पुराण-अतीत काल का इतिहास, देवों और सिद्धों को प्रतिपादित करने वाली धार्मिक पुस्तक। उपनिषदों में पाया जाता है कि पुराण इति-हास है और पांचवां वेद है। ये चरित्रातीत काल से उपस्थित है। पुराण अनेक है लेकिन मुख्य अठारह हैं। इनके अतिरिक्त अनेक उपपुराण भी हैं। संसार के बहुत से तथ्य इनमें पाये जाते हैं, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवी, आदि देवों और देवियों की महिमा और लीलाओं का वर्णन इनमें होता है। कथारूप में होने से वास्तविक तत्व को समझने में कठिनता नहीं होती। ये व्यास ऋषि के द्वारा निर्मित माने जाते हैं।

पुराणपुरुष—महाविष्णु।

पुरातन–महाविष्णु का विशेषण।

पुरावसु–भीष्म का विशेषण।

पुरु—छठे मनु और नड़वला के एक पुत्र।

पुरुकुत्स–राजा मान्धाता और बिन्दुमती के एक पुत्र। अम्बरीष और मुचुकुन्द इनके भाई थे। इनकी पचास बहिनें थीं जो सौभरि महर्षि की पत्नियां बनीं। पुरुकुत्स की पत्नी नर्मदा नागश्रेष्ठों की बहन थी। वासुकि के उपदेश के अनुसार नर्मदा उनको रसातल ले गयी। वहां भगवान की शक्ति के प्रभाव से पुरुकुत्स ने नागों के शत्रु गन्धर्वों को मारा। इसके प्रत्युपकार में वासुकि ने वर दिया कि जो

इस घटना को याद करेगा उसको नागों से भय नहीं रहेगा। पुरुकुत्स के पुत्र त्रसद्दस्यु थे।

पुरुजित्–(१) पुरुजित् और कुन्तिभोज दोनों कुन्ती के भाई थे, युधिष्ठर आदि के मामा थे। ये दोनों द्रोणाचार्य से मारे गये (२) श्रीकृष्ण और जाम्बवती का एक पुत्र। (३) जनक वंश के राजा अज के पुत्र, इनके पुत्र अरिष्टनेमि थे। (४) वसुदेव के भाई आनक और उग्रसेन की पुत्री कङ्का के दो पुत्रों में से एक।

पुरुमीद–पूरुवंश के एक राजा वृहत्पुत्र के पुत्र थे।

पुरुविश्रुत–वसुदेव और देवक की पुत्री सहदेवा के आठ पुत्रों में से एक।

पुरुष–(१) पुर अर्थात् शरीर में शयन करने वाले भगवान् विष्णु। (२) परमात्मा, सम्पूर्ण सृष्टि का मूल स्वरूप है। यह नाम रूप रहित है, इसका जन्म, वृद्धि और नाश नहीं है। इस पुरुष के दो रूप हैं व्यक्त और अव्यक्त यह अव्यक्त निर्गुण, निराधार, निराकार हैं, स्पर्श, रूप, शब्द, रस, गन्ध से रहित है। यही सूक्ष्म प्रकृति या मूल प्रकृति है। एक ब्रह्म के, भगवान विष्णु के दो रूप हैं पुरुष और प्रकृत। प्रलय के समय ये भिन्न और सृष्टि काल में इनका संबन्ध होता है। काल अनन्त है और अनादि है, इसलिए सृष्टि स्थित, संहार और लय अविच्छिन्न चलता है। प्रलयकाल के अन्त में सर्वान्तर्यामि विश्वरूप परमात्मा, परब्रह्म, विराट पुरुष प्रकृति को क्षोभित करता है और प्रकृति और पुरुष मिलकर सृष्टि करते हैं। (२) चाक्षुष मनु का एक पुत्र।

पुरुषसूक्त–ऋग्वेद के दसवें मण्डल का एक सूक्त जो सोलह मन्त्रों का है और बहुत ही पावन माना जाता है। इससे परमेश्वर परमात्मा का स्तवन होता है।

पुरुषार्थप्रदा–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारो पुरुषार्थों को देने वाली देवी।

पुरुषोत्तम–भगवान् विष्णु।

पुरुरवा–मनु की पुत्री इला हुई, लेकिन पुत्र की इच्छा से मनु ने यज्ञ करवाया था। भगवान से वशिष्ट की प्रार्थना करने पर पुत्री पुत्र हो गयी, सुद्युम्न जब यह बड़ा हो गया शिकार खेलता शिव और पार्वती के क्रीड़ा स्थल इलाव्रत में पहुँच गया और शिव से पार्वती को मिले वर के अनुसार सुद्युम्न फिर से इला हो गया। इस सुन्दर तरुणी को देख कर सोम पुत्र बुध उस पर अनुरक्त हो गया, दोनों का विवाह हो गया और पुरुरवा का जन्म हुआ। चन्द्रवंश इनसे चला। इनकी पत्नी उर्वशी नाम की प्रसिद्ध अप्सरा थी जिससे पुरुरवा के आयु, श्रुतायु, सत्यायु, रय, विजय और जय नाम के छः पुत्र हुए।

पुरोचन–दुर्योधन का एक मन्त्री जिसने लाखा गृह बनवाया था और बाद में अग्नि की भेंट की थी।

पुरोजव—प्रियव्रत के पुत्र मेधातिथि का एक पुत्र।

पुरोडाश–(१) पिसे हुए चावल से वृत्ताकार में बनी एक प्रकार की रोटी जो वानप्रस्थि खाता है। (२) पिसे हुये चावल से यज्ञाग्नि में दी जाने वाली आहुति।

पुलस्त्य–सृष्टि की वृद्धि के लिये ब्रह्मा ने अपने शरीर के अवयवों से ऋषियों को जन्म दिया। ब्रह्मा के कर्ण से पुलस्य का जन्म हुआ। इनको अपनी पत्नी हवि र्भू से अगस्त्य और विश्रवा नाम के दो पुत्र हुए। कार्तवीरार्जुन के बन्धन से पुलस्त्य ने रावण जो उनका पौत्र था, मुक्त किया था। ये ब्रह्मर्षि और योगि थे। ये बड़े ही धर्मपरायण, तपस्वी, तेजस्वी थे। योग विद्या के बहुत बड़े आचार्य और पारदर्शी थे। पुराणों और महाभारत में

जगह जगह इनकी चर्चा आयी है ।

पुलह–पुलह भी ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक हैं। इनका जन्म ब्रह्मा की नाभि से हुआ। ये बड़े ऐश्वर्यवान् और ज्ञानी महर्षि हैं। इन्होंने सनन्दन से ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा प्राप्त की थी और वह ज्ञान गौतम को सिखाया था। इनके दक्ष प्रजापति की कन्या क्षमा और कर्दम ऋषि की पुत्री गति के कर्म श्रेष्ट, वरीयान, सहिष्णु आदि पुत्र और सिंह व्याघ्र, किम्पुरुष आदि भी पैदा हुए। ये सप्त-ऋषियों में एक हैं और एक प्रजापति हैं।

पुलोम–कश्यप प्रजापति और दिति का पुत्र एक असुर, इनकी पुत्री पौलोमी इन्द्र की पत्नी शची है।

पुलोमा–(१) भृगु महर्षि की पत्नी (२) एक राक्षस कन्या।

पुलोमार्चिता–पुलोमा, इन्द्राणी से पूजिता देवी।

पुष्कर–(१) अजमेर के पास एक पुण्य तीर्थ। (२) नल का सौतेला छोटा भाई (३) वरुण का पुत्र (४) शिव का विशेषण (५) इक्ष्वाकु-वंश के राजा सुनक्षत्र के पुत्र (६) यदुवंश का एक राजकुमार।

पुष्करचूड़–भूमण्डल की चार दिशाओं में ब्रह्मा से स्थापित दिक्गजों में से एक। ये भूमण्डल को सन्तुलित रखते हैं।

पुष्करद्वीप–पृथ्वी के सात मुख्य द्वीपों में से एक। दधिमण्डोद से बाहर और उससे दुगुना चौड़ा यह द्वीप है। इसके चारों ओर शुद्ध जल का समुद्र है जो उतना ही चौड़ा है। इस द्वीप के बीच में एक बृहदाकार पुष्कर (कमल) है जिसके लाखों सुनहले पत्ते हैं और जो जाज्वल्यमान सूर्य के समान प्रकाशित रहता है और जो ब्रह्मा का आसन माना जाता है। इस द्वीप के बीच में अस्सी हजार मील ऊँचा और चौड़ा एक पर्वत है जिसका नाम मानसोत्तर है। इस पहाड़ के चारों कोनों में इन्द्र, यम, वरुण और सोम के नगर स्थित हैं। उसके ऊपर मेरु पर्वत की परिक्रमा करते हुए सूर्य देव के रथ का एक पहिया रहता है। प्रियव्रत के सातवें पुत्र वीतिहोत्र इस द्वीप के पहले चक्रवर्ति थे। इस द्वीप के लोग भगवान के ब्रह्मा स्वरूप की आराधना करते हैं।

पुष्करा–देवी का नाम

पुष्कराक्ष–(१) कमल के समान नेत्रवाले महाविष्णु (२) तक्षशिला के एक राजा।

पुष्करिणी–(१) ध्रुव के पौत्र व्युष्ट की पत्नी, उनका पुत्र सर्वतेजा था। (२) चाक्षुष मनु की पत्नी।

पुष्करेक्षणा–कमल के समान नेत्रोंवाली देवी।

पुष्कल–असुर योद्धा जो रावण का मित्र था।

पष्टि–(१) देवी का नाम; वाक्, ज्ञान, इन्द्रिय, क्षेत्र, घन, पशु आदि की समृद्धि करने वाली देवी। (२) दक्ष प्रजापति और मनुपुत्री प्रसूति की पुत्री, धर्म की पत्नी।

पुष्प–कश्यप वंश का एक नाग श्रेष्ट।

पुष्पक–कुबेर का दिव्य विमान। विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा सूर्यदेव की पत्नी थी। अपने पति के असहनीय तेज को सह न सकने के कारण पुत्री के हित के लिए विश्वकर्मा ने सूर्य के तेज को रगड कर कम किया। रगड़ने से निकले सूर्य के तेज की रेणुओं से विश्वकर्मा ने चार अद्भुत वस्तुएँ बनायी–विष्णु का श्री चक्र, शिव का आयुध त्रिशूल, पुष्पक विमान और कार्तिकेय की शक्ति। विश्रवा के पुत्र वैश्रवण ने कठिन तपस्या कर ब्रह्मा को सन्तुष्ट किया और पुष्पक विमान पाया। जब रावण तपस्या कर प्रबल हुआ, कुबेर से यह विमान छीन लिया। श्रीराम ने युद्ध में रावण का वध किया और यह विमान विभीषण को मिला। विभीषण ने इसको कुबेर को लौटा दिया।

पुष्पकेतु–कामदेव ।

पुष्पपुर—पाटलिपुत्र ।

पुष्परथ–वसुमना नाम के राजा का रथ । यह आकाश, पर्वत और समुद्र पर जा सकता था ।

पुष्पवती–एक पुण्य स्थल ।

पुष्पशर—कामदेव का शर ।

पुष्पा–चम्पा नाम की नगरी ।

पुष्पाञ्जलि–फूल हाथों में लेकर (मन्त्र का उच्चारण कर) श्रद्धा से भगवान के चरणों में अर्पित करना ।

पुष्पानन–एक यक्ष ।

पुष्पार्ण–ध्रुव के पुत्र वत्सर और स्वर्वीथि का पुत्र ।

पुष्पोत्कटा–सुमालि और केतुमती की पुत्री, कुबेर की पत्नी ।

पुष्य–(१) एक सूर्यवंशी राजा (२) एक महीना (३) एक नक्षत्र ।

पूजा–सभी धार्मिक लोग ईश्वर की पूजा करते हैं । दो प्रकार की पूजा होती है, एक मानसिक, दूसरी इष्टदेव की मूर्ति या चित्र या लिंग की । भक्त ब्राह्म मुहूर्त में जागकर शौचादि से निवृत होकर स्नान कर शुभ्र वस्त्र धारण कर स्वच्छ पवित्र जगह पर बैठकर पूजा करता है । पूजा के लिए अलग कमरा या अलग जगह निर्धारित करें तो अच्छा है । आसन पर, जो अति ऊँचा या अति नीचा न हो सुखपूर्वक अधिक समय तक स्थिर बैठ सकता हो, उस आसने से बैठना चाहिए । भक्त का मुँह पूर्व या उत्तर को होना चाहिये । ईश्वर की पूजा अपनी हैसियत के अनुसार जल से अभिषेक, वस्त्र, चन्दन, सुगन्धित द्रव्य चढ़ाना; जाति, चम्पा, वेला, तुलसी पत्र, विल्व पत्र आदि पुष्प-पत्रों से अर्चना करना, मंजे हुए साफ चाँदीं या ताम्बे के वरतनों में फल-भोग आदि नैवेद्य चढ़ाना चाहिए । दूध, दीप की आरति उतारना और भगवान के केशादि पाद अववों का ध्यान कर अपनी पूजा का फल भगवान को ही अर्पण करना चाहिए ।

पूतना–एक राक्षसी जो कंस के द्वारा श्रीकृष्ण की हत्या करने गोकुल में भेजी गई । अपने स्तन में विष लगाकर एक अति सुन्दर स्त्री का रूप धारण कर बालक श्रीकृष्ण को दूध पिलाने लगी । भगवान दूध के साथ उसका जीवन भी पी गये । पूतना अपना भयंकर रूप धारण कर भयंकर शब्द से नीचे गिर पड़ी । श्रीकृष्ण के हाथ से मृत्यु होने के कारण इसको मुक्ति मिली और उसके धड़ को जलाते समय सुगन्धि निकली । कहा जाता है कि पूतना पूर्व जन्म में वलि महाराजा की बहन थी । जब भगवान वामनावतार लेकर पंचवर्षीय शिशु के रूप में वलि के यज्ञ में गये, राजा की बहन ने अन्तःपुर से उस सुन्दर सुकुमार बालक को देखा और उसके मन में उस शिशु को प्यार कर दूध पिलाने की इच्छा हुई । पूतना ने श्रीकृष्ण के मोहन रूप को देखकर पहले प्रेम से प्यार किया और दूध पिलाया ।

पूतात्मा–पवित्रात्मा भगवान विष्णु ।

पून्तानम् नम्पूतिरि–केरल के प्रसिद्ध भक्त कवि । ये मेल्पातूर भट्टतिरि के समकालीन थे । वे वड़े ज्ञानी नहीं थे, लेकिन श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे । इनकी भक्ति के बारे में अनेक ऐतिह्य हैं । ये केरल के प्रसिद्ध क्षेत्र गुरुवायूर मन्दिर में रह कर श्रीकृष्ण का भजन करते थे । मेल्पातूर भट्टतिरि ज्ञानि और संस्कृत के पण्डित थे और उन्होंने श्रीमद्भगवत के आधार पर अति सुन्दर, भक्तिमय और काव्यमय 'नारायणीयम्' लिखा था । भगवान की कृपा से इनका लकवा दूर हो गया था । पून्तानम् ने भक्ति उद्वेग से श्रीकृष्ण का कीर्तन करते हुए मलयालम् में 'ज्ञानपाना' नामक एक काव्य रचकर शुद्ध करने के लिए भट्टतिरि

को दिया। अपने ज्ञान से गर्वित भट्टतिरि ने उनकी अवहेलना की। पुन्तानम् को वड़ा दुःख हुआ उस दिन अचानक स्वस्थभट्टतिरि फिर से लकवा से वीमार पड़े। उन्होंने स्वप्न में भगवान को कहते हुए सुना कि 'तुम्हारी विभक्ति से मुझे पून्तानम् की भक्ति अच्छी लगती है।" भट्टतिरि को मालूम हो गया कि भगवान अपने भक्त का अपमान न सह सके। दूसरे दिन उन्होंने पून्तानम् से माफी माँगी। इन्होंने भक्तिरस पूर्ण कई स्त्रोत और कविताएँ लिखी हैं।

पूम्पावा–मद्रास में एक व्यापारी की पुत्री थी। पिता शिवसेन वड़े भक्त थे। अपनी पुत्री पूम्पावा का विवाह भक्ताग्रेसर तिरुज्ञान सम्वन्धर से करना चाहा। लेकिन उससे पहले पूम्पावा की मृत्यु हुई। पिता ने पुत्री के भस्म और हड्डी को एक घड़े में बन्द कर रखा। वाद में वहाँ सम्वन्धर आये। पिता ने पुत्री वारे में कहा। उन्होंने घड़े को पास रखकर एक कीर्तन गाया। पूम्पावा पुनर्जीवित हो गई। पिता ने पुत्री का विवाह करना चाहा, लेकिन सम्वन्धर ने यह कह कर इनकार किया कि जीवनदान देने से यह मेरी पुत्री के समान है। पूम्पावा वड़ी भक्त थी। इस कथा के आधार पर मद्रास प्रान्त में पूम्पावा का त्योहार मनाया जाता है।

पूरु—सोमवंश के प्रसिद्ध राजा जिनसे पुरुवंश चला। ये ययाति महाराज और शर्मिष्टा के पुत्र थे। शुक्राचार्य के शाप से ययाति जरा ग्रस्त हो गए और शाप मोक्ष मिला था कि किसी युवक से जरा वदल सकते हैं। ययाति के चार पुत्रों ने इनकार कर दिया। सबसे छोटे पुत्र पूरु ने पिता से जरा लेकर अपना यौवन दे दिया। ययाति ने अनेक वर्ष देवयानी के साथ सुख भोग करने के वाद अपने पुत्र को यौवन लौटाया और पूरु को महाराजा वना कर वन चले गये। इनकी पत्नी कौशल्या या पौष्टी थी और इनके जनमेजय आदि तीन पुत्र हुए। राज्यपालन में निपुण, वीर योद्धा थे और इतके प्रसिद्ध हो गये कि इनसे पूरुवंश चला।

पूर्ण–(१) समस्त ज्ञान, शक्ति, ऐश्वर्य आदि गुणों से परिपूर्ण विष्णु, देश काल, वस्तु से अपरिछद सर्वदा सर्वत्र पूर्ण भगवान। (२) कंशय और प्राधा का पुत्र एक गन्धर्व।

पूर्णमद–कश्यप वंश का एक नाग।

पूर्णमास–पूर्णमासि को किया जाने वाला एक यज्ञ।

पूर्णा–सम्पूर्ण जगत में व्याप्त देवी।

पूर्णायु—एक गन्धर्व।

पूर्णिमा–पूर्णमासि, शुक्लपक्ष का वह दिन जव सूर्य और चन्द्र एक ही स्थान पर आते हैं। उस दिन चन्द्र की सोलहों कलायें पूर्ण होती हैं।

पूर्वचित्ति–एक प्रसिद्ध अप्सरा जो पृथुमहाराज के पुत्र राजा अग्नीन्ध्र की पत्नी थी। इनके नाभि, किम्पुरुष, हरिवर्ष, इलाव्रत, रम्यक, हिरण्मय, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल नामक नौ पुत्र हुए। इन पुत्रों के जन्म के वाद पूर्वचित्ति परमात्मा की सेवा के लिए ब्रह्मलोक चली गयी। यह ब्रह्म सभा में गया करती थी।

पूर्वाद्रि–उदयाचल जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्र का उदय होता है।

पूषा–पूसा, द्वादशादित्यों में से एक। (२) एक ऋषि जिन्होंने दक्ष के याग के भाग लिया था। दक्ष यज्ञ के ध्वंस के समय वीर भद्र ने इनके दांत तोड़े थे। इसलिए सिर्फ आटा ही खाते हैं।

पृतना–सेना का एक भाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े, १२१५ पदादि रहते हैं।

पृथा–पाण्डु की पत्नी कुन्ती का अपर नाम। यदुवंश के राजा देवमीढ़ के पुत्र शूरसेन और मारिषा की पुत्री, वसुदेव की बहन। सूरसेन ने अपनी पुत्री को अपने मित्र कुन्ति भोज को दत्तक में दिया। इसलिए इसका नाम कुन्ती हो गया (दे: कुन्ती)

पृथु–ये मनुवंश के राजा अंग के पुत्र वेन के विख्यात पुत्र थे। वेन के वध के बाद अराजकत्व के डर से ऋषियों ने वेन का शरीर मथा। तब कल्मषों का मूर्तीकरण निषाद का जन्म हुआ। ऋषियों ने दुबारा वेन की बाहों को रगड़ा। तब एक स्त्री और पुरुष का आविर्भाव हुआ और वेदज्ञ दीर्घ चक्षु ऋषियों ने देखा कि ये भगवत काल युक्त परम पुरुष का अवतार है। पुरुष पृथ्वी मण्डल की रक्षा करने वाले, यशस्वी, सर्वज्ञ बलवान् राजा हैं और पृथु नाम से पृथ्वी का पहला महाराजा बनेंगे। स्त्री साक्षात् लक्ष्मी की अंशसंभवा है और अर्चि नाम से पृथु की पत्नी बनेगी। पृथु भगवद् चिह्नों से युक्त थे। पृथु का राजतिलक किया गया। सभी देवताओं ने अनेक प्रकार की विभूतियों, अस्त्र, शस्त्र दिये। भूमि के उर्वरा होने से निरन्ना दुःखी प्रजा का दुःख दूर करने के हेतु शर धनुष लेकर पृथ्वी की ओर बढ़े। यह देख कर भय से कातर पृथ्वी गो का रूप धारण कर पहले दौड़ने लगी। महाराजा को पीछा करते देख उनकी शरण ली। राजा ने मनु का बछड़ा बना कर गो रूपी पृथ्वी से सब प्रकार के पेड़ पौधे दूध रूप में दुहे। इस प्रकार सभी जीव जन्तु, देव, गन्धर्व, किन्नर, नाग आदियों ने अपनी-अपनी अभीष्ट वस्तुयें दुह ली पृथु ने सौ यज्ञ किये, इन्द्र यज्ञ में बाधा डालने आये, लेकिन उनके पुत्र से हार माननी पड़ी। दीर्घकाल तक सुचारु रूप से प्रजा-परिपालन कर अपने पुत्र विजिताश्व के योग्य हस्तो में राज्य को सौंप कर अपनी पत्नी अर्चि के साथ वन गये। पृथु के विजिताश्व, हर्यक्ष, धूम्रकेश, वृक, द्रविण नाम के पुत्र थे। वन में कठिन तपस्या कर दोनों ने मोक्ष प्राप्त किया। (२) चौथे मनु तामस का एक पुत्र। (३) अग्नि का नाम (४) यादव वंश के रुचक के पांच पुत्रों में से एक।

पृथुग्रीव–एक राक्षस जो श्रीराम के हाथ पञ्चवटी में मारा गया।

पृथुश्रावा–(१) एक महर्षि (२) यादव वंश के शशबिन्दु का एक पुत्र। इनके पुत्र का नाम धर्म था। (३) एक सर्प।

पृथुसेन–ऋसभदेव के पुत्र भरत वंश के राजा विभु और रती का पुत्र। इनकी पत्नी आकूती थी और पुत्र नक्त।

पृथ्वी–भूमि, पांच मूल तत्वों मे से एक।

पृथ्वीपति–(१) विष्णु (२) राजा।

पृश्नि–(१) एक ऋषि। (२) सुतपा नामक प्रजापति की पत्नी। स्वायम्भू मन्वन्तर में अकल्मष सुतपा और पृश्नि ने भगवान् को पुत्र रूप मे प्राप्त करने के लिए एकाग्र मन से कठिन तपस्या की। इन दोनों ने बारह हजार दिव्य वर्ष अति दुष्कर तप किया। भगवान के समान भगवान ही होने से उन्होंने पृश्निगर्भ नाम से उनका पुत्र होकर जन्म लिया। इसके बाद कश्यप (सुतपा का अवतार) और अदिति (पृश्नि का अवतार) के पुत्र उपेन्द्र या वामन के नाम से जन्म लिया। तीसरी बार वसुदेव और देवकी, जो सुतपा और प्रश्नि के अवतार माने जाते हैं, के पुत्र श्रीकृष्ण होकर जन्म लिया।

पृश्निगर्भ–भगवान् विष्णु।

पृषत–पाञ्चाल राजा द्रुपद के पिता, ये भरद्वाज मुनि के मित्र थे। इनके कुल में पैदा होने से द्रौपदी का पार्षती नाम भी है।

पृपताश्व–सोमवंश के राजा अम्बरीप का एक पुत्र ।

पृषध्र–वैवस्वत मनु के एक पुत्र जिनको युवावस्था से ही संसार के भोग विलासों से विरक्ति हुई । एक वार गुरु के आश्रम में रहते समय रात को गोशाला में एक व्याघ्र गया । गायों की रक्षा करने के लिये खिची हुई तलवार से राजकुमार वाहर निकले और अन्धकार में व्याघ्र समझकर एक गाय को मारा । सुवह होने पर अपना कठोर कृत्य देख कर विरक्त होकर तपस्या करने गये ।

तागरस–एक ग्रीक तत्व शास्त्रज्ञ ।

पैल–व्यास महर्पि के प्रवान शिष्यों में से एक जिन्होंने महाभारत को राज्य के कोने-कोने में पहुँचाया ।

पैशाच–एक प्रकार का विवाह । यह बहुत निम्न श्रेणी का विवाह है । इसके अनुसार सोई हुई या वेहोसी में पड़ी कन्या का उसकी स्वीकृति के विना कन्यात्व हरण किया जाता है ।

पोगंड–वह वालक जिसकी आयु पाँच और सोलह साल के वीच में हो ।

पौंड्र–भीमसेन का शंख जो वड़े आकार का था और उसका वड़ा भारी शब्द होता था । इसलिये उसका विशेपण है महाशंख ।

पौंड्रक–(१) देश का नाम (२) यम के वाहन भैंसा का नाम ।

पौंड्रक वासुदेव–करूप देश के राजा । उन्होंने यह सन्देस देकर श्रीकृष्ण के पास एक दूत को भेजा कि तुमने वासुदेव नाम झूठ मूठ लिया है । मैं ही अच्युत हूँ । मेरे चिन्हों को छोड़कर मेरी शरण लो । राजा की वालिश वातों को सुनकर श्रीकृष्ण समेत सभी सभासद हँस पड़े । पौण्ड्रक अक्षौहिणी सेना को लेकर आये वे कृत्रिम शंख, चक्र, गदा, कौस्तुभ, वनमाला आदि भगवद् चिन्हों से भूपित थे। युद्ध में पौण्ड्रक मारे गये । लेकिन सर्वथा भगवान के रूप का चिन्तन करने से उन्हीं की वेषभूषा धारण करने से, अपने आप को भगवान् समझने से मृत्यु के वाद भगवान् को प्राप्त हो गये ।

पौदन्य–एक प्राचीन नगर जिसको सौदास के पुत्र अश्मक ने वसाया था । गोदावरी के पास का आधुनिक पैथान नगर ।

पौरञ्जनी–पुरञ्जनी की पुत्रियाँ ।

पौरव–(१) पुरु से वंशज (२) एक राजर्पि (३) विश्वामित्र का पुत्र ।

पौरवी–(१) देवक की पुत्री और वसुदेव की पत्नी, इनके भूत, सुभद्र आदि वारह पुत्र हुए । (२) युधिष्ठर की पत्नी, इनसे देवक नामक पुत्र हुआ ।

पौराणिक–पुराणों का सुविज्ञ ब्राह्मण ।

पौर्णमास–मारीचि का पुत्र । इनके विरजा और पर्वत नाम के दो पुत्र थे ।

पौर्णमासि–पूर्णिमा

पौलस्त्य–पुलस्त्य के वंशज, रावण आदि राक्षस कुवेर ।

पौलोम–पुलोम नाम के राक्षस के पुत्र, अर्जुन से मारे गये ।

पौलोमा–एक पुण्य तीर्थ ।

पौलोमी–पुलोम की पुत्री शची, इन्द्र की पत्नी ।

पौष–एक चन्द्रमास जिसमें चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है ।

प्रकाश–(१) भृगुवंश का एक मुनि ।

(२) शरीर, इन्द्रिय और अन्तःकरण में आलस्य और जड़ता का अभाव होकर जो हल्कापन, निर्मलता और चेतनता आ जाती है उसका नाम प्रकाश है । अतीत पुरुप में यह पाया जाता है ।

प्रकृति-(१) ईश्वर की अनादि सिद्ध मूल प्रकृति ईश्वर की शक्ति है । पृथ्वी जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, वुद्धि और अहङ्कार इस प्रकार आठ प्रकार से विभाजित भगवान की प्रकृति

है। यह आठ भेदों वाली तो भगवान की अपरा अथवा जड़ प्रकृति है। जिससे सम्पूर्ण जगत धारण किया जाता है वह भगवान की जीवरूपा परा या चेतना प्रकृति है यह अपरा प्रकृति संसार की हेतुरूप है और इसी के द्वारा जीव का वन्धन होता है। पुरुष और प्रकृति के संबंध से सृष्टि का आरंभ होता है, प्रलय में ये भिन्न रहते हैं। प्रकृति और पुरुष दोनों की अनादिता समान है। प्रकृति सत्व, रज, तम नामक तीन गुणों से युक्त है। प्रकृति से बने स्थूल, सूक्ष्म, कारण इन तीनों शरीरों में से किसी भी शरीर के साथ जबतक आत्मा का प्रकृति के साथ संबंध रहता है तब तक प्रकृति जनित गुणों का भोक्ता है। प्रकृति से संबंध छूट जाने पर उसमें भोलापन नहीं है। वास्तव में पुरुष, नित्य असङ्ग है (दे: पुरुष) (२) स्वभाव (प्रकृति तीन प्रकार की है। (१) राक्षसी या आसुरी (२) मोहिनी प्रकृति (३) दैवी प्रकृति। राक्षसों की भांति विना ही कारण द्वेष करके दूसरों का अनिष्ट करने, उन्हे कष्ट पहुँचाने, काम लोभ आदि के वंश में आकर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये दूसरों को कष्ट पहुँचाना यह राक्षसी या आसुरी प्रकृति है। ऐसे आदमी में दम्भ, दर्प अभिमान, क्रोध, अज्ञान, असत्य, अशुद्धि आदि सर्व दुर्गुण होते हैं। प्रमाद या मोह के कारण किसी भी प्राणी को दुःख पहुँचाना, उस चेष्टा को भ्रमवश उत्तम समझना यह मोहिनी प्रकृतिवाले के लक्षण हैं। दैवी प्रकृति वाले महात्मा लोग भगवान का निरन्तर गुणगान करते हैं, भगवत् प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते हैं, प्राणिमात्र में भगवान का दर्शन करने की कोशिश करते हैं। उनमें भय का सर्वथा अभाव, अन्त करण की निर्मलता, इन्द्रिय दमन, गुरुजनों की पूजा, उत्तम कर्मों का आचरण, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, शान्ति, प्रिय भाषण, कर्मों में कर्तापन के अभिमान का त्याग आदि गुण है।

प्रगल्भा–(१) साहसी स्त्री (२) देवी का नाम सृष्टि आदि कर्मों में प्रौढ़।

प्रग्रह–भक्तों के द्वारा अर्पित पत्र-पुष्पादि को ग्रहण करनेवाले विष्णु।

प्रघोष–श्रीकृष्ण और लक्ष्मणा का एक पुत्र।

प्रचण्डा–दुर्गा का विशेषण।

प्रचेता–(१) पृथु चक्रवर्ति के पौत्र वर्हिष का अपर नाम था प्राचीन वर्हि। इन्होंने ने ब्रह्मा के आदेश से समुद्र के देवता की पुत्री शतद्रुती से विवाह किया। इनके दस पुत्र हुए जो प्रचेता के नाम से जाने जाते हैं। वे सब तुल्य नाम, रूप, गुण वाले धर्मनिष्ठ थे। पिता के आदेश पर प्रजा सृष्टि के लिये पश्चिम की तरफ गये और एक सरोवर में रह कर श्रीहरि की तपस्या करने लगे। शिव ने हरि को तुष्ट करने के लिये उनको रुद्रगीत नामक प्रसिद्ध मन्त्रगीत सिखाया। विष्णु ने प्रसन्न होकर वर दिया। अनेकों वर्ष बीतने पर जब वे उस सरोवर से निकले तब चारों तरफ घने पेड़ों का जंगल देख कर क्रोध में आकर मुँह से निकली अग्नि से पेड़ों को जलाने लगे। इस पर ओषधीश सोम ने आकर उनको शान्त किया। भगवान विष्णु के वर के अनुसार प्रचेतसों ने कुण्डमुनि और प्रम्लोचा नाम की अप्सरा की सुन्दर पुत्री मारिषा, जिसका पालन-पोषण वृक्षों ने किया था, से विवाह किया। उनको दक्ष नामक एक पुत्र हुआ जो प्रजापति दक्ष का पुनर्जन्म माना जाता है। (२) वरुण का विशेषण। (३) ययाति के पुत्र द्रुह्य के वंशज दुर्मन का पुत्र, इसको सौ पुत्र हुए जो म्लेछों के राजा बने।

प्रजागर–पुरञ्जनी के महल की रक्षा करने में नियुक्त एक साँप (दे:–पुरञ्जन) पुरञ्जनी

इस महल रूपी शरीर की वृद्धि है और पांच सिर वाला यह सांप पांच वृत्तियों वाला प्राण है।

प्रजागरा—एक देवांगना।

प्रजाभव—सारी प्रजा को सृष्टि को उत्पन्न करने वाले भगवान विष्णु।

प्रजापति—(१) ईश्वर रूप से सारी प्रजाओं के स्वामी भगवान विष्णु। (२) ब्रह्मा ने सृष्टि का विस्तार करने के लिये मानस पुत्रों की सृष्टि की और उनसे प्रजासृष्टि का विस्तार करने को कहा। इनको प्रजापति कहते हैं। कर्दम, कश्यप, पुलह, दक्ष आदि हैं।

प्रज्वार—पुरञ्जनोपाख्यान में यवन पति का भाई जो भूतमात्र को यातना पहुँचाता है। यह ज्वर का मूर्तिरूप है। दो रूप हैं, शीत ज्वर जो कमान के साथ आता है और दाह ज्वर जिससे ताप बहुत होता है।

प्रणव—(१) मूल मन्त्र ओम् (२) भगवान विष्णु जिनको वेद भी प्रणाम करते हैं।

प्रतर्दन—(१) प्रलयकाल में प्राणियों का संहार करनेवाले विष्णु भगवान। (२) ययाति महाराजा के पुत्री का पुत्र, दिवोदास का पुत्र। (३) पूरूरवा के वंशज दिवोदास के पुत्र, इनका अपर नाम द्युमान था।

प्रताप—(१) सौवीर वंश का एक राजा। (२) विश्वविश्रुत राजपूत राजा प्रतापसिंह जिन्होने मातृभूमि के लिये सब कुछ अर्पण किया था।

प्रतापन—सूर्य आदि अपनी विभूतियों से विश्व को तप्त करनेवाले महाविष्णु।

प्रतापी—च्यवन महर्षि और रुरु की पुत्रवधू। इनका पुत्र रुरु था।

प्रतापभानु—तुलसी रामायण के अनुसार प्रताप भानु एक धर्म परायण वीर राजा थे। कपट सन्यासी के वेष में एक शत्रु राजा के धोखे में आकर ब्राह्मणों को अनजाने में मांस परोसा। ब्राह्मणो ने शाप दिया कि राजा सपरिवार राक्षस योनि में जन्म लेंगे। कहा जाता है कि इन्हीं राजा ने रावण के नाम से पुनर्जन्म लिया और भगवान से मारे गये।

प्रति—पुरूरवा के वंशज कुश के पुत्र, इनके पुत्र सञ्जय थे।

प्रतिकाश्व—इक्ष्वाकु वंश के राजा भानुमान के पुत्र, इनके पुत्र सुप्रतीक थे।

प्रतिबाहु—यादव वंश श्वफल्क और गान्दिनी का एक पुत्र।

प्रतिभानु—श्रीकृष्ण और सत्यभामा के एक पुत्र।

प्रतिरथ—पूरुवंश का एक राजा।

प्रतिरूप—एक प्रतापी असुर।

प्रतिलोमज—ऊँची जातिवाली स्त्री और नीच जातिवाले पुरुष की सन्तान।

प्रतिविन्ध्य—(१) युधिष्ठिर और द्रौपदी का पुत्र, अश्वत्थामा से मारा गया। (२) एक चक्र नामक असुर के वंश का एक प्रबल असुर।

प्रतिव्योम—सूर्यवंशी राजवत्सवृद्ध के पुत्र, इनके पुत्र भानु थे।

प्रतिश्रवा—परीक्षित राजा के वंश का एक राजकुमार।

प्रतिश्रुत—वसुदेव और शान्तिदेवा का एक पुत्र।

प्रतिष्ठा—क्षेत्रों में देवमूर्ति की मन्त्रोचारणा सहित विधिपूर्वक स्थापना।

प्रतिष्ठान—गंगा यमुना के संगम पर स्थित एक नगर जो चन्द्रवंश के आदिकालीन राजाओं की राजधानी थी।

प्रतिहर्त—ऋषभदेव के पुत्र भरत के वंश के प्रतीह और सुवर्चला के पुत्रों में से एक। प्रतिहर्त और स्तुति से अज और भूमा के नाम के पुत्र हुए।

प्रतीप—चन्द्रवंश के राजा जो शन्तनु महाराजा के पिता थे। इनके देवापि, शन्तनु और बाह्लीक नाम के तीन पुत्र हुए।

प्रतीपक—जनक वंश के राजा मरु के पुत्र, इनके

पुत्र कृतिरथ थे ।

प्रतीह–परमेष्टि और सुवर्चला के नाम की पत्नी से प्रतीह नामक पुत्र हुआ ।

प्रत्यगात्मा–विषयोन्मुख इन्द्रियां बहिर्मुख और अन्तर्मुख होती हैं । जब इन्द्रियां बाह्यलोक के विषयों से छूट कर अन्तर्मुख हो जाती है, उस समय आत्मा को प्रत्यगात्मा कहते हैं । आत्मा अपने में ही सन्तोष पाता है ।

प्रत्यूष–धर्म और प्रभात का पुत्र, अष्टवसुओं में एक । इनके पुत्र थे देवल ऋषि ।

प्रथित–जगत की उत्पत्ति आदि के कारण भगवान विष्णु ।

प्रथुलाक्ष–अंग वंश के राजा रोमपाद के पौत्र चतुरंग के पुत्र, इनके पुत्र बृहद्भानु थे ।

प्रदाता–(१) एक विश्वदेव (२) इन्द्र का विशेषण ।

प्रदोष–ध्रुव के पौत्र पुष्पार्ण और दोषा के तीन पुत्रों में से एक ।

प्रद्युम्न–(१) श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के दस पुत्रों में जेष्ठ प्रद्युम्न कामदेव का पुनर्जन्म माने जाते हैं । शिव की नेत्राग्नि से कामदेव का शरीर भस्म हो गया । पति के विरह से कातर रति के दुःख से दयार्द्र श्री पार्वती ने वर दिया कि द्वापर युग में कामदेव श्रीकृष्ण के पुत्र होकर जन्म लेंगे । प्रद्युम्न के जन्म के बाद ही सूतिका गृह से शम्बर नामक असुर बालक को ले गया और समुद्र में फेंका । एक बड़ी मच्छली ने बालक को निगल लिया और वह एक मछुए के जाल में फँस गई । मछुए ने उसे शम्बर को दिया जिसने पकाने के लिये उसे रसोई में भेज दिया । रति इस शम्बर के गृह में अपने पति की प्रतीक्षा में दासी बन कर रह रही थी । मछली को काटने पर उसके पेट से एक सुन्दर बालक निकला । रति ने उस बालक को देखकर अपने पति को पहचान लिया और बड़े प्यार से पाला । युवावस्था में पहुँच कर प्रद्युम्न ने देखा कि उस दासी के व्यवहार में मातृस्नेह के बदले कामिनी का प्रेम प्रकट है जो अद्भुत है । पूछने पर रति ने सारी बातें बतायी । प्रद्युम्न शम्बर को मार कर रति के साथ द्वारका वापस आये । वे हर बात में अपने पिता के तुल्यरूप थे । प्रद्युम्न ने रुक्मि की पुत्री से विवाह किया और अनिरुद्ध नामक पुत्र हुआ । उन्होंने वज्रनाथ नामक असुर की पुत्री प्रभावती से भी विवाह किया था । ये बड़े वीर योद्ध महारथी थे । प्रभास में दूसरे यादवों के साथ प्रद्युम्न की मृत्यु हुई ।

(२) भगवान विष्णु के चार रूपों में एक-वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ।

(३) केतुमाल वर्ष में भगवान विष्णु लक्ष्मी देवी को सन्तुष्ट करने के लिये प्रद्युम्न रूप से रहते हैं ।

(४) चाक्षुष मनु और नड्वला का एक पुत्र ।

प्रधान–(१) एक राजर्षि (२) प्रकृति ।

प्रधान पुरुषेश्वर–प्रकृति और पुरुष के स्वामी भगवान विष्णु ।

प्रपञ्च–दृश्यमय जगत्, सृष्टि । प्रलय काल में व्यक्त (स्थूल) और अव्यक्त (सूक्ष्म) यह प्रपञ्च नहीं था । प्रपञ्च की कारणभूता प्रकृति है जो त्रिगुणात्मिका है । सत्वरजतमो गुण विषमावस्था को पाकर विविध आकार का प्रपञ्च हो जाते हैं । प्रलय में साम्यावस्था है तब कुछ नहीं होता माया भगवान में लीन रहती है । उस समय व्यक्त और अव्यक्त यह सारा प्रपञ्च नष्ट हो जाता है । तब जन्म, मृत्यु, दिन, रात कुछ नहीं होता । सिर्फ सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान ही रहते हैं । प्रकृति और पुरुष के संयोग से जगत की सृष्टि होती है ।

प्रबल–श्रीकृष्ण और लक्ष्मण का एक पुत्र ।

प्रवालक–एक यक्ष ।

प्रवृद्ध–प्रियव्रत के वंश का एक राजा ।

प्रभञ्जन–(१) वायु (२) मणिपुर का एक राजकुमार ।

प्रभञ्जन सुत–(१) हनुमान (२) भीमसेन ।

प्रभा–(१) एक अपसरा (२) ध्रुव के पौत्र पुष्पार्ण की पत्नी । (३) शोभा ।

प्रभाकर–(१) सूर्य (२) एक नाग (३) कुश-द्वीप का एक विभाग ।

प्रभानु–श्रीकृष्ण और सत्यभामा का एक पुत्र ।

प्रभावती–(१) दुर्गा का नाम (२) वज्रनाभ नामक एक असुर की पुत्री जो प्रद्युम्न की पत्नी थी ।

प्रभास–(१) भारत के पश्चिम समुद्र के किनारे सौराष्ट्र में द्वारका के पास एक प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र । यादव वंश का नाश यहीं हुआ था । ऋषियों के शाप के फलस्वरूप यादव यहीं पर आपस में लड़कर मरे । इस क्षेत्र की महिमा बहुत प्रसिद्ध है । दक्ष प्रजापति के शाप से चन्द्रमा को राजयक्ष्मा रोग ने ग्रस लिया था । बाद में उन्हीं के उपदेश से प्रभास क्षेत्र में स्नान किया और तत्क्षण उस पाप जन्य रोग से छूट गये । यहीं पर ही श्रीकृष्ण और बलराम का स्वर्गवास हुआ । इसका दूसरा नाम शंखों द्वारा है । यहां प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर है ।

(२) धर्मदेव और प्रभात का पुत्र जो अष्टवसुओं में एक हैं ।

प्रभु–महाविष्णु, महान ईश्वर, देवताओं के परम देव, पतियों के परम पति, समस्त भुवनों के स्वामी, परम पूज्य परम देव । सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, वायु, यम, अग्नि आदि इन्हीं के भय से अपनी-अपनी मर्यादा में स्थित है ।

प्रभूत–ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, दान, वैराग्य आदि से सम्पन्न महाविष्णु ।

प्रमति–च्यवन ऋषि और सुकन्या का पुत्र एक ऋषि । इनका विवाह प्रतापी नामक कन्या से हुआ और उनका पुत्र था रुरु ।

प्रमथ–(१) शिवगण, भूतगण जो शिव के अनुचर हैं ।

(२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

प्रमथपति–शिव का विशेषण ।

प्रमन्यु–भरत वंश के राजा निरव्रत और भोजा का एक पुत्र ।

प्रमदवन–राजकीय अन्तःपुर से जुड़ा हुआ प्रमोद वन, उद्यान ।

प्रमद्वरा–च्यवन ऋषि और सुकन्या के पुत्र रुरु की पत्नी । यह विश्वावसु नामक गन्धर्व और मेनका नामक अप्सरा की पुत्री थी । मां से परित्यक्त होने पर स्थूल केश नामक मुनि ने इसका पालन पोषण किया । युवावस्था आने पर इसका विवाह रुरु से निश्चित हो गया जो इस पर मोहित थे । लेकिन विवाह से पहले सांप काटने से प्रमद्वरा की मृत्यु हुई । रुरु को को शोकाक्रान्त देखकर एक देवदूत ने कहा कि अपनी आयु का आधा देने से यह जीवित हो जायगी । रुरु ने यमदेव से प्रार्थना कर अपनी अर्ध आयु देकर प्रमद्वरा को पुनर्जीवित किया और उससे विवाह किया ।

प्रमाथि–एक राक्षस जो श्रीराम से मारा गया ।

प्रमाद–शास्त्र विहित कर्मों की अवहेलना का और व्यर्थ चेष्टा का नाम है प्रमाद । शरीर और इन्द्रियों द्वारा व्यर्थ चेष्टा करते रहना और कर्तव्य कर्म से विमुख होना प्रमाद है ।

प्रमुचि–एक ऋषि ।

प्रमृत–संकट के समय जीविकोपार्जन के लिये एक व्यक्ति कोई भी मार्ग ग्रहण कर सकता है जैसे ऋतु, अमृत, मृत, प्रमृत या सत्यानृत । बाजार या खेत में पड़े धान्य कणों को चुन-कर जीविका चलाना (उञ्छ और शिल) ऋत् है; बिना मांगे जो मिलता है वह अमृत है; रोज मांग कर खाना मृत है; खेती करना प्रमृत, व्यापार सत्यानृत है क्योंकि इसमें

सत्य और झूठ मिला हुआ है ।

प्रम्लोचनी–एक अप्सरा जिससे कण्डु मुनि का तप भंग हुआ । उनकी पुत्री थी मारिषा जिसका पालन-पोषण वृक्षों ने किया और जिसका विवाह प्रचेतसों से हुआ

प्रयाग–गंगा यमुना के संगम पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ स्थान । लोगों का विश्वास है कि यहां ब्रह्मादि देवता, इन्द्रादि दिक्पाल, सिद्ध, साध्य गन्धर्व, किन्नर, सनकादि महर्षि, सूर्य, चन्द्र अग्नि आदि देवता, अनेकों ऋषि मुनि, इन सब का आवास रहता है । इसलिये यहां गंगा, यमुना और छिपे रूप में बहनेवाली (अन्दर वाहिनी) सरस्वती के संगम त्रिवेणी में स्नान करने से सब पाप कट जाते हैं और मुक्ति मिलती है, यहां की मिट्टी भी पुण्यदायक है । प्रयाग में स्नान करने से सर्वतीर्थो में स्नान करने का फल मिलता है । इसलिये प्रयाग का नाम तीर्थराज है ।

प्रयुत–(१) कश्यप ऋषि और मुनि का पुत्र एक गन्धर्व । (२) दस लाख ।

प्रलम्बन–कश्यप ऋषि और दनु का पुत्र एक असुर जो कंस का मित्र था । श्रीकृष्ण और बलराम का वध करने गोकुल गया था और वहां बलराम से मारा गया ।

प्रलय–संसार का विनाश । प्रलय दो प्रकार का है नैमित्तिक प्रलय और महाप्रलय । ब्रह्मा का एक दिन हजार चतुर्युगों का है । दिन के अवसान में अपनी सृष्टि की सब चराचर वस्तुओं का संग्रह कर ब्रह्मा श्री नारायण मूर्ति में लीन हो जाते हैं । उस समय यह प्रपञ्च नहीं रहता । एकार्णव में अनन्तशायी भगवान ही रहते हैं । ब्रह्मा की निद्रा के कारण (रात शुरु होने पर) होने से इसको नैमित्तिक प्रलय कहते हैं । प्रकृति के कार्य महत्तत्व, अहंकार, तन्मात्र आदि अपनी [illegible] तब प्राकृत प्रलय या महाप्रलय होता है । उस समय संसार का विश्वव्यापी नाश होता है । मुक्त लोग भी ब्रह्म में लीन हो जाते हैं । उस समय ब्रह्मा की आयु समाप्त होती है ।

प्रवर–श्रीकृष्ण के एक मन्त्री, एक यादव ।

प्रवर्षण–जरासन्ध और यवन आक्रमण करने आये । अपने बन्धुजनों और धन सम्पत्ति को भगवान ने समुद्र में निर्मित द्वारका में पहुँचा लिया । जरासन्ध के सामने ही बलराम और श्रीकृष्ण उनको धोखे में डालने के लिये द्वारका के पास प्रवर्षण नामक पर्वत पर चढ़ गये । इस पर्वत पर इन्द्रदेव हमेशा वर्षा करते रहते हैं ।

प्रवीर–(१)पुरू के पौत्र राजा प्रचिनवान के पुत्र थे । प्रवीर के पुत्र नमस्यु थे ।

प्रवृत्त—वेदों के अनुसार कर्म दो प्रकार के है प्रवृत्त कर्म और निवृत्त कर्म । प्रवृत्त कर्म वह है जो कर्ता को सांसारिक विषयों की ओर उन्मुख करता है और निवृत्त कर्म सांसारिक विषयों से मन को हटा कर अन्दर की ओर खींचता है । प्रवृत्त कर्म से मनुष्य कर्मफल भोगने के लिए इस असार संसार में बार बार जन्म लेता है, जबकि निवृत्त कर्म वाले अमृतमय मोक्ष का भागी होता है । प्रवृत्त कर्म वाले मृत्यु के बाद धूम मार्ग से जाता है और निवृत्त कर्म वाले उज्ज्वल उत्तरायण मार्ग से । मृत्यु के बाद प्रवृत्त कर्म का कर्त्ता यज्ञादि में आहुति रूप दिए गये पदार्थों से बने सूक्ष्म रूप को धारण कर चन्द्रलोक को जाता है । वहां अपने सत्कर्मों का फल भोग कर वह फिर नीचे आते-आते सूक्ष्म शरीर को छोड़ देती है और अपने कर्म के अनुसार योनि में जन्म लेता है । प्रवृत्त कर्म करने वाले का यह आवागमन चलता रहता है । निवृत्त कर्मवाले को मोक्ष मिलता है ।

प्रवेणी-एक नदी का नाम ।

प्रव्रज्या-सन्यासाश्राम ।

प्रशमी-एक अप्सरा ।

प्रशस्ता-एक नदी ।

प्रशान्तात्मा-जिसका मन विशेष रूप से शान्त है । ध्यान करते समय भक्त को मन से राग-द्वेष, हर्ष-शोक, काम-क्रोध आदि दूषित वृत्तियों और सांसारिक द्वन्द्वों से सर्वथा दूर रहकर मन को निर्मल और शान्त रखकर ध्यान करना चाहिए ।

प्रश्नोपनिषद-एक मुख्य उपनिषद । इसमें छः प्रश्न और उनके उत्तर है ।

प्रश्राव-धर्म और दक्षपुत्री ह्री का पुत्र ।

प्रश्वास-दे:-प्राणायाम ।

प्रसवित्री-जगत् जननी देवी ।

प्रसाद-धर्म और दक्षपुत्री श्रद्धा का एक पुत्र ।

प्रसुश्रुत-कुश वंश के राजा मेरु के पुत्र । इनके पुत्र सन्धि थे ।

प्रसूति-मनु और शतरूपा की पुत्री, दक्ष प्रजापति की पत्नी, उनकी सोलह सुन्दर पुत्रियां हुई जिनमे तेरह धर्मदेव की पत्नी हुई, एक अग्नि की, एक पितरों की और सबसे छोटी शती शिव की पत्नी बनी ।

प्रसेन-(१) वृष्णिवंश के सत्राजित के भाई । स्यमन्तक मणि धारण कर शिकार खेलने गया और वन में एक शेर से मारा गया । (२) कर्ण का पुत्र, भारत युद्ध में सात्यकि से मारा गया ।

प्रसेनजित—(१) जमदग्नि की पत्नी रेणुका के पिता । (२) सूर्यवंशी राजा विश्वसाह्व के पुत्र, इनके पुत्र तक्षक थे । (३) प्रसेन (दे: प्रसेन) ।

प्रस्ताव-ऋषभदेव के पुत्र भरत के वंश के राजा उद्गीथ और ऋषि कुलया के पुत्र । इनकी पत्नी नियुत्स थी और पुत्र विभू ।

प्रस्तोत—भरत वंश के प्रतिहर्ता और सुवर्चला के एक पुत्र जो यज्ञ करने में निपुण थे ।

प्रहस्त—रावण का एक मन्त्री, सुमालि और केतुमती का पुत्र । प्रहस्त ने रावण को न्याय मार्ग पर लाने की कोशिश की थी, युद्ध में विभीषण से मारा गया ।

प्रहास-(१) एक पुण्य तीर्थ (२) एक सांप ।

प्रहुत-पञ्च यज्ञों में से एक जो प्रतिदिन करने की विधि है । यह भूत यज्ञ या बलिवैश्वदेव यज्ञ है ।

प्रहेति-राक्षसों का पूर्व पुरुष । यह वीर और पराक्रमी था । यह जानकर कि धर्मानुष्ठान से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है उसने मेरु पर्वत में तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया ।

प्रह्लाद-भगवान विष्णु के परम भक्त । कश्यप प्रजापति और दिति के पुत्र हिरण्यकशिपु और कयाधु के पुत्रों में से एक । सब दैत्यों में प्रह्लाद उत्तम माने जाते हैं । वे सर्व सद्गुण सम्पन्न, धर्मात्मा तथा भगवान के परम श्रद्धालु, निष्काम और अनन्य प्रेमी भक्त थे । हिरण्यकशिपु भगवान के विरोधी थे और अपने राज्य में विष्णु का नाम लेना, यज्ञ पूजादि करना मना था । अपने को सर्वेश्वर मानते और मनाते थे । बालक प्रह्लाद पर अपने पिता के दुर्विचारों का कोई प्रभाव न पड़ा । अपनी मां के गर्भ में रहते समय नारद ऋषि ने मां को जो धर्मोपदेश दिये थे, ज्ञान की बातें बतायी थीं प्रह्लाद उसके अनुसार विष्णु चिन्तन करने लगे । बालक को अध्ययन कराने के लिए शुक्राचार्य के पुत्र षण्ड और अमर्क को नियुक्त किया । लेकिन बालक ने उनकी बताई हुई बातें सीखी ही नहीं, बालक अपने साथियों को भी ज्ञान की बातें बताने लगे । पिता पुत्र के इस व्यवहार पर अत्यधिक क्रुद्ध हुए, उन पर अनेकों अत्याचार किये, यहां तक की बालक की हत्या करनें के लिये, समुद्र, आग

आदि में फेंकना, पहाड़ के ऊपर से गिराना आदि अनेकों उपाय किये । भगवान ने हर समय भक्त की रक्षा की । आखिर क्रोधावेश में आकर असुर ने यह देखना चाहा कि जिन भगवान को सर्व व्यापी कहते हैं, जो खम्भे में भी मौजूद हैं, अपने भक्त की रक्षा कैसे करेंगे । हिरण्यकशिपु तलवार लेकर खम्बे पर वार कर ही रहे थे कि खम्बे को विदीर्ण कर नरसिंह मूर्ति के रूप में भगवान अट्टहास कर निकल पड़े, भक्त की रक्षा की और असुर का वध किया (दे: नरसिंह और हिरण्यकशिपु) प्रह्लाद ने अनेक वर्ष राज्य किया और इनके विरोचन नाम के पुत्र हुये (२) एक सर्प ।

प्राशु—तीनों लोकों को लांघने के लिये त्रिविक्रम रूप से बढ़ने वाले भगवान विष्णु ।

प्राग्ज्योतिषपुर—नरकासुर, बाणासुर आदियों की राजधानी, (आधुनिक असमदेश है) प्रागज्योतिष का प्रमुख नगर । यह चारों ओर से पहाड़ी दीवारों और दुर्गों से सुरक्षित था। चारों तरफ जल से भरी खाइयाँ थीं ।

प्राचीनवर्हि—पृथु महाराजा के पुत्र विजिताश्व के पुत्र हविर्धान और उनकी पत्नी हविर्धानी के छः पुत्रों में से ज्येष्ठ-वर्हिष, गय, शुक्ल, कृष्ण, सत्य, और जितव्रत । वेदों में प्रतिपादित कर्मकाण्ड निष्णात थे तथा योगशास्त्र में भी, अनेकों यज्ञ करने से उनके राजमहल के निकट की भूमि कुशघास से भर गई जिनकी नोकें पूर्व की ओर रहती थीं । इसलिये इनका नाम प्राचीनवर्हि पड़ा ।

प्राचेतस—(१) दक्ष प्रजापति का नाम, प्रचेतसों का पुत्र होने से यह नाम पड़ा (२) वाल्मीकि का गोत्रीय नाम ।

प्राच्य—पूर्वी देश, एक पुराण प्रसिद्ध जनपद ।

प्राजापत्य—(१) एक प्रकार का विवाह संस्कार जिसके अनुसार ब्रह्मचारी को निमन्त्रण देकर बुलाते है और पूजा कर कन्यादान किया जाता है । (२) ब्रह्मचर्य पालन में वस्तुतः तीन व्रत होते हैं । पहला गायत्र जो तीन दिन का है जो गायत्री मन्त्र सीखने की तय्यारी के रूप में होता है । उसके बाद प्राजापत्य जो वेदाध्ययन के शुरू होने तक रहता है और अन्त में ब्रह्म जो वेदाध्ययन की समाप्ति तक रहता है ।

प्राज्ञ—कारण शरीर को जब आत्मा धारण करता है तब प्राज्ञ कहते हैं ।

प्राण—(१) प्राण रूप से चेष्टा करने वाले भगवान (२) भृगु महर्षि के पौत्र । भृगु के पुत्र थे धाता और विधाता । इन्होंने मेरु की कन्याओं आयति और वियती से विवाह किया और इनके प्राण और मृकण्डु नाम के पुत्र हुए । (३) शरीर में संचारित जीवन-दायिनी वायु का नाम । यह प्राण पांच प्रकार के हैं, प्राण, अपान, समान व्यान और दान । (४) सोम नामक वसु और मनोहरा का पुत्र ।

प्राणद—परीक्षित आदि मरे हुओं को भी जीवन दान करने वाले भगवान ।

प्राणदा—प्राण अर्थात् पंचप्राण या एकादश इन्द्रियों को दान करने वाली देवी ।

प्राणधात्री—देवी का विशेषण ।

प्राणरूपिणी—ब्रह्मरूपिणी देवी ।

प्राणायाम—अष्टांग योग का अंग । बाहरी वायु का भीतर प्रवेश करना श्वास है और भीतर की वायु का बाहर निकलना प्रश्वास है । इन दोनों को रोकने का नाम प्राणायाम है । देश, काल और संख्या के अनुसार बाह्य, आभ्यन्तर और स्तम्भ वृत्ति वाले ये तीनों प्राणायाम दीर्घ और सूक्ष्म होते हैं । भीतर के श्वास को बाहर निकाल कर ही रोकना 'बाह्य कुम्भक' कहलाता है । बाहर के श्वास को अन्दर खींचकर अन्दर ही रोकना 'आभ्यान्तर कुम्भक' है । आठ प्रणव (ओम) से रेचक

प्राणायाम कहते हैं। चार प्रणव से पूरक करके सोलह से आभ्यन्तर कुम्भक करे, फिर आठ से रेचक करें इसका नाम आभ्यन्तर वृत्ति प्राणायाम है। बाहर या भीतर जहाँ कहीं भी सुखपूर्वक प्राणों के रोकने का नाम स्तम्भवृत्ति प्राणायाम है। प्राणायामों में प्राणों के विरोध से मन का संयम होता है।

प्राधा—दक्ष प्रजापति की पुत्री कश्यप ऋषि की पत्नी। इनके हाहा, हूहू, तुम्बुरु आदि गन्धर्व और आलम्बुषा आदि अप्सरायें पैदा हुईं।

प्राप्ती—जरासन्ध की पुत्री कंस की पुत्री।

प्रभञ्जनि—स्वातिनक्षत्र।

प्रभञ्जन—हनुमान या भीम का विशेषण।

प्रायश्चित—पाप कर्म के परिहारार्थ किया जाने वाला धार्मिक कर्म जैसे दान, यज्ञ, उपवास, तीर्थयात्रा, रामायण भागवत आदि ग्रन्थों का पाठ आदि करना। पाप कर्म की कठोरता के अनुसार प्रायश्चित भी बड़ा होता है।

प्रियकृत—भक्त जनों का प्रिय करने वाले भगवान विष्णु।

प्रियंकरी—देवी जो सब का प्रिय करने वाली है।

प्रियंवदा—(१) देवी का नाम (२) कालिदास के 'शाकुन्तलम्' नाटक में शकुन्तला की सखी।

प्रियव्रत—स्वयाम्भुव मनु के ज्येष्ठ पुत्र। पहले ये राज्यभार लेना नहीं चाहते थे, इसलिये इनके छोटे भाई उत्तानपद राजा बने। वे विरक्त और भगवत् भक्त थे। नारद के उपदेश से तत्व का ज्ञान हो गया था, परम पद पाने की इच्छा से वे संसार के सुख भोग को त्यागने वाले ही थे कि पिता के द्वारा आमन्त्रित होने पर और ब्रह्मा के आदेश पर उनको पृथ्वी का शासन स्वीकार करना पड़ा वे सर्व सद्गुणसम्पन्न, निष्काम कर्मी, फलेच्छा में अनासक्त प्रियव्रत ने प्रजा-सृष्टि के हेतु विश्वकर्मा की पुत्री वर्हिष्मती से विवाह किया। उनको अपने समान योग्य अग्नीन्ध्र, इध्मजिह्व, यज्ञबाहु, महावीर, हिरण्यरेत, घृतपृष्ट, सवन, मेधातिथि, वीतिहोत्र और कवि नाम के दस पुत्र और ऊर्ज्वस्वती नाम की एक पुत्री हुई। कवि, सवन और महावीर नित्य ब्रह्मचारी बने। दूसरी पत्नी से उनके उत्तम, तामस और रैवत नाम के पुत्र हुए जो एक-एक मन्वन्तर के अधिपति हो गये। सूर्य को पृथ्वी के आधे हिस्से को प्रकाशित करते और आधे हिस्से को अन्धकार में देखकर एकबार अपने तेजोमय रथ में चढ़कर सूर्य के पीछे जाते हुए प्रियव्रत ने सात बार पृथ्वी की चक्कर लगाई। भूमि में चक्रों के धँसने से जो गड्ढे पड़े वे सात समुद्र हुए और पृथ्वी सात महाद्वीपों में विभक्त हुई। अपने एक-एक पुत्र को एक-एक द्वीप का चक्रवर्ति बनाया। इस प्रकार अपरिमित बल और पराक्रम से इन्होंने हजारों साल राज्य किया। बाद में अपनी पत्नी के साथ प्रियव्रत तपस्या करने वन गये और वहीं उन दोनों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रियव्रता—देवी का विशेषण, जिनको व्रत आदि प्रिय है।

प्रियार्ह—अत्यन्त प्रिय वस्तु समर्पण के लिये योग्य पात्र।

प्रीति—पुलस्त्य की पत्नी।

प्रीतिश्राद्ध—पितरों के सम्मानार्थ किया जाने वाला श्राद्ध, और्ध्वदैहिक श्राद्ध।

प्रेत—दिवंगत आत्मा, और्ध्वदैहिक श्राद्ध किये जाने से पहले जीव की अवस्था। पिशाच, भूत।

प्रेतकृत्य—अन्त्येष्टि।

प्रोष्ट—एक जनपद

प्रोष्टपद—भाद्रपद मास।

प्लक्ष द्वीप—सात द्वीपों में दूसरा। क्षारोद को घेर कर उससे दुगुना चौड़ा यह द्वीप है। दो

लाख योजन चौड़ा है। यह इसके समान सुरोद से घिरा है। इस द्वीप के बीच में एक प्लक्ष वृक्ष खड़ा है जिससे इसका नाम प्लक्ष द्वीप हुआ। इस वृक्ष के नीचे सात जिह्वाओं वाले अग्निदेवता रहते हैं। इसके पहले राजा चक्रवर्ति प्रियव्रत के दूसरे पुत्र इध्मजिह्व थे। इध्मजिह्व ने इस द्वीप को सात वर्षों में बांट कर अपने सात पुत्रों को शिव, यवस, सुभद्र, शान्त, क्षेम, अमृत और अभय को बांट दिया और वर्षों के नाम भी उनके अधीश्वरों के नाम रखे। मणिकूट, वज्रकूट, इन्द्रसेन, ज्योतिष्मान, सुपर्ण, हिरण्यष्ठीव और मेघमाला आदि पर्वत इसकी सीमा पर स्थित है। अरुणा आंगिरसा, सावित्री, सुप्रभात, ऋतम्भरा, सत्यम्भरा आदि मुख्य नदियां हैं। हंस, पतंग, ऊर्ध्वायन, सत्याङ्ग मनुष्यों के चार वर्ण हैं। सूर्य रूप भगवान की यहां पूजा होती है।

प्लाक्षावतरज—यमुनोत्रि के पास एक पुण्य स्थान।

फ

फट—एक अनुकरणात्मक शब्द जो जादुमन्त्रादि के उच्चारण में रहस्यमय रीति से प्रयुक्त किया जाता है।

फण—सर्प का फैलाया हुआ सिर।

फणधर—(१) सांप (२) शिव का विशेषण।

फणितल्प—शेषशय्या जिस पर महाविष्णु लेटते हैं।

फणिपति—शेषनाग या वासुकि का विशेषण।

फल्गु—गया के पास एक पुण्य नदी जिसमें स्नान कर श्राद्ध किया जाता है।

फल्गुन—फाल्गुन का महीना।

फल्गुनी—एक नक्षत्र का नाम।

फाल्गुन—(१) एक महीने का नाम (२) फल्गुन नक्षत्र में जन्म लेने से अर्जुन का नाम।

फाल्गुनी—फाल्गुन मास की पूर्णिमा।

ब

बक—(२) एक असुर जो बक पक्षी का रूप धारण कर श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल में गया था। यह कंस का मित्र था और कंस के द्वारा ही भेजा गया था। श्रीकृष्ण ने खेल में ही उसकी चोंच पकड़कर चीर कर मार डाला। (२) एक असुर जो एकचक्र नाम के गांव में रहकर ग्रामवासियों पर आतंक डालता था। यह नियम था कि एक-एक घर से एक-एक दिन उसके लिये भोज्य सामग्री लेकर कोई जाय। बकासुर भोज्य पदार्थों के साथ लाने वाले को भी खाता था। पाण्डव लाखा गृह से बचकर कुन्ती के साथ एक ब्राह्मण के घर में रहते थे। एक दिन उस ब्राह्मण की बारी आयी। उसकी और उसके परिवार की शोकावस्था देखकर कुन्ती अपने एक पुत्र को भेजने को तैयार हो गयी। ब्राह्मण का एक ही पुत्र था। कुन्ती का पूर्ण विश्वास था कि कोई भी उनके पुत्र भीम-

सेन को वल में हरा नहीं सकेगा । भीम खुशी से खाना लेकर वक के पास गया और उसके सामने ही सब कुछ खा लिया । गुस्से से उन्मत्त असुर भीम से झूझ पड़ा और उस युद्ध में वक मारा गया । एक चक्रवासी बड़े प्रसन्न हो गये । (३) कुवेर का नाम ।

वकनिषूदन–श्रीकृष्ण और भीमसेन का विशेषण ।

वकी–वकासुर की बहन, एक राक्षसी ।

वड़वाग्नि–और्व महर्षि अपने पितरों के घातक क्षत्रियों का नाश करने के उद्देश्य से तपस्या करने लगे । उस तपस्या की ज्वाला से तीनों लोक जलने लगे । तब पितरों के आदेश से और्व ने कोपाग्नि को समुद्र में डाल दिया जिससे अश्वमुख से वड़वाग्नि के नाम से समुद्र में अग्नि निकालता रहता है ।

वदरीनाथ–हिन्दुओं के लिये तीर्थयात्रा का सबसे पुण्य तीर्थ । इसको वदरिकाश्रम, वदरिविशाल वदरी वन आदि नामों से पुकारते हैं । चार पुण्य धामों में से एक । यह उत्तराखण्ड में हिमालय का अति पुण्य क्षेत्र है । वैदिक काल से इसकी प्रधानता मानी गई । यहीं पर नर नारायण ऋषियों ने तपस्या की थी जिससे इसको नारायणाश्रम भी कहते हैं । सभी पुराण में इस क्षेत्र की महिमा गायी गई । यहां वदरीनाथ नाम का सुविख्यात क्षेत्र है जहां की मूर्ति आदि नारायण महाविष्णु की है । यह अलकनन्दा के तीर पर नर-नारायण पर्वतों के बीच स्थित है । भगवान श्री शंकराचार्य ने यह मूर्ति नारदकुंड से निकाली और तप्त कुण्ड के पास प्रतिष्ठा की । यहां छः महीने देवों की पूजा होती है । नारद कुण्ड और तप्त कुण्ड के बीच पांच शिला है नारद शिला, वराह शिला, गरुण शिला, मार्कण्डेय शिला और नरसिंह शिला ।

वद्ध–जीव की दो अवस्थाएँ हैं–वद्ध और मुक्त । जीव शरीर रूपी वृक्ष के फल सुख, दुःख आदि भोगता है, तव वह वद्ध-सा रहता है और फल भोगता है । जब जीव कर्म के फल सुख-दुःख आदि से असङ्ग और साक्षीमात्र रहता है तव वह मुक्त है, ईश्वर से अभिन्न रहता है । वद्ध जीव न अपने वास्तविक रूप को जानता है और न अपने से अतिरिक्त को अविद्या से युक्त होने के कारण नित्य-वद्ध रहता है । ईश्वर विद्यास्वरूप, ज्ञानस्वरूप होने के कारण नित्यमुक्त है ।

वधिर–कश्यप वंश का एक नाग ।

वभ्रु–(१) एक महर्षि (२) ययाति के पुत्र द्रुह्यु के पुत्र (२) एक विराट राजकुमार ।

वभ्रुवाहु–अर्जुन और मणिपुर राजकुमारी चित्रांगदा का पुत्र ।

वरवर–एक म्लेछ जाति । ये लोग वसिष्ठ की गाय नन्दिनी के पार्श्व भाग से निकले माने जाते हैं ।

वर्हिष्मती–(१) स्वयंभू मनु के पुत्र प्रियव्रत की पत्नी, विश्वकर्मा की पुत्री । इनके अग्नीन्ध्र इध्मजिह्व, यज्ञवाहु, महावीर, हिरण्यरेता, घृतपृष्ठ, सवन, मेधातिथि, वीतिहोत्र और कवि के नाम के दस पुत्र और ऊर्जस्वती नाम की एक पुत्री हुई । (२) ध्रुव महाराजा की राजधानी ।

वर्हिस–कश्यप प्रजापति और दक्षपुत्री प्राधा के पुत्र गन्धर्वों का एक वर्ग ।

वल–(१) एक विश्वदेव (२) कश्यप और दनायु का पुत्र एक असुर (३) एक वानर (४) एक ऋषि । (५) वसुदेव और रोहिणी का पुत्र ।

वलन्धरा–काशी राजा की पुत्री, भीमसेन की पत्नी । इनका पुत्र सर्वंश था ।

वलभद्र–दे: वलराम ।

वलराम–श्रीकृष्ण के भाई, वसुदेव और देवकी का सातवां पुत्र था । कंस की क्रूरता का

शिकार होने से बचाने के लिये देवकी के गर्भ से संकर्षण कर रोहिणी के गर्भ में कर लिया गया । इसलिये इनके संकर्षण, रोहिणीपुत्र आदि नाम हैं । श्रीकृष्ण के साथ इनका बाल्य-काल गोकुल में यशोदा और नन्दगोप के पास बीता । बाललीलायें भी श्रीकृष्ण और अन्य गोपकुमारों के साथ हुई और इन्होंने कंस के भेजे कई असुरों का वध किया था । अपने भाई के दैवी रूप का उनको पता था । श्री कृष्ण के साथ सान्दीपनी मुनि के पास अध्य-यन किया । बलराम ने कुशस्थली के राजा रेवत की कन्या रेवती से विवाह किया । श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध के विवाह के समय जुए में धोखा देने से रूक्मिणी के भाई रूक्मि का वध किया । बलराम ने हस्तिनापुर में रहकर दुर्योधन को शस्त्राभ्यास कराया था । दुर्योधन की पुत्री लक्षणा के स्वयंवर में श्री कृष्ण पुत्र साम्ब सबके सामने कन्या को ले गया । दुर्योधनादियों ने साम्ब को बन्धन में डाल दिया । उनको छुडाने बलराम गये, लेकिन जब दुर्योधन ने उनका कहना नहीं माना तब हल से हस्तिनापुर को खींचने लगे । भयभीत दुर्योधन ने गुरु की शरण ली और साम्ब को पत्नी समेत भेज दिया । भारत युद्ध से वे विमुख थे । इसलिये तीर्थयात्रा करने गये और भारत के कोने-कोने में घूमे । तीर्थयात्रा से लौटने पर दुर्योधन और भीम सेन को युद्ध करते देखा, एक ओर शिष्य, दूसरी ओर बन्धु । युद्ध रोकना चाहा, लेकिन सफल नहीं हुए । महाभारत के युद्ध के बाद ऋषियों के शाप के अनुसार प्रभास में यादव वंश का नाश हुआ । बलराम एक वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यानस्थ हो गये और उनकी आत्मा सर्परूप में रसातल को गयी ।

बलल–इन्द्र का विशेषण ।

बला–एक शक्ति सम्पन्न मन्त्र (दे–अतिबला)

बलाक–एक भील जो शिकार खेलकर माता-पिता की सेवा करता था । एक दिन शिकार की खोज में जाते-जाते नदी के किनारे एक अजीब मृग को देखा । बलाक ने उसको मारा । इस पर देवताओं ने सन्तुष्ट होकर पुष्पवृष्टि की । वह मृग एक असुर था जिसने ब्रह्मा से अपूर्व शक्ति पायी थी । देवता लोग बलाक को स्वर्ग ले गये ।

बलानीक–(१) विराट राजा का भाई (२) द्रुपद राजा के एक पुत्र जो अश्वत्थामा से मारे गये ।

बलाहक—(१) सिन्धुराज जयद्रथ का भाई (२) श्रीकृष्ण के रथ में बंधा एक अश्व (३) एक नाग (४) प्रलयकालीन सात बादलों में से एक ।

बलि–(१) आहुति, भेंट (२) भक्त प्रह्लाद के पौत्र, विरोचन के पुत्र असुर चक्रवर्ति । इनका विवाह विन्ध्यावली से हुआ और इनके पुत्र थे प्रबल बाणासुर । बलि के समय अमृतमंथन हुआ था । अमृत के निकलने पर मायापति भगवान की माया से असुरों को अमृत नहीं मिला । देवासुर युद्ध फिर से छिड़ गया और उसमें अनेक असुरों के साथ बलि भी मारे गये । लेकिन असुर गुरु शुक्राचार्य ने मृत सजीवनी के द्वारा बलि को पुनः जीवित किया । वे पहले से अधिक वीर पराक्रम शाली हो गये और आसानी से इन्द्र और अन्य देवताओं को स्वर्ग से भगाकर स्वर्ग सुख भोगने लगे । बलि धर्मिष्ट और श्रेष्ठ और भगवान के भक्त थे । देवताओं की दुर्दशा पर दुखी दिति ने अपने पति कश्यप के आदेशानुसार बारह दिन का पयोव्रत रखा और भगवान ने उनके गर्भ से वामन के रूप में अवतार लिया । देवताओं की रक्षा और दैत्यों का निग्रह ही उनका उद्देश्य था । वामन बलि के यज्ञ में गये । उस तेजस्वी बालक

का वलि ने स्वागत किया और त्रैलोक्य के चक्रवर्ति की हैसियत से अभीष्ट वर देने को तैयार हो गये। भगवान ने भक्त का दर्प दूर करना चाहा। उन्होंने सिर्फ तीन पग भूमि माँगी। वलि ने अपने वैभव से उन्मत्त होकर कहा कि मुझ से दान लेकर कोई दूसरी जगह दान न लें। भगवान ने तीन ही पग भूमि माँगी। वलि को दान देने को तैयार देखकर गुरु शुक्राचार्य ने कहा कि ये मायावी भगवान हैं, इनकी वातों में न आना। लेकिन वलि अपनी प्रतिज्ञा को वापिस लेने या झूठी करने को तैयार न थे। गुरु के शाप देने पर भी वे अपनी वात पर स्थिर रहे। भगवान ने त्रिविक्रम का रूप धारण किया और दो ही पगों में पृथ्वी, अन्तरिक्ष और स्वर्ग को नाप लिया। तीसरा पग रखने को जगह नहीं थी। अपनी वात को सच्ची स्थापित करने के लिये तीसरा पग रखने के लिये वलि ने भगवान के सामने अपना सिर झुका लिया। गरुण ने नागपाश से वलि को वाँध लिया। सिर पर पैर रखकर भगवान ने वलि को रसातल भेज दिया। उस समय प्रह्लाद भी उपस्थित हो गये और भगवान के चरण को अपने पौत्र के मस्तक पर देखकर अत्यन्त सुखी हुए और उनकी स्तुति की। भक्तवत्सल भगवान ने वलि का घमण्ड तो चूर किया और भक्तिउद्रेक में आकर आशीर्वाद दिया कि अगले मन्वन्तर के तुम इन्द्र वनोगे, रसातल में सर्वदा मेरा सान्निद्ध होगा, इच्छा मात्र से मेरे दर्शन होंगे।

वलिप्रिया–वलि होमादियों से तुष्ट रहनेवाली देवी।

वल्वल–नैमिषारण्य में अनेक ऋषि मुनि धार्मिक संवाद करते थे। वहाँ इल्वल का पुत्र वल्वल नाम का दैत्य सत्र भंग करता था और ऋषि मुनियों को अनेक प्रकार से कष्ट देता था। वह हर पूर्णिमा और अमावस्या के दिन आया करता था। ऋषि मुनियों की प्रार्थना पर एक अमावस्या की रात को जव वल्वल प्रचण्ड वेग से आया और यज्ञशाला में मल-मूत्र फेंकने लगा तव वलराम ने हलाग्र से आकाश से उस असुर को नीचे खींच कर मारा।

वर्हिपद–एक पितृगण।

वहुगव–ययाति के वंशज सुद्यु के पुत्र। इनके पुत्र संयाति थे।

वहुगन्धा–(१) यूथिका लता (२) चम्पाकली।

वहुरूप–(१) कश्यप ऋषि और सुरभी का एक पुत्र। (२)प्रियव्रत के पुत्र मेधाति का पुत्र।

वहुरूपा–(१) अनेक रूपों से युक्त देवी। देवी परब्रह्म स्वरूपिणी होने से निराकारा होने पर भी भक्तों की इच्छा पूर्ति के लिये अनेक रूप धारण करती है। (२) रुद्र पत्नियाँ अनेक हैं, श्री ललिता देवी उनके रूपों से युक्त होने से अनेक रूपा है। (३) पुराणों और उपपुराणों में वर्णित अनेक रूपों और नामों से युक्त देवी।

वहुल–एक नदी।

वहुलाश्व–मिथिला के राजा जो श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। अहंभाव से रहित महामना राजा ने श्रीकृष्ण की पादसेवा कर श्रद्धा और भक्ति से धूप, दीप, माल्यादि से अर्चना कर विभव-समृद्ध भोजन कराया था

वहुशि–धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

वाण–असुर चक्रवर्ति महामना वलि और अशना के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ प्रतापी असुर वाण थे। वाण शिवभक्त थे और अपने पिता के समान धीमान, सत्यसंघ, माननीय थे। शोणित पुर नामक नगरी उनकी राजधानी थी। वे सहस्त्रवाहु थे। शिव के प्रसिद्ध ताण्डव नृत्य के समय वाण ने अनेक वाद्ययन्त्र वजाकर शिव को तुष्ट किया। अपने भक्त को भक्त-वत्सल भगवान-शिव ने आशीर्वाद दिया, और

पुराधिप की हैसियत से बाण के पुर में हमेशा उपस्थित रहने को तैयार हो गए। श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध और बाण की पुत्री उषा का गुप्त रूप से मिलन हुआ। इसका पता लगने पर बाण ने अनिरुद्ध को बन्धन में डाला। यह समाचार पाकर श्रीकृण ने बलराम, प्रद्युम्न आदि यादव वीरों के साथ शोणित-पुर पर आक्रमण किया। युद्ध आरम्भ हुआ। शिव, स्कन्द, नन्दिकेश्वर और अन्य भूतगण बाणासुर की सहायता के लिए आ गये। श्रीकृष्ण जब बाणासुर की बाहें काटने लगे शिव ने भक्त की रक्षा की प्रार्थना की। बाण की चार बाहें छोड़ दी गई। बाणासुर ने भगवान की स्तुति की और अपनी पुत्री और अनिरुद्ध को बड़ी श्रद्धा के साथ श्रीकृष्ण को सौंप दिया।

बादरायण—वेदान्त सूत्रों के प्रणेता व्यास महर्षि।

बादरायणि—शुक महर्षि वेदव्यास के पुत्र। बदर वृक्षों के झुण्ड में इनका आवासस्थान होने से ऐसा नाम पड़ा।

बार्हस्पत्य—ब्रह्मा का नीतिशास्त्र जिसका संग्रह बृहस्पति ने किया था।

बालखिल्य—सप्तर्षियों में से क्रतु और सन्नती के अंगुष्ठमात्र बड़े साठ हजार पुत्र हुए जो जितेन्द्रिय, तेजस्वी थे। इनको बालखिल्य कहते हैं। ये बड़े तपस्वी है और पक्षियों के रूप में सूर्य के सामने उड़ते हैं।

बालचन्द्र—दूज का चांद।

बाला—(१) बालाम्बिका रूप देवी (२) सोलह वर्ष से कम आयु की कन्या।

बालि—शक्तिशाली वानर राजा। बालि इन्द्र और अरुण के पुत्र थे। एक बार अरुण देव-लोक में देवांगनाओं का नृत्य देखने गये। वहाँ पुरुषों का प्रवेश निषिद्ध था। इसलिए अरुण स्त्री के रूप में अन्दर आ गये। इन्द्र एक नई सुन्दरी को देखकर विकाराधीन हो गये और अरुण के साथ उन्होंने रमण किया और उनका पुत्र जन्मा बालि। अरुण को आने में देरी होने से सूर्य भगवान कुपित हो गये। अरुण ने सारी बातें बतायी। सूर्य ने भी अरुण का वह स्त्री रूप देखना चाहा। अरुण को स्त्री रूप में देखते ही वे अनुरक्त हो गए और सुग्रीव का जन्म हुआ। इन दोनों का पालन-पोषण गौतम के आश्रम में अहल्या ने किया था। किष्किन्धा के वानर राजा ऋक्षराज अपुत्र थे। इन्द्र से प्रार्थना करने पर इन्द्र ने बालि और सुग्रीव को वानर राजा को दिया। दोनों अति बलशाली वीर योद्धा, अतुल पराक्रमशाली थे। क्षीर सागर से निकली तारा बालि की पत्नी थी और उनके एक पुत्र हुए वीर अंगद। बालि जब राजा बने एक बार मय पुत्र मायावी ने बालि को ललकारा। मायावी का पीछा करते हुए बालि और मायावी एक गुफा में घुसे। बालि के साथ सुग्रीव भी गये थे। गुफा के बाहर कई दिन प्रतीक्षा करने पर गुफा के द्वार से खून निकलते देख कर उन्होंने बालि को मरा समझ लिया और दुःखी होकर किष्किन्धा लौट आये। किष्किन्धा में वानरों ने उनका राज्याभिषेक किया। कुछ दिनों के बाद मायावी को मार कर बालि किष्किन्धा लौट आये और अपने भाई की कुचेष्टा पर क्रुद्ध होकर राज्य से निकाला। सुग्रीव ने अपनी भूल पर क्षमा मांगी लेकिन बालि ने नहीं माना। बालि के भय से सुग्रीव ऋष्य-मूक पर्वत पर हनुमान आदि मन्त्रियों के साथ रहे। बालि इस पर्वत पर प्रवेश नहीं कर सकते थे। रावण नारद के कहने पर एक बार बालि को जीतने गया और इस प्रयत्न में उनकी पूंछ से बंध गया। बालि चारों समुद्रों में तर्पण किया करते थे। बालि के साथ ही रावण को भी समुद्रों में डुबकी लगानी

पड़ी। वापिस आने पर अन्तपुर की वानर स्त्रियों का परिहास पात्र भी वना। उस दिन से उन दोनों में मित्रता हो गई। श्रीराम लक्ष्मण के साथ सीता की खोज करते ऋष्य-मूकाचल आये। वहाँ सुग्रीव के साथ सख्य किया। श्रीराम के आदेशानुसार सुग्रीव ने वालि को द्वन्द्व युद्ध के लिये ललकारा। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। श्रीराम ने पेड़ की आड़ में खड़े होकर एक शर द्वारा वालि का वध किया। अन्त समय में अपने कर्मों पर पश्चात्ताप कर भगवान की स्तुति की और अपने पुत्र अंगद को श्रीराम को सौंपकर मोक्ष प्राप्त किया (दे: सुग्रीव, तारा, दुन्दुभि, मतंग)।

वाल्हिक—वल्हि देश के लोग।

वाल्कल—हिरण्यकशिपु और कयाधु के पुत्र संह्लाद का पुत्र। यह महिषासुर का मन्त्री था। देवी और महिषासुर के युद्ध में वाल्कल ने भाग लिया था और देवी के शूल से चोट खाकर मारा गया।

वाहु—सूर्यवंश के एक राजा। इनके पुत्र सूर्य-वंश के प्रसिद्ध राजा सगर थे।

वाहुक—(१) ऋतुपर्ण महाराजा के यहाँ नल महाराज अज्ञात वेष में इस नाम से रहते थे। (दे:—नल) (२) एक नाग (३) वृष्णि-वंश का एक वीर।

वाहुदा—एक पुण्य तीर्थ।

वाहुलेय—कार्तिकेय का विशेषण।

वाह्यकर्ण—एक सांप।

वाह्याश्व—पुरुषवंश के एक राजा। इनके वंश में दिवोदास और अहल्या का जन्म हुआ था।

वाह्लीक—(१) कुरुवंश के राजा प्रतीप के पुत्र, शन्तनु के भाई, भीष्म के मामा थे। कौरव-पाण्डव दोनों के मित्र थे, और उनमें युद्ध होना नहीं चाहते थे। वाद में युद्ध आरम्भ होने पर ये कौरव पक्ष में रहे और एक वार कौरव सेना के नायक भी वने। भीमसेन से मारे गये। (२) धर्मपुत्र का सारथी।

विडाल—महिषासुर का मन्त्री।

विन्दुतर्पणसन्तुष्टा—वर्ण धर्म के अनुसार क्षीर, आज्य, मधु, मांस, आसव आदि के तर्पण से सन्तुष्ट देवी।

विन्दुमती—महाराजा मान्धाता की पत्नी। इनके पुरुकुत्स, अम्वरीष और मचुकुन्द नाम के तीन पुत्र हुए। इनकी पचास पुत्रियों ने सौभरि महर्षि को अपना पति चुन लिया।

विन्दुमान—भरत के वंशज मरीचि और विन्दु-मती के पुत्र, इनके पुत्र मधु थे।

विन्दुसर—एक पुण्य तीर्थ जहाँ कपिल देव के पिता कर्दम प्रजापति का आश्रम था। यहाँ कैलास पर्वत के उत्तर में स्थित है। गंगाव-तरण के लिए भगीरथ ने यहाँ तपस्या की थी।

विल्क—कद्रू और कश्यप ऋषि का एक पुत्र नाग।

विसतन्तु—कमल का रेशा।

वुद्ध—वुद्ध मत के स्थापक। कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन और सुजाता के पुत्र। कोई-कोई इन्हें महाविष्णु का अवतार मानते हैं। इन्होंने कर्मकाण्ड का विरोध कर अहिंसा प्रधान वुद्ध-मत की स्थापना की। वचपन का नाम सिद्धार्थ था। वचपन से ही राजमहल के भोग विलासों से विरक्त थे। राज्य कार्य में दिलचस्पी लाने के लिए पिता ने सिद्धार्थ का का विवाह यशोधरा नाम की रूपवती राज-कुमारी से कराया। इनका लोहिताश्व नामक एक पुत्र हुआ। सिद्धार्थ का मन महल में नहीं रहा। एक रात को पत्नी और नवजात शिशु को छोड़कर राजमहल से निकले। ईश्वर साक्षात्कार के लिए, सत्य की खोज में कठिन तपस्या की। तपस्या भंग करने का

मदन और अनेक सुर सुन्दरियों ने प्रयत्न किया, लेकिन वे विचलित नहीं हुए। अन्त में गया में बोधि वृक्ष के नीचे उनको सत्य का साक्षात्कार हुआ और वे बुद्ध हो गये।

बुद्धि–दक्ष प्रजापति की पुत्री, धर्मदेव की पत्नी।

बुध–(१) देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा को चन्द्र ले गया। चन्द्र बृहस्पति के शिष्य थे। तारा को पाने के लिए दोनों में कलह होने ही वाला था कि देवों की सलाह से चन्द्र ने तारा को वापिस दिया। चन्द्र और तारा का पुत्र है बुध चन्द्र मनुपुत्र इला पर अनुरक्त हो गये। यह इला सुद्युम्न था जो कुमार वन में प्रवेश करने से स्त्री हो गया। दोनों का विवाह हुआ और उनका पुत्र पुरूरवा हुआ जो चन्द्रवंश का प्रसिद्ध राजा बना। (दे:– इला, सुद्युम्न, पुरुरवा, चन्द्र) (२) ज्ञानी (३) एक ऋषि।

बुधार्चिता–ज्ञानी लोगों से पूजिता देवी।

बृहत्–सामदेव का मन्त्र।

बृहति–(१) सूर्य के सात अश्वों में से एक:– गायत्री, बृहति, उष्णिक, जगति, त्रुष्टुप, अनुष्टुप, पंक्ति। (२) महत् से भी महत् देवी। (३) देवहोत्र की पत्नी जिसके पुत्र योगेश्वर के नाम से महाविष्णु तेरहवें मन्वन्तर में जन्म लेंगे।

बृहत्त–पाञ्चजन्य महर्षि के शिर से निकला एक सामगान इनके मुंह से रथन्तर नामक एक साम भी निकला था।

बृहत्कर्म–अंग देश के राजा रोमपाद के वंशज पृथुलाक्ष के पुत्र।

बृहत्काय–भरत वंश के राजा बृहधनु के पुत्र। इनके पुत्र जयद्रथ थे।

बृहत्कीर्ति–अंगिरा का एक पुत्र।

बृहत्क्षत्र–(१) दुष्यन्त पुत्र भरतवंश के मन्यु के पुत्र। इनके भाई थे जय, महावीर्य, नर और गर्ग। (२) पाण्डव पक्ष का एक केकय राजा जो द्रोणाचार्य से मारे गये। (३) एक निषधेश जो धृष्टद्युम्न से मारे गये।

बृहत्पुत्र–पुरुवंश के राजा सुहोत्र के पुत्र। इनके अजमीढ़, द्विमीढ़ और पुरुमीढ़ नाम के तीन पुत्र थे।

बृहत्भानु–अग्नि।

बृहत्मन–यदुवंश के राजा बृहद्रथ के पुत्र, इनके पुत्र जयद्रथ थे।

बृहत्साम–गायन करने योग्य श्रुतियों में अर्थात् सामवेद में बृहत्साम एक गीति विशेष है। इसके द्वारा परमेश्वर की इन्द्ररूप में स्तुति की गई है। गीता में भगवान ने इसको अपना स्वरूप बताया है। इससे इसकी विशिष्टता देखी जाती है।

बृहत्सेन—(१) मगध देश के राजा सुनक्षत्र के पुत्र। इनके पुत्र कर्मजित थे। (२) श्रीकृष्ण और भद्रा का एक पुत्र।

बृहत्सेना–(१) देवी जिनकी बहुत बड़ी (चतुरंगिणी) सेना है।

बृहदश्व–(१) इक्ष्वाकु वंश के एक राजा जिनके पुत्र कुवलयाश्व थे। (२) युधिष्ठिर के हितषी एक महर्षि।

बृहदिषु–(१) भरत वंश के राजा अजमीढ़ के पुत्र, इनके पुत्र बृहद्धनु थे। (२) भरत वंश के राजा भ्रम्याश्व के पांच पुत्रों में से एक मात्र पुत्र मुद्गल, यवीनर, बृहदिषु, काम्पिल्य और सञ्जय पांचाल कहलाते थे।

बृहद्गर्भ–शिवि महाराजा के पुत्र। ब्रह्मा ने शिवि महाराजा की परीक्षा करने के लिये ब्राह्मण का रूप धारण कर राजा से अपने पुत्र का मांस पका देने को कहा। शिवि ने ऐसा ही किया। इस बीच में ब्राह्मण ने भण्डार अन्तपुर, गोशाला आदि में आग लगाई। जब भोजन करने ब्राह्मण को बुलाया तब ब्राह्मण ने शिवि से ही मांस खाने को कहा। शिवि ने ऐसा ही किया। इस पर सन्तुष्ट

ब्रह्मा ने शिवि के पुत्र को पुनर्जीवित किया।

बृहद्मनु–भरत वंश के राजा बृहदिपु के पुत्र। इनके पुत्र बृहत्काय थे।

बृहद्बल–(१) गान्धार राजा सुवल का पुत्र, धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी और शकुनि का भाई। (२) एक कोसल राजा, अभिमन्यु से मारे गये।

बृहद्ब्रह्म–अंगिरा और शुभा का एक पुत्र।

बृहद्भानु–(१) सत्रायण और विताना के पुत्र बृहद्भानु के नाम से भगवान् विष्णु चौदहवें मन्वन्तर में जन्म लेंगे। (२)एक अग्नि।

बृहद्भास–अंगिरा और शुभा का पुत्र।

बृहद्रथ–(१) मगध देश के राजा उपचरिवसु के पुत्र एक प्रबल राजा। इनके पुत्र थे सुप्रसिद्ध राजा जरासन्ध। इनकी दूसरी पत्नी से एक और पुत्र हुए कुशाग्र। (२) अंगु के वंशज राजा रोमपाद के कुल में उत्पन्न एक राजा। इनके दो भाई बृहद्भानु और बृहत्कर्म थे।

बृहद्वती–एक पुराण प्रसिद्ध पवित्र नदी।

बृहद्वन–गोकुल के पास एक वन। गोकुल को भी बृहद्वन कहते हैं।

बृहद्विष–भरत वंश के राजा।

बृहन्नला–अज्ञातवास में विराट राजधानी में रहते समय अर्जुन का नाम। देवलोक में उर्वशी ने अर्जुन को शाप दिया था कि वे एक साल नपुंसक के रूप में रहेंगे। उर्वशी का यह शाप अर्जुन के लिए इस समय उपकारप्रद हो गया। बृहन्नला ने विराट पुत्री उत्तरा को नाच गान सिखाया था।

बृहस्पति–(१) देवताओं के गुरु। अंगिरा और श्रद्धा के पुत्र जो ब्रह्मवेत्ताओं में प्रथम माने जाते हैं। स्वारोचिष मन्वन्तर में बृहस्पति सप्तर्षियों में प्रधान थे। ये बड़े विद्वान, ज्ञानी ऋषि थे। वामनावतार में भगवान् ने बृहस्पति से ही सांगोपांग, वेद, षड्शास्त्र, स्मृति आगम आदि सीखे थे। इन्हीं के पुत्र कच ने शुक्राचार्य के यहाँ रह कर संज्जीवनी विद्या सीखी थी। ये देवराज इन्द्र के पुरोहित का काम करते हैं। समय-समय पर इन्होंने इन्द्र को दिव्य उपदेश दिये हैं जिनका मनन करने से मनुष्य का कल्याण होता है। महाभारत के शान्ति और अनुशासन पर्व में इनके उपदेशों की कथाएँ पठनीय हैं। इनकी अंगिरसी या भानुमती नामकी एक बहिन थी। इनकी पत्नी तारा है। (२) एक ग्रह-चन्द्र ग्रह से दो लाख योजना ग्रह है ऊँचाई पर बृहस्पति जो सूर्य मण्डल की एक राशि को एक वर्ष में पार करता है। अकसर यह एक शुभग्रह है।

बृहस्पति सव–श्रुतियों के अनुसार यज्ञों में उत्तम वाजपेय यज्ञ करने पर यह यज्ञ भी करना जरूरी है।

बैन्दवासना–बैन्दव (सर्वानन्दमय चक्र) जिनका आसन ऐसी देवी है।

बैबिल–यहूदों और ईसाइयों का विशुद्ध धार्मिक ग्रन्थ। बैबिल के गीत भक्तिरसपूर्ण हैं। इसका सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

बोध–एक पुराण प्रसिद्ध स्थान।

बोधवासर–कार्तिक शुक्ला एकादशी जब विष्णु भगवान् अपनी चार मास की निद्रा को त्याग कर जागते हैं।

बोधायन–एक प्राचीन मुनि जिन्होंने श्रौतादि सूत्रों की रचना की।

बोधि वृक्ष–पवित्र वट वृक्ष जिसके नीचे बैठकर तपस्या कर सिद्धार्थ बुद्ध हो गये।

बोधिसत्व–बुद्ध का नाम।

बौद्ध–बुद्ध द्वारा प्रचारित धर्म का अनुयायी।

ब्रह्म–(१) परब्रह्म, काल, कूटस्थ, परमात्मा, जीवात्मा, अव्यय, अजन्मा, अनन्त, अव्यक्त, अनादि, हिरण्यगर्भ आदि से विशेषित हैं। ब्रह्म से अलग चर या अचर कुछ नहीं है। वेद, उपवेद ज्ञान विज्ञान इनका शरीर है। सारी सृष्टि को अण्डाकार रूप में अपने अन्दर

रखते हैं। यह प्रत्यक्ष सृष्टि उन सर्वव्यापी ब्रह्म का शरीर है जिसका अव्यक्त रूप ब्रह्म है। उन अव्यक्त पुरुष से यह चराचर सृष्टि प्रकाशमान रहती है। कठिन तपस्या कर योगि जन भी इनको देख नहीं सकते, अपने अन्दर इनका अनुभव कर सकते हैं। (२) स्तुतिपरक सूक्त।

ब्रह्मकपाल—बदरीनाथ का एक पुण्य स्थान जो मन्दिर के उत्तर में स्थित है। यहाँ ब्रह्मा रहते हैं और पितरों की प्रीति के लिये श्राद्ध करते हैं। यहां भगवान् विष्णु विराजमान रहते हैं।

ब्रह्मग्रन्थिविभेदिनी—ब्रह्मग्रन्थि को तोड़नेवाली देवी। सुषुम्ना नाड़ी में छः आधार है—ऐसा योगि जनों का मत है। इन छः आधारों के आरंभ और अन्त एक-एक ग्रन्थि है। स्वाधिष्ठान चक्र की ग्रन्थि है ब्रह्मग्रन्थि। कुण्डलिनी रूप देवी के इन छः आधारों को भेद करके सुषुम्न से होकर ऊपर जाते समय ये ग्रन्थि टूटती हैं।

ब्रह्मचर्य—सनातन धर्म के अनुसार प्रत्येक मनुष्य की चार अवस्था, चार आश्रम होते हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ब्रह्मचर्याश्रम में रहने वाले को ब्रह्मचारी कहते हैं। ब्रह्मचारी गुरुकुल में रहकर वेदाध्ययन, शस्त्राभ्यास करता है। गुरु के घर रहते समय प्रतिदिन सूर्योदय से पहले उठना और नित्यकर्म के बाद गुरु के लिये कुश, फूल, जल, लकड़ी आदि लाना चाहिए। सुबह शाम गुरु, अग्नि, सूर्य भगवान् विष्णु की वन्दना करनी चाहिए। साथ ही मौन होकर एकाग्रता से गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए। शरीर, वाक्, वुद्धि, पञ्चेन्द्रिय मन इनको काबू में रख कर श्रद्धा भक्ति के साथ हाथ जोड़ कर गुरु के सामने रहना चाहिये। श्रद्धा से गुरु की सेवा करना, मन लगाकर गुरु के मूह से वेदाध्ययन करना, वेदाध्ययन के आरंभ में गुरु चरणों पर प्रणाम करना, गुरु की हर प्रकार से सेवा करना आदि ब्रह्मचारी का कर्तव्य है। कुश हाथ में लेकर मेखला, अजिन या वल्कल पहनना, जटा, दण्ड कमण्डल, उपवीत आदि धारण करना चाहिए। सुबह शाम भिक्षा के लिए जाना और जो कुछ प्राप्त होता है, उसे गुरु को निवेदन करना चाहिये। सुशील, मिताहारी, दक्ष, जितेन्द्रिय रहना चाहिए। गुरु पत्नी का गुरु के समान ही आदर करना चाहिए। वेदाध्ययन के बाद इच्छा के अनुसार गुरुदक्षिणा दे।

ब्रह्मचारी—दे :—ब्रह्मचर्य।

ब्रह्मतत्व—परमात्मा का यथार्थ ज्ञान।

ब्रह्मतीर्थ—कुरुक्षेत्र का एक पुण्य तीर्थ।

ब्रह्मनाम—महाविष्णु का विशेषण।

ब्रह्मनिष्ठ—परमात्मा के चिन्तन में लीन व्यक्ति।

ब्रह्मपद—परमात्मा का स्थान, मोक्ष।

ब्रह्मपाश—वह अस्त्र विशेष जिसका अधिष्ठान देवता ब्रह्मा है।

ब्रह्मपुत्र—हिमालय की पूर्वी सीमा से निकल कर गंगा के साथ मिल कर बंगाल की खाड़ी में गिरनेवाली नदी।

ब्रह्मपुत्री—सरस्वती देवी।

ब्रह्मपुराण—अठारह पुराणों में से एक। ब्रह्मा ने मरीचि महर्षि को जो उपदेश दिये थे, उनका संग्रह है।

ब्रह्मपुरी—महामेरु के ऊपर स्थित ब्रह्मा की पुरी। उसके आठों ओर इन्द्रादि दिक्पालकों की पुरियाँ हैं। महाविष्णु के चरण कमलों से निकली गंगा यहाँ गिरती है। यह चारों दिशाओं में सीता, अलकनन्दा, चक्षुषा और भद्रा नाम से बहती है।

ब्रह्मप्रलय—ब्रह्मा के सौ वर्ष बीतने पर सृष्टि का विनाश होता है इसको ब्रह्मप्रलय कहते हैं। इसमें स्वयं परमात्मा भी विलीन हो जाते हैं।

ब्रह्मयज्ञ-गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पांच यज्ञों में से एक वेद का अध्ययन-अध्यापन, तथा सस्वर पाठ ।

ब्रह्मरंध्र–मूर्धा में एक प्रकार का विवर जहां से जीव इस शरीर को छोड़ कर निकल जाता है ।

ब्रह्मराक्षस–जो दूसरे की पत्नी को भगा ले जाता है, ब्रह्मस्व का (ब्राह्मण के धन का) अपहरण आदि घृणित वृत्ति में संलग्न रहता है मृत्यु के बाद ब्रह्मराक्षस बनता है । भगवान् के पांच–जन्य शंख का शब्द इन ब्रह्मराक्षसों से भक्तों की रक्षा करता है ।

ब्रह्मरूपा–ब्रह्मा के रूप से युक्त देवी ।

ब्रह्मलोक–जो चतुर्भुज ब्रह्मा सृष्टि के आदि में भगवान् विष्णु के नाभि कमल से जन्म लेकर सारी सृष्टि की रचना करते हैं, जिनको प्रजापति, हिरण्यगर्भ, सूत्रात्मा आदि कहते हैं, वे जिस ऊर्ध्वलोक में रहते हैं उस लोक विशेष का नाम ब्रह्मलोक है । ब्रह्मा का वह लोक इस ब्रह्माण्ड में सब से ऊंचा और सबसे सूक्ष्म है और सुखों की चरम सीमा है ।

ब्रह्मवर्चस्–(१) ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्म शक्ति या तेज । (२) ब्राह्मण की अन्तर्हित पवित्रता या शक्ति ।

ब्रह्मवादी–वेदों का अध्यापन करता है, वेदान्त दर्शन का अनुयायी है ।

ब्रह्मविद्या–निर्गुण, निराकार परमात्मा के परम तत्व का साक्षात्कार कराने की विद्या ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण–अठारह पुराणों में से एक । सावर्णि मनु ने नारद को जो उपदेश दिये थे उनका संग्रह । इसमें ब्रह्मकाण्ड, प्रकृति–काण्ड, गणेश काण्ड और कृष्णजन्म काण्ड नाम के चार काण्ड हैं ।

ब्रह्मशिर–एक विशिष्ट अस्त्र का नाम ।

ब्रह्मसत्र–ब्रह्मयज्ञ, वेदों का पढ़ना-पढ़ाना ।

ब्रह्मसर–एक पुण्य क्षेत्र ।

ब्रह्मसावर्णि–उपश्लोक के पुत्र जो दसवें मनु हैं । भूरिषेण आदि उनके पुत्र होंगे; हविष्मान, सुकृति, जय, मूर्ति आदि उस मन्वन्तर के देव, शम्भू इन्द्र होंगे । विश्वसृज और विषूची के पुत्र विष्वक्सेन के नाम से भगवान अवतार लेंगे ।

ब्रह्मसुत–सनकादि चार महर्षि, नारद, मरीचि आदि ।

ब्रह्मसूत्र–(१) जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसे ब्राह्मण या द्विज मात्र कंधे के ऊपर से धारण करते हैं । (२) बादरायण द्वारा रचित वेदान्त दर्शन के सूत्र ।

ब्रह्मस्थान–एक पुण्य क्षेत्र ।

ब्रह्मस्व–ब्राह्मण की या क्षेत्रों की संम्पत्ति ।

ब्रह्महत्या–ब्राह्मण का वध करना जो महापाप माना जाता है । इसका प्रायश्चित बहुत कठिन होता है ।

ब्रह्मा–सृष्टि के आरम्भ में कारण जल में एक भगवान् विष्णु ही थे । उनके नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई । अपने को अकेला पाकर वे एक-एक करके चारों दिशाओं में घूम कर देखने से इनके चार मुख हो गये और चतुर्मुख कहलाने लगे ।

ब्रह्माणी–(१) ब्रह्मा की पत्नी (२) एक प्रकार का गन्ध द्रव्य (३) दुर्गा का विशेषण । ब्रह्मा से उत्पन्न शक्ति जो हंस रूप विमान में आरूढ़ होकर रुद्राक्ष माला और कमण्डल धारण कर शुंभ और निशुंभ से लड़ने के लिये दुर्गा की सहायता करने अवतरित हुई ।

ब्रह्माण्ड–बीज रूप अण्डा जिससे यह समस्त विश्व का उद्भव हुआ ।

ब्रह्माण्ड पुराण–अठारह पुराणों में से एक । ब्रह्मा के उपदेशों का संग्रह । इस में प्रपञ्च की उत्पत्ति आदि प्रतिपादित है ।

ब्रह्मावर्त–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थल ।

ब्रह्मास्त्र–यह अस्त्र शिव से अगस्त्य को, अगस्त्य से अग्निवेश्य, अग्निवेश्य से द्रोण और द्रोण से अर्जुन को मिला। यह एक अमोघ अस्त्र है जिसके देवता ब्रह्मा हैं।

ब्रह्मिष्ठ–वेदों का पूर्ण पण्डित।

ब्राह्मण–(१) समस्त वस्तुओं को ब्रह्म रूप से देखने वाला। (२) चार वर्णों में प्रथम और श्रेष्ठ वर्ण। ये ब्रह्मा के मुख से निकले माने जाते हैं। इनको यज्ञोपवीत धारण करने का तथा यज्ञादि वैदिक कर्मों का अधिकार है। अन्तःकरण का निग्रह करना (शम), इन्द्रियों का दमन करना (दम), धर्म पालन के लिये कष्ट सहना (तप), बाहर-भीतर से शुद्ध रहना (शौच), दूसरे के अपराधों को क्षमा करना (शान्ति), मन, इन्द्रिय और शरीर को सरल रखना (आर्जव), वेद, शास्त्र, ईश्वर परलोक आदि में श्रद्धा रखना (आस्तिक्य), वेद-शास्त्रों का अध्ययन करना और अध्यापन करना (ज्ञान-विज्ञान)–ये सब ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं। ब्राह्मणों में सद्गुणों की प्रधानता है। (२) वेद का वह भाग जो विविध यज्ञों के विषय में मन्त्रों के विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन करता है, तथा उनके मूल और विवरणात्मक व्याख्या को तत्सम्बन्धी निदर्शनों के साथ जो उपाख्यानों के रूप में विद्यमान है, प्रस्तुत करता है। वेद के मन्त्रभाग से यह पृथक् है। प्रत्येक वेद का अपना पृथक्-पृथक् ब्राह्मण है। ऋग्वेद के ऐतरेय या आश्वलायन और कौशीत की या सांख्यायन ब्राह्मण हैं, यजुर्वेद का शतपथ; सामवेद का पंचविंश, षड्विंश आदि; अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है।

ब्राह्मविवाह–हिन्दूशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें आभूषणों से अलंकृत कन्या, वर से कुछ लिये बिना, उसे दान कर दी जाती है।

ब्राह्मी–(१) ब्रह्मा की मूर्तिमती शक्ति (२) वाणी की देवी सरस्वती (३) रोहिणी नक्षत्र (४) दुर्गा का विशेषण।

भ

भक्त–भगवान का भक्त कृपा की मूर्ति होता है। किसी भी प्राणी से वैरभाव नहीं रखता घोर से घोर दुःख भी प्रसन्नतापूर्वक सहता है। सत्य में दृढ़ है, मन में किसी प्रकार की पापवासना नहीं आती, सबका भला करने वाला और चाहने वाला है। वह संयमी, मधुर-स्वभाव वाला और पवित्र होता है, गंभीराशय, धैर्यवान होता है। भूख-प्यास, सुख-दुःख, शोक-मोह, जन्म-मृत्यु आदि द्वन्द्व उसे विचलित नहीं करता। दूसरों का सम्मान करता है, दूसरों से किसी प्रकार का सम्मान नहीं चाहता; उसका हृदय करुणार्द्र रहता है, सब से मित्रता का व्यवहार करता है। कर्म के फल में आसक्ति नहीं रखता। भक्त जनों का दर्शन, भगवान की स्तुति और प्रणाम, उनके गुण और कर्मों का कीर्तन आदि उसे प्रिय होते हैं। संसार में जो वस्तु उसे सबसे प्रिय और अभीष्ट जान पड़ती है वह भगवान को अर्पित करता है।

भक्त चार प्रकार के हैं :–अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु, ज्ञानी, स्त्री, पुत्र, धन, मान, बड़ाई प्रतिष्ठा और स्वर्गसुख आदि इस लोक और परलोक के भोगों से, जिसके मन में एक की या बहुतों की कामना है, परन्तु कामनापूर्ति

के लिये जो केवल भगवान पर ही निर्भर रहता है, और उसके लिये जो श्रद्धा और विश्वास के साथ भगवान का भजन करता है, वह अर्थार्थी भक्त है जैसे सुग्रीव, विभीषण आदि जिनमें ध्रुव प्रधान हैं।

जो शारीरिक या मानसिक सन्ताप, विपत्ति, शत्रुभय, रोग, अपमान आदि से घबराकर उनसे छूटने के लिये पूर्ण विश्वास के साथ हृदय की अडिग श्रद्धा से भगवान का भजन करता है वह आर्त भक्त है गज-राज, जरासंध के बन्दी राजगण, सती द्रौपदी इनमें मुख्य हैं।

धन, स्त्री, पुत्र, गृह आदि वस्तुओं की और रोग-संकट आदि की परवाह न करके एकमात्र परमात्मा को तत्व से जानने की इच्छा से ही जो एकनिष्ठ होकर भगवान की भक्ति करता है उस कल्याणकारी भक्त को जिज्ञासु कहते हैं। परीक्षित आदि जिनमें उद्धव विशेष प्रसिद्ध हैं।

जो परमात्मा को प्राप्त कर चुके हैं, जिनकी दृष्टि में एक परमात्मा ही रह गये हैं, परमात्मा के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं और इस प्रकार परमात्मा को प्राप्त कर लेने से जिनकी समस्त कामनाएँ निःशेष रूप से समाप्त हो चुकी हैं, तथा ऐसी स्थिति में जो सहज भाव से ही परमात्मा का भजन करते हैं, वे ज्ञानी हैं। शुकदेव जी, सनकादि महर्षि नारद जी और भीष्म जी आदि प्रसिद्ध हैं।

भक्तवत्सल–भगवान का विशेषण।

भक्तियोग–वेदों में भगवान ने मनुष्यों के कल्याण के लिये अधिकार भेद से तीन प्रकार के योग बताये हैं–ज्ञान, कर्म, भक्ति। जो पुरुष न तो अत्यन्त विरक्त है और न अत्यन्त आसक्त है ही, किसी पूर्वजन्म के शुभकर्म से सौभाग्य वश भगवान की लीला-कथा आदि में श्रद्धा रखता है, वह भक्ति योग का अधिकारी है। उसे भक्तियोग के द्वारा सिद्धि मिलती है। अपने धर्म में निष्ठा रखने वाला पुरुष इस शरीर में रहते-रहते निषिद्ध कर्म का परित्याग करता है और पवित्र होता है। अन्तःकरण की पवित्रता से भक्ति की प्राप्ति होती है। दोष-दर्शन के कारण कर्म फल में अनासक्त होकर, जितेन्द्रिय और संयमी होकर, मन को सावधानी से अपने काबू में कर भगवान का चिन्तन करके, सब कर्मों का फल और अपने को भी भगवान के चरणों में अर्पित करके भक्ति योग के द्वारा साधक भगवान को प्राप्त कर सकता है।

भग–द्वादशादित्यों में से एक–शक्र, अर्यमा, धाता, सविता, त्वष्टा, विवस्वान, मित्र, वरुण, पूषा, भग, अंशु। कश्यप और अदि के पुत्र थे। दक्षयाग के ध्वंस के समय नन्दी-श्वर ने भग की आँखें निकाली। बाद में शिव ने वर दिया कि यज्ञभाग को मित्र की आँखों से देखें। दक्ष ने जब शिव का अप-मान किया था भग ने दक्ष का अनुमोदन किया था।

भगदत्त–प्राग्ज्योतिषपुर के राजा, पाण्डु के मित्र थे, लेकिन महाभारत युद्ध में कौरवों के पक्ष से युद्ध किया और अर्जुन से मारे गये।

भगवती–ऐश्वर्ययुक्त देवी।

भगवद्गीता–श्रीमत् भगवद्गीता साक्षात् भग-वान् की दिव्य वाणी है। यह एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है। इसकी महिमा का पूर्ण-तया वर्णन नहीं हो सकता। इसमें सम्पूर्ण वेदों का सार संग्रह है, इसकी रचना इतनी सरल और सुन्दर है कि थोड़ा सा अभ्यास करने से इसको समझा जा सकता है। परन्तु इसका आशय इतना गूढ़ और गंभीर है कि जीवन भर निरन्तर अभ्यास करने पर भी इसका अन्त नहीं पाया जा सकता। इसके

पद-पद मे रहस्य भरा रहता है। भगवान के गुण, प्रभाव, स्वरूप, तत्व, रहस्य और उपासना एवं कर्म तथा ज्ञान का वर्णन जिस प्रकार गीता में किया गया है वैसा विश्व के किसी अन्य ग्रंथ में एक साथ मिलना कठिन है। गीता सर्व शास्त्रमयी है। गीता स्वयं भगवान् के मुखारविन्द से निकली है, इसलिये यह सब शास्त्रों से श्रेष्ठ है। महाभारत का युद्ध छिड़ने से पहले कुरुक्षेत्र की पुण्यभूमि मे कौरव और पाण्डव दोनों की अक्षौहिणी सेनायें तैयार खड़ी थी, उनके बीच मे निरीक्षण करते हुए अर्जुन का मन स्वजनों और मित्र बान्धवों को देखकर करुणार्द्र हो गया। उनकी सारी वीरता और शौर्य जाता रहा किंकर्तव्यविमूढ़ होकर भगवान की शरण ली और युद्ध करने से विमुख हो गये। भगवान के मुख से निकली वाणी का संकलन श्री व्यास जी ने किया। सात सौ श्लोकों के पूरे ग्रंथ को अठारह अध्यायों मे विभक्त करके महाभारत के अन्दर मिला दिया। भगवान ने अर्जुन को निमित्त बनाकर समस्त विश्व को गीता के रूप मे महान उपदेश दिया है। इसमे कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, सगुण-निर्गुण की उपासना, सांख्यदर्शन, योगदर्शन, जीव और जीव की गति, सन्यास आदि अनेक विषयों पर शास्त्रीय रूप से चर्चा की है।

भगवान्—सगुण परब्रह्म परमात्मा। उत्पत्ति और प्रलय, आना-जाना तथा विद्या और अविद्या को जाननेवाले एवं ऐश्वर्य, ज्ञान, समृद्धि, सम्पत्ति, यश, बल इन छः गुणों से युक्त परमात्मा।

भगहा—(१) शिव (२) अपने भक्तों का प्रेम बढ़ाने के लिये उनके ऐश्वर्य का हरण करने वाले और प्रलयकाल में सबके ऐश्वर्य को नष्ट करने वाले महाविष्णु।

भगिनी—(१) बहन (२) सौभाग्यवती स्त्री।

भगीरथ—इक्ष्वाकु वंश के प्रसिद्ध महाराजा सगर के पौत्र अंशुमान के पुत्र दिलीप के पुत्र। सगर पुत्र पाताल में अश्व को ढूंढ़ते हुए गये और वहाँ कपिल महर्षि की अवहेलना की। उनकी क्रोधाग्नि मे वे साठ हजार सगर पुत्र भस्म हो गये। गंगा के पुनीत जल से उनका उद्धार होगा। महाराजा अंशुमान और दिलीप ने इसके लिये तपस्या की, लेकिन तपस्या सफल होने से पहले उनकी मृत्यु हुई। दिलीप के पुत्र यशस्वी राजा भगीरथ ने कठिन तपस्या की। गंगा देवी प्रसन्न हुई, लेकिन उन्होने कहा कि मेरी धार की शक्ति को सहन करने लायक कोई नही हो तो पृथ्वी मे प्रलय होगा दूसरे पापी लोग अपना पाप मुझ मे धोकर मुझे कलुषित करेंगे। भगीरथ ने तपस्या कर शिव से गंगा को धार रोकने के लिये वर मांगा। सात, ब्रह्मनिष्ठ साधु-सन्यासी जिनके हृदय में पापनाशक हरि विराजमान हैं, गंगा मे स्नान कर उसका कालुष्य दूर करेंगे। शिव जी ने पवित्र गंगा की तेज धारा को अपनी जटाओं मे रोककर उसकी एक ही धारा को बाहर निकलने दिया। गंगा ने भगीरथ के बतलाये हुए मार्ग से होकर, पाताल मे सगर पुत्रों की राख जहाँ पड़ी थी उस भूमि को प्लावित कर पवित्र किया। सगर पुत्रों को मोक्ष प्राप्त हुआ। गंगा का एक नाम भागीरथी हो गया।

भगीरथ प्रयत्न—अति दुष्कर काम करने के लिये भगीरथ के समान कठिन प्रयत्न करना।

भद्र—तक्षक वंश का एक सांप।

भद्रकार—(१) यदुवंश का एक राजा (२) चन्द्रवंश के एक राजा, कुरु के पौत्र और अविक्षित के पुत्र।

भट्टनारायण—संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जिन्होंने 'वेणी-संहार' नाटक लिखा था।

भट्टि—एक विख्यात संस्कृत कवि। विक्रमा-

दित्य महाराजा की राज सभा में रहते थे। विद्यासागर की वैश्य पत्नी से पैदा पुत्र (दे: विक्रमादित्य भर्तृहरि)।

भण्डपुत्र–भण्डासुर के चतुर्बाहु आदि तीस पुत्र थे। ललिताम्बिका देवी की बाला नामक पुत्री ने इनका निग्रह किया था।

भण्डासुर–शिव जी की नेत्राग्नि में कामदेव निश्शेष जल मरे। श्री गणेश जी ने उनकी राख से एक असुर की मूर्ति बनायी। ब्रह्मा ने उसमें जान डाल दी और भण्डासुर नाम दिया। इस असुर के आतंक से पीड़ित देवताओं की रक्षा करने के लिये देवी ने उसका वध किया।

भद्र–(१) वसुदेव और देवकी की पुत्री पौरवी के पुत्र। इनके पुत्र केशि थे। (२) श्रीकृष्ण और कालिन्दी का एक पुत्र। (३) वसुदेव और देवकी का एक पुत्र।

भद्रकाली–श्री दुर्गा का दूसरा रूप। दक्ष की यज्ञशाला में जब सती की मृत्यु हुई उससे दुःखी और कुपित शिवजी ने जटा को जमीन पर पटका और उससे शिव के अंश भूत वीर भद्र और देवी की अंशभूता भद्रकाली का जन्म हुआ। इन दोनों ने मिलकर-दक्ष यज्ञ का भंग किया। भगवान की योग माया का एक नाम भद्रकाली है। श्रीकृष्ण का अवतार लेने से पहले योगमाया को यशोदा की पुत्री होकर जन्म लेने और देवकी के गर्भस्थ शिशु को रोहिणी के गर्भ में रखने का आदेश भगवान ने दिया था। इसलिये ये विष्णु भगवान की बहिन मानी जाती है। भगवान ने कहा कि लोग देवी के अनेक मन्दिर स्थापित करेंगे, उनके दुर्गा भद्रकाली, वैष्णवी, कुमुदा चण्डिका, कृष्ण, माधवी, शारदा, अम्बिका, विजया, नारायणी, ईशानी आदि नाम होंगे। चण्ड, मुण्ड, भण्ड, महिषासुर, शुंभ, निशुंभ, धारिक, दानवेन्द आदि असुरों का वध देवी ने किया।

भद्रकाली पाट्ट–केरल के देवी क्षेत्रों में यह ग्राम गीत होता है। इसके लिये चावल पीस कर लाल, हरा आदि रंगों में रंगा जाता है, फिर पिसी हल्दी कोयला आदि कई रंगों से भद्रकाली का बड़ा रूप फर्श पर अंकित किया जाता है। भद्रकाली के स्तुति गान वाद्य यन्त्रों के साथ गाये जाते हैं, अन्त में उस रूप को मिटा देते है। ऐसा विश्वास है कि देवी इससे प्रसन्न होती है।

भद्रचारु–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का एक पुत्र।

भद्रतुंग–एक पुण्य स्थल।

भद्रप्रिया–कल्याण प्रिया देवी (२) भद्र नामक लक्षणों से युक्त गज जिनको प्रिय है ऐसी देवी।

भद्रबाहु–पुरुवंश का एक राजा।

भद्रमूर्ति–मंगल मूर्ति वाले भगवान।

भद्रवट—शिव जी और श्री पार्वती का आवास स्थान।

भद्रवाहु–वसुदेव और पौरवी का एक पुत्र।

भद्रशाख–कार्तिकेय का विशेषण।

भद्रशाल–महामेरु के पूर्व में स्थित भद्राश्ववर्ष की एक चोटी जहाँ कालाम्र नामक एक वृक्ष है। इसकी सेवा करने वाले शुभ्रवर्ण और तेजस्वी होते हैं।

भद्रश्रवा–सौराष्ट्र देश का एक राजा।

भद्रसेन–(१) श्रीकृष्ण और बलराम के बाल्यकाल का एक साथी (२) यदुवंश के माहिष्मान के पुत्र। इनके पुत्र दुर्मद और धनक थे। (३) वसुदेव और देवकी के एक पुत्र।

भद्रसोमा–गंगा का विशेषण।

भद्रा–(१) भगवद्पदी गंगा ब्रह्मलोक से चार दिशाओं में चार नाम से निकलती है, उनमें से एक–सीत, अलकनन्दा, चक्षु, भद्रा (२) कुबेर की पत्नी जो साध्वी सती थी। (३) मेरु की पुत्री जिसका विवाह राजा अग्नीन्ध्र

से हुआ। (४) श्रीकृष्ण की बहन, अर्जुन की पत्नी सुभद्रा का दूसरा नाम (५) देवक की पुत्री, वसुदेव की एक पत्नी। इनका पुत्र केशि था। (६) वसुदेव की बहन श्रुतकीर्ति की पुत्री, श्रीकृष्ण की पत्नी। इनके संग्रामजित, बृहत्सेन, शूर, प्रहर्षण, अरिजित, जय, सभद्र, वाम, आयु, सत्यक पुत्र थे। भद्रा का दूसरा नाम शैब्या था।

भद्राश्व—प्रियव्रत महाराजा के पुत्र अग्नीन्ध्र थे। उनकी पत्नी पूर्वचित्ती नामक अप्सरा से उनके नौ पुत्र हुए। उनमें से एक पुत्र। वे जम्बूद्वीप के नौ वर्षों में से उन्हीं के नाम के वर्ष के राजा थे। यह वर्ष गन्धमादन पर्वत के पूर्व में स्थित है।

भय—अधर्म और हिंसा का पौत्र।

भयकृत—दुष्टों को भयभीत करने वाले भगवान।

भयनाशन—स्मरण करने वालों और सत्पुरुषों का भय दूर करने वाले।

भयापहा—भक्तों के समस्त भयों को दूर करनेवाली देवी।

भरणी—नक्षत्रों में से एक जो तीन तारों का पुंज है।

भरत(१) अयोध्या के महाराजा दशरथ के पुत्र, श्रीराम के भाई, दशरथ की प्रिय पत्नी केकय राजकुमारी कैकेयी के पुत्र। श्रीराम के अनन्य भक्त थे। श्रीराम के साथ ही जन्म हुआ, बचपन बीता साथ ही शस्त्र शास्त्रों का अभ्यास किया। श्रीराम के साथ ही मिथिला में जनक महाराजा के भाई कुशध्वज की पुत्री माण्डवी से विवाह हुआ। इनके पुष्कर और तक्षक नाम के दो पुत्र हुए। जब भरत ननिहाल में थे तब दासी मन्थरा के रचे षडयन्त्र में फँस कर कैकेयी ने महाराजा से धरोहर में रखे दो वर माँगे जिनके अनुसार श्रीराम को चौदह साल का वनवास और भरत को राजतिलक मिला। पुत्रशोक से दशरथ की मृत्यु होने पर वसिष्ठ का सन्देश पाकर अपने छोटे भाई शत्रुघ्न के साथ भरत अयोध्या लौट आते है। अपनी माँ का दुष्कृत्य जानकर, पिता की मृत्यु, उससे भी भीषण अपने प्रिय रघुनन्दन, सीता और लक्ष्मण के वनवास की बात सुनकर भरत बेहोश हो गये। होश में आने पर अपनी माँ की कुटिलता पर उसको धिक्कारते हैं, और कौसल्या की गोद में निरीह बच्चे के समान रोते हैं तथा अपनी निष्कलङ्कता प्रकट करते हैं। कौसल्या, वसिष्ठ आदि गुरुजनों के सान्त्वना देने पर भी वे शान्त नहीं होते, राज्यभार स्वीकार करने की उनकी अभ्यर्थना अस्वीकार करते हैं। अभिषेक के सब सामान लेकर सपरिवार, ससैन्य, गुरुजनों और परिजनों के साथ श्रीराम का नाम लेते हुए वन से उनको लौटाने के लिये जाते हैं। लक्ष्मण अपने भाई के उद्यम पर शंका करते हैं, लेकिन श्रीराम उनको अच्छी तरह पहचानते थे। भरत की हर प्रकार की अभ्यर्थना, हर तरह का तर्क श्रीराम अस्वीकार करते हैं और पिता की बात रखने के लिये भरत से उनके लौटने तक राज्य करने को कहते है। लाचार होकर श्रीराम की पादुकाओं को शिर पर धारण कर भरत सपरिवार अयोध्या लौटते हैं और अयोध्या से कुछ दूर नन्दीग्राम में कुटिया बनाकर, जटावल्कल धारण कर, योगि बनकर, श्रीराम की पादुकाओं की पूजा कर राज्य का सुचारु रूप से शासन करते हैं। चौदह साल के बाद लक्ष्मण और सीता समेत जब श्रीराम अयोध्या लौटते हैं, उनके चरणों में अपने को और राज्य को समर्पित करते हैं। भरत के सुबाहु और शूरसेन नामक दो पुत्र हुए। श्रीराम के महानिर्वाण के साथ ही भरत का स्वर्गवास हुआ। ऐसा विश्वास है कि भरत और शत्रुघ्न महाविष्णु के शंख और चक्र के अवतार हैं। (२) ऋषभदेव के सौ पुत्रों में से

ज्येष्ठ । भरत बड़े प्रतापी, वीर, तेजस्वी राजा थे । इनके शासन के कारण ही इस देश का नाम भारत हुआ । इनकी पत्नी विश्वरूपा की पुत्री पञ्चजनी थी । इनके पाँच पुत्र हुए । भरत बड़े ज्ञानी और विष्णु भक्त थे । दीर्घ-काल के राज शासन के बाद गण्डकी नदी के तीर पर पुलहाश्रम में तपस्या करने लगे । वे अपने हृदय में शंख-चक्र-गदा-पद्म धारी चतुर्भुज महाविष्णु का अनुभव करते थे और आनन्द में मग्न होते थे । एक सद्यप्रसूत हिरण शावक की जिसकी माँ प्रसवपीड़ा और शेर के भय से मर गई थी, रक्षा की और उसका पालन करने लगे । उस हरिण बाल के पालन, भोजन, खेल-कूद की चिन्ता में ज्यादा मग्न रहने लगे और पूजा तपस्या में विघ्न होने लगा । इस प्रकार उसी की चिन्ता में ही भरत की मृत्यु हुई । हरिण बालक की चिन्ता में मृत्यु होने से हरिण का जन्म लिया । पुण्य के प्रभाव से पूर्व जन्म की बातें याद रहीं, हरिण का जन्म होने पर भी सालग्राम क्षेत्र में भगवद्ध्यान में लगे रहे । मृत्यु के बाद एक वेदज्ञ, शम दम-स्वाध्यायन निरत एक ब्राह्मण के घर में जन्म लिया । अपने पूर्व जन्मों के वृत्तान्त स्मरण रहने के कारण वे सभी से और सभी वस्तुओं से अनासक्त होकर रहे । जिससे इनका नाम जड़ भरत होगया : इस जन्म मे इनको मोक्ष मिला (दे:—जड़ भरत, रहूगण) (३) सूर्य वंश के प्रसिद्ध राजा दुष्यन्त और कण्वपुत्री शकुन्तला के सुविख्यात पुत्र थे । बचपन से ही बड़े परा-क्रमी, शूर, वीर थे । ये हरि के अंशांश रूप माने जाते हैं । पिता की मृत्यु के बाद से सार्वभौम सम्राट बने । गंगा के तीर पर दीर्घ-तमा के पौरोहित्य में अनेक अश्वमेध यज्ञ किये और अपार धन दान में दिया । दिग्विजय के समय भरत ने किरात, हून, यवन, अंध्र, कङ्क, शाक, म्लेक्ष आदि जातियों को जीता । इनके शासन काल में समृद्धि थी, प्रजा सुखी थी और सम्पन्न थी । भरत की तीन रानियाँ थी जो विदर्भ की राजकुमारियाँ थीं । लेकिन योग्य कोई सन्तान नही थी । मरुत्सोम नाम के याग से मरुतों को तुष्ट करने पर उन्होंने भरत को भरद्वाज नामक एक पुत्र दिया जिसका पालन-पोषण मरुत कर रहे थे । भरत के बाद भरद्वाज वितथ नाम से राजा बने । (दे: दुष्यन्त, शकुन्तला) (४) नाट्यशास्त्र के आचार्य ।

भरतकूप—वन में श्रीराम का अभिषेक करने के उद्देश्य से पवित्र तीर्थों का जल लेकर भरत गये थे । श्रीराम अयोध्या नहीं लौटे । तब अत्रि महर्षि के आदेशानुसार चित्रकूट पर्वत के समीप, जो अनादि सिद्ध स्थल रहा था, एक कुएँ में उस पवित्र, अनुपम, अमृत जैसा जल भरत ने स्थापित किया । तब से उस कुएँ का नाम भरत कूप हो गया और इसमें स्नान करने से प्राणी मन, वचन और कर्म से मुक्त हो जायगा ।

भरद्वाज—(१) दुष्यन्त पुत्र भरत को मरुतों ने भरद्वाज नामक एक पुत्र दिया । (२) पुराण प्रसिद्ध मुनि जो अत्रि महर्षि के पुत्र माने जाते हैं । ये प्रयाग में रहते थे । वे तपस्वी जितेन्द्रिय, दया के निधान, परमार्थ मार्ग में बड़े ही चतुर श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त थे । मकर स्नान पर अनेकों ऋषि-मुनि प्रयाग में भरद्वाजाश्रम में एकत्र होते थे । ऐसे एक मकर स्नान के बाद भरद्वाज की प्रार्थना पर ज्ञानी याज्ञवल्क मुनि ने श्रीराम-चन्द्र की लीलाओं का पूरा-पूरा वर्णन किया था । वनवास को जाते समय श्रीराम, लक्ष्मण और सीता इनके आश्रम में गये थे । श्रीराम के पास जाते समय भरत भरद्वाज के निमं-त्रण पर उनके आश्रम में सपरिवार, ससैन्य

ठहरे । उस दिन अपनी योग विद्या के प्रभाव से सिद्धि ऋषियों के द्वारा भरद्वाज ने सबका यथा योग्य सेवा-सत्कार किया था। घृताची नामक अप्सरा से इनको द्रोण नामक एक पुत्र हुआ जो आगे चलकर कौरवों और पाण्डवों को शास्त्राभ्यास सिखाकर सुप्रसिद्ध हुए ।

भरु–(१) शिव (२)विष्णु (३) समुद्र ।

भर्ग–(१) शिव का नाम (२)पुरुवंश के राजा वीतिहोत्र के पुत्र। इनके पुत्र भर्गभूमि थे।

भर्गभूमि–पुरुवंश के राजा भर्ग के पुत्र ।

भर्तृहरि–एक अति प्रसिद्ध संस्कृत कवि । इनके पिता विद्यासागर ने ज्ञान सम्पादन की उत्कट तृष्णा के कारण एक वट वृक्ष पर बैठे एक ब्रह्मराक्षस से विद्यादान पाया। एक शूद्र स्त्री से, जिसने थके मांदे बेहोश पड़े विद्यासागर की सेवा की थी, शादी करने के लिये राजा की आज्ञा से राजकुमारी, ब्राह्मण मन्त्री की पुत्री और वैश्य कुलपति को पुत्री से शादी कर उस शूद्र कन्या से भी विवाह किया। उनके ब्राह्मण पत्नी से वररुचि, क्षत्रिय पत्नी से विक्रमादित्य, वैश्य स्त्री से भट्टि और शूद्र स्त्री से भर्तृहरि हुए। इन्होंने नीतिशतक, सुभाषित, वैराग्य शतक आदि कई कृतियाँ कीं।

भव–(१) शिव (२) संसार ।

भवचक्र–(१) संसार चक्र (२) शिवचक्र (२) अनाहत चक्र ।

भवनाशिनी–संसार का नाश करने वाली देवी ।

भवभूति—एक प्रसिद्ध सस्कृति कवि जिन्होंने मालती-माधव, महावीर चरित, उत्तर राम चरित, आदि प्रसिद्ध नाटक लिखे। इनका पहला नाम नीलकण्ठ था और विदर्भ देश में जन्म होने पर भी कन्नौज में अधिकतर रहते थे। वहां के राजकवि थे।

भवरोगघ्नी–संसार रूपी रोग का नाश करने वाली देवी ।

भवसागर–यह संसार जो एक विशाल सागर के समान है और भगवत् भक्ति इस सागर को पार करने की नौका है ।

भवानी–भव की पत्नी देवी ।

भवार्णव–सांसारिक जीवन रूपी सागर ।

भविष्यपुराण–सूर्यदेव ने मनु को जो उपदेश दिये थे उनका संग्रह। इसमें चौदह हजार श्लोक हैं।

भस्म–विभूति या पवित्र राख। शिव जी अपने शरीर में इसको लगाये रहते हैं, इसलिये यह पवित्र माना जाता है।

भस्मासुर–वृत्रासुर का अपर नाम (दे: वृत्रासुर)।

भागवत्–(१) विष्णु से सम्बन्ध रखनेवाला या विष्णु की पूजा करने वाला । (२) अठारह पुराणों में से एक। इसको पाँचवाँ वेद भी कहते है। इसकी महिमा गायी नहीं जाती। इसमें परम तत्व, परम धर्म का प्रतिपादन है, इसके पठन, श्रवण, मनन से आधिभौतिक, आध्यात्मिक, आधिदैविक दुःख और सकटों का निवारण होता है और भक्त भवसागर का पार करता है।

भागीरथी–गंगा का अपर नाम ।

भाण–नाट्यकाव्य का एक भेद, इसमें रंगमंच पर केवल एक ही पात्र होता है।

भाण्डीर–गोकुल के पास एक पुण्य वन ।

भाण्डीरक–गोकुल के पास के वन में स्थित एक विशाल वट वृक्ष जिसके नीचे श्रीकृष्ण और बलराम गोपकुमारों के साथ खेला करते थे।

भाद्रपद—चान्द्रवर्ष का एक मास ।

भाद्रपदा–एक नक्षत्र ।

भाद्रपदी–भाद्रपद मास की पूर्णिमा ।

भानु–(१) श्रीकृष्ण और सत्यभामा का एक

पुत्र (२) सूर्य (१) कश्यप ऋषि और प्राधा का पुत्र एक गन्धर्व (४) पाँचजन्य नामक अग्नि का पुत्र ।

भानुज–शनिग्रह ।

भानुदत्त—शकुनी का भाई ।

भानुमण्डल–सूर्य मण्डल ।

भानुमण्डलस्थान–अनाहत चक्र ।

भानुमती–(१) महर्षि अंगिरा की पुत्री ।(२) एक यादव प्रमुख की पुत्री जिसका विवाह सहदेव से हुआ (३)दुर्योधन की पत्नी ।

भानुमान–(१) श्रीकृष्ण और सत्यभामा का एक पुत्र । (२) सूर्यवंश का एक राजा (३) कलिंग देश के एक राजा जो भीमसेन से मारे गये ।

भार–एक माप जो लगभग तीन मन और पाँच सेर के बराबर है । सूर्य भगवान् से सत्राजित को जो रत्न मिला था उससे रोज आठ भार सोना मिलता था ।

भारत–(१) भारतवर्ष, जम्बूद्वीप का एक विभाग । (२) महाभारत जिसका निर्माण श्री वेदव्यास ने किया था (दे:–महाभारत)

भारतसंहिता–महाभारत का दूसरा नाम । व्यास निर्मित 'महाभारत' का पहला नाम 'जय' था । वैशम्पायन ऋषि ने जनमेजय के सर्प सत्र में 'जय' नामक भारत की व्याख्या के साथ दूसरी कई बातें भी बतायी थीं । ये दोनों मिलाकर जो ग्रन्थ बना उसको भारत संहिता कहते हैं ।

भारती–(१। वाणी की देवी सरस्वती (२) एक पुण्य नदी ।

भारद्वाज-(१) कौरव पाण्डवों के आचार्य द्रोण (२) अगस्त्य ऋषि का अपर नाम (३) मंगल ग्रह ।

भारद्वाजतीर्थ–पञ्चतीर्थों में से एक ।

भारभृत–शेषनाग आदि के रूप मे पृथ्वी का भार उठाने वाले और अपने भक्तों के योग क्षेम रूप भार को वहन करने वाले महा–विष्णु ।

भारवि–एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि जिन्होंने किरातार्जुनीय नामक प्रसिद्ध काव्य रचा ।

भार्गव–(१) भृगु के वंशज (२) भारत का एक प्राचीन जनपद (३) शिव का विशेषण।

भार्गवक्षेत्र–केरल का एक नाम । ऐसा ऐतिह्य है कि परशुराम ने समुद्र से केरल को पाया था ।

भार्गवराम–परशुराम ।

भार्गवी–लक्ष्मी का विशेषण ।

भालचन्द्र–शिव ।

भाव–(१) ज्ञान, दिव्य गुण (२) द्वारका के पास एक वन ।

भावज्ञा–देवी का विशेषण, शिव भक्तों को जाननेवाली ।

भावन–समस्त भोक्ताओं के फलों को उत्पन्न करने वाले भगवान् ।

भावनागम्या–भावना से अगम्या देवी । कर्म मार्ग में पाने योग्य देवी । सत्कर्मों से चित्तशुद्धि होने पर देवी प्राप्त हो सकती है । भावना दो प्रकार की है शब्दी भावना जो वेद मन्त्रों पर आस्पद है और अर्थी भावना जो मन्त्रार्थ के अनुरूप वृत्ति पर आस्पद है ।

भावितात्मा–जिसका आत्मा परमात्मा-चिन्तन से पवित्र हो गया है ऐसा भक्त ।

भावुक–सूर्यवंश का एक राजा ।

भाषारूपा– (१)देवी का विशेषण (२) भाषा शब्द रूप है, देवी भी शब्दस्वरूपिणी है (३) भाषाओं से वर्णित देवी ।

भाष्य–सूत्रों की वृत्ति जिसमें शब्दशः व्याख्या या टिप्पणी होते हैं, जैसे पाणिनी के सूत्रों पर पतंजलि का महाभाष्य, शंकर भाष्य ।

भास(१) एक सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि । इन्होंने स्वप्नवासदत्ता, प्रतिमा नाटक, पञ्चतन्त्र, दूत वाक्य आदि नाटक रचे हैं । (२)एक देवगण

भासी–दक्ष की पुत्री ताम्रा और कश्यप ऋषि

की पत्नी । इसके पुत्र भास नामक देवगण थे ।

भास्कर—सूर्य का विशेषण, द्वादशादित्यों में से एक ।

भिषक—संसार रोगों का नाश करने के लिए गीतारूप उपदेशामृत का पान कराने वाले भगवान् ।

भीमसेन—कुन्ती के पुत्र । दुर्वासा के दिये हुए एक मन्त्र से वायु भगवान् से भीमसेन का जन्म हुआ । ये महारथी, पराक्रमी, युद्धविद्या में निपुण, भीमाकार थे । भारत युद्ध में पाण्डवों की विजय के कारण श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन थे । पाण्डु की मृत्यु के बाद कुन्ती जब अपने पुत्रों के साथ हस्तिनापुर में रहने लगी पाण्डवों को, खास कर, भीम को दुर्योधनादि कौरवों से अनेकों कष्ट सहने पड़े । बाललीलाओं में भीम कौरवों को हराते थे । कौरवों ने भीम को एक बार विष पिलाया और एक तालाब में डुबाया । सांपों के काटने से विष उतर गया और सांप भीम को नागलोक ले गये । वहाँ आर्यक नाम का एक नाग भीम का मित्र बन गया और नागराज वासुकि की आज्ञा से एक रसायन पिलाया गया जिससे भीम महाशक्तिमान बने । बाद में बहुत धन और रत्नों के साथ भीम वापिस भेजे गये । भीम ने द्रोणाचार्य से आयुधाभ्यास सीखा था, गदायुद्ध में प्रवीण थे । उनका भीमस्वन शंख पौंड्रक था । लाक्षा गृह से भीम ने पाण्डवों की रक्षा की । हिडिम्बी नामक राक्षसी से माता के कहने पर शादी की और घटोत्कच नामक पुत्र हुआ । हिडिम्ब, बक आदि असुरों का वध किया, पाञ्चाली से अपने भाइयों के साथ विवाह किया । भरी कौरव सभा में जब केश पकड़ कर दुश्शासन ने द्रौपदी का वस्त्राक्षेप किया तब भीम ने भीम प्रतिज्ञा की कि दुश्शासन के रक्त से रंगित हाथ से जब तक वे द्रौपदी के केश बांधेंगे, तब तक वे खुले ही रहेंगे । भीम ने बलराम से गदायुद्ध सीखा । मय ने भीम को एक विशिष्ठ गदा दी थी । श्रीकृष्ण की सहायता से जरासन्ध से युद्ध कर उन्हें मारा । वनवास के समय द्रौपदी के लिये सौगन्धिक पुष्प लाने गन्धमादन पर्वतपरकदली वन मेंपहुँचे जहाँ वायुपुत्र हनुमान रहते थे । हनुमान को न पहचान कर पहले उन से बल परीक्षा की और पराजित हुए । इस पर दुःखी भीमको जब मालूम हो गया कि वे वृद्ध वानर उनके ज्येष्ठ भ्राता हनुमान हैं तब अतीव सन्तुष्ट हुए । हनुमान से वर मिला कि भारत युद्ध में अर्जुन के पताका में बैठ कर घोर गर्जन कर पाण्डव सेना को प्रोत्साहन देंगे । भीम ने ही दुर्योधन से लेकर सभी धृतराष्ट्र के पुत्रों का वध किया । दुश्शासन के रक्त से रंगित हाथ से द्रौपदी के केश बांधकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की । अज्ञातवास के समय विराट राजधानी में वलल नाम से रहे । द्रौपदी का चारित्र्य भंग करने पर तुले कीचक का वध किया । जीमूत नामक मल्ल को द्वन्द्व युद्ध में मारा । श्रीकृष्ण के निर्वाण के बाद अपने भाईयों के साथ वन को गये और वहीं स्वर्गारोहण हुआ । इनमें वृकोदर, अनिलात्मज, अर्जुनाग्रज, मारुति, भीम, कर्मा, वायुपुत्र, कुरुशार्दुल आदिअनेक नाम हैं । (दे: हिडिम्बी, बक, द्रौपदी युधिष्ठिर) (२) विदर्भ देश के राजा जिनकी पुत्री दमयन्ती थी ।

भीमबल—धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

भीमा—(१) दुर्गा का विशेषण (२) दक्षिण भारत की एक नदी ।

भील—अन्त्य वर्गों में एक-एक जंगली जाति ।

भीष्म—कुरुवंश के प्रसिद्ध राजा शन्तनु, के गंगा से उत्पन्न पुत्र । भीष्म 'द्यो' नामक वसु का पुनःजन्म थे । इनका पहला नाम देवव्रत था । इन्होंने दाशार्ह पुत्री सत्यवती के साथ अपने पिता का विवाह कराने के लिये पूर्ण युवावस्था

में ही जीवन भर में कभी विवाह न करने की तथा राज्यपद के त्याग की भीषण प्रतिज्ञा की इसी भीषण प्रतिज्ञा के कारण इनका नाम भीष्म पड़ा। इससे परम सन्तुष्ट होकर पिता ने यह वरदान दिया कि तुम्हारी इच्छा के विना मृत्यु भी तुम्हें नहीं मार सकेगी। ये वाल ब्रह्मचारी अत्यन्त तेजस्वी, शस्त्र-शास्त्रों के पूर्ण पारदर्शी, अनुभवी महाज्ञानी, महान वीर और दृढ़निश्चयी पुरुष थे। इनमें शौर्य, धैर्य, वीर्य, त्याग, तितिक्षा, क्षमा, दया, शम, दम, सत्य, अहिंसा, वल, तेज, न्यायप्रियता, नम्रता उदारता, आदि गुण पूर्णरूप से विकसित थे। भगवान की अनन्य भक्ति से उनका मन ओत-प्रोत था। ये भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप और तत्व को अच्छी तरह जानते थे और उनके एकनिष्ठ, पूर्ण श्रद्धा सम्पन्न परम प्रेमी भक्त थे। भारत युद्ध में इनकी समानता करने वाला कोई और वीर नहीं था। उन्होंने कौरव पक्ष में प्रधान सेनापति के पद पर रह कर दस दिनों तक घोर युद्ध किया और शरीर त्याग के लिये उत्तरायण की प्रतीक्षा में शर शय्या पर पड़े रहे। युद्ध के वाद शोकग्रस्त युधिष्ठर को सब भाइयों परिजनों और ऋषि-मुनियों के मध्य में ज्ञान का उपदेश दिया। उत्तरायण के आने पर स्वेच्छा से देहत्याग किया और अपने स्वरूप (वसु) में स्वर्ग में रहने लगे।

भीष्मक—विदर्भदेश के राजा, श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी के पिता। उनके रुक्मि आदि के चार पुत्र और रुक्मिणी नाम की एक पुत्री थी। अपनी पुत्री की इच्छा के अनुसार भीष्मक अपनी पुत्री का विवाह चेदी के राजा शिशुपाल से कराने को तैयार हो गये। यह वार्ता रुक्मिणी को मालूम हो गई और श्रीकृष्ण के पास दूत भेजा। श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया।

भीष्म जननी—भीष्म की माँ, गंगा का विशेषण।

भीष्मपञ्चक—कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पंच दिन जो भीष्म के लिये प्रधान हैं।

भुजगराज—शेष नाग या वासुकि का विशेषण।

भुजगभोगि—गरुड़, मोर।

भुजगोत्तम—साँपों में श्रेष्ठ शेषनाग रूप भगवान विष्णु।

भुजङ्गेश—(१) वासुकि (२) शेषनाग (३) पतञ्जलि मुनि।

भुजङ्गलता—पान की वेल।

भुवन—(१) लोक (२) एक महर्षि (३) एक विश्वदेव।

भुवनपावनी—गंगा नदी का विशेषण।

भुवनेश्वर—(१) परमात्मा (२) राजा (३) एक देश का नाम जहाँ सुप्रसिद्ध जगन्नाथ का क्षेत्र है।

भुवलोक—अन्तरिक्ष, चौदह लोकों में से एक।

भुशुण्डि—(१) (दे: काकभुशुण्डि) (२) शतघ्नि की तरह लम्वे गोलाकार लकड़ी का आयुध। इस पर लोहे की नोकें गढ़ी हुई हैं जो एक दूसरे से बड़ी हैं।

भू--लोक सृष्टि के आरम्भ में सब चराचरों के वीज स्वरूप एक अण्ड हुआ। कालान्तर में वह अण्ड गम्भीर शब्द के साथ फूटा और जो नाद निकले वे थे पहले भू:, दूसरा भुवा और तीसरा स्व:। गायत्री मन्त्र इन्हीं शब्दों से शुरू होता है। भू. का अर्थ इस लोक से, भुव: का पाताल और स्व: का स्वर्ग भी होता है।

भूकम्प--पृथ्वी का चलना, हिलना, डुलना। पौराणिक संकल्प है कि भूलोक का भार वहन करने वाला विरूपाक्ष नामक गज भूमि के भार से कभी पीड़ित होकर सिर हिलाता है, तब पृथ्वी इधर-उधर हो जाती है।

भूगर्भ–पृथ्वी को गर्भ में रखने वाले भगवान विष्णु ।

भूतनाथ–भूतों (गणों) के नाथ शिव ।

भूतकृत–रजोगुण का आश्रय लेकर ब्रह्मारूप से सम्पूर्ण भूतों की रचना करने वाले भगवान विष्णु ।

भूतभावन–भूतों की उत्पत्ति और वृद्धि करने वाले भगवान विष्णु ।

भूतभृत–सत्व गुण का आश्रय लेकर सम्पूर्ण भूतों का पालन पोषण करने वाले महाविष्णु ।

भूतमहेश्वर--सम्पूर्ण प्राणियों के महान ईश्वर विष्णु ।

भूतात्मा–सम्पूर्ण भूतों के आत्मा अर्थात् अन्तर्यामि विष्णु भगवान ।

भूति--सत्तास्वरूप और समस्त विभूतियों के आधार स्वरूप भगवान ।

भूधर--(१) पहाड़ (२) श्रीकृष्ण का विशेषण (३) शिव का विशेषण ।

भूपति--(१) महाविष्णु (२) राजा (३) एक देव ।

भूमरूपा–ब्रह्मरूपा ब्रह्मस्वरूपिणी देवी ।

भूमि–आदि में सब ओर जल ही जल था । उस कारण जल में महाविष्णु अनन्त के ऊपर लेटे थे । सृष्टि करने की इच्छारूपी ईक्षणा क्रिया भगवान में जब पैदा हुई तब सत्व, रज और तम तीनों गुणों को क्षोभित किया । साम्यावस्था चली गई । भगवान की नाभी से एक दिव्य पद्म निकला जिसमें से ब्रह्मा का जन्म हुआ । महाविष्णु के दोनों कानों से कर्णमल बहा जिससे मधु और कैटभ नाम के दो असुर निकले । जब ये ब्रह्मा को पीड़ित करने लगे, तब भगवान ने इनका वध किया । इनका मेद जम कर मेदिनी (भूमि) हुई । वराह कल्प में दिती के पुत्र हिरण्याक्ष ने भूमि को जल के अन्दर छिपा लिया था । जब मनुसृष्टि करने को तैयार हुए भूमि को अकारण ही जल के अन्दर जान कर भगवान ने सूकर रूप धारण कर भूमि का उद्धार किया । भूमि इसलिये महाविष्णु की पत्नी मानी जाती है । भूमि पहले ऊबड़ खाबड़ थी, पहाड़-तराइयों के कारण समतल नहीं थी । पृथु चक्रवर्ति ने इसको समतल बनाया । इतना ही नहीं इसको सात महाद्वीपों में विभाजित किया और एक भाग एक-एक समुद्र से घिरा हुआ है । प्रत्येक के नौ-नौ वर्ष किये गये ।

भूमि के पुत्र हैं नरकासुर और मंगल ग्रह । भूमि की पुत्री सीता देवी है ।

भूमिजा--सीता देवी ।

भूरिश्रवा--कुरुवंश के एक राजा, दुर्योधन के पक्ष में रहकर भारतयुद्ध में भाग लिया था । सात्यकि से मारे गये ।

भूलोक--चौदह लोकों में से एक, पृथ्वी ।

भूशय--लंका गमन के लिये मार्ग की प्रतीक्षा में समुद्र तट की भूमि पर शयन करने वाले भगवान् ।

भूषण--[१] स्वेच्छा से नाना अवतार लेकर अपने चरण चिन्हों से भूमि की शोभा बढ़ाने वाले भगवान विष्णु । [२] हिन्दी साहित्य के एक प्रसिद्ध कवि ।

भूसुत--[१] मंगल ग्रह]२] नरकासुर ।

भूसुता--सीता देवी ।

भूसुर--ब्राह्मण ।

भृगु--ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक, उनकी त्वचा से जन्म हुआ । ये भृगुवंश के स्थापक थे । भृगुवंश में असंख्य महात्मा, तपस्वी, ऋषि मुनि हुए हैं । भृगु वंशजों को भार्गव कहते हैं स्वायम्भुव और चाक्षुप आदि "मन्वन्तरों" में ये सप्तर्षियों में रह चुके हैं । महार्षियों में इनका बड़ा भारी प्रभाव है । इन्होंने दक्ष कन्या ख्याति से विवाह किया था । उनसे धाता, विधाता नाम के दो पुत्र और श्री या लक्ष्मी नाम की एक पुत्री हुई । यही कन्या भगवान विष्णु की पत्नी बनी । वैवस्वत

मन्वन्तर में इनका पुनर्जन्म हुआ था जब इनकी पत्नी पुलोमा से इनके भूतच्यवन,, शुक्र, शचि, नवन, वज्रशीर्ष नाम के छः पुत्र हुए। च्यवन के पुत्र पौत्रों में और्व, ऋचीक, जमदग्नि, परशुराम, रुरु, शुनक, शौनक आदि प्रसिद्ध ऋषिपुंगव हुए। भृगुमहर्षि ने महाविष्णु के वक्षस्थल पर लात मार कर उनकी सात्विक क्षमा की परीक्षा ली थी। आज भी भगवान भृगु के पदचिन्ह (भृगुलता) को अपने हृदय पर धारण किये हुए हैं। हरिवंश, मत्स्य-पुराण, शिवपुराण, महाभारत, श्रीमद्भागवत, पद्मपुराण, देवी भागवत प्रायः सभी पुराणों मे इनकी कथायें भरी पड़ी हैं।

भृगुकच्छ–नर्मदा नदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक पुण्य भूमि। यहीं पर महाराजा बलि भृगु आदि आचार्यों से अश्वमेघ करवा रहे थे जब भगवान विष्णु वामन के रूप में गये थे।

भृगुनन्दन–परशुराम।

भृगुलता–भृगु महर्षि का पदचिह्न जो भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर है। (दे: भृगु)।

भृङ्गार—राज्याभिषेक के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला घड़ा।

भृङ्गि–(१) एक शिव भक्त ऋषि (२) शिव जी का एक भूत गण।

भेषज–संसार रूपी रोग के लिये औषध रूप भगवान्।

भैमी—भीमसेन की पुत्री, नल महाराजा की पत्नी दमयन्ती।

भैरव–(१) शिव जी का एक रूप (२) शिव का एक भूत गण जिनका भयङ्कर रूप है। शिव जी के कोप से ये वृक्ष बन गये थे। बाद में शिव ने वर दिया कि भैरव की पूजा करने पर ही शिव पूजा पूर्ण होगी। रामेश्वर के स्नान-दर्शन के बाद काल भैरव की पूजा करने पर ही उसका पूरा फल मिलता है।

भैरवी–(१) देवी का एक रूप (२) बारह साल की कन्या।

भोगवती—(१) पाताल लोक में नागों की नगरी (२) पाताल गंगा (३) सरस्वती नदी।

भोगिनी–(१) सुख का भोग करने वाली देवी (२) नागकन्यात्मिका देवी।

भोज—(१) यदुवश के एक प्रसिद्ध राजा जिनसे भोजवंश चला (२) धारा नगर के एक राजा जो संस्कृत के अपार पण्डित थे और संस्कृत में रचनायें कीं।

भोजकट–कुण्डिनपुर से रुक्मिणी का हरण होने पर उनके भाई रुक्मि ने श्रीकृष्ण का पीछा कर उनसे युद्ध किया। युद्ध को जाते समय रुक्मि ने प्रतिज्ञा की थी कि रुक्मिणी को वापस लाये बिना कुण्डिनपुर में पैर नहीं रखूंगा। युद्ध में रुक्मि बुरी तरह से हार गये। प्रतिज्ञा के अनुसार भोजकट नामक एक नगरी बनायी और वहां रहे।

भोज्या–यदुवंश के राजा ज्यामघ के पुत्र विदर्भ की पत्नी, एक भोज राजकुमारी। इनके कुश और क्रथ नाम के दो पुत्र हुए।

भौम–(१) चौदहवें मनु। इनको इन्द्र सावर्णि भी कहते हैं। अरु, गम्भीर बुद्धि आदि इनके पुत्र होंगे। इस मन्वन्तर में पवित्र और चाक्षुष देव गण होंगे, शचि इन्द्र अग्नीन्ध्र, मगघ, अग्निबाहु, शुचि, शुद्ध, मक्त और अजित सप्तर्षि। सत्यानृत और वितान के पुत्र वृहद्भानु के नाम से भगवान अवतार लेंगे। (२) भूमि के पुत्र नरकासुर का विशेषण (३) मङ्गल ग्रह।

भ्रमर–सौवीर देश का एक राजकुमार। यह जयद्रथ का मित्र था और भारत युद्ध में अर्जुन से मारा गया।

भ्रमी–शिशुमार नामक प्रजापति की पुत्री, ध्रुव की पत्नी। इनके कल्प और वत्सर नाम के दो पुत्र हुए।

भ्रामरी–दुर्गा का विशेषण।

म

म–चन्द्रमा, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ।

मकर–(१) एक राशि का नाम (२) सेना की एक व्यूह रचना (३) भगवान के कुण्डल की आकृति (४) कुबेर की नौ निधियों में से एक (५) एक मास का नाम । जब सूर्य मकर राशि पर आता है तब से दिन बढ़ता है और रात्रि कम हो जाती है, उत्तरायण शुरू होता है।

मकरगिरि–मेरु पर्वत की उत्तर दिशा में स्थित एक पर्वत । दूसरा पर्वत है त्रिशृङ्ग । इसकी १८,००० योजना लम्बाई और चौड़ाई है और २००० योजना ऊँचाई है।

मकरकुंडल––भगवान श्रीकृष्ण (विष्णु) के कान का आभूषण जो मकराकृति का है।

मख–यज्ञ ।

मखद्विप–राक्षस, दैत्य, पिशाच ।

मघ–एक नक्षत्र ।

मघवन्–इन्द्र ।

मङ्कणक–एक ऋषि ।

मंगल–भूमि का पुत्र एक ग्रह । विष्णु भगवान ने वराह रूप से जब भूमि का उद्धार किया उनके दंष्ट्रों के रगड़ने से भूमि का पुत्र हुआ।

मंगलाचरण–सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से किसी भी ग्रंथ के आरम्भ में पढ़ी जाने वाली मङ्गल प्रार्थना ।

मंगलाष्टक–विवाह के अवसर पर वर-वधू की मंगल कामना के लिए पढ़े जाने वाले आशीर्वादात्मक श्लोक ।

मञ्जुला–एक पवित्र नदी ।

मणिकर्णिका–वाराणसी में स्थित एक पवित्र कुण्ड ।

मणिकाञ्चन–शकद्वीप का एक विभाग ।

मणिग्रीव–कुबेर का पुत्र, नलकूबर का भाई (दे.–नलकूबर) ।

मणिचर–एक यक्ष ।

मणिद्वीप–देवी का आवास स्थान ।

मणिनाग–(१) कश्यप ऋषि और कद्रू का एक पुत्र एक नाग (२) एक पुण्य स्थल ।

मणिपर्वत–मन्दर पर्वत की एक चोटी ।

मणिपुर–भारत के पूर्व में स्थित एक देश । यहाँ की राजकुमारी चित्रांगदा अर्जुन की पत्नी थी ।

मणिपूर–मणिपूर नामक चक्र जो नाभि में दस दलों में स्थित है ।

मणिपूरक–उदर में स्थित एक दिव्य स्थान जहाँ मोक्षेछुक ऋषि ब्रह्मा का ध्यान करते हैं ।

मणिपूराब्ज–मणिपूर में स्थित दस दलों का कमल ।

मणिप्रवाल–मलयालम् और संस्कृत भाषाओं का एक संकलन । मणिप्रवाल में मलयालम् साहित्य की अनेक रचनायें हुई हैं । जैसे कुञ्जन नाम्बियार का "ओहन् तुल्लल्"

मणिभद्र–(१) चन्द्रवंश के एक राजा जिनके सात पुत्र अगस्त्य ऋषि के शाप से किष्किन्धा के पास साल वृक्ष बने । सुग्रीव को अपनी शक्ति दिखाने के लिये श्रीराम ने एक ही शर से इन ताल वृक्षों को भेद कर इनको मोक्ष दिया (२)-एक यक्ष ।

मणिमय–एक राक्षस ।

मणिमान–(१) एक सर्प (२) एक पर्वत (३) सूर्य (४) शिव का एक पार्षद (५) एक तीर्थ स्थान (६) एक सांप (७) एक राजा जो दनायु के वंशज थे। पाण्डव पक्ष से भारत युद्ध में भाग लिया और भूरिश्रवा से मारे गये।

मण्डक–भारत का एक प्राचीन जनपद।

मण्डनमिश्र–एक वेदान्ति पण्डित जिनको आदि शंकराचार्य ने तर्क में पराजित किया।

मण्डल–ऋग्वेद का एक खण्ड।

मण्डलक–सैनिकों की चक्राकार व्यूह-रचना।

मतङ्ग—एक ऋषि (दे: मतंगाश्रम)।

मतङ्गाश्रम–मतङ्ग ऋषि का आश्रम। श्रीराम और लक्ष्मण सीता की खोज में क्रौंचवन को पार कर मतङ्गाश्रम में पहुंचे। वहां कबन्ध का वध हुआ, और उसको मोक्ष मिला। उस आश्रम के फूल सदा ताजे रहते थे और कोई तोड़ता नहीं था। कहा जाता है कि मतङ्ग मुनि के लिए फल मूल लाते समय उनके शिष्यों के शरीर से जो स्वेदकण भूमि पर गिरे थे, वे ही पुष्प बने, इसलिए मुरझाते नहीं। दुन्दुभि नामक असुर से युद्ध कर वालि के प्रहारों से उसके शरीर के रक्तकण ऋष्यमूक पर्वत पर तपस्या करते हुए मतङ्ग मुनि की अञ्जलि में गिरे। मतङ्ग ने वालि को शाप दिया कि ऋष्यमूक पर्वत पर प्रवेश करने पर उसका सिर फट जायगा। इसीलिए वालि से बचकर सुग्रीव अपने मन्त्रियों के साथ इस पहाड़ पर रह सके (दे: वालि)

मति–(१) देवी का नाम (२) दक्ष की पुत्री और धर्मदेव की पत्नी।

मत्स्य–(१) पुराण प्रसिद्ध एक देश। वनवास के समय पाण्डव यहां आये थे यहां के राजा विराट थे (२) महाविष्णु का पहला अवतार (३) चेदी देश का एक राजा।

मत्स्यगन्धी–शन्तनु महाराजा की पत्नी सत्यवती का नाम (दे: सत्यवती)।

मत्स्यपुराण—अठारह पुराणों में से एक। मत्स्यावतार के समय भगवान विष्णु ने सत्यव्रत को जो उपदेश दिये थे उनका संग्रह। ये ही सत्यव्रत अगले मन्वन्तर में श्राद्धदेव नाम से मनु हुए।

मथुरा–यमुना नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो श्रीकृष्ण के जन्म से पुनीत हुआ। पौराणिक काल से ही यह प्रसिद्ध था। मधु नामक असुर ने इसको बनाया था। मधुवंशी राजाओं की राजधानी रहा। यह भारत की सात पुण्य नगरियों में एक है। मधु के पुत्र लवणासुर को मारकर शत्रुघ्न और उनके वंशज यहां राज्य करते रहे। यहां अनेकों हिन्दूक्षेत्र हैं। बौद्धमत का केन्द्र भी रहा था। जैन मतावलम्बी भी इसको पुण्यक्षेत्र मानते हैं।

मथुरानाथ–श्रीकृष्ण।

मदन–(१) कामदेव (२) वसन्त ऋतु (३) एक असुर।

मदनरिपु–शिव।

मदनगोपाल–श्रीकृष्ण।

मदनमोहन-श्रीकृष्ण।

मदनाशिनी–साधकों की लौकिक अहंबुद्धि का नाश करने वाली देवी।

मदयन्ती—(१) राजा कल्माषपाद की पत्नी (दे: कल्माषपाद) (२) एक प्रकार की चमेली।

मदलासा–देवी का नाम।

मदिरा—श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव की पत्नी। इनके नन्द, उपनन्द, कृतक, शूर आदि पुत्र हुए।

मदिराक्ष–विराट राजा का एक भाई।

मदिराक्षी–दुर्गा का विशेषण।

मद्र–भारत एक प्रचीन देश। मद्र राजकुमारी थी पाण्डु की पत्नी। मद्र देश के राजा की

पुत्री थी सावित्री ।

मधु—(१) अमृत (२) अमृत के समान सबको प्रसन्न करने वाले महाविष्णु । (३) भगवान के कर्णमल से निकले दो राक्षसों में से एक (४) मथुरा के पास मधुनामक असुर था जिसने मथुरा नगरी बसायी। इसके पुत्र लवणासुर को मार कर शत्रुघ्न यहां के राजा बने । (४) यदुवंश के राज कृतवीर्य के पुत्र मधु थे। (५) यदुवंश वीतिहोत्र के के एक पुत्र मधु थे। मधुके पुत्र का नाम वृष्णि था। इन तीनों यदु, मधु और वृष्णि से यादववंश चला और उस वंश के लोग यादव माधव, वृष्णि कहलाने लगे। (६) वसन्त ऋतु (७) चैत्र का महीना (८) शहद।

मधुकर—भ्रमर। सूरदास केभ्रमर गीत में प्रेमोत्तम गोपिकायें मधुकर को संबोधित कर अपनी विरह वेदना और तद्‌जन्य उलाहना श्रीकृष्ण के सखा उद्धव के सामने कहती हैं।

मधुछन्द—विश्वामित्र के १०१ पुत्र थे जिनमें ५१ वां पुत्र मधुछन्द था। भृगुवंश के शुनःशेप की रक्षा विश्वामित्र ने की थी और उसको अपना ज्येष्ठ भ्राता मानने को पुत्रों से कहा। बड़े पचास पुत्रों ने इन्कार किया। मधुछन्द और उसके सब छोटे भाई पिता की आज्ञा मान गये, इसलिये वे सब मधुछन्द कहलाने लगे।

मधुत्रय—तीन मीठे पदार्थ—शक्कर, शहद, मिश्री।

मधुपर्क--(१) दही, शहद आदि मिलाकर बना एक स्वादिष्ट पदार्थ जिसको खाने से ताजगी आती है। यह प्रायः विशिष्ठ अतिथि या वधू के पिता के घर आने पर वर को दिया जाता है। (२) गरुड़ का एक पुत्र।

मधुरस्वरा—एक अपसरा।

मधुरिपु—भगवान विष्णु।

मधुलिका—कार्तिकेय की एक अनुचरी।

मधुवन-[१] वृन्दावन के पास का एक वन जहां श्रीकृष्ण और बलराम गोपबालकों के साथ खेला करते थे। [२] मधुवन में बैठकर ध्रुव ने कठिन तपस्या की थी और भगवान ने प्रत्यक्ष होकर वर दिया था। [३] वानर राजा सुग्रीव का प्रिय वन जहां अनेक प्रकार के फल-फूल के पेड़ थे। सीता से मिलकर लौटते समय हनुमान, अंगद की अनुमति से सभी वानरों ने इच्छानुसार फल खाये थे।

मधुवर्ण--सुब्रह्मण्य का एक योद्धा।

मधुविला-[१] एक पुनीत नदी। वृत्रासुर का वध करने से इन्द्र को जो पाप लगा उसके परिहारार्थ इन्द्र ने इस नदी में स्नान किया और पवित्र हो गये। [२] अपने पिता कहोटक के आदेशानुसार अष्टावक्र मुनि ने इस नदी में स्नान किया जिससे उनकी वक्रता दूर हो गई।

मधुसूदन--मधु नामक असुर का वध करने से भगवान का नाम।

मधुस्यन्त—विश्वामित्र के एक पुत्र जो मुनि बन गये।

मधुश्रव--कुरुक्षेत्र का एक पुण्यस्थान।

मध्यमपाण्डव--अर्जुन का विशेषण।

मनसा—[१] कश्यपऋषि की एक पुत्री, नागराज अनन्त की बहन जरत्कारु, मनसा देवी।

मनसिज--कामदेव।

मनस्विनी-- दक्ष की पुत्री और धर्मदेव की पत्नी।

मनु--ब्रह्मा के एक दिन को कल्प कहते हैं। इस एक दिन को चौदह भागों में विभाजित किया गया है और एक-एक विभाग को एक-एक मन्वन्तर कहते हैं। एक-एक मन्वन्तर के अधिपति मनु होते हैं जिनकी प्रजा की वृद्धि के लिए, ब्रह्मा ने सृष्टि की, इस तरह चौदह मनु हैं। वे ये हैं:—स्वायम्भुव मनु, स्वा-

रोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, श्राद्ध देव, [वैवस्वत] सार्वाण, दश सार्वाण ब्रह्म-सावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, ईंद्रसावर्णि।

मनुविद्या—मनु के द्वारा उपासिता विद्यारूपिणी देवी। देवी के प्रसिद्ध उपासक बारह है—मनु, चन्द्र, कुबेर, लोपामुद्रा, मन्मथ अगस्त्य, अग्नि, सूर्य इन्द्र, स्कन्द, शिव, क्रोध भट्टारक इन्होंने श्री विद्या की जो उपासना की उसमें थोड़ा अन्तर है। मनु के द्वारा उपासिता देवी का नाम मनुविद्या है।

मनुस्मृति—मनुष्यों के सहवास के लिये मनु से निर्मित नीतिनियमों का सग्रह। इसमे इन्द्रिय निग्रह के उपाय और प्रधानता, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के नियम, धर्म और आचार, चारों आश्रम वालो के धर्म, विविध प्रकार के विवाह, नीति न्याय की रक्षा तप व्रतानुष्ठान पुनर्जन्म, मोक्ष आदि मनुष्य के जानने योग्य अनेक बातें हैं।

मनोजव—(१) हनुमान्, (२) कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थान (३) अनिल नामक वसु और उनकी पत्नी शिवा का पुत्र (४) विष्णु का नाम, मन की भाँति वेगवाले (५) प्रियव्रत के पुत्र मेधातिथि के पुत्र।

मनोमय कोश—आत्मा को आवृत्त करने वाले पाँच कोशों मे से एक ज्ञानेन्द्रियाँ और मन ही "मैं" और 'मेरा" आदि विकल्पों का हेतु मनोमय कोश है।

मनोरमा—(१) कश्यप ऋषि और प्राधा (दक्षपुत्री) की पुत्री एक देवांगना। (२) कोसल के राजा ध्रुवसन्धि की पुत्री।

मनोवती—महामेरु पर्वत पर स्थित ब्रह्मा की पुरी

मनोहरा—सोम नाम के वसु की पत्नी।

मन्तु—एक मुनि।

मन्त्र—वेदपाठ को अभिमन्त्रित करना, वेदसूक्त।

मन्त्रजल—मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित जल।

मन्त्रद्रुम—चाक्षुष मन्वन्तर के इन्द्र।

मन्त्रपाल—दशरथ महाराजा के आठ मन्त्रियों में से एक।

मन्त्रोपनिषद—उपनिषद दो भागों मे विभक्त है एक मन्त्रोपनिषद जिसके अन्दर संहिता और गीत हैं, दूसरा ब्राह्मणोपनिषद जो ब्राह्मणों से युक्त है और यह बताता है कि अमुक यज्ञ में प्रयोगित मन्त्रों का नियम। ईशावास्य, श्वेताश्वतर, मुण्डकोपनिषद जो शुक्ल और कृष्ण यजुर्वेद और अथर्ववेद के भाग हैं मन्त्रो-पनिषद हैं, बाकी सब ब्राह्मणोपनिषद हैं।

मन्थरा—महाराजा दशरथ की पत्नी कैकेयी की दासी, कुब्जा और कुटिला थी। श्रीरामचन्द्र को युवराज बनाने के लिए अयोध्या में अभि-षेक की पूरी तैयारियाँ हो गईं। देवकार्य सम्पन्न करने के लिए अभिषेक मे विघ्न डालना अनिवार्य था। देवताओं की अभ्यर्थना के अनुसार सरस्वती देवी ने पापिनी दासी मंथरा की मन्दबुद्धि फेर ली। उसने अपनी स्वामिनी के कान झूठी बातों से भरे और दशरथ महा-राजासे धरोहर में रखे दो वर मागने को उत्ते-जित किया जिनसे श्री राम को वनवास और भरत को राज्य मिला। मन्थरा की कुटिल करतूतों का पता लगने पर लक्ष्मण उसको लात मार कर भगाना चाहते थे, लेकिन श्रीराम ने रोक लिया। ननिहाल से लौटने पर ही भरत और शत्रुघ्न को सब समाचार मिलता है। लक्ष्मण के भाई शत्रुघ्न के क्रोध का पारा चढ़ गया, माता पर कुछ वश न था। उसी समय भाँति-भाँति के कपड़ों और आभूषणों से सज कर कूबरी वहां आयी, मानों जलती हुई आग में घी की आहुति पड़ी। उन्होंने दासी के कूबड़ पर एक लात मारी वह चिल्लाती हुई जमीन पर गिर पड़ी, उसका कूबड़ टूट गया, दांत टूटे और मुँह से खून निकला। कैकेयी ने आकर बचाया।

मन्थरा के कारण रामायण की कथा हुई।

मन्दगा–एक नदी।

मन्दर–(१) मेरु पर्वत के चारों ओर स्थित महापर्वतों में से एक-मन्दर, मेरुमन्दर, सुपार्श्व, कुमुद। क्षीरसागर से अमृत निकालने के लिये मथते समय मन्दर पर्वत को मथनी बनायी गयी। (२) विश्वकर्मा की पत्नी जिसका पुत्र नल वानर था जिसने सेतु बन्धन में मुख्य भाग लिया था। (३) एक वेदज्ञ ब्राह्मण।

मन्दाकिनी–(१) गंगा का अपर नाम। केदार पर्वत की श्रेणियों से यह पुण्य नदी निकलती है। (२) आकाश गंगा (३) कुबेर का उद्यान।

मन्दार–इन्द्र के उद्यान का एक श्रेष्ठ वृक्ष।

मन्दोदरी–कश्यप ऋषि और दक्षपुत्री दनु के पुत्र मय के दो पुत्र हुए। पुत्री की अभिलाषा से शिव की तपस्या की। मधुरा नाम की एक देवांगना श्री पार्वती के शाप से मण्डूक का रूप धारण कर उस आश्रम के पास रहती थी। बारह साल के बाद शाप से मुक्त हो कर वह एक सुन्दर कन्या बन गई और शिव के प्रसाद से मय ने उसको अपनी पुत्री के समान पाला। मण्डूक से जन्म होने के कारण उसका नाम मण्डोदरी या मन्दोदरी हो गया। युवती होने पर लंका के विश्रुत राजा रावण के साथ इसका विवाह हुआ। मन्दोदरी अत्यन्त रूपवती, धर्मनिष्ठ, पतिव्रता साध्वी थी। श्रीराम की श्रेष्ठता और दिव्यत्व को जानती थी। पति को कई बार सदुपदेश देकर नीच कर्मों से विरमित करने की कोशिश की थी। उनके अक्षकुमार अतिकाय और मेघनाद नाम के पुत्र हुए। मन्दोदरी पांच प्रसिद्ध पतिव्रताओं में गिनी जाती है–सावित्री, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी।

मन्मथ–कामदेव (दे: कामदेव)।

मन्वन्तर–ब्रह्मा के एक दिन को एक कल्प कहते हैं, उतनी ही बड़ी उनकी रात है। ब्रह्मा के एक दिन में चौदह मनु होते हैं। प्रत्येक मनु के अधिकार काल को मन्वन्तर कहते हैं। इकहत्तर चतुर्युगों से कुछ अधिक काल का एक मन्वन्तर होता है। मानवी वर्ष गणना से एक मन्वन्तर तीस करोड़ सड़सठ लाख बीस हजार वर्ष है (३०,६७,२०,०००)और दिव्य वर्ष गणना के हिसाब से आठ लाख बावन हजार वर्ष से कुछ अधिक काल का है। कृतयुग या सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुगों का एक चतुर्युग है। प्रत्येक मन्वन्तर में धर्म की व्यवस्था और लोक रक्षण के लिये भिन्न भिन्न सप्त ऋषि होते हैं। एक मन्वन्तर की बीत जाने पर जब मनु बदलते हैं। उन्हीं के साथ उस मन्वन्तर के सप्तर्षि, देवता इन्द्र, मनुपुत्र भी बदलते हैं। वर्तमान कल्प के मनुओं आदि के नाम नीचे दिये हैं:–

(१) स्वायम्भुव मनु–इनकी पत्नी शतरूपा थी: प्रियव्रत, उत्तानपाद, आदि पुत्र; मरीचि, अंगिरा, अग्नि, पुलह, ऋतु, पुलस्त्य, वसिष्ठ सप्तर्षि; याम देवगण; भगवान महाविष्णु ने यज्ञ के नाम से धर्म और आकूति के पुत्र होकर अवतार लिया और ये ही उस मन्वतर के इन्द्र थे।

(२) स्वारोचिष मनु–द्युमान, सुषेण, रोचिष्मान आदि पुत्र; रोचक इन्द्र, तोष, प्रतोष, सन्तोष, भद्र, शान्ति, इडस्पति, इध्म, कवि, विभु, स्वह्न, सुदेव-ये तुषित नाम से देवगण थे, स्तम्भ, प्राण, बृहस्पति, अत्रि, दत्तात्रेय, च्यवन, और सौर्वसप्तर्षि, तुषिता और वेदशिरा के पुत्र होकर विभु नाम से भगवान ने जन्म लिया।

(३) उत्तम मनु–प्रियव्रत के पुत्र थे। पवन,

सृञ्जय, यज्ञहोत्र आदि पुत्र, वसिष्ठ के पुत्र प्रमद आदि सप्तर्षि, सत्य, वेदश्रुत, भद्र, देवगण, सत्यजित् इन्द्र थे। धर्म और सूनृता के पुत्र सत्यसेन के नाम से भगवान ने जन्म लेकर यक्षों और राक्षसों का वध किया।

(४) तामसमनु–तीसरे मनु के भाई प्रियव्रत के पुत्र थे। पृथु, ख्याति, नर, केतु, आदि दस पुत्र, सत्यक, हरि, वीर देवगण, त्रिशिख इन्द्र, पृथु, काव्य चैत्र, अग्नि, धनद और पीवर सप्तर्षि थे। इस मन्वन्तर में ऋषि हारेमेधा और उनकी पत्नी हारिणी के पुत्र हरि नाम से भगवान ने जन्म लिया और राजेन्द्र को मोक्ष दिया।

(५) रैवत–तामस मनु के युगल भाई थे। अर्जुन, वलि, विन्ध्य आदि पुत्र, विभु इन्द्र, भूतराय आदि देवगण, हिरण्य-रोम, वेदशिरा, ऊर्ध्ववाहु सुधामा,पर्जन्य और महामुनि सप्तर्षि थे। शुभ्र और वैकुण्ठा के पुत्र वैकुण्ठ नाम से भगवान् ने जन्म लिया और अपनी पत्नी रमा को प्रसन्न करने के लिये वैकुण्ठ धाम बनाया।

(६) चाक्षुप मनु–पुरु पुरुप, सुद्युम्न, आदि पुत्र, मन्यद्रुम, इन्द्र, अप्य आदि देवगण, हविष्मान, विरक, सुमेधा, उत्तम, मधु, अतिनाम, सहिष्णु, सप्तर्षि थे। वैराज और सम्भूति के पुत्र अजित नाम से भगवान ने जन्म लिया और देवासुरों से क्षीर सागर का मन्थन करवा कर अमृत दिया।

(७) वैवस्वत मनु–विवस्वान के पुत्र श्राद्ध-देव। इक्ष्वाकु, नाभग, नभग, दृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, दिष्ठ, करूप, पृषध्र, वसुमान नाम के दस पुत्र, द्वादशादित्य, अष्टवसु, एकादश रुद्र, दस विश्वदेव, उनचास मरुत, दो अश्विन कुमार, तीन ऋभु–ये सात प्रकार के देवगण पुरन्दर इन्द्र, कश्यप, अत्रि, वसिष्ठ, गौतम, विश्वामित्र, जमदग्नि और भरद्वाज सप्तर्षि, इस मन्वन्तर में भगवान कश्यप ऋषि और अदिति के पुत्र वामन के नाम से अवतार लेकर राजा वलि के दर्प का ध्वंस किया और बाद में अनेक वर दिये। इस समय यह सातवाँ मन्वन्तर चल रहा है।

(८) सावर्णि मनु–ये भी विवस्वान के पुत्र हैं। निर्मोक, विरजाक्ष आदि पुत्र, सूतप, विरज, अमृतप्रभ आदि देवगण, विरोचन पुत्र वलि इन्द्र, कल्प भेद और भिन्न-भिन्न पुराणों के अनुसार इन ऋषि, मनुयुग और देवगणों के नामों में कुछ अन्तर दिखाई देता है।

(९) दक्षसावर्णि–वरुण के पुत्र। भूतकेतु, दीप्तकेतु, आदि पुत्र, पार, मरीचिगर्भ, आदि देवगण, अद्भुत इन्द्र, द्युतिमान, सवन, हव्य, वसु मेधातिथि, ज्योतिष्मान, सत्य सप्तर्षि होंगे आयुष्मान और अम्बुधारा के पुत्र ऋषभ नाम से भगवान जन्म लेंगे।

(१०) ब्रह्मसावर्णि–उपश्लोक के पुत्र। भूरिषेण आदि पुत्र, हविष्मान् सुकृति, सत्य, जय आदि सप्तर्षि, सुवसन, विरुद्ध आदि देवगण, शम्भू सइन्द्र, होंगे। विश्वसृक और विषूची के पुत्र विश्वक्सेन से भगवान जन्म लेंगे।

(११) धर्म सावर्णि–सत्यधर्म आदि दस पुत्र, विहंगम, कामगम, निर्वाण रुचि देवगण, वैधृत इन्द्र, व अरुण, हविष्मान, वपुष्मान, अनघ, उरुधि, निश्चर, अग्नितेजा सप्तर्षि होंगे, अर्यक और वैधृता के पुत्र धर्मसेतु के नाम से भगवान् जन्म लेंगे।

(१२) रुद्रसावर्णि–देववान, उपदेव, देव श्रेष्ठ आदि पुत्र, ऋतधामा इन्द्र, हरित आदि देव-गण, तपोमूर्ति, तपस्वी, अग्नीन्ध्रक, आदि सप्तर्षि होंगे। सत्यसहा और सूनृता के पुत्र स्वधामा के नाम से भगवान जन्म लेंगे।

(१३) देवसावर्णि–चित्रसेन, विचित्र आदि पुत्र, सुकर्म, सुत्राम आदि देवगण, दिवस्पति

इन्द्र होंगे । निर्मोक, तत्वदर्शी, निष्कम्प, निरुत्सुख, घृतिमान, सुताप सप्तर्षि, योगेश्वर नाम से भगवान मृहती और देवहोत्र के पुत्र होकर जन्म लेंगे ।

(१४) इन्द्रसावर्णि—उरु, गंभीरबुद्धि आदि पुत्र, हविष्, चाक्षुष देवगण, शुचि इन्द्र, अग्निबाहु, शुचि, सुधा, शुद्र, मगध, अग्निघर मुक्त, अजित सप्तर्षि होंगे । सत्रायण और वितना के पुत्र बृहभ्रानु होकर भगवान जन्म लेंगे ।

ममता—दीर्घतमा और भरद्वाज की माता ।

ममता हन्त्रि—मम, मेरा इस भाव को नष्ट करने वाली देवी ।

मम्मट—संस्कृत के एक आचार्य, 'काव्य प्रकाश' का प्रणेता ।

मय—कश्यप प्रजापति और दक्षपुत्री दनु के पुत्र, दानवों में प्रमुख । ये शिल्प विद्या मे अग्रगण्य थे और देवों और असुरों की सेवा करते थे । ब्रह्मा के वर प्रसाद से अतुल्य शिल्पि बने । मय ने हेम नाम की अपसरा से विवाह किया, मायावी और दुन्दुभि नाम के दो पुत्र हुए । शिव प्रसाद से मन्दोदरी नाम की एक पुत्री प्राप्त हुई(दे:-मन्दोदरी) । पृथु महाराज पृथ्वी को गाय के रूप में दुहते समय किम्पुरुष आदि अतिमानुष लोगों ने मय को बछड़ा बनाकर पृथ्वी से माया, अन्तर्धान आदि अद्भुत कलायें दुह ली । खाण्डव दहन के समय अर्जुन ने अग्नि देव और श्री कृष्ण से मय की रक्षा की । तब से मय अर्जुन के मित्र रहे । प्रत्युपकार में श्रीकृष्ण के आदेश पर मय ने खाण्डवप्रस्थ में पाण्डवों के लिये एक अत्यधिक मनोहर अद्भुतमयी सभा बना कर दी । मय विष्णु भक्त थे । इसलिये दैत्यों और दानवों के क्रोध से बच कर विन्ध्या की पर्वत श्रेणियों के बीच एक गुफा में एक अत्यन्त रमणीय महल बनाकर अपने परिवार सहित रहे । यहीं पर हनुमान, अंगद आदि वानरों ने स्वयंप्रभा को तपस्विनी के वेष में देखा । त्रिपुर मय ने बनाये थे ।

मयूर—(१) एक सुन्दर पक्षी जो कार्तिकेय का वाहन है । (२) एक असुर जिसको कार्तिकेय ने मारा था ।

मयूरवाहन—कार्तिकेय ।

मराली—(१) मादा हंस (२) देवी का विशेषण ।

मरीचि—(१) तेजस्वियों में परम तेजोरूप भगवान विष्णु । (२)ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से जो महान ऋषि थे । स्वायम्भूव मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक थे । कर्दम प्रजापति और मनुपुत्री देवहुति की पुत्री कला से मरीचि का विवाह हुआ और कश्यप और पूर्णिमा नाम से दो विख्यात पुत्र हुए । उनकी पुत्री देवकुल्या भगवान के चरणों को धोकर गंगा नदी बनी । मरीचि के ऊर्णा नाम की पत्नी से छः पुत्र हुए जो शाप ग्रस्त होकर पहले हिरण्यकशिपु के पुत्र असुर हुए, फिर वसुदेव और देवकी के पुत्र होकर जन्मे । उस जन्म में उनको मोक्ष मिला ।

मरीचिगर्भ—नौवें मन्वन्तर का एक देवगण ।

मरीचिमालि—सूर्य ।

मरुत— ये उनचास (४९) वायु देवता हैं । दैत्यों का नाश होने पर दुःखी दिति ने पति की सेवा कर सन्तुष्ट कर इन्द्रहन्ता एक पुत्र को वर रूप में मांगा । कश्यप विवश हो गये थे । दिति से एक साल कठोर व्रत, जिसके नियम पालन करना अत्यन्त दुष्कर था, रखने को कहा । व्रत में थोड़ी सी त्रुटि होने पर व्रत भंग होगा । दिति भद्रा भक्ति से इसका पालन करने लगी । जब एक वर्ष होने में थोड़े ही दिन रह गये, गर्भालस्य के कारण दिति सो गयी । इन्द्र पहले से ही दिति के व्रत के बारे में जानकर एक बालक

का रूप धारण कर दिति की सेवा करते हुए रह रहे थे। अब अवसर पाकर वे दिति गर्भ में घुसे और गर्भस्थ बालक के सात टुकड़े किये एक-एक टुकड़े के फिर से सात-सात टुकड़े किये। जब वे रोने लगे इन्द्र ने सान्त्वना दी, उनको अपना भाई कहा। विष्णु की कृपा से वे उनचास देवता रूप हो गये, असुरत्व चला गया और दिति की कोई हानि नहीं हुई। एक पुत्र की अभिलाषा करने पर उनचास देवतुल्य पुत्रों को देखकर दिति अत्यन्त खुश हुई। एक साल के कठिन व्रत के फल स्वरूप इन्द्र के प्रति जो वैरभाव था वह न रहा। इन्द्र से सब बातें जानकर उनको आशीर्वाद दिया। ये उनचास मरुत इन्द्र के मित्र रहे। (२) इक्ष्वाकु वंश के एक राजा। (३) वायु भगवान्।

मरुतसुत–हनुमान, भीमसेन।

मरुस्तोम–एक यज्ञ जो मरुतों की प्रीति के लिये किया जाता है।

मर्म–शरीर का सजीव प्राणमूलक भाग। कुल १०८ मर्म हैं। मर्मस्थान में कोई चोट लगने से प्राणहानि तक हो सकती है।

मर्यादा–विदेह राजा की पुत्री जिसका विवाह पुरुवंश के राजा देवातिथि से हुआ।

मर्यादा पुरुषोत्तम–श्रीराम का विशेषण।

मलय पर्वत–भारत के दक्षिण में स्थित एक पर्वत श्रृंखला जहाँ चन्दन वृक्ष बहुत होते हैं। इस पर्वत से आने वाली हवा चन्दन के सुगन्ध से सुगन्धित है।

मलयध्वज–पांड्यदेश के एक प्रसिद्ध राजा।

मलयप्रभ–एक प्रसिद्ध राजा जो कुरुक्षेत्र में राज्य करते थे।

मल्लयुद्ध–प्राचीन भारत में मल्लयुद्ध कर शक्ति की परीक्षा की जाती थी।

मल्लिकार्जुन– दक्षिण में श्री शैल नामक पुण्यक्षेत्र जहाँ शिव विराजमान हैं।

मल्लिसायक–कामदेव।

महती–(१) सबसे महत्वपूर्ण देवी (२) नारद मुनि की वीणा।

महत्तत्व–सम्पूर्ण प्रपंच की कारणभूता प्रकृति है। इसी को प्रधान, अविद्या, माया आदि नामों से सूचित करते हैं। मूल प्रकृति रूप कार्य का कारण है महत् तत्व। कालवश परम पुरुष ने सत्व, रज, तम आदि गुणों से युक्त प्रकृति में अपनी चिच्छक्ति को रखा। यही चित् शक्ति है महत् तत्व। सर्व वेदों से प्रकीर्त भगवान की उपलब्धि का स्थान है चित्। शुद्ध तत्व यही वासुदेव मूर्ति यह महत तत्व है। अधिरूप से वर्णित करते समय महत तत्व, अध्यात्म रूप से वही चित्त और उपासना रूप से वही वसुदेव है। महत तत्व (चित्) स्वाभाविक रूप से शुद्ध, निर्मल, विकार रहित, शान्त है। भगवत् शक्ति के कारण विकाराधीन होने पर महत तत्व से अहङ्कार का जन्म होता है।

महम्मद नबी–इस्लाम मत के स्थापक।

महनीया–सर्वपूज्या देवी।

महर्लोक–पृथ्वी के ऊपर के सात लोकों में से जो विराट पुरुष का कण्ठ प्रदेश माना जाता है।

महाकपाल–एक राक्षस जिसने खर और दूषण के साथ पञ्चवटी में श्रीराम और लक्ष्मण पर आक्रमण किया था और उनसे मारा गया।

महाकर्मा—भिन्न अवतारों में नाना प्रकार के महान कर्म करने वाले भगवान।

महाकामेश–परम शिव।

महाकाया–विष्णु, शिव आदि का विशेषण।

महाकाल–शिव, उज्जैन में शिप्रा नदी के पास एक महाकाल क्षेत्र है।

महाकाली–(१) दुर्गा देवी का डरावना रूप (२) उजैन के पीठ की अधिष्ठात्री।

महाकोश–शिव का विशेषण ।

महाक्रतु–महान यज्ञ स्वरूप विष्णु भगवान ।

महाक्ष–विशाल नेत्र वाले भगवान् ।

महागल–गणपति का रूप ।

महातल––तलातल के नीचे महातल है जहाँ अनेक फणवाले कद्रू के पुत्र क्रोधवंश नामक नाग रहते हैं । इनमें कुहक, तक्षक, कालिय, सुषेण आदि प्रमुख हैं । बड़े बलशाली और क्रूर होने पर भी गरुड़ से डरते रहते हैं ।

महातेज–अग्नि, कार्तिकेय आदि का विशेषण ।

महात्मा–जिसकी आत्मा महान हो उसे 'महात्मा' कहते हैं । महान आत्मा वही है जो अपने महान लक्ष्य भगवान् की प्राप्ति के लिए सब प्रकार से भगवान् की ओर लग गया हो ।

महादेव–(१) शिव (२) ज्ञानयोग और ऐश्वर्य आदि महिमाओं से युक्त महाविष्णु ।

महादेवी–पार्वती, चन्द्रमूर्ति भगवान् शिव की रोहिणी नाम की पत्नी ।

महाद्रिधृक––अमृत मंथन और गोरक्षण के समय मन्दराचल और गोवर्धन नामक महान पर्वतों को धारण करने वाले भगवान् विष्णु ।

महानर–शिव का विशेषण ।

महानदी–उत्कल (आधुनिक उड़ीसा) देश की एक नदी ।

महानन्द–एक पुण्य स्थान ।

महानवमी–आश्विन शुक्ला नवमी, इस दिन सरस्वती की पूजा की जाती है ।

महानिद्रा–मृत्यु ।

महापगा–एक पुण्य नदी ।

महापद्म–(१) अष्ट दिग्गजों में से एक (२) एक नगर का नाम ।

महापातक–ब्रह्महत्या आदि महा पाप ।

महापार्श्व–(१) रावण का अनुचर एक असुर (२) कैलाश पर्वत के पास एक पर्वत ।

महाप्रपंच–विश्व का विराट रूप ।

महाप्रलय–प्रकृति के कार्य महत तत्व, अहङ्कार, तन्मात्र आदि तत्तत् कारण रूप प्रकृति में काल गति पाकर लय हो जाते हैं, उस लय को महाप्रलय या प्राकृत कहते हैं । उस समय समस्त अधिवासियों सहित समस्त लोक देव, सन्त, ऋषि आदि स्वयं ब्रह्मा समेत सभी विनाश को प्राप्त हो जाते हैं ।

महाबलि–दे: बलि ।

महाबाहु–(१) विष्णु भगवान् (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

महाभय–अधर्म और निकृति का पुत्र एक राक्षस । इससे भय और मृत्यु नामक दो भाई थे ।

महाभिषक–इक्ष्वाकु वंश के एक राजा ।

महाभीम–राजा शान्तनु का विशेषण ।

महाभूत–त्रिकाल में कभी नष्ट न होने वाले महाभूत स्वरूप ।

महाभोगा–दुर्गा का विशेषण ।

महामख–अर्पित किये हुए यज्ञों को निर्वाण रूप महान् फलदायक बना देने वाले भगवान् विष्णु ।

महामना–(१) सङ्कल्पमात्र से उत्पत्ति, पालन, संहार आदि समस्त लीला करने की शक्ति वाले भगवान् । (२) अंगराज जनमेजय के पुत्र महाशाल के पुत्र । इनके पुत्र उशीनर थे ।

महामाया–ब्रह्मादि देवताओं को भी मोह में डालने वाली देवी । प्राणियों में काम, अभिमान, मिथ्याबोध आदि पैदा कर मोह में डालने वाली भगवान की माया । सांसारिक कारण भूता अविद्या जिससे यह समस्त भौतिक जगत् वास्तविक प्रतीत होता है ।

महामाली–रावण की सेना का एक वीर राक्षस ।

महायन्त्रा––यन्त्रात्मिका देवी । यन्त्र हैं-पूजा चक्र, पद्म चक्र, अमृतघट, मेरु, लिंग आदि । तन्त्रों में स्वतन्त्र, मन्त्रों में श्रीविद्या, यन्त्रों में सिद्ध वज्र श्रेष्ठ हैं ।

महायाग—चौंसठ योगनियों की पूजा युक्त क्रम याग।

महायोगि—(१) निर्विकल्प समाधि को प्राप्त योगि। अष्टांग योग की चरम अवस्था है। (२) विष्णु और शिव का विशेषण।

महारति—(१) महाकाम सुन्दरी (२) ज्ञानियों को इतर विषयों से देवी में अधिक प्रीति है।

महारथ—शास्त्र और शास्त्र विद्या में अत्यन्त निपुण, असाधारण वीर को महारथ कहते हैं जो अकेला ही दस हजार धनुर्धारी योद्धाओं का युद्ध में संचालन करता हो। भीम, अर्जुन विराट, द्रुपद, कुन्ति भोज, पुरुजित, कर्ण, भीष्म, द्रोण, युधमन्यु, अभिमन्यु, कृप, अश्वत्थामा आदि महारथी हैं।

महारूपा—चार महान रूपों से युक्त देवी। पर ब्रह्म के चार महान रूप हैं—पुरुष, व्यक्त, अव्यक्त और काल।

महारौद्र—(२) घटोत्कच का मित्र एक राक्षस जिसको भारत युद्ध में दुर्योधन ने मारा (२) दुर्गा का विशेषण।

महालक्ष्मी—श्री नारायण की शक्ति, विष्णु की पत्नी।

महावराह—भगवान का विशेषण जिन्होंने वराह का अवतार लिया था।

महावाक्य—वेदों में प्रणीत चार महाकाव्य हैं। (१) ब्रह्मज्ञानमनन्दमय ब्रह्म (२) अहं ब्रह्मास्मि (३) तत्वमसि (४) अयमात्मा ब्रह्मा। पहले का अर्थ यह है कि ब्रह्मज्ञान प्रज्ञान स्वरूप और आनन्द स्वरूप हैं। दूसरे का अर्थ मैं ही ब्रह्म हूँ। आत्मा और परमात्मा में अभेद ज्ञान तीसरे का अर्थ वह ही तू है। चौथे का अर्थ है यह आत्मा ब्रह्म है। परमात्मा जीवात्मा रूपेण हृदय कमल में स्थित है।

महाविद्या—आत्मविद्या, ब्रह्म ही आत्मा है।

महाविष्णु—सृष्टि, स्थिति, संहार रूपी तीन मूर्तियों में स्थिति करने वाले भगवान्। विष्णु माने व्यापनशील। महाप्रलय के समय जब प्रपञ्च का नाश होता है, ब्रह्मा भी नहीं रहते कारण जल में एक भगवान् महाविष्णु ही रहते हैं। नार अथवा जल में स्थित होने से उनका नारायण नाम है। अनेक चतुर्युगों के बाद जब सृष्टि करने की इक्षणा वृत्ति उनमें हुई उनके नाभि कमल से एक दिव्य कमल निकला जिसमें से ब्रह्मा की सृष्टि हुई भगवान ने ब्रह्मा को सृष्टि करने की शक्ति प्राप्त करने के लिये तप करने के लिये कहा। अनेकों सत्वसर तप करने के बाद ब्रह्मा ने सृष्टि शुरू की। महाविष्णु वैकुण्ठ में रहते हैं। श्री लक्ष्मी देवी और भूदेवी इनकी पत्नियां है। नागश्रेष्ठ अनन्त इनकी शय्या पक्षिराज गरुड़ वाहन है। नारद तुम्बरु आदि महर्षि और गन्धर्व सदा इनका गुणगान करते रहते हैं। दुष्ट निग्रह और सज्जन परिपालन के लिये भगवान अनेक अवतार लेते हैं जिनमें मुख्य हैं—मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन श्रीराम, बलराम, श्रीकृष्ण, कल्कि आदि। इनके अलावा नरनारायण ऋषि, कपिल वासुदेव, यज्ञ, अत्रिपुत्र दत्तात्रेय, मेरुदेव के पुत्र ऋषभ देव, पृथुमहाराजा, धन्वन्तरि, मोहिनी आदि अंशावतार भी हुए हैं। श्री राम और श्रीकृष्ण के अवतार पूर्णावतार माने जाते हैं। इन दोनों अवतारों को लेकर श्रीमद्वाल्मीकि रामायण और श्री व्यास रचित श्रीमद्भागवत नाम के दो बड़े ग्रंथ लिखे गये। सभी पुराण भगवान के अवतारों और लीलाओं की कथाओं के संग्रह से हैं। इनके हजारों नाम हैं जैसे जनार्दन, चक्रपाणी अच्युत, माधव, ऋषीकेश, दैत्यारि, रावणारि शारङ्गधन्वा आदि जिनमें से किसी एक ही का एकाग्र मन से श्रद्धा और भक्तिपूर्वक जप करने से मनुष्य इस नश्वर संसार को

पार कर सकता है । भगवान की मूर्ति अतीव सुन्दर और मन को मोह लेने वाली है। उनके चारों हाथों में शंख, चक्र गदा और पद्म (पांचजन्य शंख, सुदर्शन चक्र, कौमोदकि गदा) वक्षस्थल पर श्रीवत्स, कौस्तुभमणि, वैजयन्ति माला, तुलसी माला, रत्न जटित किरीट, त्रिपुण्ड, मकर कुण्डल, रत्नजटित सोने की काञ्ची, अंगद; केयूर, पीताम्बर, एक-एक अधिकाधिक शोभा वाला है । भगवान का शार्ङ्गधनुष है, नन्दक तलवार । श्रीलक्ष्मी देवी ने कई बार भगवान के साथ अवतार लिया है। जैसे दक्षिणा, अर्चि, सीता, रुक्मिणी । भगवान अपने भक्तों पर हमेशा कृपा दृष्टि बरसाते रहते हैं ।

महावीर–(१) विष्णु का विशेषण (१) हनुमान (३) जैन मताचार्य (४) स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत का एक पुत्र ।

महावीर्य–जनक वंश के वृहद्रथ के पुत्र । इनके पुत्र सुधृति थे ।

महावीर्या–सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण ।

महाव्याहृति–अत्यन्त गूढ़ शब्द अर्थात् भूः, भुवः स्वः ।

महाशंख–(१) पुराण प्रसिद्ध एक मगर । इसकी शंखिनी नाम की पत्नी से सात पुत्र हुए जो स्वारोचिष मन्वन्तर के मरुत् हुए। (२) भीम के शंख का विशेषण ।

महाशक्ति–(१) चौदह लोकों की रक्षा करने वाली, नानामुख शक्ति युक्त देवी । (२) शिव और कार्तिकेय का विशेषण ।

महाशूर–शूर पद्म नामक असुर जिसका स्कन्द देव ने वध किया ।

महासना–भूमि से लेकर ३६ तत्वों से युक्त देवी।

महासिद्धि–सिद्धियां दो प्रकार की हैं (१) अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा ईशत्व, वशित्व, प्राप्ति, प्रकाश्य (२) रसवाद, शीतोष्ण सहन, अधमोत्तम भेद, सुख दुःख समत्व, कान्तिवल वाहुल्य, विशोक, तपोष्या-, निष्ठा, यथेष्ट घूमना, यत्र तत्र शयन करने की क्षमता ।

महासेन–कार्तिकेय का विशेषण ।

महास्थली–पृथ्वी ।

महास्वन–महाविष्णु, वेदरूप अत्यन्त महान घोष वाले भगवान् ।

महाहय–ययाति के वंशज एक राजा ।

महित–शिव का त्रिशूल ।

महिमा–आठ सिद्धियों में से एक ।

महिला–एक प्रकार का गन्ध द्रव्य ।

महिष–[१] यम का वाहन [२] एक असुर ।

महिषक–एक देश, आधुनिक मैसूर का पौराणिक नाम ।

महिषासुर मर्दिनी–देवी का विशेषण, देवी ने महिषासुर का वध किया था ।

महिष्मती–अंगिरा की पुत्री ।

महिष्मान–हैहय राज वंश के एक राजा जिन्होंने नर्मदा के तट पर माहिष्मति नाम की नगरी बसायी थी ।

मही–[१] भूमि [२] एक नदी का नाम ।

महीधर–पहाड़ ।

महीपुत्र–[१] मङ्गल ग्रह [२] नरकासुर ।

महीन्द्र–विष्णु का विशेषण ।

महीसुर–ब्राह्मण ।

महेन्द्र–[१] कुल पर्वतों में से एक (२] इन्द्र का नाम ।

महेश–शिव ।

महेशी–शिव की पत्नी, पार्वती देवी ।

महेश्वर–शिव ।

महैश्वर्या–ईश्वरत्व, विभूति से युक्त देवी ।

महोदर–[१] गणपति [२] भीमसेन [३] कश्यप और कद्रू का पुत्र एक नाग [४] रावण का एक सेनापति [५] धृतराष्ट्र का एक

पुत्र ।

महौजा–[१] एक क्षत्रिय वंश [२] प्राचीन भारत का एक राजा ।

मा–[१] माता [२] लक्ष्मी देवी ।

मागध–[१] स्तुतिपाठक [२] मगध देश के वासी ।

मागधि–[१] एक नदी [२] हिन्दी की एक बोली ।

माघ—[१] चान्द्रवर्ष के एक महीने का नाम [२] एक नक्षत्र [३] एक सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि जो शिशुपालवध या माघकाव्य लिख कर प्रसिद्ध हुए ।

माणिक्य वाचकर—तमिप देश के एक भक्त कवि । बचपन से ही ये बड़े ज्ञानी और पण्डित थे । कहा जाता है कि इन्होंने शिव को प्रत्यक्ष देखा था ।

माणिक्य मुकुट–लक्षण युक्त माणिक्य से बना देवी का किरीट ।

माणिभद्र–शिव का एक पार्षद ।

माण्डकर्णि–एक ऋषि (दे: पञ्चाप्सरस) ।

माण्डवी–भरत की पत्नी, जनक महाराजा के भाई कुशध्वज की पुत्री । इनके पुष्कर और तक्षक नाम के दो पुत्र हुए ।

माण्डव्य–एक प्रसिद्ध मुनि । एक बार अपने आश्रम में मौन व्रत से बैठे थे । राजकोष से धन की चोरी हो गयी थी । राजदूत इनको चोर समझकर पकड़ ले गये । राजा ने उनको शूली पर चढ़ाने का दण्ड दिया । चोर तो मर गये, लेकिन माण्डव्य नहीं मरे । राजा को सच्ची बात का पता लगने पर बड़ा अफसोस हुआ । कुछ काल के बाद जब मृत्यु हुई तब यम देव के पास गये और उनसे इतना बड़ा दण्ड देने का कारण पूछा । यम ने कहा कि बचपन में मक्खियों को पकड़ कर पिरोने से यह दण्ड मिला । मुनि ने कहा कि बालकपन में अनजाने में जो छोटा पाप किया उसका इतना बड़ा दण्ड देने के कारण यम शूद्रकुल में पैदा होंगे । यम का यही जन्म है विश्रुत विदुर का जन्म ।

मातरिश्वा–[१] एक देवता [२] गरुड़ का पुत्र ।

मातलि–इन्द्र का सारथि । यह शमीक और तपस्विनी का पुत्र था । अन्धकासुर से लड़ने के लिये जाते हुए इन्द्र के रथ के वेग से भूमि हिलने लगी । भूकम्प के समय बाहर पड़ी वस्तुएँ दो हो जाती हैं, इस प्रचलित विश्वास के आधार पर पत्नी की प्रार्थना से ऋषि ने अपने पुत्र को बाहर लिटाया । तब एक और पुत्र हुआ । यह दूसरा बालक इन्द्र का सारथि बना । गन्धर्वों ने अपने तेज से उसको बड़ा किया । इन्द्र ने उसका नाम मातलि रखा । राम-रावण युद्ध के समय श्रीराम की सेवा में इन्द्र ने अपने रथ को शास्त्रों से सुसज्जित कर मातलि सहित भेज दिया ।

मातृतीर्थ–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य तीर्थ ।

माद्रवती–(१) पाण्डु की दूसरी पत्नी । इनके पुत्र नकुल और सहदेव थे । यह माद्र देश की राजकुमारी थी । शल्य की बहन थी । अपुत्र दु:ख से पीड़ित माद्री को कुन्ती ने दुर्वासा से प्राप्त एक मन्त्र का उपदेश दिया । माद्री को अश्विनीकुमारों से दो पुत्र हुए । जब पाण्डु की मृत्यु हुई माद्री अपने पुत्रों को कुन्ती को सौंपकर सती हुई । [२] परीक्षित की पत्नी ।

माधव–[१] श्रीकृष्ण [२] विद्या के स्वामी भगवान् [३] यादव वंश के राजा मधु के नाम से यादवों का माधव नाम पड़ा । [४] वैशाख मास [५] इन्द्र का नाम ।

माधवी–[१] श्रीकृष्ण की बहन, अर्जुन की पत्नी, अभिमन्यु की माता सुभद्रा का अपर नाम । (दे: सुभद्रा) [२] महाराजा ययाति की पुत्री ।

माध्वी–मधु से निकला एक प्रकार का मद्य ।

मानव–मनु के वंश में उत्पन्न; मनुष्य ।

मानवी–[१] मनुष्य स्त्री [२] प्राचीन भारत की एक पुण्य नदी ।

मानसद्वार–मानसरोवर के द्वार पर का एक पर्वत जिससे होकर सरोवर का मार्ग है ।

मानस पुत्र–ब्रह्मा ने सृष्टि के लिये अपने मन से पुत्रों को जन्म दिया जो प्रजापति कहलाते है । ये हैं–दक्ष, पुलह, पुलस्त्य, अत्रि, मरीचि, अंगिरा, वसिष्ठ, क्रतु और भृगु ।

मानसरोवर–हिमालय की चोटी पर स्थित एक पुनीत सरोवर । यहाँ पर अनेक ऋषि मुनि और सिद्ध लोग तपस्या करते हैं । इस सरोवर में बहुत से कमल और राजहंस रहते है । इसमें स्नान करने से मोक्ष मिलता है ।

मान्त्रिक–यन्त्र-तन्त्र करने वाला ।

मान्धाता–इक्ष्वाकु वंश के राजा युवनाश्व के पुत्र । युवनाश्व की अनेक पत्नियाँ होने पर भी वे बहुत काल तक निस्सन्तान रहे । वे विरक्त से हो गये और वन चले गये । वहाँ के ऋषियों ने उनके नाम पर सन्तानार्थ इन्द्र को प्रसन्न करने के लिये एक यज्ञ किया । रात को बहुत प्यास लगने पर राजा यज्ञ-कुटी में गये और भूल से महारानी के लिये रखा हुआ मन्त्र जल पी गये । दूसरे दिन मन्त्र जल का कलश खाली देखकर पता लगाने पर ऋषियों को मालूम हो गया कि राजा ने मन्त्रजल पिया है जिससे पुत्र लाभ होगा । दैव की विधि जानकर उन्होंने भगवान की शरण ली । नौ महीने के बाद भगवान की कृपा से युवनाश्व के उदर का दायाँ भाग फट कर एक पुत्र जन्मा, राजा की कोई हानि भी नहीं हुई । पुत्र को देखकर राजा को चिन्ता हुई कि इसे दूध कौन पिलायेगा तब इन्द्र ने अपनी तर्जनी अमृत में डुबोकर उस बच्चे को पिलाया और कहा कि "मांधाता वत्स" । इसलिये बच्चे का नाम मांधाता हो गया और आगे चलकर सारी पृथ्वी के चक्रवर्ति बने । इन्द्र ने उनका नाम त्रसदस्यु रखा, रावणादि राक्षस उनसे भय खाते थे । राजा शशबिन्दु की पुत्री सर्वलक्षण सम्पन्ना बिन्दुमती से उनके तीन पुत्र पुरुकुत्स, अम्बरीष, और मुचकुन्द हुए । इनकी पचास बहिनों ने सौभरि से विवाह किया ।

मामाङ्क–केरल में तिरुनावाया क्षेत्र के पास की विशाल भूमि में मनाया जानेवाला एक उत्सव । कहा जाता है कि संस्कृत के महा-मघ का अंश हो कर मामाग बना है । इसमें केरल के राजाओं का तिलक महत्सम्मेलन, व्यवसाय प्रदर्शन, कला, संगीत आदि का प्रदर्शन होता है । प्राचीन काल में यह उत्सव धूमधाम से मनाया जाता था । अब तो राजा ही नहीं रहे, इसलिये उत्सव भी बन्द हो गया है ।

माया–जो अव्यक्त नामवाली त्रिगुणात्मिका अनादि अविद्या भगवान् की पराशक्ति है वही माया है । इससे यह सारा जगत उत्पन्न हुआ है । जो नहीं है वह है ऐसा भ्रम मन में उत्पन्न कराती है । वह न सत् है, न असत् न उभय रूप (सदसत) है, न भिन्न है, न अभिन्न और न उभयरूप [भिन्न-भिन्न] है; न यह अत्यन्त अद्भुत और अनिर्वचनीय रूपा है । रज्जु के ज्ञान से सर्पभ्रम के समान यह अद्वितीय शुद्धब्रह्म के ज्ञान से ही नष्ट होने वाली है । प्रपञ्च की कारण भूता यही माया प्रकृति है । सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों की विषमावस्था में प्रकृति से निर्विधाकार प्रपञ्च की सृष्टि होती है । भगवान स्ववीक्षण से जब इस माया की [प्रकृति की] साम्यावस्था को क्षुब्ध करने

हैं तब सृष्टि होती है। प्रलय काल में य गुण विषमावस्था को त्याग कर साम्यावस्था को प्राप्त करते हैं। तब माया ब्रह्म में, भगवान में, लीन हो जाती है।

मायादेवी—कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन की पत्नी, गौतमबुद्ध की मां।

मायापुरि—असुरों का एक नगर।

मायामाणवक—माया बालक भगवान विष्णु।

मायामृग—सीता का अपहरण करने के लिये रावण की सहायता करने के लिये रावण के कहने पर वह सुनहले रंग के मृग के रूप में श्रीराम के आश्रम में गया। वहां से श्रीराम को बहुत दूर ले गया। श्रीराम के बाण से मारा गया।

मायावती—कामदेव की पत्नी रती मायावती के नाम से दासी के रूप में अपने पति के पुनर्जन्म की प्रतीक्षा करती हुई शम्बरासुर के गृह में रहती थी।

मायावाद—भ्राति का सिद्धांत जिसके अनुसार सारी सृष्टि मिथ्या समझी जाती है।

मायावी—दानव शिल्पि मय और हेमा नाम की अप्सरा का पुत्र। यह असुर अतुल बलवान और पराक्रमशाली था। इसी ने वानर राजा वालि को ललकारा था और वालि से मारा गया। (दे: वालि)

मायाशिव—जलन्धर नामक एक असुर ने शिव जी से युद्ध में हारकर श्रीपार्वती का मान भंग करने के लिये भगवान का रूप धारण कर लिया था। लेकिन उसकी बातों और चेष्टाओं से देवी को शंका हुई और उससे बच गई।

मायासीता—सीतापहरण के पहले भगवान श्री रामचन्द्र ने सीता देवी से कहा कि रावण तुम्हारा अपहरण करेगा, इसलिये तुम अग्नि में छिपी रहना, और अपने स्थान पर माया सीता को छोड़ रखना। सीता ने ऐसा किया। लक्ष्मण भी यह जान नहीं सके कि रावण ने माया सीता का ही अपहरण किया। रावण के वध के बाद असली सीता को पुनः प्राप्त करने के लिये ही श्रीराम ने माया सीता से अग्नि में प्रवेश करने को कहा। अग्नि भगवान ने तब असली सीता को श्री राम को सौंप दिया।

मार—कामदेव।

माररिपु—शिव का विशेषण।

मारिष—प्राचीन भारत का एक जनपद।

मरिषा—कण्डु मुनि और प्रम्लोचा नाम की अप्सरा की पुत्री जिसका पालन-पोषण वृक्षों ने किया था और जिसके साथ प्रचेतसों ने विवाह किया था। इनके पुत्र थे दक्ष। (२) एक प्रसिद्ध नदी। (३) यादव वंश के शूरसेन की पत्नी और वसुदेव की मां। इनके दस पुत्र और पांच पुत्रियां हुईं।

मारीच—(१) ताटका नामक राक्षसी और सुन्द नामक राक्षस का पुत्र। रावण का मामा था। यह पूर्व जन्म में महाविष्णु का एक पार्षद था और भगवान के शाप से राक्षस योनि में जन्मा। भगवान ने वर दिया कि रामबाण से मोक्ष मिलेगा। मारीच का भाई सुबाहु था। ये दोनों वन प्रदेशों में घूम कर ऋषि मुनियों और तपस्वियों की यज्ञ-पूजा आदि में बाधा डालते थे। विश्वामित्र मुनि अयोध्या से बालक राम और लक्ष्मण को ले आये। इन बालकों ने राक्षसों को मारा। राम ने एक ही बाण से मारीच को सौ योजन दूर फेंक दिया। वहीं राम के भय से रहने लगा। राम के भय से सोता जागता, उठता, बैठता, 'राम' का ही ध्यान निरन्तर करता रहा। रावण की आज्ञा से, असुर के हाथ की अपेक्षा श्रीराम के हाथ से मृत्यु अच्छी समझ कर, स्वर्णमृग का रूप धारण कर श्रीराम को सीता से दूर भगा ले गया जिससे कि रावण को सीता का अपहरण करने का अवसर मिला।

मायामृग बनकर श्रीराम बाण से मर गया और विष्णु पद पाया । (२) मरीच ऋषि के पुत्र होने से कश्यप को मारीच कहते हैं ।

मारुत–(१) वायु का देवता (२) दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश ।

मारुतपुत्र–हनुमान और भीमसेन का विशेषण ।

मारुति–हनुमान, भीमसेन ।

मार्कण्डेय--मृकण्डु, मुनि के पुत्र एक मुनि, बड़े तपस्वी, ज्ञानी और भक्त थे । दीर्घकाल तक मृकण्डु का कोई पुत्र न था । शिव की तपस्या करने से सर्वगुण सम्पन्न एक पुत्र जन्मा लेकिन अल्पायु वाला । सोलह साल की ही मार्कण्डेय की आयु थी । माता-पिता को अत्यन्त दुखी देख कर मार्कण्डेय ने कारण पूछा । सारी बातों का पता लगाने पर मार्कण्डेय शिव मन्दिर में व्रतानुष्ठान करने लगे । मृत्यु के समय पर स्वयं यम लेने आये । लेकिन शिव ने प्रत्यक्ष होकर अपने भक्त की रक्षा की, इसलिये शिव का नाम मृत्युञ्जय हो गया । मार्कण्डेय हिमालय में पुष्पभद्रा नदी के किनारे तपस्या करते थे । भगवान् विष्णु सन्तुष्ट हो गये और वर मांगने को कहा । मुनि ने भगवान की माया देखने की इच्छा प्रकट की । छः मन्वन्तर बीत गये । एक दिन सन्ध्या समय मुनि नदी के तट पर बैठे थे । प्रलयकालीन आंधी चलने लगी, समस्त लोक समुद्र में डूब गये । मार्कंडेण्य बहुत साल तक उस प्रलय जल में तैरते कष्ट भोगते रहे । तब प्रलय जल की लहरों के बीच एक वट पत्र पर एक अति कोमल, उज्ज्वल कान्ति वाले, श्यामलाङ्ग बालक को पैर के अंगूठे को मुंह में दबाये लेटे हुए देखा । बालक के पास जाने पर उनके श्वास की शक्ति से मुनि ने उनके उदर में प्रवेश किया । वहां त्रैलोक्य को देखा, कुछ क्षणों के बाद श्वास की गति से बाहर आये । पहले की तरह उस एकार्ण में वट पत्रशायी बालक को देखा । भगवान की कृपा कटाक्ष से मुनि के कष्ट दूर हो गये । भगवान का आलिंगन करने के लिये पास जाने पर शिशु अप्रत्यक्ष हुए और अपने को पूर्ववत् पुष्प भद्रा तट पर देखा । भगवान की माया का अनुभव हो गया और उनकी स्तुति करने लगे । श्री पार्वती और श्री परमेश्वर ने आशीर्वाद दिया कि वे त्रिकालदर्शी, ज्ञानी बनेंगे । (२) एक प्रसिद्ध पुण्य स्थल जो काशी से उत्तर दिशा में गंगा और गोमती नदियों के संगम पर है ।

मार्कण्डेय पुराण–अष्टादश पुराणों में से एक । इसमें धर्माधर्म निरूपण किया गया है ।

मार्गशीर्ष–चान्द्र वर्ष का एक महीना । महाभारत काल में महीनों की गणना मार्गशीर्ष से ही आरम्भ होती थी । अतः यह सब मासों में प्रथम मास है । इस मास में किए गये व्रत-उपवासों का शास्त्रों में महान् फल बतलाया गया है । नये अन्न के यज्ञ का इसी महीने में विधान है । वाल्मीकि रामायण में इसे संवत्सर का भूषण बताया है, भगवान ने गीता में इसको अपना स्वरूप बतलाया है । पुंसवन व्रत का आरम्भ इसी महीने के शुक्लपक्ष में होता है ।

मार्तण्ड––इस ब्रह्माण्ड के मध्य में भूमि और अन्तरिक्ष के बीच में सूर्य स्थित है । सूर्य के मध्य बिन्दु और अण्डगोल के बीच पचीस करोड़ योजना दूरी है । इस निर्जीव अण्ड के बीच प्रज्वलित होने से सूर्य का मार्तण्ड नाम पड़ा । इस हिरण्मय अण्ड के बीच जन्म होने से हिरण्यगर्भ भी कहलाते हैं ।

मालव–एक देश का नाम । मध्य भारत का वर्तमान मालवा देश ।

मालवा–एक पुण्य नदी ।

मालवी–माद्रदेश के राजा अश्वपति की पत्नि,

सती सावित्री की माता, यम के सावित्री को दिये वर से इनके सौ पुत्र हुए जो मालव कहलाते थे।

मालि–एक वीर राक्षस। सुकेश नामक राक्षस और मणिमय नामक गन्धर्व की पुत्री देववती के तीन पुत्र थे मालि, सुमालि और माल्यवान। बचपन में तीनों ने तपस्या कर ब्रह्मा से वर प्राप्त कर लिया कि वे शत्रुनाशक, अमर बने। देवशिल्प विश्वकर्मा के आदेशानुसार वे दक्षिण समुद्र में त्रिकुटाचल पर स्थित, सुमनोहर, सुवर्णमय लङ्का नामक नगर में रहने लगे। नर्मदा नाम की गन्धर्व स्त्री की पुत्रियों से विवाह किया। मालि की पत्नी वसुधा, सुमालि की केतुमती और माल्यवान् की सुन्दरी। मालि और वसुधा के पुत्र अनिल अनल, हर, सम्पाति। भगवान विष्णु के चक्रायुध ने मालि की मृत्यु हुई।

मालिनी–(१) कण्वाश्रम के पास की एक पुण्य नदी (२) एक राक्षस कन्या जिनको कुबेर ने अपने पिता की परिचर्या के लिये रखा था। (३) दुर्गा का नाम, ५१ अक्षरों की अभिमानिनी देवी (४) सात वर्ष की कन्या (५) चम्पा नगरी का नाम (६) श्री पार्वती की एक सखी।

माल्यवान्–(१) सुकेश और देववती की पुत्री। इनकी पत्नी गन्धर्व कन्या सुन्दरी से कैकेयी नाम की पुत्री हुई जो विश्रवा की पत्नी और राक्षसराज रावण की माँ बनी। रावण जब राक्षसो का राजा बना, रावण पाताल से लका मे आकर रहने लगा। (२) इलाव्रत का एक पर्वत।

मास–महीना।

मारिष–इन्द्र का विशेषण।

माहिष्मति––नर्मदा के तीर पर स्थित एक प्राचीन नगर कार्तवीरार्जुन की राजधानी थी।

माहिष्मान–यदुवंश के साहं के पुत्र। इनका पुत्र भद्रसेन था।

माहिष्य–क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न एक संकर जाति।

माहेश्वर–(१) एक पुण्य स्थान (२) शिव की पूजा करने वाला।

माहेश्वरी–लोकैकनाथा देवी।

मित्र-कश्यप प्रजापति और अदिति के पुत्र थे मित्र और वरुण। ये द्वादशादित्यों मे से थे। ये दोनों साथ रहते थे, इसलिए हर जगह दोनों को एक साथ बताया जाता है। इनके पुत्र अगस्त्य और वशिष्ट थे।

मित्रदेव–त्रिगर्त राजा सुशर्मा का भाई, अर्जुन से मारा गया।

मित्ररूपिणी–देवी का विशेषण, द्वादशादित्यों से युक्ता।

मित्रविन्द–एक विश्वदेव।

मित्रविन्दा––अवन्ति देश की राजकुमारी। श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव की बहन और शूरसेन की पुत्री राजाधिदेवी की पुत्री थी। मित्रविन्दा के दो भाई विन्दु और अनुविन्द अवन्ति के राजा थे। ये श्रीकृष्ण के वैरी थे। और नहीं चाहते थे कि बहन का विवाह श्रीकृष्ण से हो। अपने में अनुरक्त मित्रविन्दा के स्वयम्बर मे भगवान् ने उस कन्या का हरण कर लिया।

मित्रसह–सूर्यवंश के एक राजा जिनका नाम कल्मापपाद था।

मित्रेयु–एक सोमवंशी राजा। ये दिवोदास के पुत्र और च्यवन के पिता थे।

मिथिला–प्राचीन भारत का एक सुप्रसिद्ध देश, दूसरा नाम तिरहुत। सुप्रसिद्ध निमि चक्रवर्ति यहां राज्य करते थे। उनके शरीर के मन्थन से मिथि नामक राजकुमार पैदा हुए। मिथि से उस देश का नाम मिथिला हुआ। श्रीराम की पत्नी सीता देवी मिथिला की राजकुमारी थी इसलिए उनका नाम मैथिली भी था। मिथिला नरेश बहुलाश्व और श्रुतदेव

नाम के ब्राह्मण श्रीकृष्ण के बड़े भक्त थे। (दे: निमि, विदेह, जनक)।

मिथ्या जगत्–जगत् के बारे में भिन्न-भिन्न मत हैं। अद्वैतवाद के अनुसार जगत् नहीं। जगत है, लेकिन सत्य नहीं मिथ्या है, यह है विशिष्टाद्वैतवाद का मत। ब्रह्म के समान जगत भी सत्य है ऐसा द्वैत मानता है। ब्रह्म ही जगत है, तान्त्रिक लोगों का यही मत है, लेकिन जगत नित्य नहीं है। सांख्ययोगी प्रकृति और पुरुष को स्वीकार करते है, लेकिन जगत का कारण भूत प्रकृति चैतन्य शून्य है।

मिश्रकेशी–कश्यप प्रजापति और दक्षपुत्री प्राधा की पुत्री एक अप्सरा। महाराजा पुरु के पुत्र रौद्राश्व से इसका विवाह हुआ और दस वीर पुत्र हुए।

मीनकेतन–कामदेव।

मीमांसा-भारत के मुख्य छ: दर्शनों में से एक। यह दो भागों में विभक्त है–जैमिनि द्वारा प्रवर्तित पूर्व मीमांसा और बादरायण के नाम से प्रसिद्ध उत्तर मीमांसा या ब्रह्म मीमांसा। पूर्व मीमांसा मुख्यत: वेद के कर्मकाण्ड परक् मंत्रों की व्याख्या तथा वेद के मूलपाठ के संदिग्ध अंशों का निर्णय करता है। उत्तर मीमांसा मुख्यत: परमात्मा की स्थिति के विषय में विचार करता है। इसलिए पूर्व मीमांसा को सिर्फ 'मीमांसा' और उत्तर मीमांसा को 'वेदान्त' के नाम से पुकारते हैं।

मीरा–श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त जो राजमहल के भोग विलासों को छोड़कर योगिनी बनी और श्रीकृष्ण के प्रेम में पागल सी हो गई थी। भक्तिरस पूर्ण इनके कीर्तन और कवितायें हिन्दी साहित्य के अमूल्य रत्न है।

मुकुन्द–(१) विष्णु भगवान या श्रीकृष्ण का नाम। भक्तों का अज्ञान दूर कर विज्ञान प्रदान करने वाले, मुक्तिदायक भगवान्। (२) कुबेर की नौ निधियों में से एक।

मुक्त–जो सांसारिक जीवन के बन्धनों से, जन्म-मरण से मुक्ति पा चुका हो, विषय वासनाओं में आसक्ति को त्याग कर भगवत् भक्ति के द्वारा जिसने मोक्ष पा लिया है। जीव एक ही है, वह व्यवहार के लिए भगवान के अंश रूप में कल्पित हुआ है। वस्तुत: भगवान का ही रूप है। आत्मज्ञान से सम्पन्न होने पर उसे मुक्त कहते है, और आत्म का ज्ञान न होने से बद्ध।

मुक्ति–जन्म मरण से आत्मा का मोक्ष।

मुक्तिक्षेत्र–वाराणसी का विशेषण।

मुक्तिमार्ग–मोक्ष मार्ग। कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग या सन्यास या किसी भी मार्ग से मनुष्य सांसारिक बन्धन से मुक्ति पा सकता है।

मुक्तिनिलया—सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, साष्टित्व, सायुज्य पांच प्रकार की मुक्तियों का निलय देवी।

मुखर–एक सांप।

मुख्या–सबसे मुख्य प्रधान देवी।

मुग्धा–देवों का विशेषण, अति सौन्दर्यवती।

मुचुकुन्द–इक्ष्वाकु कुल जात मान्धाता के महान पुत्र जो सुप्रसिद्ध, ब्रह्मण्य, सत्यसंघ थे, असुरों से दीर्घकाल तक देवताओं की रक्षा करते रहे। कार्तिकेय के जन्म के बाद देवों ने वर दिया कि भगवान आपको मोक्ष देंगे। दीर्घकाल की निद्रा से वशीभूत मुचुकुन्द महाराजा एक पर्वतीय गुफा में सोते रहे। देवों ने वर दिया था कि जो कोई उनकी निद्रा में विघ्न डालेगा, वह तुरन्त राख हो जायगा। द्वारका के पास यह गुफा थी। श्रीकृष्ण का पीछा करता हुआ काल यवन इस गुफा में आया और सोते हुए व्यक्ति को श्रीकृष्ण समझ कर उसने राजा पर लात मारी। राजा की आँखें खुलते ही वह राख हो गया। श्रीकृष्ण ने आकर अपना स्वरूप दिखाया

और मुचुकुन्द को मोक्ष दिया।

मुञ्ज–(१) एक प्रकार की घास जिससे ब्रह्मचारी की मेखला बनती है। (२) प्राचीन ऋषि (३) हिमालय के पास एक पर्वत (४) धारापति राजा मुञ्ज।

मुञ्जकेशि–शिव और विष्णु का विशेषण।

मुञ्जवट–(१) गंगा के किनारे सर्व पापहारि एक तीर्थ। (२) कुरुक्षेत्र के पास एक तीर्थ।

मुण्ड–एक असुर (दे:–चण्डमुण्ड)।

मुण्डन–सोलह संस्कारों में से एक।

मुद्रा–(१) 'कथाकलि' में नट गायकों के गीतों मे जो बात कही जाती है उनके स्पष्टीकरण के लिए हाथ, मुंह, आंखें, भौहे ओठ आदि अवयवों से इशारा करता है। इसको मुद्रा कहते हैं। इन मुद्राओं को जानने पर 'कथाकलि' के गीत सुनकर उस कला का पूरा पूरा आस्वादन हो सकता है। (२) मन्त्रोचारण के समय मान्त्रिक हाथों से मन्त्रों के अनुसार खास तरह के इशारे करता है जिनको मुद्रा कहते हैं।

मुग्दर-हथौड़े के समान एक आयुध।

मुग्दल–(१) एक महान ऋषि जिन्होंने उच्च वृत्ति से जीवन विता कर मोक्ष पाया था (२) एक प्राचीन देश (३) भरतवंश के भर्म्याश्व के एक पुत्र जिनके पुत्र मौदग्ल कहलाते थे।

मुनि–(१) मननशील को कहते हैं। जो पुरुष ध्यान काल की भांति व्यवहार काल में भी, परमात्मा की सर्वव्यापकता का दृढ़ विश्वास होने के कारण सदा परमात्मा का मनन करता रहता है, वह मुनि है। (२) कश्यप ऋषि की पत्नी, यक्षों की मां, गन्धर्व भी इनके पुत्र थे। (३) पूरुवंश के राजा कुरु का एक पुत्र।

मुनित्रय—(१) पाणिनी, कात्यायन और पतञ्जलि।

मुनिदश–भारत।

मुनिपुङ्गव–महान ऋषि।

मुमुक्षा–मुक्ति पाने की इच्छा।

मुमुक्षु–अहङ्कार से लेकर देह पर्यन्त जितने अज्ञानकल्पित वन्धन है उनको अपने वास्तविक स्वरूप के ज्ञान (परमात्मा के ज्ञान) द्वारा त्यागने की इच्छा रखने वाला। मुमुक्षुता-यह इच्छा मन्द या मध्यम हो तो भी वैराग्य, शमादि से वढ़कर फल उत्पन्न करती है।

मुमु‍ु–एक प्राचीन ऋषि।

मुरज–एक प्रकार का ढोल य मृदंग।

मुरजा–कुवेर की पत्नी।

मुरला–एक नदी।

मुरली–वाँसुरी, वंशी, श्रीकृष्ण की प्रिय वस्तु।

मुरलीधर–श्रीकृष्ण।

मुरारि–मुर नामक असुर का वध करने वाले श्रीकृष्ण।

मुरासुर–कश्यपि ऋषि और दनु का पुत्र एक असुर, यह वड़ा प्रतापि युद्ध वीर, ब्रह्मा के वर वल से मदोन्मत्त असुर था। यह नरकासुर की राजधानी प्राग्योतिष का पहरेदार था, उसकी सीमा पर अनेकों पाश बांध कर पड़ा था। भगवान विष्ण श्रीकृष्ण का अवतार लेकर जब नरकासुर से युद्ध करने गये, पहले मुरासुर से भिड़ गये। श्रीकृष्ण ने पाशों को काट डाला। खाई में पडा पांच सिरों वाला मुर पानी से कालाग्नि के समान त्रिसूल लेकर वाहर आया। घोर युद्ध हुआ जिसमें भगवान ने चक्रायुध से उसका संहार किया।

मुष्टिका—कंश का एक अनुचर एक प्रसिद्ध मल्ल। मल्ल युद्ध में वलराम ने इसको मारा।

मुसल–गदा, वलराम का आयुध।

मुसलायुध–वलराम का विशेषण।

मुसलि—बलराम का विशेषण।

मुहरम—मुसलमानों का एक त्योहार। इस्लाम मत के हिजरा नामक वर्ष का एक दिन। इस महीने की दस तारीख इनके लिए मुख्य है।

मुहूर्त—समय का माप, ४८ मिनटों का समय ।

मूक—एक असुर। शिव जी को तुष्ट कर पाशु पतास्त्र पाने के लिए अर्जुन वन में घोर तपस्या कर रहे थे, उनकी कठिन तपस्या भंग करने के लिए दुर्योधन से प्रेरित मूका-सुर एक सुअर का रूप धारण कर आया। अर्जुन ने उस पर एक अस्त्र चलाया। उसी समय एक किरात द्वारा चलाया हुआ अस्त्र भी उस पर लगा। किसका अस्त्र पहले लगा इस पर वाद-विवाद हुआ। भगवान शिव ने किरात का वेष धारण कर जान बूझ कर सुअर पर अस्त्र चलाया था। भक्त की शक्ति और युद्ध कुशलता देखना भगवान चाहते थे। दोनों में भयङ्कर युद्ध हुआ। किरात के साथ किराती के रूप में श्री पार्वती भी थी। अर्जुन से सन्तुष्ट होकर भगवान ने उनको पाशुपतास्त्र दिया।

मूकाम्बि—(१) केरल का एक प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र था। आजकल यह कन्नड़ प्रान्त में गोकर्ण के पास है। यहाँ श्री शङ्कराचार्य के द्वारा प्रति-ष्ठित देवी का मुख्य और प्रसिद्ध एक मन्दिर है। यह विश्वास है कि यहां नैवेद्य त्रिमधुर खाने से मूढ़ भी विद्वान बनता है। (२) मूकाम्बि में प्रतिष्ठित देवी का नाम।

मूर्त—भगवान के दो रूप है मूर्त और अमूर्त। सगुणोपासक विशेषणों से युक्त मूर्त रूप की आराधना करते हैं और निर्गुणोपासक भग-वान के निर्विकार, निर्गुण, निराकार पर-ब्रह्म की।

मूर्ति—कश्यप प्रजापति की पत्नी और दक्ष की पुत्री। इनके पुत्र महान ऋषि नर-नारायण थे जो महाविष्णु के अंशावतार माने जाते हैं (दे: नारायण)।

मूलप्रकृति—सब चराचर जगत की भूता देवी (दे: प्रकृति)।

मूलाधाराब्ज—गुद और लिंग के बीच में चार दलों का एक आधार पद्म है। यह सुषुम्ना का मूल और कुण्डलनि का आधार है।

मूलस्थान—(१) परमात्मा (२) क्षेत्रों में जहाँ भगवान या देवी की प्रतिमा या विग्रह रहता है उसको मूल स्थान कहते हैं।

मूषिक—गणेश जी का वाहन।

मृकण्डु—भृगु महर्षि के पुत्र, विधाता और महा-मेरु की पुत्री नियति के पुत्र एक ज्ञानी तप-स्वी। इनके पुत्र थे मार्कण्डेय ऋषि।

मृगी—कश्यप प्रजापति और दक्ष पुत्री क्रोध-वशा की दस पुत्रियों में से एक थी मृगी। मृगी की सन्तान है मृग।

मृगमन्दा—कश्यप और क्रोधवशा की एक पुत्री।

मृगमन्द—हाथियों की एक श्रेणी।

मृगव्याध—शिव का विशेषण। परशुराम ने विद्यालाभ के लिए शिवजी की कठिन तपस्या की। एक मृगव्याध के रूप में आकर भग-वान ने भक्त की युद्ध प्रवीणता की कई तरह से परीक्षा ली। अन्त में सन्तुष्ट होकर भग-वान ने परशुराम को अस्त्र विद्या प्रदान की।

मृगशीर्ष—(१) एक महीना (२) एक नक्षत्र जो तीन तारों का झुण्ड है।

मृगाक्षी—हरिण की जैसी सुन्दर आँखों वाली, देवी का विशेषण।

मृड—सुख सन्तोष को प्रदान करने वाले परम शिव, प्रपञ्च के कर्ता और सत्वगुण प्रधान शिव।

मृडप्रिया—शिव की पत्नी।

मृडानी—शिव की पत्नी।

मृणाल—कोमल तन्तु।

मृत—दे: प्रमृत।

मृतसंजीवनी—(१) एक अमोघ औषधि जिससे मृत्यु ग्रस्त को पुनः जीवन दिया जाता है। लक्ष्मण को मेघनाद की शक्ति लगने पर यह दी गई थी (२) एक मन्त्र जिससे मृतकों को जीवन दिया जाता था। असुर गुरु शुक्राचार्य इस मन्त्र से मृत असुरों और दैत्यों को जिलाते थे। इनको सीखने के लिए वशिष्ट पुत्र शुक्राचार्य के शिष्य बनकर उनके पास रहे।

मृत्तिका—ताजी मिट्टी या एक प्रकार की गन्धयुक्त मिट्टी जिससे देव विग्रह बनाया जाता है।

मृत्यु—(१) मरण की देवी। अधर्म हिंसा के वंश में कलि और दुरुक्ति की सन्तान है भय और मृत्यु। यह सर्वभूत संहारि है। इसकी अतुल्य शक्ति है और कोई भी जीव जन्तु इसके चंगुल में नहीं बच सकते हैं। भय और मृत्यु की सन्तान है निरय और यातना (२) यम।

मृत्युपाश—यम का फन्दा।

मृत्युमथनी—मृत्यु का नाश करने वाली देवी। भक्तों को देवी मृत्यु के ग्रास से भी बचा लेती है।

मृत्यूलोक—यम लोक।

मृत्युञ्जय—शिव।

मेकल—एक पहाड़ का नाम।

मेकलकन्या—नर्मदा का विशेषण।

मेघनाद—(१) वरुण का विशेषण (२) लङ्का नरेश रावण और मन्दोदरी का पुत्र। जन्मते ही मेघ के समान गर्जन करने से मेघनाद नाम पड़ा। रावण का पुत्र होने से रावाणि नाम है। स्वर्ग में इन्द्र को जीतने से इन्द्रजीत कहलाया। निकुम्भिला में रहकर कठिन तपस्या कर ब्रह्मा को सन्तुष्ट किया अनेक सिद्धियाँ, आयुध, स्वेच्छारूप धारण की विद्या, अदृश्य रूप आदि के साथ यह वर भी प्राप्त किया कि उसकी मृत्यु किसी ऐसे तपोनिष्ठ व्यक्ति से ही होगी जिसने चौदह साल निराहार, निद्रा विहीन होकर ब्रह्मचर्य का पालन किया हो। इसलिए लक्ष्मण इन्द्रजीत को मार सके (दे: इन्द्रजीत)।

मेघपुष्प—(१) श्रीकृष्ण के रथ के चार अश्वों में से एक—सुग्रीव, मेघपुष्प, वलाहक, शैब्य, (२) ओला।

मेघमालि—पञ्चवटी में खर का एक सेना नायक जो राम और लक्ष्मण से युद्ध कर मारा गया।

मेघवह्नि—बिजली।

मेघवाह—इन्द्र का विशेषण।

मेघश्याम—भगवान विष्णु का विशेषण।

मेद—एक नाग राक्षस।

मेदिनी—पृथ्वी (दे: मधुकैटभ)।

मेदसाग्नि—(१) महाविष्णु (२) राजा।

मेधा—(१) बुद्धि, देवी का नाम (२) सरस्वती देवी का रूप।

मेधातिथि—(१) मनुपुत्र प्रियव्रत के पुत्र, शाकद्वीप के प्रथम सम्राट बने। इन्होंने शाक द्वीप को सात वर्षों में बांट दिया, एक-एक वर्ष का राजा एक एक पुत्र को बनाया। इनके पुत्र पुरोजव, मनोजव, पवमान, धूम्रानीक चित्ररेफ बहुप, और विश्वधर थे। (२) मनुस्मृति का भाष्यकार एक ऋषि।

मेधावी—[१] महाविष्णु का विशेषण, अतिशय बुद्धिमान, [२] एक प्रसिद्ध ऋषि जिनका तप भंग मञ्जुघोषा नामक अप्सरा ने किया।

मेनका—सौन्दर्य में सुप्रसिद्ध चार अप्सराओं में एक, उर्वशी, मेनका, रंभा, तिलोत्तमा। इसने कई तपस्वियों का तपोभंग किया है। विश्वामित्र की तपस्या का भंग कर इसको शकुन्तला नाम की एक पुत्री हुई। [दे: कण्व, शकुन्तला]।

मेना–(१) महत्मेरु की पुत्री, हिमालय की पत्नी, श्री पार्वती की माता। (२) पितरों की पत्नी। (३) एक नदी का नाम।

मेरु–(२) जम्बुद्वीप के इलाव्रत के बीचों-बीच, कुलपर्वतों का राजा, मेरु पर्वत (सुमेरु) स्थित है। यह सोने और रत्नों से भरा है। इसकी ऊँचाई एक लाख योजन है। कमल रूप भूमण्डल का कर्णिका रूप यह पर्वतशिखर ऊपर से २,५०,००० मील विस्तृत है नीचे से केवल १,२४,००० मील विस्तृत है। मेरु पर्वत के चारों ओर दीवार की तरह मन्दर, मेरुमन्दर, सुपार्श्व और कुमुद पर्वत हैं जो लम्बाई और चौड़ाई में ४०,००० मील है। इन चारों पर्वतों पर आम, जम्बु, कदम्ब और अश्वत्थ के पेड़ खड़े है। मेरु पर्वत के सब ओर कर्णिका के केसर के समान बीस पर्वत हैं–कुरंग, कुरर, कुसुम्भ, वैकङ्क, त्रिकूट, शिशिर, पतंङ्ग, रूचक, निषाध, कपिल, शंख, वैडूर्य आदि। मेरु के पूर्व में जठर और देव-कूट पर्वत हैं; पश्चिम मे पवन और पारियात्र पर्वत, दक्षिण में कैलाश और कुरवीर पर्वत, उत्तर में त्रिशृङ्ग और मकर पर्वत हैं। इन पर्वतों से आवृत काञ्चनगिरि मेरु पर्वत अग्नि के समान शोभित है। इस पर्वत पर ब्रह्मा की सुनहरी नगरी स्थित है। इसके चारों ओर इन्द्रादि अष्ट दिक्पालकों की नगरियां हैं। (२) नवाश्वर मन्त्र।

मेरुदेवी–महामेरु की पुत्री। महामेरु की नौ पुत्रियाँ थीं जिनके साथ प्रियव्रत के पुत्र अग्नीन्ध्र के नौ पुत्रों ने विवाह किया।

मेरुनिलया–देवी का विशेषण।

मेरुमन्दर–सुमेरु पर्वत के चारों ओर स्थित पर्वतों में से एक।

मेरुव्रज–भारत का एक प्राचीन जनपद।

मेरुसावर्णि–किसी किसी पुराण के अनुसार दसवां मनु।

मेलपत्तूरनारायण भट्टतिरि--केरल के प्रसिद्ध एक संस्कृत के भक्त कवि। लकवा से पीड़ित भट्टतिर दीन दयालु भगवान श्रीकृष्ण की शरण में गुरुवायूर आये और श्रीकृष्ण का भजन करने लगे। कवि होने के कारण उन्होंने भागवत के आधार पर 'नारायणीयम्' नामक भक्तिरस संपूर्ण एक काव्य लिखा। कहा जाता है कि भक्त का रोग दूर हो गया और भगवान ने भक्त को प्रत्यक्ष दर्शन दिया (दे: पून्तानम)।

मेष--(१) इन्द्र का विशेषण। इन्द्र ने एकबार मेष (बकरा) का रूप धारण कर मेधातिथि नामक ऋषि को सोमपान कराया। तब ऋषि ने इन्द्र को यह नाम दिया। (२) मेष राशि।

मैत्र–एक मुहूर्त का नाम।

मैत्रावरुण--वसिष्ठ और अगस्त्य का दूसरा नाम। मित्रावरुणों से इनका दूसरा जन्म हुआ।

मैत्रेय--एक प्रसिद्ध तेजस्वी मुनि, सोमवंश के दिवोदास के पुत्र थे। ये बड़े ज्ञानी और भक्त थे। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण की बातें इन्होंने ही विदुर से बतायी थी। विदुर की सलाह से युधिष्ठर ने अन्तिम काल मे मैत्रेय मुनि से धर्मोपदेश लिया था।

मैत्रेयी--याज्ञवल्क मुनि की पत्नी, अत्यन्त विदुषी थी। याज्ञवल्क ने इनको ज्ञानोपदेश दिया था।

मैथिली--(१) सीता का नाम (२) भारत की एक बोली का नाम।

मैनाक--हिमालय और मेना के पुत्र एक पर्वत का नाम। सागर ने एक बार मैनाक को अभय दिया था। प्राचीन काल में जब पर्वतों के पंख थे, उनके इधर-उधर उड़ने से ऋषि मुनियों की तपश्चर्या में विघ्न होने का डर था। इसलिये इन्द्र ने उनके पंख काट लिये।

उस समय वायु भगवान ने अपने मित्र मैनाक को उठाकर सागर में छिपा लिया। तब से मैनाक और सागर में बड़ी मित्रता हुई, यह पर्वत हिमालय की उत्तर की तरफ विन्दु सरोवर के पास स्थित है। (२) क्रौंच द्वीप का एक पर्वत।

मैन्द--एक वानर श्रेष्ठ, सुग्रीव के मन्त्री, प्रतापी बुद्धिमान थे। अश्विनी कुमारों के अवतार रूप श्रीराम की सहायता के लिये जन्म लिया।

मैरेयक--एक प्रकार की मादक मदिरा। इसका पान कर प्रभास मे यदुवंशियों की बुद्धि भ्रष्ट हो गई और आपस में लड़ मरे। यह मदिरा पीने मे तो अवश्य मीठी लगती है, परन्तु परिणाम मे सर्वनाश करने वाली है।

मोक्ष--भवसागर से, जन्म-मरण के बन्धन से अज्ञान से मुक्ति पाना ही मोक्ष है। ईश्वर साक्षात्कार से मोक्ष मिलता है। ब्रह्म और आत्मा की एकता के ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मोक्ष द्वार--पुरी, काञ्ची, द्वारका आदि पुण्य क्षेत्र।

मोदिनी–कस्तूरी,

मोहन--(१) भगवान की उपाधि, मन को मोह करने वाले। (२) काम के पांच बाणों में से एक।

मोहनाशिनी–देवी की उपाधि, मोह, दुराग्रह, अज्ञान का नाश करने वाली।

मोहनी–(१) देवी का नाम, समस्त प्रपञ्च को मोहित करने वाली। (२) मोहिनी रूप भगवान। क्षीर सागर के मंथन के बाद उसमें से जो अमृत निकला था उसको असुरों ने छीन लिया। देवताओं की सहायता करने के लिये भगवान ने एक अद्‌भुत रूपवती सुन्दरी मोहिनी के रूप में असुरों को अपनी माया में डाल दिया और देवताओं को अमृत पिलाया। (३) एक अपसरा का नाम।

मौञ्जी–मूँज की घास की तीन डलियों की बनी ब्राह्मण की मेखला।

मौनव्रत–चुप रहने का व्रत या प्रतिज्ञा।

मौर्य–चन्द्रगुप्त महाराजा से आरंभ करने वाला राजवंश।

मौर्वी–मूर्वा, एक प्रकार की घास जिससे ब्रह्मचारी, तपस्वी और क्षत्रिय लोग मेखला बनाते थे।

म्लेच्छ–एक अनार्य असभ्य जाति। विश्वामित्र के सैनिक जब वसिष्ठाश्रम में नन्दिनी पर आक्रमण करने आये तब नन्दिनी के मुख के फेन से म्लेच्छों का जन्म हुआ था।

य

यक्ष–उपदेवताओं का एक विभाग। इनके जन्म के बारे में भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न भिन्न मत हैं। कश्यप मुनि की पत्नी मुनि की सन्तान माने जाते हैं। ये धन सम्पत्ति के राजा कुबेर के सेवक हैं और उनके कोष और उद्यानों की रक्षा करते हैं।

यक्षग्रह–यक्ष की बाधा से संबंधित एक ग्रह। ऐसा विश्वास है कि इस ग्रह के बिगड़ने से व्यक्ति पागल सा हो जाता है।

यक्षवार–पुराण प्रसिद्ध एक स्थान।

यक्षिणी–(१) यक्ष जाति की स्त्री (२) दुर्गा की सेवा में रहने वाली यक्ष स्त्री।

यक्ष्मा–क्षय रोग। दक्ष प्रजापति ने चन्द्र को शाप दिया था कि वे यक्ष्मा से पीड़ित होंगे।

दक्ष की २७ पुत्रियाँ (नक्षत्र) चन्द्र की पत्नी बनी थीं जिनमें चन्द्र रोहिणी से विशेष प्रेम करते थे। इसलिये दूसरी पुत्रियों का दुःख देख कर दक्ष ने चन्द्र को शाप दिया। (दे: चन्द्र)।

यजमान—यज्ञ आदि कराने वाला व्यक्ति।

यजुर्वेद—चार वेदों में से एक। यह यज्ञ संबंधी पवित्र पाठ का गद्यात्मक संग्रह है। इसकी दो मुख्य शाखाएं हैं—तैतरीय या कृष्ण यजुर्वेद और वाजसनेयि या शुक्लयजुर्वेद। यजुर्वेद के कई मन्त्रों में शत्रु सहार की शक्ति रहती है। मनोवांछित वस्तुओं की प्राप्ति के लिये इसमें अलग २ विधियाँ बतायी गयी है।

यज्ञ—(१) भगवान विष्णु का ही स्वरूप। स्वायम्भुव मनु की पुत्री का रुचि प्रजापति से पुत्रिका धर्म से विवाह हुआ था। इनके एक पुत्र यज्ञ और पुत्री दक्षिणा युगल होकर जन्मे। यज्ञ मनु के पुत्र होकर रहे और दक्षिणा आकूति की पुत्री बनी रही। यज्ञ भगवान का और दक्षिणा लक्ष्मी देवी का अवतार माना जाता है। यज्ञ ने दक्षिणा से विवाह किया और बारह पुत्र हुए जो तुषित नाम से स्वायम्भुव मन्वन्तर के देवगण हुए। और भगवान यज्ञ ही उस मन्वन्तर के इन्द्र बने (२) याग या कोई भी पवित्र और भक्ति सम्बन्धी क्रिया जिसमें मन की एकाग्रता श्रद्धा, भक्ति, फलेच्छा में अनासक्ति हो। अपने वर्ण, आश्रम और परिस्थिति के अनुसार जिस मनुष्य को जो शास्त्र दृष्टि से विहित कर्म है वही उसके लिये यज्ञ है। किसी प्रकार के स्वार्थ का सम्बन्ध न रखकर, केवल लोक कल्याण के लिये जो यज्ञ की परम्परा आयी है उसे सुरक्षित रखने के लिए, कर्मों का आचरण करना यज्ञ है। इस तरह कई प्रकार के यज्ञ हैं जैसे द्रव्य यज्ञ, तपोयज्ञ, योगयज्ञ स्वाध्याय यज्ञ आदि।

यज्ञकृत—भगवान विष्णु का नाम, यज्ञों के रचयिता।

यज्ञगुह्य—यज्ञों में गुप्त ज्ञान स्वरूप और निष्काम यज्ञस्वरूप भगवान विष्णु।

यज्ञदक्षिणा—यज्ञानुष्ठान करने वाले पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।

यज्ञदत्त—एक ब्राह्मण जो यम दूतों की भूल से यमलोक लिवा ले गये थे और फिर मर्त्यलोक जाने से जिन्होंने इन्कार किया था।

यज्ञपुरुष—महाविष्णु का नाम।

यज्ञबाहु—महाराजा प्रियव्रत के तीसरे पुत्र जो शाल्मलि द्वीप के पहले राजा थे। इनके सुरोचन, सौमनस्य, रमणक, देववर्ष, पारिभद्र, अप्यायन और अविज्ञात नाम के सात पुत्र थे।

यज्ञभुक्—समस्त यज्ञों के भोक्ता विष्णु भगवान्

यज्ञभूमि—यज्ञ के लिये स्थान।

यज्ञभृत—यज्ञों का धारण पोषण करने वाले भगवान।

यज्ञवराह—भगवान का वराह रूप।

यज्ञसाधन—ब्रह्मयज्ञ, जपयज्ञ आदि बहुत से यज्ञ जिनकी प्राप्ति के साधन है ऐसे भगवान।

यज्ञ संभार—यज्ञ के लिये आवश्यक सामग्री।

यज्ञसेन—पांचाल राजा द्रुपद का अपर नाम।

यज्ञान्तकृत—यज्ञों का फल देनेवाले ईश्वर।

यज्ञी—समस्त यज्ञ जिनमें समाप्त होते हैं ऐसे भगवान विष्णु।

यज्ञोपवीत—द्विजों के उपनयन संस्कार के बाद पहना जाता है। यह सूत से बनाया जाता है और अलग-अलग जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय) के अलग-अलग धागों की संख्या होती है।

यति—(१) ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो नित्य ब्रह्मचारी रहे (२) राजा नहुष के ज्येष्ठ पुत्र जो सन्यासी हो गये (३) सन्यासी।

यदु-(१) ययाति महाराज और देवयानी के ज्येष्ठ पुत्र। ज्येष्ठ पुत्र होने पर भी इनको राज्य

नहीं मिला। ययाति की जटा वदल लेने से शर्मिष्टा के पुत्र पुरू महाराजा वने। यदु से प्रसिद्ध यदुवंश चला। इनके सहस्त्राजित, क्रोष्ठा, नल और रिपु नाम के चार महान पुत्र हुए। इसी यदुवंश में भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण का अवतार लिया था। यह यदुवंश असंख्य वीर, साहसी, चरित्रवान महापुरुषों से और श्रीकृष्ण और वलराम के जन्म से पवित्र हुआ। इस वंश का नाश भगवान की इच्छा के अनुसार ऋषियों के शाप से प्रभास क्षेत्र में आपस में लड़कर हुआ। (२) उपरिचरवसु का एक पुत्र।

यदुकुल—यदुवंश (दे: यदु)।

यदुकुल नन्दन—श्रीकृष्ण का विशेषण।

यम—(१) मृत्यु के देवता, अष्ट दिक्पालकों में से एक। ये दक्षिण दिशा के दिक्पालक हैं। उनकी नगरी देवधानी है। (१) अष्टाग योग के आठ अंगों में से एक—यह, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान समाधि—ये योग के आठ अग हैं। किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार किञ्चिन्मात्र भी कष्ट न देना (अहिंसा), हित की भावना से कपट रहित प्रिय शब्दों में यथार्थ भाषण (सत्य), किसी प्रकार से किसी के स्वत्व-हक को न चुराना और न छीनना (अस्तेय), मन वाणी और शरीर से सम्पूर्ण अवस्थाओं में सदा सर्वदा सव प्रकार के मैथुनों का त्याग करना (ब्रह्मचर्य) और शरीर निर्वाह के अतिरिक्त भोग सामग्री का कभी संग्रह न करना (अपरिग्रह)—इन पांचों का नाम यम है। यह सकाम और निष्काम दोनों प्रकार के साधनों के लिये उपयोगी हैं।

यमदूत—जीव जन्तुओं को मृत्यु पाश से वांध कर यमलोक ले जाने वाले यम के किङ्कर।

यमयातना—कठिन पीड़ा, मृत्यु के वाद पापियों को यम के द्वारा दी जानेवाले यातना।

यमसभा—यम धर्म राजा की सभा जिसका निर्माण विश्कर्मा ने किया था। सूर्य की उज्ज्वल कान्ति से प्रशोभित होने पर भी यहाँ न अति शैत्य है न अति उष्ण। यहां शोक मोह, ज्वर, ताप आदि कष्ट नहीं है। इच्छित वस्तु प्रदान करने वाले अनेक कल्पवृक्ष हैं।

यमी—सूर्य और विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा की पुत्री। मनु और यम की वहन।

यमुना—कालिन्दी, सूर्यपुत्री दूसरे नाम हैं। श्री कृष्ण और वलराम का क्रीड़ास्थल होने क कारण अत्यन्त पुनीत नदी है। इसी नदी में गोप-वालों और वालिकाओं के साथ दोनों जलक्रीड़ा करते थे। इसी नदी के तट पर पुराण प्रसिद्ध अत्यन्त पवित्र वृन्दावन स्थित है। यमुना के एक ह्रद से श्रीकृष्ण ने कालिय का दर्प चूर्ण कर उसको सपरिवार वहाँ से भेज दिया था। यमुना के तीर पर मधुवन में वैठकर ध्रुव ने तपस्या कर भगवान को प्रत्यक्ष किया था।

ययाति—चन्द्रवंश के सुप्रसिद्ध राजा ययाति राजा नहुष के पुत्र थे। इनकी दो पत्नियां थीं एक शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी दूसरी असुरराज वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्टा। देवयानी से इनके दो पुत्र यदु और तुर्वसु और शर्मिष्टा से द्रुह्यु, अनिद्रुह्यु और पुरु नाम के तीन पुत्र हुये। शुक्राचार्य के शाप से अकाल मे ही जराग्रस्त हो गये और उन्हीं के कथानानुसार अपने पुत्र पूरु से यौवन प्राप्त कर अनेक काल सुख भोग किया। कई वर्षो के वाद विरक्ति आने पर पुत्र को यौवन और राज्य सौंप कर वन चले गये। ययाति वड़े प्रतापी धर्मनिष्ठ, प्रजाहित करनेवाले राजा थे। (दे: देवयानी)

यवक्रीत—(१) अंगिरा का पुत्र (२) भरद्वाज का एक पुत्र।

यवन—(१) यूनान देश के निवासी (२) मुसल-

गानों के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त होता है। पुराणों में यवन देश और यवनों की चर्चा जगह-जगह होती है।

यवस—प्लक्षदीप के सात दीपों में से एक।

यवीनर–(१) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज भर्म्याश्व के पांच पुत्र थे मुद्गल, यवीनर, वृहादिपु, काम्पिल्य और संजय। ये पांचाल कहलाते थे। (२)भरत वंश के राजा द्विमीढ़ के पुत्र। इनके पुत्र कीर्तिमान थे।

यशस्विनी–(१) देवी का विशेषण, महान यशवाली (२) द्रौपदी की एक बहन।

यशोदा—नन्द गोप की पत्नी और श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की माँ। नन्द और यशोदा यह नहीं जानते थे कि श्रीकृष्ण उनका औरस पुत्र नहीं था। अपने हृदय के टुकड़े के समान उनको प्यार किया, उनकी बाल लीलाओं का रसास्वादन किया, पाला-पोसा जो श्री कृष्ण के जन्म देनेवाले माता-पिता न कर सके। श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनका जीवन अन्धकारमय-सा हो गया। नन्द और यशोदा अपने पूर्व जन्म में वसुओं में प्रमुख द्रोण और उनकी पत्नी धरा थी। वृन्दावन में गोप-गोपियों का जन्म होते समय उन्होंने ब्रह्मा से प्रार्थना की थी कि भूमि में जन्म लेने पर भगवान में उनकी परमभक्ति हो। इसलिये श्रीकृष्ण पुत्ररूप से गोकुल में उनके पास रहे, और वात्सल्य की पराकाष्ठा पर उनकी भक्ति पहुँची।

यशोधरा–(१) सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध] की पत्नी [२] त्रिगर्त की राजकुमारी जिसका विवाह पुरुवंश के एक राजा से हुआ।

यशोवती—उत्तर पश्चिम दिशा के दिक्पाल ईश की पुरी का नाम।

याकिनी–देवी का नाम।

याग–होम, कोई भी अनुष्ठान जिसमें आहुतियाँ दी जाती हैं।

याज–एक महर्षि। निस्सन्तान द्रुपद के लिये याज और उपयाज ने यज्ञ किया था। यागाग्नि से भीष्महन्ता धृष्टद्युम्न और द्रौपदी का आविर्भाव हुआ।

याज्ञवल्क–अपार पण्डित ब्रह्मज्ञानी मुनि थे। अपने समकालीन सभी ऋषि मुनियों में पूज्य थे। जनक महाराजा के यहाँ जाया करते थे और अन्य ऋषियों के कठिन से कठिन प्रश्नों के उत्तर दिया करते थे। इनकी विदुषी पत्नी मैत्रेयी पुराणों में प्रसिद्ध है। याज्ञवल्क और मैत्रयी के प्रश्नोत्तर ज्ञान का भण्डार थे।

यातुधान–भूत, प्रेत, पिशाच।

यादव–[१] यदु के वंशज [२] श्रीकृष्ण, बलराम आदि का विशेषण।

यामी–धर्मदेव की पत्नी।

यामुन–[१] गंगा और यमुना के बीच का पर्वत [२] एक जनपद।

याम्या–[१] दक्षिण दिशा [२] रात्रि।

यास्क–एक सुप्रसिद्ध ऋषि और निरुक्तकार जिन्होंने वेदों को सुगम बनाया।

युग–[१] मनुष्य के ३६५ दिन देवों का एक दिन है। देवों के ३०० दिन एक दिव्य वर्ष होता है। ४८०० दिव्य वर्ष कृतयुग या सत्ययुग होता है, ३६०० दिव्य वर्ष त्रेतायुग, २४०० दिव्य वर्ष द्वापर युग और १२०० दिव्य वर्ष कलियुग होता है। ये चारों युग मिलकर एक चतुर्युग होता है। (२) एक आयुध।

युक्त–युक्त शब्द के कई अर्थ हैं। सन्दर्भ के अनुसार इसके अर्थ हैं संन्यासी तत्वज्ञानी, ध्यान योगी, कर्म-योगी, योग आदि। अपने को कर्तापन से रहित माननेवाले तत्वज्ञ पुरुष को युक्त कहते हैं। कामना रहित फल में अनासक्त रहने वाले को भी युक्त कहते हैं।

युगन्धर–[१] पाण्डव सेना का एक वीर योद्धा

जो द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया। [२] यदुवंश के कुणि का पुत्र।

युगन्धरा–समस्त जगत का संरक्षण करने की इच्छा से उसके चिह्नरूप युग नामक आयुध को धारण करने वाली देवी।

युधाजित्–[१] यदुवंश के सुमित्र के पुत्र, वृष्णि के भाई। युधाजित् के पुत्र शिनि, और अनमित्र थे। [२] केकय राजा के पुत्र महाराजा दशरथ की पत्नी कैकेयी के भाई, भरत के मामा। दशरथ की मृत्यु और श्रीराम के वनगमन के समय भरत इन्हीं मामा के पास गये थे।

युधामन्यु–युधामन्यु और उत्तमौजा दोनों भाई थे। वे पांचाल देश के राजकुमार थे। ये दोनों बड़े भारी पराक्रमी, और बल सम्पन्न वीर थे, इसलिये विक्रांत और वीर कहलाते थे। ये दोनों रात को अश्वत्थामा से मारे गये।

युधिष्ठिर–पंच पाण्डवों में [युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन नकुल और सहदेव] ज्येष्ठ। पाण्डु शाप के कारण स्त्री का स्पर्श नहीं कर सकते थे। जब कुन्ती कन्या थी उनकी परिचर्या से सन्तुष्ट होकर दुर्वासा मुनि ने उनको पांच मन्त्रों का उपदेश दिया था। पुत्र जन्म के लिये पाण्डु की अनुमति से कुन्ती ने धर्मदेव का अनुस्मरण कर एक मन्त्र जपा जिससे कुन्ती का एक पुत्र युधिष्ठिर हुआ। धर्मदेव के पुत्र होने से इनको धर्मपुत्र कहते हैं। धर्मिष्ठों में श्रेष्ठ, पराक्रमी और सत्यवादी होने से युधिष्ठर नाम पड़ा। पाण्डु की मृत्यु के बाद अपनी माँ कुन्ती और चारों छोटे भाईयों के साथ शतशृंग वन को छोड़कर वे हस्तिनापुर रहने आये। यहाँ द्रोणाचार्य से शस्त्राभ्यास किया। दुर्योधन आदि से पाण्डवों को अनेक कष्ट उठाने पड़े। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाया। युधिष्ठिर के सद्गुणों के कारण वे प्रजा के पूज्य और प्रिय बने जिससे ईर्ष्या होने से दुर्योधन ने पाण्डवों को कुन्ती के साथ वारणावत भेजने को धृतराष्ट्र को राजी किया। वहाँ लाखा गृह में उन्हें मरवाने की योजना बनाई जिस पर विदुर की कृपा से पानी फिर गया। कुन्ती के आदेश पर पाँचों पाण्डवों ने पाञ्चाली से विवाह किया। युधिष्ठिर का पांचाली से प्रतिविन्ध्य नामक एक पुत्र हुआ। पौखी नामक पत्नी से इनका देवक नाम का पुत्र हुआ। इन्द्रप्रस्थ में मय निर्मित सभा में युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया जिसमें सभी राजाओं को जीतकर वे चक्रवर्ति बने। दुर्योधन के साथ अक्षक्रीड़ा खेल कर सब राज्य, धन, सम्पत्ति, भाई और अन्त में पाञ्चाली को भी पण में खो दिया। बारह साल वन में रहकर अनेक कष्ट सहे, एक साल अज्ञातवास किया। उस समय विराट राजधानी में कुङ्क नाम से रहे। जहाँ तक हो सका युधिष्ठर ने युद्ध को टालना चाहा। युद्ध शुरू होने से पहले द्रोण, भीष्म आदि गुरजनों का आशीर्वाद लिया। युद्ध के बाद वृद्ध धृतराष्ट्र और गान्धारी की पुत्रवत सेवा की। युद्ध में बन्धुजनों के निधन पर अतीव दुःखी हो गये और राज्य काज से विरक्त हो गये। शरशय्या पर पड़े भीष्म पितामह से धर्मोपदेश सुना। युधिष्ठिर सत्यसन्ध, न्यायशील प्रजावत्सल राजा थे। श्रीकृष्ण के स्वर्गवास की वार्ता सुनकर अपने पौत्र परीक्षित को महाराजा बनाकर द्रौपदी और भाईयों के साथ वन गये जहाँ उनका स्वर्गारोहण हुआ।

युयुध–[१] अर्जुन के शिष्य सात्यकि का दूसरा नाम (देः सात्यकि) [२] जनकवंश के वस्वनन्त के पुत्र। इनके पुत्र सुभाषण थे।

युयुत्स–धृतराष्ट्र का वैश्या स्त्री में उत्पन्न एक पुत्र। ये वीर योद्धा, सत्यसन्ध और बलवान

थे। ये दुर्योधन आदि कौरवों की दुष्टता के विरोधी थे, पाण्डवों से मित्रता करते थे। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के बाद जब पाण्डव हिमालय की ओर गये तब परीक्षित और राज्य की रक्षा ययुत्सु को सौंप कर गये थे। इनके और नाम करण, वैश्य-पुत्र आदि थे।

युवनाश्व—[१] इक्ष्वाकु वंश के चन्द्र के पुत्र। इनके पुत्र शावस्त थे। इन्होंने शावस्ति नाम की नगरी बसायी [२] दे: धन्धुमार।

युवराज—राज्याधिकारी राजकुमार।

यूथपति—किसी टोली या दल का नेता।

यूप—यज्ञ का खम्भ। यह प्राय: बाँस या खदिर वृक्ष की लकड़ी से बनाया जाता है। इसके साथ बलि दिया जाने वाला पशु यज्ञ के समय बांधा जाता है।

योग—[१] मन सहित सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियों के विरोध रूप योग से प्राप्त भगवान विष्णु [२] स्वायम्भुव मनु के पौत्र और धर्म और श्रद्धा के पुत्र। [३] योग के भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं जैसे कर्म योग, ध्यानयोग, समत्वयोग, भगवत्प्रभाव रूप योग, भक्ति योग, अष्टाङ्ग योग, सांख्ययोग आदि।

योगदा—देवी का विशेषण।

योगनाथ—शिव का विशेषण।

योगनिद्रा—जागरण और निद्रा के बीच की अवस्था। युग के अन्त में महाविष्णु की निद्रा। इस समय भगवान अपने स्वरूप के अनुसन्धान में रहते हैं। उस समय प्रपञ्च नहीं रहता। सत्वरजतमोगुण और उन गुणों को प्रक्षुब्द कराने वाला काल, जीवों का कर्म, जीवात्मा, कार्यरूप समस्त प्रपञ्च, प्रलयारंभ में भगवान में विलीन हो जाते हैं। इसी समय भगवान योगनिद्रा में रहते हैं।

योगनिष्ठा—सब कुछ भगवान का समझकर सिद्धि-असिद्धि, लभालाभ, सुख दुःख आदि में समत्व भाव रखते हुए फलेच्छा में आसक्ति न रखकर भगवान के आज्ञानुसार सब कर्मों का आचरण करना, श्रद्धा-भक्तिपूर्वक मन, वाणी और कर्म से सब प्रकार से भगवान की शरण होकर नाम, गुण और प्रभाव सहित उनके स्वरूप का निरन्तर ध्यान करना यह योगनिष्टा है। इसी को भगवान ने गीता में समत्व योग, बुद्धियोग, तदर्थ कर्म, मदर्थ कर्म, सात्विक त्याग आदि नामों से उल्लेख किया है। योगनिष्टा के तीन मुख्य भेद हैं:—[१] कर्म प्रधान कर्मयोग [२] भक्ति मिश्रित कर्मयोग [३] भक्ति प्रधान कर्म योग।

योगमाया—[१] भगवान विष्णु की माया। भगवान की इच्छा के अनुसार योगमाया ने श्रीकृष्ण की माँ देवकी के सातवें गर्भ को संकर्षण कर देवकी के गर्भ में रखा। योगमाया नन्द व्रज में यशोदा की पुत्री होकर जन्मी। इन्हीं योगमाया को कंस ने पत्थर पर पटक कर मारना चाहा [२] देवी का नाम।

योगविद्—भगवान का विशेषण।

योगशास्त्र—दर्शन शास्त्र।

योगसमाधि—आत्मा के गूढ़ चिन्तन में लीन।

योगचार्य—योग दर्शन का अध्यापक।

योगानन्दा—शिवशक्तियों के परस्पर योग से सन्तुष्ट देवी।

योनि—मूल प्रकृति।

योगी—भगवान के ध्यान योग में लगा हुआ व्यक्ति। योगी के अनेक अर्थ हैं। स्वयं भगवान योगी या योगेश्वर है। आत्मज्ञानी, सिद्ध भक्त कर्मयोगी, सांख्ययोग, भक्तियोगी, साधक योगी, ध्यान योगी, सकाम कर्मी ये सब योगी है। किसी प्रकार के योग में स्थित व्यक्ति को योगी कहते हैं।

योगेश्वर—[१] भगवान विष्णु का विशेषण [२] तेरहवें मन्वन्तर में बृहति और देवहोत्र

के पुत्र योगेश्वर के नाम से भगवान अवतार लेंगे।

योनितीर्थ–एक पुण्य तीर्थ।

यौगन्धरायण–राजा उदय के मन्त्री।

यौधेय–[१] युधिष्ठिर और शिविदेश की राजकुमारी देविका का पुत्र। [२] यौधेय देश के निवासी।

यौवनाश्व–युवनाश्व के पुत्र मान्धाता (दे:–मान्धाता।

र

रक्तबीज—महिषासुर के पिता रंभासुर का पुनर्जन्म माना जाता है, यह महावीर और बलशाली था। कठिन तपस्या कर शिव जी से वरलब्धी की थी कि शत्रु के आयुध से घायल होने पर उसके शरीर से गिरने वाले रक्त की एक एक बूंद से उसी के समान बलशाली, पराक्रमी अनेकों रक्तबीज निकलेंगे। इस वरलाभ से मस्त देवों पर आतङ्क डालने लगा। अन्त में देवी से युद्ध हुआ। घायल होकर जितने रक्त के कण गिरे उतने असुरों का जन्म हुआ। देवी ने एक तरकीब निकाली। अपनी ही अंशरूपा चामुण्डी को गिरे हुए रक्त का पान करने को नियुक्त किया। इस तरह सभी कृत्रिम रक्तबीज और अन्त में स्वयं रक्तबीज देवी से मारे गये।

रक्तवर्णा–दुर्गा का विशेषण, देवी का अरुण वर्ण हैं।

रक्तांग–एक सर्प।

रक्षस्—भूत, प्रेत आदि।

रक्षा–एक आभूषण जो तावीज की तरह भूत-प्रेतादि बाधा से बचने के लिए पहना जाता है।

रघु-सूर्यवंश के सुप्रसिद्ध राजा दिलीप के विश्वविश्रुत पुत्र। इनसे सूर्यवंश का नाम रघुवंश भी हो गया और उनके वंशज राघव कहलाने लगे। ये बड़े प्रतापी, वीर, धर्मनिष्ट, प्रजावत्सल राजा थे। इनके पुत्र महाराजा दशरथ के पिता अज थे।

रज—(१) प्रकृति के तीन गुणों सत्व, रज, और तम, में से एक। ये तीनों गुण प्रकृति के कार्य हैं। समस्त जड पदार्थ इन्हीं तीनों का विस्तार है। क्रिया रूपा विक्षेप शक्ति रजोगुण की है जिससे सनातन काल से समस्त क्रियायें होती आयी हैं, और जिससे रागादि और दुःखादि जो मन के विचार हैं, सदा उत्पन्न होते हैं। रजोगुण के वशीभूत हो कर ब्रह्मा इस प्रपञ्च की सृष्टि करते हैं। काम, क्रोध, लोभ, दम्भ असूया, अभिमान, ईर्ष्या और मत्सर ये घोर धर्म रजोगुण के हैं। यह रजोगुण ही मनुष्य के बन्धन का हेतु है। जिस समय रजोगुण के ये घोर धर्म बढ़े हुए हैं उस समय मृत्यु प्राप्त जीव कर्मों के आसक्ति वाले मनुष्यों में जन्म लेता है। वह बार-बार मनुष्य जन्म लेता है (२) वसिष्ट के सात पुत्रों में से एक। अपने भाइयों के साथ ये तीसरे मन्वन्तर के सप्तर्षि बने।

रजनी–रात।

रजनीकर–चन्द्रमा।

रजनीचर—रात को घूमने वाले भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस आदि।

रजनीपति–चन्द्रमा।

रञ्जनी–देवी का नाम (१) भक्तों की आपत्ति से रक्षा करने वाली (२) भक्तों को खुश रखने वाली।

रणञ्जय–इक्ष्वाकुवंश का एक राजा।

रतिप्रिया–देवी का विशेषण ।

रतिरूपी–(१) रती के रूपवाली देवी (२) कामकला ।

रती–(१) कामदेव की पत्नी । दक्ष प्रजापति के पसीने की बूँदों से उत्पन्न पुत्री । किसी किसी पुराण मे इसको क्षीरसागर से निकली मानते है। शिव की नेत्राग्नि मे काम दहन के बाद प्रद्युम्न के रूप में कामदेव का पुनर्जन्म होता है । अपने पति की प्रतीक्षा में रति शम्बरासुर के गृह में मायावती नाम से दासी बनकर रहती थी । (दे: प्रद्युम्न)

रतिगुण–कश्यप ऋषि और दक्षपुत्र प्राधा का पुत्र एक गन्धर्व ।

रथचित्रा–एक नदी ।

रथन्धर–(१) पाञ्चजन्य नामक अग्नि का पुत्र (२) एक साम जो बेहोशी दूर करने की शक्ति रखता है ।

रथवाह–विराट राजा का एक भाई ।

रथस्या–गंगा की एक शाखा ।

रथाङ्गपाणी- भीष्म की प्रतिज्ञा रखने के लिये सुदर्शन चक्र को हाथ मे लेने वाले भगवान विष्णु ।

रथावर्त–एक पुण्य स्थान ।

रन्तिदेव–अपनी दयालुता और दान धर्म से अति प्रसिद्ध पुरुवंश के एक राजा। महाराजा रन्तिदेव संस्कृति नामक राजा के पुत्र थे । ये बड़े ही प्रतापी और दयालु थे । गरीबों को दु:खी देख कर अपना सर्वस्व दानकर डाला और किसी तरह कठिनता से अपना निर्वाह करते रहे । स्वयं भूखे रहकर जो कुछ मिलता था गरीबों को बाट दिया करते थे । देवताओं ने इनकी दयालुता और दानशीलता की परीक्षा लेने का निश्चय किया । कई दिन भूखे रहने के बाद इनको कुछ अन्न मिला । उसे पका कर पत्नी और सन्तानों को देकर खाने वाले ही थे कि एक के बाद एक कर एक ब्राह्मण, कुत्तों के साथ एक शूद्र और अन्त में एक चाण्डाल अतिथि के रूप में आये। सर्वत्र हरि को व्याप्त देखने वाले भक्त रन्तिदेव ने एक के बाद एक कर उन अतिथियों का सेवा सत्कार किया । चाण्डाल को देने के लिये उनके पास सिर्फ अन्न का जल ही था । स्वयं भूख प्यास से मृतप्राय होकर उन्होंने अतिथियों का सत्कार किया । ब्राह्मणादि रूपों मे भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश ही आये थे । भक्त पर तुष्ट देवों ने अपना-अपना रूप धारण किया । एक मात्र भगवान विष्णु में अनन्य मन होने से उनके कहने पर भी राजा ने कोई वर न माँगा । रन्तिदेव के साथ उनके परिवार के अन्य लोग भी पवित्र हो गये और परमगति पायी ।

रमण-(१) भगवान विष्णु का नाम (२) दक्षिण भारत के एक सुप्रसिद्ध महर्षि (३) सोम नामक वसु और मनोहरा का पुत्र।

रमणक--द्वारका के पास एक द्वीप जिसमें पहले कश्यप ऋषि की पत्नियाँ विनता और कद्रू रहती थीं । अपनी माता विनता को दासत्व से छुड़ाने के बाद गरुड़ के भय से सभी नागों ने उस द्वीप को छोड़ दिया । कालिय सपरिवार कालिन्दी में रहने लगा । गोपों और गोवृन्दों के सुख संरक्षण के लिये कालिय का दर्प चूर कर रमणक में वापस भेज दिया । (दे: कालिय)

रमणी–(१) देवी का नाम, भक्तों को सुख देने वाली ।

रमा--विष्णु की पत्नी लक्ष्मी देवी; धन दौलत की देवी ।

रमापति–महाविष्णु ।

रम्भ-(१) एक वानर श्रेष्ठ (२) पुरुरवा के पुत्र । आयु-के पुत्र इनके पुत्र रमस थे ।

रम्भा--चार प्रमुख और सुन्दर अपसराओं में से एक । कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री प्राधा की

पुत्री, नृत्य में अति निपुण थी ।

रम्यक–(१) जम्बू द्वीप का एक वर्ष विभाग, इलाव्रत के उत्तर में नील पर्वत से घिरा रहता है । (२) अग्नीन्ध्र और पूर्वाचित्ती के एक पुत्र । ये रम्यक वर्ष पर राज्य करते थे । (३) गोकुल के पास एक सुन्दर वन जहाँ श्रीकृष्ण और बलराम गोपबालकों के साथ खेलने जाया करते थे ।

रम्भा–अद्भुत सौन्दर्यवती देवी ।

रय–सोमवंश के पुरुरवा और उर्वशी का एक पुत्र ।

रवि–(१) सूर्य, ज्योतियों में भगवान विष्णु सूर्यरूप हैं । (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (३) सौवीर देश का एक राजकुमार (४) समस्त रसों को शोषण करने वाले सूर्य ।

रवितनय–वैवस्वत मनु, कर्ण, यम, सुग्रीव, शनैश्चर आदि ।

रसज्ञा–देवी का विशेषण । देवी की नौ चक्रेश्वरियां नौ रसरूपिणियाँ हैं । ये नव रस हैं रती उत्साह, शोक, भय, जुगुप्सा, क्रोध, हास, विस्मय और शम या श्रृङ्गार, वीर, करुणा, भय, वीभत्स, रौद्र, हास्य, अद्भुत, शम ।

रसातल–महातल के नीचे रसातल है । यहां कश्यप की पत्नियाँ दिति और दनु के वंशज नागों की तरह रहते हैं । इनको पणय कहते हैं । इनके तीन विभाग हैं निवातकवच, कालेय और हिरण्यपुरवासी । ये देवताओं के शत्रु, महातेजस्वी, महासाहसी, अतुल बलशाली हैं जो केवल भगवान के सुदर्शन चक्र से डरते हैं । इन पणयों ने एक बार जल के अन्दर छिप लिया । इन्द्र की भेजी सरमा नाम की दूती के शाप के कारण इन्द्र से बहुत डरते हैं ।

रहस्तर्पण–श्रीविद्योपासना मार्ग अत्यन्त रहस्यमय है । इसलिये इस मार्ग का तर्पण रहस्तर्पण कहलाता है । यहाँ तर्पण करने की अग्नि चिदग्नि है । उस अग्नि में भूमि से लेकर शिवलोक तक के लोक होमद्रव्य हैं । चिदाकाश में इन्धन के बिना सदा सर्वथा प्रज्ज्वलित और अन्धकार का उन्मूलनाश करने वाली और अदभुत कान्तिवाली अग्नि है चिदग्नि । इस चिदग्नि में किसी स्वार्थ विचार के बिना सर्वस्व होम करना ही रहस्तर्पण है ।

रहस्यवादी–(१) कबीर, जायसी आदि कवि । (२) पुरुवंश के एक राजा जो संयति के पुत्र थे । इनके पुत्र भद्राश्व थे ।

रहूगण–(१) सिन्धु और सौवीर देश के राजा । कपिल महर्षि से तत्वोपदेश प्राप्त करने जाते समय इक्षुमती नदी के किनारे जड़ भरत से इनकी मुलाकात हो गई । जड़ भरत की असलियत को न जान कर राजा ने इनको शिविका वाहक बनाया । भरत की अलस यात्रा से जब राजा एक दो बार क्रुद्ध हो गये तब भरत ने अपने मौन को तोड़ कर ज्ञानपूर्ण बातें कहीं । भरत की बातें सुनकर उनकी महिमा का परिचय पाकर राजा ने शिविका से उतर कर उनका आदर किया और उन्हीं से तत्वोपदेश ग्रहण किया । (२) एक मुनि ।

रहोयाग–रहस मे (विजन में या छिपकर) किया जाने वाला एक याग जिससे देवी प्रसन्न होती है ।

राका–(१) रात्री, पूर्णिमा की रात्री (२) अंगिरा और स्मृति की एक पुत्री । (३) कुबेर ने अपने पिता विश्रवा की परिचर्या के लिये राका नाम की एक राक्षस कन्या को नियुक्त किया था । उससे विश्रवा के खर और दूषण नामक दो पुत्र हुये ।

राकेन्दु--पूर्ण चन्द्र ।

राकेश–चन्द्र ।

राक्षस--(१) असुरों का एक विभाग । ब्रह्मा के कोप से उत्पन्न हैं । ये जो ब्राह्मणों की हत्या करते हैं । इनके पूर्वज थे प्रहेति और

हेति । हेति ने काल की पुत्री भय से विवाह किया और विद्युलेश नामक पुत्र हुआ। विद्यु-केश ने सन्ध्या की पुत्री सालकटङ्का से विवाह किया और जो पुत्र हुआ उसको वन में छोड़ कर चले गये । शिव ने उस शिशु को आशी-र्वाद दिया । बड़े होकर उस शिशु मुकेश ने मणिमय नामक गन्धर्व की पुत्री देववती से विवाह किया और उनके माल्यवान, सुमालि, मालि नामक तीन पुत्र हुए । इनसे राक्षसो का वंश बढ़ा । शिव और पार्वती से सुकेश का वर मिला था कि राक्षस जन्मते ही यौवन को प्राप्त करेगा । सभी राक्षस साहसी, प्रवल पराक्रमी, क्रूर होते हैं । इनमें मुख्य थे रावण, इन्द्रजीत, विभीषण, कुम्भकर्ण, खर दूषण आदि । (२) नन्द राजा का मन्त्री ।

राक्षसघ्नी—राक्षसों का नाश करने वाली देवी।

राक्षसयज्ञ—पराशर मुनि के पिता वसिष्ट के पुत्र शक्ति को कन्मापपाद नामक एक राक्षस ने मार कर खाया । इससे कुपित मुनि ने राक्षस वंश का नाश करने के लिये एक यज्ञ आरम्भ किया । याग का परिणाम सोचकर पुलस्त्य, पुलह आदि मुनियों ने पराशर मुनि को शान्त किया । उनके कहने के अनुसार यागाग्नि को हिमांचल के पास छोड़ दिया जो कहा जाता है कि आज भी राक्षसो, वृक्षों और चट्टानों को जलाती रहती है ।

राक्षसविवाह—विवाह के आठ भेदों में से एक। इसमे दुलहिन के सम्वन्धियों को युद्ध में परा-स्त कर कन्या को बलात् उठा ले जाता है।

रागमथना—भक्तों के मन में वैराग्य पैदा कर उनके मिथ्याभिमान का नाश करने वाली देवी ।

रागिणी—(१) हिमवान की पुत्री, श्री पार्वती की बड़ी बहन (२) संगीत के स्वरग्राम की विकृतियाँ ।

राजग्रह—मगध की राजधानी गिरिव्रज का दूसरा नाम ।

राजधर्म—(१) राजा का कर्तव्य (२) कश्यप के पुत्र नाड़ीजंघ नामक बगुल ।

राजधानी—राजा का निवास स्थान ।

राजनीति—मनुस्मृति आदियों में राजा को अवश्य स्वीकार करने योग्य नीतियाँ लिखी हैं।

राजपीठ—इन्द्रपद, ब्रह्म पद आदि ।

राजपुर—(१) कलिङ्ग देश की राजधानी (२) काम्बोज देश का एक प्रमुख नगर ।

राजयोग—(१) योग का एक विभाग । प्रज्ञा को काबू में रख कर ब्राह्मलोक को जीतना । राजयोग का अभ्यास करने वालों को संसार को छोड़ने की आवश्यकता नहीं । राजयोग में भी हठयोग के समान यम, नियम, आसान प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ये आठ अंग है । (२) जन्म के समय ग्रहों और नक्षत्रों का ऐसा संयोग जिससे उस व्यक्ति के राजा होने का संकेत मिले ।

राजलक्षण--मनुष्य के शरीर पर कोई ऐसा चिन्ह जो उसकी भावी राजकीयता को प्रकट करे ।

राजलक्ष्मी—राजा का सौभाग्य, श्री, वैभव, महिमा आदि ।

राजविद्या--यह विज्ञान सहित ज्ञान है जिससे भगवान पुरुषोत्तम के तत्व, प्रेम, गुण, प्रभाव, विभूति, महत्व और उनकी शरणागति के स्वरूप का ज्ञान होता है । यह सब विद्याओं का राजा, सब गोपनीयों का राजा, अति पवित्र, अतिउत्तम, प्रत्यक्ष फलवाला, धर्मयुक्त, साधन करने में बड़ा सुगम, अविनाशी, गुह्य है । जिसने इस विद्या का यथार्थ अनुभव कर लिया है उसके लिये फिर कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता । सब प्रकार से भगवान की शरण में जाना इस विद्या का मूल तत्व है । इस विद्या के अनुसार यह सब जगत, जल से बर्फ की तरह, परमात्मा से परिपूर्ण है, सब

भूत उनके अन्तर्गत हैं, लेकिन भगवान उनमें स्थित नहीं है। भगवान को सब भूतों का सनातन कारण और नाश रहित जानकर अनन्यभाव से, भक्ति ज्ञान या कर्म के मार्ग पर चल कर भगवान को एक मात्र शरण्य जानकर उनकी उपासना करते हैं और जन्म-मृत्यू के बन्धन से मुक्त हो जाते है।

राजसूय—एक महायज्ञ। इससे बड़ा पुण्य मिलता है।

रात्रिञ्चर—(१) राक्षस (२) उल्लू।

रात्री—रात की अधिष्ठात्री देवी। ब्रह्मा के आरम्भ में उनकी कमर से तमोगुण प्रधान असुरों का जन्म हुआ। ब्रह्मा ने तब अपने तपोमय स्वरूप का त्याग दिया। वह तपोमय रूप है रात्री।

राधा—(१) श्रीकृष्ण की परम प्रिय गोपी। गोपों में प्रसिद्ध वृपभानु की पुत्री। राधा श्रीकृष्ण की शक्ति मानी जाती है। भक्ति और प्रेम की पराकाष्ठा का मूर्तिरूप है राधा। राधा और कृष्ण के प्रेम को लेकर जयदेव ने भक्ति रस पूर्ण-गीतगोविन्द की रचना की है। (२) अधिरथ की पत्नी जिसने कर्ण का पालन-पोषण किया था। इसलिये कर्ण का एक नाम राधेय भी है। (३) विशाख नाम का नक्षत्र।

राधारमण—श्रीकृष्ण का विशेपण।

राधिका—राधा का विशेषण।

राधेय—कर्ण का नाम।

राम—(१) योगी जनों के रमण करने के लिये नित्यानन्द स्वरूप भगवान विष्णु। (२) महाविष्णु का अवतार जो त्रेतायुग में अयोध्या में महाराजा दशरथ और कौसल्या के पुत्र के रूप में हुआ था। ये मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहलाते हैं। इनके भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न नाम के तीन भाई हुये जो भगवान के शंख, अनन्त और चक्र के अवतार माने जाते हैं। इनकी पत्नी मिथिला के महाराजा जनक की पुत्री सीता देवी थी जो लक्ष्मी देवी का अवतार थी। सज्जन परिपालन और दुष्ट निग्रह के लिये भगवान ने मनुष्य का रूप लिया था। वाल्मीकि ऋषि (संस्कृत मे), तुलसीदास (हिन्दी में) एपुत्तश्शन (मलयालम् मे), कम्पर (तमिप में) आदि भक्त कवियों ने इन पुण्य पुरुप के पावन चरित को लेकर अमूल्य ग्रन्थ लिखे हैं जो उनके साथ 'रामायण' जोड़कर सुप्रसिद्ध हो गये। इनका पारायण सभी हिन्दु-घरों में प्रतिदिन होता है और यह पारायण पापनाशक और मोक्षदायक है। (दे: श्रीराम) (३) वसुदेव और रोहिणी के पुत्र वलराम (४) परशुराम।

रामगीता—वनवास से लौटने पर श्रीरामचन्द्र का राज्याभिपेक हो गया। एक दिन श्रीराम ने लक्ष्मण को ऐसा उपदेश दिया जो अज्ञानान्धकार को दूर करने वाला और संसार सागर को पार करने वाला था। इसको रामगीता कहते हैं।

रामतीर्थ—(१) सरस्वती तट पर एक तीर्थ। (२) गोमती नदी का एक पुण्य स्थल। (३) हिमालय का पुण्य स्थान।

रामचन्द्र—श्रीराम।

रामनवमी—चैत्र शुक्ला नवमी जिस दिन श्री राम का जन्म हुआ था।

रामह्रद—कुरुक्षेत्र का एक पुण्य तीर्थ।

रामहृदय—श्रीराम ने हनुमान को आत्मा अनात्मा और परमात्मा का तत्व बताया अपने स्वरूप का ज्ञान विस्तारपूर्वक बताया। यह अत्यन्त गोपनीय, हृदयहारी, परम पवित्र पापनाशक 'रामहृदय' से सुप्रसिद्ध है। यह समस्त वेदांत का सार संग्रह है। इसके पठन पाठन से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

रामा—लक्ष्मीदेवी, सुन्दरी स्त्री।

रामानुज—भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का विशेषण।

रामायण—श्रीराम के चरित को लेकर रचा गया काव्य। सबसे पहले वाल्मीकि महर्षि ने संस्कृत में रामायण लिखी। यह आदि काव्य माना जाता है। एक बार जब मुनि तमसा नदी में स्नान कर रहे थे एक व्याध ने क्रौंच मिथुनों में से एक को मार गिराया। दूसरे पक्षी के शोक से अत्यन्त संतप्त मुनि के मुख से अचानक ही श्लोक रूप से 'मा निषाद' से आरम्भ कर विकार प्रकट हुए। ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए और महर्षि को पूरी रामायण बतायी और उसे लिखने को कहा। इसमें चौबीस हजार श्लोक है जो सात काण्डों में–बाल काण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धा-काण्ड, सुन्दरकाण्ड युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड में विभाजित है। वाल्मीकि ने रामायण की रचना कर अपने आश्रम में पलने वाले श्रीराम और सीता के पुत्र कुश और लव को सिखायी। कुश और लव ने श्रीराम के अश्व मेघ याग में आकर गायी। लोगों का विश्वास है कि रामायण महाभारत से भी पुरातन है। राम के चरित को लेकर वाल्मीकि रामायण के आधार पर और कवियों ने भी और भाषाओं में भी रामायण लिखी जैसे तुलसीदास का रामचरित मानस, एषुत्तश्शन का "रामायणम् किलिप्पाट्", कम्पर रामा-यण आदि। इनमें सबसे प्रसिद्ध तुलसीदास का अवधी में लिखा रामचरितमानस है। जो प्रचार उत्तर में रामचरित मानस का है केरल में एषुत्तश्शन के "किलिप्पाट्" का है। तमिष में कम्पर 'कम्परामायण' लिखकर अमर हो गये।

रामेश्वर—दक्षिण भारत का एक अतीव पुण्य क्षेत्र। सीता की खोज में जाते समय दक्षिण समुद्र के किनारे श्रीराम ने शिव जी की प्रतिष्ठा कर पूजा की थी। गंगा जल से अभिषेक किया था। रामेश्वर का दर्शन करने के लिये काशी से गंगा जल लाकर अभिषेक कर दर्शन करने की विधि है। यह कथा प्रचलित है कि प्रतिष्ठा के लिये शिव-लिंग लाने के लिये हनुमान कैलास गये। प्रतिष्ठा करने का मुहुर्त बीतता जा रहा था, लेकिन हनुमान नहीं आये। तब श्रीरामचन्द्र जी के शरीर से एक चैतन्य रूप निकला और श्रीराम ने संकल्प से प्रतिष्ठा की और वहाँ एक सुन्दर शिवलिंग प्रत्यक्ष हुआ। उस समय हनुमाम वहाँ पहुँचे। प्रतिष्ठा समाप्त देखकर वे कुंठित हो गये। भगवान के आदेशा-नुसार प्रतिष्ठित लिंग को अपने लांगूल से घुमाकर उठाना चाहा, लेकिन लांगूल टूट गया, सिर फट गया और वे बेहोश हो गये। श्रीराम ने हनुमान पर हाथ फेरा और अपने भक्त को प्रसन्न करने के लिये हनुमान के लाये लिंग को गोपुर द्वार पर स्थापित किया और कहा कि इस लिंग की पूजा करके ही कोई अन्दर की प्रतिष्ठा की पूजा करें। रामेश्वर को कोई-कोई दक्षिण काशी भी कहते है।

रावण—राक्षसों के राजा एक प्रसिद्ध राक्षस जिनकी राजधानी दक्षिण समुद्र के बीच त्रिकूट पर्वत पर लंका नामक नगरी थी। ये विश्रवा और सुमाली की पुत्री कैकसी या केशिनी के पुत्र, यक्षों के राजा कुबेर के सौतेल भाई थे। इनके कुंभकर्ण और विभीषण नामक दो भाई और शूर्पणखा नाम की एक बहन थी। पुलस्त्य ऋषि का पौत्र होने से पौलस्त्य कह-लाते थे। ये बड़े शिव भक्त, अत्यन्त परा-क्रमी वीर योद्धा थे, किन्तु बड़े ही स्त्री लम्पट थे। उन्होंने जीते हुए राजाओं की कन्याओं, सुर सुन्दरियों और मृर्त्यलोक की सुन्दरियों

को बलात् पकड़ कर अपने अन्तःपुर में रखा था। रावण और उसके भाई कुम्भकर्ण महाविष्णु के पार्षद जय और विजय के पुनर्जन्म थे। रावण ने अपने भाई से पुष्पक विमान छीन लिया और लंका पर अधिकार कर लिया। कठोर तपस्या कर ब्रह्मा से वर प्राप्त किया कि मनुष्य को छोड़कर कोई उन्हें न मारेगा। इसीलिये भगवान को मनुष्य रूप मे श्रीरामावतार लेना पड़ा। रावण ने मायासुर की पुत्री सुन्दरी मन्दोदरी से विवाह किया और मेघनाद आदि पुत्र हुए। सभी देवताओं को जीता। अपना बल पौरुष दिखाने के लिये कैलास पर्वत को उठाकर गेंद की तरह खेले। इस पर तुष्ट भगवान शिव ने उनको तीक्ष्ण चन्द्रहास नामक तलवार दी। अनेक ऋषि-मुनियों को कष्ट देने के कारण उन्होंने रावण को अनेक प्रकार के शाप दिये। कार्तवीरार्जुन ने इनको बंदी बनाया। वालि ने अपनी पूँछ पर बन्धे रावण को लेकर सात समुद्रों में तर्पण किया था। पंचवटी से कपट सन्यासी का वेष धारण कर सीता का अपहरण किया जिससे लंका में श्रीरामचन्द्र के साथ युद्ध हुआ। उस युद्ध में राक्षस वंश की बड़ी क्षति हुई। श्रीराम के हाथ से रावण मारे गये। रावण के दस सिर, बीस हाथ थे, इसलिये दशानन, दशमुख आदि नाम हैं। (दे:–वालि, श्रीराम)

रावणि–रावण का पुत्र, इन्द्रजीत का विशेषण।

राशि–ज्योतिश्चक्र, बारह राशियां हैं।

राशिचक्र–बारह राशियां, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, प्रोष्टपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

राष्ट्र–पुरूरवा के वंशज काशी के पुत्र। ये दीर्घतमा के पिता थे।

रास–एक प्रकार का नाच जिसे श्रीकृष्ण और गोपियाँ करती थीं।

रासक्रीड़ा–वृन्दावन में रहते समय शरत् काल की चाँदनी रातों में श्रीकृष्ण गोपबालिकाओं के साथ यमुना के पुलिन पर रास नृत्य करते थे। वह साधारण रास नहीं था। उसमें गोपबालिकायें श्रीकृष्णमय हो जाती थीं, अपनी सुधबुध खो जाती थी। वह दिव्य नृत्य था। सब चराचर सृष्टि निश्चेष्ट सी रहती थी। आकाश मे देव, गन्धर्व, अप्सरायें, ऋषि मुनि, किन्नर, विद्याधर आदि इस अद्भुत, मोहक नृत्य को देखकर चित्र मे खिंचे से रहते थे। गोपबालिकायें उस समय ब्रह्मानन्द में डूबी रहती थी।

राहु–विप्रचित्ति और सिंहिका का पुत्र एक राक्षस। इसका दूसरा नाम स्वर्भानु है। असुरों से छीने हुए अमृत कलश को भगवान ने मोहिनी के रूप में आकर सबको बाँटने के लिये असुरों से ले लिया। मोहिनी के मोहन रूप और हाव-भाव से असुर सुध-बुध खो बैठे। भगवान ने देवों को अमृत पिलाया। भगवान की इस चालाकी का पता स्वर्भानु को मिला। वह चुपके से देवों की पंक्ति में सूर्य चन्द्रों के बीच में जा बैठा और अमृत पाया। गले से उतरने से पहले सूर्य चन्द्रों ने उसको पहचान लिया और भगवान को बताया। विष्णु ने श्रीचक्र से उसका गला काट लिया। धड़ अचेत पड़ा, लेकिन अमृत के प्रभाव से सिर का हिस्सा जिन्दा रहा और अमरत्व पाया। ब्रह्मा ने उसको एक ग्रह का अधिपति बनाया। अपना बदला निकालने के लिये पूर्णिमा और अमावास्या को राहु चन्द्र और सूर्य को ग्रहण करता है। यह एक प्रबल ग्रह है और सूर्य से दस हजार योजना नीचे स्थित हैं। भगवान वासुदेव के शिशुमार स्वरूप का योग धारण करते समय राहु को उनके गले पर ध्यान किया जाता है।

रिपु–ध्रुव का पौत्र।

रुक्मवती–रुक्मिणी के भाई रुक्मी का पुत्री, प्रद्युम्न की पत्नी अनिरुद्ध की माँ।

रुक्मिणी–विदर्भ देश के राजा भीष्मक की पुत्री, श्रीकृष्ण की प्रथम महिषी। यह लक्ष्मी देवी का अवतार मानी जाती है। बचपन से ही श्रीकृष्ण का गुणगान सुनती रही, इसलिये यौवनावस्था में भगवान् को ही अपना पति मान लिया। श्रीकृष्ण का वैरी होने से उनका भाई रुक्मी इससे सहमत नहीं थे और अपने मित्र शिशुपाल से बहन का विवाह करना चाहा। पुत्रस्नेह के कारण राजा भी इसके लिये तय्यार हो गये। रुक्मिणी ने अत्यन्त संतप्त होकर एक ब्राह्मण को श्रीकृष्ण के पास सब समाचार सुनाने के लिया भेजा। अपनी प्रिया पर तुल्यरूप से अनुरक्त श्रीकृष्ण किसी से बिना बताये सारथि दारुक और ब्राह्मण के साथ कुण्डिनपुर आये। बलराम को यह पता लगा और अनिष्ठ की संभावना कर सैन्य समेत कुण्डिनपुर गये। वहाँ भगवान रुक्मिणी का हरण कर रथ में बिठा कर चलने लगे। स्वयंवर में उपस्थित और नरेशों के साथ रुक्मिणी उनका पीछा करने गये लेकिन बलराम ने रोक लिया। रुक्मी के साथ श्रीकृष्ण का युद्ध हुआ जिसमें रुक्मी हार गया। भगवान ने इसका केश मुड़ाकर छोड़ दिया। रुक्मिणी के दस पुत्र प्रद्युम्न, चारुदेष्ण सुदेष्ण, चारदेह, सुचारु, चारुगुप्त, भद्रचारु, चारुचन्द्र, विचारु और चारु हुए। इनकी एक लड़की चारुमती थी। भगवान के स्वर्गारोहण के बाद रुक्मिणी आदि पटरानियां उनके ध्यान में मग्न होकर अग्नि में प्रविष्ट हो गईं।

रुक्मी–विदर्भ नरेश भीष्मक के पुत्र। बचपन से ही श्रीकृष्ण के शत्रु थे इसलिये अपनी बहन रुक्मिणी का विवाह श्रीकृष्ण से न कर अपने मित्र शिशुपाल से करना चाहा। जब पूरा इन्तजाम हुआ रुक्मिणी के सन्देशानुसार श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया। रुक्मी ने प्रण किया कि अपनी बहन को वापिस लाये बिना विदर्भ में पैर नही रखूंगा। श्रीकृष्ण का पीछा किया, लेकिन पराजित हुआ। इसलिये कुण्डिन पुर के पास भोजकटक नामक एक नगरी बसाकर रहे। इनकी पुत्री रुक्मवती का विवाह श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न से हुआ रुक्मी की पौत्री रोचना का विवाह प्रद्युम्न पुत्र अनिरुद्ध से हुआ। उस विवाह में अक्ष क्रीड़ा में अनभिज्ञ बलराम को राजधर्म के अनुसार कलिंग आदि देशों के नरेशों के उकसाने पर रुक्मी से अक्ष खेलना पड़ा। उसमें बार–बार रुक्मी के धोखा देने पर कुपित बलराम ने रुक्मी का वध किया।

रुक्मरथ–माद्रराजा शल्य के पुत्र। महाभारत युद्ध मे अभिमन्यु से मारे गये।

रुक्मांगद–अयोध्या के राजा जो एक साल लगातार एकादशी व्रत रखकर सुप्रसिद्ध हुए। भगवान विष्णु के अनन्य भक्त थे। विष्णु के प्रीत्यर्थ इन्होंने एकादशी का व्रत रखने का दृढ़ निश्चय किया था। राजा की परीक्षा लेने के लिये ब्रह्मा ने एक सुन्दर तरुणी मोहिनी की सृष्टि कर राजा के पास भेजा। उसके रूप लावण्य से मुग्ध राजा ने उससे विवाह करना चाहा। मोहिनी इस शर्त पर तय्यार हुई कि राजा उसकी कोई बात न टाले। राजा मान गये। एकादशी के दिन राजा का व्रत था। मोहिनी ने उनको कामकेलि के लिये बुलाया। राजा ने एकादशी के व्रत की बात बतायी और कामकेलि को छोड़ कर और कुछ मांगने को कहा। मोहिनी ने शर्त की याद दिलायी और कहा कि अपने वचन का पालन नहीं कर सकेंगे तो अपने एक मात्र पुत्र धर्मागद को उसकी माँ की गोद में लिटा

कर उसका गला काटें। इस भयङ्कर वार्ता को सुनकर राजा पहले तो सहम गये लेकिन भगवान में पूर्ण भरोसा होने के कारण व्रतकी रक्षा के लिये पुत्रवध क लिए तय्यार हो गय, यह घोर वार्ता सुन कर राणी और राजकुमार विचलित नहीं हुए। अपने दिल को पत्थर बनाकर दिल में भक्त वत्सल भगवान का स्मरण कर पुत्र का गला काटने के लिए जब तलवार उठाई भगवान ने वहां प्रत्यक्ष होकर राजा का हाथ पकड़ लिया और अनुग्रहीत किया। मोहिनी को भगवान ने यह वर दिया कि जो कोई एकादशी व्रत रखकर दिन में सोयेगा उसका छठा हिस्सा पुण्य मोहिनी को मिलेगा।

रुचक–मेरु पर्वत के पास एक पर्वत।

रुचि–ब्रह्मा के पुत्र एक प्रजापति जिन्होंने स्वायम्भुव मनु की पुत्री आकूति से विवाह किया था। इनके भगवान के अंशरूप पुत्र यज्ञ और लक्ष्मी सभूता पुत्री दक्षिण हुई।

रुचिराश्व सोमवश के एक राजा।

रुमी–एक अपसरा।

रुद्र-(१) दुःखया दुःख के कारण को दूर भगा देने वाले भगवान विष्णु का नाम। (२) शिव का नाम। भगवान ब्रह्मा ने अपने मानस पुत्र सनकादियों से प्रजा सृष्टि के लिए कहा तब सत्वगुण प्रधान वे नित्यब्रह्मचर्य मे रहना चाहते थे, प्रजासृष्टि करने से इनकार किया। इससे ब्रह्मा के मन मे क्रोध उत्पन्न हुआ। उस क्षणिक विकार को मन में ही रोक लिया यह कोप उनके भ्रूमध्य भाग से मूर्तरूप होकर भगवान का अशावतार होकर मृड़ या रुद्र नाम से जन्मा। रुद्र ने जन्मते ही ब्रह्मा से कहा कि मुझे नाम और स्थान बताइए। ऐसा कह कर रोने लगे! इसलिए इनका नाम रुद्र पड़ा। रुद्र के ग्यारह नाम और स्थान हैं–मन्यु, मनु, महिनस, महान्, शिव, ऋतुध्वज, उग्ररेता, भव, काल, वामदेव, धृतव्रत। दूसरे मत के अनुसार इनके नाम हैं अज, एक पाद, अहिर्बुध्न, त्वष्टा, रुद्रा, हर, शम्भु, त्र्यम्बच, अपरा जित, ईशान, त्रिभुवन। इनकी अलग-अलग पत्नियां हैं–धी, वृत्ति, उशना, उमा, नियुत सर्पी, इला, अम्बिका इरावती, सुधा, दीक्षा। इनके स्थान हैं–हृदय, दशेन्द्रिय प्राण, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि, सूर्य, चन्द्र, तप। ब्रह्मा के आदेश से रुद्र ने प्रजासृष्टि की। इन रुद्रगणों से त्रैलोक्य को भरा देखकर ब्रह्मा ने रुद्र को आगे प्रजा सृष्टि करने से रोका और कहा कि लोक कल्याण के लिए तपस्या करो।

रुद्रकोटि–एक पुण्य तीर्थ।

रुद्रग्रन्थि–हृदयस्थ अनाहत चक्र से सम्बन्धित एक ग्रन्थि है।

रुद्रग्रन्थिविभेदिनी–देवी का नाम।

रुद्रगीत-प्राचीन वर्हि के दस पुत्र प्रचेतस पिता की आज्ञा से प्रजासृष्टि के उद्देश्य से भगवान विष्णु की तपस्या करने गये, पश्चिम समुद्र के तीर पर वे भगवान शिव से मिले और शिव ने प्रचेतसों को विष्णु के प्रीत्यर्थ एक मन्त्र गीत बनाया जो रुद्र गीत से प्रसिद्ध हुआ। यह सबसे पहले ब्रह्मा ने अपने पुत्र रुद्र, भृगु आदियों को सिखाया था। इसका नाम योगादेश भी है। भगवान वासुदेव में चित्त लगाकर इन मन्त्रों का जप करने से मनुष्य श्रेय को प्राप्त कर सकता है, कर्म बन्धन से छूट जाता है।

रुद्ररूपा–रुद्र के रूप से युक्त देवी।

रुद्रसावर्णि–बारहवें मनु। इनके देववान, उपदेव, देवश्रेष्ठ आदि पुत्र होंगे। इस मन्वन्तर में ऋतधामा इन्द्र होंगे, हरित आदि देवगण, तपोमूर्ति, तपस्वी, अग्नीन्ध्रक आदि सप्तर्षि होंगे। सत्यसहा और सूनृता के पराक्रमी पुत्र

स्वधामा भगवान् विष्णु का अवतार होकर उस मन्वन्तर की रक्षा करेंगे ।

रुद्राक्ष—एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल से रुद्राक्ष माला बनायी जाती है । इसके भिन्न-भिन्न संख्या के मुख और रंग भी भिन्न-भिन्न होता है । अतः इनको पहनने से फल भी विभिन्न होता है । इसके पहनने से पाप कट जाते हैं और पुण्य मिलता है ।

रुद्राणी—शिव (रुद्र की पत्नी) ।

रुद्रावती—एक पुण्य प्रदेश ।

रुधिराशन—पञ्चवटी में श्री राम से युद्ध करने गयी खर की राक्षस सेना का सेनापति ।

रुधिरांभस—एक नरक ।

रुमण्वान—(१) जमदग्नि और रेणुका का एक पुत्र । (२) एक वानर श्रेष्ठ ।

रुमा—वानर श्रेष्ठ सुग्रीव की पत्नी जिसका जन्म क्षीरसागर से हुआ ।

रुरु—एक प्रसिद्ध मुनि जो च्यवन महर्षि के पौत्र थे । च्यवन ऋषि और राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या के पुत्र प्रमति थे । प्रमति और उनकी पत्नी प्रतापी के पुत्र थे रुरु । रुरु ने प्रमद्वरा नामक अपसरा को देख कर उससे शादी करने का निश्चय किया । लेकिन विवाह से पहले प्रमद्वरा की मृत्यु हुई । इससे अत्यन्त दुःखी रुरु प्राणत्याग करने को तैयार हो गये । तब एक देवदूत ने आकर कहा कि अपनी अर्धायु देने से प्रमद्वरा जीवित होगी । रुरु ने ऐसा किया और उससे विवाह किया ।

रुशद्रथ—ययाति के पुत्र अनु के वंश का एक राजा ।

रुहा—(१) नाग माता सुरसा की पुत्री । (२) दूर्वा घास ।

रूपविद्या—बारह बाहोंवाली देवी का रूप ।

रेचक—श्वास का बाहर निकालना, बहिः श्वसन ।

रेणुका—जमदग्नि महर्षि की पत्नी, परशुराम की माँ, रेणु महर्षि की पुत्री थी ।

रेवत—वैवस्वत मनु के पुत्र शर्याति के पौत्र । इनके पिता का नाम आनर्त था । इन्होंने समुद्र के मध्य में कुशस्थली (द्वारका) नामकी एक सुन्दर नगरी बसायी और आनर्त (आधुनिक सौराष्ट्र) आदि देशों पर शासन किया । इनके सौ उत्तम पुत्र हुए जिनमें जेष्ठ ककुद्मि थे ।

रेवती—(१) राजा ककुद्मि की पुत्री । सर्वगुण सम्पन्ना अपनी पुत्री के लिये योग्य वर की खोज मे ककुद्मि अपनी पुत्री को लेकर ब्रह्म-लोक गये । उस समय वहाँ गीत और नृत्य होने के कारण ककुद्मि को दो एक क्षण वहाँ रुकना पड़ा । ककुद्मि का निवेदन सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि आपके यहाँ रहते हुए सत्ताइस चतुर्युग बीत गये । अब द्वापर युग में भगवान का अंशावतार बलराम द्वारका में रहते हैं । इस नारीमणि को उन पुरुष श्रेष्ठ को दीजिए । ब्रह्मा की वन्दना कर अपनी सुकुमारी पुत्री का बलराम के साथ विवाह कर दिया । (२) नक्षत्रों में से एक ।

रेवन्त-सूर्य और छाया का पुत्र, शनैश्चर का भाई ।

रेवा—नर्मदा नदी का दूसरा नाम ।

रैभ्य—(१) एक मुनि जिनके अर्वावसु और परावसु नाम के दो पुत्र थे जो ज्ञानी और पण्डित थे । ये भरद्वाज मुनि के मित्र थे । (२) पुरुवंश के रौद्राश्व के पौत्र सुमति के पुत्र । रैभ्य के पुत्र थे । प्रसिद्ध महाराजा दुष्यन्त ।

रैवत—(१) प्रियव्रत महाराजा के पुत्र पांचवें मनु । ये चौथे मनु तामस के भाई थे । बलि, विन्ध्य आदि इनके पुत्र थे जिनमें ज्येष्ठ अर्जुन थे । इस मन्वन्तर के इन्द्र विभु; भूत-रय आदि देवगण ; हिरण्यरोम, वेदशिरा, ऊर्ध्वबाहु आदि सप्तर्षि थे । शुभ्र महर्षि और विकुण्ठा के पुत्र वैकुण्ठ नाम से भगवान का अंशावतार हुआ जिन्होंने अपनी पत्नी लक्ष्मी देवी की प्रीति के लिये लोकनम

स्कृत वैकुण्ठ की सृष्टि की । (२) एक प्राचीन राजा जो गन्धर्वों का सामगान सुनकर सर्व संग परित्याग कर वन चले गये ।

रैवतक—भारतवर्ष का एक पर्वत जो द्वारका के पास है । इस पहाड़ के पास जो चित्रोत्सव मनाया गया था उस उत्सव के बीच अर्जुन ने सन्यासी के वेष में श्रीकृष्ण की अनुमति से उनकी बहन सुभद्रा का हरण किया था ।

रोचन—भगवान यज्ञ और दक्षिणा के बारह पुत्रों में से एक जो अपने भाइयों के साथ स्वायम्भुव मन्वन्तर के तुषित नाम के देवगण हुए ।

रोचना—(१) रुक्मि की पौत्री और प्रद्युम्न पुत्र अनिरुद्ध की पत्नी । (२) उज्ज्वल आकाश ।

रोचमान—एक राजा जिन्होंने पाण्डव पक्ष से भारत युद्ध में भाग लिया था और कर्ण से मारे गये ।

रोमपाद—ययाति के पुत्र अनु के वंशज अंगराज धर्मरथ के पुत्र । इनका नाम चित्र रथ था । इनकी कोई सन्तान न थी । इसलिए इनके मित्र अयोध्या के महाराजा दशरथ ने अपनी पुत्री शान्ता को पुत्री रूप में दिया । शान्ता का विवाह ऋष्यशृंग महर्षि से हुआ ।

रोमहर्षण—एक प्रसिद्ध मुनि । व्यास महर्षि के एक शिष्य जिनको व्यास ने पुराण संहिता दी । नैमिषारण्य में शौनकादि मुनि-ऋषियों को इन्होंने कई पुराण सुनाये थे । भारत युद्ध के समय बलराम तीर्थ यात्रा करते हुए नैमिषारण्य में पहुँचे जहाँ ऋषि-मुनि सत्र कर रहे थे । वहाँ दीर्घ सत्र में सतसंग भी हो रहा था । बलभद्र को देखकर ऋषि मुनियों ने अपनी-अपनी अवस्था के अनुरूप उनका स्वागत किया और आशीर्वाद दिया । बलभद्र ने व्यास शिष्य रोमहर्षण को एक ऊँचे आसन पर बैठे हुए देखा जो न अपने आसन से उठे और न उनकी पूजा की । जाति से सूत हो कर ब्राह्मणों से ऊँचे आसन पर बैठे देखकर क्रुद्ध बलराम ने कुशाग्र से सूत को मारा । कोई उन्हें रोक न सके । ब्राह्मणों ने तब बलराम से कहा कि आपने यह दुष्कृत्य किया, हमने ही यह ऊँचा आसन सूत को दिया था । अनजाने में पाप किया, इसलिए लोकरक्षा के लिए प्रायश्चित करना होगा । बलराम उनको पुनः जीवित कर सकते थे, लेकिन 'आत्मा वै पुत्र' इस कथन के अनुसार उनके पुत्र को पुराण वक्ता बनाया ।

रोहिणी—(१) वसुदेव की पत्नी, बलराम की माता । कश्यप, अदिति और सुरसा के पुनर्जन्म थे वसुदेव, देवकी और रोहिणी । देवकी के सातवें गर्भ को भगवान के आदेशानुसार योगमाया ने संकर्ष कर गोकुल में रोहिणी के गर्भ में रखा । कंस के अत्याचारों से बचने के लिए वसुदेव ने अपनी पत्नी रोहिणी को अपने मित्र नन्दगोप के घर में छिपा रखा था । (२) एक नक्षत्र जो दक्ष प्रजापति की पुत्री थी । चन्द्र अपनी पत्नियों में से रोहिणी से ज्यादा प्रेम रखते थे (दे: चन्द्र, यक्ष्मा) (३) कश्यप प्रजापति और दक्ष पुत्री क्रोधवशा की एक पुत्री थी सुरभी । सुरभी की दो पुत्रियों से एक है जो जानवरों की माता है । (४) उतत्थ मुनि की माता ।

रोहित—(१) मत्स्यविशेष का स्वरूप धारण करके अवतार लेने वाले भगवान विष्णु । (२) अयोध्या नरेश हरिश्चन्द्र और चन्द्रमती के पुत्र । सत्य का पालन करने के लिए हरिश्चन्द्र को अपने पुत्र, पत्नी और अपने आप को बेचना पड़ा । उनको विश्वामित्र से बहुत कष्ट उठाने पड़े । रोहित अपनी माँ के साथ एक दुष्ट ब्राह्मण को बेचे गये जहाँ साँप काटने से उनकी मृत्यु होती है । दाह कर्म के लिए पुत्र शरीर को लेकर चन्द्रमती रात के समय श्मशान में जाती है जहाँ चाण्डाल

के दास के रूप में अपने पति से मिलती है। भगवान की कृपा से उनकी सोई हुई सम्पत्ति, राज्य आदि मिलता है, रोहित पुनर्जीवित हो जाते हैं। इनके पुत्र हरित थे।

रौद्रकर्मा—धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

रौद्राश्व—पुरुवंश के राजा अहंयाति के पुत्र। रौद्राश्व और घृताची नाम की अपसरा के ऋतेयु, कुक्षेयु, स्थाण्डिलेयु, कृतेयु, जलेयु, सन्तेयु, धर्मेयु, सत्येयु व्रतेयु और वनेयु नाम के दस पुत्र हुए।

रौप्या—एक नदी।

रौरव—एक नरक।

रौहिणेय—(१) बलराम का विशेषण (२) पन्ना।

ल

लक्षणा—दुर्योधन की पुत्री। इसके स्वयंवर पर जाम्ववती पुत्र साम्ब ने इसको हरण किया। साम्ब वन्दी हो गये और बलराम ने जाकर छुड़ाया (दे: साम्व)।

लक्ष्मण—अयोध्या के महाराज दशरथ और सुमित्रा के पुत्र। सुमित्रा के युगल पुत्र हुए लक्ष्मण और शत्रुघ्न। बचपन से ही अपने बड़े भाई श्रीराम के अनन्य भक्त और सेवक थे। हर समय उनके साथ छाया की तरह रहते थे। विद्याभ्यास के बाद विश्वामित्र के साथ राक्षसों का संहार करने के लिए राम और लक्ष्मण गये। वहां से जनकपुर गये। सीता स्वयम्वर के साथ लक्ष्मण ने सीता की वहन ऊर्मिला से विवाह किया। सीता के स्वयम्बर में शिव धनुष टूटने पर क्रुद्ध परशु-राम के दुर्वचनों का लक्ष्मण निडर होकर जवाव देते रहे। श्रीराम के अभिषेक में विघ्न पड़ने पर लक्ष्मण इतने क्रुद्ध हो गये कि वे अपने पिता, कैकेयी सबको बन्दी बनाकर श्रीराम का अभिषेक करने को तय्यार थे। श्रीराम के शान्त करने पर ही वे शान्त हुए। राजवैभव, सुख, सम्पत्ति, अपने माता, पिता, पत्नी सब को छोड़कर वत्कल पहन कर अपने ज्येष्ठ भ्राता की चरण सेवा करने को वे उनके साथ चले। श्रीराम का एक वाल भी वांका न होने देते थे। चौदह साल भूख, प्यास और निद्रा छोड़कर ब्रह्मचर्य का पालन कर एकाग्र चित्त से सुख दुःख में श्री राम की सेवा की। सीता विरह से दुःखी श्रीराम का एक मात्र सहारा लक्ष्मण थे जो स्वयं पत्नी को अयोध्या में छोड़ आये थे। लक्ष्मण के क्रोध से सब डरते थे। शूर्पणखा का नासा-छेद कर राक्षसों के नाश का बीज बोया। राम रावण युद्ध में लक्ष्मण ने असंख्य राक्षसों को मारा। इन्द्रजीत की शक्ति लग कर वेहोश हो गए थे, लेकिन मृतसंजीवनी से स्वस्थ हो गए। अजय्य इन्द्रजीत को वे ही मार सके। जब श्रीराम ने सीता का त्याग करने का निश्चय किया, लक्ष्मण पहले बहुत विगड़े, लेकिन भाई की इच्छा के विरुद्ध कुछ न कर सकते थे, इसलिए गर्भिणी सीता का त्याग करने के लिए उनको जाना पड़ा। राज्य शासन में भाई की पूरी सहायता दी। उनके ऊर्मिला से दो पुत्र अंगद और चित्रकेतु हुए। लक्ष्मण ने पश्चिम दिशा के भीलों को जीतकर पुत्रों का वहां राजतिलक किया। श्रीराम के अवतार का उद्देश्य पूरा होने पर जब काल प्रच्छन्न वेष से श्रीराम से रहस्य में बातें कर रहे थे और लक्ष्मण पहरा दे रहे थे तब दुर्वासा वहां आये। वे श्रीरामचन्द्र जी

से मिलना चाहते थे। एक तरफ श्रीराम की आज्ञा (कि किसी को अन्दर न भेजे) के उल्लंघन से अपनी मृत्यु, दूसरी ओर मुनि के शाप से कुल का नाश, लक्ष्मण ने अपनी मृत्यु को स्वीकार किया और मुनि के आने का समाचार श्रीराम को दिया। दैवी विधि थी। प्रतिज्ञा के अनुसार लक्ष्मण ने अपना अन्त किया। लक्ष्मण के बिना ज्यादा दिन श्रीराम भी न रह सके और भरत, शत्रुघ्न और अयोध्या वासियों के साथ वे स्वर्ग सिधार गये (दे: श्रीराम, ऊर्मिला, इन्द्रजीत, सुमित्रा) (२) दुर्योधन के एक वीर पुत्र जिन्होंने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ कुरुक्षेत्र मे युद्ध किया और उनसे मारे गये।

लक्ष्मणा–श्रीकृष्ण के आठ पटरानियों में से एक, राजा वृहत्सेन की पुत्री। श्रीकृष्ण का गुणगान सुनकर लक्ष्मणा ने उनको ही अपना पति मान लिया था। अपनी प्रिय पुत्री के इंगित को जान कर राजा ने उसके स्वयंवर के लिए ऐसा उपाय सोचा जिसकी पूर्ति भगवान ही कर सके। द्रौपदी के स्वयम्वर के समान एक मत्स्य रखा गया जिसकी छायामात्र बाहर जल में दिखायी देती थी। इस लक्ष्य को भगवान ने खेल ही में मार गिराया और राजकुमारी का पाणिग्रहण किया। इनके प्रघोष, गात्रवान, सिंह, बल, प्रबल, ऊर्ध्वज, महाशक्ति, सह, ओज, और अपराजित नाम के दस पुत्र हुए जो महावीर थे। भगवान के स्वर्गारोहण के बाद और महारानियों के साथ उनके ध्यान में मग्न लक्ष्मणा भी आग में जल मरी।

लक्ष्मी—महाविष्णु की पत्नी। अमृत मन्थन के समय क्षीर सागर से भगवत् परा साक्षात् श्री (लक्ष्मी देवी) चारों दिशाओं को अपनी कान्ति से शोभित करती हुई निकली। रूप, सौन्दर्य, वय, वर्ण, महिमा, कान्ति की उस मूर्ति पर सब सुरासुर मोहित हो गए। उनका अभिषेक हुआ। सभी देवी देवताओं, ने दिव्य चीजें भेंट की। गन्धर्व, नट, अपसराओं ने गीत गाये, मेघ ने मृदङ्ग, पणव आदि बाजे बजाये। नाग, सागर, आदियों ने अनेक विभूषण दिये। देवी ने सर्वगुण सम्पन्न भगवान को पति में रूप में वरण किया। त्रैलोक्यनाथ भगवान ने देवी को अपने वक्षःस्थल पर स्थान दिया। सर्व सम्पत्तियों की देवी त्रैलोक्य की माता बनी और समस्त सृष्टि की भलाई करता है। भगवान के साथ साथ देवी के भी कई अवतार हुए हैं जैसे सीता, रुक्मिणी, तुलसी, दक्षिणा आदि। कहा जाता है कि गोबर में देवी का वास है इसलिए पवित्र माना जाता है।

लक्ष्मीकान्त–महाविष्णु का विशेषण।

लक्ष्मीपति–महाविष्णु।

लक्ष्मीपूजा—कार्तिक मास की अमावस्या के दिन की जाती है जिससे सम्पत्ति और ऐश्वर्य होता है।

लग्न–शुभ और सौभाग्यप्रद मुहूर्त।

लग्नदिन—ज्योतिषियों द्वारा विवाहादि शुभ कर्मों के लिए बताया गया दिन।

लङ्का–महामेरु के शिखर पर त्रिकूटाचल के उपरितल पर विश्वकर्मा ने बनाया था। यह सुनहली नगरी अत्यन्त सुन्दर रत्नों से जटित; महलों से, सुन्दर बाग बगीचों से झरनों और नदियों से शोभित नगरी है। सुख भोग की सभी सामग्रियाँ यहाँ अति सुलभ हैं। कुबेर ने तपस्या कर ब्रह्मा से पुष्पक विमान प्राप्त किया। विश्रवा के आदेशानुसार लङ्कापुरी में बहुत काल तक रहे। यह शत्रुओं से सुरक्षित था। रावण जब बड़ा हुआ, ब्रह्मा की तपस्या कर अतुल बल और अनेक वर प्राप्त किये और अपनी माँ की इच्छा पूर्ण करने के लिये लङ्का को जीत लिया और राक्षसों

का राजा बनकर वहाँ रहा ।

लङ्कापति–रावण ।

लङ्का लक्ष्मी–लङ्किनी भी इसका नाम है । यह पूर्व जन्म में ब्रह्मा के कोश की संरक्षिका विजयलक्ष्मी थी । अपने काम में अश्रद्धा दिखाने के कारण ब्रह्मा ने एक बार शाप दिया कि तुम लङ्का में रावण के गोपुर की रखवाली बन जाओ । उसकी प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने शाप मोक्ष दिया कि जब तुम एक बलवान बन्दर से मार खाओगी तब लंका छोड़कर आ सकती हो । हनुमान समुद्र लांघ कर जब लंका में प्रवेश कर रहे थे तब लंकिनी ने उनको रोक दिया । हनुमान ने उसको थप्पड़ लगाई । तब राक्षसी के बदले एक सुन्दरी वहाँ प्रकट हुई और हनुमान को आशीर्वाद देकर चली गई । उसी समय लंका से श्री, सौभाग्य, ऐश्वर्य सब विदा ले गये ।

लघिमा–एक सिद्धि जिससे सिद्ध अपने शरीर का वजन बिलकुल कम कर सकता है । कंस पर टूट पड़ते समय श्रीकृष्ण इस सिद्धि से अपने वजन को बिलकुल कम कर जल्दी कंस पर गिर पड़े ।

लज्जा–लक्ष्मी का नाम ।

लम्बा–(१) दुर्गा का विशेषण (२) लक्ष्मी का विशेषण (३) दक्ष प्रजापति और असिक्नी की पुत्री जिसका विवाह धर्मदेव से हुआ ।

लम्बोदर–गणपति का विशेषण ।

लय–(१) आनन्दानुभव से युक्त चित्तविकार (२) ताल, गीत नृत्यों का एक साथ परिणाम ।

लयकरी–देवी का विशेषण ।

ललाम–(१) अश्वों का एक विभाग । अश्वों के ललाट पर सफेद दाग को ललाम कहते हैं । (२) सुन्दर ।

ललितक–भारत का एक प्राचीन पुण्य देश ।

ललिता–(१) वनवास के समय द्रौपदी को एकांत में पाकर एक राक्षसी ने एक अति रूपवती स्त्री (ललिता) का वेष धारण कर द्रौपदी को मृदु वचनों से बहकाकर वनान्तर भाग में ले गई जहाँ क्रमीर नामक राक्षस रहता था । घोर वन को देख कर द्रौपदी को शंका हुई और उनका रोना सुनकर भीमसेन ने वहाँ आकर राक्षस को मारा और द्रौपदी की रक्षा की । (२) लोकों का अतिक्रमण कर खेलनेवाली देवी । (३) आश्विन शुक्ल का पाँचवाँ दिन । (४) भाद्रपद के शुक्लपक्ष का सातवाँ दिन ।

ललिताम्बिका–(१) देवी का नाम (२) प्रयाग के पीठ की अधिष्ठात्री देवी ।

लव–श्रीरामचन्द्र और सीता के युगल पुत्र थे लव और कुश । उनका जन्म और बाल्यकाल वाल्मीकि के आश्रम में हुआ । वहाँ पर उन दोनों ने वेदाध्ययन, शस्त्र और शास्त्राभ्यास किया । दोनों निडर, पराक्रमी, वीर बालक थे । वाल्मीकि ने रामायण काव्य बना कर उनको सिखाया । ऋषि की आज्ञा के अनुसार अश्विनीकुमारों के समान अति सुन्दर दोनों बालकों ने श्रीराम के अश्वमेघ यज्ञ में जाकर वीणा के साथ उसका गायन किया । वहाँ पर श्रीराम और अन्य जनों को इन दोनों देवरूप कुमारों का असली चरित का पता लगा । वाल्मीकि की कृपा से श्रीराम ने अपने दोनों पुत्रों को प्राप्त किया । श्रीराम के स्वर्गारोहण पर लव उत्तर कोशल और कुश अवध के राजा बने । (दे: कुश)

लवण–(१) एक नरक का नाम (२) हरिश्चन्द्र का पौत्र एक राजा जिसने अपने पितामह को राजसूय यज्ञ से यशस्वी सुनकर संकल्प में राजसूय यज्ञ किया था । बाद में मायावश संकल्प में अनेक कष्ट उठाने पड़े और चाण्डाल का जीवन भी बिताया । राजसूय यज्ञ करने

वाले को कुछ काल कष्ट उठाना पड़ता है।
लवणाश्व–एक मुनि।
लवणासुर–मधु नामक असुर का पुत्र जो मथुरा के पास मधुवन में रहता था। इसके आतंक से पीड़ित जनों की रक्षा करने के लिये श्री राम ने शत्रुघ्न को भेजा। लवणासुर को मारकर शत्रुघ्न वहाँ राज्य करने लगे। श्री राम के स्वर्गारोहण के समय जब शत्रुघ्न अयोध्या लौट गये तब अपने दोनों पुत्रों को मथुरा के दो हिस्सों के राजा बनाये।
लवणोद–प्लक्षद्वीप को घेर कर स्थित ८,००,००० मील चौड़ा समुद्र। सात महा-समुद्रों में से एक।
लाकिनी–साग योगिनी, देवी का एक रूप।
लाक्षा–एक प्रकार का लाल रंग, महावर। प्राचीन काल में स्त्रियों के शृङ्गार की एक सामग्री था। इससे वे अपने पैर के तलवे और ओष्ठ रंगती थीं, जैसे आजकल गुलाल पैरों पर लगाती हैं।
लाक्षागृह–पाण्डु की मृत्यु के बाद जब पाण्डव हस्तिनापुर में रहते थे तब दुर्योधन आदि कौरव उनको अनेक कष्ट देते थे और मार डालने तक की कोशिश करते थे। प्रजा को युवराज युधिष्ठिर का आदर, प्यार करते देख दुर्योधन के हृदय में ईर्ष्या पैदा हुई। धृतराष्ट्र की अनुमति लेकर, जो पुत्र स्नेह से विवश थे, वारणावत में लाख, घास, बांस आदि जल्दी से आग लगने वाली चीजों से बने, ऊपर से बहुत सुन्दर और मजबूत, लाक्षा-गृह बनवाया और उसमें रहने के लिये पाँचों पाण्डवों को भेज दिया। इस निष्ठुर कृत्य का पता विदुर को लगा और मय नामक असुर से उसमें से निकलने के लिये रहस्य में भूगर्भ से एक मार्ग बनवाया और पाण्डवों को सूचना दी। जिस दिन लाक्षागृह में आग लगनेवाली थी उस दिन एक वृद्धा अपने पाँच पुत्रों के साथ अतिथि के रूप में वहाँ आकर सोये। दुर्योधन की कुटिलता का पता लगने पर भीम अपने भाइयों और कुन्ती को गुप्त मार्ग से ले गये और बाहर जंगल में पहुँचे। लाक्षागृह में वह वृद्धा और उसके पाँचों पुत्र जल मरे। छः लाशों को देखकर कौरवों ने समझ लिया कि पाण्डव कुन्ती के साथ जल मरे हैं।
लाङ्गली–[१] एक नदी [२] नारियल का पेड़।
लावाणक–मथुरा के पास एक प्राचीन स्थल।
लास्य–एक नृत्य विशेष जिसमें प्रेम की भाव-नाएँ विभिन्न हाव-भाव तथा अङ्गविन्यासों के द्वारा प्रकट की जाती हैं।
लास्यप्रिया–लास्य नामक नृत्यविनोद जिनको प्रिय है ऐसी देवी।
लिखित–एक प्रसिद्ध मुनि जो धर्मशास्त्र के प्रणेता थे।
लिङ्गपुराण–अठारह पुराणों में से एक।
लिङ्ग प्रतिष्ठा–शिवलिंग की प्रतिष्ठा।
लिवेङ्गदी–वह आधार जिस पर शिवलिंग स्थापित किया जाता है।
लीला तिलक–मलयालम भाषा का सबसे पहला साहित्य निरूपण ग्रंथ।
लीलावती–(१) एक वेश्या जिसने प्रोष्टपद मास में श्रीराधा देवी का व्रत रख कर मोक्ष प्राप्त किया था। [२] कोसल के राजा ध्रुवसन्धि की पत्नी। (दे: ध्रुवसन्धि)
लीलाविनोदिनी–देवी का विशेषण। प्रपञ्च-सृष्टि, स्थिति-संहार आदि लीलाओं से देवी आनन्द मनाती हैं।
लीलाविग्रहधारी–भगवान विष्णु का विशेषण। भगवान ने लीलामात्र से अनेकों अवतार लिये हैं।
लीलाशुक–विल्वमंगल (दे:–विल्वमंगल)
लोक–(दे: प्रपञ्च।) कुल चौदह लोक हैं। सत्य

लोक, तपोलोक, जनलोक, महर्लोक, सुर्लोक, भुवर्लोक, भूलोक, अतललोक, वितललोक, सुतललोक, तलातललोक, महातललोक रसातल और पाताललोक। विराट पुरुष का ध्यान करते समय, विराट पुरुष के सिर में सत्य, ललाट पर तप, मुख पर जन, कण्ठ पर महर्लोक, वक्ष पर सुवर्लोक, नाभि में भुवर्लोक, कमर पर भूलोक, जांघ के ऊपरी भाग पर अतल, अधो भाग पर वितल, जानुओं पर सुतल, टांग पर तलातल, एड़ी पर महातल, पादों के ऊपरि भाग पर रसातल, निचले भाग पर पाताल लोकों का संकल्प करते हैं।

लोकचक्षु–सूर्य का विशेषण।

लोकजननी–लक्ष्मी का विशेषण।

लोकनाथ–ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राजा, प्रभु आदि।

लोकपाल–इन्द्र आदि अष्ट दिक्पाल।

लोकपितामह–ब्रह्मा का विशेषण।

लोकबन्धु–सूर्य।

लोक यात्रा–चौदहों लोकों का अवसान, प्रलय।

लोकसाक्षी–[१] ब्रह्मा का विशेषण। [२] अग्नि।

लोकतीता–देवी की उपाधि, लोकों को अतिक्रमण कर रहने वाली देवी।

लोकाध्यक्ष–समस्त लोकों के अधिपति विष्णु भगवान।

लोकालोक–निर्मल जल के सागर के परे सप्त द्वीपों को चारों ओर से आवृत लोकालोक नामक एक पर्वत है। यह पहाड़ लोक [जो हिस्सा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित है] और आलोक [जहां सूर्य का प्रकाश नहीं जाता और अन्धकार रहता है] के बीच मध्यरेखा जैसा स्थित है। यह पहाड़ संसार को अन्धकार के प्रदेश से विभक्त करता है। यह तीनों लोकों के आगे सीमा की तरह स्थित है। वह इतना ऊंचा और विस्तृत है कि सूर्य, ध्रुव, नक्षत्र आदि हजारों ज्योतिर्गणों की किरणों को इस पार से उस पार नहीं जाने देता।

लोकावसान–प्रलय।

लोपामुद्रा–अगस्त्य ऋषि की पत्नी। विदर्भ राजा की पुत्री थी। कहा जाता है कि पितरों के मोक्ष के लिये अगस्त्य को विवाह करना पड़ा। तब उन्होंने विभिन्न जन्तुओं के अत्यन्त सुन्दर भागों को लेकर मुनि ने एक कन्या का निर्माण किया। उस समय विदर्भ राजा निस्सन्तान होने से दुःखी थे। अगस्त्य ने कन्या का नाम लोपामुद्रा रख कर राजा को दिया। जब कन्या यौवन को प्राप्त हुई तब अगस्त्य ने राजकुमारी को पत्नी रूप में मांगा। पहले राजा द्विविधा में पड़े। जब राजकुमारी ने भी मुनि की पत्नी बनने की अपनी इच्छा प्रकट की, तब राजा ने कन्या का विवाह महर्षि से कर दिया। लोपामुद्रा के हृदस्यु नाम का एक पुत्र हुआ जो हजारों पुत्रों की श्रेष्ठता और महिमा रखता था। जन्मते ही वह वेद मन्त्रों का उच्चारण करता था। पिता की होमाग्नि के लिये ईन्धन, ईध्म लाया करता था, इसलिये इध्मवाह कहलाता था।

लोमपाद–यदुवंश के एक राजा। ये ज्यामख के पुत्र थे।

लोमश–पुराणों की कथाओं और उपकथाओं के वक्ता एक मुनि। ये तपस्वी और धर्मनिष्ठ थे।

लोलाक्षी–[१] देवी का विशेषण. [२] एक सुन्दर स्त्री।

लोहित–[१] मंगल ग्रह [२] एक सांप [३] एक प्रकार का हरिण।

लोहिता–[१] आग की सात जिह्वाओं में से एक [२] लाल चन्दन।

लोहिताक्ष–विष्णु का विशेषण।

लोहिताश्व–हरिश्चन्द्र महाराजा के पुत्र ।

लोहित्य–एक नदी का नाम, ब्रह्म पुत्र।

व

वंशा–कश्यप ऋषि और प्राधा की एक पुत्री ।

वंशी–मुरली, वेणु ।

वंशीधर–श्रीकृष्ण का नाम ।

वक्र–मङ्गल, शनि आदि ग्रह जिनकी गति में वक्रता है ।

वक्रतुण्ड–गणेश का नाम ।

वङ्क्षु–गंगा नदी की एक शाखा । पौराणिक काल में इस नदी के तट पर म्लेच्छ रहते थे ।

वङ्ग–ययाति के पुत्र अनु के वंशज बलि की पत्नी से दीर्घतमा ऋषि के छः पुत्र हुए, इन में से एक । इन्होंने अपने नाम से एक राज्य बनाया जो आधुनिक वङ्ग देश या बंगाल है।

वचसाम्पति–(१) बृहस्पति का विशेषण (२) गुरु ग्रह ।

वज्र–इन्द्र का अमोघ आयुध । ऋषि सत्तम दधीचि विद्याव्रत और तप से अपना गात्र अतीव बलवान बनाया था । इसके अलावा नारायण कवच को जप और ध्यान से उनका शरीर और भी सुदृढ़ हो गया । वृत्रासुर को मारने के लिये इन्द्र ने भगवान के आदेशानुसार दधीचि महर्षि की हड्डियों से विश्वकर्मा से अमोघ वज्रायुध बनवाया । उस आयुध में भगवान की शक्ति भी सन्निहित थी । (२) प्रद्युम्न पुत्र अनिरुद्ध और रुक्मि की पौत्री के पुत्र । वे दस हजार गजवीरों का बल रखते थे । प्रभास क्षेत्र में यदुवंश का नाश होने पर केवल वज्र ही बचे । इनके पुत्र थे प्रतिभानु । वज्र ने ही सुभद्रा आदि यादव स्त्रियों का संरक्षण किया था । (३) एक प्रकार की कुश नामक घास ।

वज्रज्वाला–महाबलि की पुत्री ।

वज्रदत्त–प्राग्ज्योतिष के एक प्रसिद्ध राजा ।

वज्रदंष्ट्र–बलि का अनुचर एक राक्षस ।

वज्रधर–इन्द्र का विशेषण ।

वज्रनाभ–(१) सूर्यवंश के एक राजा बलस्थल के पुत्र (२) श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न की पत्नी प्रभावती के पिता ।

वज्रबाहु–(१)महत्तमुग्र नामक एक असुर और एक विद्याधर कन्या का पुत्र, एक दुष्ट राक्षस । कार्तिकेय ने इसको युद्ध में मारा ।(२) श्रीराम की वानर सेना का एक प्रबल वानर ।

वज्रमुष्टि–माल्यवान का पुत्र एक राक्षस ।

वज्रवेग–खर और दूषण का भाई एक राक्षस जो हनुमान से मारा गया ।

वज्रशीर्ष–भृगु के एक पुत्र ।

वज्रा–एक नदी ।

वज्रांग––कश्यप ऋषि और दिति का पुत्र । इसका और वरांगी का पुत्र तारकासुर था ।

वज्रिणी–(१) इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी (२) देवी का नाम इन्द्राणी रूपा है या वज्रों से अलंकृता देवी या वह देवी जिनका आयुध वज्र है ।

वज्री—इन्द्र ।

वज्रेश्वरी–देवी का विशेषण, जलन्धर पीठ की ईश्वरी ।

वञ्जुल–एक परम दारुण पक्षी जिसका चिल्लाना विजयसूचक समझा जाता है । कबन्ध से मुठभेड़ होने से पहले इस पक्षी का चिल्लाना सुनकर लक्ष्मण ने राम को विजय सूचना दी थी ।

वटवृक्ष–हिन्दुओं के लिए एक पवित्र वृक्ष ।

वटारोध–एक नरक ।

वटु–ब्रह्मचारी ।

वडवा–आश्विनी नाम की अपसरा जिसने घोड़ी के रूप में सूर्य के द्वारा आश्विनीकुमार नाम के दो पुत्र उत्पन्न करवाये ।

वडवाग्नि–समुद्र के भीतर रहने वाली आग । (दे: आंर्व) ।

वल्कल–वृक्षों की छाल जो ब्रह्मचारी पहनते हैं ।

वत्स–(१) काशी के राजा प्रदर्दन का पुत्र । बच्छड़ों से पला होने से यह नाम पड़ा । (२) एक देश का नाम जिसकी राजधानी कौशाम्वी थी जहाँ उदयन राज्य करते थे । उस राज्य के वासी । (३) शर्याति के वंशज राजा दिवोदास के पुत्र द्युमान । इनके वत्स, शत्रुजित, ऋतध्वज आदि नाम हैं ।

वत्सनाम–एक महर्षि ।

वत्सर–(१) ध्रुव और शिशुमार नामक प्रजापति की पुत्री भ्रमी के पुत्र । इनकी पत्नी थी आकाश गंगा की अधिष्ठात्री स्वर्वीथि और उनके छः पुत्र पुष्पार्ण, तिग्मकेतु, ईश, ऊर्ज वसु, जय हुये । (२) सूर्य को ज्योतिश्चक्र का एक बार चक्कर काटने को जो समय लगता है वह संवत्सर या वत्सर है । (३) विष्णु का नाम ।

वत्सवृद्ध–इक्ष्वाकु वंश के राजा उरुक्रिय के पुत्र, इनके पुत्र प्रतिव्योम थे ।

वत्सासुर–कंस का एक अनुचर जो बछड़े का रूप धारण कर कृष्ण को मारने के लिए गोप बालकों के झुण्ड में जा मिला । श्रीकृष्ण ने उसको पहचान कर उसकी टांगें पकड़कर कपित्थ वृक्ष के ऊपर पटक दिया । असुर ने मरते मरते अपना रूप धारण किया ।

वदान्य–(१) भगवान (२) एक ऋषि ।

वधूसरा–च्यवनाश्रम के पास की एक नदी ।

वन–ययाति के पुत्र अनु के वंशज उशीनर का पुत्र ।

वनदेवता–वन की अधिष्ठात्री देवी ।

वनध्वज–सूर्य वंश के राजा शुचि के पुत्र । इनके पुत्र ऊर्जकेतु थे ।

वनपर्व–महाभारत का एक मुख्य पर्व ।

वनमाला–जंगली फूलों की माला जो श्रीकृष्ण पहनते थे ।

वनमाली–श्रीकृष्ण का विशेषण ।

वनमालिनी–द्वारका का अपर नाम ।

वनस्थली–जंगल की भूमि ।

वनायु–(१) कश्यप और दनु का पुत्र एक प्रमुख दानव (२) उर्वशी और पुरुरवा का एक पुत्र (३) एक देश का नाम ।

वनेयु–महाराजा पुरु के वंशज रौद्राश्व और घृताची नाम की अपसरा का एक पुत्र ।

वन्दनमाला–किसी द्वार पर लगाई गई फूलमाला ।

वन्दना–एक प्राचीन पुण्य नदी ।

वन्दारुजनवत्सला–देवी का विशेषण, वन्दना करने वाले भक्त जनों को अनुग्रहीत करने में विशेष आनन्द लेने वाली ।

वन्दि–(१) जनक महाराजा के एक आस्थान कवि (२) वरुण का पुत्र ।

वंद्या–देवी का विशेषण ।

वयोवस्था–बाल्य, पौगण्ड, कैशोरादि अवस्थायें ।

वरणा–भगवान के दायें पांव से निकली महा नदी । इनके वायें पाँव से असि नाम की नदी निकली । इनके बीच की पुण्य भूमि वाराणसी के नाम से सुप्रसिद्ध है ।

वरतन्तु–एक प्राचीन महर्षि का नाम (दे:- कौत्स) ।

वरद–(१) भक्त जनों को वर देने वाले भगवान (२) स्कन्द का एक योद्धा ।

वरदक्षिणा–वधू के पिता द्वारा वर को दिया जाने वाला उपहार ।

वरदहस्त–आश्रय ।

वरदाननिषेविता–वरदा से सरस्वती देवी तक चार शक्तियों से सेवित देवी ।

वरयु–महोजस नामक राजा का वंशज एक राजा ।

वररुचि–एक प्राचीन ज्योतिशास्त्रज्ञ, पण्डित और महाज्ञानी । कौशाम्बी में सोमदत्त नामक ब्राह्मण और वसुदत्ता के पुत्र होकर जन्मे । वररुचि की ऐसी कुशाग्र बुद्धि थी कि बचपन से ही एक बार सुन या देख लेने पर वे वैसा ही सुना या दिखा सकते थे। इनके गुरु थे वर्ष । इन्होंने अपने गुरु के भाई उपवर्ष की सुन्दर कन्या से विवाह किया । सरस्वती देवी इनकी जिह्वा पर रहती थी । ये विक्रमादित्य महाराजा के दरबार के नवरत्नों में से एक थे ।

वरा–पार्वती देवी का विशेषण ।

वराङ्गी–(१) वज्राङ्ग नामक असुर की पत्नी (२) सोमवंश के राज संयाति की पत्नी । इनके पुत्र थे अहंयाति ।

वराह–(१) भगवान विष्णु का एक मुख्य अवतार । कश्यप और दिति के पुत्र हिरण्याक्ष ने ब्रह्मा की तपस्या कर अतुल बल प्राप्त किया । एक बार हिरण्याक्ष ने भूमि को चुराकर जलान्दर भाग में छिपा लिया । ब्रह्मादि देवताओं की प्रीति के लिए ब्रह्मा की भृकुटी मध्य से वराह का रूप धारण कर महाविष्णु ने अवतार लिये । समुद्र से भूमि का उद्धार किया और हिरण्याक्ष का वध किया । (२) मगध की राजधानी गिरिव्रज के पास एक पहाड़ । (३) शूकराकृति में बना सैनिक व्यूह (४) एक ऋषि ।

वराहकल्प–वह कल्प जिसमें महाविष्णु ने वराहावतार लिया था ।

वराहमिहिर–एक विख्यात ज्योतिर्वेत्ता, बृहत्संहिता का प्रणेता । राजा विक्रमादित्य के राजदर्बार के नवरत्नों में से एक ।

वराहशिला–बद्रीनाथ में अलकनन्दा में स्थित एक शिला । हिरण्याक्ष का वध करने के बाद वाराह ने यहाँ आकर भगवान की उपासना की । इसकी स्मृति रूप यह शिला है ।

वरिष्ठ(१) चाक्षुप मनु के एक पुत्र । (२) अत्युत्तम, भगवान की उपाधि ।

वरीयान्–विश्रवा और गती का एक पुत्र ।

वरुण–अष्ट दिक् पालकों में से एक । कश्यप ऋषि और दक्षपुत्री अदिति के पुत्र पश्चिम दिशा के अधिपति, जल के देवता, द्वादश आदित्यों में से एक । परशुराम ने जो वैष्णव चाप श्रीराम को सौंपा था श्रीराम ने उसे वरुण को दिया । खाण्डव-दहन में अग्नि के कहने पर वरुण ने अर्जुन को गाण्डीव धनुष और कभी न खाली होने वाला तरकस दिया । मित्र और वरुण के पुत्र थे अगस्त्य और वसिष्ठ (दे: मित्र) (२) कश्यप मुनि और दक्ष पुत्री मुनि का पुत्र एक गन्धर्व ।

वरुणतीर्थ—सिन्धु नदी जहाँ समुद्र में गिरती है वहाँ का पुण्यतीर्थ ।

वरुणानी–वरुण की पत्नी ।

वरूथ–अंगराजा क वंश का एक राजा ।

वरुथिनी–(१) एक अपसरा (२) सेना ।

वरेण्य–भृगुमहर्षि का एक पुत्र ।

वर्ग—एक अपमरा जो शापग्रस्त होकर अपनी चार सखियों के साथ मकर रूप में पञ्चतीर्थ में रहती थी और जिनको अर्जुन से शाप मोक्ष मिला ।

वर्चस्–अष्टवसुओं में से सोम का पुत्र । इनका पुनर्जन्म अभिमन्यु था ।

वर्ण–(१) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्ण हैं (दे: चतुर्वर्ण),(२) गीत-कर्म ।

वर्णरूपिणी–देवी का विशेषण । वर्ण चौंसठ हैं । उन वर्णो के रूप से युक्त देवी ।

वर्णसंकर–अन्तर्जातीय विवाह के कारण वर्णो का सम्मिश्रण । इससे कुल की पवित्रता नष्ट हो जाती है और पितृलोग भी अधोगति को पाते हैं।

वर्धमान–(१) महाविष्णु का नाम (२) (एक

दय का नाम, वर्तमान वर्दवान ।)

वर्ष–(१) महाद्वीपों के विभाग । जम्बूद्वीप के नौ वर्ष विभाग है जैसे कुरु, हिरण्यमय, रम्यक, इलाव्रत, हरि, केतुमाल, भद्राश्व, किन्नर और भारत। (२) संवत्सर (३) वररुचि के गुरु ।

वर्षा–एक ऋतु का नाम ।

वल-ब्रह्मचर्य से तेजस्वी, व्रत-उपासना में निरत, एक असुर जिसको इन्द्र ने मारा था ।

वल्कल–वृक्ष की छाल जिसे ब्रह्मचारी और सन्यासी पहनते हैं।

वल्गुजंघ–विश्वामित्र के एक पुत्र ।

वल्लभाचार्य–वैष्णव संप्रदाय के प्रसिद्ध प्रवर्तक

वषटकार–भगवान विष्णु जिनके उद्देश्य से यज्ञ मे वषट क्रिया की जाती है ।

वसाति–चन्द्रवंश के एक राजा (२) एक जनपद ।

वसुधारा–बद्रीनाथ में एक पुण्य धारा, ऊँचा झरना है ।

वसिष्ठ—ब्रह्मा के पुत्र अति तेजस्वी, उत्तम ब्रह्मण, मन्त्र जप करने वालों में श्रेष्ठ ऋषि थे । इनके तीन जन्म हुए । परंपरा से ये सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित रहे हैं । इनकी पत्नी पतिव्रता शिरोमणि अरुन्धति थी । भिन्न भिन्न पुराणों के अनुसार इन दोनों के तीन जन्म हुए हैं । वसिष्ठ का दूसरा जन्म ब्रह्मा के यज्ञ कुण्ड से और तीसरा जन्म मित्रावरुणों के पुत्र होकर अगस्त्य के साथ घड़े में हुआ था। विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच में हमेशा लड़ाई होती थी। विश्वामित्र प्रवल राजा थे । अपनी तप शक्ति के प्रभाव से नन्दिनी के द्वारा एक बार वशिष्ठ ने आश्रम में आये हुए विश्वामित्र और सैनिकों का राजोचित सत्कार किया । विश्वामित्र ने नन्दिनी को ले जाना चाहा । वे वशिष्ठ के रोकने परभी न माने । जब विश्वामित्र उसे वल प्रयोग से ले जाने लगे, वसिष्ठ का इंगित जान कर नन्दिनी वहुत क्रुद्ध हुई और उसके शरीर से अनेक योद्धा और म्लेक्ष निकले जिन्होंने विश्वामित्र के सैनिकों को बुरी तरह से परास्त किया । राज वल से ब्रह्मवल ज्यादा महत्व का जानकर विश्वामित्र राज्य छोड़कर तपस्या कर ब्रह्मर्षि हो गये । निमि चक्रवर्ति को वशिष्ठ ने शाप दिया था और निमि के प्रतिशाप के कारण वसिष्ठ को अपना शरीर छोड़ना पड़ा और मित्रावरुणों का पुत्र होकर जन्में । श्रीरामचन्द्र जी जब विरक्त का जीवन बिताने को तैयार हो गये तब महाराजा दशरथ के अदेशानुसार वसिष्ठ ने राजकुमार को ज्ञानोपदेश देकर राज्य कार्य मे रुचि लेने को बाध्य किया । इन उपदेशों का संग्रह ज्ञान वसिष्ठ से प्रसिद्ध है । भगवान श्री राम को शिष्य रूप में पाकर इन्होंने अपने जीवन को कृतकृत्य बनाया । वे अणिमादि सिद्धियों से युक्त, वसुसम्पन्न और गृहवासियों में सर्वश्रेष्ठ थे । काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि से पर थे । नौ पुत्रों का संहार करने वाले विश्वामित्र के प्रति अपने में पूरा सामार्थ्य होने पर भी क्रोध नहीं किया । महादेव जी ने प्रसन्न होकर वशिष्ठ जी को ब्राह्मणों का आधिपत्य प्रदान किया । प्राय: सभी पुराणों में इनकी जीवन घटनायें प्रतिपादित हैं ।

वसु—(१) सब भूतों के वासस्थान भगवान विष्णु, सबके अन्त:करण में निवास करने वाले । (२) अष्टवसु, एक देव समूह:–धर, ध्रुव, आप, अनिल, अनल, सोम, प्रत्यूष और प्रभास (३) उपचरिवसु (दे:- उपचरिवसु) (४) घन (५) पुरुरवा के पुत्र विजय के वंशज कुश के पुत्र । (६) कन्याकुब्ज के राजा कुश और वैदर्भी का एक पुत्र जिन्होंने मागधी नदी के पास पांच पहाड़ों के बीच गिरिव्रज

नामक एक नगर बसाया।(७) शिव का नाम (८) एक पण्डित और ज्ञानी मुनि जिनके पुत्र पैल थे।

वसुदा–धन को रत्न को दान करने वाली देवी।

वसुदेव–यादववंश के शूरसेन के पुत्र, देवकी के पति, श्रीकृष्ण और बलराम के पिता। इन्होंने देवक की सात पुत्रियों धृतदेवा, शान्तिदेवा, उपदेवा, श्रीदेवा, देवरक्षिता, सहदेवा और देवकी से विवाह किया और उनके अनेक पुत्र हुए। वसुदेव आनक दुन्दुभि कहलाते थे क्योंकि उनके जन्म के समय आनक और दुन्दुभि अपने आप बजे थे। वसुदेव और देवकी के विवाह के बाद ही कंश को अशरीर वाक्य सुनाई पड़ा था कि देवकी और वसुदेव का आठवां पुत्र उसको मारेगा। इसके फलस्वरूप इनको कष्ठ उठाने पड़े, बहुत साल कारागार में बिताना पड़ा और कारागार में ही बच्चे पैदा हुए। कंस की मृत्यु के बाद ही वे अपने पुत्रों का मुख भोग सके। महाभारत के युद्ध के बाद जब सब द्वारका में रहते थे तब उन्होंने नारद महर्षि से जन्म-मृत्यु रूप भयावह संसार से पार जाने का उपदेश प्राप्त किया। यदुवंश के नाश के बाद श्रीकृष्ण और बलराम का स्वर्गारोहण होने पर, वसुदेव ने हृदय में परमात्मा का ध्यान कर शरीर त्याग किया। वसुदेव की मृत्यु पर उनकी पत्नियां सती हो गईं। वसुदेव के शौरी, यदूद्वह आदि अनेक नाम हैं।

वसुदेव्या–धनिष्ठा नाम का नक्षत्र।

वसुधर–पहाड़।

वसुधा–(१) पृथ्वी (२) नर्मदा नाम की अपसरा की पुत्री।

वसुधारा-यह लगभग चार सौ फीट ऊँचा बद्रीनाथ के पास एक प्रपात है। यह एक पुण्य स्थान है और बद्रीनाथ के दर्शन करने को आने वाले तीर्थ यात्रियों में बहुत से इधर भी आते हैं। वसुधारा में स्नान करने से महत् पुण्य मिलता है।

वसुन्धरा–रत्नों से भरी पृथ्वी।

वसुप्रद–(१)प्रचुर धन प्रदान करने वाले अपने भक्तों को मोक्षरूप महान धन देने वाले भागवान विष्णु। (२) स्कन्द देव का एक योद्धा।

वसुप्राण–अग्नि का विशेषण।

वसुमती–पृथ्वी।

वसुमना–(१) समान रूप से सब में निवास करने की शक्ति से युक्त मनवाले भगवान(२) इक्ष्वाकुवंश के राजा हर्यश्वा और ययाति की पुत्री माधवी का पुत्र। इन्होंने वाजपेय यज्ञ किया था और अपने पुण्य का दान ययाति को दिया। इसलिये दानवान कहलाते थे। (२) एक अग्नि।

वसुमान–(१) पुरुरवा और उर्वशी के पुत्र श्रुतायु के पुत्र। (२) वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

वसुमित्र–एक राजा।

वसुषेण–कर्ण का नाम।

वसुस्थली–कुवेर की नगरी का विशेषण।

वसुहोम–अंग राज्य के एक राजा।

वसुस्थली–कुवेर की नगरी का विशेषण।

वस्त्रप–क्षत्रिय जाति का एक विभाग।

वस्वनन्त–जनक वंश के उपगुप्त के पुत्र, इनके युयुध थे।

वह्नि–(१) आग (२) ययाति के पुत्र तुर्वसु का एक पुत्र और वह्नि का पुत्र था भर्ग।[३] एक असुर [४] एक वानर श्रेष्ठ।

वह्निज्वाल–एक नरक।

वह्निमित्र–हवा, वायु।

वागभट–एक प्रसिद्ध संस्कृत पंडित जो अष्टांग हृदय, अष्टांग संग्रह नामक वैद्य ग्रन्थ लिख कर यशस्वी हो गये। इन्होंने मुस्लिम बालक का वेष धारण कर मुहम्मदियों से

वैद्यशास्त्र सीखा।
वागीन्द्र–गृत्समद के वंश का एक पुत्र।
वागीश्वरी–सरस्वती देवी।
वाचस्पति–(१) विद्या के स्वामी भगवान विष्णु (२) बृहस्पति।
वाजपेय–एक प्रकार का यज्ञ।
वाजसनेय–शुल्क यजुर्वेद के प्रणेता याज्ञवल्क्य।
वाजसनेयी–शुल्क यजुर्वेद के अनुयायी।
वाणी–विद्या की देवी सरस्वती।
वात–(१) स्वारोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक। (२) शरीर के तीन दोषों, वात पित्त, कफ, में से एक। (३) वायु का देवता।
वातघ्न–विश्वामित्र का एक पुत्र।
वातपुत्र–हनुमान, भीमसेन।
वातवेग–धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
वातापि–(१) एक राक्षस जो ब्राह्मणों के उदर में प्रवेश कर उदर को फाड़ कर बाहर निकालता था और वे मर जाते थे। इसका भाई इल्वल था। ये दोनों मिलकर ऋषि मुनियों को मारते थे। एक बार अगस्त्य ऋषि के उदर में जब इसने प्रवेश किया तब ऋषि की तपाग्नि मे यह पच गया और इस तरह इसकी मृत्यु हुई। (२) कश्यप ऋषि और दनु का पुत्र एक राक्षस।
वाति–(१) सूर्य (२) चन्द्र (३)-वायु।
वात्सायन–(१) काम सूत्र के प्रणेता (२) न्याय सूत्र पर किये गये भाष्य के रचयिता।
वात्सि–शूद्र स्त्री और ब्राह्मण की सन्तान।
वानप्रस्थ–चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम। गुरुकुल में रहकर वेदों और शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद अपनी शक्ति के अनुसार गुरु-दक्षिणा देकर गुरु की आज्ञा पाकर अपनी इच्छानुसार योग्य कन्या से शादी कर गृहस्थाश्रम स्वीकार कर सकता है या संसार के भोग-विलास को त्याग कर सीधे वानप्रस्थ। गृहस्थाश्रम के बाद भोग-विलासों से विरक्त होकर मोक्ष प्राप्ति के लिये गृहस्थाश्रमी भी वानप्रस्थाश्रम स्वीकार कर सकता है। वन में रहकर वानप्रस्थि कठिन व्रत रखता है। चरु और पुरोडाश खायें; कालोचित वन्य फल खाना, हिम, वायु, अग्नि, वर्षा, सूर्यताप सहना चाहिए। अग्नि की रक्षा के लिये ही किसी पर्णशाला या अद्रिगुफा की शरण ले सकता है। केश, रोम, श्मश्रु, नख, को निकाले नहीं, कमण्डल जल के लिये, पहनाने के लिये कृष्णाजिन या वल्कल रखें। सुविधा और शक्ति के अनुसार १२,८,४,२ या एक साल का व्रताचरण करें जिससे कठिन व्रत पालन से उनका बुरा असर न पड़ें। बारह साल के व्रत पालने के बाद यदि बुद्धि और मन से स्वस्थ हो तो सब कुछ त्याग कर कामना रहित होकर सन्यासाश्रम स्वीकार कर सकता है।
वानर–वन्दर, पुराणों में विशेषकर रामायण में इनका प्रमुख स्थान है। रामायण के वानर देवताओं के अंशावतार माने जाते हैं। इनमें अनेक प्रबल वीर, पराक्रमी, रामभक्त थे जैसे वालि, सुग्रीव, हनुमान, अंगद, नल, नील, मैन्द आदि जिनमें श्रीराम के विश्वस्त दास, कृपापात्र हनुमान रामभक्ति की तीव्रता के कारण देवों जैसे पूजा के पात्र हो गये। हनुमान के वंशज होने से आधुनिक काल में भी अधिकांश लोग वानरों को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं, उनका किसी प्रकार अनिष्ट करना पाप समझा जाता है।
वानरेन्द्र–वालि, सुग्रीव, हनुमान आदि का विशेषण।
वानव–(१) एक प्राचीन गन्धर्व (२) देव, गन्धर्व आदि।
वानायु–भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित एक देश।

वामकेशी—सुन्दर केशों वाली देवी ।

वामन—महाविष्णु का अवतार दिति के पुत्र महाबलि शुक्राचार्य के तपबल से इन्द्रादि देवों को परास्त कर स्वर्ग में रहने लगे। अपने पुत्रों का अनिष्ठ देखकर कश्यप की पत्नी अदिति ने देवों की रक्षा करने वाले एक पुत्र के लिये पति के आदेशानुसार पयोव्रत रखा। भाद्रपद के शुक्ल पक्ष में श्रावण द्वादशी के दिन अभिजित मुहूर्त में भगवान का अदिति के गर्भ से वामन अवतार हुआ। जन्म के समय भगवान चतुर्भुज धारी थे, लेकिन तत्क्षण ही उनका पांच वर्ष के ब्राह्मण वटु का (वामन रूप) रूप हो गया। तीनों लोकों के निवासी आनन्द में नाचने गाने, वाद्य बजाने लगे। ऋषियों ने कश्यप प्रजापति के नेतृत्व में उनका उपनयन संस्कार किया, और सभी देवी देवताओं ने उनको गायत्री मन्त्र, यज्ञोपवीत, कृष्णाजिन, दण्ड, कमण्डलु, छाता, अक्षमाला आदि उपयुक्त चीजें भेंट कीं। भगवती उमा ने भिक्षा दी। अतुल पराक्रमशाली बलि के यज्ञ की वार्ता सुनकर वामन रूप भगवान नर्मदा के तीर पर भृगुकच्छ नामक पुण्य-स्थान पर गये। वहां उन तेजोमय वटु को देखकर अत्यधिक प्रसन्नता और आदर के भाव बलि ने स्वागत किया और इच्छित वस्तु मांगने को कहा। भगवान ने राजाधिराज से केवल तीन कदम भूमि मांगी। भृगु के निवारण करने पर भी बलि दान देने को तैयार हुए। भृगु ने चेतावनी दी कि ये साधारण वटु नहीं, लेकिन मयापति महाविष्णु है और बलि का पतन होगा। तब भी बलि अपनी प्रतिज्ञा से पीछे नहीं हटे। भूमि का दान करने के लिये पत्नी के साथ भगवान का पाद प्रक्षालन किया। वामन का बृहदाकार, विश्वरूप हुआ और दो ही कदमों में तीनों लोकों को नाप लिया। अपनी प्रतिज्ञा रखने के लिये तीसरे कदम के लिये बलि ने अपना सिर नवाया। गरुड़ ने भगवान की इच्छा से बलि को पाश बचन में डाला और भगवान ने अपने चरण कमल बलि के सिर पर रखा और बलि का दर्प दूर किया। भगवान बलि की श्रद्धा और भक्ति देखकर अतीव सन्तुष्ट हुए और दण्ड के बहाने उनको अनुग्रहीत ही किया। भगवान ने कहा कि बलि ने मेरी माया को जीता है, सावर्णि मन्वन्तर में इन्द्र बन कर स्वर्ग-सुख भोगेंगे। तब तक सुतल में जिसका सौन्दर्य अवर्णनीय है, रहेंगे। जहां किसी प्रकार का दुःख न होगा, और इच्छा मात्र से मेरे दर्शन करेंगे। इस प्रकार बलि को आशीर्वाद देकर बलि का यज्ञ भृगु आदि महर्षियों से पूरा करा कर इन्द्र को स्वर्गपद दिया। भगवान अदिति के गर्भ से जन्म लेने से उपेन्द्र भी कहलाते हैं। (२) क्रौंच द्वीप का एक पर्वत (३) कुरुक्षेत्र के पास एक पुण्य तीर्थ। (४) चार श्रेष्ठ गजों में से एक।

वामन पुराण—अठारह पुराणों में से एक। भगवान विष्णु के वामन अवतार और बाद के अवतारों पर इसमें प्रतिपादन हुआ है।

वामनयना—[१] सुन्दर आंखों वाली देवी [२] वाम मार्ग को चलाने वाली देवी।

वाममार्ग—तान्त्रिक मत में प्रतिपादित अनुष्ठान पद्धति।

वामशील—कामदेव का विशेषण।

वायस—[१] कौवा [२] सुगन्धित अगर की लकड़ी।

वायसविद्या—भूत, वर्तमान और भविष्य को कौए से बतलाने की विद्या।

वायव्यास्त्र—एक दिव्य अस्त्र जिसके मन्त्र देवता वायु भगवान है।

वायु—अष्ट दिक्पालकों में से एक, उत्तर पश्चिम दिशा के देवता। इनकी राजधानी का नाम

गन्धवती है। इनके सुप्रसिद्ध पुत्र हनुमान और भीमसेन हैं। जीवन के लिये महत्वपूर्ण पाँच प्रकार का वायु है प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान। अधरारणि और उत्तरारणि के मंथन से अग्नि पैदा होता है। इसमें व्यान वायु से मथने वाले को बल मिलता है इसलिये अग्नि ऋग्वेद में वायुपुत्र समझे जाते हैं। वायु ने कुशनाभ की पुत्रियों को उनकी पत्नी बनने से इनकार करने पर शाप देकर कुब्जा बनाया। इन्द्र के वज्र प्रहार से वायु भगवान ने ही मैनाक को बचा कर समुद्र के अन्दर छिपा लिया था [दे:—हनुमान, भीमसेन]।

वायुचक्र—एक मुनि। मङ्कणक नामक मनि ने वीर्य को घड़े में रख दिया था जिससे वायुचक्र, वायुज्वाल और वायुबल नामक तीन पुत्र हुए।

वायुपुत्र—हनुमान, भीमसेन का विशेषण।

वायुपुराण—अठारह पुराणों में से एक।

वायुमण्डल—आकाश मण्डल।

वायु वाहन—वायु को गमन करने वाली शक्ति देने वाले भगवान।

वायुसख—आग।

वारण—[१] हाथी [२] प्राचीन भारत का एक देश।

वारणसाह्वय—हस्तिनापुर।

वारणावत—एक नगर का नाम। दुर्योधन ने पाण्डवों को मारने के उद्देश्य से वारणावत में लाखा गृह बनवाया था।

वाराणसी—पुण्य तीर्थ काशी। पहले इसका नाम प्रयाग था। भगवान विष्णु के अंशभूत योगशायी होकर प्रयाग में रहते हैं। उनके दोनों पैरों से वरणा और असी नाम की दो नदियाँ निकलीं। उन दोनों नदियों के बीच का प्रदेश वाराणसी हो गया। वाराणसी के विश्वनाथ का क्षेत्र अति प्रसिद्ध है। गंगा भगवान के लिङ्ग को धोती हुई सी बहती है। यहाँ अनेकों पुण्य और प्रसिद्ध क्षेत्र हैं जैसे विश्वनाथ, दुर्गा, श्रीकृष्ण, अय्यप्पन आदि के क्षेत्र। वाराणसी के मध्य भाग को अविमुक्त कहते हैं जहाँ मृत्यु होने से मोक्ष प्राप्ति होती है। ऐसा विश्वास है कि यहाँ मृतप्राय मनुष्य के कान में शिव जी आकर तारक मन्त्र [राम नाम] कहते हैं जिससे भगवान उसको मोक्ष देते हैं।

वाराह—[१] वर्तमान कल्प का नाम [२] कुरु क्षेत्र का एक पुण्य स्थान।

वाराही—[१] पृथ्वी [२] वराह रूप में महाविष्णु की शक्ति।

वारिज—कमल।

वारिनिधि—समुद्र।

वारुणि—अगस्त्य और वसिष्ठ का विशेषण।

वारुणी—[१] खजूर से निकला एक मद्य [२] वायु देवतात्मक एक नाडी [३] वरुण से सम्बन्धित एक मद्य [४] वरुण की पुत्री, समुद्र मन्थन के समय कमल नेत्रों वाली अति सुन्दर रमणी के रूप में निकली जिसको दैत्यों और दानवों ने अपना लिया।

वारुणीतीर्थ—दक्षिण भारत के पाण्ड्य देश का एक पुण्य तीर्थ।

वारुणीमान—वारुणी से युक्त आदि शेष।

वार्क्षी—कण्डु महर्षि की कन्या जिसका पालन पोषण वृक्षों ने किया था और जिसका विवाह प्राचीन बर्हि के दस पुत्र प्रचेतसों से हुआ। अपर नाम मारिषा है [दे: मारिषा]।

वार्धक्षेमि—वृष्णि वंश के एक प्रबल राजा। भारत युद्ध में पाण्डव पक्ष से लड़े और कृपाचार्य से मारे गये।

वार्ष्णेय—[१] वृष्णि के उत्पन्न यादवों को वार्ष्णेय कहते है, विशेषकर श्रीकृष्ण का नाम। [२] राजा नल का सारथि। जब जुआ में हारकर नल और दमयन्ती को राज्य छोड़कर जाना

पड़ा तब वार्ष्णेय नल के पुत्र इन्द्रसेन और पुत्री इद्रसेना को कुण्डिनपुर दमयन्ती के पिता के पास ले गया था ।

वालखिल्य–साठ हजार महर्षि जो अंगुष्ठ के अग्रभाग बराबर ही हैं । सौर रथ में सूर्य के समाने बैठकर सूक्त वाक्यों से सूर्य की स्तुति कहते हैं ।

वालि–प्रसिद्ध वानरराजा वालि [दे: वालि]

वाल्मीकि–आदि कवि और रामायण के रचयिता, बड़े श्रीराम भक्त थे । जन्म से ब्राह्मण थे, परन्तु बचपन में माता-पिता से परित्यक्त होने पर कुछ जंगली जातियों ने इनको चोरी करना सिखाया था । ये वन में पथिकों को लूट कर जीविका चलाते थे । एक बार सप्तर्षि उस वन से जा रहे थे और वाल्मीकि उनको भी लूटने को तैयार हो गये । ऋषियों ने पूछा कि जिन भार्या-पुत्रों के लिये तुम लूट-मार करते हो, क्या वे इस पाप के भागी बनेंगे ? इस प्रश्न से वाल्मीकि घबरा गये और घर आकर कलत्र पुत्रों से यही प्रश्न पूछा । वे तैयार नही थे । यह उत्तर उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन लाया और ऋषियों के पैरों पड़ कर पाप से छूटने का उपाय पूछा । ऋषियों ने उन अनपढ़ को दो पेड़ों के बीच में बिठाकर राम का नाम उलटा जपने को कहा । यह जप राम-राम हो गया । सालों बीत जाने पर वे वल्मीक से ढक गये और वे ही ऋषि पुन. उस वन मे आ गये । वल्मीक मे उनको बाहर किया, उनका नाम वाल्मीकि हो गया । ब्रह्म ज्ञान पाकर महर्षि हो गये । तमसा नदी पर आश्रम बनाकर अपने शिष्यों के साथ रहते थे और यही उन्होंने रामायण की रचना की । वाल्मीकि के आश्रम में श्रीराम की उपेक्षिता सीता रही और लव-कुशों का जन्म उनके आश्रम में हुआ । सीता देवी की चारित्र शुद्धि सिद्ध करने के लिये वे सीता को अयोध्या ले गये और वहाँ अपनी पतिव्रता को सिद्ध करती हुई सीता देवी भूमि में समा गईं । [दे: रामायण, लव, कुश]

वासना–स्मृति में प्राप्त ज्ञान । अपने पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मो का अनजाने में मन पर पड़ा हुआ संस्कार जिससे इस जन्म के सुख और दु:ख की उत्पत्ति होती है ।

वासव–इन्द्र का नाम ।

वासवदत्ता–कई कहानियों मे वर्णित एक नायिका प्रसिद्ध राजा उदयन की पत्नी है । इनकी कथा को लेकर बाण कवि ने स्वप्न वासवदत्ता' नामक प्रसिद्ध नाटक रचा ।

वासवानुज–महाविष्णु । वामनावतार ।

वासवी–[१] व्यास की माता सत्यवती का अपर नाम [२] इन्द्र की पत्नी ।

वासिष्ठतीर्थ–एक पुण्य तीर्थ ।

वासु–विश्वात्मा, परमात्मा, विष्णु ।

वासुकि–नागों का राजा । कश्यप और कद्रू के पुत्र नागों में ज्येष्ठ और प्रमुख नाग । जब विनता और कद्रू में उच्चैश्रवा के रंग के बारे में झगड़ा हुआ था माँ की झूठी बात स्थापित करने को वासुकि ने इनकार किया । तब से वासुकि और उसके मित्र दूसरे नाग अलग रहने लगे । क्षीर सागर के मंथन के समय मन्दर पर्वत रूप मथानी की रस्सी वासुकि ही बने । वासुकि भगवान शिव के हाथ का कङ्कण है । जनमेजय के यज्ञ में जब असंख्य सर्प होमाग्नि में जल मरे तब बचे हुए सर्पो की रक्षा के लिये वासुकि ने अपनी बहन जरत्कारु और ऋषि जरत्कारु के पुत्र आस्तिक ऋषि को भेजा । जब बलराम का निर्माण हुआ पाताल में संकर्षण मूर्ति का स्वागत करने के लिये वासुकि सबसे पहले गया । एक बार वासुकि और वायु देवता में झगड़ा हुआ जिससे हिमालय का एक शिखर

त्रिकूट दक्षिण समुद्र में गिर पड़ा । बाद में इस पर्वत पर लङ्का नगरी बसाई गई ।

वासुकीतीर्थ–प्रयाग का एक पुण्य तीर्थ, अपर नाम भोगवती तीर्थ है ।

वासुदेव–(१) वसुदेव के पुत्र, भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण । वसुदेव के पुत्र वासुदेव कहलाते है । समस्त प्राणियों को अपने में बसाने वाले तथा सब भूतों में बसाने वाले दिव्य स्वरूप भगवान विष्णु (दे: श्रीकृष्ण) (२) चित्त के अधिष्ठान देवता (३) पौंड्रक वासुदेव (४) कपिल वासुदेव ।

वास्तुपुरुष–पुरातन काल का एक भयङ्कर भूत जिससे सभी चराचर भय खाते थे । देवताओं ने उसको भूमि के अन्दर गाड़ दिया । यह है वस्तु पुरुष । यह भवनो का देवता माना जाता है । भवन निर्माण के बाद उसमे रहने वालों को कोई अमङ्गल या पीडा न हो इसके लिए इस वस्तु पुरुष को बलि दी जाती है जो वास्तु बलि कहलाती है ।

वाहन–महाविष्णु, ब्रह्मा, शिव, यम, सुब्रह्मण्य, गणेश, आदि देवताओं का अपना-अपना वाहन होता है जैसे गरुड, हंस, बैल, भैंसा, मोर, चुहिया आदि ।

वाहिनी–(१) सोमवंश के राजा कुरु की पत्नी (२) एक सेना विभाग जिसमें ८१ गज, ८१ रथ, २४३ अश्वारोही और ४०५ पदाति होते हैं ।

वाहिनीपति–(१) सेनापति (२) समुद्र ।

वाह्लि–एक देश का नाम ।

विंश–इक्ष्वाकु महाराजा के ज्येष्ठ पुत्र ।

विकट—(१) एक असुर (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

विकम्पन–रावण का एक प्रमुख सेना नायक ।

विकर्ण–धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ये बड़े वीर, धर्मात्मा, महारथी थे और भारत युद्ध में मुख्य भाग लिया । कौरवों की सभा में अत्याचारों से पीड़ित द्रौपदी ने जिस समय सब लोगों से पूछा कि मैं हारी गई या नहीं उस समय विदुर को छोड़कर शेष सभी सभासद चुप रहे । तब विकर्ण ने खड़े होकर बड़ी तीव्र भाषा में न्याय धर्म के अनुकूल स्पष्ट कहा था कि द्रौपदी हम लोगों के द्वारा जीती नहीं गई है । (२) एक महर्षि जो बड़े शिव भक्त थे ।

विकर्षण–कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

विकुक्षि–इक्ष्वाकु महाराजा के पुत्र । एक बार राजा ने यज्ञ के कार्यार्थ मांस लाने के लिये विकुक्षि को वन भेजा । शिकार कर विकुक्षि ने बहुत सा मास इकट्ठा किया, लेकिन लौटते समय रास्ते में अधिक भूख लगने से उसमें से थोडा सा शश मांस पका कर खा लिया । बाकी राजा को दिया । मांस पका कर राजा ने पहले गुरु वसिष्ठ को भेंट की । लेकिन उसको जूठा मास कहकर वसिष्ठ ने अस्वीकार किया । जब सभी बातें पता लग गईं राजा ने पुत्र को राज्य से निष्कासित किया । वन मे रहकर फल फूल खाकर रहने लगे । शश का मास खाने से शशाद नाम पड़ा । जब इक्ष्वाकु महाराजा की मृत्यु हुई विकुक्षि राज्य को लौट गये और राजा बने । इनके पुत्र थे सुविख्यात ककुस्थ ।

विकुण्डल–एक धनी वैश्य के दो पुत्र थे विकुण्डल और श्रीकुण्डल । दुर्मार्ग पर चलकर धन का दुर्व्यय कर दोनों गरीब होकर मरे । मृत्यु के बाद यमदूत श्रीकुण्डल को नरक ले गये और विकुण्डल को विष्णुदूत स्वर्ग ले गये । पूछने पर देव दूतों ने कहा कि यद्यपि दोनों ने बराबर पाप किये हैं, किन्तु यमुना तीर वासी एक ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के संग दो बार सर्वपाप हारिणी कालिन्दी में माघ स्नान करने का सौभाग्य तुमको मिला था । एक से तुम्हारा पाप कट गया, दूसरे से स्वर्ग की

प्राप्ति ।

विकृति–ययाति वंश के एक राजा ।

विक्रम–गरुड़ के द्वारा गमन करने वाले भगवान ।

विक्रमादित्य–उज्जैनी के एक प्रसिद्ध राजा जिनके बारे में अनेक कथायें प्रचलित हैं। ये बड़े वीर, पराक्रमी, बुद्धिमान राजा थे। इनका न्याय विश्रुत था और इनकी मृत्यु के अनेकों वर्षों के बाद भी यह बात माननीय थी कि उनके सिंहासन पर बैठकर कोई अन्यायी भी अन्याय नहीं कर सकता। इनके दरबार में ही कालिदास आदि नवरत्न थे। इनके मित्र वेताल थे और मन्त्री भट्टि अति बुद्धिमान थे।

विक्रमि–शूरवीरता से युक्त भगवान विष्णु ।

विक्रान्त–भगवान विष्णु का विशेषण, अत्यन्त पराक्रमी ।

विक्षर–[१] नाश रहित भगवान विष्णु (२) कश्यप और दनु का पुत्र एक प्रबल दैत्य जो प्रतापी और वीर था ।

विग्रह–[१] सगुणोपासक भक्त जन निर्गुण निराकर ब्रह्म की उपासना करने के लिए अपने-अपने इष्टदेव का मट्टी, पत्थर, आदि में विग्रह बनाकर मन्त्रोच्चारण द्वारा इष्टदेव को उस विग्रह में आवाहन कर प्रतिष्ठा करते हैं। शिव के प्रायः लिंग विग्रह होते हैं या पत्थर में, विष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण के सालग्रम या शिला विग्रह। कहीं-कहीं अंजन का विग्रह होता है [२] नीति के छः गुणों में से एक ।

विचक्षु—प्राचीन भारत के एक अहिंसावादी राजा ।

विचित्रवीर्य–चन्द्रवंशी राजा शन्तनु के सत्यवती से उत्पन्न पुत्र, धृतराष्ट्र के पिता काशी राजकुमारियां अम्बिका और अम्बालिका के पति। निस्सन्तानावस्था में इनकी मृत्यु हुई। सत्यवती ने अपने पुत्र व्यास से नियोग की विधि से विचित्रवीर्य के नाम पर सन्तानोत्पादन करने को कहा। व्यास ने अम्बिका से पाण्डु और अम्बालिका से धृतराष्ट्र का जन्म दिया [दे: चित्रांगद, धृतराष्ट्र] ।

विजय—[१] ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य आदि गुणों में सबसे बढ़कर भगवान विष्णु [२] सभी पर विजय पाने वाले अर्जुन का नाम [३] भगवान के पार्षद जय विजयों में से एक [दे:–जय] [४] राजा रोमपाद के वंशज जयद्रथ और शम्भूति का पुत्र। इसका पुत्र धृति था । [५] महाराजा दशरथ के एक मन्त्री। [६] धृतराष्ट्र का एक पुत्र [७] पुरुरवा और उर्वशी का एक पुत्र, इनका पुत्र काञ्चन था। [८] शिव जी का त्रिशूल [९] देवताओं का दिव्य रथ [१०] कर्ण का दिव्य धनुष जो परशुराम ने कर्ण को दिया था। [११] हरिश्चन्द्र के वंशज सुदेव के पुत्र। इनके पुत्र भरुक थे ।

विजया-[१] देवी का नाम [२] कश्मीर का सुप्रसिद्ध विजयातीर्थ [३] विजया नामक शुभ मुहूर्त [४] एक विशेष विद्या जो विश्वामित्र ने राम को सिखाई [५] मद्र देश की राजकुमारी जिसके साथ सहदेव की शादी हुई थी। [६] दशार्हराजा की पुत्री जिसका विवाह महाराजा भूमन्यु से हुआ और सुहोत्र नामक पुत्र हुआ ।

विजयादशमी—आश्विन शुक्ला दशमी। नवरात्री या दशहरा भारत भर में मनाया जाता है। आश्विन मास के शुक्लपक्ष के प्रथमा से लेकर दशमी तक यह उत्सव मनाया जाता है। इन दिनों देवी के दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में पूजा होती है। ऐसा विश्वास है कि विजयदशमी के दिन दुर्गा ने महिषासुर का वध कर विजय पायी। इसके उपलक्ष्य में लोग उत्सव मनाने लगे। यह भी विश्वास है कि इस दिन अज्ञान और अविद्या

का नाश और विद्या का आरम्भ होता है। इसलिये किसी-किसी प्रान्त में यह दिन विद्या का आरम्भ करने के लिये शुभ दिन माना जाता है। नवमी के दिन सब अपने-अपने आयुधों की, विद्यार्थी पुस्तकों की, गायक वाद्य यन्त्रों की, योद्धा अपने शस्त्रों की, वाहन संचालक वाहनों की पूजा करते हैं।

विजिताश्व—पृथु महाराजा और अर्ची के ज्येष्ठ पुत्र। पृथु के यज्ञ में इन्द्र कपट वेष धारण कर आकर अश्व को ले गये। पृथुपुत्र ने इन्द्र का पीछा किया और अश्व को छुड़ा लाये। ऐसा दो तीन बार हुआ। इसलिये पृथुपुत्र का नाम, विजिताश्व हो गया। इन्द्र से अन्तर्धान की विद्या सीखने के कारण उनका एक और नाम अन्दर्धान था। ये बड़े वीर और महारथी थे। पृथु महाराज के स्वर्गारोहण के बाद ये राजा बने और पृथ्वी का एक-एक हिस्सा अपने चार भाइयों को दिया। अपनी पत्नी शिखण्डिनी से इनके तीन पुत्र पावक, पवनान और शुचि हुये। ये अग्नि देवता थे और वसिष्ठ के शाप से मनुष्य जन्म लिया। दूसरी पत्नी नमस्वती से उनके एक पुत्र हविर्धान हुए। दीर्घसत्र के व्याज से विजिताश्व ने राज्य शासन को पापमय और क्रूरता से पूर्ण जान कर छोड़ दिया। परम पुरुष का एकाग्र ध्यान कर स्वर्ग को प्राप्त किया।

विज्ञान—[१] विशेष रूप से ब्रह्म साक्षात्कार से उत्पन्न या प्राप्त ज्ञान (२) एक शास्त्र।

विज्ञानमय कोश—आत्मा का एक कोष, ज्ञानेन्द्रियों के साथ वृत्तियुक्त बुद्धि ही कर्तापन के स्वभाववाला ज्ञानमय कोश है, जो पुरुष के जन्म-मरण रूप संसार का कारण है। विज्ञान प्रकृति का विकार है और वह चित्त और इन्द्रियादि का अनुगमन करने वाली चेतना की प्रतिबिम्ब शक्ति है। वह "मैं ज्ञान और कर्ता हूँ" ऐसा निरन्तर अभिमान करता है। यह अहं स्वभाव वाला विज्ञानमय कोश ही अनादि कालीन जीव और संसार के समस्त व्यवहारों का निर्वाह करने वाला है। यह अपनी पूर्व वासना से पुण्य-पापमय अनेकों कर्म करता और फल भोगता है और विचित्र योनियों में भ्रमण करता हुआ कभी नीचे आता है और कभी ऊपर जाता है। जाग्रत, स्वप्न आदि अवस्थायें, सुख दुःख आदि भोग, देहादि में आत्माभिमान, आश्रमादि के धर्म-कर्म, तथा गुणों का अभिमान और ममता आदि सर्वदा इस विज्ञानमय कोश में रहते है। यह आत्मा की अति निकटता के कारण अत्यन्त प्रकाशमय है अतः यह इसकी उपाधि है जिसमें भ्रम से आत्मबुद्धि करके जन्म-मरण रूप ससार चक्र मे पड़ता है।

विज्ञानी—विशेष ज्ञान से जानने वाली देवी। देवी को स्थूल दृष्टि से जानना मुश्किल होने पर भी विशेष अनुभवों से देवी की महिमा जानी जाती है।

विडूरथ—[१] यादववंश के श्वफल्क के भाई चित्ररथ के पुत्र। इनके पुत्र शूर थे। [२] दन्तवक्त्र का भाई जो श्रीकृष्ण से मारा गया।

वितण्डावाद—व्यर्थवाद जिसका कोई उद्देश्य नहीं, जिससे न अपना मत स्थापित होता है या दूसरे के मत का खण्डन होता है।

वितत्य—गृत्समद के वंश का राजा। इनका पुत्र सत्य था।

वितथ—भरद्वाज का अपर नाम। मरुतों ने वंश वृद्धि के लिए इनको दुष्यन्त को पुत्र रूप में दिया। इनके पुत्र थे मन्यु।

वितद्रु—पंजाब की एक नदी का नाम, वितस्ता या झेलम नदी।

वितल—भूमि के अधोभाग के सात लोकों में से दूसरा। अतल लोक के नीचे वितल लोक

स्थित है। यहाँ भगवान शिव हाटकेश्वर के नाम से अपने पार्षदों (भूतगणों) से आवृत और अपनी पत्नी पार्वती (भवा नाम से) रहती हैं। ये भव और भवानी ब्रह्मा की सृष्टि की वृद्धि के लिए रहते हैं। इन दोनो की शक्ति से पूर्ण हाट की नाम की नदी हाटकेश्वर से निकलती है। यहाँ वायु से उत्पन्न अग्नि इस नदी के पानी को सोख लेता है और फेन के रूप में वाहर फेंका जाता है जो एक प्रकार के सोने के रूप में जम जाता है। इन सोने का नाम हाटक है जो असुर मुख्यों के महलों के स्त्री पुरुष आभूषण के रूप मे पहनते हैं।

वितस्ता–एक पुराण प्रसिद्ध नदी, आधुनिक झेलम नदी।

विदग्धा–चातुर्य से युक्त देवी।

विदर्भ--(१) एक देश का नाम (आधुनिक विरार)। यहाँ के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी श्रीकृष्ण की पटराणी थी। दूसरे विदर्भ राजा की पुत्री। थी दमयन्ती जो नल महाराजा की रानी बनी थी। इन कारणों से पुराणो मे विदर्भ की बड़ी प्रशस्ति है। [२] ऋषभदेव के पुत्रों मे से एक, राजा भरत के भाई। इनके पुत्र निमि थे [३] यदुवश के ज्यामघ और शैब्या के पुत्र। इनकी पत्नी भोज्या से इनके कुश, क्रथ, रोमपाद आदि पुत्र हुए।

विदर्भराजतनया—दमयन्ती या रुक्मिणी का विशेषण।

विदल्ल–ध्रुव सन्धि नामक राजा का मन्त्री।

विदारण–अधर्मियों को नष्ट करने वाले भगवान विष्णु।

विदिशा–[१] मालवा देश की नदी [२] दशार्ण देश की राजधानी।

विदुर–[१] बुद्धिमान तथा विद्वान पुरुष (२) महाराजा धृतराष्ट्र के भाई। व्यास ऋषि के शूद्र स्त्री में पैदा हुआ पुत्र। धर्मदेव का अवतार माने जाते हैं। ये अगाध पण्डित, बड़े धर्मात्मा, सत्यसन्ध, नीतिज्ञ, धृतराष्ट्र के उपदेष्टा, श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त आदि कारणों से एक अमानुषिक पुरुष थे। अपनी बड़ी बुद्धिमत्ता, सचाई और घोर निष्पक्षता के कारण प्रसिद्ध थे। धृतराष्ट्र के साथ हस्तिनापुर में रहकर भीष्म से शस्त्रास्त्र, आयुधाभ्यास, धनुर्विद्या और वेदाभ्यास किया थे धर्म में निरत थे। ये हमेशा नीति और धर्म के पक्ष में रहते थे, अतः कौरव और पाण्डव उनके लिए तुल्य होने पर भी धर्म की रक्षा और चन्द्रवंश की रक्षा के लिए वे पाण्डव पक्षपाती थे। युद्ध मे वे विश्वास नही करते थे। जब-जब कौरवों ने पाण्डवों का नाश करने के अनेक उपाय किये, जैसा लाखा गृह में भेजना, विदुर ने पाण्डवों की रक्षा के उपाय सोचे थे। धृतराष्ट्र को दुर्योधन की कुटिलतायें बताकर उसका त्याग करने तक का उपदेश दिया था, लेकिन पुत्र स्नेह से वशंवद पिता ने ऐसा नहीं किया। पाण्डव जब वनवास को गये, जनता कौरवों के विरुद्ध हो गई थी। विदुर ने धृतराष्ट्र को सलाह दी कि चन्द्रवंश की रक्षा के लिए अपने पुत्रों का त्याग कर पाण्डवों को सिंहासन पर बिठाना चाहिए। धृतराष्ट्र ने यह सुनकर सोचा कि विदुर पाण्डव पक्षपाती हैं और राज्य से निष्कासित किया। महाभारत का विदुरोपदेश, विदुर नीति अति प्रसिद्ध हैं। श्रीकृष्ण जब दूत बन कर हस्तिनापुर आये तब भगवान ने दुर्योधन के विभव समृद्ध स्नेह रहित राजकीय आतिथ्य को छोड़कर विदुर के सीदे सादे स्नेह और भक्ति से पूर्ण आतिथ्य को स्वीकार किया। भीष्म की मृत्यु पर विदुर को अत्यधिक दुःख हुआ। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के पहले अनेक दुर्निमित्तों को देखकर घोर

विपत्ति की सूचना समझ कर विदुर धृतराष्ट्र, गान्धारी और सञ्जय के साथ वन चले गये। तीर्थयात्रा करते समय विदुर मैत्रेय महर्षि से मिले जिनसे श्रीकृष्ण और बलराम के स्वर्गारोहण और यदुवंश के नाश की वार्ता सुनी। वे विरक्ति होकर भगवान का ध्यान लगाकर पार्थिव शरीर को छोड़कर अपने स्वरूप, धर्मदेव का रूप धारण कर लिया।

विदुला–एक वीर वनिता जिसने युद्धभूमि से पराजित होकर घर लौटने पर पुत्र को घर के अन्दर प्रवेश नही दिया और उसकी सोई हुई वीरता और आत्माभिमान को जगाकर फिर युद्धभूमि में भेज दिया था।

विदुप–अंगराज वंश के एक राजा।

विदूरथ–[१] करूप के दुर्मद राजा दन्तवक्त्र का भाई। श्रीकृष्ण से अपने भाई का बध सुनकर बदला लेने गया, लेकिन श्रीकृष्ण ने तलवार से उसका सिर काट डाला। [२] उपरिचरवसु के वंशज सुरथ के पुत्र, इनके पुत्र सार्वभौम थे। [३] यदुवंश के श्वफल्क के भाई चित्ररथ का पुत्र।

विदेह–[१] निमि चक्रवर्ति (दे: निमि)। [२] एक राज्य, मिथिला। इस देश पर विदेह वंशज क्षत्रिय राज्य करते थे। सीतादेवी का जन्म विदेह राज में हुआ और विदेह राजकुमारी होने से उनका नाम वैदेही भी है।

विद्या–[१] विद्यारूपिणी देवी। मोक्ष प्रदान करने का ज्ञान ही विद्या है आत्मज्ञान। [२] प्राय: विद्या चौदह मानी जाती हैं–चार वेद छ: वेदाङ्ग, धर्म, मीमांसा, तर्क या न्याय, और पुराण।

विद्यादेवी–सरस्वती देवी।

विद्याधर–एक उपदेवता गण, ये आकाश में रहते हैं।

विद्युज्जिह्व–[१] रावण की बहन शूर्पणखा का पति [२] एक राक्षस जो भीमसेन के पुत्र घटोत्कच का पुत्र था और भारत युद्ध में दुर्योधन से मारा गया।

विद्युत्केश–एक राक्षस राजा। जिसका पुत्र सुकेशी था।

विद्युत्पर्णा–कश्यप ऋषि और प्राधा की अति सुन्दर पुत्री, एक अप्सरा।

विद्युल्लता–बिजली की कौंध।

विद्युन्मालि–तारकासुर का पुत्र, त्रिपुर के राक्षसों मे से एक [दे: त्रिपुर दहन]।

विद्रुत–ययाति के वंशज एक राजा।

विद्रुम–[१] नवरत्नों में से एक[१]एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।

विद्रुमाभा–[१]विद्रुम की शोभा से युक्त देवी। [२] ज्ञान रूपी वृक्ष के समान देवी।

विधाता–[१] भृगु महर्षि और ख्याति के पुत्र। इनके भाई धाता थे। इन दोनों ने मेरु पुत्री नियति और आयति से विवाह किया। विधाता और नियति के पुत्र भृकण्डु थे।

विधात्री–[१] विशेष रूप से जगत का पोषण करने वाली देवी। [१] विधाता, ब्रह्मा की पत्नी; सरस्वतीरूपा।

विधु–चन्द्रमा, विष्णु, ब्रह्मा।

विधृति–सूर्यवंश के राजा खगन के पुत्र, इनके पुत्र हिरण्यनाभ थे।

विनत–एक वानर प्रमुख जो पर्वताकार का था, मेघगर्जन के समान उसका गर्जन था, सूर्य और चन्द्र के समान शोभावाला था। अनेक सहस्र वानरों के साथ सीता की खोज में जाने के लिये श्रीराम के सामने उपस्थित हुआ। सुग्रीव ने इसको पूर्व दिशा की ओर भेजा।

विनता–कश्यप ऋषि की पत्नी, दक्षप्रजापति की पुत्री। इनके दो श्रेष्ठ पुत्र गरुड़ और अरुण थे। विनता और उसकी बहन नागों की माँ कद्रू में हमेशा झगड़ा होता था।

विनता को कद्रू का दास्य भी करना पड़ा। गरुड़ ने अमृत लाकर अपनी माँ को दासत्व से छुड़ाया। विनता के पुत्र होने के कारण गरुण और अरुण वैनतेय कहलाते हैं।

विनश—एक पुण्य तीर्थ जहाँ सरस्वती अदृश्य रूप में रहती हैं।

विनायक—[१] गणेश [२] गरुण का विशेषण।

विनाश—कश्यप और कालिका का एक असुरपुत्र।

विनियोग—भक्त पूजा करने को बैठ कर पहले इष्टदेव का ध्यान कर दायें हाथ में जल ले कर भगवान की प्रीति के लिये मन्त्र बोल कर जमीन पर पानी छोड़ता है। यह विनियोग है।

विन्द—[१] वसुदेव की बहन राजाधिदेवी और केकय राजा जयसेन के दो पुत्र थे विन्द और अनुविन्द। ये दोनों अवन्ति देश के राजा हुए। ये श्रीकृष्ण के बड़े शत्रु थे। इनकी इच्छा के विरुद्ध श्रीकृष्ण ने अपने में अनुरक्त इनकी बहन मित्रविन्दा से विवाह किया। महाभारत युद्ध में ये दोनों अर्जुन से मारे गये। [२] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विन्दुसर—विन्दुसर, एक नदी जिसके किनारे कर्दम प्रजापति का आश्रम था।

विन्ध्य—[१] रैवत मनु के एक पुत्र। इनके भाई वलि, अर्जुन आदि थे। [२] भारतवर्ष का एक प्रमुख पर्वत जो दक्षिण और उत्तर भारत को अलग करता है। विन्ध्य पर्वत अपने औनत्य के मद से ऊँचा होता जा रहा था और उससे होनेवाली विपत्ति से भारत की रक्षा करने देवताओं ने अगस्त्य ऋषि की सहायता माँगी। ऋषि पर्वत के शिखर पर पैर रखकर दक्षिण को गये और विन्ध्य से यह निवेदन किया कि जब तक मैं वापस न आऊँ इस तरह झुके रहो। अगस्त्य मुनि विन्ध्य के गुरु माने जाते हैं। इसलिये विन्ध्य ने मुनि का निवेदन स्वीकार किया। अगस्त्य ऋषि फिर दक्षिण से नहीं लौटे और विन्ध्य वैसा ही रहा। त्रिपुर दहन में भगवान शिव ने इसे रथ का ध्वजस्तम्भ बनाया था।

विन्ध्याटवी—विन्ध्य महावन।

विन्ध्याकूट—अगस्त्य महर्षि का विशेषण।

विन्ध्यावली—चक्रवर्ति बलि की पत्नी।

विन्ध्यावासिनी—दुर्गा का विशेषण। विन्ध्य पर्वत में रहकर देवी ने शुंभ और निशुंभ का निग्रह किया था।

विपाशा-पंजाब की एक पुण्य नदी।

विपुल—[१] रोहिणी और वसुदेव के पुत्र, बलराम के भाई [२] भृगुवंश के एक मुनि जो गुरु सेवा में अतीव तत्पर थे। [३] मगध की राजधानी गिरिव्रज के पास एक पर्वत।

विपुला—पृथ्वी।

विप्र—[१] ब्राह्मण [२] ध्रुव के वंशज एक राजा [३] मगध देशों के राजा सुतञ्जय के पुत्र, इनके पुत्र शुचि थे।

विप्रचित्ति—कश्यप प्रजापति और दक्षपुत्री दनु का पुत्र एक प्रमुख दानव। विप्रचित्ति ने हिरण्यकशिपु की बहन सिंहिका से विवाह कर उसमें से सौ पुत्र पाये जिनमें राहु सबसे बड़ा था। कहा जाता है कि इसी विप्रचित्ति ने द्वापर युग में जरासन्ध का जन्म लिया था।

विप्रष्ट-वसुदेव और धृतदेवा का पुत्र।

विभाकर—सूर्य।

विभावरी—[१]उत्तर दिशा के अधिष्ठाता देवता सोमदेव की नगरी जो मेरु पर्वत के उत्तर में स्थित है। [२] रात।

विभावसु—[१] अग्नि देव[२] एक महर्षि[३] सूर्य [४] चन्द्रमा।

विभीषण—ब्रह्मा के पुत्र महामति विद्वान पुलस्त्य ऋषि और सुमालि राक्षस की लक्ष्मी देवी के समान रूपवती पुत्री कैकसी के तीसरे पुत्र। इनके भाई थे लंकाधिप राक्षस राजा

रावण और कुंभकर्ण। विभीषण महा बुद्धिमान, परम भगवद्भक्त, श्री सम्पन्न और एक मात्र राम-भक्ति में तत्पर थे। ये शान्त चित्त, सौम्यमूर्ति, स्वाध्यायशील, नित्य, कर्म परायण थे। युवावस्था में ही इच्छित फल प्राप्ति के लिये गोकर्ण क्षेत्र में अपने भाइयों के साथ अति कठिन तप किया। ब्रह्मा के प्रत्यक्ष होने पर विभीषण ने भगवान में अटल भक्ति और धर्म में रुचि मांगी। ब्रह्मा ने ऐसा ही वर दिया। गन्धर्वराज महात्मा शैलूष की पुत्री सरमा से जो अत्यन्त सुन्दरी और सर्वगुण सम्पन्न थी, विवाह किया। दुष्ट राक्षसों के बीच में रह कर भी विभीषण धर्मपथ से कण मात्र भी नहीं हटे। अपने बड़े भाई के अत्याचारों और दुष्टताओं का वे विरोध करते थे और समय-समय पर धर्मोपदेश देते थे। आखिर भाई का तिरस्कार सीमा तक पहुँचने पर विभीषण ने अपने मन्त्रियों के साथ श्रीराम की शरण ली। नीतिज्ञ और धर्म-परायण होने से अधर्मी भाई से भी लड़े। वीर योद्धा थे। राम-रावण युद्ध में विभीषण ने मुख्य भाग लिया और ऐन मौकों पर राक्षसों की कपटता का परिचय देकर श्री राम की सहायता की। लंका के राजा बनने पर श्रीराम, लक्ष्मण और सीता के साथ पुष्पक विमान में वे भी अयोध्या गये और श्रीरामचन्द्र के राजतिलक के बाद ही लंका को लौटे।

विभु—[१] स्वारोचिष मन्वन्तर के देव तुषितों में से एक (२) ऋषभदेव के पुत्र भरत के वंशज प्रस्ताव और नियुत्सा के पुत्र। विभु और उनकी पत्नी रति के पुत्र पृथुसेन हुए। (३) ब्रह्मा, शिव, विष्णु। (४) रैवत मन्वन्तर के इन्द्र। (५) अन्तरिक्ष, आकाश। (६) स्वारोचिष मन्वन्तर में भगवान ने इस नाम से जन्म लिया।

विभूति—(१) समस्त जगत भगवान की रचना है और उन्हीं के एक अंश में स्थित है। इसलिये जगत में जो भी वस्तु शक्ति सम्पन्न प्रतीत हो, जहाँ भी कुछ विशेषता दिखलाई दे, वह अथवा समस्त जगत ही भगवान की विभूति अर्थात उन्हीं का स्वरूप है। उपर्युक्त प्रकार से भगवान समस्त जगत के कर्ता-हर्ता, सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर, सर्वाधार, सर्वान्तर्यामि हैं। जगत में जो भी ऐश्वर्ययुक्त, कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है उसको भगवान का अंश समझना चाहिए जैसे वृष्णियों में वासुदेव, मुनियों में व्यास, द्यूत में छल तेजस्वियों का तेज, शस्त्रधारियों में श्रीराम मृगों में मृगेन्द्र आदि। (२) विश्वामित्र का एक पुत्र (३) गोबर या कण्डों की राख जो माथे पर लगायी जाती है।

विभ्राज—ययाति के वंश के एक राजा।

विमद—एक सत्यसन्ध राजा।

विमर्दन—ग्रहण, सूर्य और चन्द्र का मेल।

विमला—(१) देवी का विशेषण (२) पुरोत्तम नामक दिव्य तीर्थ की देवी। (३) शिल्पशास्त्र के अनुसार एक ग्रह विशेष।

विमलतीर्थ—एक पुण्यतीर्थ। यहाँ के तालाबों में स्वर्ण और रजत वर्ण की मछलियाँ मिलती हैं।

विमानस्था—विमान में स्थिता देवी।

विमुख—प्राचीन भारत के एक ऋषि।

विमोक्ष—मुक्ति।

वियत्—आकाश।

वियत्मणि—सूर्य।

वियाति—राजा नहुष के एक पुत्र।

विरज—(१) कर्दम प्रजापति की पुत्री कला और मरीचि महर्षि के पुत्र थे पूर्णिमा। पूर्णिमा के पुत्र थे विरज और विश्वग। (२) द्वारका का एक खास महल। (३) प्रियव्रत के वंशज त्वष्टा और विरोचना के पुत्र। प्रियव्रत वंश

के अन्तिम राजा विरज ने अपनी कीर्ति से इस वंश की प्रसिद्धि बढ़ायी। (४) आठवें मन्वन्तर का एक देवगण।

विरजस्क–सावर्णि मनु के एक पुत्र।

विरजा-(१) वसिष्ठ के पुत्रों में से एक (२) भगवान विष्णु के तेज से उत्पन्न एक पुत्र जो सन्यासी बन गये। (३) कश्यप ऋषि और कद्रू का पुत्र एक नाग।

विराग–सांसारिक विषयवासनाओं के प्रति उदासीनता।

विराज-(१) कुरु वंश के राजा अविक्षित के पुत्र थे। (२) एक वैदिक वृत्त का नाम।

विराट-(१) सृष्टि के आदि में जल ही जल था जिसको आवरणोद कहते हैं। इसमें सब चराचर वस्तुओं का बीजरूप एक अण्ड की सष्टि हुई। यह अचेतन अण्ड अनेक सवत्सर कारण जल में रहा। बाद में भगवान स्वाश रूप से उसमे प्रविष्ट होकर उसको चौदह खण्डों में विभक्त किया। विशेष रूप से या विविध रूप से शोभित होने से विराट नाम हुआ। यही भू आदि सात ऊपरि लोक और अतल आदि सात अधोलोक मिलकर चौदह लोक हैं। इन विराट पुरुष का सिर सत्यलोक, ललाट तपोलोक, कण्ठ जनलोक, वक्ष सुवर्लोक, नाभि भुवरलोक, कमर भूलोक, जाघ का ऊपरि भाग अतललोक, अघोभाग वितल लोक, जानु सुतल लोक, टांग तलातललोक, एड़ी महातललोक, पैर का ऊपरि भाग रसातल, अधोभाग पाताललोक है। (२) एक देश, मत्स देश, इसके राजा विराट थे। पाण्डवो ने एक वर्ष यहाँ अज्ञातवास किया था। इनकी पुत्री उत्तरा के साथ अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का विवाह हुआ था। विराट राजा ने अपने तीनों पुत्रों के साथ महाभारत युद्ध में पाण्डवों की सहायता की और मारे गये।

विराटपर्व–महाभारत का एक प्रधान पर्व।

विराध–एक पर्वताकार, महावक्त्रवाला, भयङ्कर स्वरवाला, विकटोदर, विकट, विकृत, घोर दर्शन एक राक्षस, काल के समान भीषण था और सर्व भूतों को ग्रस्त करता था यह जव और शतधारा का पुत्र था। इसने वन में सीता को पकड़ लिया और राम-लक्ष्मण से जान बचाकर जाने को कहा। इसने कठिन तपस्या कर ब्रह्मा से वर प्राप्त किया था कि किसी भी शस्त्र से नहीं मरेगा। श्रीराम ने तीक्ष्ण अस्त्र भेजा जिससे उसने सीता को छोड़कर राम और लक्ष्मण से लड़ने लगा। उसकी दोनों बाहें काट डालने पर भी वह नही मरा। तब दोनों राजकुमारों ने गड्डा बनाकर उसको उसमें डाल कर जलाने की तैयारी करने लगे। तब विराध ने अपना परिचय देकर कहा कि मैं तुम्बुरु-नामक गन्धर्व हूँ जो कुबेर के शाप से यह रूप मिला। दाशरथी श्रीराम जब तुम्हें मारेंगे तब तुमको अपना रूप मिलेगा यह शापमोक्ष भी दिया था। श्रीराम से मृतप्राय होने से उसको शाप मोक्ष मिला। शरभंग महर्षि के आश्रम का पता देकर वह स्वर्ग वापस गया।

विराम–प्रलय के समय प्राणियों को अपने में विराम देने वाले भगवान।

विरुद्ध–दसवें मन्वन्तर का एक देवगण।

विरूप–(१) महाराजा अम्बरीष के तीन पुत्रों में से एक। इनके पुत्र पृषदश्व थे। (२) अंगिरा का एक पुत्र। (३) एक असुर जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

विरूपाक्ष–(१) तीन आँखें होने से शिवजी का विशेषण (२) एकादश रुद्रों मे से एक (३) एक दिक्गज (४) कश्यप ऋषि और दनु के प्रमुख पुत्र दानवों में से एक (५) रावण का एक अनुचर जो सुग्रीव से मारा गया। (६) नरकासुर का एक अनुचर।

विरोचन–(१) भक्त प्रह्लाद के पुत्र एक प्रबल धर्मनिष्ठ असुर। ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखते थे। इनके पुत्र थे सुप्रसिद्ध महाराजा बलि। (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विरोहण–(१) एक नाग (२) पिता की अपेक्षा उच्च वर्ण की माता की सन्तान।

विलासिनी—देवी का विशेषण (१) विक्षेप शक्ति से युक्त (२) ब्रह्मरन्ध्र में स्थिता।

विलोम–यदुवंश के राजा वह्नि के पुत्र। इनके पुत्र कपोतरोम थे।

विल्वमंगल–श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त। दक्षिण की कृष्णवेणी नदी के तट पर रामदास नामक एक भक्त ब्राह्मण के पुत्र थे। पढ़े-लिखे, शान्त शिष्ट, और साधु स्वभाव के थे। लेकिन पिता की मृत्यु के बाद कुसंग में पड़ कर अत्यन्त दुराचारी हो गये। वेश्या गमन आदि दुष्कर्म करने लगे। एक दिन पिता का श्राद्ध था, इसलिये दूसरों के मना करने पर भी, नदी के उस पार अपनी प्रेयसी चिन्तामणि नाम की वेश्या के घर जाते रात हो गई। अन्धेरी रात थी। आंधी और तूफान के कारण कोई नौका नहीं मिली। कामान्ध होकर एक औरत की लाश को लकड़ी समझ कर उस पर चढ़े और दैवयोग से पार पहुँचे। अन्धेरी रात इतनी बीत जाने से वेश्या ने द्वार बन्द किया था। विल्वमंगल ने हाथ बढ़ाया और एक रस्सी उसके ह में आगई जिसके सहारे ऊपर गये। वह काला सांप था जिसका मुंह ऊपर नीचे लटक रहा था। भगवान की सांप ने नहीं काटा। चिन्तामणि हुआ कि इतनी भयानक रात आये। पानी बन्द हो चुका दीपक लेकर दीवार के प नाग लटक रहा है। न देखा कि लकड़ी के ब

उस सड़े हुए शव को देखकर कांप उठी। विल्वमंगल की अपने प्रति इतनी लगन देख कर उसने भर्त्सना की कि "जिस पुतली पर तू इतना आसक्त हो गया कि सारे धर्म-कर्म को तिलाञ्जलि देकर इस डरावनी रातमें मुर्दे और सांप की सहायता से यहाँ दौड़ा आया, जिसे परम सुन्दर समझ कर तू पागल हो रहा है, वह भी एक दिन इस मुर्दे के रूप में परिणित होगी। यदि तू इस प्रकार मन मोहन श्याम सुन्दर पर आसक्त होता, उनसे मिलने के लिए छटपटाता तो संसार का पार अवश्य होता।" वेश्या के उपदेश ने जादू का काम किया। विवेक की आग ने अन्तःकरण के पाप और कल्मष को जला डाला, शुद्ध अन्तःकरण में भगवान की भक्ति जागृत हो गई। चिन्तामणि के पैरों पर पड़कर उसे अपना गुरु बनाया। पहले की बुरी भावना गायब हो गई। बाह्य दृष्टि को दोषी ठहराया और अपने को बचाने के लिए नुकीले काँटों से ...नी दोनों आँखें फोड़ दीं। तब से भगवा... उन्मत्त उनका गुणगान गाते ... आदि का ध्यान छो... ...ते फिरे।

हैं। विवस्वान और विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा के पुत्र श्राद्धदेव मनु हो गये। इसके अलावा इनके एक और पुत्र यम और पुत्री यमी हुई जो यमुना नदी की अधिष्ठात्री देवी है। संज्ञा के घोड़ी के रूप से सूर्य के दो पुत्र अश्विनी-कुमार हुये। विवस्वान की दूसरी पत्नी छाया (जो संज्ञा की ही छाया थी) से उनके शनैश्चर (शनि ग्रह के पति), सावर्णि (एक मनु) और तपती नाम की एक पुत्री हुई। इन श्राद्ध-देव से, जो वैवस्वत मनु से प्रसिद्ध हुए, सूर्य-वंश चला। भगवान ने अविनाशी, अनश्वर कर्मयोग को सब से पहले विवस्वान को बताया। विवस्वान ने अपने पुत्र मनु को, और मनु ने इक्ष्वाकु को। (२) एक सनातन विश्वदेव।

विवाह–सोलह संस्कारों मे से एक। वेदाध्ययन के बाद ब्रह्मचारी अपने कुल रीति के अनुसार रूप, वय और गुण में अपनी अनुयोज्या कन्या से विवाह कर गृहस्थाश्रम स्वीकार करता है। विवाह आठ प्रकार के हैं। (१) ब्राह्म–कुल शील गुण युक्त पुरुष को बुलाकर कन्या दान किया जाता है। (२) आर्ष–वर से एक जोड़ी गाय लेकर कन्यादान किया जाता है। प्राजापत्य—लड़की का पिता वर से बिना किसी प्रकार का उपहार लिए केवल इसी-लिए कन्यादान करता है कि धर्म-कर्म के अनु-ष्ठान करके आनन्द और श्रद्धा भक्ति पूर्वक साथ-साथ रहें। दैव–यज्ञ करने वाले ऋत्विज् को ही कन्या दी जाती है। गन्धर्व–पुरुष और स्त्री परस्पर अनुरक्त होने पर बन्धुजनों को बिना बताये उनमें जो विवाह होता है उसे गन्धर्व विवाह कहते हैं। आसुर–कन्या-धन देकर कन्यादान किया जाता है। राक्षस–युद्ध कर बलात्कार कन्या का हरण [illegible] करना राक्षस विवाह है। पैशाच–कोई की अनुमति के बिना जब वह निद्रा में हो या बेहोश हो उस समय स्वीकार करना पैशाच है।

विविंश–सूर्यवंश के राजा विंश के पुत्र।

विविंशति–धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विविधाकारा—वैकृत सृष्टि, कौमार सृष्टि आदि अनेक प्रकार की आकृतियों वाली देवी।

विवित्सु–धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विविद–कंश का अनुचर एक राक्षस।

विशद–रन्तिदेव के वंश के एक ब्राह्मण, जयद्रथ के पुत्र, इनके पुत्र सेनजित् थे।

विशल्या–(१) एक औषध, शरीर पर लगे वाणों को यह औषधि लगा कर निकालते थे (२) एक नदी।

विशाख—(१) एक महर्षि (२) एक नक्षत्र (३) कार्तिकेय का नाम (४) शिव का नाम।

विशाखदत्त–संस्कृत के एक मुख्य कवि जिनका मुद्राराक्षस नाटक अति प्रसिद्ध है।

विशाखयूप–एक पुण्य स्थल।

विशाखा–एक नक्षत्र।

विशाल–(१) विशाल बदरी (२) एक पर्वत। ध्रुव यहीं तपस्या करने आये थे। (३) एक प्रकार का हरिण।

विशालबद्रि–बद्रिनाथ।

विशाला—(१) उज्जैनी नगर का नाम (२) चन्द्रवंश के राजा अजमीढ़ की पत्नी (३) एक नदी का नाम।

विशालाक्ष—(१) शिव का विशेषण (२) गरुड़ का पुत्र (३) विराट राजा का एक भाई (४) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विशालाक्षी–(१) दीर्घ नेत्रों वाली देवी (२) श्री काशी के पीठ की अभिमानिनी देवी का नाम।

विशिष्टाद्वैतवाद—दक्षिण के प्रसिद्ध तत्वज्ञ, ज्ञानी श्री रामानुजाचार्य का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार ब्रह्म और प्रकृति उपासना के पक्ष में दो होने पर भी मूलतः एक ही है।

विशोषमूर्ति—कामदेव का एक विशेषण।

विशुक्र—भण्डासुर, इसका वध देवी ने किया था।

विशुद्धात्मा—परम शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप भगवान।

विशुद्धिचक्र—सोलह स्वरों वाले सोलह दलों का कण्ठ में स्थित चक्र। यह देवी का वासस्थान है।

विशोक—[१] सब प्रकार से शोक रहित भगवान [२] अशोकवृक्ष [३] भीमसेन का सारथि [४] एक केकय राजकुमार जो कर्ण के द्वारा मारा गया।

विशोधन—स्मरण मात्र से समस्त पापों का नाश करके भक्तों के अन्तः करण को परम शुद्ध करने वाले भगवान।

विशृंखला—विशेष शृंखला के समान देवी। कर्मादि बन्धन जीव को शृंखला के समान बांध देता है। ऐसा बन्धन देवी की प्रकृति है।

विश्रवा—ब्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य और हविर्भू के दूसरे पुत्र महातपस्वी विश्रवा थे। विश्रवा और इडविड़ा नाम की अपसरा के पुत्र कुबेर थे जो यक्षों के राजा थे। उनकी दूसरी पत्नी कोशिनी या कैकसी से उनके रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण नाम के तीन पुत्र और शूर्पणखा नाम की एक पुत्री हुई। कुबेर ने पिता की सेवा करने के लिए पुष्पोत्कटा नाम की एक राक्षसी को नियुक्त किया था जिससे विश्रवा के खर और दूषण नाम के दो पुत्र हुए।

विश्रुत—जनक वंश के देवमीढ़ के पुत्र। इनके पुत्र महाधृति थे।

विश्रुतात्मा—वेद शास्त्रों में विशेष रूप से प्रसिद्ध रूप वाले भगवान विष्णु।

विश्व—[१] समस्त जगत के कारण रूप भगवान विष्णु [२] समस्त जगत [३] देवों का समूह।

विश्वकर्मा—[१] सारे जगत की रचना करने वाले भगवान विष्णु। [२] देवों के शिल्पि। ये अंगिरा की पुत्री अंगिरसी और एक वसु के पुत्र थे। शिल्प कला में अतीव निपुण इन्होंने देवों के विमान बनाये थे। विश्वकर्मा के पुत्र चाक्षुप छठे मन्वन्तर के मनु बने। श्रीराम की सहायता के लिये जब देवों के अंश रूप वानरों का जन्म हुआ तब विश्वकर्मा के वीर्य से नल का जन्म हुआ। विश्वकर्मा की एक पुत्री संज्ञा सूर्य की पत्नी थी। दूसरी पुत्री बर्हिष्मती महाराज प्रियव्रत की पत्नी थी। इन्होंने सूर्य को रगड़ कर सूर्य से निकले तेज कणों से विष्णु का सुदर्शन चक्र, पुष्पक विमान, स्कन्द देव की शक्ति आदि का निर्माण किया। लंका की सृष्टि भी इन्होंने की। [दे: संज्ञा, सूर्य, तिलोत्तमा आदि]।

विश्वकृत्—[१] महाविष्णु का विशेषण [२] एक विश्वदेव।

विश्वकेतु—अनिरुद्ध का विशेषण।

विश्वग—मरीचि महर्षि और कर्दम प्रजापति की पुत्री के पुत्र पूर्णिमा के पुत्र। विरज और देवकूल्या के भाई।

विश्वगर्भ—समस्त विश्व को अपने अन्दर धारण करने वाले भगवान विष्णु।

विश्वग्रास—प्रलय काल में सकल चराचर वस्तुओं को अपने में लीन करने वाले भगवान।

विश्वजित्—[१] एक महायज्ञ जिसमें यजमान सर्वस्व दान कर देता है। महाराजा बलि के इस यज्ञ में भगवान वामन रूप में गये थे। [२] मगध देश के राजा सत्यजित् के पुत्र।

इनके पुत्र रिपुञ्जय थे [३] ययाति के वंशज राजा सुव्रत के पुत्र । इनके पुत्र थे रिपुञ्जय [४]बृहस्पति का एक पुत्र[५]वरुण का पाश ।

विश्वदेव–धर्मदेव और उनकी पत्नी विश्वा के पुत्र एक देवगण जो संख्या में दस हैं । ज्ञानी लोग कहते हैं कि इनका कोई पुत्र नहीं है ।

विश्वधर–[१] प्रियव्रत के पौत्र, मान्धाता के पुत्र [२] महाविष्णु का विशेषण ।

विश्वधारिणी–देवी का विशेषण ।

विश्वनन्त–जनक वंश के एक राजा ।

विश्वनाथ–भगवान की उपाधि ।

विश्वपति—[१] भगवान का विशेषण [२] मनु नामक अग्नि का एक पुत्र ।

विश्वपाविनी—तुलसी का एक पौधा । सूर्य, चन्द्र, अग्नि का विशेषण ।

विश्वभ्रमणकारि—विश्व की सृष्टि, स्थिति और संहार को चक्र के समान एक के बाद एक करके भ्रमण करने वाले भगवान ।

विश्वमाता–जगत की जननी देवी ।

विश्वमूर्ति–सब रूपों में विद्यमान, सर्वव्यापक भगवान ।

विश्वम्भर–परमात्मा, महाविष्णु का विशेषण ।

विश्वयोनि–विष्णु और ब्रह्मा का विशेषण ।

विश्वरूप—विश्वकर्मा के पुत्र त्वष्टा के पुत्र । इनकी मां असुर कुल की थी । जब इन्द्र के अपमानित करने से कुपित बृहस्पति छिप गये थे और स्वर्ग पर असुर आक्रमण करने लगे, ब्रह्मा के उपदेश से इन्द्र ने विश्वरूप को गुरु बनाया । विश्वरूप महातपस्वी थे । शुक्राचार्य से नारायण कवच की विद्या सीखकर उसका जप कर विश्वरूप ने भगवान की कृपा से अतुल शक्ति प्राप्त की और मन्त्र का उपदेश इन्द्र को भी दिया । विश्वरूप के तीन सिर और मुख थे जिससे वे त्रिशिर कहलाते थे । एक मुख से वे सोमपान, दूसरे से मदिरा तीसरे से भोजन करते थे। स्पष्ट रूप से देवों की उन्नति के लिये मन्त्रोच्चारण कर अग्नि में आहुति देते थे क्योंकि उनके पिता देव थे । साथ ही चुपके से यज्ञ का एक भाग असुरों के लिए अर्पित करते थे क्योंकि उनकी मां रचना एक असुर स्त्री थी । विश्वरूप के इस कर्म से क्रुद्ध इन्द्र ने बिना सोचे विचारे उनके सिरों को काट डाला । सोमपान करने वाला सिर कपिञ्जल पक्षी बना मदिरा पान करने वाला सिर कलविन्द नामक पक्षी, भोजन करने वाला सिर कबूतर बना । अपने पुत्र की हत्या से क्रुद्ध त्वष्टा ने इन्द्रहन्ता एक पुत्र के लिए यज्ञ किया और वृत्रासुर का जन्म हुआ ।

विश्वरूपा—विश्व के रूपवाली देवी ।

विश्ववसु–जमदग्नि और रेणुका के एक पुत्र ।

विश्वसहा–पृथ्वी ।

विश्वसाह्व–कुश वंशज राजा महास्वान के पुत्र । इनके पुत्र थे प्रसेनजित् ।

विश्वा–दक्ष प्रजापति की पुत्री जिससे विश्वदेवों का जन्म हुआ ।

विश्वानर–सूर्य ।

विश्वामित्र–कन्याकुब्ज के राजा गाधि के पुत्र । कुशवंश में पैदा होने से इनको कौशिक कहते हैं । गाधि के पुत्र होने से गाधितनय या गाधिसूनु भी कहते हैं । ये प्रबल प्रतापी राजा थे । एक बार शिकार करते-करते ससैन्य वसिष्ठाश्रम में पहुंचे । वहां वशिष्ठ महर्षि ने अपने तपबल से कामधेनु नन्दिनी की सहायता से राजा का राजोचित सत्कार किया । नन्दिनी का प्रभाव देखकर राजा ने उसको अपने साथ ले जाना चाहा, लेकिन वसिष्ठ नहीं सहमत हुए क्योंकि उससे यज्ञ की सामग्रियां मिलती थीं । राजा और सैनिक उसे जबरदस्ती ले जाने लगे । वसिष्ठ का इंगित जानकर नन्दिनी क्रुद्ध हो गयी और उसके शरीर से अनेक सैनिक और म्लेच्छ निकले जिन्होंने राजकीय सैनिकों को

पराजित किया। विश्वामित्र को मालूम हो गया कि राजबल से ब्रह्मबल अधिक श्रेष्ठ है। इसलिये राज्य छोड़कर कठिन तपस्या करने वन चले गये। घोर तपस्या से वे क्रमशः तपस्वी, राजर्षि और ब्रह्मर्षि बने। वे हमेशा वसिष्ठ से शत्रुता रखते थे। इसके फलस्वरूप महाराजा हरिश्चन्द्र को अनेक यातनायें भोगनी पड़ीं। वसिष्ठ के पुत्रों की हत्या हुई। हर लड़ाई में वसिष्ठ की जीत ही हुई। विश्वामित्र की कठिन तपस्या में रंभा नामक अप्सरा ने विघ्न डाला था और उनसे पुत्री शकुन्तला का जन्म हुआ। विश्वामित्र के अनेक पुत्र हुए। ये ही अयोध्या राजकुमार श्रीराम और लक्ष्मण को राक्षसों का वध करने के लिये वन ले गये थे और वहाँ से सीता स्वयंवर में भाग लेने के लिये जनकपुरी ले गये। इन्होंने राम को अनेक आश्चर्य-जनक अस्त्र प्रदान किये। अपनी शक्ति का प्रदर्शन इन्होंने त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने, इन्द्र के हाथ से शुनःशेप की रक्षा करने में, ब्रह्मा की भाँति पुनः सृष्टि करने में किया।

विश्वामित्राश्रम—कौशिकी नदी के किनारे स्थित विश्वामित्र का आश्रम।

विश्वावसु—एक गन्धर्व प्रमुख। ये कश्यप ऋषि और प्राधा के पुत्र थे। इनकी मेनका नाम की अप्सरा से प्रमद्वरा नाम की पुत्री उत्पन्न हुई। पृथु महाराज पृथ्वी को गाय के रूप में दुहते समय गन्धर्वों और अप्सराओं ने विश्वावसु को बछड़ा बनाकर कमल के पात्र में गन्धर्व विद्या (संगीत) और सौन्दर्य दुह लिया।

विश्वेश्वर—सारे विश्व के ईश्वर भगवान विष्णु।

विषमंत्र—सांप के काटने पर विष उतारने का मन्त्र।

विषुत्—एक पुण्य काल जब कि रात और दिन बराबर रहता है। सूर्य, मेषराशि में प्रवेश करता है। केरल के लोग इस दिन को 'विषु' के नाम से धूम-धाम से मनाते हैं। घर के सभी लोग ब्राह्ममुहूर्त में उठकर रात को ही सजा कर रखी भगवान की मूर्ति और अन्य मांग-लिक वस्तुओं का आँखें मूंद कर आकर दर्शन करते हैं। उसके बाद घर का मालिक अपने से छोटों को बोहनी रूप में शक्ति के अनुसार धन देता है। नौकरों को भी देते हैं। फिर पटाके जलाये जाते है।

विष्टप—संसार।

विष्णु—देः महाविष्णु।

विष्णुकाञ्ची—दक्षिण में काञ्चीपुरम का एक पुण्य क्षेत्र। यहाँ विष्णु का एक प्रसिद्ध क्षेत्र है। शिवकाञ्ची भी यहाँ से पास ही है जहाँ शिव का प्रसिद्ध क्षेत्र है।

विष्णुगुप्त—चाणक्य का नाम।

विष्णुज्वर—शत्रुओं का नाश करने में उपयुक्त एक ज्वर जिसके अधीश विष्णु हैं।

विष्णुदास—प्राचीन काल का एक विष्णु भक्त ब्राह्मण। काञ्चीपुरम् में एक प्रसिद्ध राजा चोल थे जिनके कारण उस राज्य का नाम चोल राज्य हुआ। चोल राजा भी बड़े भक्त थे। राजा के देखते-देखते विष्णुदास को भगवान का दर्शन हुआ और वह स्वर्ग गया।

विष्णुपञ्जर—एक मन्त्र जो शिव ने देवी को बताया था।

विष्णुपद—भगवान का पाद कमल जहाँ से गंगा निकली।

विष्णुपदी—गंगा का नाम।

विष्णुपुराण—अठारह पुराणों में से एक। परा-शर मुनि ने वराह कल्प की भगवत-लीलाओं का वर्णन किया है।

विष्णुमती—राजा शतानीक की पत्नी।

विष्णुरात—परीक्षित का अपर नाम। भगवान विष्णु ने गर्भ में इनकी रक्षा की थी इसलिये

यह नाम पड़ा ।

विष्णुव्रत–भगवान विष्णु की प्रीति के लिये यह व्रत रखा जाता है । पौष महीने के शुक्ल पक्ष की द्वितीया से चार दिन विष्णु की विशेष विधि से पूजा की जाती है ।

विष्णुवाहन–गरुड़ का विशेषण ।

विष्वकसेन–(१) भगवान का विशेषण । दसवें मन्वन्तर में विश्वसृक और विषूची के पुत्र विष्वकसेन के नाम से भगवान जन्म लेंगे । (२) एक प्राचीन ऋषि ।

विहंग–(१) एक नाग (२) पक्षी (३) सूर्य (४) चन्द्र (५) नक्षत्र ।

विहायस–आकाश ।

विहार–बौद्ध मठ ।

विहुण्ड–प्रतापी हुण्ड का पुत्र । श्रीपार्वती देवी से (बालिका रूप) इसका युद्ध हुआ जिसमें यह असुर मारा गया ।

वीणा–एक विशिष्ठ वाद्ययन्त्र । नारद मुनि हमेशा वीणा पर भगवान के गुणगान करते फिरते हैं ।

वीतनय–महाविष्णु का विशेषण ।

वीतहव्य–जनक वंश के एक राजा, शुनक के पुत्र । इनके पुत्र थे धृति ।

वीतिहोत्र–(१) महाराजा प्रियव्रत और बर्हिष्मती के एक पुत्र । (२) तालजंघ नामक एक यादव के ज्येष्ठ पुत्र, इनके पुत्र मधु और पौत्र वृष्णि थे । (३) सूर्य (४) पुरूरवा के वंशज राजा सुकुमार के पुत्र । इनके पुत्र भर्ग थे ।

वीति—एक अग्नि ।

वीर–(१) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (२) कश्यप और दनु का एक पुत्र असुर (३) एक अग्नि (४) पुरुवंश के एक राजा (५) गणेश का विशेषण ।

वीरक–(१) अंगराज वंश के राजा शिवि का पुत्र (२) चाक्षुष मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक ।

वीरकेतु–(१) पाञ्चाल राज्य का एक राजकुमार (२) एक अयोध्या नरेश ।

वीरण–एक प्रजापति ।

वीरधन्वा–(१) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (२) चेदी के राजा । दशार्णराजा की पुत्री सुदामा इनकी पत्नी थी । नल से परित्यक्ता दमयन्ती ने इन्हीं के यहाँ शरण ली थी और यहीं से उनको कुण्डिनपुर वापिस लिवा ले गये थे । (३) अत्यन्त पराक्रमशील भुजाओं से युक्त भगवान (४) कामदेव ।

वीरभद्र–(१) शिव का अंश संभव एक वीर । जब सती का दहन दक्ष की यज्ञशाला में हुआ तब शिव उससे बहुत कुपित हुए और अपनी जटा पकड़कर जमीन पर पटका । उससे वीरभद्र, जो रुद्र भटों का अग्रणी था, अतिकाय आसमान को मानों छू रहा हो, सहस्त्रबाहु, करालदष्ट्र, सूर्य के समान प्रज्वलित तीन आँखों से युक्त, कपाल माली, और अनेक आयुधों से युक्त निकला । भद्रकाली के साथ दक्ष की यज्ञशाला में जाकर यज्ञ का ध्वंस किया, ऋषियों का अंग भंग किया, और दक्ष के शिर को काट कर यज्ञाग्नि में होम किया । इनके रोमों से रौम्य नामक भूतगण निकले । (२) अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा ।

वीरमाता–(१) योग्य उपासकों की माता (२) शत्रुओं का सामना करने वालों की सब तरह से भलाई करने वाली देवी (३) वीर नामक गणेश की माँ ।

वीरवृक्ष—अर्जुन वृक्ष ।

वीरप्रसविनी–[१] वीर पुत्रों की माता [२] पृथ्वी ।

वीरव्रत–भरत वंश के राजा मधु और सुमना के पुत्र । इनके भोजा से मन्यु और प्रमन्यु नामक दो पुत्र हुए ।

वीरसेन–[१] महाराजा नल के पिता निषध

देश के राजा । [२] सूर्य वंश के एक राजा ।

वीरा–[१] एक नदी [२] वह स्त्री जिसके पति और सन्तान जीवित हो । [३] मुरा नामक एक गन्ध द्रव्य ।

वीरिणी–ब्रह्मा की पुत्री जो दक्ष की पत्नी बनी ।

वीरुधा–नागमाता सुरसा की एक पुत्री ।

वीर्यवान–एक विश्वदेव ।

वृक–(१) केकय राजा धृष्टकेतु और दुर्वा का पुत्र । (२) एक असुर । यह जल्दी से प्रसन्न होने वाले देव की तपस्या करना चाहता था । नारद ने क्षिप्रप्रसादी शिव का नाम बताया । सात दिन घोर तपस्या करने पर भी जब शिव प्रत्यक्ष नहीं हुए तो अपने शरीर के अवयव काट कर होम करने लगा । शिव प्रत्यक्ष हुए और असुर के माँगने पर यह वर दिया कि जिसके सिर पर वह हाथ रखेगा वह मर जायगा । असुर ने वर की परीक्षा करने के लिये शिव के ही सिर पर हाथ रखना चाहा । वह पार्वती को प्राप्त करना भी चाहता था । शिव भागने लगे और वैकुण्ठ पहुँचे । भगवान् विष्णु ने शिव की दशा देख कर एक ब्राह्मण बालक का भेष धारण कर वृकासुर को मार्ग में रोक कर मीठे स्वर से नसके भागने का कारण पूछा । वृक ने सारी बातें बता दीं । मायामय भगवान ने हँस कर कहा—"तुम बड़े भोले हो, शिव में ऐसा वर देने की शक्ति ही नहीं, यदि मेरी बात पर विश्वास न हो तो अपने सिर पर ही हाथ रखकर क्यों नहीं देखते ।" मायापति की माया के वशीभूत होकर असुर ने अपना हाथ अपने ही सिर पर रखा जिससे वह उसी क्षण मर गया । (३) पाण्डवों का एक मित्र राजा जो भारत युद्ध में द्रोणाचार्य से मारा गया । (४) श्रीकृष्ण और मित्रविन्दा का एक पुत्र ।

वृकोदर–भीमसेन का विशेषण । उनके भोजन का परिमाण बहुत अधिक था और उसे पचाने की भी इनमें बड़ी शक्ति थी, इसलिये इन्हें वृकोदर कहते थे ।

वृक्ष–कश्यप और दक्षपुत्री अनला की सन्तान ।

वृज–पृथु के पौत्र हविर्धान और धिषण के एक पुत्र ।

वृजनिवान–यदु के दूसरे पुत्र क्रोष्टुक के पुत्र । इनके पुत्र स्वाही थे ।

वृत्रासुर–त्वष्टा का पुत्र । इन्द्र ने विश्वरूप का वध किया तब विश्वरूप के पिता त्वष्टा ने इन्द्रहन्ता एक पुत्र की प्राप्ति के लिये अग्नि में आहुतियाँ दीं । उस दक्षिणाग्नि से कालाग्नि रुद्र के समान घोर-दर्शन एक दानव निकला जो दिन व दिन बढ़ कर काले पहाड़ के समान बृहदाकार का हो गया । दाढ़ी, मूँछ और बाल जलते हुए अंगारे के समान लाल थे, भयानक आँखें थीं । इस वृत्रासुर को देखकर सभी देव, गन्धर्व किन्नर आदि डर गये, और भगवान की शरण ली । भगवान ने कहा कि इस असुर से युद्ध करने के लिये अमोघ आयुध की आवश्यकता है । दधीचि महर्षि का शरीर नारायण कवच नामक मन्त्र का अभ्यास करने से अत्यधिक बलवान हो गया था । उनकी हड्डी से बने वज्रायुध से वृत्रासुर का वध हो सकता है । इन्द्र ने देवों के साथ जाकर महर्षि की हड्डी प्राप्त की । विश्वकर्मा ने अमोघ वज्रायुध का निर्माण उस हड्डी से किया । इन्द्र और वृत्र के बीच घोर युद्ध हुआ । यह बड़े वीर योद्धा, ज्ञानी और तत्ववेत्ता भी था । उसके सब अनुयायी भाग गये, लेकिन वह विचलित न हुआ । युद्धभूमि में वृत्र ने इन्द्र को स्वर्ग सुख धन, वैभव की असारता, भगवान की अनन्य भक्ति और शरणागति पर उपदेश दिया । वृत्र का मन भगवत् चिन्ता में एकाग्र सा हो गया है । अपने को भगवान के चरणों में

अर्पित कर फलाफल की चिन्ता किये विना अपना कर्तव्य समझकर इन्द्र से लड़ा। इन्द्र ने वज्र प्रहार से असुर को मारा। वृत्र के शरीर से एक ज्योति निकल कर भगवान में विलीन हो गई। वृत्र के ऊपर सिद्ध-गन्धर्वों ने पुष्पवृष्टि की। पूर्व जन्म में वृत्र पहले पाण्ड्य देश के राजा चित्रकेतु थे जो तपस्या कर विद्याधरों के राजा बने। फिर श्रीपार्वती के शाप से असुर योनि में जन्म लिया। असुर होने पर भी अपने पूर्व जन्मों का ज्ञान और भक्ति उसमें मौजूद थी।

वृत्रारि—इन्द्र।

वृद्धक्षत्र–पुरुवंश के एक राजा। ये पाण्डव पक्षपाती थे और भारतयुद्ध में अश्वत्थामा से मारे गये।

वृद्धभद्रि–बद्रीनाथ के निकट एक पुण्यक्षेत्र।

वृद्धशर्मा–[१] आयु और स्वर्भानु का एक पुत्र [२] करूप के राजा। इनकी पत्नी शूर सेन की पुत्री और वसुदेव की बहन थी। इनके पुत्र दन्तवक्त्र थे जो श्रीकृष्ण से मारे गये और हिरण्याक्ष का पुनर्जन्म थे।

वृद्धा—सबसे पुरातन, अभिवृद्धि को प्राप्त देवी। देवी आदि शक्ति होने से जगत् रूप से अभिवृद्धि को प्राप्त है।

वृद्धिश्राद्ध–नान्दीमुख श्राद्ध, पुत्र जन्मादि उत्सवों पर पितरों का श्राद्ध। श्रीकृष्ण के जन्म पर नन्द गोप ने यह श्राद्ध किया था।

वृन्दा–जलन्धर नामक असुर की पत्नी।

वृन्दावन–गोकुल के पास एक वन जिसका कण-कण श्रीकृष्ण और बलराम के पादस्पर्श से पुनीत हो गया है। ऐसा विश्वास है कि यहाँ के जड़ चेतन सभी वस्तुओं ने, यहाँ के स्त्री पुरुष, बाल-वृद्ध सभी लोगों ने पूर्व जन्मों में असंख्य पुण्य किये होंगे, जिससे वे इन दिव्य कुमारों के स्पर्श से पुनीत हो गये, जिनके बीच में मनुष्य जन्म लेकर भगवान ने लीला की। वृन्दावन में ही इन दोनों का कौमार्य बीता।

वृश्चिक–एक राशि।

वृष–(१) भरत वंश का एक राजा (२) एक असुर (३) कामदेव (४) शिव का नन्दी बैल (५) महाविष्णु का नाम (६) यदुवंश के उग्रसेन की पुत्री राष्ट्रपालिका और सृञ्जय के एक पुत्र।

वृषक–(१) गान्धार राजा सुबल का पुत्र, गान्धारी का भाई, अर्जुन से मारा गया। (२) कलिंग देश का राजा।

वृषकर्मा–धर्ममय कर्म करने वाले भगवान विष्णु।

वृषध्वज–शिव का विशेषण।

वृषपर्वा–(१) असुरों के राजा। इनकी पुत्री शर्मिष्ठा थी। (२) शिव का विशेषण (३) एक महर्षि।

वृषभ–(१) एक असुर (२) गान्धार राजा सुबल का पुत्र।

वृषभेक्षण–श्रीकृष्ण का विशेषण।

वृषसेन–कर्ण का पुत्र जो भारत युद्ध में अर्जुन से मारा गया।

वृषाकपि–(१) धर्म और वराह रूप भगवान विष्णु (२) एकादश रुद्रों में से एक (३) एक महर्षि (४) इन्द्र, शिव, अग्नि आदि का विशेषण।

वृषाकृति–(१) धर्म की स्थापना के लिये विग्रह धारण करने वाले महाविष्णु। (२) सूर्य, इन्द्र, अग्नि आदि का विशेषण।

वृषागिर–एक महर्षि।

वृषादर्भ–अनु के वंशज शिबि का पुत्र।

वृषायण–शिव का विशेषण।

वृष्णि–(१) यदु के वंशज प्रसिद्ध मधु के सौ पुत्र थे जिनमें वृष्णि ज्येष्ठ थे। इन मधु और वृष्णि से यदुवंश के लोग माधव और वृष्णि या वार्ष्णेय कहलाते हैं। (२) प्रकाश की

किरण ।

वेङ्किटगिरि—दक्षिण भारत का एक पर्वत जिसको विङ्किटाचल भी कहते हैं । यहां महाविष्णु का एक अति प्रसिद्ध क्षेत्र है जहां भारत के कोने-कोने से अनेकों भक्तजन दर्शन करने जाते हैं । तीर्थयात्रा के समय श्री बलराम भी यहां गये थे ।

वेगवान्–(१) तीव्र गति वाले भगवान् (२) एक दैत्य जो श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब से मारा गया । (३) कश्यप और दनु का पुत्र एक दानव (४) एक नाग ।

वेणा–एक नदी का नाम जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है ।

वेणाट–प्राचीन काल में भारत के दक्षिण में स्थित एक छोटा देश जो बाद में केरल का एक हिस्सा तिरुविताकर बन गया ।

वेणिष्ठा–शाक द्वीप की एक नदी ।

वेणी–[१] एक सांप [२] एक नदी का नाम ।

वेणीसंहार–एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक का नाम ।

वेणु–मुरली, वंशी । श्रीकृष्ण की अत्यन्त प्रिय वस्तु जिस पर मधुर गान कर वे अपने भक्तों को और गोप-गोपियों को मोहित करते थे ।

वेणुजंघ–एक प्राचीन महर्षि ।

वेणुमण्डल–कुशद्वीप का एक विभाग ।

वेणुमन्त–पुराण प्रसिद्ध एक पर्वत ।

वेणुहय–यदुवंश के शतजित के पुत्र, यदु के पौत्र । महाहय और हैहय इनके भाई थे ।

वेताल–एक प्रकार का पिशाच, विशेष शव पर अधिकार रखने वाला भूत । पुराणों और इतिहासों की कथाओं में अनेक वेतालों की जिक्र की गई है । ज्ञान वासिष्ट का वेताल और विक्रमादित्य की कथाओं का वेताल ज्यादा प्रसिद्ध है ।

वेत्रकीयवन–एकचक्रा के पास एक वन जहां भीमसेन ने वकासुर का वध किया था ।

वेत्रवती–एक प्रसिद्ध पुण्य नदी ।

वेत्रिक–प्राचीन भारत का एक जनपद ।

वेद–आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थ । कहा जाता है कि ब्रह्मा के चार मुखों के चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की सृष्टि हुई । एक और मत है कि पहले ऋग, यजु, साम तीन ही वेद थे जो 'त्रयी' कहलाते थे और अथर्ववेद बाद में जोडा गया । वेद प्राचीन आर्य लोगों के मनोभाव, सामुदायिक स्थिति, आचार इन बातों को ही नहीं व्यक्त करते हैं, ये भारतीयों के सब प्रकार के विचारों का आगम स्थान भी है । व्यास महर्षि ने ही वेदों का वर्गीकरण किया जिससे उनका नाम भी वेदव्यास हो गया । व्यास ने अपने शिष्यों को सिखाया और अपने शिष्यों में बांट दिया । वेद शूद्र और स्त्रियों के लिये श्रुतिगोचर न होने के कारण उनके उद्धार के लिए सकल वेदार्थों का संग्रह कर उनके हित के लिए इतिहास पुराणादियों की सृष्टि हुई । व्यास के प्रसाद से उनके शिष्यों ने पुराण संहिता का निर्माण किया । प्रत्येक वेद के संहिता और ब्राह्मण नामक दो भाग हैं । संहिता में देवों के अर्चना गीत हैं जो मन्त्र रूप में हैं । इन गीतों की यागविधियों की प्रायोगिक विधियां हैं । ब्राह्मण जो प्रायः गद्य रूप में हैं, ब्राह्मणों के अनुबन्ध हैं । आरण्यक जिसका अध्ययन अरण्यों में हुआ था । इसका प्रतिपाद्य विषय आध्यात्मिक रहस्य और आन्तरिक तत्व है । चारों वेदों में कुल मिलाकर एक लाख मन्त्र है । वे सर्व जगत के मंगलकारी और चारों पुरुषार्थों के प्रदान करने वाले हैं । हिन्दुओं की निरी धर्मनिष्टा के अनुसार वेद अपौरुषेय (दैवीय) हैं क्योंकि वे परमात्मा के मुख से सुने गये हैं, इसलिए 'श्रुति' कहलाते हैं । इसके विपरीत स्मृति ऋषि मुनियों की कृति हैं ।

आरम्भ से ही वेदों की व्याख्या हुई है। वेदों में प्रथम स्थान इन्द्र को दिया गया है जो पुराणेतिहासों के इन्द्र से भिन्न है। अग्नि, वरुण, वायु, मित्र आदि देवों की भी प्रधानता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा आदि देवी-देवताओं को वेदों में उतनी प्रधानता नहीं है। वेदों के इन्द्र पुराणों और इतिहासों के स्वर्ग के अधिपति इन्द्र के समान कामी, अपने पद का निरन्तर चिन्तन करनेवाला, ईर्ष्यालु, लोलुप नहीं है लेकिन सर्वगुण सम्पन्न सात्विक इन्द्र है। वेदों के अध्ययन, उच्चारण आदि की प्रत्येक विधि है। (२) वेद स्वरूप भगवान विष्णु (३) आयोध धौम्य का पुत्र।

वेदकल्प—अथर्ववेद का एक विभाग।

वेदगर्भ—ब्रह्मा का विशेषण।

वेदगर्भा—देवी का नाम।

वेदजननी—वेदों को जन्म देनेवाली देवी। मनुष्यों को सत्य मार्ग दिखाने के लिये देवी ने वेदों की सृष्टि की।

वेदद्विष—चेदि देश के राजा वृहद्रथ के पुत्र।

वेदना—भय और हिंसा की पुत्री।

वेदनिधि—एक महर्षि।

वेदवचन—वेदों का मूलपाठ।

वेदविद्—(१) वेद तथा वेद के अर्थ को यथावत् जानने वाले महाविष्णु। (२)वेद विशारद ब्राह्मण।

वेदवेद्या—वेदों से जानने योग्य देवी। देवी का वासस्थान चिन्तामणि गृह के चार फाटक चार वेद हैं।

वेदव्यास—व्यास महर्षि का अपर नाम जिन्होंने वेदों का वर्गीकरण कर वर्तमान रूप दिया।

वेदशिरा—(१) मार्कण्डेय मुनि के भाई (२) स्वारोचिष मन्वन्तर में वेदशिरा नामक ऋषि और उनकी पत्नी तुषिता के पुत्र विभु के नाम से भगवान ने जन्म लिया। (३) पाँचवें मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक।

वेदश्रुत—तीसरे मन्वन्तर का एक देवगण।

वेदश्रुति—एक पुराण प्रसिद्ध नदी।

वेदस्मृति—भारतवर्ष की एक पुण्य नदी।

वेदाङ्ग—'वेद का अंग' एक प्रकार का ग्रंथ जो वेद के मन्त्रोच्चारण, व्याख्या और संस्कारों में सहायता देने के लिये प्रयुक्त है। ये गिनती में छः हैं :—निरुक्त, ज्योतिष, व्याकरण कल्प शिक्षा, छन्दशास्त्र।

वेदान्त—'वेदों का अन्त' उपनिषद। वेदान्त इस लिये कहलाता है कि यह वेद के अन्तिम ध्येय की शिक्षा देता है। इसके अनुसार समस्त विश्व एक ही अनादि शक्ति ब्रह्म या परमात्मा का संश्लिष्ट रूप है।

वेदिषद—महाराजा वर्हिषद का दूसरा नाम।

वेदीतीर्थ—कुरुक्षेत्र का एक पुण्य क्षेत्र।

वेन—(१) चाक्षुष मनु और नड्वला के वंशज महाराजा अंग और सुनीथा के पुत्र थे। अंग ने यज्ञ करके पुत्र को पाया था। बचपन से ही वेन दुष्ट थे और अपने नाना मृत्यु से जो अधर्म का अंशभूत था, ज्यादा स्नेह रखते थे। ये शिकार के बहाने निरीह पशुओं की हत्या करते थे, बच्चों और जानवरों का गला घोंटते थे। अपने पुत्र की क्रूरता से विरक्त राजा पत्नी को महल में छोड़कर वन चले गये। वेन राजा बने। राजा बनने पर उनकी दुष्टता, अत्याचार और अधर्माचार इतना अधिक हो गया कि ऋषियों ने परामर्श कर अभिमन्त्रित कुशतृण के पत्ते से उनका वध किया। राज्य में अराजकत्व फैल गया। सुनीथा ने अपने पुत्र का शरीर सुरक्षित रखा था। ऋषियों ने वेन की जांघ को मथा और उसमें से एक अति ह्रस्वकाय, कृष्णवर्ण, रक्ताक्ष धूम्रकेशवाला एक मनुष्य निकला जो निषाद नाम से पुकारा गया। इसके वंशज नैषाद हैं। ऋषियों ने वेन के हाथों को फिर रगड़ा

और एक युगल, (स्त्री और पुरुष) जो अंग प्रत्यंग में एक दूसरे के अनुरूप थे, निकला पुरुष भगवान के अंशावतार पृथु नाम से सुप्रसिद्ध हुए और स्त्री लक्ष्मी देवी की अंश-सम्भावना अचि थी, जो उनकी पत्नी बनी। (२) वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

वेला–(१) समुद्र तट (२) समय।

वैकक्ष–एक माला जो यज्ञोपवीत की तरह एक कंधे के ऊपर से दूसरे कंधे के नीचे से धारण की जाती है।

वैकर्त–कर्ण का एक नाम।

वैकुण्ठ–(१) विष्णु का विशेषण। महर्षि शुभ्र और विकुण्ठा के पुत्र वैकुण्ठ के नाम से भगवान ने देवों में प्रमुख वैकुण्ठों के साथ पाँचवें मन्वन्तर में जन्म लिया। अपनी पत्नी रमा (लक्ष्मी देवी) की प्रीति के लिये सर्व लोकों का शिरोमणि वैकुण्ठ की सृष्टि की। (१) महाविष्णु का वासस्थान।

वैखानस–(१) पातालवासी हिरण्याक्ष का वध करने के लिये पृथ्वी को खोदनेवाला वराहरूप भगवान विष्णु। (२) वानप्रस्थ आश्रम में वास करने वाला।

वैजयन्त–(१) क्षीर सागर के मध्य में स्थित एक पर्वत (२) इन्द्र का महल (३) इन्द्र का ध्वज (४) तिमिध्वज की राजधानी।

वैजयन्ती–महाविष्णु का हार।

वैडूर्य–नवरत्नों में से एक।

वैडूर्य पर्वत–गोकर्ण तीर्थ के समीप स्थित एक पर्वत।

वैतण्ड–अष्ट वसुओं में आप का एक पुत्र।

वैतरणि–(१) नरक की एक नदी (२) गंगा पितृलोक से बहते समय उसका नाम वैतरणि है (३) पापमोचिनी एक नदी।

वैतान–यज्ञ सम्बन्धी कृत्य।

वैतालिक–स्तुतिपाठक।

वैदर्भ–विदर्भ देश का राजा।

वैदर्भी–(१) विदर्भ देश की राजकुमारी रुक्मिणी, दमयन्ती। (२) कुश नामक राजा की पत्नी। इनके पुत्र कुशाम्ब, कुशनाभ आदि है। (३) सगर महाराजा की एक पत्नी जिसका अपर नाम सुमती है। इसके साठ हजार पुत्र हुए जो कपिल महर्षि की क्रोधाग्नि में भस्म हुए।

वैदिक–वेदों में निष्णात।

वैदेह–(१) महाराजा निमि के पुत्र। निमि के शरीर को मथने पर इनका जन्म हुआ था (२) विदेह देश के राजा (३) ब्राह्मण स्त्री की वैश्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान।

वैदेही–सीता देवी का नाम, विदेह कुल में उत्पन्ना।

वैद्य–(१) सब विद्याओं को जानने वाले भगवान विष्णु (२) आयुर्वेदाचार्य।

वैद्यनाथ–(१) धन्वन्तरि (२) शिव।

वैनतेय–विनता का पुत्र—गरुड़, अरुण।

वैनायिक–(१)बौद्ध सम्प्रदाय का दर्शन सिद्धांत (२) एक प्रकार का क्रूर उपदेव जो सर्वश्रेष्ठ और धार्मिक कर्मों में विघ्न डालते हैं।

वैभ्राजिक–एक देवोद्यान जो सुमेरु पर्वत के पार्श्व मे स्थित सुपार्श्व पर्वत के ऊपर स्थित है। तीन ओर दिशाओं में मन्दर, मेरुमन्दर और कुमुद पर्वत हैं जिन पर क्रमशः नन्दन, चैत्ररथ और सर्वतोभद्र नामक दिव्योद्यान हैं। इन उद्यानों में प्रमुख देवता सुन्दर अप्सराओं के साथ विहार करते हैं और उपदेव उनका स्तुतिगान करते हैं।

वैरागि–वह सन्यासी जिसने सब इच्छाओं का दमन किया है। [दे: वैराग्य]

वैराग्य–सांसारिक विषय वासनाओं से उदासीनता, विरक्ति। इहलोक और परलोक के सम्पूर्ण पदार्थों में से जब आसक्ति और समस्त कामनाओं का नाश होता है तब उसको वैराग्य कहते हैं। वैरागि के चित्त में सुख

या दुःख दोनों में से कोई विकार नहीं होता। वह उस अचल और अटल आभ्यन्तरिक अनासक्ति या पूर्ण वैराग्य को प्राप्त होता है जो किसी भी हालत में उसके चित्त को किसी ओर खिचने नहीं देता। वैराग्य प्राप्त करने के अनेक साधन है जिनमे कुछ हैं (१) संसार के पदार्थों मे विचार के द्वारा प्रेम और सुख का अभाव देखना (२) संसार के और भगवान के यथार्थ तत्व का निरूपण करने वाले सत्-शास्त्रों का अभ्यास करना (३) सन्त पुरुषों के संग में रहकर भगवान के अकथनीय गुण, प्रभाव, तत्व, प्रेम, रहस्य और उनके लीला चरित्रों का एवं दिव्य सौन्दर्य और माधुर्य का बार-बार श्रवण करना, उन्हें जानना, उन पर पूर्ण श्रद्धा रखना।

वैराट—(१) विराट राजा के पुत्र उत्तर (२) धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीमसेन से मारा गया।

वैरोचन—विरोचन के पुत्र राजा बलि।

वैवस्वत—सातवें मनु श्राद्धदेव, वर्तमान मन्वन्तर के अधिपति। ये विवस्वान और विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा के पुत्र थे। इनके भाई यम और बहन यमी है। इनके श्रद्धा से इक्ष्वाकु, नभग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, नाभाग, दिष्ट, करूष, पृषध्र और वसुमान नाम के दस पुत्र हैं। द्वादशादित्य, अष्टवसु, एकादश रुद्र, दस विश्वदेव, उनचास मरुत, दो अश्विनीकुमार तीन-ऋभू—ये सात प्रकार के देवगण है। पुरन्दर इन्द्र है। कश्यप, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भरद्वाज सात ऋषि हैं। इस मन्वन्तर में भगवान विष्णु ने वामन का रूप धारण कर कश्यप ऋषि और अदिती के पुत्र होकर जन्म लिया।

वैवस्वती—यमुना नदी।

वैशाख—चान्द्र वर्ष का दूसरा महीना। यह मास विशिष्ट माना जाता है और बहुत से धर्मनिष्ठ लोग इस महीने में एक ही बार भोजन कर व्रत रखते हैं। वैशाख की पूर्णिमा एक पुण्य दिन माना जाता है।

वैशाल—विशाल नाम के एक राजा ने एक नगर को स्थापित किया और उसका नाम वैशाल हो गया।

वैशेषिक—दर्शन शास्त्रों में से एक दर्शन जिसके प्रणेता कणाद थे।

वैश्य—चार वर्णों में से तीसरे वर्ण के लोग जो प्रायः व्यवसाय, खेती आदि करते हैं। ये जानवरों को पालते हैं और व्यापार करते हैं। अपने इष्टदेव और गुरु के प्रति श्रद्धा, भक्ति और विश्वास, धार्मिक निष्ठा, सांसारिक सम्पत्ति और सुख भोग (धर्म, अर्थ काम) को तृप्त करना, ईश्वर, पुनर्जन्म आदि में विश्वास, वित्तोपार्जन में लगातार प्रयत्न करना—ये वैश्य के लक्षण हैं।

वैश्रवण—(१) धन के अधिपति कुबेर (दे: कुबेर) (२) रावण का नाम।

वैश्वदेव—(१) विश्वदेवों को दिया गया उपहार। (२) एक प्रकार का यज्ञ जो अग्निकुण्ड या लीपी जमीन पर किया जाता है। भोजन करने से पहले सभी देवताओं को भेंट रूप आहुतियाँ दी जाती हैं।

वैश्वानर—(१) सब प्राणियों के शरीर में स्थित रहने वाला प्राण और अपान से संयुक्त अग्नि रूप हैं वैश्वानर। इसके कारण शरीर में गरमी रहती है और अन्न पच जाता है। भगवान इसको अपनी विभूति कहते हैं और यह अग्नि होकर भक्ष्य, भोज्य, लेह्य और चोष्य चार प्रकार के पदार्थों को पचाता है। (२) एक महर्षि।

वैष्णव—भगवान विष्णु और उनके अवतारों की पूजा करने वाले, उनका विश्वास करने वाले को वैष्णव कहते हैं।

वैष्णवचाप–शारङ्ग धनुष जिसको विश्वकर्मा ने बनाया था।

वैहायस—(१) महाराजा बलि का प्रसिद्ध विमान, जो विमानों में श्रेष्ठ था और जिसका निर्माण मय ने किया था। यह यान इच्छा-पूर्वक जहां-तहां उड़कर जा सकता था, शस्त्रा-स्त्रों से सुसज्जित, अनेक आयुधों से युक्त था। उसकी अविचार और तीव्र गति के कारण उसका पता लगाना मुश्किल था। (२) नर-नारायणाश्रम के पास स्थित एक तीर्थ कुण्ड।

व्यतीपात–भारी संकट को सूचित करने वाला अपशकुन।

याघ्रकेतु–एक पांचाल राजकुमार जो कौरव पक्ष में था और सात्यकि से मारा गया।

व्याघ्रपाद–उपमन्यु के पिता एक प्राचीन ऋषि।

व्यादिश–विष्णु का विशेषण।

व्याधि–मृत्यु की पुत्री।

व्यालीमुख–एक असुर जो कार्तिकेय से मारा गया।

व्यास–महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि पुराणों के कर्ता। ये पराशर मुनि और सत्यवती के पुत्र थे। सत्यवती मत्सराज की पोषित पुत्री थी। व्यास का जन्म द्वीप में होने से इनका नाम द्वैपायन हुआ। इनका रंग कृष्ण वर्ण होने से इनको कृष्ण द्वैपायन कहते है। वेदों का वर्गीकरण कर वेदों का प्रचार करने से वेदव्यास भी कहलाते हैं। ये महाविष्णु के अंशभूत, तीनों लोकों में विश्रुत, अति विद्वान वेद के आचार्य थे। पैदा होते ही तपस्या करने गये। लौकिक और आध्यात्मिक जीवन विताते थे, लेकिन जीवन में ये निस्पृह रहते थे। इनकी मां शान्तनु की पत्नी बनी जिससे शान्तनु के विचित्रवीर्य और चित्रांगद नामक दो पुत्र हुए। पुत्र जन्म से पहले इन दोनों की मृत्यु हुई। वंश की स्थापना के लिये सत्यवती के कहने पर नियोग विधि से विचित्रवीर के नाम से उनकी पत्नियों से, अम्बिका और अम्बालिका से, पाण्डु और धृतराष्ट्र को जन्म दिया और दासी से विदुर को। जब-जब पाण्डवों और कौरवों पर संकट आते थे, व्यास उनको सलाह देते थे। गान्धारी से पैदा हुए मांस पिण्ड के व्यास ने सौ टुकड़े किये थे जिनसे दुर्योधनादियों का जन्म हुआ था। दुर्योधन के क्रूर और नीच वृत्तियों को रोकने का उपदेश धृतराष्ट्र को दिया था। उन्होंने सञ्जय को दिव्य दृष्टि दी थी जिससे सञ्जय कुरुक्षेत्र के युद्ध का विवरण धृतराष्ट्र को दे सके। युद्धानन्तर में जब गान्धारी पाण्डवों को शाप देने लगी व्यास ने उनको रोका। हर मन्वन्तर में एक एक व्यास का जन्म हुआ है। व्यास ने साधा-रण जनता को वेद तत्वों को समझाने के लिये इतिहास पुराणों का निर्माण किया। महा-भारत और श्रीमद्भागवत लिख कर उन्होने अनन्त प्रशस्ति पायी। श्रीमद्भागवत पांचवां वेद माना जाता है। इनके पुत्र थे सुविख्यात आब्रह्मचारी शुक महर्षि। सात चिरंजीवियों में से एक हैं व्यास।

व्यासगुफा–बद्रीनाथ मे केशव प्रयाग के पास एक गुफा जहां व्यास मुनि ने पुराणों की रचना की।

व्यासवन–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थान।

व्याहृति–सन्ध्या करते समय प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चरित ईश्वर परक शब्द विशेष। यह व्याहृतियां तीन हैं भूः, भुवः और स्वः जिनका 'ओम्' के बाद उच्चारण किया जाता है।

व्युषिताश्व–पुरु वंश के एक धर्मनिष्ठ राजा।

व्युष्ट–ध्रुव के पौत्र पुष्पार्ण और दोष के तीन पुत्रों में से एक जो रात्रि का अन्त प्रभात है। इसको पुष्करिणी से सर्वतेजा नामक

एक पुत्र जन्मा ।

व्यूह–(१) चतुरंगिणी सेना को युद्ध क्षेत्र में चक्र, मयूर आदि के रूप में सुसज्जित रखने को व्यूह कहते हैं। ये अनेक प्रकार के हैं जिनमें कई इतने अच्छी तरह से सज्जित होते हैं कि उनके अन्दर शत्रु का प्रवेश मुश्किल से होता है जैसे चक्रव्यूह, क्रौंच व्यूह, गरुड़ व्यूह, मकर- व्यूह आदि। (२) सेना।

व्योम–(१) यदु वंशज राजा दशार्ह के पुत्र। इनके पुत्र जीमूत थे। (२) आकाश अन्तरिक्ष।

व्योमकेश–शिव का विशेषण।

व्योमचारि–(१) पक्षी (२) देव (३) नक्षत्र (४) सूर्य (५) चन्द्र (६) गन्धर्व आदि।

व्योमारि–एक विश्वदेव।

व्योमासुर–मयासुर का पुत्र, कंस का एक सेवक जो श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल गया था। यह बड़ा मायावी था। श्रीकृष्ण और बलराम गोप बालकों के साथ चोर और पकड़नेवाले का खेल खेल रहे थे। उनके बीच व्योमासुर एक गोप बालक के रूप में गया और अनेक बालकों को चुपके से ले जाकर एक गुफा में छिपाया। उसका मुँह एक शिला से बन्द किया। असुर का यह काम देखकर श्रीकृष्ण ने उसको पकड़ लिया जो पकड़ते ही अपने स्वरूप में हो गया। श्रीकृष्ण ने उसे जमीन पर पटक कर मारा और अपने साथियों को बचाया।

व्रज–(१) मथुरा के पास एक पुण्य स्थान जहाँ श्रीकृष्ण और बलराम का बचपन बीता था। इनके सहवास से यहाँ का पत्ता-पत्ता कण-कण पुनीत है। यहाँ का वायुमण्डल आज भी श्रीकृष्ण के मुरलीगान से गुंजित है। (२) स्वायंभुव मनु के वंशज हविर्धान और धिषणा का एक पुत्र।

व्रजेन–महाराजा अजमीढ़ और केशिनी का एक पुत्र।

व्रजमोहन–श्रीकृष्ण का विशेषण।

व्रजाङ्गना—गोपस्त्री।

व्रत–शास्त्रोक्त नियम, भक्ति या साधना का धार्मिक पालन। मन के संयम के लियें व्रत परिपालन आवश्यक है।

व्रतउपवास–किसी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए उपवास रखना।

व्रतपारणा–व्रत को समाप्त करना, प्रायः तुलसी तीर्थ या भगवान को चढ़ाये हुए किसी पदार्थ से की जाती है।

श

श–शिव, सुख, अस्त्र।

शंयु–बृहस्पति का पुत्र एक अग्नि। इसकी पत्नी सत्या धर्मदेव की पुत्री थी.

शंसि–घोषणा करने वाला।

शक–(१) एक विशेष जाति के लोग। कहा जाता है कि पहले ये ब्राह्मण थे, बाद में ब्राह्मण शाप से शूद्र बने (२) एक राजा (३) संवत्।

शकट–(१) एक असुर जो कंस से गोकुल भेजा गया। यह शकट के रूप में श्रीकृष्ण को मारने आया। श्रीकृष्ण कुछ ही दिन के थे। पैर मार कर शकट को गिरा कर मारा। (२) सैनिक व्यूह विशेष।

शकुन–सगुन, शुभाशुभ बतलाने वाला चिह्न। प्राचीन काल से ही भारतीय लोग (सभी जाति मतों के) शकुन पर विश्वास करते

आये हैं । विदेशीय लोग भी शकुन मानते हैं । शकुन अच्छे और बुरे दोनों होते हैं । दो नारियाँ, गुड़, घास, राख, मुण्ड शिर, चमड़ा ईन्धन, तेल, झाड़ू आदि दुश्शकुन माने जाते हैं । कहीं जाने को निकलते समय कोई पीछे से पुकारे या 'कहाँ जा रहे हो' ऐसा पूछे सिर दरवाजे आदि से टकराये ये भी दुश्शकुन हैं । दुश्शकुन देखने पर आकर थोड़ी देर बैठकर फिर निकलना चाहिए । भगवान का नाम भी लेना चाहिए । दम्पति, पानी से भरा कलश, शव, दूध, शहद, मांस, अमेध्य, वेश्या, शंख, गाय, बैल, मत्स्य, गोबर आदि अच्छे सगुन हैं । काली बिल्ली का रास्ता लांघना दुश्शकुन है । हिरण आदि मृग बायें से दायीं ओर जायें तो अच्छा होता है । (२) एक दानव जो हिरण्यकशिपु का अनुचर था ।

शकुनि—(१) गान्धार राजा सुबल का पुत्र, धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का भाई जो बड़ा कुटिल और चालाक था । दुर्योधन आदियों को बुरा परामर्श देकर कुपथ पर ले जाने में उसका बड़ा हाथ था । हर कुतन्त्र के पीछे इसकी वक्र दृष्टि काम करती थी । कुरुक्षेत्र के युद्ध में सहदेव ने इसको मारा था । (२) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंश के राजा भीमरथ के पुत्र । (३) एक साँप (४) एक महर्षि । (५) यदुवंश के दशरथ के पुत्र । इनके पुत्र करम्भि थे ।

शकुन्त—(१) एक प्रकार के पक्षी । शकुन्त पक्षियों ने विश्वामित्र और मेनका की उपेक्षिता पुत्री की देखभाल की थी । इसलिये उसका नाम शकुन्तला हो गया । (२) विश्वामित्र का एक पुत्र ।

शकुन्तला—विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र ने मेनका को भेजा । महर्षि का तप भंग हुआ और उनकी एक लड़की हुई । मेनका पुत्री को छोड़ चली गई और शकुन्त पक्षियों ने उसकी देख भाल की । अपने आश्रम के पास पड़ी उस सुन्दर बालिका को कण्व मुनि ने पुत्री की तरह पाला और शकुन्तला नाम रखा । शकुन्तला युवती होते अत्यन्त रूपवती हो गई । एक बार चन्द्रवंश के राजा दुष्यन्त शिकार करते उस आश्रम में आये और अपसरा सी सुन्दर शकुन्तला से कण्व मुनि की अनुपस्थिति में ही गान्धर्व विधि से विवाह किया । जल्दी ही उसे लिवा जाने का वचन देकर महाराजा अपनी राजधानी चले गये । मुनि को यह बात मालूम होने पर योग्य वर को पाने के कारण उन्होंने शकुन्तला को आशीर्वाद दिया । शकुन्तला गर्भवती हो गई । यहाँ से शकुन्तला की कथा को लेकर दो रूप प्रचलित हैं । व्यास महर्षि की कृतियों के अनुसार शकुन्तला का पुत्र उत्पन्न हुआ , कण्व ने उसका सर्वदमन नाम दिया और वेदाभ्यास और शास्त्राभ्यास किया । कण्व ने शकुन्तला और पुत्र को दुष्यन्त के पास भेज दिया । कुछ साल बीत जाने से दुष्यन्त शकुन्तला को न पहचान सके और उसकी कुटिलता कहकर शकुन्तला और पुत्र का परित्याग करने को तैयार हो गये । तब अशरीर वाक होता है कि शकुन्तला महाराजा की विवाहिता पत्नी और सर्वदमन उनका ही पुत्र है । यह सुन कर राजा सन्तुष्ट हुए और दोनों को स्वीकार करते है । पहले से ही किसी प्रमाण के बिना उनको स्वीकार कर राजा परिहास के पात्र बनना नहीं चाहते थे । कालिदास के नाटक 'शाकुन्तलम्' के अनुसार दुष्यन्त के चले जाने पर एक दिन विरहातुरा गर्भिणी शकुन्तला अपने पति के विचारों में इतनी मग्न थी कि अतिथि दुर्वासा के आगमन का न पता लगा और न उचित सत्कार किया । अतिक्रोधी मुनि ने शाप दिया कि जिसकी चिन्ता में तुम इतनी

मग्न हो वह तुम्हें भूल जायगा। शकुन्तला की सखियाँ प्रियम्वदा और अनसूया ने यह सुन लिया और मुनि के पैरों पड़कर प्रार्थना की। मुनि ने शाप मोक्ष दिया कि राजा कोई निशान देख लेने पर याद करेंगे। सखियों ने शकुन्तला से यह बात नहीं बतायी। जब कुछ महीने बीत जाने पर भी दुष्यन्त का कोई समाचार नहीं मिला तब कण्व ने तपस्विनी गौतमी और शारङ्गरव के साथ शकुन्तला को राजा के पास भेज दिया। रास्ते में नदी में हाथ मुँह धोते समय शकुन्तले की उंगली से दुष्यन्त की दी हुई अंगूठी पानी में गिर गई और एक मत्स्य ने उसको खाद्य पदार्थ समझ कर निगल लिया। यह बात किसी को पता नहीं लगी। गौतमी और शारङ्गरव ने राजा से सब बातें बता दी, लेकिन राजा ने एक अपरिचित गर्भिणी स्त्री को पत्नी रूप में स्वीकार करने से इनकार किया। दुष्यन्त को कोई बात याद नहीं थी और शकुन्तला के पास कोई निशानी नहीं थी। तापसी लोग भी शकुन्तला के चरित्र पर सन्देह करने लगे और उसको वहीं छोड़कर चले गये। शकुन्तला की निस्सहायता देख कर उनकी माँ मेनका उसको लेकर कश्यपाश्रम में छोड़ गई। वहाँ सर्वदमन का जन्म हुआ और महर्षि से वेदाध्ययन और शस्त्राभ्यास किया। एक मछुए के जाल में वह मछली फंसी जिसको काटने पर उसके पेट मे अंगूठी निकली। जब वह बेचने जा रहा था तब राजकिंकर राजा की मुद्राङ्कित अंगूठी देखकर उसको महाराजा के पास ले गये। अंगूठी को देखते ही दुष्यन्त को सारी बातें याद हो गईं और अपनी परित्यक्ता पत्नी की चिन्ता में अति व्याकुल हुए। दुष्यन्त देवासुर युद्ध के लिये स्वर्ग गये, वहाँ से लौटते समय कश्यपाश्रम गये जहाँ उनकी पत्नी और पुत्र से भेंट हुई। कश्यप ऋषि का आशीर्वाद पाकर पत्नी और पुत्र के साथ राजधानी लौटे। यही सर्वदमन दुष्यन्त के बाद भरत नाम से चक्रवर्ती बने। (देः दुष्यन्त) कोई-कोई कहते हैं इन्हीं से इस देश का नाम भारत हुआ।

शक्त–पूरु महाराज के वंश के मनस्वी के पुत्र।

शक्तन तम्पुरान्–केरल के कोचीन देश के एक राजा न्यायशील और अति प्रतापी राजा थे जिनके शासन काल में किसी प्रकार की अनीति, चोरी, डाका नहीं होता था। नीति पालन में वे जरा भी दया नहीं दिखाते थे इसलिये प्रजा और उनकी सम्पत्ति सुरक्षित थी।

शक्ति—(१) देवी का नाम, ऐश्वर्य और पराक्रम की मूर्तरूपिणी, भगवान शक्ति। (२) सुब्रह्मण्य का आयुध। (३) वसिष्ठ के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ जिनको विश्वामित्र के कहने के अनुसार राक्षसरूपि कल्मापपाद ने मारा। इनकी गर्भवती पत्नी अदृश्यन्ती वसिष्ठ के आश्रम मे रही और उनके पुत्र पराशर हुए। शिव का अवतार माने जाते हैं।

शक्तिभृत्–सुब्रह्मण्य का विशेषण।

शक्र–(१) इन्द्र का नाम (२) ज्येष्ठा नक्षत्र (३) अर्जुन वृक्ष।

शक्रजित–रावण के पुत्र मेघनाद का विशेषण।

शक्रदेव–एक कलिंग राजा जिन्होंने कौरव पक्ष से कुरुक्षेत्र में युद्ध किया और भीमसेन से मारे गये।

शक्रध्वज–इन्द्रोत्सव में इन्द्र के सम्मान में स्थापित ध्वज।

शक्रप्रस्थ–इन्द्रप्रस्थ।

शक्रसुत–जयन्त, अर्जुन और वालि का विशेषण।

शङ्कर–शिव, सुख और आनन्द देनेवाले।

शङ्करभाष्य–श्री आदि शंकराचार्य ने श्रीमद् भागवत गीता का जो भाष्य लिखा है उसको कहते हैं।

शङ्कराचार्य–आदि शङ्कराचार्य, वेदान्ताचार्य,

भारतीयों के आध्यात्मिक गुरु। केरल की पेरियार नामक पुण्य नदी के तीर पर कालटी नाम के गाँव में शिवगुरु और आर्याम्बा नामक जम्बूतिरि दम्पति के पुत्र होकर जन्में। बहुत काक तक निस्सन्तान रहने पर शिव की उपासना करने पर पुत्र जन्म हुआ। यह विश्वास था कि शिव ही पुत्र रूप में जन्में हैं। इनकी अमानुषिक तीव्र बुद्धि थी। इसलिये आठ वर्ष की आयु तक सब वेदशास्त्र, पुराणेतिहास, ज्योतिष आदियों में प्रवीण पण्डित हो गये। बचपन में ही पिता की मृत्यु हुई, बालक सन्यासी बनना चाहते थे, लेकिन माँ इसके लिये तय्यार नहीं थी। एक बार नदी में स्नान करते समय एक मनार ने उनको पकड़ा। मृत्यु आसन्न समझ कर मां ने सन्यास लेने की अनुमति दी। यह शर्त रखा कि उनकी मृत्यु के समय वे पास रहें और अन्त्येष्टि क्रिया करें। सात वर्ष की आयु में घर छोड़ कर गये और नर्मदा के तीर पर श्री गौढ़पाद के शिष्य श्री गोविन्द भगवत् पाद के शिष्य बने। सन्यास लेने के बाद शङ्कराचार्य पूरे भारत में घूमे। काशी में रह कर उन्होंने ब्रह्मसूत्र, उपनिषद, भगवत् गीता आदियों की व्याख्या की। शास्त्रों से सम्बन्धित वाद प्रतिवाद में उन्होंने प्रसिद्ध पण्डित मण्डन मिश्र और उनकी विदुषी पत्नी भारती को पराजित किया। मण्डन मिश्र उनके शिष्य बने। मां की मृत्यु निकट जानकर वे केरल वापस आये। सन्यासी होने से बन्धु मित्रों के तिरस्कार करने पर अकेला ही मातृ कर्म किया। भारत के कोने-कोने में घूमकर वेदान्त का प्रचार किया राज्य के चारों कोनों में दक्षिण में श्रृंगेरी में शारदा पीठ, पूर्व में जगन्नाथ में, पश्चिम में द्वारका में, उत्तर में बदरी नाथ में ज्योतिमठ नाम के मठ स्थापित किये। अनेक विष्णु, शिव और देवी मन्दिरों की स्थापना की। बदरी नाथ की पुनः प्रतिष्ठा शङ्कराचार्य ने की। कहा जाता है कि इन्होंने कैलाश के पांच लिंग लाकर पाँच महाक्षेत्रों की प्रतिष्ठा की— केदार का मुक्ति लिंग, नेपाल के नीलकण्ठ क्षेत्र का पर लिंग, चिदम्बर का मोक्षलिंग, श्रृंगेरी का भोगलिंग, काञ्ची का योगलिंग। ये काञ्ची में सर्वज्ञ पीठ पर बैठ गये, सर्व मान्य हो गये और बत्तीस साल की छोटी उमर में इस संसार को छोड़ चले। इन्होंने कई विशिष्ट ग्रन्थ लिखे जैसे ब्रह्मसूत्र और उपनिषद, गीता आदि के भाष्य, सौन्दर्य लहरी, मोह मुद्गर, भजगोविन्दम्, आत्मबोध ललिता त्रिशति, प्रबोध सुधाकर, अद्वैतानुभूति आदि। शिव, विष्णु, गणेश, देवी के अनेक स्तोत्र लिखे हैं।

शङ्करी—शिव की पत्नी।

शङ्कु—(१) हिरण्याक्ष का एक पुत्र। (२) एक यादव राजा उग्रसेन का पुत्र।

शङ्कुकर्ण—(१) शिव का एक पार्षद (२) एक नाग (१) कार्तिकेय का एक पार्षद।

शङ्ख—(१) भगवान विष्णु का आयुध। भगवान विष्णु ने पंचजन्य नामक शङ्खरूपी एक असुर को मारा था। उसकी हड्डी से शंख बना था। इस शंख का नाम पंचजन्य है। (२) विराट राजा का एक पुत्र जो युद्ध में द्रोणाचार्य से मारा गया। (३) कश्यपऋषि और कद्रू का पुत्र एक प्रमुख नाग। (४) एक संख्या। (५) कुबेर की नव निधियों में से एक। (६) स्वारोचिष मनु के एक पुत्र।

शङ्खचूड—(१) कुबेर का एक अनुचर। एक बार वन में गोपियों के बीच बैठकर बलराम और श्रीकृष्ण सुरीले स्वर से मस्त होकर गा रहे थे। उस समय शंखचूड मदमस्त होकर वहां आया और गोपियों को घसीट ले जाने लगा। दोनों भाई उसके पीछे दौड़े। उनको देख शंखचूड गोपियों को छोड़ कर जान

बचाने के लिए दौड़ा। लेकिन श्रीकृष्ण ने उसका पीछा किया और उसका सिर काट डाला। उसके सिर का चूड़ारत्न लाकर बड़े भाई को दिया।

शङ्खतीर्थ—सरस्वती नदी के पास एक पुण्य तीर्थ।

शङ्खपर्वत—मेरु पर्वत के समीप में एक पर्वत।

शङ्खशिर—एक असुर जो वृत्रासुर का अनुचर था।

शंखिनी—[१] स्त्रियों की चार जातियों में से एक चित्रिणी, पद्मिनी, हस्तिनी, शखिनी। [२] कुरुक्षेत्र का एक पुण्य नाम।

शची—इन्द्र की पत्नी, पुलोम की पुत्री, इन्द्राणी, पुलोमजा आदि नाम है। कहा जाता है कि इनकी अंश संभवा थी द्रौपदी।

शचीपति—इन्द्र।

शण्ड—शुक्राचार्य के पुत्र। शण्ड और अमर्क दोनों पुत्र थे और प्रह्लाद के गुरु थे।

शतकुम्भ—एक पहाड़ कहा जाता है कि यहाँ सोना मिलता है।

शतकुम्भा—एक पुण्य नदी।

शतकेसर—शाकद्वीप का एक पर्वत।

शतक्रतु—इन्द्र, सौ अश्वमेध करने वाला।

शतघ्नी—एक प्रकार का शस्त्र। एक विशाल पत्थर जिसमें लोहे की शलाकाएँ गड़ी हुई हैं।

शतजित्—[१] श्रीकृष्ण और जम्बवती का एक पुत्र। [२] यदु के ज्येष्ठपुत्र सहस्रजित के पुत्र। इनके तीन पुत्र महाहय, वेनहय, हैहय थे। [३] भरत वंश के विरज और विपूचि के सौ पुत्रों में से एक।

शतचन्द्र—महाविष्णु का कवच जिसके चन्द्रमा के समान सौ नोकें हैं।

शतद्युम्न—जनक वंश के भानुमान के पुत्र इनके पुत्र शुचि थे।

शतद्रु—भारत वर्ष की एक पुण्य नदी जिसका आधुनिक नाम सतलज है। जब वसिष्ठ के पुत्रों की हत्या हुई, पुत्र शोक से सन्तप्त वसिष्ठ आत्महत्या करने इस नदी में कूद पड़े। महर्षि को अग्निरूप जान कर उनसे बच कर नदी सौ धाराओं में बही। इसलिये इसका नाम शतद्रु हो गया।

शतधन्वा—एक यादव जो सत्राजित का शत्रु बन गया। ये हृदीक के पुत्र थे। सत्राजित ने अपनी रूपवती कन्या सत्यभामा का विवाह शतधन्वा से करने का निश्चय किया था। लेकिन सत्राजित के भाई प्रसेन की मृत्यु और स्यमन्तक मणि की पुनः प्राप्ति से अपने कर्मों पर लज्जित सत्राजित् ने कन्या का श्रीकृष्ण से विवाह कर दिया। इससे शतधन्वा उसका शत्रु बन गया। श्रीकृष्ण की अनुपस्थिति में अक्रूर और कृतवर्मा की सलाह से शतधन्वा ने सत्राजित् का लोभवश वध किया और स्यमन्तक मणि भी छीन लिया। हस्तिनापुर से दोनों भाई श्रीकृष्ण और बलराम यह वार्ता सुनकर लौट आये। मणि अक्रूर को देकर शतधन्वा जान बचाने की कोशिश की, लेकिन दोनों भाइयों ने उसका पीछा किया और श्रीकृष्ण ने उसका सिर काट डाला।

शतधार—इन्द्र का वज्र।

शतधृति—इन्द्र और ब्रह्मा का विशेषण।

शतपत्र—कमल

शतपत्रवन—द्वारका के पास एक वन।

शतपर्वा—शुक्राचार्य की एक पत्नी।

शतबलि—एक वानर श्रेष्ठ जो सीता की खोज में गया था।

शतमुख—इन्द्र का विशेषण।

शतमूर्ति—सैकड़ों मूर्ति वाले भगवान विष्णु।

शतयूप—एक केकय राजा।

शतरुद्र—एक तपस्वी मुनि जिनका हृदय अति विशुद्ध था और इच्छित रूप ले सकते थे। इनकी कथा वसिष्ठ ने श्रीराम को बतायी।

शतरूपा—स्वायम्भुव मनु की पत्नी। स्वायम्भुव मनु और शतरूपा ब्रह्मा के ही दो रूप थे।

इनके प्रियव्रत, उत्तानपद नाम के दो पुत्र और प्रसूति, आकूति और देवहूति नाम की तीन पुत्रियां थीं ।

शतवत्सल–कुमुद पर्वत पर स्थित एक वट वृक्ष । उसकी सौ शाखाएँ है । इसलिये यह नाम पड़ा । इन शाखाओं में से दूध, दही, शहद, घी, गुड़, अन्न आदि खाद्य पदार्थों की नदियों और अम्बर, शय्या, आसन, आभूषण आदि कुमुद पर्वत पर गिरते हैं जो इस पर्वत के उत्तर में स्थित इलव्रत के वासियों के लिये उपकारप्रद हैं ।

शतशीर्वा–नागराज वासुकि की पत्नी ।

शतशृङ्ग–[१] एक पर्वत । यहां महाराजा पाण्डु रहते थे और युधिष्ठिर आदि पाण्डवों का जन्म यहीं हुआ था । [२] एक मुनि जिन्होंने पाण्डु को शाप दिया था । [३] एक राक्षस ।

शतसहस्त्र–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थान ।

शतह्रदा–[१] विराध नामक राक्षस की मां । इसके पति का नाम जय था । [२] इन्द्र का वज्र [३] बिजली ।

शतानन्द–[१] गौतम ऋषि और अहल्या के पुत्र, जनक महाराजा के पुरोहित । महाराजा दशरथ और जनक के पुत्र-पुत्रियों के विवाह कर्म इन्होंने कराये थे । [२] लीला भेद से सैकड़ों विभागों में विभक्त होकर आनन्द लेने वाले भगवान् ।

शतानीक–[१] ययाति के वंशज बृहद्रथ के पुत्र । इनके पुत्र दुर्मद थे । [२] द्रौपदी और नकुल के पुत्र जो अश्वत्थामा से मारे गये । [३] राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय का एक पुत्र [४] कुरुवंश के एक प्रसिद्ध राजर्षि । [५] विराट राजा के भाई जो विराट सेना के सेना नायक थे । कुरुक्षेत्र के युद्ध में शल्य से मारे गये ।

शतायु–पुरुरवा और उर्वशी का एक पुत्र ।

शतावर्त–विष्णु का विशेषण ।

शत्रघ्नु–[१] शत्रुओं को मारने वाले भगवान । [२] दशरथ महाराजा और सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण के भाई । जनक महाराजा के भाई कुशध्वज की पुत्री सुतकीर्ति इनकी पत्नी थी । अपने भाईयों के समान ये बड़े वीर पराक्रमी योद्धा थे । श्रीराम की अनुमति से ये मधुवन में लवणासुर को मारा और मथुरा पुरी के राजा बने । ये भरत से विशेष स्नेह रखते थे । काल का आगमन, श्रीराम की प्रतिज्ञा, लक्ष्मण का निर्याण और रघुनाथ जी की महाप्रयाण की तय्यारी की बातें सुन कर शत्रुघ्न अति व्याकुल हुए और अपने पुत्र महाबलि सुबाहु को मथुरा के और यूपकेत को विदिशा के राज्य पर अभिषिक्त कर जल्दी अयोध्या आये । अपने बड़े भाई के साथ जाने का उनका दृढ़ निश्चय था । कहा जाता है कि शत्रुघ्न महाविष्णु के आयुध चक्र का अवतार थे । [३] श्वफल्क और गन्दिनी का एक पुत्र ।

शत्रुजित्–[१] भगवान विष्णु का विशेषण[२] ध्रुवसन्धि और लीलावती का पुत्र [३] द्रुपद महाराजा के पुत्र जो अश्वत्थामा से मारे गये । [४] सौवीर देश का एक राजकुमार जो कौरव पक्षी था । [५] पुरुरवा के वंशज दिवोदास के पुत्र द्युमान का अपर नाम ।

शत्रुञ्जय–[१] एक पहाड़ का नाम [२] महाविष्णु का नाम ।

शत्रुतपन–कश्यप ऋषि और दनु का एक पुत्र ।

शनि—[१] सूर्य का पुत्र शनिग्रह । [२] शिव ।

शनिवार–सप्ताह का एक दिन ।

शनैश्चर–सूर्य और छाया का पुत्र । शनिग्रह का अधिष्ठान देवता । इनके भाई सावर्णि मनु और बहन तपती थी । यह अति तेजस्वी और तीक्ष्णरूप है । यह ग्रह बृहस्पति से दो

लाख योजना आगे है और सौर मण्डल की एक-एक राशि में ढाई साल रहता है, अतः बारह राशियों को ३० साल में पार करता है। इसकी मन्द गति के कारण इसका शनैश्चर नाम पड़ा। इसकी गति प्रायः सभी लोगों की अशान्ति का कारण होती है। एक प्रबल ग्रह है।

शन्तनु—पुरुवंश के राजा प्रतीप के तीन पुत्र देवापि, शन्तनु और बालहीक थे। देवापी के वानप्रस्थाश्रम स्वीकार करने से शन्तनु महाराजा बने। ये पूर्व जन्म में महाभिषक कहलाते थे। किसी वृद्ध को छू लेने पर वह जवान हो जाता था और उसको अद्भुत आराम मिलता था, इसलिये इनका नाम शन्तनु हुआ। ब्रह्मा के शाप से गंगा को मनुष्य जन्म लेना पड़ा। गंगा पर मोहित शन्तनु ने उसको अपनी पत्नी बनायी, गंगा की शर्त थी कि पैदा होने वाले बच्चों को वे नदी में फेंक देंगी। अष्टवसुओं ने शाप ग्रस्त होकर इनके पुत्र होकर मनुष्य जन्म लिया। इनमें वसु का अवतार था। भीष्म जो आत्मज्ञानी, सर्वधर्मवेत्ता, श्रेष्ठ और महा भागवत् थे। महारथी थे। शन्तनु ने दाशों की कन्या सत्यवती से विवाह किया। यह विवाह सम्पन्न करने के लिये भीष्म को राज्य पर का अपना अधिकार छोड़ना और आजन्म ब्रह्मचारी रहने की भीषण प्रतिज्ञा करनी पड़ी। सत्यवती से शन्तनु के चित्रांगद और विचित्रवीर्य नाम के दो पुत्र हुए। जिनमें चित्रांगद उसी नाम के गन्धर्व से मारे गये। शन्तनु सत्यवादी और पराक्रमी राजा थे। इन्होंने अनाथ कृप और कृपी का पालन किया।

शबर—(१) पहाड़ी, असभ्य भील जाति। कहा जाता है कि ये लोग वसिष्ठ की कामधेनु नन्दिनी के शरीर से निकले। (२) मीमांसा के प्रसिद्ध भाष्यकार।

शबरी—श्रीराम की अनन्य भक्ता एक भीलनी। शबरी मतंगाश्रम में मुनि और शिष्यों की सेवा करती हुई उनसे तप की महिमा, ब्रह्म ज्ञान आदि प्राप्त कर वहीं तपस्या करती रही मृत्यु से पहले मुनियों ने उसको आशीर्वाद दिया था कि शीघ्र ही उसको श्रीराम के दर्शन होगे और शबरी पूर्व जन्म में एक गन्धर्वराज कुमारी थी जो शाप के कारण भीलनी बनी थी। श्रीराम की प्रतीक्षा में वह रही। प्रभु को कष्ट न हो यह सोचकर रास्ता दूर तक बुहार देती, गोबर से लीप देती। जंगल में जाकर चख-चख कर जिस पेड़ के फल मीठे होते, तोड़ कर दोने में भर कर रखती थी। भगवान लक्ष्मण समेत उसकी कुटिया में पधारे। शबरी प्रेम और भक्ति के आवेश में बार-बार उनके चरण कमलों को चूम कर चख कर रखे हुए फलों को भेंट की। भगवान को भक्ति और स्नेह से भरे वे फल अति मीठे लगे। शबरी का जीवन धन्य हो गया।

शबरीमला—केरल का एक प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र। यह शबरि गिरि या शबरि मला केरल के पूर्व भाग में स्थित है। यहाँ हरिहर सुत अय्यप्पन् या शास्ता का अतिपुरातन और सुप्रसिद्ध क्षेत्र है। घने जंगलों और पर्वतों के दुर्गम रास्ते की कठिनाइयों को, और हिंस जानवरों की परवाह न कर हर साल यहाँ भारत के कोने-कोने से हजारों लाखों की संख्या में भक्त जन दर्शन करने जाते हैं। यहाँ जाति मत का, ऊँच नीच का भेद नहीं है। यहाँ दर्शन करने जाने वालों को कठिन व्रत रखना पड़ता है। सभी भक्त अय्यप्प कहलाते हैं। कार्तिक महीने की पहली तारीख से व्रत शुरू होता है। भक्त जन काला वस्त्र पहनते हैं, सिर के बाल मूछ आदि नहीं कटवाते, एक खास प्रकार की मणियों की माला

पहनते हैं। ब्रह्मचर्य का तीव्र पालन करते हैं। इस मन्दिर में व्रत रख कर स्त्रियां ऋतुकाल शुरू होने पर जब तक बन्द नहीं होता, नहीं जा सकतीं। छोटी लड़कियां या वृद्धायें ही जा सकती हैं। अय्यप्पन मोहनी रूप विष्णु और शिव के पुत्र माने जाते हैं, इसलिये इनका एक नाम हरिहरसुत भी है। यहां कुछ साल के पहले तक साल में सिर्फ मकर संक्रान्ति को पूजा होती थी। शेष दिन मन्दिर बन्द रहता था। घने जंगलों में से यहां पहुँचना कठिन था। भक्त जन झुण्ड बना कर जाते हैं और व्रत का कठिन पालन करते हैं। कई सालों से रास्ता कुछ बन जाने से संक्रान्ति से कुछ दिन पहले ही क्षेत्र खुल जाता है और चैत्र महीने के विषुवत् पुण्य काल के दिन भी खुला रहता है।

शवलाक्ष—एक महर्षि।

शवलाश्व—[१] दक्ष प्रजापति और पाञ्जजनी के हजार पुत्र शवलाश्व कहलाते थे। प्रजा सृष्टि करने के लिए पिता के आदेश पर कठिन तप करने नारायण सर की ओर गये। सर में स्नान कर भीतर वाहर से शुद्ध हो कर वे ओंकाररूप भगवान महाविष्णु की स्तुति करते रहे। देवर्षि नारद वहां गये और संसार की असारता, मोक्ष प्राप्ति आदि का उपदेश दे कर प्रजासृष्टि की निश्चय छोड़ देने को कहा। नारद जी की वात सुन कर उन्होंने मोक्ष का पद ग्रहण किया। वे राजमहल को नहीं लौटे, इस कारण से दक्ष ने नारद को शाप दिया। (२) महाराजा कुरु के पुत्र अविक्षित के पुत्र।

शब्दसह—समस्त वेद शास्त्र जिनकी महिमा का वर्णन करते हैं ऐसे भगवान विष्णु।

शब्दातीत—शब्द की जहां पहुँच नहीं, ऐसे वाणी के अविषय भगवान विष्णु।

शम—(१) मन को भली भांति संयत करके उसे अपने अधीन बना लेने को शम कहते हैं। बारम्बार दोष-दृष्टि करने से विषय समूह से विरक्त हो कर चित्त को अपने लक्ष्य में स्थिर करना शम है। (२) धर्म देव का पुत्र (३) अह नामक वसु का एक पुत्र।

शमात्मिका—देवी का नाम।

शमि—पुरु के वंशज राजा उशीनर के पुत्र।

शमीक—[१] एक तपस्वी। परीक्षित महाराजा शिकार करके थके मांदे इनके आश्रम में गये थे और इनकी समाधि को झूठी समझ कर अज्ञान में उनके गले में मृत सांप को डाला था। इनके पुत्र शृंगी ने इस बात का पता लगने पर महाराजा को शाप दिया कि सातवें दिन तक्षक काट कर मरेंगे। शमीक बड़े दयालु और धर्मनिष्ठ थे। अपने पुत्र के दिये शाप की बात सुन कर वे दुःखी हुए। राजा को इसकी सूचना देने के लिए अपने एक शिष्य को भेजा। [२] एक यादव। शमीक और सुदामिनी से पुत्र सुमित्र, अर्जुनपाल आदि हुए।

शमीगर्भ—[१] अग्नि का विशेषण [२] अग्निहोत्री ब्राह्मण।

शमीवृक्ष—एक वृक्ष जिसमें अग्नि रहती है, ऐसा विश्वास है।

शम्बर—[१] एक असुर जिसको श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न ने मारा था (दे: प्रद्युम्न)। (२) एक प्रकार की बड़ी मछली (३) एक पहाड़।

शम्बूक—एक शूद्र जिसे विधि के विपरीत साधना करने के कारण श्रीराम ने मारा था।

शम्भु—(१) शिव (२) अम्बरीष महाराजा का एक पुत्र (३) पूज्य पुरुष (४) ब्रह्मा।

शम्भुसुत—स्कन्द देव।

शयनैकादशी—आषाढ़ शुक्ला एकादशी। इस दिन भगवान विष्णु चार मास तक विश्राम के लिये लेट जाते हैं, ऐसा विश्वास है।

शरत्चन्द्र—शरत् काल का चन्द्र जो अत्यन्त सुन्दर और शीतल है ।

शरण—दीन दुःखियों के परम आश्रय भगवान ।

शरद्वान—गौतम के पुत्र एक मुनि जो धनुर्विद्या के पारंगत थे । तपस्या कर इन्होंने अनेक दिव्यास्त्र पाये थे । इनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिये जानपति नामक अपसरा आयी जिसको देख कर इन्द्रियस्खलन हुआ और कृप और कृपी का जन्म हुआ ।

शरभ—[१] एक महर्षि [२] कश्यप और दनु का पुत्र एक दुष्ट दानव । [३] चेदी नरेश धृष्टकेतु का एक भाई [४] शरीरों को प्रत्यगात्मरूप से प्रकाशित करने वाले भगवान ।

शरभङ्ग—श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त एक ऋषि । वे तप से परिशुद्ध और दैवी शक्ति रखनेवाले थे । जब श्रीराम और लक्ष्मण शरभंगाश्रम में गये थे उस समय इन्द्र उनका दर्शन कर जा रहे थे । इन्द्र उनको ब्रह्मलोक ले जाने के लिये आये थे, लेकिन ऋषि श्रीराम के दर्शन कांक्षी थे । श्रीराम को सुतीक्षण आश्रम का पता बता कर अग्नि प्रज्वलित कर शरभङ्ग ने उसमें प्रवेश किया । तब वे अग्नि के बालक के समान शोभित हुए और अग्नि से निकल कर ब्रह्मलोक पहुँचे ।

शरभङ्गाश्रम—शरभङ्ग महर्षि का आश्रम ।

शरवण—एक वन जहाँ स्कन्ददेव का जन्म हुआ । शिव वीर्य से ज्वलित गंगादेवी ने ब्रह्मा के उपदेश से उसको उदय पर्वत पर शरवण वन में छोड़ दिया । शरवण एक प्रकार की घास है । अनेक संवत्सरों के बाद अति तेजोमय एक बालक, स्कन्ददेव, का जन्म हुआ ।

शरवणभव—सुब्रह्मण्य का नाम । शरवण घास के बीच में जन्म होने से यह नाम हुआ ।

शरशयन—कुरुक्षेत्र में धृष्टद्युम्न के शराघात से भीष्म घायल हो गये थे । उन पर लगे शरों से एक शय्या सी बनी जिस पर स्वच्छन्द मृत्यु भीष्म उत्तरायण की प्रतीक्षा में पड़े रहे । भीष्म का शरों की सेज पर इस प्रकार लेटने को शरशयन कहते है ।

शरीर—भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पंचभूतों से शरीर का निर्माण होता है । त्वचा, मांस, रक्त, स्नायु (नस), मेद, मज्जा और अस्थियों का समूह है यह शरीर । शरीर आंख, कान, नाक आदि पांच कर्मेन्द्रिय, श्रवण, घ्राण, स्पर्श आदि ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि, मन अहङ्कार आदि से युक्त है । इस में वात, पित्त, कफ तीन दोष हैं जिनके घटने बढ़ने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है । पंचीकृत स्थूल भूतों से पूर्व कर्मानुसार भिन्न-भिन्न शरीर पाते हैं । शरीर भी तीन प्रकार के हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण । स्थूल शरीर की अवस्था जाग्रत है जिसमें स्थूल पदार्थों का अनुभव होता है । वागादि पांच कर्मेन्द्रियाँ, श्रवणादि ज्ञानेन्द्रियाँ- प्राणादि पांच प्राण, आकाशादि पांचभूत, बुद्धि, अन्तःकरण चतुष्टय, अविद्या तथा कर्म है यह सूक्ष्म शरीर कहलाता है । यह सूक्ष्म अथवा लिङ्ग शरीर अपञ्चीकृत भूतों से उत्पन्न हुआ है । यह वासनायुक्त हो कर कर्म फलों का अनुभव कराने वाला है । स्वप्न इस की अभिव्यक्ति की अवस्था है ।

शर्म—परमानन्द स्वरूप भगवान विष्णु ।

शर्मदायिनी—देवी का विशेषण ।

शर्मिष्टा—असुरों के राजा वृष पर्वा की पुत्री, ययाति की पत्नी उनके तीन पुत्र हुये:—द्रुह्यु, अनु और पुरु । [दे: देवयानी, ययाति]

शर्याति—वैवस्तमनु और श्रद्धा के दस पुत्रों में से एक । ये बड़े ब्रह्मनिष्ठ और वेदज्ञ थे । इनकी पुत्री सुकन्या थी जिसका विवाह च्यवन महर्षि से हुआ । च्यवन ऋषि के आदेश से, राजा शर्याति ने हरि की प्रीति के लिये एक सोमयज्ञ किया जिसमें च्यवन महर्षि ने अश्विनी कुमारों

को, जिन्होंने उनको यौवन और सौन्दर्य दिया था, सोमपान कराया। शर्याति के पुत्र उत्तानबर्हि, आनर्त और भूरिषेण थे।

शर्व–शिव।

शर्वरी–रात्रि।

शर्वरीश–चन्द्रमा।

शर्वाणी–देवी का नाम, इनका सुकेशी नाम भी है। सुकेशी का पुत्र है अंगारक।

शल–[१] एक नाग [२] कंस का एक मल्ल जिसने मुष्टिक और चाणूर के साथ श्रीकृष्ण और बलराम से मल्लयुद्ध किया था और मारा गया। [३] कुरुवंश के राजा सोमदत्त के पुत्र, भूरिश्रवा के भाई। ये श्रुतकर्मा से मारे गये। [४] भृंगी नामक शिव का एक गण।

शलभ–कश्यप और दनु का पुत्र एक असुर।

शल्य–[१] मद्रदेश के राजा इनकी बहन माद्री पाण्डु की दूसरी पत्नी थी। भारत युद्ध मे पाण्डव पक्ष में शामिल होना चाहते थे, लेकिन दुर्योधन की चालाकी से कौरव पक्ष में मिले। भारत युद्ध शुरू होने से पहले पाण्डवों को विजय की अशंसा दी थी। दुर्योधन की प्रार्थना पर अपनी इच्छा के विरुद्ध शल्य कर्ण के सारथि बने। कर्ण की मृत्यु के बाद शल्य एक दिन के लिये कौरवों के सेनापति बने और युधिष्ठिर के शराघात से मारे गये। [२] बाण, तीर।

शल्यपर्व–महाभारत का एक पर्व।

शश–चन्द्रमा का कलंक।

शशाद–अयोध्या के राजा विकुक्षि के पुत्र।

शशबिन्दु–[१] खरगोश के समान चिह्न वाले चन्द्रमा की तरह सम्पूर्ण प्रजा का पोषण करने वाले महाविष्णु। [२] यदुवंश के राजा चित्ररथ के पुत्र जो महायोगी, महाभोगी थे। उनके पास चौदह अमूल्य रत्न जैसे गजश्रेष्ठ, अश्व, रथ, स्त्री, शर, धन, फूलों की माला, वृक्ष, शक्ति, पाश, रत्न, छत्र, विमान थे। उनकी दस हजार पत्नियाँ और एक-एक से अनेक पुत्र हुए। इनमें पृथुश्रव ज्येष्ठ थे।

शशयान–एक पुण्य स्थान जहाँ सरस्वती नदी बहती है।

शशाद–महाराजा इक्ष्वाकु के पुत्र विकुक्षि का दूसरा नाम (दे: विकुक्षि)।

शशिकला–काशी राजकुमारी, अयोध्या के राजा सुदर्शन की पत्नी। सुदर्शन के पिता और पितामह को राजा युधाजित ने पराजित किया था और सुदर्शन के पिता की मृत्यु हुई। माता के साथ वे भरद्वाजाश्रम में रहते थे। एक बार शृंगवेरपुर के निषाद राजा जो सुदर्शन के पिता ध्रुवसंधि का मित्र था, सुदर्शन को एक मायामय रथ दिया। काशी राजकुमारी ने सुदर्शन के रूप गुणों की प्रशंसा सुन कर मन में उनको अपना पति मान लिया था। जब उसके विवाह की तैयारियाँ हुईं और अनेक राजा उपस्थित हुए कुमारी ने अपने माता-पिता से अपनी इच्छा प्रकट की। राजा एक गरीब को अपनी पुत्री को देना नहीं चाहते थे। शशिकला ने एक दूत को सुदर्शन के पास सब समाचार बताने को कहा। पुत्री की हठ पर राजा ने चुपके से उसका विवाह सुदर्शन से किया। इसका पता लगने पर युधाजित आदि राजाओं ने रास्ते में सुदर्शन पर आक्रमण किया। उस दिन रथ के प्रभाव से सुदर्शन ने सब राजाओं को परास्त किया और अयोध्या के विख्यात राजा हुए।

शाक–शाकद्वीप का वृक्ष जिससे उस द्वीप का यह नाम हुआ।

शाकद्वीप–क्षीर सागर के आगे उसको घेर कर बत्तीस लाख योजन विस्तीर्ण शाकद्वीप है। इस द्वीप पर एक शाक वृक्ष है जिससे इस द्वीप का यह नाम पड़ा। इसके सुगन्ध से सारा द्वीप सुगन्धित है। इस द्वीप के प्रथम

चक्रवर्ति प्रियव्रत के पुत्र मेधातिथि थे जिन्होंने इस द्वीप को सात वर्षों में विभाजित कर अपने सात पुत्रों को सौंप दिया । इन वर्षों के सीमारूप पर्वत हैं :—ईशान, उरु-शृंग, बलभद्र, शतकेसर, देवपाल, महानश, आदि । अनघा, अयुर्दा, उभयस्पृष्टि, अपराजिता, पञ्चनदी, सहस्रश्रुति, निजधृति आदि नदियां हैं । इन वर्षों के जीवों के वर्ण हैं–ऋतव्रत, सत्यव्रत, दानव्रत और अनुव्रत प्राणायाम के द्वारा राजस और तामस वृत्तियों का त्याग कर वे वायुरूप भगवान की वन्दना करते हैं ।

शाकम्बरी–देवी का नाम ।

शाकल–(१) माद्र देश की राजधानी, पुराण प्रसिद्ध नगरी आधुनिक स्यालकोट । (२) ऋगवेद की एक शाखा ।

शाकल्य–एक वेदज्ञ महर्षि जिन्होंने वेद संहिताओं का क्रमीकरण किया था, एक वैयाकरण भी थे ।

शाकिनी–दुर्गा देवी की परिचारिका, पिशाचिनी या परी ।

शाक्त–शक्ति के पूजक, प्रायः दुर्गा की पूजा करने वाले होते हैं । इनकी पूजा भी दो प्रकार की होती है । एक सात्विक पूजा जो दुर्गा के राजराजेश्वरी रूप की होती हैं और जिसमें पूजा के सामान और नैवेद्य सात्विक और पवित्र होते हैं । इसको दक्षिणाचार भी कहते हैं । दूसरी तापसी पूजा जिसमें दुर्गा के रौद्र रूप भद्रकाली या चामुण्डी की पूजा है और पूजा के सामान भी तामसिक हैं जैसे मद्य, मांस आदि । इसको वामाचार कहते हैं,

शाक्तेय–शक्ति के उपासक ।

शाक्य–(१) बौद्ध भिक्षु (२) इक्ष्वाकुवंश के सञ्जय के पुत्र, इनके पुत्र शुद्धोद थे ।

शाख–विभिन्न पुराणों के अनुसार इनका जन्म भी विभिन्न माना जाता है । कोई इनको स्कन्द देव के भाई, और कोई अनल नामक वसु के पुत्र कहते हैं ।

शाङ्करी–गणेश, सुब्रह्मण्या, अग्नि आदि का विशेषण ।

शांडिल्य–(१) एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने विधि शास्त्र पर ग्रन्थ लिखा था । (२) बिल्व पत्र ।

शतोदर–(१) हिमवान की पुत्री पर्वती (२) कृशोदरी देवी ।

शान्त–(१) अष्ट वसुओं में आप के पुत्र (१) प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष का नाम ।

शान्तनव–शन्तनु महाराजा के पुत्र भीष्म ।

शान्तरज–काशी के एक राजा ।

शान्तरय–पुरुरवा के वंशज धर्म सारथि के पुत्र, जिन्होंने मोक्ष पाया ।

शान्ता–(१) महाराजा दशरथ की पुत्री । दशरथ ने अपनी इस पुत्री को अपने मित्र अंग देश के राजा रोमपाद को गोद दे दिया जो निस्सन्तान थे । शान्ता का विवाह प्रसिद्ध ऋषि ऋष्यशृंग से हुआ (दे: ऋष्यशंग) (२) देवी का नाम ।

शान्ति–(१) श्री कृष्ण और कालिन्दी का एक पुत्र । (२) शिविवंश के राजा अजमीढ़ के पौत्र और नील के पुत्र । शान्ति के पुत्र सुशान्ति थे । (३) अंगिरा का एक पुत्र । (४) तामस मन्वन्तर के इन्द्र का नाम (५) भगवान यज्ञ और दक्षिणा के एक पुत्र का नाम ।

शान्तिपर्व–महा भारत का एक मुख्य पर्व ।

शान्तिपाठ–किसी मंगल कर्म, पूजा, होम आदि की समाप्ति पर सब की शान्ति के लिये; क्षेम कल्याण के लिये शान्ति पाठ किया जाता है ।

शान्ति देव–यदुवंश के राजा उग्रसेन के भाई देवक की पुत्री, वसुदेव की पत्नी । इनके श्रम प्रतिश्रुत आदि पुत्र थे ।

शान्तिमति–देवी का विशेषण । भक्तों के अपराधों का क्षमापूर्वक वीक्षण करने की उदारता दिखाने वाली देवी ।

शान्ति यज्ञ–पाप कर्म के फल से मुक्ति पाने के लिये अथवा सब की शान्ति और कल्याण के लिये किया जाने वाला यज्ञ ।

शान्तिहोम–शान्तियज्ञ ।

शान्ती–(१) दक्ष प्रजापति और प्रसूति की पुत्री (२) एक कला विशेष ।

शाप–अभिशाप, बुरा मानना ।

शापमोक्ष–शाप से या अभिशाप से मुक्ति, छुटकारा ।

शावस्त–इक्ष्वाकु वंश के युवनाश्व के पुत्र जिन्होंने शावस्ति नाम की नगरी बसायी । इनके पुत्र वृहदश्व थे ।

शाम—यद ।

शामवी–यम की दिशा, दक्षिण दिशा ।

शामित्र–यज्ञ के लिये बलि पशु को बांधना, यज्ञीय पात्र ।

शामिली–यज्ञीय श्रुवा ।

शाम्भवी–श्री पार्वती ।

शारदा–(१) सरस्वती देवी (२) पार्वती देवी । (३) श्रीरामकृष्ण परमहंस की धर्मपत्नी जो देवी की अंशभूता समझी जाती है । बचपन में ही उनका विवाह भगवान श्रीरामकृष्ण से हो गया था । योग निष्ट, ब्रह्मचर्य व्रत में दृढ़ अपने पति के साथ शारदा ने ब्रह्मचारिणी का जीवन बिता कर अपने पति और पति के शिष्यों की मां की तरह सेवा की । श्रीरामकृष्ण के अध्यापन के फलस्वरूप अनपढ़ होने पर भी छोटी उम्र में ही ज्ञानार्जन किया और आत्मज्ञान प्राप्त किया । श्रीरामकृष्ण के स्वर्गारोहण के बाद उनके शिष्यों को उन्होंने ही मार्ग-दर्शन दिया था और सन्यास देकर रामकृष्ण आश्रम की स्थापना करने में मदद दी । किन्हीं-किन्हीं बातों में ये अपने पति से भी पहुँची हुई ज्ञानी थीं । ये पाप और पुण्य में कोई फरक नहीं रखती थीं, पापी भी इनके स्पर्श से, इनके सम्पर्क से पुण्यात्मा हो जाता था ।

शारदाराध्या–(१) सरस्वती देवी या देवताओं से आराध्या (२) शरत् ऋतु में पूजिता । देवी की पूजा के लिये शरत् ऋतु सबसे अभीष्ट है । (३) पंडितों से पूजिता देवी ।

शारदूती–एक अपसरा ।

शार्ङ्ग–सींग से बना भगवान विष्णु का धनुष ।

शार्ङ्गधन्वा–महाविष्णु का विशेषण ।

शार्ङ्गपाणी–महाविष्णु ।

शार्ङ्गरव–(१) एक महर्षि (२) कण्व महर्षि का एक शिष्य जिसके साथ कण्व महर्षि ने शकुन्तला को दुष्यन्त के पास भेजा था ।

शार्दूल–एक राक्षस जो रावण का दूत था ।

शार्दूली–कश्यप और क्रोधवशा की एक पुत्री जिससे व्याघ्र आदि जानवरों का जन्म हुआ ।

शार्वरी–रात ।

शालिवाहन–एक सुप्रसिद्ध राजा जिनके नाम से एक संवत्सर आरम्भ होता है ।

शालिसूर्य–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थान जहाँ शालिहोत्र ऋषि का आश्रम था ।

शालिहोत्र–एक ऋषि इनके आश्रम में एक अतिपुरातन वृक्ष था । महर्षि के तपोबल से इस वृक्ष पर काल का कोई प्रभाव न पड़ता था । वहाँ एक सरोवर भी था ,जिसमें स्नान करने से भूख प्यास मिट जाती थी ।

शाल्मलि–चन्द्र वंश के राजा कुरु के पौत्र और अविक्षित के पुत्र थे ।

शाल्मलि द्वीप–(१) महाद्वीपों में से एक । महाराजा प्रियव्रत ने इस भूमण्डल को सात द्वीपों में विभक्त किया था । प्लक्ष द्वीप से दुगुना चौड़ा यह द्वीप उतने ही चौड़े सुरोद से आवृत है । इस द्वीप में एक शाल्मलि वृक्ष है जिस पर, विद्वानों का कहना है कि, गरुड़ रहते हैं और वेद मन्त्रों से भगवान का स्तुति गान करते हैं । इस द्वीप के अधिपति यज्ञबाहु महाराजा प्रियव्रत के तीसरे पुत्र थे । उन्होंने

इस द्वीप को अपने सात पुत्रों के नाम से सात वर्षों में विभाजित किया। इस द्वीप के प्रमुख पर्वत हैं स्वरस, शतशृङ्ग, वामदेव, कुन्द, मुकुन्द, पुष्पवर्ष और सहस्रश्रुति; प्रधान नदियां हैं अनुमती, सिनीवाली, सरस्वती, कुहू, रजनी, नन्दा, राका। मनुष्यों की चार जातियां हैं—श्रुतधार, वीर्यधार, वसुन्धर और इषन्धर। वे सोम रूप भगवान की वेद सूक्तों से पूजा करते हैं। (२) नरक का एक भेद।

शाल्य–एक देश का नाम (दे: शाल्व)।

शाल्वायन–एक राजा जो जरासंघ के डर से अपने बन्धुमित्रों के साथ दक्षिण भारत की ओर भाग गये थे।

शावन्त–पृथु महाराजा के वंशज युवनाश्व के पुत्र। इनके पुत्र बृहदश्व थे।

शाश्वत–सनातन भगवान का विशेषण।

शाश्वती–(१) सनातन देवी (२) पृथ्वी।

शास्ता–मोहनी रूप महाविष्णु और शिव के पुत्र (दे: शबरिमला)।

शास्त्र–वेदविधि, धार्मिक ग्रन्थ।

शास्त्रकोविद–शास्त्रों में निष्णात।

शास्त्रसारा–शास्त्रों की साररूपा देवी।

शिखण्डि–(१) मयूर पिच्छ को अपना शिरोभूषण बनाने वाले भगवान विष्णु (२) राजा द्रुपद के पुत्र। जब राजा द्रुपद की कोई सन्तान न थी तब उन्होंने सन्तानार्थ आशुतोष शिव की उपासना की थी। भगवान ने प्रसन्न होकर वर दिया कि तुम्हारी कन्या होगी। राजा ने कहा कि मुझे कन्या नहीं पुत्र चाहिये। शिव ने कहा कि यही कन्या आगे चल कर पुत्ररूप में परिणित होगी। द्रुपद की जब कन्या हुई शिव की बात पर विश्वास कर उसको पुत्र घोषित किया और उसका पालन-पोषण, पहनावा, और विद्याभ्यास राजकुमार की तरह हुआ। यौवनावस्था प्राप्त करने पर राजा हिरण्यवर्मा की पुत्री से उसका विवाह भी कर दिया। कन्या को ससुराल आने पर सच्ची बात का पता लगा और अति दुःखी होकर अपने माता-पिता के पास समाचार भेजा। हिरण्यगर्भ कुपित होकर द्रुपद पर आक्रमण करने निकले। अपने को अपने पिता की विपत्ति का कारण मान कर द्रुपद कन्या प्राण त्याग करने के लिये घर से निकली। रास्ते में स्थूण कर्ण नामक एक यक्ष ने दया करके अपना पुरुषत्व कुछ दिन के लिये उसको दिया। वह शिखण्डि हो गया और हिरण्यवर्मा को शान्त किया। बाद में कुबेर के शाप से स्थूणकर्ण जीवन भर स्त्री रहा और शिखण्डि को पुरुषत्व स्थायी रूप से प्राप्त हुआ। भीष्म पितामह को यह चरित मालूम था, इसीसे वे उस पर शस्त्र प्रहार नहीं करते थे। शिखण्डि शूरवीर महारथी था। इसको आगे करके अर्जुन ने भीष्म पर अस्त्र चलाया था। शिखण्डि काशी राजकुमारी अम्बा का पुनर्जन्म था जिसने भीष्म से बदला लेने की प्रतिज्ञा की थी। शिखण्डि अश्वत्थामा से मारा गया।

शिखण्डिनी–(१) पृथु चक्रवर्ति के प्रथम पुत्र अन्तर्धान की पत्नी। इनके तीन पुत्र पावक, पवमान और शुचि हुए जो पूर्व जन्म में इन्हीं नाम से अग्नि देवता थे। (२) द्रुपद महाराजा की एक पुत्री जो बाद में शिखण्डी हुई।

शिखावर्त–एक यक्ष।

शिखि–मोर, कार्तिकेय का वाहन।

शिखिध्वज–(१) कार्तिकेय का विशेषण (२) द्वापर युग के एक राजा।

शिखिवाहन–कार्तिकेय का विशेषण।

शिनि–(१) यदुवंश के वृष्णि के पुत्र युधाजित के पुत्र। इनके पुत्र सत्यक थे। (२) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज गर्ग के पुत्र, इनके पुत्र

गार्ग्य थे । जिनसे ब्राह्मणों का वंश चला ।

शिनीवाली–शाल्मलि द्वीप की एक प्रमुख नदी ।

शिनीवास–इलाव्रत का एक पर्वत ।

शिपिविष्ट–सूर्य किरणों में रहने वाले भगवान ।

शिप्र–हिमालय पर्वत पर स्थित एक सरोवर ।

शिप्रा–शिप्र सरोवर से निकली एक पुण्य नदी । इसके किनारे उज्जैन नगर बसा हुआ है ।

शिवि–सोमवंश के राजा उशीनर के सुविख्यात पुत्र । शिवि महाराज अपने दान धर्म से अति प्रसिद्ध थे । शिवि की कीर्ति की परीक्षा लेने का इन्द्र और अग्नि ने निश्चय किया । अग्नि ने एक कबूतरी का रूप लिया । उसके पीछे उसको मारने के इरादों से इन्द्र एक गिद्ध का रूप लेकर भागे । कबूतरी ने अपनी प्राण-रक्षा के लिये विह्वल होकर सिंहासन पर बैठे शिवि चक्रवर्ति के चरणों में शरण ली । इतने में अपने भक्ष्य की चाह में गिद्ध भी वहाँ आ पहुँचा और अपनी भक्ष्य वस्तु को छोड़ देने की प्रार्थना की । शरणार्थी की रक्षा करना राजधर्म था और भूखे की भूख मिटाये बिना वापस भेजना भी धर्म नहीं था । गिद्ध कबूतरी को चाहता था या तोल में उसके बराबर राजा का मांस । राजा अपने शरीरका मांस देने को तय्यार हो गये । तराजू के एक पलड़े पर कबूतर को रख कर दूसरे पलड़े पर अपना मांस काट कर रखने लगे । थोड़ा-थोड़ा करके राजा ने अपने शरीर का पूरा मांस रखा, अन्त में स्वयं उस पलड़े पर बैठ गये । राजा की धर्मनिष्ठा और दानशीलता देखकर अग्नि भगवान और इन्द्र अत्यन्त सन्तुष्ट हुए और स्वस्वरूप लेकर राजा को आशीर्वाद दिया । (२) हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रह्लाद का एक पुत्र । (३) तामस मन्वन्तर के इन्द्र (४) एक राजर्षि ।

शियालि–दक्षिण भारत का एक पुण्य स्थान ।

शिरस्त्राण–लोहे का टोप जो योद्धा युद्धक्षेत्र में पहनते है ।

शिरीष–(१) एक सर्प (२) एक फूल ।

शिल–फसल कटने के बाद खेतों में पड़े अनाजों को चुनकर नित्यवृत्ति करने को शिल कहते हैं । तपोनिष्ठ ब्राह्मण शिलोच्छन से अपनी नित्यवृत्ति करते है ।

शिलायूप–विश्वामित्र का एक पुत्र ।

शिव–सनातन धर्म के तीन मूर्तियों में से एक जो सहार कर्ता हैं । प्रपञ्च की सृष्टि, स्थिति और संहार के लिए भगवान के तीन रूप होते है । रजोगुण प्रधान ब्रह्मा, सत्वगुण प्रधान विष्णु और शिव । कल्प के आरम्भ में महाविष्णु के नाभिकमल से ब्रह्मा की सृष्टि हुई । कई हजारों सालों के बाद उनके भ्रूमध्य के शिव या रुद्र का जन्म हुआ । भिन्न-भिन्न पुराणों के अनुसार इनके जन्म में थोड़ा बहुत फरक है । रुद्र के ग्यारह रूप हैं जो एकादश रुद्र से प्रसिद्ध हैं । उनके अलग-अलग स्थान, नाम, पत्नियाँ हैं । शिव का अर्थ है कल्याण-कारी । मंगलकारी शिव की दो पत्नियाँ श्रीपार्वती और गंगा देवी हैं । पार्वती देवी के अनेकों नाम हैं महामेरु पर कैलास में शिव पार्वती के साथ रहते हैं । इनके दो पुत्र गणपति और स्कन्द हैं । इनका वाहन नन्दि, पार्षद, नन्दिकेश्वर आदि भूत गण, आभूषण सांप, लेपन भस्म है । अशिव वेश होने पर भी अत्यन्त सुन्दर और पवित्र है । चर्माम्बर धारी या दिगम्बर है, मुण्डमाला पहनते हैं । नागों से अलंकृत होने से नागभूषण, सिरपर चन्द्र को धारण करने से चन्द्र मौलि या चन्द्र चूड, गंगा को धारण करने से गंगाधर आदि अनेकों नाम हैं शिव आशुतोष और क्षिप्रप्रसादि हैं । वृकासुर को वर देकर अपने को आपत्ति

में डाला । रावण बड़े शिव भक्त थे, इसलिए उसको चन्द्रहास नामक तलवार दी । वाणासुर की तपस्या से सन्तुष्ट होकर उनके द्वारपालक बने और अपने भक्त की रक्षा के लिए श्रीकृष्ण से लड़े । त्रिपुरों को मार कर त्रिपुरारि बने । इनकी सूर्य, चन्द्र, अग्नि के द्योतक तीन आंखें हैं । कामदेव को नेत्राग्नि में भस्म किया, काल से मार्कण्डेय की रक्षा की । इनका आयुध पिनाक नामक शूल है। अमृत मंथन के समय जब हलाहल विष निकला भगवान वासुदेव के कहने पर शिव ने उसका पान कर त्रैलोक्य की रक्षा की और नीलकण्ठ हो गये । शिव के विख्यात अनेक क्षेत्र भारत में हैं । जिनमें द्वादश ज्योतिर्लिंग अति प्रसिद्ध हैं । शिव का प्रतीक प्रायः लिंग है । शिव के सहस्रों नाम हैं ।

शिवङ्करी–मङ्गलकारिणी देवी या अपने भक्तों को शिवरूप बनाने वाली देवी ।

शिवज्ञान–शिव विषयक ज्ञान ।

शिवज्ञान सम्बन्धर—दक्षिण भारत के मद्रास प्रान्त के प्रसिद्ध एक शिव भक्त ।

शिवपरा–शिव से श्रेष्ठ देवी या शिव में परायणा देवी ।

शिवप्रिया–श्रीपार्वती ।

शिवपुर–वाराणसी ।

शिवपुराण–अठारह पुराणों मे से एक ।

शिवरात्री–फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी शिवरात्री है । इस दिन उपवास कर व्रत रख कर रात के बारह बजे तक जागकर शिवकीर्तन करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है ।

शिवा–(१) ब्रह्मा की इच्छारूपिणी शक्ति (२) स्वयं प्रकाशित केवल ब्रह्म (३) अतिशय सद्गुण सम्पन्ना देवी (५) शिव को सुख देने वाली देवी (५) वायु की पत्नी । इस शिवा का पुत्र है मनोजव (३) अंगिरा की पत्नी (७) एक नदी ।

शिशिर–(१) मेरु पर्वत के समीपवर्ती एक पर्वत (२) एक ऋतु (३) सोम नामक वसु और मनोहरा का पुत्र ।

शिशुपाल–महाविष्णु के पार्षद जय और विजय का तीसरा जन्म था दन्तवक्त्र और शिशुपाल । चेदि देश के राजा दमघोष और वसुदेव की बहन श्रुतश्रवा के पुत्र थे । शिशुपाल श्रीकृष्ण के कट्टर शत्रु थे । रुक्मि की इच्छा से भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल के साथ निश्चित हो चुका था । लेकिन रुक्मिणी से समाचार पाकर श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया । युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण को अग्रासन पर बिठाकर अग्रपूजा की । इसपर शिशुपाल ने अत्यन्त क्रुद्ध हो श्रीकृष्ण की अनेक प्रकार की अवहेलना की । इससे कुपित भीम, अर्जुन आदि जब शिशुपाल से युद्ध करने को तय्यार हो गये, तब श्रीकृष्ण ने उनको रोका और सुदर्शनचक्र से शिशुपाल का वध किया । उस समय शिशुपाल के शरीर से एक ज्योति निकल कर श्रीकृष्ण में विलीन हो गई । (दे:–जय–विजय)

शिशुमार–एक नक्षत्र मण्डल । मगर की आकृति में होने से इस नक्षत्र मण्डल का नाम शिशुमार है । इसकी पूंछ की ओर ध्रुव नक्षत्र है । ध्रुव शिशुमार नक्षत्र भगवान का नक्षत्र मय रूप माना गया है ।

शिष्ट–(१) सद्गुण सम्पन्न (२) भगवान का विशेषण ।

शिष्टपूजिता–विशिष्ट पुण्यात्माओं से पूजित देवी ।

शिष्टि–ध्रुव और शम्भु का एक पुत्र ।

शिष्टेष्ट–शिष्ट पुरुषों के इष्टदेव भगवान विष्णु ।

शिष्टेष्टा–देवी जिनको शास्त्र विधि के अनुसार

कर्म प्रिय हैं ।

शिष्य परम्परा–शिष्यों की परम्परा, गुरु की परम्परागत शिष्य मण्डली ।

शीघ्र–एक सूर्यवंशी राजा अग्निवर्ण के पुत्र । इनके पुत्र मनु थे ।

शीतांशु—चांद ।

शीताद्रि–हिमालय पहाड़ का विशेषण ।

शीतादी–शाक द्वीप की एक नदी ।

शीतला–चेचक (शीतला) अधिष्ठात्री देवी ।

शीलावती–एक पतिव्रता । शीलावती के पति उग्रश्रवा क्रोध की मूर्ति और लम्पट था और पत्नी को अनेक प्रकार के कष्ट देता था । शीलावती क्षमा की मूर्ति बन कर पति सेवा करती थी । एक बार उग्रश्रवा ने अपनी पत्नी से उसको एक वेश्या के घर ले जाने को कहा । कुष्ट रोग के कारण वह चल नहीं सकता था । शीलावती पति को कन्धे पर बिठाकर चली गई । रास्ते में शूल से लटकने वाले माण्डव्य मुनि से उग्रश्रवा का स्पर्श हुआ । मुनि ने कुपित हो कर शाप दिया कि सूर्योदय से पहले उग्रश्रवा की मृत्यु होगी । शीलावती ने अपने पातिव्रत्य के बल से सूर्य को उदय होने से रोक लिया जिससे सारे संसार पर संकट छा गया । देवता लोग शीलावती की शरण में गये । उग्रश्रवा की जान बचाई गई और सूर्योदय हुआ ।

शुक–(१) व्यास महर्षि के सुप्रसिद्ध पुत्र । पुत्र जन्म की इच्छा से महर्षि ने शिव की कठिन तपस्या की । वे पञ्चभूतों के वीर्य से युक्त पुत्र चाहते थे । शिव ने ऐसा ही वर दिया । एक बार आश्रम में रहते समय घृताची नामक एक अपसरा एक शुकी के रूप में वहाँ आयी । उनका सौन्दर्य देख कर महर्षि का इन्द्रिय स्खलन हुआ और उससे शुक का जन्म हुआ । शुकी के दर्शन से पुत्र जन्म होने के कारण बालक का नाम शुक रखा गया । ये बालक दिव्य और अतितेजस्वी थे । बृहस्पति से शुक ने वेदाध्ययन और अन्य विद्यायें सीखीं । पिता के आश्रम पर लौटने पर व्यास ने उनका विवाह करना चाहा लेकिन वे आब्रह्मचारी रहना चाहते थे । वेद और विद्यायें सीख कर वे सुखी नहीं थे । पिता से जनक महाराजा के आत्मज्ञान की बात सुन कर शुक जनक महाराजा से ब्रह्मज्ञान की शिक्षा ली । कहा जाता है कि पिता की इच्छा रखने के लिए शुकदेव ने अपना एक छायारूप छोड़ कर सर्वसंग परित्यागी हो कर नित्य ब्रह्मचारी रहे । छायारूप शुक ने पितरों की पुत्री पीवरी नामक सुन्दरी से विवाह किया और गृहस्थाश्रम का पालन किया । इनके कृष्ण, गौरप्रभ, भूरि, देवश्रुत आदि पुत्र और कीर्ति नाम की एक पुत्री हुई । शुकदेव ने अपने पिता से महाभारत और भागवत का गहरा अध्ययन किया । वे वीतराग निस्पृह हो कर लोक कल्याण के लिए घूमते रहे । इन्होंने ही परीक्षित महाराजा को सात दिन में भागवत की कथा सुनायी और मोक्ष का मार्ग दिखाया । (२) रावण का गुप्तचर । शुक और सारण दोनों रावण के गुप्तचर थे । जब श्रीराम और लक्ष्मण वानर सेनाओं के साथ लंका पर आक्रमण करने आये तब उनकी युद्ध तैयारी की खबर लेने शुक और सारण वहाँ गये, लेकिन वानरों से पकड़े गये । जब वानर उनको सताने लगे तब श्रीराम का नाम लेकर अभय की भीख माँगी । शरण में आये शत्रु की रक्षा करना राजधर्म मान कर श्रीराम ने उनको छुड़ाया । (३) शर्याति के वंश के एक राजा । ये पृषद के पुत्र थे और अनेकों राजाओं को पराजित किया । अन्त काल में राज्य छोड़ कर शतशृंग पर्वत पर तपस्या करने गये ।

शुकी–कश्यप ऋषि और ताम्रा की पुत्री ।

शुकी की पौत्री है विनता ।

शुक्तिमती–चेदी के राजा धृष्टकेतु की राजधानी ।

शुक्र–(१) शुक्राचार्य, असुरों के गुरु, महर्षि भृगु के च्यवन आदि सात पुत्रों में शुक्र प्रधान हैं । इन्होंने भगवान शंकर की आराधना कर संजीवनी विद्या और जरा-मरण रहित वज्र के समान दृढ़ शरीर प्राप्त किया । भगवान शंकर के प्रसाद से ही योगविद्या में निपुण हो कर उन्होंने योगाचार्य की पदवी प्राप्त की थी । काव्य, कवि, उशना इन्ही के नामान्तर हैं । पितरों की मानसी कन्या गौ से इनका विवाह हुआ था । षण्ड-अमर्क नामक दो पुत्र, जो प्रह्लाद के गुरु थे, इन्हीं के पुत्र थे । प्रियव्रत की पत्नी ऊर्जस्वती इनकी पत्नी थी जिनसे देवयानी नाम की पुत्री हुई । ये अनेक अत्यन्त गुप्त और दुर्लभ मन्त्रों के ज्ञाता, अनेकों विद्याओं के पारदर्शी, महान बुद्धिमान, और परम नीति निपुण हैं । इनकी 'शुक्रनीति' प्रसिद्ध है । बृहस्पति पुत्र कच ने इन्हीं से सञ्जीवनी विद्या सीखी थी । इनकी महाभारत, श्रीमद्भागवत, वायुपुराण, ब्रह्मपुराण, मत्स्यपुराण आदि में बड़ी ही विचित्र और शिक्षाप्रद कथाएँ हैं । (दे: देवयानी, ययाति, बलि, कच) । (२) नक्षत्रों में से एक । (३) एक ग्रह–नक्षत्रों से दो लाख योजन दूरी पर उशना या शुक्र ग्रह है जो तीव्र, मन्द और साधारण गति से आकाश मण्डल पर घूमता है । यह एक प्रबल ग्रह है और प्राय: लोगों का कल्याण ही करता है । इससे वृष्टि होती है । (४) वसिष्ठ महर्षि और ऊर्जा का एक पुत्र ।

शुक्ल–पृथु वंश के एक राजा जो हविर्धान और धिषणा के पुत्र थे ।

शुक्लपक्ष–चान्द्र मास के दो पक्ष होते हैं एक शुक्ल पक्ष, दूसरा कृष्ण पक्ष–शुक्ल पक्ष की प्रथमा से चन्द्रमा की एक-एक कला से बढ़ कर पूर्णिमा को सोलह कलाओं का पूर्ण चन्द्र हो जाता है और उसके बाद की प्रथमा से एक-एक कला मे घट कर अमावस्या को चन्द्र की कोई कला नहीं रहती और आकाश में दिखायी नहीं देता ।

शुक्लवर्णा–शुक्लवर्ण देवी

शुचि–(१) स्मरण, स्तुति और पूजन करने वालों को पवित्र कर देने वाले भगवान । (२) चाक्षुष मनु और नड्वला के एक पुत्र । (३) कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री ताम्रा की एक पुत्री । (४) अग्निदेव और स्वाहा का पुत्र । (५) सोमवंश के राजा शुद्ध के पुत्र, इनके पुत्र त्रिककुद अथवा धर्मसारथि थे । (६) पवित्रात्मा (७) अग्नि (८) जनक वंश के शतद्युम्न के पुत्र, इनके पुत्र सनद्ध्वज थे ।

शुचिरथ–भरत वंश के राजा चित्ररथ के पुत्र ।

शुचिश्रवा–पवित्र कीर्ति वाले भगवान विष्णु ।

शुचिस्मिता–एक अपसरा ।

शुद्ध–(१) भगवान शिव का विशेषण (२) सोमवंश के राजा अनेन के पुत्र, इनके पुत्र शुचि थे ।

शुद्ध विद्या–अज्ञान का नाश करने वाली षोडशाक्षरी विद्या । यह विद्या श्रीमाता के मूलाधार आदि से उत्पन्न है । वह मुख कमल से निकल कर बाहर जाती है । शब्द ब्रह्मरूप बीज के पानी से सन, सड़ कर इसकी जो अवस्था है वह परा है, बीज को बाहर निकलने की अवस्था पश्यन्ति है, अंकुर निकल कर दो अविकसित दलों की जो अवस्था है वह मध्यमा, उन दो दलों की पूर्ण विकसित अवस्था वैखरी–ऐसी चार अवस्थायें हैं ।

शुद्धा–किसी मालिन्य और कलंक के बिना शुद्ध स्वरूपा देवी ।

शुद्धि—(१) पवित्रता (२) पवित्री करण संस्कार ।

शुद्धोद–(१) पुष्कर द्वीप को घेरकर उस द्वीप के समान चौड़ा शुद्ध जल का सागर। (२) सूर्यवंश के राजा शाक्य के पुत्र इनके पुत्र लंगल थे।

शुनक–(१) पुरूरवा के वंशज गृत्समद के पुत्र इनके पुत्र शौनक वेदाचार्य थे (२) भृगुवंश में उत्पन्न एक महर्षि। इनके पुत्र शौनक प्रसिद्ध ऋषि थे। (३) जनक वंश के राजा ऋत के पुत्र, इनके पुत्र वीतहव्य थे।

शुनश्शेफ–हरिश्चन्द्र ने पुत्र जन्म पर पुत्र की वलि देने का वचना वरुण को दिया था। राजा की रक्षा के लिये शुनश्शेफ नामक ब्राह्मण कुमार पकड़ा गया जिसकी रक्षा विश्वामित्र ने की। बालक को विश्वामित्र ने अपने पुत्र के समान माना। किसी पुराण के अनुसार शुनश्शेफ ऋचीक मुनि का पुत्र था।

शुभांग–अति मनोहर, परम सुन्दर अंगोंवाले भगवान विष्णु।

शुभाङ्गी–दशार्ह कुल की एक राजकुमारी जिसका विवाह सोमवंश के राजा कुरु से हुआ।

शुभेक्षण–दर्शन मात्र से कल्याण करने वाले भगवान विष्णु।

शुम्भ–एक असुर। शुम्भ और निशुम्भ दोनों भाई थे जिनको दुर्गा देवी ने मारा (दे: निशुम्भ)।

शुष्म (१) सूर्य (२) आग।

शूकर–एक प्राचीन देश।

शूद्र–चार वर्णों में से चौथा वर्ण। ऐसा विश्वास है कि शूद्र ब्रह्मा के पैरों से उत्पन्न हुआ है। शूद्र के स्वभाव में रजोमिश्रित तमोगुण प्रधान होता है। इस कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों की सेवा करना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। ये कर्म उनके स्वभाव के अनुकूल होते हैं। (दैनिक कार्यों में यथा योग्य सहायता करना, पशुओं का पालन करना, उनकी वस्तुओं को सम्हाल कर रखना)। इसमें उसको किसी प्रकार की कठिनता नहीं है।

शूद्रक–(१) एक राजा जो शूद्र था और श्रीराम के राज्य काल में कठिन तपस्या करते थे। एक ब्राह्मण बालक की अकाल मृत्यु हो गई। शूद्रक के विरुद्धाचार से यह अनिष्ट जानकर श्रीराम ने उनका वध किया। भक्त की कठिन तपस्या के फलस्वरूप शूद्रक को सद्गति भी मिली। (२) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जिनका 'मृछ कटिकम्' नामक नाटक अति प्रसिद्ध है।

शून्य–समस्त विशेषणों से रहित भगवान विष्णु।

शून्यबन्धु–मनुवंश के तृणबन्धु और अलम्बुषा नामक अप्सरा का पुत्र।

शून्यवाद–वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव, ईश्वर आदि किसी भी पदार्थ की सत्ता स्वीकार नही करता।

शूर–(१) पराक्रमी महाविष्णु का विशेषण। (२) श्रीकृष्ण और भद्रा के एक पुत्र। (३) एक चन्द्रवंशी राजा जो विदूरथ के पुत्र थे। इनके पुत्र भजमान है। (४) कार्तवीर्य का एक पुत्र (५) सौवीर राजा। (६) श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव के पिता (७) सूर्य (८) मदिरा और वसुदेव का पुत्र।

शूरपद्म–एक अति प्रबल पराक्रमी असुर श्रेष्ठ जो इन्द्रादि देवताओं पर आक्रमण करता था। इन्द्र इसको पराजित न कर सकता था। कार्तिकेय ने इस असुर को मारा।

शूरसेन–(१) यदुवंश के हृदीक के चौथे पुत्र देवमीढ़ के पुत्र थे। शूरसेन की पत्नी मारिषा थी और उनके सर्वगुण सम्पन्न दस पुत्र हुए जिनमें ज्येष्ठ श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव थे। वसुदेव, देवभाग, देवश्रवा, आनक, सृञ्जय, श्यामक, कङ्क, शमीक, वत्सक, और वृक थे।

इनकी पृथा, श्रुतदेवा, श्रुतकीर्ति, राजाधिदेवी नाम की पांच पुत्रियां भी थीं। (२) कार्तवीर्य का एक पुत्र (३) व्रजमण्डल का प्राचीन नाम। यहीं के राजा चित्रकेतु थे जो तपस्या कर विद्याधर प्रमुख हो गये और पार्वती देवी के शाप से वृत्रासुर का जन्म लिया था। (३) हनुमानादि श्रेष्ट शूरवीरों से युक्त सेनावाले श्रीराम।

शूरसेनपुर—मथुरापुरी।

शूरसेनी–राजा पूरु के वंशज प्रवीर की पत्नी, इनके पुत्र थे मन्सु।

शूर्पणखा–ब्रह्मपुत्र विश्रवा और सुमालि की पुत्रीं कैकसी की पुत्री। यह रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण की बहन थी। दारुण समय पर जन्म होने से रावण के समान यह दुष्ट राक्षसी थी। इसका विवाह विद्युजिह्व नामक राक्षस से हुआ और शम्भुकुमार नामक पुत्र हुआ। दण्डकारण्य में श्रीराम और लक्ष्मण को देखकर उनके सौन्दर्य पर मोहित उनसे बारी बारी से प्रणयाभ्यर्थना की। बाद में उसको पता लगा कि राजकुमार उसको जान बूझ कर दौड़ा रहे हैं, अपने राक्षसी रूप में सीता देवी को पकड़ने आयी। लक्ष्मण ने उसके कान, नाक काट कर विकृत किया। रुधिर बहाती हुई वह लंका में रावण के पास जाकर उसकी कड़ी भर्त्सना की। सीता के रूप सौन्दर्य का वर्णन कर रावण की काम वासना जागृत की जिससे वह सीता का अपहरण करने जाय। यहा पर रावण और राक्षस कुल के नाश का बीज बोया गया।

शूर्पारक–केरल का दूसरा नाम। परशुराम ने समुद्र में शूर्प फेंक कर जो भूमि प्राप्त की थी उसको शूर्पारक कहते हैं। इसी का नाम केरल है।

शूर्पारकक्षेत्र-केरल।

शूर्पारक तीर्थ–केरल का पुण्यतीर्थ।

शूल–शिव का त्रिशूल।

शूलपाणि–शिव का विशेषण।

शूलाद्यायुधसम्पन्न–शूल, पाश, कपाल, अभय आदि चार आयुधों से युक्त देवी।

शृङ्गवान–इलावृत के उत्तर में स्थित तीन पर्वत हैं नील, श्वेता और शृङ्गवान जो रम्यक, हिरण्मय और कुरु वर्ष की सीमा है। पूर्व से पश्चिम तक फैला एक एक पहाड़ दो हजार योजना चौड़ा है और समुद्र तक फैला है। इस पर्वत पर अनेक विशिष्ट धातुएँ हैं और यह अति शोभावान है। सिद्ध चारण यहाँ रहते हैं। (२) एक ऋषि।

शृङ्गवेर–एक नाग।

शृङ्गवेरपुर–यहाँ निषाद राजा गुह रहता था। एक पुण्य स्थल जो श्रीरामचन्द्र के पाद स्पर्श से पावन हो गया। गुह ने श्रीराम सीता और लक्ष्मण को यहाँ से गंगा पार उतारा था।

शृङ्गारवल्ली–कम्परामायण के रचयिता कम्बर की माता।

शृङ्गाररससम्पूर्णा–बारह दलों से युक्त अनाहत चक्र में सम्पूर्ण रूप से स्थिता देवी। अनाहत चक्र रूप पूर्णगिरि पीठ में स्थिता देवी।

शृङ्गि–इस मुनिकुमार ने परीक्षित महाराज को तक्षक काट कर मरने का शाप दिया था।

शृङ्गेरि–श्री शङ्कराचार्य के द्वारा स्थापित दक्षिण का एक मठ।

शेवधि–कुबेर के नौ कोषों में से एक।

शेष–महाविष्णु की शय्यारूप स्थित नागों मे श्रेष्ठतम नाग आदिशेष जिनके सहस्र फण हैं। यह सारी पृथ्वी उनके एक फण पर मणि के समान स्थित है। ये भगवान विष्णु के स्वरूप ही है, कश्यपऋषि और कद्रू के पुत्र हैं। धर्म में निष्ट है। इनका दूसरा नाम अनन्त है। श्रीरामावतार और श्रीकृष्णावतार में अनन्त ने भी भगवान की इच्छा के अनुसार लक्ष्मण बलराम का अवतार लिया था।

शेषशय्या–भगवान विष्णु की शय्या शेषनाग, क्षीरसागर में विष्णु भगवान की शय्या की तरह रहते हैं ।

शेषशायी–महाविष्णु का नाम ।

शैब्या–[१] सगर महाराजा की पत्नी का दूसरा नाम । इनके असमञ्जस नामक एक पुत्र था । [२] साल्व देश के राजा द्युमत्सेन की पत्नी, सत्यवान की माता ।[३] यदुवंशज रुचक के पुत्र ज्यामघ की पत्नी । इनके पुत्र विदर्भ थे ।

शैलाभ–एक विश्वदेव ।

शैलूष–एक प्रकार का गन्धर्व, अभिनेता, नर्तक ।

शैलेन्द्र–पर्वत राजा हिमालय ।

शैलेन्द्रतनया–श्रीपार्वती ।

शैलोदा-मैनाक पर्वत पर वैखानसों और वाल्ही-कों के आश्रम के पास वैखानस नामक एक झील है जो सुवर्ण कमलों से भरी है । इससे भी आगे शैलोदा नाम की नदी है । इसके दोनों किनारों पर कीचक नाम के एक प्रकार के बांस के पेड़ हैं । इन बांसों की सहायता से ऋषिमुनि नदी के उस पार जाते हैं । सुग्रीव की वानर सेना सीता की खोज में यहाँ भी गई थी ।

शैव–हिन्दुओं के मुख्य तीन सम्प्रदायों(वैष्णव, शैव, शाक्त) में से एक जो शिव की पूजा, आराधना करते हैं ।

शैवचाप–शिव का धनुष जिसको विश्वकर्मा ने बनाया था । यही चाप जनक महाराज की राजधानी में रखा था जिसको तोड़कर श्रीराम ने सीता के साथ विवाह किया ।

शैवालिनी–एक नदी ।

शैब्य–(१) श्रीकृष्ण के रथ के चार घोड़ों में से एक (२) पाण्डव सेना का एक योद्धा ।

शैशव–एक देश का नाम ।

शोण–(१) आग (२) एक नदी जो पटना के निकट गंगा नदी में गिरती है ।

शोणरत्न–पद्मराग मणि ।

शोणितपुर–(१) नरकासुर की राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर का दूसरा नाम [२]बाणासुर की राजधानी जिसकी रक्षा शिव ने की ।

शौच–पवित्रता, शुद्धि । सत्यता पूर्वक पवित्र व्यवहार से द्रव्य की शुद्धि, उस द्रव्य से प्राप्त अन्न से आहार की शुद्धि, यथायोग्य बर्ताव से आचरण की शुद्धि, जल, मृत्तिका आदि से प्रक्षालनादि क्रिया से शरीर की शुद्धि होती है । इन सब को बाह्य शौच या बाह्य शुद्धि कहते है । अन्तःकरण में जो राग-द्वेष, हर्ष–शोक, ममत्व-अहङ्कार और मोह-मत्सर आदि विकार और नाना प्रकार के कलुषित पापमय भाव रहते है, उन सब का सर्वथा अभाव होकर अन्तःकरण का पूर्ण रूप से निर्मल, परिशुद्ध हो जाना, यही अन्तःकरण की शुद्धि है ।

शौण्डिक–[१] शराब विक्रेता [२] एक नीच जाति के लोग ।

शौनक–भृगुवंश के मुनि शुनक के सुप्रसिद्ध पुत्र जो अनेक वैदिक रचनाओं के प्रणेता थे । ये पुराणों की व्याख्या नैमिषारण्य में ऋषिमुनियों के दीर्घसत्र के अवसर पर बताया करते थे ।

शौरि–[१] शूरवीर वसुदेव के पुत्र भगवान विष्णु का नाम [२] यदुवंश के शूरसेन और मारिषा के पुत्र ।

श्यामक–शूरसेन और मारिषा का एक पुत्र, वसुदेव का भाई ।

श्यामसुन्दर—श्रीकृष्ण का विशेषण ।

श्यामा–[१] स्त्री विशेष [२] तुलसी का पौधा [३] यमुना नदी [४] मेरु की नौ पुत्रियों में से एक । ये नौ पुत्रियाँ नौ कन्यायें कहलाती हैं । राजा अग्नीन्ध्र के पुत्रों ने इनसे विवाह किया था ।

श्यामायन–विश्वामित्र का एक पुत्र ।

श्यामला–देवी का नाम ।

श्येन–[१] कश्यप ऋषि और ताम्रा की पुत्री श्येनी की सन्तान, एक जाति का पक्षी ।[२] एक महर्षि ।

श्येनजित–इक्ष्वाकु वंश के एक राजा ।

श्रद्धा–[१] शास्त्र और गुरुवाक्यों में सत्य बुद्धि रखना, उनके आचरण में मन लगाना, इसी को श्रद्धा कहते हैं । इससे वस्तु की प्राप्ति होती है । [२] दक्ष प्रजापति और मनु पुत्री प्रसूति की पुत्री, धर्मदेव की पत्नी, इनके पुत्र थे कामदेव । [३] वैवस्वत मनु की पत्नी श्रद्धा । इनके पुत्र इक्ष्वाकु, नमग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त नाभाग, दिष्ट, करुष, प्रशध्र और वसुमान थे ।

श्रद्धावती–वरुण देव की नगरी ।

श्रम--अष्टवसुओं में आप का एक पुत्र ।

श्रवण–(१) सुरासुर के सात पुत्रों में से एक । ये सब श्रीकृष्ण से मारे गये । (२) सत्ताइस नक्षत्रों में से एक । यह तीन ताराओं का समूह है ।

श्रवणकुमार–महाराजा दशरथ ने युवावस्था में शब्दवधी बाण से हाथी के भ्रम में इसी श्रवणकुमार का वध किया था । यह वैश्य था । अपने अन्धे तपस्वी माता-पिता का इकलौता बेटा था जो रात को माता-पिता की प्यास बुझाने के लिये घड़े में पानी भरने आया था । इसकी मृत्यु पर दुःखी माता-पिता ने मरते समय दशरथ को शाप दिया था कि उनकी तरह राजा भी पुत्रदुःख से मृत्युग्रस्त होंगे ।

श्रवण द्वादशी–एक पुण्य दिन । भाद्रपद के शुक्लपक्ष की श्रवण द्वादशी के दिन अभिजित मुहूर्त मे भगवान विष्णु का वामन अवतार हुआ । श्रवण द्वादशी के दिन व्रत रखने से अक्षय पुण्य मिलता है ।

श्रविष्टा–एक नक्षत्र ।

श्राद्ध–मरे हुए प्रियजनों की आत्मा की शान्ति और मोक्ष के लिए अर्पित बलि । तिल, पका अन्न, दर्भा, जल, सुगन्ध द्रव्य आदि सामग्रियों से पहले महाविष्णु का ध्यान करके पितरों के प्रीत्यर्थ तर्पण, श्राद्ध. किया जाता है । प्रायः श्राद्ध मृत्यु की वर्षगांठ पर, या अमावास्या के दिन किया जाता है । गया, बदरीनाथ में ब्रह्मकपाल आदि पुण्य स्थानों में श्राद्ध करने से दिवंगत आत्मा को विष्णुपद की प्राप्ति होती है । ऐसा विश्वास है ।

श्राद्धदेव–विवस्वान (सूर्य) और विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा के पुत्र । ये सातवें मन्वन्तर, वर्तमान मन्वन्तर के मनु हुए और वैवस्वत मनु से प्रसिद्ध हैं । इनके इक्ष्वाकु, नक्षत्र, दृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, नाभाग, दिष्ट, करूष, पृषध्र और वसुमान नाम के दस पुत्र हुए । इसके पूर्व कल्प में ये सत्यव्रत नाम के राजर्षि थे जबकि भगवान का मत्स्यावतार हुआ । (दे: वैवस्वत मनु, सत्यव्रत और मत्स्यावतार ।

श्राव–इक्ष्वाकु वंश के युवनाश्व के पुत्र । इनके पुत्र थे श्रावस्त ।

श्रावक–बौद्ध भिक्षु ।

श्रावण–एक महीना (सावन)

श्रावणी–(१) एक पर्व, श्रावण मास की पूर्णिमा जिस दिन यज्ञोपवीत बदला जाता है । (२) रक्षा बन्धन का दिन जब बहिनें अपने भाइयों के हाथ में रक्षा बांधती हैं ।

श्रावस्त–इक्ष्वाकुवंश के श्राव के पुत्र ।

श्रावस्ति–गंगा नदी के उत्तर में राजा श्रावस्त द्वारा बसा नगर ।

श्री–(१) ऐश्वर्य, समृद्धि (२) लक्ष्मी देवी, महाविष्णु की पत्नी जो धन, ऐश्वर्य आदि की देवी है ।

श्रीकर–स्मरण, स्तवन और अर्चन आदि करने वाले भक्तों के लिए श्री का विस्तार करने वाले भगवान विष्णु ।

श्रीकण्ठ–शिव का विशेषण ।

श्रीकान्त–लक्ष्मी देवी के कान्त भगवान विष्णु।

श्रीकुब्ज–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थान।

श्रीकृष्ण–महाविष्णु का पूर्णावतार, स्वयं भगवान ही हैं। भगवान के अवतारों में मुख्य श्रीराम और श्रीकृष्ण के अवतार हैं। इनके जन्म से यादव कुल पुनीत हुआ। ये शूरसेन पुत्र वसुदेव और देवकी के आठवें पुत्र हो कर जन्मे। जब कंसादि दुष्टों की दुष्टता से पृथ्वी अति कातर हुई अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार दुष्टों का निग्रह और शिष्टों को अनुग्रह करने के लिये, देवताओं के सुख सन्तोष के लिये भगवान् ने मनुष्य जन्म लिया और अनेक लीलायें कीं। भगवान के नियोग से योगमाया ने देवकी के सातवें गर्भ को रोहिणी के उदर में कर लिया और स्वयं वृज में यशोदा की पुत्री हो कर जन्मी। देवकी के विवाह के अवसर पर आकाशवाणी ने कंस को चेतावनी दी थी कि देवकी का आठवां पुत्र उसका वध करेगा। इस लिये कंस ने वसुदेव और देवकी को कारागार में डाल कर अनेक यातनायें दीं। भगवान देवकी का आठवां पुत्र हो कर श्रावण के महीने में जब अष्टमि और रोहिणी का योग हुआ, आधी रात के समय कारागार में चतुर्भुजधारी हो कर जन्में। पिता से गोकुल में नन्द के घर छोड़ कर यशोदा की लड़की को लाने को कहा। इसके बाद मनुष्य बालक का रूप धारण-किया। गोकुल में वसुदेव पत्नी रोहिणी के गर्भ से बलराम का जन्म हो चुका था। इस तरह उनके साथ गोकुल में नन्द गोप और यशोदा के पुत्र हो कर रहे। श्रीकृष्ण जन्म का पता लगने पर उनकी हत्या करने के लिये कंस ने पूतना, शकटासुर, धेनकासुर, केशि, प्रलम्बासुर, बकासुर, व्यामासुर आदि अनेक असुरों को भेजा। श्रीकृष्ण और बलराम ने इन असुरों का काम तमाम किया। कालिय का दर्प चूर कर उसको सपरिवार रमणक भेज कर वृन्दावन वासियों को सुख पहुँचाया। गोप बालकों और बलिकाओं के साथ वन, कुञ्ज, पुलिन में घूम कर गायों को चराते हुए अलौकिक मुरली गान कर सब के हृदय को अपनी ओर आकर्षित किया। यमुना तीर पर गोपियों के साथ अलौकिक रासक्रीड़ा कर उनको ब्रह्मानन्द में अप्लावित किया। वृन्दावन के कण-कण धूल-धूल, पत्ते-पत्ते श्रीकृष्ण मय हो गये। अक्रूर के साथ दोनों भाई मथुरा गये। वहाँ कंस को मार कर माता-पिता को बन्दी गृह से छुड़ाया और मथुरावासियों के आराध्य बने। सान्दीपनी महर्षि के पास दोनों भाइयों ने अध्ययन किया और सुदामा के बाल्यसखा बने। गुरु दक्षिणा में मरे हुए पुत्र को वापस दिया। बलराम को रेवती के साथ विवाह होने पर श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी आदि आठ पटरानियों के साथ विवाह किया। नरकासुर को मार कर उनके अन्तःपुर में बन्दी सोलह हजार राजकुमारियों का उद्धार कर उनके साथ विवाह किया और एक-एक से दस-दस पुत्र हुए। जब नारद उनके गृहस्थ जीवन की परीक्षा लेने आये तब एक ही समय में भगवान को सभी महलों में मौजूद भिन्न-भिन्न काम करते देखा और भगवान की माया का वैभव देखकर उनकी स्तुति की। कौरवों की दुष्टताओं से त्रस्त पाण्डवों की समय-समय पर सहायता करते और उपदेश देते थे। राजसूर्य यज्ञ में शामिल होकर भीम और अर्जुन को लेकर मगध गये और मगधाधिप जरासंध को भीमसेन से मरवाया। राजसूर्य यज्ञ में शिशुपाल का वध किया। यवनों का आक्रमण होने पर यादवों की रक्षा के लिए समुद्र के अन्दर द्वारका नामक सुन्दर नगरी बनवायी। दन्तवक्त्र को मारा। कौरवों और पाण्डवों के बीच में युद्ध न हो इस विचार से दुर्योधन के पास दूत बन

कर गये। दुर्योधन जब अपमानित करने पर तुल तब गये अपना विश्वरूप दिखाया। कौरव सभा में जब दुश्शासन द्रौपदी का वस्त्रापहरण कर अपमानित कर रहा था भक्तवत्सल भगवान ने वस्त्ररूप हो कर द्रौपदी की लाज रख ली। उसी प्रकार वनवास के समय अक्षय पात्र से साग का टुकड़ा खाकर पाण्डवों को क्रोधी दुर्वासा के प्रचण्ड कोप से बचाया। युद्ध छिड़ने से पहले अर्जुन की प्रार्थना पर अर्जुन का सारथि बनने को स्वीकार किया, लेकिन शस्त्र न उठाने का प्रण किया। दुर्योधन को शस्त्रों से सुसज्जित नारायणी सेना दी। कुरुक्षेत्र में युद्ध शुरू होने से पहले दोनों सेनाओं के बीच विषण्ण खड़े अर्जुन को कर्म, भक्ति, योग, सन्यास आदि समझा कर जो उपदेश दिये भगवद् गीता में लोक प्रसिद्ध हो गया। अर्जुन के बहाने भगवान ने भ्रम में पड़े लोगों को ही उपदेश दिया। युद्ध की समाप्ति पर युधिष्ठिर को राज सिंहासन पर बिठाया। शरशय्या पर पड़े भीष्म को दर्शन दिया। द्वारका लौटने पर पृथ्वी पर अपना काम समाप्त समझ कर महाप्रयाण की तैयारी करने लगे। श्रीकृष्ण के बल से मद मस्त विपुल, प्रतापी यदुवंश के भार से पृथ्वी आक्रान्त थी। इसलिये सात ऋषियों के शाप के द्वारा प्रभास में आपस में मार कर यदुकुल का अन्त कराया। महा प्रयाण के पहले अपने प्रिय भक्त ज्ञानी उद्धव को सदुपदेश दिया और व्याघ्र के शर से घायल हो गये और उनका स्वर्गारोहण हो गया। श्रद्धा, वैर, द्वेष आदि भावों से जो जो भगवान के सम्पर्क में आये वे सब तर गये। भगवान अपनी महामाया के प्रभाव से सबको मोहित करते हैं, परन्तु जो मनुष्य उनकी शरण ग्रहण करते हैं वे माया से कभी मोहित नहीं होते।

श्रीखण्ड–चन्दन की लकड़ी।

श्री चक्र–भगवान का दिव्य आयुध जिसके हजारों आरे हैं और जिसके बीच के छेद में हाथ डालकर भगवान उसे घुमाते हैं। इसको कालचक्र भी कहते है। सूर्य के तेज कणों से विश्वकर्मा ने इसका निर्माण किया था (दे: सूर्य)।

श्रीद–(१) भक्तों को श्री प्रदान करने वाले विष्णु (२) कुबेर का विशेषण।

श्रीदाम–श्रीकृष्ण और बलराम का बाल सखा एक गोप बालक।

श्रीदेवा–वसुदेव की पत्नी। इनके वसु, हंस, सुवश आदि छः पुत्र हुए।

श्रीधर–(१) जगत् जननी श्री को वक्षःस्थल पर धारण करने वाले विष्णु (२) त्रेतायुग के एक राजा।

श्रीनिधि–समस्त स्त्रियों के आधार भगवान।

श्रीनिवास–श्री लक्ष्मी देवी के अन्तःकरण में निवास करने वाले भगवान विष्णु।

श्रीपति–परम शक्तिरूपा लक्ष्मी देवी के स्वामी।

श्रीपर्वत–एक पहाड़ का नाम।

श्रीफल–बेल का पेड़ और उसका फल।

श्रीभानु–श्रीकृष्ण और सत्यभामा के दस पुत्रों में से एक।

श्रीमतांवर–सब प्रकार की सम्पत्ति और ऐश्वर्य से युक्त ब्रह्मादि समस्य लोकपालों से श्रेष्ठ भगवान विष्णु।

श्रीमती–एक गन्धर्व कन्या।

श्रीमद्भगवत गीता–साक्षात् भगवान की दिव्य वाणी। इसकी महिमा अपार और अपरिमित है। नश्वर स्वर से इस इस अनश्वर वाणी का महिमा नहीं बतायी जा सकती। गीता एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है। इस में सम्पूर्ण वेदों का सार-संग्रह किया गया है। इसकी रचना इतनी सरल और सुन्दर है कि थोड़ा अभ्यास करने से ही मनुष्य इसको सहज ही समझ सकता है। परन्तु उसका आशय इतना

गूढ़ और गम्भीर है कि आजीवन अभ्यास करते रहने पर भी उसका अन्त नहीं आता। प्रतिदिन नये-नये भाव उत्पन्न होते हैं। एकाग्रचित्त हो कर श्रद्धा और भक्ति सहित विचार करने से इसके पद-पद में परम रहस्य भरा हुआ प्रतीत होता है। भगवान के गुण, प्रभाव, स्वरूप, तत्व, रहस्य और उपासना, कर्म एवं ज्ञान का वर्णन जिस प्रकार इस गीता शास्त्र में किया गया है वैसा अन्य ग्रंथों में एक साथ मिलना कठिन है। गीता सर्वशास्त्रमयी है। गीता में सारे शास्त्रों का सार भरा हुआ है। गीता स्वयं भगवान के मुखारविन्द से निकली है, इसलिए यह सब शास्त्रों से बढ़ कर है। इसके संकलनकर्ता श्री व्यास जी हैं। सात सौ श्लोकों के पूरे ग्रन्थ को अठारह आध्यायों में विभक्त कर महाभारत के अन्दर मिला लिया है। गीता का मुख्य तात्पर्य अनादि काल से अज्ञानवश संसार समुद्र में पड़े हुये जीव को परमात्मा की प्राप्ति करवाने में है और उसके लिए गीता में ऐसे उपाय वतलाये गये हैं जिनसे मनुष्य अपने सांसारिक कर्तव्य कर्मों का भली भांति आचरण करता हुआ परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। इसमें कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग का अच्छी तरह प्रतिपादन हुआ है। निर्गुण-सगुण की उपसना की विधि भी वतलायी गई है।

श्रीमद्भागवत–श्री व्यास जी से निर्मित श्रीमद्भागवत पाँचवां वेद माना गया है। इसकी महिमा अपार है। भगवान विष्णु के असंख्य अवतारों और लीलाओं का भक्तिपूर्ण वर्णन है। इसमें कर्म, ज्ञान, भक्ति के मार्ग दिखलाये गये हैं, यह ज्ञान का असीम भण्डार है, परम तत्व का ज्ञान दिया है। इसमें पुनीत महात्माओं की, जिन्होंने स्वार्थ रहित हो कर लोक कल्याण के लिये कठिन से कठिन तपस्या की, कथाएँ भी वर्णित हैं। भागवत पारायण के वाद हमको यह महसूस होता है कि वे ही परब्रह्म सब चराचर वस्तुओ में मौजूद हैं, हम में उन सब से तादात्म्य स्थापित करने की इच्छा जागृत होती है।

श्रीरंग–(१) भगवान का विशेषण (२) दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र जहाँ भगवान विष्णु का विख्यात मन्दिर है।

श्रीराम–महाविष्णु का पूर्णावतार। त्रेतायुग में रावणादि राक्षसों से संतप्त पृथ्वी, देव और भक्त जनों की रक्षा के लिए भगवान ने श्रीराम के रूप मे मनुष्य जन्म लिया। अयोध्या के महाराजा दशरथ और महारानी कौसल्या के पुत्र हो कर जन्मे। फाल्गुन मास की नवमी तिथि को दोपहर के समय अभिजित नक्षत्र में इनका जन्म हुआ। इनके साथ ही शेष नाग ने लक्ष्मण के, शंख और चक्र ने भरत और शत्रुघ्न के रूप में जन्म लिया। चारों राजकुमारों का एक साथ पालन पोषण, वेदाध्ययन शस्त्राभ्यास आदि हुआ। चारों कुमार अति मनोहर, अयोध्यानिवासियों को सुख देने वाले और महाराजा और रानियों की आंखों के तारे थे। वचपन से ही सुमित्रा पुत्र लक्ष्मण श्रीराम से और सुमित्रा के दूसरे पुत्र शत्रुघ्न कैकेयी पुत्र भरत से ज्यादा आकर्षित थे। जब कुछ बड़े हुए विश्वामित्र महर्षि श्रीराम और लक्ष्मण के तपश्चर्या में विघ्न डालने वाले राक्षसों का वध करने के लिए वन ले गये। रास्ते में राम ने ताटका नामक राक्षसी का वध किया और जनपद राक्षसों का वध कर ऋषि मुनियों को निर्विघ्न तपस्या करने की सुविधा दी। उस समय जनकपुरी में सीता देवी का स्वयम्वर होने वाला था। विश्वामित्र दोनों राजकुमारों को वहाँ ले गये। रास्ते में गौतम पत्नी अहिल्या को, जो शाप के कारण शिला बन गई थी और तप कर रही थी, मोक्ष

दिया। सांवले और गोरे उन राजकुमारों ने सभी जनकपुर। वासियों को मोह लिया। वहाँ विश्वामित्र के आदेश से श्रीराम ने शिव धनुष को तोड़ा और सीता का पाणिग्रहण किया। अयोध्या से दशरथ भी भरत और शत्रुघ्न के साथ आये और यहाँ चारों राजकुमारों का विवाह हुआ। शिव धनुष के टूटने पर कुपित परशुराम को अपने स्वरूप का वास्तविक ज्ञान देकर उनसे वैष्णव चाप ले लिया। अयोध्या आकर कुछ साल सुख से रहे। महाराज दशरथ बुढ़ापे में श्रीराम को युवराज बनाने की तैयारियां करने लगे। उस समय भरत और शत्रुघ्न ननिहाल केकय में थे। सारे अयोध्यावासी खुशियाँ मनाने लगे। देवताओं से प्रेरित सरस्वती देवी की चाल से दुष्ट मन्थरा की कुटिल बातों में आकर कैकेयी ने राजतिलक में विघ्न डाला। राम, लक्ष्मण और सीता चौदह साल के लिये वन चले गये, भरत को राज्य मिला। पुत्र-शोक से पीड़ित महाराजा दिवगंत हो गये। ननिहाल से लौटने पर अपनी माता की दुष्टता का पता लगने पर भरत ने अपनी माँ और अपने को धिक्कारा। गुरुजनों और माता कौसल्या के कहने पर भी राज्य स्वीकार नहीं किया और तिलक की सब सामग्रियाँ लेकर ससैन्य, सपरिवार रामचन्द्र को वन से लौटाने गये। श्रीराम आदि गंगा के किनारे निषादराज गुह से मिले और गंगा पार कर घोर जंगलों में अनेक कष्ट सह कर, भरद्वाज अत्रि आदि ऋषि मुनियों से मिल कर दण्डकारण्य में रहे। भरत ने आकर अनेक प्रकार की प्रार्थना की, पर श्रीराम अपने शपथ से विचलित नहीं हुए। अपने भाई को समझा बुझा कर अपनी पादुकाएँ देकर वापस अयोध्या भेजा। दोनों भाई सीता के साथ पंचवटी में कुटिया बना कर रहे। लक्ष्मण ने भूख-प्यास और निद्रा को जीत कर चौदह साल अपने भाई की सेवा की। रावण की बहन शूर्पणखा श्रीराम के रूप लावण्य से मोहित एक सुन्दरी का वेष धारण कर उनसे प्रेमाभ्यर्थना करने लगी। लक्ष्मण ने उसके कान नाक काट डाले। रुधिर से सनी अपनी बहिन की हालत देख कर खर और दूषण त्रिशिर आदि राक्षसों के साथ युद्ध करने आये और श्रीराम ने उन सब का वध किया। शूर्पणखा की भर्त्सना से और सीता के सौन्दर्य का वर्णन सुन कर रावण ने मारीच को एक सुनहले हरिण के रूप में श्रीराम के आश्रम में भेजा। सीता की इच्छा पूर्ति के लिये उस हरिण के पीछे-पीछे राम बहुत दूर तक चले गये। अन्त में रामबाण से घायल वह हरिण अपना रूप लेकर मरा है और मरते समय श्रीराम की आवाज में सीता और लक्ष्मण को पुकारा। इधर सीता ने पति का कातर स्वर सुन कर अपनी रक्षा में नियुक्त लक्ष्मण को भाई की सहायता के लिए भेजा। इस बीच सन्यासी का कपट वेष धारण कर रावण ने सीता का अपहरण किया। गिद्धराज जटायु सीता को बचाने के लिए रावण से लड़ा, लेकिन चन्द्रहास की वार से पंख टूट कर गिर पड़ा। आश्रम में आकर सीता को न पाकर दोनों भाई अत्यन्त दुःखी हुए और सीता की खोज में जाते जटायु से मिले। उससे सब समाचार मालूम कर उसकी मृत्यु पर उसका अन्तिम कर्म किया। सीता की खोज में जाते रस्ते में विरोध नामक राक्षस को मारा जो शापग्रस्त विद्याधर था। अगस्त के आश्रम में गये, शबरी की बेर खाई और उसको मोक्ष दिया। ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव हनुमानादि वानरों से भेंट हुई, सुग्रीव से सख्य किया और शर्त के अनुसार वालि का वध कर सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बनाया। सुग्रीव ने वानर

सेनाओं को चारों दिशाओं में भेज दिया जिनमें हनुमान ने समुद्र लांघ कर लंका में सीता से भेंट की। वानरों के द्वारा सेतुबन्धन कर लंका में प्रवेश किया। रावण से अपमानित अपने भक्त विभीषण को अभय दिया। और कुम्भकर्ण समेत राक्षस कुल का नाश कर, सीता का अग्निप्रवेश कराकर उसकी शुद्धता स्थापित कर पुष्पक विमान में विभीषण और वानरों के साथ लक्ष्मण और सीता समेत चौदह साल पूरे होने पर अयोध्या लौट आये। चौदह साल तापस वेष धारण कर पादुका की पूजा कर राज्य पालन करने वाले अपने भाई से राज्य का भार लिया। जन साधारण के अपवाद को सुनकर गर्भिणी सीता का परित्याग कर असीम दुःख पाया। इनका शासन इतना अच्छा, न्याय युक्त था, वे इतने प्रजावत्सल थे, रामराज्य कहावत सा बन गया। सीता की सुनहली मूर्ति बनाकर अश्वमेध यज्ञ किया और वल्मीकि से अपने युगल पुत्र लव और कुश को प्राप्त किया। सीता भूमि में विलीन हो गई। अपने अवतार का काम पूर्ण होने पर सभी अयोध्यावासियों को अपना पद देकर वैकुण्ठ वापिस गये। राम–राज्य की तुलना संसार में कहीं नहीं है।

श्रीरामकृष्ण परमहंस—भारत में आध्यात्मिक मण्डल में नवीन रोशनी फैलाने वाले युग पुरुष थे। इनका जन्म पश्चिम बंगाल में कुमारपुकूर गाँव में खुदीराम चट्टोपाध्याय और चन्द्रादेवी के पुत्र रूप में हुआ। खुदीराम को स्वप्न में गदाधर का वर मिला कि गदाधर उनके पुत्र होकर जन्म लेंगे। चन्द्रा देवी जब शिव दर्शन करने गयी एक तेज उनके अन्दर प्रवेश करता हुआ सा लगा और वे बेहोश हो गईं। जब पुत्र जन्म हुआ पुत्र का नाम गदाधर रखा। बचपन में ही गदाधर बाललीलाओं में रुचि नहीं लेते थे, ज्यादा समय चिन्तामग्न या ध्यानस्थ रहते थे। बचपन में पिता की मृत्यु हुई। सांसारिक सुख भोगों में उनका मन आकृष्ट नहीं होता था। भगवान की पूजा आराधना में दिल लगता था। छोटी उमर में ही कलकत्ता के काली-क्षेत्र के पुजारी बने। उपनयन संस्कार के बाद उनका नाम रामकृष्ण आ। काली की पूजा–उपासना करते-करते वे मातृदर्शन के लिये पानी में डूबे मनुष्य के समान छटपटाते थे। यहां तक कि आत्माहत्या के लिए भी तय्यार हो गये। देवी के दर्शन हुए। देवी की भक्ति में मग्न रामकृष्ण को अपनी सुध-बुध न होती थी। पहनने-ओढ़ने का ख्याल नहीं रखते थे, लोग उनको दक्षिणेश्वर के पागल तक कहते थे। वैवाहिक जीवन से इनमें परिवर्तन आयेगा, यह सोचकर घर वालों ने लड़की की खोज की, लेकिन कोई ठीक नही मिली। अन्त में रामकृष्ण ने ही एक लड़की का पता बताया और उस लड़की शारदा से उनका विवाह हो गया। विवाह के समय वे २३ साल के और शारदा देवी पाँच साल की थी। विवाहित होने पर भी वे नित्य ब्रह्मचारी रहे। अपने को कठिन से कठिन परिस्थितियों में डाल कर। प्रलोभनों के बीच रहकर, स्वय अपने ब्रह्मचर्य की परीक्षा ली। यहां तक कि अन्त में वे अपनी पत्नी की मां के रूप में पूजा कर सके। भिन्न भिन्न मतों के आचार विचार भिन्न–भिन्न होने पर भी मूल तत्व एक ही है, इसको दिखाने के लिए रामकृष्ण ने ईसाई सा रह कर ईसामसीह से आत्मसात किया, मुसल–मानों सा रहकर अल्ला को प्राप्त किया। इनको परमहंस की उपाधि दी गयी। बहुत लोगों का विश्वास है कि रामकृष्ण भगवान का और शारदा देवी का अवतार है। भग–वान रामकृष्ण अपनी पत्नी को भी आध्या–

त्मिक जीवन के मार्ग पर ले गये और वे पति की शिष्या बन गई। इनके महत्व और बालक से सरल स्वभाव से आकृष्ट अनेक भक्त इनके अनुयायी हो गये जिनमें सबसे मुख्य स्वामी विवेकानन्द थे। रामकृष्ण को गले का कैन्सर हो गया। इतने कठिन रोग से अत्यधिक पीड़ित होने पर भी वे अन्तिम समय तक अपने शिष्यों और भक्तजनों को सदुपदेश देते रहे। विवेकानन्द उनकी जान से थे। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी आत्मा शिष्यों को मार्गदर्शन कराती रही। शिष्यों की मण्डली स्थापित हुई शारदा देवी ने उनको सन्यास दिया और रामकृष्ण मिशन की स्थापना हुई जिसकी आज कल दुनियाँ के कोने कोने में शाखाएँ हैं।

श्रीवत्स-भगवान विष्णु की छाती कीवाएँ ओर का मुनहले बालों का घुघर जो लक्ष्मी देवी का द्योतक है। भगवान ने देवी को छाती पर स्थान दिया है।

श्रीविभावन–सब मनुष्यों के लिये उनके कर्मानुसार नाना प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने वाले भगवान्।

श्रीसूक्त–एक वैदिक सूक्त।

श्रीहरि–महाविष्णु।

श्रुत–(१) श्रीकृष्ण और कालिन्दी दस पुत्रों में से एक। (२) सूर्यवंशी एक राजा जो सुभाषण के पुत्र थे। इनके पुत्र जय थे। (३) भरत वश का एक राजा जो धर्मनेत्र का पुत्र था। (४) भगीरथ के पुत्र।

श्रुतकर्मा- सहदे का पुत्र, भारत युद्ध मे अश्वत्थामा से मारा गया।

श्रुतकीर्ति–(१) अर्जुन और द्रौपदी का पुत्र, अश्वत्थामा से मारा गया। (२) महाराजा दशरथ और सुमित्रा के पुत्र शत्रुघ्न की पत्नी, जनक महाराजा के भाई कुशध्वज की पुत्री (३) शूरसेन और मारिषा की एक पुत्री, वसुदेव की वहन, केकय राजा धृष्टकेतु की पत्नी। इनके सन्तदर्शन आदि पाँच केकय राजकुमार पुत्र हुए।

श्रुतञ्जय–(१) पुरूरवा के पुत्र सत्यायु का पुत्र (२) त्रिगर्त के राजा सुशर्मा का भाई जो भारत युद्ध में अर्जुन से मारा गया।

श्रुतदेव–श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त एक ब्राह्मण जो मिथिला में रहते थे। कृष्ण की परम भक्ति कर वे पूर्णकाम, शान्त, ज्ञानी और निष्काम थे। गृहस्थ होने पर भी दैवयोग से जो कुछ मिलता था उससे सन्तुष्ट होते थे। श्रीकृष्ण ऋषि मुनियों के साथ जब मिथिला आये श्रुतदेव ने उस दिन प्राप्त अन्न से बड़ी श्रद्धा और भक्ति से भगवान का सत्कार किया। भगवान इस सत्कार से उतने ही सन्तुष्ट हुए जितने सब व्यञ्जनों से युक्त उनके परम भक्त मिथिला नरेश बहुलाश्व के राज भोग से हुए।

श्रुतदेवा–शूरसेन और मारिषा की पुत्री, वसुदेव की बहन जो करूप वंश के वृद्ध शर्मा की पत्नी थी। इनका पुत्र दन्तवक्त्र था जो पूर्व जन्म में हिरण्याक्ष नामक असुर था और विष्णु के वराहरूप से मारा गया। दन्तवक्त्र श्रीकृष्ण से मारा गया।

श्रुतदेवी–सरस्वती।

श्रुतध्वज–विराट राजा का एक भाई।

श्रुतश्रवा–(१) मगध के राजा जरासन्ध के पौत्र सोमापि का पुत्र। इसका पुत्र था अयुतायु। (२) शूरसेन और मारिषा की पुत्री, वसुदेव की बहन, निषाद नरेश दमघोष की पत्नी। इनके पुत्र शिशुपाल थे। (३) एक महर्षि। इनके पुत्र सोमश्रवा थे।

श्रुतश्री–एक असुर।

श्रुतसेन–(१) भीमसेन और द्रौपदी का पुत्र जो अश्वत्थामा से मारा गया। (२) महाराजा जनमेजय का भाई (३) एक नाग।

श्रुतानीक–विराट राजा का एक भाई ।

श्रुतान्त–धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीमसेन से मारा गया ।

श्रुतायु–(१) राजा पुरूरवा और उर्वशी के एक पुत्र । इनका पुत्र वसुमान था । (२) क्रोधवश नामक दैत्य का पुनर्जन्म, अम्बष्ट देश के राजा थे । कौरव पक्ष से महाभारत युद्ध में भाग लिया था और अर्जुन से मारे गये थे ।

श्रुतावती–भरद्वाज मुनि और घृताची नाम की अप्सरा की पुत्री ।

श्रुति–(१) श्रुतिरूपा देवी (२) वेद (३) एक राजा (४)संगीत में स्वर का अन्तराल ।

श्रुति सागर–वेदरूप जल का सागर महाविष्णु की उपाधि ।

श्रेष्ठ–(१) महाविष्णु का विशेषण (२) कुबेर का नाम ।

श्रोणा–श्रवण नक्षत्र ।

श्रोत्रिय–विद्वान या वेद में प्रवीण ब्राह्मण ।

श्रौत–वेदविहित अनुष्ठान ।

श्लेष्मक–एक वन जहां विश्रवा और कैकसी के पुत्र रावणादियों का जन्म हुआ था ।

श्वाफल्क–यदु वंश के अनमित्र के पुत्र वृष्णि के पुत्र । इनकी पत्नी गन्दिनी थी । इनके तेरह पुत्र हुए अमङ्ग, सारमेय, मृदुर, मृदुविद, गिरि धर्मवृद्ध, सुकर्म, क्षेत्रोपेक्ष, अरिमर्दन, शत्रुघ्न, गन्धमाद और प्रतिबाहु और अक्रूर सबसे ज्येष्ठ पुत्र थे और श्रीकृष्ण के बड़े भक्त थे । इनकी एक पुत्री सुचीरा थी । श्वफल्क को वर मिला था कि जहां वे रहते हैं वहां आधि-व्याधि और अनावृष्टि नहीं होगी । एक बार अनावृष्टि होने के कारण काशी राजा ने उनको अपने राज्य में बुलाया । वहां वर्षा हुई । राजा ने सन्तुष्ट होकर अपनी पुत्री गन्दिनी का विवाह श्वफल्क से कर दिया ।

श्वसन–एक राक्षस जिसको इन्द्र ने मारा ।

श्वासा–दक्षप्रजापति की एक पुत्री ।

श्वेत–(१) इलाव्रत के उत्तर में स्थित एक पर्वत । इसके पास नील और श्रृंगवान पर्वत हैं । (२) शुक्र ग्रह (३) विराट राजा का एक पुत्र जो भीष्म से मारा गया ।

श्वेतकुञ्जर–इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण ।

श्वेतकि–यज्ञ प्रिय एक राजा जिन्होंने अनेक यज्ञ किये ।

श्वेतकेतु–गौतम कुल के आरुणि उद्दालक मुनि के एक पुत्र । उद्दालक मुनि ने अपने पुत्र को जो ज्ञानोपदेश दिये उनका संग्रह है छन्दोग्योपनिषद ।

श्वेतद्वीप– जम्बू महाद्वीप का एक विभाग । यह क्षीर सागर के उत्तर में स्थित है । यहां के निवासी इन्द्रिय निग्रह किये हुए, निराहारी ज्ञान सम्पन्न हैं ।

श्वेतपिङ्गल–शिव का विशेषण ।

श्वेतभद्र–एक गुह्यक ।

ष

ष–सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ ।

षड्गुण–(१) ईश्वर के छः गुण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य । (२) छः राजनीतिसन्धि,-विग्रह, आसन, द्वैत, यान, आश्रय ।

षड्ङ्ग–(१) हृदय, शिर, शिखा, नेत्र, कवच, और अस्त्र (शरीर के) (२) वेद के छः अंग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और चिति।

षड्कर्म–ब्राह्मणों के छः कर्म—अध्ययन-अध्यापन, यजन-याजन, दान और प्रतिग्रहण।

षड्चक्र–मूलाधार, स्वाधिष्टान, मणिपूर अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा।

षड्ज–संगीत के सात प्राथमिक स्वरों में से दूसरा।

षड्दर्शन–छः दर्शन शास्त्र-सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त।

षडध्वाक्–(१) सौर, शाक्त, गाणपत्य, शैव, वैष्णव, बौद्ध। (२) वर्ण, पद, मन्त्र, कला, तत्व, भुवन।

षड्प्रयोग–स्तम्भन, विद्वेषटन, उच्चाटन, उत्सादन, मारण, व्याधि—ये छः क्षुद्र प्रयोग हैं।

षड्मास (षट्मास)–छः महीनों का समय।

षड्रस–कटु, अम्ल, मधुर, लवण, तिक्त, कषाय।

षडानन्–षड्वक्त्र, षड्वदन, षण्मुख, सुब्रह्मण्य के विशेषण।

षष्ठी–एक तिथि। षष्ठि का व्रत रखने से व्याधियों से मुक्ति मिलती है। सुब्रह्मण्य के प्रीत्यर्थ यह व्रत रखा जाता है।

षष्टी देवी–(१) कात्यानी के रूप में दुर्गा का नाम जो सोलह दिव्य माताओं में से एक है। (२) सुब्रह्मण्य की पत्नी देवसेना। मूल प्रकृति के षडांश से निर्मित ब्रह्मा की पुत्री। इस देवी की उपासना करने से पुत्र जन्म होता है, पुरुष को पत्नी और स्त्री को पति मिलता है। बच्चों को आरोग्य और आयु देनेवाली है।

षाण्मातुर–छः माताओं वाले स्कन्द देव का विशेषण।

षोडशांशु–शुक्र ग्रह।

षोडशी–(१)सोहल साल की लड़की। बंगाल में दशहरा के दिन षोडशी पूजा होती है। षोडशी कन्या की देवी का संकल्प कर पूजा होती है। (३) अग्निष्टोम नामक यज्ञ का रूपान्तर।

षोडशोपचार–किसी देवता को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने की सोलह रीतियाँ। जैसे आसन, स्वागतम्, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयक, मधुपर्क आचमन, स्नान, वसन् आभरण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और वन्दन।

स

संकृति–पुरुरवा के पौत्र अनेन के वंशज जयसेन के पुत्र। इनके पुत्र जय थे जो महारथी थे।

संज्ञा–विश्वकर्मा की पुत्री, सूर्यदेव की पत्नी। इनके मनु, यम नाम के दो पुत्र यमी नाम की एक पुत्री थी। संज्ञा अपने पिता के घर जाते समय सूर्य की सेवा के लिए अपने ही रूप वाली बहन छाया को छोड़ गई। कोई कोई कहते हैं कि यह संज्ञा की ही छाया है। सूर्यदेव यह नहीं जानते थे और छाया से उनके शनैःश्वर, मनु और तपती नाम की तीन सन्तान हुईं। सूर्य के प्रचण्ड ताप को संज्ञा नहीं सह सकती थी। पुत्री का दुःख दूर करने के लिए विश्वामित्र ने सूर्य को यन्त्र में चढ़ा कर मथ कर थोड़े से तेज कण निकाले। इन तेज कणों से विश्वकर्मा ने विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव जी का त्रिशूल, कुवेर का पुष्पक विमान और स्कन्द देव की शक्ति का निर्माण किया।

संभूति–मरीचि की पत्नी।

संयतात्मा–मन को वश में रखने वाला।

संयम–(१) मन की एकाग्रता, योग के धारणा, ध्यान, समाधि । (२) शतभृंग नामक राक्षस का दूसरा नाम । इसको महाराजा अम्बरीष के सेनापति सुदेव ने मारा ।

संयमनी–यमदेव की राजधानी ।

संयमी–जिसने अपने मन के आवेगों को नियन्त्रण में रखा है ।

संयाति–(१) आयु के वंशज प्रसिद्ध राजा नहुष के छः पुत्रों में से एक, ययाति महाराजा के भाई । (२) पुरु के वंशज राजा प्राचिष्कन के पुत्र । इनकी पत्नी दृषद्वान की पुत्री वरांगी थी जिससे उनके अहंयाति नामक पुत्र हुए ।

संयाव—आटा, घी और शक्कर का बना दलिया जैसा पदार्थ ।

संवत्–विक्रमादित्य वर्ष जो क्रिस्ताब्द से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था ।

संवत्सर–(१) सम्पूर्ण भूतों के वास स्थान भगवान विष्णु (२) कालरूप से स्थित भगवान विष्णु (३) विक्रमादित्य वर्ष (४) वर्ष के अधिष्ठान देवता ।

संवर– एक राक्षस ।

संवरण–भरतवंश के एक प्रसिद्ध राजा ऋक्ष के पुत्र । इनका विवाह सूर्य पुत्री तपती से हुआ । इनके पुत्र कुरुक्षेत्र के पति कुरु थे । ये बड़े सूर्य भक्त, प्रतापी, धर्मनिष्ठ राजा थे ।

संवर्त–(१) संसार का नैमित्तिक प्रलय (२) वर्ष ।

संवर्तक–(१) प्रलयकालीन बादल (२) विश्व प्रलय के समय संसार को भस्म करने वाली प्रलयाग्नि । (३) कश्यप प्रजापति और कद्रू का पुत्र एक नाग (४) बलराम का विशेषण । (५) महर्षि अंगिरा के एक पुत्र ।

संवह–(१) वायु का एक मार्ग (२) एक वायु जो देवताओं के विमानों को चलाता है ।

संवृत–अपनी योगमाया से ढके हुए भगवान विष्णु ।

संवृत्त–वरुण का नाम ।

संवेद–प्रत्यक्ष ज्ञान ।

संवेद्य–एक पुण्य स्थल ।

संशुद्ध–प्रायश्चित के द्वारा शुद्ध किया हुआ ।

संशुत–विश्वामित्र का एक ज्ञानी पुत्र ।

संस्कार–(१) पूर्वजन्म की वासनाओं की छाप (२) धार्मिक अनुष्ठान (३) पावन कर्म ।

संस्कृत–(१) परिष्कृत, सुसज्जित (२) भारत के प्राचीन काल की भाषा । संस्कृत में सभी हिन्दुओं के सभी धर्म ग्रन्थ लिखे हैं ।

संस्थान–पुराण प्रसिद्ध एक देश ।

संहन–पुरुवंश के एक राजा जो मनस्यु और सौवीरी के पुत्र थे ।

संहिता-पवित्र वाक्यों और मन्त्रों का क्रमबद्ध संग्रह जो देवताओं के स्तुति रूप गान हैं जैसे पंचरात्र संहिता, ब्रह्मसंहिता, गर्ग संहिता आदि । भिन्न-भिन्न ऋषियों ने भिन्न-भिन्न संहिताओं का संग्रह किया है । वेद का क्रमबद्ध पाठ है संहिता ।

संहिताकल्प–अथर्ववेद का एक संहिता विभाग (दे: शान्तिकल्प) ।

संहिताश्व–भृगुवंश के एक राजा । इनकी पुत्री रेणुका थी जो जमदग्नि महर्षि की पत्नी थी ।

संह्लाद–(१) हिरण्यकशिपु और कयाधु का एक पुत्र, प्रह्लाद का भाई । (२) सुमालि और केतुमती का पुत्र एक राक्षस । प्रहस्त, अकम्पन आदि का भाई ।

सगर–सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्र के कुल में उत्पन्न राजा बाहुक के पुत्र । शत्रुओं से राज्य छिन जाने पर बाहुक सभार्य वन चले गये जहाँ उनकी मृत्यु हुई । पति का अनुगमन करने को तैयार सती पत्नी को और्व ऋषि ने देखा और उसको गर्भिणी जान कर रोक दिया । ईर्ष्यावश सपत्नियों ने उसको गर पिलाया । लेकिन कोई अनिष्ट नहीं हुआ ।

गर के साथ एक बालक का जन्म हुआ । इसलिए सगर नाम हुआ और बड़े होने पर अपने शत्रुओं को पराजित कर अति विख्यात चक्रवर्ती हुए । अपने गुरु और्व के उपदेश से तालजंघ, यवन, शाक, आदि शत्रुओं का वध नहीं किया, लेकिन विकलांग किया । और्व के पौरोहित्य में उन्होंने कई अश्वमेध यज्ञ किये। सगर की दो पत्नियां थीं सुमती और केशिनी । सुमती के साठ हजार पुत्र थे और केशिनी के एक पुत्र असमंजस । सगर के यज्ञ का घोड़ा खो गया । उसको ढूँढ़ते हुए साठ हजार सगर के पुत्रों ने भूमि को तल तक चारों ओर से खोदा और जो गढ़े पड़े वे जल भरने पर सागर कहलाये । उन्होंने उत्तर पूर्व की ओर जाकर पाताल में कपिल महर्षि के पास अश्व को देखा । समाधिस्थ महर्षि को चोर समझ कर उनको मारने का निश्चय किया । शस्त्र लेकर उनके पास जाते समय महर्षि ने आँखें खोली और नेत्राग्नि में वे भस्म हो गये । इनका उद्धार आगे चल कर राजा भगीरथ ने तपस्या कर गंगा को पृथ्वी मे लाकर किया था। असमंजस भीतर से गुण सम्पन्न होने पर भी बाहर स दुष्ट दिखते थे । उनके पुत्र थे अंशुमान । इसलिए वृद्धावस्था में सगर ने अंशुमान को राजसिंहासन पर बिठाकर पत्नियों के साथ वन चले गये और तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया ।

सगुण—ब्रह्मा की उपाधि, गुणों से युक्त भगवान।

सङ्कल्प—दक्ष प्रजापति की पुत्री, धर्मदेव की पत्नी ।

सङ्कर—भिन्न वर्णो के स्त्री पुरुषों के विवाह से उत्पन्न सन्तान ।

सङ्कर्षण—अनन्त, आदिशेष, बलराम का नाम। वसुदेव की पत्नी देवकी का सातवां गर्भ जब कुछ महीने का था, तब भगवान के नियोग से योगमाया ने उस गर्भ को सकर्षण कर वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के उदर में रख दिया । इसलिये जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम संकर्षण हो गया । यही बलराम है । पाताल में तीस हजार योजन नीचे संहार-देवता अनन्त या आदिशेष रहते हैं । इनको सकर्षण कहते हैं क्योंकि ये ही ध्याता और ध्येय का आत्मसात् कराते हैं । सहस्त्र शिर वाले इनके एक ही फण पर यह क्षितिमण्डल सरसों के एक दाने के समान दिखता है । इनके अतिशय सुन्दर शरीर कान्ति देखकर नागकन्यायें अति आनन्द पाती हैं । अनन्त गुणों के भण्डार आदिदेव भगवान अनन्त लोक कल्याण के लिये रहते हैं । सुर, असुर, नाग, सिद्ध, गन्धर्व, विद्याधर, ऋषिमुनियों से ध्यायमान ये नीलाम्बरधारी, एक कुण्डल, भगवान सब के हृदयों में अमृत वर्ष करते हैं । इनके सुन्दर हाथ में हल रहता है, वैजयन्ती माला पहने हुए हैं । नारद, तुम्बुरु आदि इनका स्तुति गान करते हैं । इन्हीं के अवतार हैं दशरथ और सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और वसुदेव और रोहिणी के पुत्र बलराम ।

सङ्क्रम—स्कन्ददेव का एक पार्षद ।

सङ्क्रान्ति—वह समय जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि को जाता है । संक्रान्ति हर महीने के अन्त में होता है और वह समय पुण्य माना जाता है । मकर, तुला और चैत्र की संक्रान्ति विशेष महत्व के हैं । इस दिन पुण्य नदियों में स्नान करना विशेष फलप्रद है।

सच्चिदानन्द—सत् (सनातन सत्यस्वरूप), चित (स्वयं प्रकाशित) आनन्द स्वरूप भगवान विष्णु, परब्रह्म ।

सञ्जय—सञ्जय गावल्गण नामक सूत के पुत्र थे । ये बड़े शान्तनिष्ठ, ज्ञान-विज्ञान सम्पन्न, सदाचारी, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा और श्रीकृष्ण के परम भक्त थे और उनको तत्व से जानने वाले थे । अर्जुन के बचपन के

मित्र थे। महाभारत युद्ध में भगवान वेदव्यास ने इनको दिव्य दृष्टि दी थी जिसके प्रभाव से इन्होंने घृतराष्ट्र को युद्ध का सारा हाल सुनाया महर्षि व्यास, सञ्जय, विदुर, भीष्म आदि कुछ ही ऐसे महानुभाव थे जो भगवान श्रीकृष्ण के यथार्थ स्वरूप को पहचानते थे। कौरवों की दुश्चेष्टाओं और क्रूर कृत्य की समय२ पर वे कड़ी आलोचना करते थे और घृतराष्ट्र के मन्त्री और सखा के कारण उनको उपदेश भी दिया करते थे। महाभारत युद्ध को रोकने का उन्होंने बड़ा प्रयत्न किया। श्रीकृष्ण के निर्याण के बाद दुर्निमित्त देखकर विदुर के साथ जब धृतराष्ट्र और गान्धारी वन चले गये, सञ्जय भी उनके साथ गये। जब घृतराष्ट्र और गान्धारी की दावानल में पड़ कर मृत्यु हुई, सञ्जय तपस्या करने हिमालय की ओर गये। (२) सौवीर देश के एक राजकुमार। ये एक बार जब युद्ध में पराजित राजमहल में लौट गये, अपनी वीर माता विदुल की भर्त्सना और उत्तेजनापूर्ण वातें सुनकर युद्ध क्षेत्र में लौट गये। (२) पुरूरवा के वंशज प्रति के पुत्र, इनके पुत्र-जय थे (४) पुरुवंश के भर्म्याश्व के पांच पुत्रों में से एक। ये पाचों राजकुमार पांच राज्यों की रक्षा करने में निपुण थे, इसलिये पांचाल कहलाते थे।

सञ्जयम्—शव का भस्म हो जाने पर भस्म और अस्थि इकट्ठा करने की क्रिया।

सञ्जीवनमणि—सर्प श्रेष्ठों के सिर का मणि, नागों का जीवन इस पर निर्भर है।

सञ्जीवनी—(१) एक मन्त्र (२) एक अमृत (दे: मृत सञ्जीवनी)

सत्—सत पद परमात्मा का वाचक है जो सर्व-व्यापी और नित्य है। उसका कभी किसी भी निमित्त से परिवर्तन या अभाव नहीं होता। वह सदा एकरस, अखण्ड और निर्विकार रहता है।

सतसंग—सन्त, महापुरुष, ऋषि, मुनि आदि महापुरुषों के संग में रहकर उनके मुँह से भगवान की महिमा, लीलाएँ आदि का वर्णन सुनना।

सतांगति—सत्पुरुषों का परम प्रापनीय स्थान, भगवान।

सतानन्द—दे:—शतानन्द।

सती—(१) पतिव्रता (२) दक्ष प्रजापति की पुत्री, शिवाजी की पत्नी। दक्ष की यागशाला में योगाग्नि में भस्म हुई (दे: वीरभद्र)

सत्कर्म—अनुवंश के धृतव्रत के पुत्र, इनके पुत्र अधिरथ थे।

सत्कृति—(१) जगत् की रक्षा आदि सत्कर्म करने वाले भगवान विष्णु। (२) एक सूर्य वंशी राजा।

सद्गति—सत्पुरुषों द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य गरिस्वरूप महाविष्णु।

सत्ता—सदा सर्वदा विद्यमान सत्तास्वरूप भगवान विष्णु।

सत्भूति—बहुत प्रकार से बहुत रूपों से भासित होनेवाले भगवान विष्णु।

सत्य—(२) तीसरे मन्वन्तर का एक देवगण। (२) एक प्रकार की अग्नि। वेदना पीड़ित लोगों की वेदना का शमन यह अग्नि करती है, इसलिए इसका निष्कृति नाम भी है। (३) वीतहव्य नामक राजा के वंशज विपत्य के पुत्र (४) विदर्भ देश के एक तपस्वी (५) भगवान विष्णु का विशेषण (६) पृथुवंश के हविर्धान के पुत्र। (७) नन्दीमुख श्राद्ध की अधिष्ठात्री।

सत्यक—यदुवंश के राजा शिनि के पुत्र। इनके पुत्र युयुधान थे जो सात्यकि भी कहलाते थे (दे: सात्यकि)।

सत्यकर्मा—(१) भारत के वंशज धृतव्रत के पुत्र इनके पुत्र अनुरथ थे। (२) त्रिगर्त राजा सुशर्मा का भाई जो अर्जुन से मारा गया।

सत्यकाम–एक श्रेष्ठ महर्षि जाबाला के पुत्र। बचपन में यह ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से गुरु की खोज में गौतम गोत्रीय महर्षि हारिद्रुम के पास गये। महर्षि के गोत्र पूछने पर बालक माँ के पास आये। माँ ने कहा बचपन में मेरा विवाह तुम्हारे पिता से हुआ। गृहस्थी के कामों में गोत्र नहीं पूछा। यौवनावस्था में ही तुम्हारा जन्म हुआ और तुम्हारे पिता की मृत्यु हुई, इसलिये गोत्र नहीं जानती। सत्यकाम ने सारी बातें गुरु से बतायी। बालक की सत्यसन्धता देखकर उनको ब्राह्मण कुमार समझकर गौतम ने उसको शिष्यरूप में स्वीकार किया। गुरु ने अत्यन्त दुर्बल और कृश चार सौ गौएँ देकर कहा 'तू इन गौओं के पीछे जा।' गुरु की आज्ञा के अनुसार अत्यन्त श्रद्धा, उत्साह और हर्ष के साथ उन्हें वन की ओर ले जाते समय सत्यकाम ने कहा 'इनकी संख्या एक हजार पूरी करके लौटूँगा। वे उन्हें तृण और जल की अधिकता वाले निरापद वन में ले गये और पूरी एक हजार होने पर लौटे। फल यह हुआ कि लौटते समय रास्ते में इनको ब्रह्म ज्ञान हो गया। इन महर्षि की महिमा का वर्णन करती हुई यह कथा छान्दोग्य उपनिषद में आयी जाती है। इनके अनेक शिष्य हुए।

सत्यकेतु–(१) सोमवंश के सुकेतन के पुत्र, धृष्टकेतु के पिता। (२) पुरुवंश के राजा सुकुमार के पुत्र।

सत्यजित–(१) उग्रसेन की पुत्री कङ्का और शूरसेन के पुत्र आनक का पुत्र (२) ययाति महाराजा के वंशज सुनीथ के पुत्र। इनके पुत्र क्षेम थे। (३) पांचाल राजा द्रुपद के भाई भारत युद्ध में द्रोणाचार्य से मारे गये। (४) तीसरे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

सत्यतप–एक ऋषि।

सत्यदेव–कलिङ्गसेना के एक प्रमुख योद्धा जो कुरुक्षेत्र में भीमसेन से मारे गये।

सत्यधर्म–चन्द्रवंशी एक राजा।

सत्यधर्मा–धर्म ज्ञान आदि सद्गुणों से युक्त भगवान विष्णु।

सत्यधृति–(१) पूरुवंश के राजा कीर्तिमान के पुत्र। इनके पु दृढ़नेमी थे। (२) गौतमपुत्र शतानन्द के पुत्र जो धनुर्वेद विशारद थे। इनके पुत्र थे शरद्वान (३) पाण्डवों के मित्र एक राजा जो महारथी थे, ये शस्त्रज्ञान, धनुर्वेद, ब्रह्मवेद आदि जानते थे। द्रोणाचार्य से मारे गये।

सत्यद्युम्न–जनक वंश के राजा भानुमान के पुत्र। इनके पुत्र शुचि थे।

सत्यपाल–एक महर्षि।

सत्यभामा–श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों मे से एक। सत्राजित नामक यादव की पुत्री। सत्यभामा बाल्यकाल से ही श्रीकृष्ण में भक्ति और प्रेम रखती थी श्रीकृष्ण के शत्रु थे। सत्राजित ने इसलिये सत्यभामा का विवाह शतधन्वा से करने का निश्चय किया। इस बीच सूर्य से प्राप्त स्यमन्तक मणि खो गया और सत्राजित का भाई प्रसेनजित मारा गया। सत्राजित ने श्रीकृष्ण को दोषी ठहराया। लोकापवाद को दूर करने के लिये श्रीकृष्ण ने जाम्बवान से मणि लाकर दिया। अपने दुष्कर्म का प्रायश्चित करने के लिये सत्राजित ने अपनी पुत्री सत्यभामा को श्रीकृष्ण को दिया। यह भूमि देवी का अवतार मानी जाती है। इसलिये नरकासुर का वध करने जाते समय श्रीकृष्ण सत्यभामा को भी साथ ले गये थे। स्वर्ग में आदिती के कुण्डल दिये और इन्द्र को पराजित कर पारिजात वृक्ष लाकर सत्यभामा के महल में लगाया। श्रीकृष्ण से इनके दस पुत्र भानु, सुभानु, स्वर्भानु, प्रभानु, भानमान, चन्द्रभानु, वृहद्भानु अतिभानु, श्रीभानु और प्रतिभानु हुए। श्रीकृष्ण के शरीर त्याग के बाद तपस्या

करने चली वन गई ।

सत्ययुग-चार युगों में से पहला युग, दूसरा नाम कृत युग है ।

सत्यलोक-चौदह लोकों में से सबसे ऊपर का लोक, इसको ब्रह्मलोक भी कहते हैं। जहां ब्रह्मा निवास करते हैं । यहां के निवासी एक कल्प (एक हजार चतुर्युग या ४३२,००,००,००० मनुष्य वर्ष) जीवित रहते हैं ।

सत्यवती-(१) पुरूरवा के वंशज गाधि की पुत्री । भृगुकुल के श्रेष्ठ ब्राह्मण ऋचीक ने सत्यवती से विवाह किया । सत्यवती और उसकी मां के लिए पुत्र जन्म के लिए ऋचीक ने चरु बनाकर दोनों के उचित अलग२ मन्त्र जपकर (सत्यवती के लिए ब्राह्मण कुमार और उसकी मां के लिए क्षत्रिय कुमार) चरु रख दिया । सत्यवती का चरु ज्यादा महत्व का होगा, यह सोचकर सत्यवती को मनाकर उसका चरु मां ने खा लिया । ऋचीक को पता लगने पर सत्यवती से कहा कि तुमने गल्ती की, तुम्हारे पुत्र शत्रुनाशक क्रूर होगा और तुम्हारा भाई ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण होगा । सत्यवती की प्रार्थना पर ऋचीक ने कहा कि तुम्हारे पुत्र के बदले तुम्हारा पौत्र क्षात्रवीर्य से पूर्ण होगा । सत्यवती के पुत्र जमदग्नि हुए और पौत्र परशुराम और भाई प्रसिद्ध विश्वामित्र । पुत्र जन्म के बाद सत्यवती कौशी नामक पुण्य नदी बन गई जो लोक पावनी है (दे: ऋचीक, जमदग्नि) (२) व्यास महर्षि की मां जो बाद में शान्तनु महाराज की रानी बनी । सत्यवती का जन्म आद्रिका नामक अपसरा से हुआ जो शापग्रस्त होकर मछली बनकर गंगा में रहती थी । उस नदी में उपरिचरवसु का शुक्र गिर पड़ा जिसे मछली ने खा लिया । इसके पेट से एक बालक और बालिका निकली । मछुए ने बालक को राजा को भेंट दी जो मत्स्यराज से प्रसिद्ध हुए । बालिका को काली नाम देकर दाशों के राजा ने पाला । यह अति रूपवती कन्या बन गयी । मत्स्य का गंध होने से मत्सगन्धा नाम भी था । एक बार पराशर मुनि गंगा पार करने आए और काली उनको पार ले गयी । काली के सौन्दर्य पर मोहित मुनि ने बीच नदी में माया से एक द्वीप रचकर उसमें काली का पारिग्रहण किया । मत्स्यगन्धी कस्तूरगन्धी हो गई और उसका कन्यात्व नष्ट हुए बिना एक पुत्र जन्मा जो प्रसिद्ध व्यास महर्षि थे । इनका नाम कृष्ण था, पीछे व्यास, वेदव्यास, द्वैपायन, कृष्ण द्वैपायन आदि नामों से प्रसिद्ध हुए । एक बार महाराजा शन्तनु सत्यवती को देखकर उसपर अनुरक्त हो गये । लेकिन वे सत्यवती के पिता दाश की शर्त, कि सत्यवती का पुत्र ही शन्तनु के बाद राजा बनेगा, पूरी करने को तय्यार नही थे । सत्यवती के प्रेम से पीड़ित पिता से समाचार पाकर भीष्म ने दाश राजा से दृढ़ प्रतिज्ञा की कि मैं राज्य सिंहासन नहीं स्वीकार करूंगा और आजन्म ब्रह्मचारी रहूंगा । शन्तनु ने सत्यवती से विवाह किया और उनके चित्रांगद और विचित्रवीर्य नाम के दो पुत्र हुए । सत्यवती के कहने पर व्यास ने वंश वृद्धि के लिए विचित्र वीर्य की पत्नियां अम्बिका और अम्बालिका और एक दासी में पाण्डु धृतराष्ट्र और विदुर को जन्म दिया । पाण्डु के निधन के बाद वह बहुत दुःखी हुई और अपनी पुत्र वधुओं के साथ वन में तपस्या करने गई । (३) एक केकय राजकुमारी जो त्रिशंकु की पत्नी और हरिश्चंद्र की माता थी ।

सत्यधर्मा-त्रिगर्त राजा सुशर्मा का भाई ।

सत्यम्भरा-प्लक्षद्वीप की एक नदी ।

सत्यरथ-जनक वंश के समर्थ के पुत्र । इनके पुत्र उपगुरु थे ।

सत्यरूपा-देवी का विशेषण ।

सत्यवाक-कश्यप और मुनि का पुत्र एक गन्धर्व ।

सत्यवान्–(१) चाक्षुष मनु और नड्वला का एक पुत्र। (२) साल्वदेश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र। वृद्धावस्था में राजा अन्धे हो गये और शत्रुओं से पराजित अपनी पत्नी और पुत्र सत्यवान के साथ वन में रहने लगे। पति की खोज में जाती हुई मद्रदेश की राजकुमारी सावित्री ने सत्यवान को अपना पति चुन लिया। सत्यवान अल्पायु थे, लेकिन पतिव्रता शिरोमणि सावित्री के पातिव्रत्य के कारण यमधर्म राजा को सत्यवान का जीवन लौटाना पड़ा। धर्मराजा से सावित्री को अनेक वर मिले जिसके फलस्वरूप द्युमत्सेन को खोया हुआ राज्य वापिस मिला और नेत्र दृष्टि भी प्राप्त हुई (दे: सावित्री)।

सत्यव्रत–(१) द्रविण देश के राजा, तपस्या कर राजर्षि बने और अगले कल्प के श्राद्धदेव के नाम से मनु बनेंगे। एक बार तर्पण करते समय अञ्जलि के पानी में एक छोटी मछली आ गई। राजा उसको फेंकने जा ही रहे थे कि मछली ने कहा कि मुझे फेंक देने से बड़ी मछलियां खा लेंगी। राजा उसको कमण्डलु में डाल कर आश्रम में ले गये। वहां पहुँचने तक मछली बड़ी होकर कमण्डलु में भर गई। उसको एक बड़े वर्तन में डाल दिया। एक घंटे में उसमें भर गई। इसके बाद क्रमशः तालाव, झील आदि में डालने से वह सब भर जाने पर राजा उसको समुद्र में डालने लगे। मछली की यह अद्भुत क्रिया देखकर राजा ने कहा आप कौन है, किसी मछली की ऐसी अमानुष क्रिया नहीं होती, आप स्वय भगवान होंगे। तब मत्स्यरूपी भगवान ने कहा कि आज सातवें दिन कल्प का अन्त होगा, तब एक नौका तुम्हारे पास आयगा। तब सब औषधियों के बीज लेकर सप्तर्षियों के साथ उस पर चढ़ना। निरालम्ब एकार्णव में वासुकि के सहारे मत्स्यरूप मेरी सींगा से बन्धा वह नौका वासुकि के श्वास से चलता रहेगा। ब्रह्मा की रात्रि समाप्त होने पर फिर सृष्टि होगी। राजा ने ऐसा ही किया। यही प्रसिद्ध मत्स्यावतार है। (२) सूर्यवंश के राजा त्रिवन्धन के पुत्र जो त्रिशंकु से प्रसिद्ध हो गये। (३) एक महाऋषि। ये कोसल देश में देवदत्त ब्राह्मण के एक पुत्र थे। यह गोदिल नामक सामवेद गायक के शाप के कारण पहले मूर्ख रहते थे। उनका उतथ्य नाम था। मूर्खता के कारण सबसे अपमानित होने पर दुःखी होकर वन चले गये और सत्य पर निष्ठ होकर वन में ऋषि-मुनियों की सेवा करते थे। इनकी सत्यनिष्टा से इनका नाम सत्यव्रत हो गया। सरस्वती देवी की कृपा से ये महापण्डित और ज्ञानी बन गये। (४)एक देवगण।

सत्यव्रता–धर्मनिष्टा देवी।

सत्यसन्ध–धृतराष्ट्र का पुत्र जो अर्जुन के द्वारा मारा गया।

सत्यसन्धा–देवी का विशेषण।

सत्यसेन–(१) तीसरे मन्वन्तर में धर्मदेव और उनकी पत्नी सूनृता के पुत्र सत्यसेन के नाम से भगवान् विष्णु ने जन्म लिया और दुष्ट यक्षों और राक्षसों और अनेक भूतगणों का वध किया (२) कर्ण का एक पुत्र (३)त्रिगर्त राजा सुशर्मा का भाई जो अर्जुन से मारा गया।

सत्यहित–पुरुवंश के राजा ऋषभ के पुत्र। इनके पुत्र पुष्पवान थे।

सत्या–कोसल के राजा नग्नजित की पुत्री, श्री कृष्ण की आठ महारानियों में से एक। दूसरा नाम नग्नजित था। राजा की प्रतिज्ञापूर्ण करने के लिये श्रीकृष्ण ने अपने को सात रूपों में कर खेल ही में सात बैलों को युगपत् बांध कर राजकुमारी से विवाह किया। इनके वीर, चन्द्र, अश्वसेन, चित्रगु, वेगवान्, वृष, शङ्कु,

वसु, कुन्ति और आम नामक दस पुत्र हुये । (२) आयु नामक अग्नि की पत्नी । इनके पुत्र भरद्वाज थे । (३) भरतवंश के राजा मन्यु की पत्नी । इनका पुत्र भौवन था । (४) द्रौपदी, सत्यभामा आदि का नाम ।

सत्याङ्ग–प्लक्षद्वीप के निवासियों का एक वर्ण ।

सत्यानन्दस्वरूपिणी–सत्य और आनन्द जिनका स्वरूप है ऐसी देवी ।

सत्यानृत–संकट के समय जीविकोपार्जन का एक मार्ग (दे: मृत) ।

सत्यायु–पुरुरवा और उर्वशी के पुत्र । इनका पुत्र श्रुतञ्जय था ।

सत्यार्थप्रकाश–स्वामी दयानन्द की रचित वेद सूक्तों की व्याख्या ।

सत्येयु–पुरु वंश के राजा रौद्राश्व और धृताची के पुत्र थे ।

सत्र–[१] सत्पुरुषों की रक्षा करने वाले भगवान विष्णु [२] यज्ञ ।

सत्राजित–वृष्णिवंश के निम्न के पुत्र सत्राजित और प्रसेन थे । सत्राजित ने सूर्य भगवान की तपस्या कर उनसे स्यमन्तक नामक एक मणि प्राप्त किया जिससे रोज आठ भार सोना मिलता था । श्रीकृष्ण को अपना वैभव दिखाने के लिए उसे पहन कर सत्राजित द्वारका गये । भगवान ने उस मणि को मांगा, लेकिन सत्राजित ने नहीं दिया । उस मणि को पहन कर सत्राजित का भाई प्रसेन शिकार करने गया और वापस नहीं आया । सत्राजित ने गुप्तरूप से यह अफवाह फैलायी कि श्रीकृष्ण ने मणि पाने के लिए प्रसेन को मारा । सत्य का प्रकाशन करने के लिए श्रीकृष्ण कुछ द्वारका वासियों के साथ प्रसेन के पदचिह्नों के सहारे वन पहुँचे और प्रसेन का शव देखा । और आगे शेर के पदचिह्नों के मार्ग पर जाकर जाम्बवान की गुफा में पहुँचे । वहाँ जाम्बवान को पराजित कर मणि और जाम्बवती को लेकर द्वारका लौटे । अपने कर्म पर लज्जित सत्राजित ने अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह श्रीकृष्ण से कर दिया । इससे शतधन्वा उनका शत्रु हो गया और श्रीकृष्ण और बलराम की अनुपस्थिति में कृतवर्मा और अक्रूर के उपदेश से सत्राजित का वध किया [देखिए सत्यभामा शतधन्वा] ।

सदश्व–प्राचीन भारत का एक राजा ।

सद्माजित–महाराजा भरत के वंश के एक राजा कुन्ति के पुत्र । इनके पुत्र माहिष्मान थे ।

सदानीरा–एक पुण्य नदी जिसमें हमेशा पानी रहता है ।

सदामर्ष–सत्पुरुषों पर क्षमा करने वाले भगवान विष्णु ।

सदाशिव–भगवान शिव ।

सनकादि महर्षि–ये चार महर्षि सनक, शनत्कुमार, सनन्दन और सनातन ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं । ब्रह्मा के आदेश पर ये प्रजासृष्टि करने को तैयार नहीं थे और नित्य ब्रह्मचारी रहे । सृष्टि की आदि सन्तान होने पर भी वे पांच छः साल के बालकों के समान लगते हैं, दिगम्बर है । सत्व गुण से परिपूर्ण सदा ब्रह्म में रमण करने वाले हैं । ये चारो ऋषि सदा एक साथ घूमते हैं । एक बार महाविष्णु के दर्शन के इच्छुक ये वैकुण्ठ में गये । भगवान की माया से प्रेरित भगवान के पार्षद जय और विजय ने उनको बालक समझ कर फाटक पर रोक दिया । भगवान की माया से ही द्वन्द्व विकारों से अतीत होने पर भी वे कुपित हुए और जय और विजय को असुर योनि में जन्म लेने का शाप दिया । उनकी प्रार्थना पर दया के सागर ऋषियों ने कहा कि तीन जन्म के बाद पूर्वरूप प्राप्त करोगे [दे: जय, विजय] ।

सनध्वज–जनक महाराजा के वंशज एक राजा जो शुचि के पुत्र थे । इनके पुत्र ऊर्ध्वकेतु थे ।

सनन्दन–सनकादि महर्षियों में से एक ।

सनातन–सनकादि ऋषियों में से एक ।

सनातनतम–पुरातन से पुरातन, भगवान का विशेषण ।

सनातन धर्म–हिन्दू धर्म । हिन्दू धर्म अनादि काल से है, इसलिए इसको सनातन धर्म कहते हैं ।

सन्ततिमान–भरतवंश के राजा सुमति के पुत्र । इनके पुत्र कृति थे ।

सन्ततेय–पुरुवंशज रौद्राश्व और घृताची नामक अप्सरा का एक पुत्र ।

सन्तान गोपाल–श्रीकृष्ण जब द्वारका में रहते थे तब एक ब्राह्मण के आठ पुत्र जन्मते ही मरे । एक और पुत्र मरा, तो दुःख से आर्त ब्राह्मण शिशु का शव लेकर द्वारका आये और शिशु की अकाल मृत्यु का कारण राजा की अनीति कहकर भर्त्सना करने लगे। उस समय अर्जुन वहां थे, श्रीकृष्ण की बुराई वे नहीं सुन सकते थे । इसके अलावा अपने शौर्य वीर्य के घमण्ड में शपथ किया कि ब्राह्मण के अगले पुत्र की रक्षा करूंगा । ब्राह्मण ने कहा कि जो काम श्रीकृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध नहीं कर सकते उसे अर्जुन कैसे करेंगे । इस पर अपनी वीर चेष्टाओं का बखान कर अर्जुन ने कहा कि मैं इनमें से कोई नहीं हूँ, लेकिन अर्जुन हूँ, यदि पुत्र की रक्षा न करूँ तो अग्नि में प्रवेश करूंगा । जब ब्राह्मण का दसवां लड़का होने वाला था अर्जुन सूतिका गृह को चारों तरफ से बाणों से घेर लिया और स्वयं गाण्डीवधारी होकर पहरा देने लगे । लेकिन पुत्र जन्म होते ही शरीर भी अप्रत्यक्ष हुआ । इस पर कोप-ताप से पीड़ित ब्राह्मण ने अर्जुन का तिरस्कार किया । अर्जुन ने तीनों लोकों में और यम-लोक, वायुलोक सब जगह बालक को ढूँढ़ना । अपने परिश्रम में पराजित विषण्ण अर्जुन भगवान का स्मरण कर अग्नि में प्रवेश करने को तैयार हो गये । अब तक अर्जुन को अपनी शक्ति और पौरुष का गर्व था । इसलिये भगवान भी चुप रहे । अब नाम लेते ही श्रीकृष्ण ने आकर उनका हाथ पकड़ा और अपने रथ पर बिठाकर लोकालोक को भी लांघ कर वैकुण्ठ गये । वहां श्रीकृष्ण ने अपने ही रूप शेषशायी लक्ष्मी सेवित महाविष्णु को और भिन्न वयवाले ब्राह्मण कुमारों को अर्जुन को दिखाया । भगवान विष्णु की अनुमति से बालकों को लेकर दोनों मर्त्यलोक में वापिस आये और अर्जुन ने ब्राह्मण को सभी पुत्र सौंप दिये । यही सन्तान गोपाल की कथा है ।

सन्तापन–कामदेव के पांच बाणों में से एक ।

सन्तोष–भगवान यज्ञ और दक्षिणा के बारह पुत्रों में से एक ।

सन्दीपन–कामदेव के पांच बाणों में से एक ।

सन्धाता–मनुष्यों को उनके कर्मो के फलों से संयुक्त करने वाले भगवान विष्णु ।

सन्धि–[१] कुश वंश के राजा प्रसुश्रुत के पुत्र । इनके पुत्र अमर्षण थे । [२] युगान्त काल ।

सन्ध्या–[१] सन्ध्या स्वरूपिणी देवी । [२] ब्रह्मा की मानस पुत्री अरुन्धती का पूर्वजन्म [३] सन्ध्या समय–रात और प्रभात का मिलन वेला, प्रातः सन्ध्या, दिन के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध का मिलन समय मध्याह्न संध्या, सायं और रात का मिलन वेला सायं सन्ध्या, ऐसे तीन सन्ध्या हैं । ब्राह्मणों के लिये सध्या वन्दन अनिवार्य है । तीनों संध्याओं में ईश्वर स्मरण और पूजा विशेष फल देने वाली है । [४] एक नदी का नाम [५] एक वर्ष की बालिका ।

सन्ध्याराग–प्रातः सन्ध्या और सायं सन्ध्या के समय नभोमण्डल में जो लालिमा दिखायी देती है वही सन्ध्याराग है ।

सन्ध्यावन्दन–प्रातःकाल और सायंकाल की

प्रार्थना ।

सन्नति-एक प्रकार का यज्ञ ।

सन्नती-पुलह मुनि के पुत्र क्रतु की पत्नी । इनके परम तेजस्वी बालखिल्य नामक पुत्र हुए ।

सन्नतेयु-कुशवंश के राजा रौद्राश्व और घृताची का एक पुत्र ।

सन्निवास-सत्पुरुषों के आश्रय विष्णु भगवान ।

सन्निहित-मनु के पुत्र एक अग्नि ।

सन्यास-सम्यक प्रकार से त्याग । पूर्व त्याग ही सन्यास है । सांसारिक विषय-वासनाओं का परित्याग । मन, वाणी और शरीर द्वारा होनेवाली सम्पूर्ण क्रियाओं में कर्तापन के अभिमान का और शरीर तथा संसार में अहंता ममता का पूर्ण त्याग ही सन्यास है । कर्मों के भगवद्र्पण को भी सन्यास कहते हैं ।

सन्यासकृत-मोक्ष के लिए सन्यासाश्रम और सांख्य योग का निर्माण करने वाले भगवान ।

सन्यासाश्रम-चार आश्रमों में चौथा ।

सन्यासी-ब्रह्मचारी वेदाध्ययन के बाद या तो गृहस्थाश्रम स्वीकार कर सकता है या वानप्रस्थ और उसके बाद सन्यासाश्रम में प्रवेश कर सकता है । सन्यासी को चाहिए कि विषय वासनाओं से दूर रहकर पहले अपने मन को संयत रखें । यज्ञ, दान, तप आदि सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों के फलों की आसक्ति का त्याग जो करता है वह सन्यासी है । सन्यासी के पास केवल दण्ड और कमण्डलु होना चाहिए । आत्मा में रमण कर वह भिक्षा पर अपनी जीविका चलावें, आश्रय रहित हो सब भूतों में स्नेह और दया रखें, शान्त और नारायण पर हो अकेला ही घूमे । विश्व को आत्मा में और आत्मा को विश्व में देखें । बन्धन और मुक्ति को माया जानें । अनिवार्य मृत्यु की ओर लापरवाह रहे । ज्ञानी होने पर भी अपने ज्ञान का दिखावा न कर उन्मत्त, जड़वत विचरण करे जिससे लोगों की प्रशंसा पात्र बन कर घमण्ड न आ जाय । अज्ञानवश भी हिंसा न करें । सन्यासी के लिये 'सर्व ब्रह्ममय' है ।

सप्तगंगा-एक पुण्य स्थल, यहाँ देवताओं और पितरों की पूजा करने से स्वर्ग मिलता है ।

सप्तगोदावर-शूर्पारिक क्षेत्र के पास एक पुण्य स्थल ।

सप्तजनाश्रम-एक पुण्य स्थान । यहां सप्त जन नामक सात मुनियों ने पानी के अन्दर शीर्पासन पर खड़े तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया था ।

सप्तजिन्ह्-काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता धूम्रवर्णा, स्फुलिङ्गिनी और विश्वरुचि-इन सातों जिह्वाले अग्निस्वरूप ।

सप्तद्वीप-जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शालभक्ति द्वीप क्रौंच द्वीप, शाकद्वीप, और पुष्कर द्वीप ये पृथ्वी के सात महाद्वीप है । जम्बूद्वीप ८,००,००० मील चौड़ा और उतने ही चौड़े क्षीर सागर से वेष्टित है । उसके बाद इससे दुगना चौड़ा (१६,००,००० मील) प्लक्षद्वीप है जो उतने ही चोड़े इक्षुरस सागर से घिरा है । इस तरह एक द्वीप से दुगना दूसरा द्वीप जो उतने ही चौड़े सागर से वेष्टित ऐसे क्रमशः शालमलि द्वीप सुरोद से वलयित, कुशद्वीप घृतसागर से, क्रौंचद्वीप क्षीरसागर से शाकद्वीप दधिमण्डोद से, पुष्कर द्वीप (५,१२,००,००० मील चौड़ा) शुद्ध जलोद से परिवेष्टित है । महाराजा प्रियव्रत ने इसको बनाया था और एक-एक द्वीपों के अधिपति अपने एक-एक पुत्र को बनाया । उन्होंने अपने पुत्रों के नाम पर एक-एक द्वीप को वर्षों में विभाजित किया । जम्बूद्वीप के अन्तरगत भारतवर्ष है । (दे: प्रियव्रत, द्वीप) ।

सप्तद्वीपा-पृथ्वी का विशेषण ।

सप्तनाग-अनन्त, तक्षक, कर्क, महापद्म, पद्म, शंख गुलिक ।

सप्तपदी–विवाह संस्कार के अवसर पर वर और वधु सात पग मिल कर चलते हैं—इसके बाद विवाह बन्धन अटूट हो जाता है।

सप्तमाताएँ–देवासुर युद्ध में दुर्गा सुम्भ निसुम्भ से युद्ध करने को तैयार हुई। पहले चण्ड मुण्डासुर मारे गये। रक्तबीज नामक असुर देवी से युद्ध करने आया। इस असुर को वर मिला था कि उसके शरीर से गिरे एक-एक बूंद रक्त से एक-एक असुर पैदा होगा। इसलिए इसको मारना कठिन था। देवताओं ने अपनी-अपनी शक्तियों जो देवी के विभिन्न रूप है, देवी की सहायता के लिए भेजीं। ब्रह्मा की ब्रह्माणी शक्ति, विष्णु की वैष्णवी शक्ति, माहेश्वर की माहेश्वरी शक्ति, कुमार (कार्तिकेय) की कौमारी शक्ति, वराह की वाराही शक्ति, इन्द्र की इन्द्राणी शक्ति, देवी की अपनी शक्ति चामुण्डी—ये सप्तमाताएँ हैं देवी की सहायता के लिए पहुँचीं।

सप्तर्षि–प्रत्येक मन्वन्तर के सप्तर्षि अलग-अलग हैं। साधारणतया मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ और पुलस्त्य—ये सात महर्षि सप्तऋषि कहलाते हैं। ऋषियों में जो दीर्घायु मन्त्रकर्ता, ऐश्वर्यवान, दिव्य दृष्टियुक्त, गुणविद्या और आयु में वृद्ध, धर्म का साक्षात्कार करने वाले और गोत्र चलाने वाले हैं, ऐसे सात गुणों से युक्त सात ऋषियों को ही सप्तर्षि कहते हैं। ये महर्षि पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान लेना-देना—इन छः कर्मों को सदा करने वाले, ब्रह्मचारियों को पढ़ाने के लिए अपने आश्रम में गुरुकुल रखने वाले तथा प्रजा की उत्पत्ति के लिए ही स्त्री और अग्नि का ग्रहण करने वाले होते हैं। ये अत्यन्त तेजस्वी और बुद्धिमान हैं।

सप्तवाहन–सात घोड़ों वाले सूर्यरूप भगवान विष्णु।

सप्तर्षि कण्ड–कुरुक्षेत्र के अन्दर के पुण्य तीर्थ।

सप्ताश्व–सूर्य के रथ में बंधे वैदिक छन्दों के समान सात अश्व-गायत्री, बृहति, उष्णिक, जगति, त्रिष्टुप, अनुष्टुप और पंक्ति।

सप्तैधा–सात दीप्ति वाले अग्नि स्वरूप भगवान विष्णु।

समानर–ययाति पुत्र अनु के पुत्र। इनके पुत्र कालनर थे।

सभापर्व–महाभारत का एक प्रधान पर्व।

सम–[१] सब समय समस्त विकारों से रहित भगवान विष्णु। [२] धृतराष्ट का एक पुत्र।

समङ्गा–एक पुण्य नदी जिसमें स्नान करने से अष्टावक्र मुनि की वक्रता दूर हुई।

समन्त पञ्चक–क्षत्रिय मदान्ध होकर अधर्म के मार्ग पर चल कर अनेक अत्याचार करते थे। केकय राजाओं ने जमदग्नि महर्षि का खून किया था। इस बहाने से धर्म की स्थापना के लिये परशुराम ने पृथ्वी को इक्कीस बार निक्षत्रिय किया और उनके रक्त से कुरुक्षेत्र में खून की पांच नदियां बहाई। स्यमन्तपंचक कुरुक्षेत्र का एक पुण्यतीर्थ बना। दुर्योधन की मृत्यु यहां हुई थी।

समय–(१) हृदयाकाश में चक्रों का ध्यान कर उनकी पूजा करना। (२) वसिष्ठ तन्त्र, शुक तन्त्र, सनक तन्त्र, सनन्दन तन्त्र, सनतकुमार तन्त्र इनको भी समय कहते हैं।

समया–देवी का नाम।

समयज्ञ–समान रूप से यज्ञ प्राप्त होने वाले भगवान विष्णु।

समर–भरतवंश के राजा पृथुसेन के सौ पुत्रों में से एक।

समर्थ–मिथिला नरेश क्षेमधि के पुत्र। इनके पुत्र सत्यरथ थे।

समाधि–आत्मा परमात्मा में लय होने की अवस्था। मोहरूप दलदल से पार हो जाने के कारण इस लोक और परलोक के भोगों से सर्वथा विरक्त हुई बुद्धि का जो विशेषरूप से

सर्वथा रहित हो जाना और एकमात्र परमात्मा में ही स्थायी रूप से टिक जाना यही समाधि की अवस्था है। एक स्वच्छ एकान्त स्थान पर बैठकर प्राणायाम द्वारा श्वास की गति को सम कर मन और बुद्धि द्वारा इन्द्रियों को वाह्य संसार से खींचकर भगवान के स्थूल रूप पर, या अन्तःकरण में मौजूद भगवान के रूप पर ध्यान लगाने लगते जब ध्याता और ध्येय का अलग अस्तित्व मिट जाता है, दोनों एक दूसरे में विलीन होकर वह ध्येय रूप भी मिट जाता है, यह समाधि की अवस्था है।

समावर्त्त–संसार चक्र को भली भाँति घुमाने वाले भगवान विष्णु।

समावर्तन–वेदाध्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का घर वापस आना।

समितिञ्जय–[१] कृपाचार्य का एक विशेषण। ये बड़े ही वीर, धनुर्वेदाचार्य और विपक्षियों पर विजय प्राप्त करने में निपुण थे। इसलिये इनको समितिञ्जय की उपाधि मिली। [२] युद्ध में विजयी।

समिधा–यज्ञाग्नि के लिये उपयुक्त लड़कियाँ।

समीकरण–दर्शन शास्त्र की सांख्य पद्धति।

समीक्षा–दर्शन शास्त्र की मीमांसा पद्धति।

समीर–वायु, हवा।

समीरण–श्वास रूप से प्राणियों से चेष्टा कराने वाले भगवान।

समुद्रमंथन–दे: अमृतमंथन।

समुद्रसेन–कालेय नामक दैत्य पुनर्जन्म एक राजा जो अर्थतत्व विशारद और ज्ञानी थे। महाभारत युद्ध में पाण्डवों से मारे गये।

समूह–एक विश्वदेव।

सम्पाति–[१] जटायु का बड़ा भाई। प्राचीन काल में सूर्य मण्डल को देख कर सम्पाति और जटायु ऊपर की ओर उड़े। सूर्य के पास पहुँचने पर सूर्यताप से जटायु मूर्छित हो गया। भाई की दयनीय दशा देखकर भ्रातृस्नेह से सम्पाति ने उसको अपने पंखों से ढक दिया। उसके पंख जल गये और वह विन्ध्या पर्वत पर गिर पड़ा। वह पांच छः दिन बेहोश रहा। होश आने पर उस पर्वत के पास रहने वाले निशाकर नामक ऋषि के पास बहुत कठिनता से पहुँचे। सम्पाति की कष्ट कथा सुन कर ऋषि ने कहा कि त्रेतायुग में श्रीराम और लक्ष्मण सीता की खोज में आयेंगे। उनके मित्र सुग्रीव से भेजे वानर इधर आयेंगे। वानरों से मिलकर उनको सीता का पता बताने पर तुम्हारे पंख पुनः निकल आयेंगे। सम्पाति का पालन पोषण उसका पुत्र करता रहा और एक बार रावण के द्वारा एक सुन्दर रमणी के अपहरण की बात संपाति को बतायी। जब अंगद, हनुमान, जाम्बवान आदि वानर विन्ध्य पर्वत की गुफाओं में पहुँचे वहाँ उनकी मुलाकात सम्पाति से हुई जो उनको खाने को तैयार थे। उनसे अपने भाई जटायु की बातें सुनकर सम्पाति ने उनको दक्षिण समुद्र पार लंका में सीता का पता बता दिया। उस समय उसके पंख फिर से निकल आये। [२] रावण की माता कैकसी की बहन कुम्भीनसी का पुत्र एक राक्षस।

सम्भूति–[१] अंग वंश के राजा जयद्रथ की पत्नी। इनके पुत्र विजय थे [२] ब्रह्मा के पुत्र मरीचि की पत्नी। इनके पौर्णमास नामक पुत्र हुए।

सम्मर्दन–वसुदेव और देवकी के एक पुत्र।

सम्मोहन–कामदेव के पांच बाणों में से एक।

सम्राट–भरतवंश के राजा चित्ररथ और ऊर्णा के पुत्र। सम्राट और उत्कला के पुत्र मरीचि थे।

सरयु–[१] अग्नि [२] यम का नाम [३]वसन्त ऋतु।

सरमा–[१] देवों की कुतिया। वैदिक कथा के

अनुसार पणिसों ने एक बार पृथ्वी को चुरा कर पानी के अन्दर छिपा लिया । पृथ्वी का पता लगाने के लिये इन्द्र ने स्वर्ग से सरमा को भेजा और पणिसों को धमकाया कि इन्द्र उनको युद्ध भूमि में मार गिरायेंगे । तब से वे इन्द्र से बहुत डरते रहे । कहा जाता है कि सरमा दक्ष की पुत्री है और कश्यप ऋषि से विवाह हुआ जिससे सारमेयों का जन्म हुआ । [२] विभीषण की पत्नी, शैलूष नामक गन्धर्व की पुत्री ।

सरयु–एक पुण्य नदी जिस के तट पर अयोध्या स्थित है । श्रीरामचन्द्र के पाद स्पर्श से, उनका इसमें स्नान करने से यह अति पावन हुई । श्रीराम स्वयं कहते हैं पावन नदी सरयु मेरे लिए विशेष प्रिय है । गंगा नदी की एक शाखा है ।

सरसिज–कमल ।

सरस्वती–सत्वगुणों से सम्पन्न ब्रह्मा के मुह से निकली देवी जो वाणी और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है, ज्ञान स्वरूपिणी है । सब मनुष्यों की जिह्वा पर वाक्‌रूप से सरस्वती विद्यमान है । विद्वानों की जिह्वा पर सदैव रहती है । नदी रूप से भूमि में रहती है, एक रूप से ब्रह्मा में स्थित है । पुराणों में वाक् देवी सरस्वती का बड़ा महत्व है । सरस्वती की विकटता से ब्रह्मा से वर मांगते समय कुम्भकर्ण के मुह से निर्देवत्व के बदले निद्रत्व निकला । श्रीराम के युवराजाभिषेक पर देवताओं की प्रार्थना पर उनकी कार्य सिद्धि के लिये कुब्जा मन्थरा की जिह्वा पर बैठ कर राजतिलक में विघ्न डाला जिससे श्रीराम, सीता और लक्ष्मण वन चले गये और बाद में राक्षसों का निग्रह हुआ । सरस्वती ब्रह्मा की पत्नी भी मानी जाती है । [२] एक नदी का नाम । प्रयाग में त्रिवेणी में सरस्वती गुप्त रूप से बहती है । अधिकांश जगह सरस्वती की धारा अदृश्य रहती है । बदरीनाथ के आगे माना गांव के पास सरस्वती अलकनन्दा से मिलती है और उस संगम स्थान को केशव प्रयाग कहते हैं । [३] दुर्गा का नाम [४] बौद्धों की एक देवी ।

सारस्वती सागर संगम–सरस्वती जहां समुद्र से मिलती है ।

सरित्पति–समुद्र ।

सरित्सुत–भीष्म का विशेषण ।

सर्ग–सृष्टि । श्रीमद्‌भागवत का एक भाग जिसमें विभिन्न सृष्टियों की चर्चा की गई है ।

सर्प–(१) त्वष्टा का एक पुत्र (२) एकादशी रुद्रों में से एक ।

सर्पबलि–केरल में सर्पों की प्रीति के लिए की जाती एक पूजा । इस पूजा की खास विधियां होती हैं । सर्प की मूर्ति कैंकम 'कलम' में (जमीन पर) चावल, हल्दी, हरे पत्ते और कोयल आदि पीस कर बनाया जाता है । केरल की एक नीच जाति 'पुल्लुवर' का गान इसके लिए अनिवार्य है । खाण्डव दहन, कालिय मर्दन, कद्रू और विनता का झगड़ा आदि कथाओं के आधार पर इनके गीत होते हैं । ऐसा विश्वास है कि खाण्डव दहन के बाद समुद्र में पड़े तक्षक की रक्षा एक 'पुल्लुवन्' ने की थी । केरल में सर्वत्र सर्पों के मन्दिर और पूजा होती है ।

सर्पमालि–एक दिव्य महर्षि ।

सर्पारि–गरुड़, मोर, नेवला ।

सर्व–असत् और सत्, सबकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के स्थान भगवान विष्णु ।

सर्वकाम–सूर्यवंशी राजा प्रसिद्ध ऋतुपर्ण के पुत्र । इनके पुत्र सुदास थे ।

सर्वकामद–समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले भगवान विष्णु ।

सर्वकामदुघा–सुरभी की पुत्री जो अभीष्ट वस्तुओं को प्रदान करने वाली है, कामधेनु

का विशेषण ।

सर्वग–(१) कारण रूप से सर्वत्र व्याप्त रहने वाले महाविष्णु । (२) भीमसेन का एक पुत्र ।

सर्वज्ञ–सदा सर्वथा सब कुछ जाननेवाले भगवान ।

सर्वतश्चक्षु–समस्त वस्तुओं को सब दिशाओं में सदा सर्वदा देखने के शक्तिवाले भगवान विष्णु ।

सर्वतोमुख–महाविष्णु का विशेषण, सब ओर मुखवाले यानी जहाँ कहीं भी उनके भक्त भक्तिपूर्वक पत्र-पुष्पादि जो कुछ भी अर्पण करें उसे स्वीकार करने वाले ।

सर्वन्तुक–रैवत पर्वत के पास एक वन ।

सर्वदमन–दुष्यन्त पुत्र भरत के बचपन का नाम (दे शकुन्तला और दुष्यन्त)

सर्वमङ्गला–श्री पार्वती का नाम, सब का मगल करने वाली देवी ।

सर्वविजयी–भगवान विष्णु का नाम, सबको जीतने वाले ।

सर्वव्यापी–भगवान् विष्णु का नाम ।

सर्वसह–सब कुछ सहन करने की सामर्थ्य युक्त, अतिशय तितिक्षु ।

सर्वसहा–पृथ्वी, सब कुछ सहन करने की क्षमता रखने वाली ।

सर्वा–एक पुण्य नदी ।

सर्वात्मन्–सबके आत्मा स्वरूप भगवान विष्णु ।

सर्वासुनिलय–समस्त प्राणियों के आधार भगवान विष्णु ।

सवन–(१) स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत और बर्हिष्मती के एक पुत्र । सवन की पत्नी सुनाभ की पुत्री सुवेदा थी । इनके सात पुत्र हुए जो स्वायम्भुव मन्वन्तर के मरुत हुए (२) भृगु के सात पुत्रों में से एक । (३) शुद्धिपरक स्नान ।

सवर–शिव का नाम ।

सविकल्प–कर्ता और कर्म के अन्तर को पहचानने वाला, ज्ञाता और ज्ञेय के भेद को जानने वाला ।

सविता–(१) समस्त जगत को उत्पन्न करने वाले भगवान विष्णु । (२) कश्यप ऋषि और अदिति के बारह पुत्र द्वादशादित्यों में से एक । सविता की पत्नी प्रश्नी के सावित्री, व्याहृति और त्रयी नाम की तीन पुत्रियां और अग्निहोत्र, पशुसोम, चातुर्मास्य नामक पुत्र हुए ।

सवित्री–(१) गाय (२) माता ।

सव्य–अंगिरा के एक पुत्र । अंगिरा ने इन्द्र के समान एक पुत्र की आकांक्षा की । अपने समान कोई और न होने से इन्द्र ही उनका पुत्र होकर जन्में ।

सव्यसाची–अर्जुन का विशेषण । जो बायें हाथ से भी बाण चला सकता है उसे सव्यसाची कहते हैं ।

सह–(१) श्रीकृष्ण और लक्ष्मण के एक पुत्र । (२) एक अग्नि (३) भक्त जनों के अपराधों को सहन करने वाले भगवान विष्णु ।

सहदेव–(१) पाण्डवों में कनिष्ठ, सहदेव और नकुल जुडवा भाई थे जो मन्त्र के प्रभाव से माद्री देवी को अश्विनी कुमारों से उत्पन्न हुए थे, सौन्दर्य के आदर्श माने जाते हैं । पाण्डु की मृत्यु पर जब माद्री सती हुई अपने पुत्रों को कुन्ती को सौंप गई थी । कुन्ती के पुत्रों के साथ ये दोनों मिलकर पांच पाण्डव हो गये और अपने ज्येष्ट भाइयों के साथ ये भी कौरवों से अनेक अत्याचार झेले । सहदेव गुरुजन सेवा तत्पर थे । युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में वेद विधियों को जानने वाले सहदेव ने ही श्रीकृष्ण की अग्रय पूजा करने का उपदेश दिया था । अज्ञातवस के समय सहदेव विराट राजधानी में अरिष्टनेमि नाम से गोशालाध्यक्ष बने थे । उनके द्रौपदी से श्रुतकर्मा नामक

पुत्र हुए। सहदेव ने भाद्र कन्या विजया से विवाह किया और सुहोत्र नामक एक पुत्र हुआ। इन्होंने शकुनि का वध किया। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के बाद अपने भाइयों के साथ हिमालय की ओर गये। (२) पुरुरवा के पुत्र आयु के वंशज राजा हर्यवन के पुत्र। इनके पुत्र हीन थे। (३) इक्ष्वाकु वंश के राजा दिवाक के वीर पुत्र। इनके पुत्र बृहदश्व थे। (४) भरत वंश के राजा सुदास के पुत्र इनके पुत्र सोमक थे (५) एक महर्षि। (६) मगध के राजा जरासन्ध के पुत्र, श्रीकृष्ण के मित्र बने। इनके पुत्र सोमापि थे। (७) एक राक्षस जो धूम्राक्ष का पुत्र था, इसका पुत्र कृशाश्व था।

सहस्रकर–[१] सूर्य [२] बाणासुर ।

सहस्रकवच–एक दैत्य जिसके हजार कवच थे। उसके कवचों को काटे बिना कोई उसको मार नहीं सकता था। उसको वर मिला था कि उसका एक कवच वही काट सकता था जिसने हजार साल तपस्या की हो और उतना समय उससे युद्ध किया हो। नर–नारायण ऋषि एक ही भगवान के अंशावतार होने से दोनों एक ही हैं। इन्होंने बारी-बारी से तपस्या और युद्ध कर इनके सारे कवच काटे। सहस्र कवच का निग्रह कर ऋषियों ने देवताओं को सन्तुष्ट किया।

सहस्रकिरण–सूर्य का विशेषण ।

सहस्रधार–भगवान का श्रीचक्र ।

सहस्रपाद–भगवान विष्णु का विशेषण ।

सहस्रमुख–भगवान विष्णु का विशेषण ।

सहस्रशीर्ष–भगवान विष्णु का विशेषण ।

सहस्राक्ष–[१] भगवान विष्णु का विशेषण [२] इन्द्र का विशेषण ।

सहस्रार्चि–[१] अनन्त किरणों वाले भगवान [२] सूर्य ।

सहा–[१] पृथ्वी [२] एक देवस्त्री ।

सहाय–शिव का नाम ।

सहिष्णु–[१] समस्त द्वन्दों को सहन करने में समर्थ विष्णु भगवान। [२] प्रजापति पुलह और गति के तीन पुत्र कर्मश्रेष्ठ, वरीयान और सहिष्णु थे।

सह्य–भारत के प्रधान पर्वतों में से एक जो लवण समुद्र में स्थित है।

सांख्यदर्शन–हिन्दु दर्शनों में से एक जिसके प्रणेता कपिल महर्षि माने जाते हैं।

सांख्ययोग–सम्पूर्ण पदार्थ मृगतृष्णा के जल की भाँति अथवा स्वप्न की सृष्टि के समान मायामय है। इसलिये माया के कार्यरूप सम्पूर्ण गुण ही गुणों में वरते हैं। इस प्रकार समझ कर मन, इन्द्रिय, और शरीर के द्वारा होने वाले सभी कर्मों में कर्तापन के अभिमान से रहित होना, तथा सच्चिदानन्द वासुदेव के सिवा अन्य किसी के भी अस्तित्व का भाव न रहना–यह सांख्य योग या सांख्य निष्टा है। इसी को ज्ञान योग, कर्म–सन्यास आदि भी कहते हैं। सांख्य योग के अनुसार इस चराचर जगत में जो कुछ प्रतीत होता है ब्रह्म ही है। जैसे समुद्र में पड़े हुए बर्फ के ढेले के बाहर भीतर सब जगह जल ही जल है, तथा वह ढेला स्वयं भी जल रूप ही है वैसे समस्त चराचर भूतों के बाहर–भीतर एक मात्र परमात्मा ही परिपूर्ण है, समस्त भूतों के रूप में वे ही हैं। जो कुछ दृश्य जगत है उसे मायामय क्षणिक, नाशवान, समझना, सच्चितानन्द परमात्मा ही है, ऐसा समझते हुए मन बुद्धि को भी ब्रह्म में तद्रूप कर देना एवं उनसे एकीभाव स्थापित करना सांख्ययोग है। सब चराचर जगत ब्रह्म है, मैं भी ब्रह्म हूँ। इस प्रकार विचार कर सम्पूर्ण चराचर प्राणियों को अपना आत्मा समझना सांख्य योग है। इस प्रकार साधन करने वाले की दृष्टि में एक ब्रह्मा के सिवा दूसरा कुछ भी नहीं रहता।

सावर्तक–प्रलय काल के विनाशकारी मेघ ।
साकेत–अयोध्या का दूसरा नाम ।
साक्षातकार–प्रत्यक्ष ज्ञान, प्रत्यक्ष दर्शन ।
सागर–समुद्र । सगर महाराजा के पुत्रों ने महाराजा के अश्वमेध यज्ञ के अश्व को खोज में पृथ्वी को चारों तरफ से खोदा था । पीछे ये गड्ढे पानी से भर गये और सगर पुत्रों के बनाने से सागर कहलाने लगे ।
सागरमेखला–वह देवी जिनकी मेखला सागर है । अर्थात भूमिरूपा देवी ।
सागरालय–वरुण का नाम ।
सागरोहक–समुद्र का पुण्य जल ।
साग्निक–यज्ञाग्नि रखने वाला गृहस्थ ।
सांकृति–अत्रि वंश के एक महर्षि जिन्होंने अपने शिष्यों को निर्गुण ब्रह्म पर उपदेश दिया था ।
सात्विक–सत्व गुण प्रधान महाविष्णु ।
सात्यकि–इनका दूसरा नाम युयुधान था । ये यादव वंशज शिनि के पुत्र थे । ये भगवान श्रीकृष्ण के परम भक्त, अनगामि थे, बड़े ही बलवान और अतिरथी थे, अर्जुन के प्रिय शिष्य थे । ये महाभारत के युद्ध में न मरकर यादवों के पारस्परिक युद्ध में मारे गये ।
सात्वत–(१) यदुवंश के एक प्रसिद्ध राजा जो आयु के पुत्र थे। इनके भजमान, भजि, दिव्य, वृष्णि, देवावृध, अन्धक और महाभोज नामक सात पुत्र थे । (२) श्रीकृष्ण और बलराम का विशेषण ।
साधन चतुष्टय–मनस्वियों की जिज्ञासा के चार साधन है जिनकी सहायता से सत्यस्वरूप भगवान का ज्ञान होना है (१) नित्यानित्य-वस्तु विवेक अर्थात् ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है ऐसा निश्चय । (२) लौकिक एवं पारलौकिक सुख भोगों में वैराग्य (३) शम, दम, उपरति (वृत्ति का बाह्य विषयों का आश्रय न लेना), तितिक्षा (चिन्ता और शोक से रहित होकर बिना कोई प्रतिकार किए सब प्रकार के कष्टों को सहन करना), श्रद्धा और समाधान (अपनी बुद्धि को सब प्रकार शुद्ध ब्रह्म में ही सदा स्थिर रखना) और (४) मुमुक्षा (अहंकार से लेकर देहपर्यन्त जितने अज्ञान जनित बन्धन हैं, उनको अपने स्वरूप के ज्ञान के द्वारा त्यागने की इच्छा) ये साधन चतुष्टय है
साधना–एकाग्र मन से पूजा, व्रत आदि अनुष्ठान करना ।
साधु–(१) भक्तों के कार्य साधने वाले भगवान । (२) पुण्यात्मा, भद्र पुरुष ।
साध्य–(१) दक्षपुत्री साध्या और धर्मदेव के पुत्र एक देव गण (२) एक मन्त्र का नाम ।
साध्वी–पतिव्रता स्त्री ।
सानुक्रोश–दयालु, करुणाकर ।
सान्दीपनि–काश कुल में जन्मे उज्जैन के एक ब्राह्मण । श्रीकृष्ण और बलराम ने इनके गुरुकुल में रहकर गुरुसेवा कर अध्ययन किया था । महर्षि ने बालकों को चारों वेद, छेओं वेदांग, उपनिषद आदि मनुस्मृति, धर्मशास्त्र, मीमांसा, शस्त्र विद्या आदि सिखाये । गुरु दक्षिण में दोनों भाइयों ने प्रभास में खोये हुए गुरु पुत्र को यम की राजधानी से लाकर दिया । इन्ही दिनों सुदामा गुरुकुल में रहते थे और श्रीकृष्ण के बाल सखा बने ।
साम–(१) सामवेद स्वरूप भगवान विष्णु । (२) चतुरुपायों में से एक (साम, दाम, भेद, दण्ड) ।
सामग–(१) भगवान विष्णु का विशेषण (२) सामवेद का गायन करने वाले ब्राह्मण ।
सामदेव–चारो वेदों में से एक इन चारों वेदों मे से सामवेद अत्यन्त मधुर, संगीतमय तथा परमात्मा की अत्यन्त रमणीय स्तुतियों से युक्त है । अतः वेदों में इसकी प्रधानता है। इसलिये भगवान ने गीता में उसको अपना स्वरूप बतलाया है ।

सामीप्य–जिस साधक में भगवान के प्रति निष्काम और अखण्ड भक्ति उत्पन्न होती है उस साधक को सालोक्या, सामीप्य, सार्ष्टि और सायुज्य चार प्रकार की मुक्ति मिलती है। वैकुण्ठादि भगवान के लोकों को प्राप्त करना 'सालोक्य' मुक्ति है। हर समय भगवान के निकट रहना 'सामीप्य' है, भगवान के समान ऐश्वर्य लाभ करना 'सार्ष्टि' है और भगवान में लीन हो जाना 'सायुज्य' है।

सामुद्रिक–सामुद्रिक विद्या—शरीर के लक्षणों को देख कर शुभाशुभ फल बताना।

साम्पराय–परलोक प्राप्ति के उपाय।

साम्ब–(१) श्रीकृष्ण और जाम्बवती के दस पुत्रों में से ज्येष्ठ। साम्ब दुर्योधन की पुत्री सुन्दरी लक्षणा को स्वयंवर के मण्डप से छीन ले गये। लेकिन दुर्योधनादियों ने उनको पराजित कर बन्धन में डाल दिया। श्री बलराम ने हस्तिनापुर आकर दुर्योधन को धमकाया और हलाग्र से हस्तिनापुर को खींचने लगे। तब दुर्योधन ने उनकी शरण ली और साम्ब के साथ लक्षणा का विवाह कर दिया। यादव कुमारों ने साम्ब को ही स्त्री वेष में ऋषियों के सामने कर उसके गर्भस्थ शिशु के बारे में पूछा था और ऋषियों ने यादव कुल के नाश का शाप दिया था। साम्ब ने अर्जुन से धनुर्विद्या सीखी थी। ये एक महारथी थे। प्रभास में यादवों के पारस्परिक युद्ध में साम्ब भी मारे गये। (२) शिव का नाम।

सायण-एक वेदज्ञ मुनि जिन्होंने वेदों की दुर्ग्राह्यता को दूर करने के लिए उनकी व्याख्या की थी।

सायुज्य–देखिये सामीप्य।

सार–सत्, निचोड़।

सारङ्ग–हरिण, राजहंस, एक वाद्य यन्त्र।

सारण–(१) रावण का एक मन्त्री (२) वसुदेव और रोहिणी के पुत्र, बलभद्र के भाई (३) एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

सारमेय–(१) श्वफलक और गान्दिनी के एक पुत्र, अक्रूर के भाई (२) कश्यप ऋषि और सरमा के पुत्र।

सारस्वत–(१) दधीचि महर्षि और अलम्बुषा नाम की एक अपसरा के पुत्र जो एक ज्ञानी मुनि बने। (२) ब्राह्मण जाति का एक भेद (३) सरस्वती से सम्बन्धित।

सारूप्य–दे: सामीप्य।

सार्वभौम–[१] भरतवंश के राजा विदूरथ के पुत्र, इनके पुत्र जयसेन थे। [२] उत्तर दिशा का दिक्गज [३] चन्द्रवंश के राजा अहंयाति और कृतवीर की पुत्री भानुमती के एक पुत्र। इन्होंने केकय राजा सुनन्दा से विवाह किया था। [४] सावर्णि मन्वन्तर में देवगुह्य और सरस्वती के पुत्र सार्वभौम के नाम से भगवान जन्म लेकर वर्तमान मन्वन्तर के इन्द्र पुरन्दर से स्वर्ग सिंहासन छीन कर उस पर बलि को बिठायेंगे।

सार्ष्टि–दे: सामीप्य।

सालकटङ्का–एक राक्षसी जो विद्युकेश की पुत्री थी। इसका पुत्र सुकेशी था।

सालग्राम–विष्णुशिला, भगवान का आदर्श पत्थर जो विष्णुरूप माना जाता है। यह शिला से विष्णु की प्रतिमा बनायी जाती है। सालग्राम साधारणतया नेपाल की गण्डकी नदी के किनारे पाये जाते है। ये अनेक प्रकार के हैं। सालग्राम की पूजा श्रद्धा भक्ति से करने से मोक्ष मिलता है।

सालग्रामक्षेत्र–पुलह महर्षि का आश्रम, एक पुण्य क्षेत्र।

सालग्रामि–नेपाल में गण्डकी नदी के निर्गम स्थान के पास एक पुण्य स्थल।

सालोक्य—दे: सामीप्य।

साल्व–[१] एक क्षत्रिय राजा जिनके पास विशिष्ट सौभ नामक एक विमान था। ये चेदी राजा शिशुपाल के मित्र थे। द्वारका पर

आक्रमण करने पर जो युद्ध हुआ उसमें श्रीकृष्ण से मारे गये। [२] व्युषिताश्व की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी भद्रा पति के साथ सती हुई। राजा निस्सन्तान थे और रानी पुत्र की उत्कट इच्छा रखती थी। अग्नि में से उनके तीन पुत्र साल्व राजा और चार माद्रेय पैदा हुए। [३] एक म्लेच्छ राजा जिसने दुर्योधन की सहायता की थी। [४] एक राक्षस का नाम जिसको महाविष्णु ने मारा।

सावन–(१) एक मास का नाम (२) वह संस्कार जिसके द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति दी जाती है।

सावर्णि–आठवें मनु जो विवस्वान और छाया के पुत्र थे। निर्मोक, विरजाक्ष आदि इनके पुत्र थे; सुतपा, विरज, अमृतप्रभ आदि देव गण हैं, विरोचन के पुत्र (भक्त प्रह्लाद के पौत्र) बलि इन्द्र; गालव दीप्तिमान, परशुराम, अश्वत्थामा, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, ऋष्यशृङ्ग और वेदव्यास सप्तर्षि होंगे। देवगुह्य और सरस्वती के पुत्र सार्वभौम के नाम से भगवान जन्म लेंगे। वर्तमान मन्वन्तर के इन्द्र पुरन्दर से स्वर्ग का सिंहासन छीन कर भगवान बलि को उस पर प्रतिष्ठित करेंगे।

सावित्र–[१] सुमेर पर्वत का एक उन्नत शिखर जो रत्नों से अलकृत है [२] शिव का विशेषण [३] सूर्य। [४] यज्ञोपवीत संस्कार [५] एकादश रुद्रों में से एक [६] अष्टवसुओं में से एक।

सावित्र–ऋगवेद का एक प्रसिद्ध मन्त्र जिसको गायत्री मन्त्र भी कहते हैं।

सावित्री–[१] सूर्य की पुत्री [२] पार्वती का विशेषण [३] पुष्करतीर्थ की अधिष्ठात्री देवी। [४] गायत्री मन्त्र की अधिष्ठात्री देवी। [५] मद्रदेश के राजा अश्वपति की पुत्री जो पतिव्रताओं की शिरोमणि मानी जाती है। साल्व देश के राजा सत्यवान की पत्नी। निस्सन्तान होने के कारण राज दम्पतियों ने सावित्री देवी की पूजा की। जिससे उनकी एक पुत्री हुई और उसका नाम सावित्री रखा गया। युवावस्था को प्राप्त सावित्री लक्ष्मी देवी के प्रतिरूप के समान सर्वगुण युक्त और रूपवती हो गई। इसलिये योग्य वर न मिलने के कारण, पिता के आदेशानुसार वह स्वयं वृद्ध मन्त्रियों के साथ पति की खोज में गई। पिता के पास वापस आने पर वहाँ नारद महर्षि मौजूद थे। पिता के पूछने पर सावित्री ने बताया कि मैंने साल्व राजा मद्रसेन के पुत्र सत्यवान को अपना पति चुना जो आजकल वन में रहते है। उस समय नारद महर्षि ने कहा कि सब गुणों से सत्यवान अनुरूप वर है, लेकिन एक बड़ा दोष है कि सत्यवान एक वर्ष के पूरे होने पर मर जायेंगे। यह सुनकर राजा ने सावित्री को रोकना चाहा, किन्तु सावित्री ने कहा कि मन मे एक बार किसी को पति मानने के बाद दूसरी की पत्नी नहीं बनूँगी। सावित्री की इच्छा के अनुसार उनका विवाह हो गया। सावित्री वन में रहने लगी। एक वर्ष समाप्त होने का दिन आया। सावित्री तीन दिन से व्रत रख रही थी। सत्यवान जब लकड़ी लाने के लिए वन जाने लगे, सावित्री भी साथ गयी। वहाँ लकड़ी काटते-काटते सत्यवान का सिर चकरा गया और सावित्री की गोद में लेट गये। उस समय यमराज सत्यवान को लेने आये। कालपाश से बाँधकर जब यम सत्यवान की आत्मा को ले जाने लगे तब सावित्री भी पीछे गई। यम के अनेक प्रकार से समझाने पर भी, रास्ते की कठिनाइयों की चिन्ता न कर, सावित्री पीछे हो गई, वापस नहीं लौटी। उसको लौटाने के लिये यमराज ने सावित्री

को अनेक वर दिये और अन्तिम वर दिया कि सावित्री के सौ पुत्र होंगे। पति के बिना सावित्री के पुत्र नहीं होंगे, इस तर्क से हार कर, सावित्री की पतिभक्ति से सन्तुष्ट यमराज ने सत्यवान का जीवन वापस दिया। सत्यवान निद्रा से जैसे जाग उठे। यम के वरप्रसाद से साल्व राजा की दृष्टि और राज्य वापस मिला, अश्वपति के पुत्र हुए और सब सुख से रहे। (५) प्लक्षद्वीप की एक नदी।

साष्टांग–हाथ, चरण, घुटने, वक्षःस्थल, सिर, नेत्र, मन और वाणी—इन आठ अंगों से पृथ्वी पर दण्डवत् लेट कर किया गया प्रणाम।

साक्षि–भगवान विष्णु का विशेषण। भगवान सब जीवों को और उनके शुभाशुभ सब कर्मों को जानने और देखने वाले हैं। भूत, वर्तमान और भविष्य में कहीं भी, किसी भी प्रकार का ऐसा कोई कर्म नहीं है। जिसे भगवान न देखते हों, उनके जैसा सर्वज्ञ अन्य कोई भी नहीं है। वे सर्वज्ञता की सीमा हैं, इसलिये साक्षि कहलाते हैं।

सिंह–(१) दुष्टों का विनाश करने वाले भगवान (२) कश्यप प्रजापति और हरी की सन्तान (३) श्रीकृष्ण और लक्ष्मणा का एक पुत्र।

सिंहकेतु–पाण्डवों के मित्र एक राजा जो कुरुक्षेत्र में कर्ण से मारे गये।

सिंहपुर–उत्तर भारत का एक पर्वतीय देश जो प्राचीन काल में प्रसिद्ध था।

सिंहल द्वीप–लंका का नाम, आधुनिक सिलोन। सिंहल देश के लोग भारत युद्ध में कौरवों के पक्ष में थे।

सिंहसेन–कार्तवीरार्जुन के सेना नायक।

सिंहिका–(१) हिरण्यकशिपु की पुत्री, प्रह्लाद की बहन, विप्रचित्ति की पत्नी। इसका पुत्र राहु है जिसने देवता का रूप धारण कर अमृतपान किया, जिसका शिर भगवान ने चक्र से काटा था और जिसने अमरत्व पाया। (२) सिंहिका नाम की एक घोर राक्षसी जो सदा जल में रह कर आकाश में जाते हुए जीवों को पकड़ कर उन्हें खींच लेती थी और खाया करती थी। लंका की ओर समुद्र लांघते समय उससे पकड़े जाने पर हनुमान ने बड़े विकराल रूप और स्थूल शरीर वाली सिंहिका राक्षसी को देखा। हनुमान ने जल में कूद कर लातों से उसे मार डाला।

सिंहिका पुत्र–राहु का विशेषण।

सिद्ध–(१) एक प्रकार के अर्ध दिव्य प्राणी जो जन्म से ही अमानुषिक शक्ति रखते हैं, जो पवित्र और पुण्यात्मा है। इनको आठों सिद्धियां प्राप्त हैं। (२) सन्त, ऋषि। (३) नित्यसिद्ध भगवान, स्वभाव से ही समस्त सिद्धियों से युक्त।

सिद्धगंगा–आकाश गंगा।

सिद्धयोनि–शिव का विशेषण।

सिद्धसङ्कल्प–जिसने अपना अभीष्ट सिद्ध कर लिया हो।

सिद्धार्थ–(१) शिव का नाम (२) भगवान् बुद्ध का नाम (३) क्रोधवश नामक असुर का पुनर्जन्म एक राजा (४) स्कन्द देव का एक योद्धा।

सिद्धासन–धर्म साधन में विशेष प्रकार की बैठने की स्थिति।

सिद्धाश्रम–वामनावतार लेकर भगवान ने तीसरा कदम राजा बलि के सिर पर रखा और बलि सुतल चले गये। जहां यह घटना हुई उसको सिद्धाश्रम कहते हैं।

सिद्धि–(१) सब के फलस्वरूप भगवान् (२) दक्ष प्रजापति की पुत्री धर्मदेव की पत्नी (३) एक देवी। कहा जाता है कि इनका पुनर्जन्म था कुन्ती देवी का जन्म। (४) वीर नामक अग्नि और सरयू का पुत्र।

सिद्धेश्वरी–देवी का नाम।

सिनीवाली–अंगिरा और श्रद्धा की एक पुत्री। इनके सिनीवाली, कूहू, राका, नाम की चार पुत्रियां थीं। सिनीवाली कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की अधिष्ठात्री देवी है, कुहू पचदशी की, राका पौर्णमासी की और अनुमति शुक्लपक्ष की चतुर्दशी की। शिव अपने भाल प्रदेश मे शिनीवाली को धारण करते हैं, इसलिए इसका रुद्रसुता नाम भी है।

सिन्धु–(१) भारत की एक प्रसिद्ध नदी। यह आकाश गंगा की शाखा मानी जाती है। सागर पुत्रों के उद्धार के लिए तपस्या कर राजा भगीरथ जब स्वर्गंगा को भूमि मे लाये उसकी तीन धाराएँ ह्लादिनी, पावनी और नलिनी पूर्व की ओर वहीं, सुचक्षू, सीता और सिन्धु पश्चिम की ओर वही और भागीरथी राजा भगीरथ के पीछे पाताल तक गई। (२) पुराण प्रसिद्ध एक देश जिसके राजा दुर्योधन के मित्र जयद्रथ थे।

सिन्धुज–चन्द्रमा।

सिन्धुद्वीप–राजा भगीरथ के वंश के एक राजा इनके पुत्र अयुतायु थे।

सिन्धुप्रभव–सिन्धु नदी का उद्गम स्थान एक पुण्य स्थल। यहां सिद्ध गन्धर्व रहते हैं।

सिन्धुर–हाथी।

सिन्धु सौवीर–भारत के उत्तर पश्चिम का देश। यहां के राजा रहूगण ने जड़ भरत से सांख्य योग का ज्ञान प्राप्त किया था (दे: भरत रहूगण)।

सिप्र–शिप्रा नदी उज्जैयिनी के निकट एक पुण्य नदी।

सीता–अयोध्या के महाराजा श्रीराम की पत्नी, मिथिला के जनक महाराजा सीरध्वज की पुत्री। लक्ष्मी देवी का अवतार मानी जाती है। जनक महाराजा को सीता यज्ञभूमि से मिली थी। विवाह प्राय आने पर योग्य वर को प्राप्त करने की इच्छा से जनक ने शपथ किया था कि सीता का विवाह उस वीर से करूंगा जो महल मे रखे शैव चाप पर बाण चढ़ायेगा। रावण आदि अनेकों पराक्रमी राजाओं ने कोशिश की, किन्तु शैव चाप को हिला न सके। जनपद में राक्षसों का नाश कर विश्वामित्र के साथ अयोध्या के राजकुमार श्रीराम और लक्ष्मण जनक पुर मे आये। श्रीरामचन्द्र का रूप सौन्दर्य और गुण देख कर राजा से लेकर सभी जनक वासी यही चाहते थे कि सीता का विवाह श्रीराम से हो। गुरुजनों की आज्ञा पाकर जब श्रीराम ने शैव चाप उठाकर उसकी डोर खींची तब चाप टूट गया। अयोध्या से महाराजा दशरथ, भरत और शत्रुघ्न आये। सीता का विवाह हो गया। अयोध्या आकर कुछ साल सुख भोग किया। श्रीराम के राज्याभिषेक मे विघ्न पड़ने से सीता श्रीराम और लक्ष्मण के साथ चौदह साल का वनवास करने गयी। वहां सीता को अनेक कठिनाइयां सहनी पड़ीं, किन्तु पति शुश्रूषा मे वे उन कष्टों को धैर्य के साथ सहन कर सकी। अत्रि महर्षि की पत्नी अनसूया ने सीता की पतिभक्ति देखकर दिव्य वस्त्राभूषण दिए। पचवटी में रावण ने कपट सन्यासी का वेष धारण कर सीता का हरण किया। रास्ते में शोकार्त सीता ने अपने आभूषण उतार कर एक कपड़े में बांध कर नीचे फेंका और वह गठरी ऋष्यमूक पर बैठे सुग्रीव, हनुमान आदि वानरों को मिली। लंका में पति का विरह दुःख, रावण से यातना, यह सब सहन करना पड़ा। रावण की मृत्यु पर अग्नि परीक्षा दी गई और अग्नि से सीता परिशुद्ध होकर निकली। अयोध्या वापस आने के कुछ समय बाद लोकापवाद के कारण श्रीराम ने गर्भिणी सीता का परित्याग किया। वाल्मीकि ने देवी की रक्षा की और उनके आश्रम में लवकुशों का जन्म

हुआ । यहाँ भी सीता पति के विरह दुःख से दुःखी रही । श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ में वाल्मीकि के साथ गयी और दूसरी वार परीक्षा देने को तैयार होते समय पृथ्वी के फट जाने पर सीता उसी में समा गयी । सीता ने अपने जीवन में अधिक दुःख ही भोगा । इनके मैथिली, जानकी, वैदेही, भूमिजा आदि नाम हैं । (दे: श्रीराम, लव, कुश, लक्ष्मण, रावण) (२) एक नदी ।

सातापति–श्री रामचन्द्र ।

सीप–नांव की आकृति का यज्ञ पात्र ।

सीर–सूर्य, हल ।

सीरध्वज–जनक महाराजा, सीता के पिता ।

सीरपाणि—वलराम का विशेषण ।

सीरी–वलराम का विशेषण ।

सुकक्ष–द्वारका के पश्चिम में स्थित एक पर्वत ।

सुकन्या–महाराजा शर्याति की पुत्री, च्यवन महर्षि की पत्नी । सुकन्या का विवाह प्रसिद्ध च्यवन महर्षि के साथ हुआ जो वृद्ध और अन्धे थे । सुकन्या ने अनजाने में वाल्मीक से ढके मुनि की आंखें कीड़े के भ्रम से फोड ली थीं, इसलिये उनकी सेवा करने के लिए उनकी पत्नी वनी । सुकन्या ने क्रोधी मुनि की अनेक काल सेवा की । एक वार अश्विनीकुमार वहां आए । और उनकी शक्ति से एक सरोवर में स्नान करने पर महर्षि एक सुन्दर स्वस्थ युवक हो गए । च्यवन ऋषि ने अश्विनी कुमारों को सोमपान कराने की प्रतिज्ञा की, जो वद्य होने से उनको निषिद्ध था । शर्याति एक वार च्यवनाश्रम में आए और अपनी पुत्री को एक सुन्दर युवक की सेवा करते देख कर उसके चारित्र पर शंका कर उसकी भर्त्सना करने लगे । तव सुकन्या ने सव समाचार वताया । अपनी पुत्री की चारित्र शुद्धि पर वे अति प्रसन्न हुए और महर्षि के इच्छानुसार यज्ञ किया जिसमें अश्विनीकुमारों को सोमपान कराया । (२) मातरिश्व मुनि की पत्नी, इनके पुत्र मङ्कण मुनि थे ।

सुकुमार–(१) चन्द्र वंश के राजा धृष्टकेतु के पुत्र इनके पुत्र वीतिहोत्र थे । (२) तक्षकवंश का एक नाग । (३) पुलिन्दों की राजधानी (४) शाकद्वीप का एक प्राचीन देश । (५) प्रसिद्ध संस्कृत के कवि जिनकी गुरुभक्ति अति प्रसिद्ध है । भूल से गुरुकी हत्या करने कोतैयार सुकुमार गुरु के मुंह अपनी प्रशंसा सुनकर पश्चाताप की ज्वाला में जलने लगे । गुरुवध का प्रायश्चित्त करने के लिये जलती हुई अग्नि में खड़े होकर तिल तिल कर जल मरे । अग्नि में खड़े होकर इन्होंने भगवान की स्तुति करते 'श्रीकृष्ण विलास' नामक काव्य रचा जिसका वारहवां सर्ग पूर्ण होने से पहले उनकी मृत्यु हुई ।

सुकुमारी–(१) शाकद्वीप की एक नदी (२) सृञ्जय नामक राजा की पुत्री ।

सुकृत–(१) धर्मात्मा, गुण सम्पन्न, पवित्रात्मा (२) धार्मिक गुण ।

सुकृति–जन्म-जन्मान्तर से शभ कर्म करते-करते जिनका स्वभाव सुधर कर शुभकर्मशील वन गया है, और पूर्व संस्कारों के वल से, अथवा सतसंग के प्रभाव जो इस जन्म में भी भगवदाज्ञानुसार सुकर्म ही करते हैं, उन शुभ कर्म वालों को सुकृति कहते हैं ।

सुकेतनु–सोमवंश के राजा सुनीथ के पुत्र, धर्मकेतु इनके पुत्र थे ।

सुकेतु–(१) जनक वंश के राजा नन्दिवर्धन के पुत्र, इनके पुत्र देवरात थे (२) पूरुवंश में भरत के एक पुत्र जो वितथ के नाम से प्रसिद्ध हुए । (३) शिशुपाल के एक पुत्र जो कुरुक्षेत्र में द्रोणाचार्य से मारे गये । (४) ताटका का पिता, गन्धर्व राज सुरक्षक का पिता था ।

सुकेश–विद्युत्केश और सालकटंका का पुत्र एक राक्षस । जन्मते ही माता से उपेक्षित शिशु

रोने लगा। उस समय उधर से श्री पार्वती और महादेव जा रहे थे। शिशु को रोते देख कर पार्वती ने उसको आशीर्वाद दिया कि राक्षस बच्चा जन्मते ही मातृसमान बड़ा होगा। शिवजी ने उसको अमरत्व और आकाश गामी एक पुर दिया। राक्षस होने पर भी बड़े धर्मनिष्ठ भक्त थे। मागधारण्य के ऋषियों से तत्वोपदेश लिया और पवित्र जीवन स्वयं बिताते थे और दूसरे राक्षसों को भी धर्ममार्ग पर ले जाते थे।

सुकेशी–(१) एक अपसरा (२) विराट राजा की पत्नी।

सुक्रतु–अग्नि, वरुण, शिव, इन्द्र, आदि का विशेषण।

सुक्षत्र–पाण्डवों का मित्र एक योद्धा।

सुखद–भक्तों को दर्शन रूप परम सुख देनेवाले भगवान विष्णु।

सुखप्रदा–सुख देनेवाली देवी।

सुखीनल–जनमेजय के वंशज नृचक्षु के पुत्र। इनके पुत्र परिप्लव थे।

सुगत–महात्मा बुद्ध का नाम।

सुगति–ऋषभ देव के पुत्र भरत वंशज विख्यात राजा गय और गयन्ती के पुत्र।

सुग्रीव–[१] श्रीकृष्ण के रथ में बंधे चार घोड़ों में से एक सुग्रीव, मेघपुष्प, वलाहक और दारुक। [२] वानर राज वालि के भाई, स्त्री रूप अरुण और सूर्य के पुत्र। इनका पालन पहले गौतम के आश्रम में हुआ। बाद में किष्किन्धा के ऋक्षराजा ने पुत्रवत् पाला। वालि ने सुग्रीव को राज्य से निकाला और वालि के डर से हनुमान आदि मन्त्रियों के साथ सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे जहाँ उनकी मुलाकात श्रीराम और लक्ष्मण से हुई। श्रीराम की सहायता से वालि का वध हुआ और सुग्रीव को किष्किन्धा राज्य और पत्नी रुमा मिली। अपने वचन के अनुसार सीता की खोज करने सुग्रीव ने अनेकों वानर सेनाओं को पृथ्वी की चारों दिशाओं की ओर भेजा। हनुमान ने लंका में सीता का पता लगाया। राम-रावण युद्ध में सुग्रीव वीरता से राक्षसों से लड़े और अनेक राक्षसों का वध किया। श्रीराम के साथ सुग्रीव भी अयोध्या गये और अभिषेक होने तक वहाँ रह कर श्रीराम की सेवा की। इसके बाद किष्किन्धा लौट गये। [दे: वालि, श्रीराम, दुन्दुभि] [२] एक असुर जो सुम्भ का दूत बनकर देवी के पास गया था और उनसे मारा गया था। [३] हंस।

सुघोष–पाण्डवों मे नकुल का शंख।

सुचन्द्र–[१] इक्ष्वाकुवंश के राजा हेमचन्द्र के पुत्र। इनके पुत्र धूम्रश्व थे। [२] कश्यप ऋषि और प्राधा के पुत्र एक गन्धर्व [३] सिंहिका का पुत्र एक असुर।

सुचारु–[१] श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के दस पुत्रों में से एक [२] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सुचित्र–[१] पाण्डवों के मित्र एक राजा जो द्रोणाचार्य से मारे गये। [२] एक सर्प।

सुचिरोषित–दशरथ महाराजा के एक मन्त्री।

सुचीरा–श्वफल्क और गान्दिनी की पुत्री।

सुचेत–गृत्समद के पुत्र, इनके वर्चा नामक एक पुत्र थे।

सुतनु-आहुक अथवा उग्रसेन की पुत्री, अक्रूर की पत्नी।

सुतन्तु–सुन्दर विस्तृत जगतरूप तन्तुवाले भगवान विष्णु।

सुतपा–[१] बदरिकाश्रम में नर-नारायण रूप से सुन्दर तप करने वाले भगवान [२] वसिष्ठ और ऊर्जा के एक पुत्र [३] भृगुवंश के एक मुनि। इनके पुत्र उग्रतपा थे जो पतिव्रता शीलावती के पति थे। [४] इक्ष्वाकुवंश के अन्तरिक्ष के पुत्र। इनके पुत्र अभित्रजित थे। [५] सावर्णि मन्वन्तर के एक देवगण। [६] अनुवंशज हेम के पुत्र। इनके पुत्र वलि थे।

सुतल–वितल के नीचे सुतल है, सात अधोलोकों

में से एक। यहाँ उदार कीर्ति, पुण्यश्लोक विरोचन पुत्र राजा बलि वामनरूप भगवान् से हृतश्री कर भेजे गये। इस सुतल में इन्द्र के भी मन में ईर्ष्या पैदा करने वाले धन, वैभव, समृद्धि और सन्तोष है और जहाँ बलि यज्ञ पूजादियों से भगवान की पूजा करते हैं।

सुतीक्ष्ण–महर्षि सुतीक्ष्ण दण्डकारण्य में रहते थे। ये अगस्त्य मुनि के शिष्य थे। ये बड़े तपस्वी, तेजस्वी और भक्त थे। भगवान श्री रामचन्द्र जी के अनन्य भक्त थे। श्री रघुनाथ जी और जगज्जननी सीता देवी के आगमन का समाचार पाकर भक्ति में ये बेसुध से हो गये। मुनि का अत्यन्त प्रेम देख कर भगवान मुनि के हृदय में प्रकट हो गये। हृदय में भगवान के दर्शन पाकर मुनि रास्ते के बीच ही अचल होकर बैठ गये। हर्ष के मारे उनका शरीर पुलकित हो गया। श्रीरामचन्द्र जी के जगाने पर भी नहीं जागे। जब भगवान ने अपना रूप उनके हृदय से हटाया वे छटपटाये। आँखें खोलते ही सीता लक्ष्मण समेत अपने आराध्य देव को सामने पाकर वे धन्य हो गये।

सुदक्षिण–(१) पौण्ड्रक वासुदेव के पुत्र। श्री कृष्ण ने पौण्ड्रक का वध किया था और वह कटा सिर काशी राजा की राजधानी में गिर पड़ा। पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये सुदक्षिण ने शिव की तपस्या की जिनके प्रसाद से आभिचाराग्नि ने कृत्या निकली; श्रीकृष्ण के वध के लिये यह कृत्या भेजी गई। लेकिन भगवान के सुदर्शन चक्र ने केवल कृत्या का ही नाश किया, किन्तु काशी में जाकर सुदक्षिण का भी वध किया (२) काम्बोज देश के राजा, कौरवों के मित्र थे, अर्जुन से मारे गये।

सुदक्षिणा–दिलीप महाराजा की पत्नी, इनके पुत्र थे महाराजा रघु।

सुदर्शन–(१) महाविष्णु का चक्रायुध। सूर्य के तेज को कम करने के लिये विश्वकर्मा ने सूर्य को रगड़ा। उसमें से निकले तेज के कणों से विश्वकर्मा ने विष्णु भगवान का चक्रायुध बनाया था। यह अति उज्ज्वल आयुध है और भगवान् ने अनेक दुष्टों और असुरों का वध किया है। (२) एक विद्याधर जिसने अप्सराओं के साथ क्रीड़ा करते समय ऋषि अंगिरा को देखकर उनका मान नहीं किया। लेकिन अवहेलना की। अंगिरा के शाप से सुदर्शन एक सांप बना। एक बार गोपों और अपने पुत्रों के साथ नन्दगोप देवी का दर्शन करने अम्बिका वन में गये। वहाँ इस सांप ने नन्द गोप का पैर काटा और गोपों के मारने पर भी नहीं छोड़ा। श्रीकृष्ण ने आकर उसको एक अँगुली से उठाकर हटाया। श्रीकृष्ण के स्पर्श से विद्याधर को मोक्ष मिला और विद्याधर लोक गये। (३) कोसल के राजा ध्रुवसन्धि के पुत्र। इनके पुत्र अग्निवर्ण थे। (४) ऋषभदेव और पञ्चजनी के एक पुत्र (५) प्राचीन भारत के राजा (६) अग्नि और सुदर्शना के पुत्र इनकी पत्नी ओघवती थी। पातिव्रत्य के कारण धर्मदेव के अनुग्रह से ओघवती का आधा शरीर ओघवती नाम की नदी बन गई और शेष आधा शरीर पति के आत्मा में लय हो गया। (७) भक्तों को सुगमता से दर्शन देने वाले भगवान विष्णु।

सुदर्शना–इक्ष्वाकुवंश की राजकुमारी जो अग्नि की पत्नी बनी।

सुदामा–भगवान श्रीकृष्ण के सखा, एक ब्राह्मण जो बाल्यकाल में श्रीकृष्ण और बलराम के साथ सान्दीपनि के गुरुकुल में रहते थे। वे ब्रह्मवित्त, विरक्त, प्रशान्त और जितेन्द्रिय थे। दरिद्र होने पर भी यदृच्छया जो कुछ मिलता था उससे सन्तुष्ट रहते थे। अपने पुत्रों की दयनीय अवस्था देखकर विवश होकर सुदामा

की पतिव्रता पत्नी सुशीला ने एक दिन पति से कहा कि ब्रह्मण्य, शरेण्य, आपके बाल्यसखा भगवान श्रीकृष्ण जगत्पति है, हमारी सहायता करेंगे। इस बहाने से भगवान के दर्शन करने सुदामा पत्नी के दिये हुए चार मुठ्ठी पृथुक तण्डुलों को लेकर भगवान की चिन्ता में मग्न द्वारका पहुँचे। अपने बाल्यकाल के सखा को देख कर दरिद्र और कुचैले वस्त्रों में होने पर भी उनके प्रेम और भक्ति के दास बन कर भगवान ने उनका आलिङ्गन किया और रुक्मिणी समेत होकर सुदामा की पाद सेवा और सत्कार किया। सुदामा भगवान के साथ बाल्यकाल की घटनाओं को याद कर उस दिन वहाँ रहे। भगवान सुदामा से पूछा कि आप गृहस्थ है, मेरे लिये क्या लाये है। सुदामा अपनी बगल मे फटे वस्त्र में बांधे तण्डुल लक्ष्मीपति को देने मे शरमा रहे थे। किन्तु भगवान ने उसको देख लिया और छीन कर एक मुठ्ठी खा ली। दूसरी मुठ्ठी लेते समय रुक्मिणी ने रोक लिया। सुदामा ने न अपनी अवस्था का परिचय भगवान को दिया, न भगवान ने पूछा। लौटते समय भगवान की चिन्ता में मग्न उन्होंने अपने को एक बड़ी अट्टालिका के सामने देखा और अन्दर से सखियों के साथ सुसज्जित सर्वाभरण भूषिता अपनी पत्नी को देखा। भगवान की माया पर आश्चर्य हुआ। विभूतियों के बीच भी सुदामा निस्पृह रहे और भगवान की चिन्ता में रहे। सन्दीपनि मुनि के पास रहते समय एक दिन श्रीकृष्ण और सुदामा गुरु-पत्नी के लिये ईन्धन लाने गये और वन में रास्ता खो जाने से उस तूफानी रात में वन में ही रहे। घर लौटने पर थके बालकों को गुरुपत्नी ने तण्डुल दिये थे, भूख से विवश सुदामा ने श्रीकृष्ण को दिये बिना वह खा लिया जिसके फलस्वरूप वे दरिद्र बने। अब तण्डुल श्रीकृष्ण को खिलाने से सम्पत्ति और वैभव मिला। (२) दशार्ण के राजा जिनकी दो पुत्रियाँ थीं। एक विदर्भ राजा भीम की पत्नी बनी और दूसरी का विवाह चेदी के राजा वीरबाहु से हुआ। (३) एक पुराण प्रसिद्ध नदी (४) एक गोप।

सुदामिनी–यादव वंश के वृक की पत्नी। इनके पुत्र सुमित्र, अर्जुनपाल आदि थे।

सुदास(१) दुष्यन्त पुत्र भरत वंश के बृहद्रथ के पुत्र। इनके पुत्र शतानीक थे। (२) कोसल के राजा प्रसिद्ध ऋतुपर्ण के पौत्र। इनके पुत्र सौदास थे।

सुदेव–(१) भगवान् यज्ञ और दक्षिणा के बारह पुत्रों (जो तुषित नाम से प्रसिद्ध है) में से एक। (२) विदर्भ राज्य के ब्राह्मण जो दमयन्ती को खोज कर लाये थे। (३) काशी राजा हर्यश्व के पुत्र जो अति तेजस्वी और पराक्रमी थे।

सुदेवा–दशार्ह महाराजा की पुत्री जो पुरुवंशज विकुण्ठ की पत्नी थी। इनके पुत्र थे अजमीढ़ (२) एक अंगराजकुमारी (३) मनु पुत्र इक्ष्वाकु की पत्नी जो लक्ष्मी देवी की अंश-संभवा मानी जाती है। सुदेवा ने अपने एक दिन का पुण्य देकर एक सूकरी का उद्धार किया था।

सुदेष्ण–(१) श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के एक पुत्र (२) एक प्राचीन जनपद।

सुदेष्णा–विराट राजा की पत्नी, केकय राज-कुमारी। इनके पुत्र उत्तर और पुत्री उत्तरा थी जो अर्जुन पुत्र अभिमन्यु की पत्नी बनी।

सुद्यु–ययाति के वंशज चारुपाद के पुत्र। इनके पुत्र बहुगव थे।

सुद्युम्न–(१) वैवस्वत मनु के पुत्र जो जन्म के समय इला नाम की कन्या थी और भगवान विष्णु की कृपा से पुरुष बने। (दे: इला, बुद्ध, सोम) (२) चाक्षुष मनु और नड्वला

के एक पुत्र ।

सुधनु—पुरुवंश के प्रसिद्ध राजा कुरु के पुत्र ।

सुधन्वा—(१) पुरुवंश के प्रसिद्ध राजा कुरु के एक पुत्र । कुरु के सुधन्वा, सुधनु, परीक्षित, निषदाश्व नाम के चार पुत्र थे । (२) अतिशय सुन्दर शार्ङ्गधनुष धारण करने वाले महाविष्णु । (३) अंगिरा के पुत्र एक मुनि । (४) पांचाल राजा द्रुपद के पुत्र जिन्होंने पाण्डवपक्ष से युद्ध किया और द्रोणाचार्य से मारे गये ।

सुधर्मा—(१) देवों की सभा । द्वारका के निर्माण के बाद उसकी शोभा बढ़ाने के लिये इन्द्र ने सुधर्मा को द्वारका भेज दिया । श्रीकृष्ण राज कार्य के लिए इस सभा में बैठा करते थे । यह एक योजन लम्बी और एक योजन चौड़ी है । (२) एक दाशार्ण राजा जो बड़े वीर पराक्रमी योद्धा थे और भीमसेन के सेनापति बने । (३) इन्द्र के सारथि मातली की पत्नी ।

सुधा—देवों का पेय अमृत ।

सुधांशु—(१) चन्द्रमा (२) कपूर ।

सुधाकर—चन्द्रमा ।

सुधामा—(१) कुशद्वीप का एक पर्वत (२) तीसरे मन्वन्तर के एक देवगण ।

सुधासागर—अमृत समुद्र ।

सुधासागरमध्यस्था—अमृत समुद्र के बीच स्थित देवी । पिण्डाण्ड में बिन्दु स्थान में सहस्रार चक्र है सुधासागर ।

सुधृति—जनक वंश के महावीर के पुत्र, इनके पुत्र धृष्टकेतु थे ।

सुनक्षत्र—(१) इक्ष्वाकुवंश के मरुदेव के पुत्र, साथ दुष्यन्त पुत्र भरत ने विवाह किया (३) एक केकय राजकुमारी, कुरुवंश राजा सार्वभौम की पत्नी, इनके पुत्र जय थे । (४) चेदी नरेश सुबाहु कि बहन चेदी राज्य में रहते समय दमयन्ती की बन गई । विदर्भ देश से आये ब्राह्मण दमयन्ती की बातचीत सुनन्दा ने अकस सुन ली जिससे दमयन्ती की वास्तविकता पता लगा ।

सुनाभ—एक दिव्य पर्वत ।

सुनाम—(१) यादव वंश के उग्रसेन का कंस का भाई जिसको श्रीकृष्ण ने मारा (२) गरुड़ का पुत्र ।

सुनासीर—इन्द्र का विशेषण ।

सुनीति—मनु पुत्र उत्तानपाद की पत्नी, ध्रुव माँ (दे: ध्रुव) ।

सुनीथ—(१) पुरुरवा के वंशज सन्तति के इनका पुत्र सुकेतन था । (२) एक मह (३) सर्प दोष को निकालने के लिए प्रयो एक मन्त्र (४) सोमवंश के राजा सुषे पुत्र । इनके पुत्र नृचक्षु थे ।

सुनीथा—चाक्षुष मनु और नड्वला के, राजा अंग की पत्नी, वेन की माता (दे: वेन) ।

सुनेत्र—महाराजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

सुन्द—(१) सुन्द और उपसुन्द दो असुर थे अति बलवान, वीर और प्रतापी थे । क तपस्या से ब्रह्मा से वर प्राप्त किया था वे आपस में ही एक दूसरे को मार सकें इस वरदान के कारण वे बड़े अत्याचार

सुन्दर–कामदेव का नाम ।

सुन्दरी–एक राक्षसी जो माल्यवान की पत्नी थी । इसके वज्रमुष्ठि, विरूपाक्ष, दुर्मुख, सप्तघ्न, यज्ञकोश, मत्त, उन्मत्त नामक सात पुत्र हुए ।

सुपर्ण–(१) गरुड़ का नाम (२) कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री मुनि का पुत्र एक गन्धर्व (३) एक महर्षि (४) महाविष्णु का नाम (५) प्लक्षद्वीप का एक पहाड़ ।

सुपार्श्व–(१) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज धृतनेमि के पुत्र । इनके पुत्र सुमति थे। (२) जम्बूद्वीप का एक पर्वत। इसपर एक बड़ा कदम्ब वृक्ष है । (३) सम्पाति का पुत्र जो वृद्ध पिता की सेवा करता था तथा जिसने सीताहरण का समाचार सम्पाति को दिया था । (४) रावण के मन्त्री प्रहस्त के पिता एक राक्षस ।

सुपार्श्वक–जनक वंश के श्रुतायु के पुत्र, इनके पुत्र चित्ररथ थे ।

सुपुण्या–एक प्रसिद्ध नदी ।

सुप्ता–प्राज्ञ से अभिन्न देवी ।

सुप्रजा–भानु नामक अग्नि की पत्नी ।

सुप्रतीक–(१) एक दिग्गज (२) एक महर्षि (३) एक प्राचीन राजा (४) एक यक्ष (५) कुशवंश के राजा प्रतीकाश्व के पुत्र । इनके पुत्र मरुदेव थे ।

सुप्रतिष्ठा–देवी का विशेषण, सबसे सुन्दर प्रतिष्ठा वाली ।

सुप्रभा–(१) एक पुण्य नदी जो पुष्पकर तीर्थ में बहती है । (२) श्रीकृष्ण की एक पत्नी (३) अष्टावक्र मुनि की पत्नी, वदान्य नामक मुनि की पुत्री । (४) कश्यप ऋषि की पुत्री एक असुर कन्या ।

सुप्रसाता–प्लक्षद्वीप की एक नदी ।

सुप्रसाद–शिशुपालादि दुष्टों पर भी कृपा करने वाले भगवान विष्णु ।

सुप्रिय–कश्यपऋषि और दक्ष पुत्री प्राधा की एक पुत्री अप्सरा ।

सुबल–श्रीकृष्ण और बलभद्र का बाल सखा एक गोप कुमार (२) गान्धार राजा जिनकी पुत्री गान्धारी धृतराष्ट्र की पत्नी थी और पुत्र शकुनि कौरवों के कुटिल कर्मों की बागडोर खींचता था । (३) गरुड़ का पुत्र ।

सुबाहु–(१) राक्षसी ताटका और सुन्द नामक एक गन्धर्व का पुत्र। इसका भाई मारीच था । ये दोनों अति बलशाली और मायावी थे । श्रीराम से सुबाहु मारा गया । (२) क्रोधवश नामके एक असुर का पुनर्जन्म एक राजा । (३) कश्यप और कद्रू का पुत्र एक नाग । (४) एक काशी नरेश जिनकी अत्यन्त सुन्दरी पुत्री से कोसल के राजा ध्रुवसन्धि के पुत्र सुदर्शन का विवाह हुआ । (५) महाराजा सगर के पिता (६) चेदिदेश के राजा वीरबाहु के पुत्र ।

सुब्रह्मण्य–शिवजी और पार्वती के पुत्र [दे:स्कन्द]

सुभगा–अत्यधिक शोभावाली ऐश्वर्यमयी देवी ।

सुभद्र—वसुदेव और देवकी की पुत्री पौरवी के बारह पुत्रों में से एक ।

सुभद्रा–श्रीकृष्ण की बहन, अर्जुन की पत्नी, वसुदेव और देवकी की अत्यन्त प्रिय पुत्री । तीर्थयात्रा के समय संन्यासी के वेश में घूमते-घूमते अर्जुन द्वारका पहुँचे । सुभद्रा का रूप लावण्य और गुण का वर्णन सुनकर उस पर अनुरक्त हो गये थे । बलभद्र ने अर्जुन को संन्यासी समझकर सेवा के लिए सुभद्रा को नियुक्त किया । कपटी संन्यासी के सौन्दर्य पर वह भी मुग्ध हो गई । श्रीकृष्ण की सहायता से अर्जुन ने सुभद्रा का अपहरण किया । बलभद्र कुपित हो गये, श्रीकृष्ण के समझाने पर वे खुश हो गये । अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र थे प्रसिद्ध महारथी वीर अभिमन्यु । सुभद्रा के अपर नाम कृष्णा माधवी आदि

है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद सुभद्रा श्रीकृष्ण के पास द्वारका में रहती थी।

सुभानु–श्रीकृष्ण और सत्यभामा के दस पुत्रों में से एक।

सुभाषण–सूर्यवंशी राजा युयुध के पुत्र, इनके पुत्र श्रुत थे।

सुभीम–तप नामक पाञ्जन्य अग्नि का नाम जो यज्ञ में विघ्न डालती है।

सुभुज–जगत की रक्षा करने वाली अति सुन्दर भुजाओं वाले भगवान विष्णु।

सुभ्राज–स्कन्द देव का एक पार्षद।

सुभ्रू–अतीव सुन्दर भृकुटियों से युक्त देवी।

सुमति–[१] सूर्यवंश के राजा रौद्राश्व के पुत्र। ऋतयु के पुत्र। इनके पुत्र रैम्भ थे जो दुष्यन्त महाराजा के पिता थे। [२] ऋषभ देव के पुत्र राजा भरत के पुत्र जो धर्मनिष्ठ राजा थे। भरत के वन चले जाने पर ये राजा बने। [३] एक महर्षि [४] एक राक्षस जो वरुण की उपासना करता था।

सुमङ्गली–सबसे सुन्दर मङ्गलयुक्त देवी।

सुमद–एक मुनि थे जो हेमकूट पर्वत पर तपस्या करते थे। बाद में देवी के वर प्रसाद से अहिछत्र के राजा बनकर राज्य करते थे। श्रीरामचन्द्र जी के अश्वमेध का अश्व इधर आया। उन्होंने शत्रुघ्न का आतिथ्य किया और पुत्रों पर राज्यभार सौंप कर अयोध्या आये और भगवान श्रीराम जी के दर्शन कर मोक्ष प्राप्त किया।

सुमन–चाक्षुष मनु और नड्वला के पुत्र उल्मुक और पुष्करिणी के एक पुत्र।

सुमना–[१] एक असुर [२] प्राचीन भारत के एक राजा।

सुमन्त–पुरुवंश के रैम्य के एक पुत्र। दुष्यन्त महाराजा के भाई।

सुमन्तु–व्यास ऋषि के एक मुख्य शिष्य।

सुमन्त्र–अयोध्या के महाराजा दशरथ के आठ मन्त्रियों में से एक-वे थे जयन्त, धृष्टि, विजय, अभिद्धार्थ, अर्थसाधक, अशोक। मन्त्रपाल सुमन्त्र। सुमन्त्र प्रधान थे। ये महाराजा का सारथ्य कर्म भी करते थे। सुमन्त्र ही राज्य से निष्कासित श्रीराम को सीता और लक्ष्मण समेत वन ले गये थे। श्रीराम को वनवास देने पर ये कैकेयी पर अत्यन्त क्रुद्ध हुए। अन्तिम दिनों में राजा की सेवा ये करते थे।

सुमन्यु–एक प्राचीन राजा।

सुमालि–एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था। इसके भाई मालि और सुमालि थे।

सुमित्र–[१] यदुवंश के वृष्णि के पुत्र और युधाजित के भाई थे। [२] तप नामक पाञ्चजन्य अग्नि का एक पुत्र जो यज्ञ में विघ्न डालता है। [३] एक महर्षि [४] एक सौवीर राजा। [५] हैहय वंश के एक राजा जो मुनियों के उपदेश सुनकर विह्वल हो गये और मोक्ष प्राप्ति के साधन करने लगे। [६] इक्ष्वाकुवंश के सुरथ के पुत्र। ये इस वंश के अन्तिम राजा थे।

सुमित्रा-अयोध्या के महाराजा दशरथ की पत्नी। इनके पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे। कैकेयी की दुष्टता के कारण महाराजा से मांगे वरों के अनुसार श्रीराम को वनवास के लिये जाना पड़ा। बचपन से ही श्रीराम से अभिन्न लक्ष्मण महल के भोग विलासों को तृणवत् त्यागकर अपने बड़े भाई का अनुगमन करने को तैयार हो गये। उनको सिर्फ यही डर था कि कहीं मां मुझको रोक न ले। माता से जब अनुमति मांगने गये सुमित्रा अपने पुत्र के निश्चय पर खुश हुई और कहा कि 'श्रीराम के चले जाने पर अयोध्या में तुम्हारा कोई काम नहीं। तुम उनकी सेवा करने चले जाओ। श्रीराम को दशरथ समझना, जनक-पुत्री सीता को मुझे समझना, अटवी को अयोध्या समझना'। वाल्मीकि रामायण का सबसे मुख्य श्लोक यही है जिसका अर्थ दिया गया

है। महाराजा के निधन के बाद सुमित्रा ही अपने दुःख को छिपाकर कौसल्या को सान्त्वना देती थी। कैकेयी के बारे में उसके मुँह से एक भी कटु वचन नहीं निकला। वे सती साध्वी थी। प्रत्येक कष्ट और दुःख में कौसल्या की छोटी बहन की तरह सहायता करती थी।

सुमित्रानन्दन–लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सुमीढ़–सूर्यवंशी राजा सुहोत्र के पुत्र। इनके भाई अजमीढ़ और पुरुमीढ़ थे।

सुमुख–(१) कश्यप प्रजापति और कद्रू का एक नाग (२) गरुड़ का पुत्र।

सुमुखी–(१) अत्यन्त सुन्दर मुख वाली देवी [२] एक अप्सरा।

सुमेधा–[१] अति उत्तम, सुन्दर बुद्धिवाले भगवान [२] एक महर्षि। इनके पास महाराजा सुरथ और एक वैश्य दुःख से पीड़ित हुये और उनके तत्वोपदेशों को सुनकर विरक्त हुए।

सुमेरु–दे: महामेरु।

सुमेरुमध्य श्रृङ्ग–सुमेरु पर्वत के त्रिकोण की आकृति में तीन और उनके मध्य में एक, ऐसे चार प्रधान श्रृङ्ग हैं। मध्य में स्थित श्रृङ्ग का नाम।

सुम्भ–कश्यप प्रजापति और दनु का पुत्र एक दानव। इसका भाई निसुम्भ था (दे: निसुम्भ)।

सुयज्ञ–ऋषभ देव के पुत्र भरत के वशज एक राजा।

सुयज्ञा–पुरुवंश की एक राजकुमारी, महाभौम की पत्नी।

सुयम–शतशृङ्ग नामक राक्षस का भाई।

सुयामुन–जिनके परिकर यमुना तटवासी गोपाल बाल आदि सुन्दर हैं ऐसे श्रीकृष्ण।

सुयोधन–दुर्योधन का दूसरा नाम।

सुर–देवता।

सुरक्षक–एक गन्धर्वराज।

सुरगुरु–बृहस्पति का विशेषण।

सुरजा–कश्यप ऋषि और प्राधा की पुत्री एक अप्सरा।

सुरतरु–स्वर्ग का वृक्ष, कल्पतरु।

सुरता–कश्यप ऋषि और प्राधा की पुत्री।

सुरथ–(१) इक्ष्वाकु वंश के राजा जिनके पुत्र सुमित्र थे। सुरथ ने महर्षि सुमेधा से तत्वोपदेश सुन कर विरक्त हुए। (२) त्रिगर्त के एक राजा जो जयद्रथ के मित्र थे। (३) द्रुपद महाराजा के एक पुत्र जिनको अश्वत्थामा ने मारा। (४) सिन्धुराज जयद्रथ और दुश्शला का पुत्र। (५) कामदेव।

सुरथ क्रिया–कामकेलि।

सुरद्विप–देवों का हाथी ऐरावत।

सुरद्विष–असुर।

सुरनायिका–देवी की उपाधि।

सुरपति–इन्द्र का विशेषण।

सुरपथ–आकाश।

सुरभी–देवों की गाय, कश्यप की पत्नी, दक्ष की पुत्री, जिससे पशुवंश का जन्म हुआ।

सुरभूमि–उग्रसेन की पुत्री, कंस की बहन वसुदेव के भाई श्यामक की पत्नी। इसके हरिकेश और हिरण्याक्ष नाम के दो पुत्र हुए।

सुरवल्ली–तुलसी।

सुरवीथि–आकाश का नक्षत्र मार्ग।

सुरसरिता–गंगा का नाम।

सुरसा–कश्यप ऋषि और क्रोधावशा की एक पुत्री नागमाता, जिससे नागों की उत्पत्ति हुई। हनुमान की शक्ति परीक्षण करने के लिये समुद्र लांघते समय मार्ग में विघ्न डालने के लिये देवों ने सुरसा को भेजा। सुरसा भयंकर रूप धारण कर हनुमान को निगलने के लिये सामने खड़ी हो गई। हनुमान ने कहा कि मैं श्रीरामचन्द्र के काम के लिये जा रहा हूँ; वहाँ से लौटने पर तुम्हारा ग्रास बनूंगा। लेकिन सुरसा नहीं मानी। तब हनुमान ने

अपना रूप सुरसा से दुगुना कर लिया। तब सुरसा पाँच गुनी बड़ी हो गई। इस प्रकार एक दूसरे से अधिकाधिक बड़े होते होते, सुरसा जब अति विशालकाय की हुई तब हनुमान मक्खी का रूप धारण कर उसके मुँह में गये और बाहर भी आ गये। हनुमान की शक्ति देखकर सुरसा अति प्रसन्न हुई और हनुमान को आशीर्वाद देकर चली गयी।

सुरा–वारुणी (दे: वारुणी)।

सुराध्यक्ष–देवताओं के अध्यक्ष भगवान विष्णु।

सुरानन्द–देवताओं को आनन्दित करने वाले भगवान।

सुरारि–(१) एक राजा (२) देवताओं के शत्रु राक्षस।

सुराष्ट्र–(१) भारत दक्षिण पश्चिम में स्थित एक देश, आधुनिक सौराष्ट्र देश (२) एक क्षत्रिय वंश।

सुरुचि–सुन्दर रुचि और कान्ति वाले भगवान विष्णु।

सुरुची–मनु पुत्र उत्तानपाद की सुन्दरी पत्नी। इसका पुत्र उत्तम था। सुरुची की कटूक्तियों से दुःखी ध्रुव अपनी माँ सुनीती के उपदेश के अनुसार महाविष्णु की तपस्या करने वन चले गये।

सुरूपा–विश्वकर्मा की पुत्री।

सुरेणु–सरस्वती नदी की एक शाखा।

सुरेश–(१) देवताओं के ईश इन्द्र (२) एकादश रुद्रों में से एक (३) एक सनातन विश्वदेव।

सुरोद–शाल्मलि द्वीप को घेरकर ३२,००,००० मील चौड़ा सुरा सागर। इसको घेर कर इससे दुगुना चौड़ा कुशद्वीप है।

सुलभ–नित्य निरन्तर चिन्तन करने वाले को तथा एकनिष्ठ श्रद्धालु भक्त को बिना ही परिश्रम के सुगमता से प्राप्त होनेवाले भगवान विष्णु।

सुलभा–(१) योग धर्म का अनुष्ठान कर सिद्ध प्राप्त एक सन्यासिनी (२) देवी का नाम।

सुलोचन–धृतराष्ट्र का पुत्र।

सुवर्चला–(१) देवल ऋषि की पुत्री, श्वेतकेतु की पत्नी (२) भरत वंश के राजा परमेष्ठि की पत्नी। इनके पुत्र प्रतीह थे। प्रतीह की पत्नी सुवर्चला थी।

सुवर्चा–(१) राजा सुकेतु के पुत्र (२) एक तपस्वी महर्षि जो मद्रराजा द्रुमत्सेन के मित्र थे। (३) धृतराष्ट्र का एक पुत्र (४) कौरवों का एक मित्र जो कुरुक्षेत्र में अभिमन्यु से मारा गया (५) सूर्यवंशी राजा खनिनेत्र के पुत्र। इनका दूसरा नाम करन्धम था।

सुवर्ण–(१) एक गन्धर्व (२) एक प्रकार का यज्ञ (३) शिव का विशेषण।

सुवर्णतीर्थ–एक पुण्य तीर्थ।

सुवर्णपंख–गरुड़।

सुवर्ण बिन्दु–सुन्दर अक्षर और बिन्दु से युक्त ओंकार स्वरूप ब्रह्म।

सुवर्ण वर्ण–सोने के समान वर्ण वाले संकर्षण रूप भगवान विष्णु।

सुवर्णा–इक्ष्वाकु वंश की एक राजकन्या जिसका विवाह पुरुवंश के सुहोत्र से हुआ। इनका हस्ति नामक एक पुत्र जन्मा।

सुवर्णाभ—स्वारोचिष मनु के पुत्र शंखपद के पुत्र।

सुवामा–भारत की पुण्य नदी।

सुवासिनी–सुगन्ध युक्त देवी।

सुवीर–(१) उग्रसेन की पुत्री कंसवती और देवश्रवा का पुत्र। (२) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज क्षेम्य के पुत्र। इनके पुत्र रिपुञ्जय थे। (३) एक क्षत्रिय कुल। (४) आश्रित जनों के अन्तःकरण में सुन्दर कल्याणमयी विविध स्फुरण करने वाले विष्णु। (५) द्युतिमान नामक राजा के पुत्र जो अति पराक्रमी और प्रसिद्ध थे।

सुवदा–प्रियव्रत के पुत्र सवन की पत्नी ।

सुवेल–दक्षिण समुद्र के किनारे पर स्थित एक पर्वत । इस पर्वत पर चढ़ कर श्रीराम और लक्ष्मण ने वानरों के साथ लंका का निरीक्षण किया था ।

सुव्रत–(१) सुन्दर भोजन करने वाले यानि अपने भक्तों द्वारा प्रेमपूर्वक अर्पित किये हुए पत्र-पुष्पादि मामूली भोजन को भी परमश्रेष्ठ मानकर खाने वाले भगवान विष्णु । (२) भरत वंश के राजा क्षेम के पुत्र, इनके पुत्र धर्मसूत्र थे ।

सुशर्मा–त्रिगर्त के राजा कौरव पक्षी थे युद्ध-भूमि में अर्जुन से मारे गये ।

सुशान्ति–भरत वंश के राजा शान्ति के पुत्र । इनके पुत्र पुरुज थे ।

सुशील–एक गन्धर्व ।

सुशीला–(१) श्रीकृष्ण के सखा सुदामा की साध्वी पत्नी । (२) जमदग्नि के आश्रम की गाय । अपने पुत्र परशुराम से पत्नी रेणुका का वध करवाने के बाद महर्षि ने उसे पुनर्जीवित किया, फिर भी पश्चाताप से देवलोक की गाय सुरभी की तपस्या की । सुरभी ने प्रसन्न हो कर अपनी बहन सुशीला को महर्षि को दिया । कार्तवीरार्जुन इसी गाय को ले गया था ।

सुशोमना–इक्ष्वाकुवंश के राजा परीक्षित की पत्नी । इनके शल, दल, बल नाम के तीन पुत्र हुए ।

सुश्रवा–(१) विदर्भ राजकुमारी जिसका विवाह पुरुवंश के राजा जयत्सेन के साथ हुआ । इनके अर्वाचीन नामक एक पुत्र हुआ । (२) एक राजा जो इन्द्र के बड़े भक्त थे । ऋगवेद काल में जीवित थे ।

सुश्रुत–विश्वामित्र के एक ज्ञानी पुत्र ।

सुषुप्ति–मनुष्य की चार अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय) में से एक ।

सुषेण–(१) पार्षदों के समुदाय रूप सुन्दर सेना से सुसज्जित भगवान विष्णु । (२) महातल में रहने वाले अनेक फणवाले साँपों में से एक । ये क्रोधवश कहलाते हैं और इन में मुख्य कुहक, तक्षक, कालिय, सुषेण आदि हैं । ये कश्यप प्रजापति और कद्रू के पुत्र हैं । बृहदाकार के होने पर भी हमेशा गरुड़ से भयभीत रहते हैं । (३) वानर राजा वालि की पत्नी तारा के पिता एक सुशक्त वानर श्रेष्ठ जो काञ्चन पहाड़ के समान थे । (४) जमदग्नि और रेणुका के एक पुत्र, परशुराम के भाई । (५) पुरुवंश के राजा परीक्षित के पुत्र । (६) कर्ण के एक पुत्र जो नकुल से मारे गये । (७) भरत वंश के राजा धृपद के पुत्र । इनके पुत्र सुनीथ थे ।

सुषुम्णा–शरीर की एक प्रधान नाड़ी जो इड़ा तथा पिंगला नाम की नाड़ियों के बीच में स्थित है । सूक्ष्म बुद्धिवाले ऋषि और सिद्ध योगि आदि हृदयाकाश के बीच में अनाहत चक्र के बीच स्थित परब्रह्म का ध्यान करते हैं । यहीं से नाड़ी और नसें शरीर के कोने-कोने में जाती है । सुषुम्णा नाड़ी रीढ़ के बीच में स्थित है । यह भगवान तक पहुँचाने वाली तेजोमय नाली सी है । इस नाड़ी के मार्ग से ध्यान कर शिर में स्थित सहस्रार तक पहुँचता है । सिर में ब्रह्मरंध्र में समाप्त होने वाली सुषुम्ना नाड़ी के अग्रभाग और सूर्य की किरणों में नित्य सम्बन्ध है । इस सम्बन्ध के कारण ही सूर्योदय के समय लोग जागते हैं और रात को सोते हैं । सूर्य किरणें इस नाड़ी के द्वारा प्रवेश कर बुद्धि को जगाती है और जीवों को कर्मों में प्रवृत्त करती हैं । सूर्यास्त के बाद यह सम्बन्ध छूट जाता है, बुद्धि मन्द पड़ती है, और निद्रा आती है । जीव सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा ब्रह्मरंध्र को भेद कर बाहर निकलता है ।

सुमङ्गल–उत्तर भारत का एक प्राचीन जनपद।
सुस्वरा–एक गन्धर्व कन्या।
सुहवि–महाराजा भरत के पुत्र भूमन्यु और पुष्करणी के पुत्र।
सुहू–उग्रसेन का पुत्र, कंस का भाई, श्रीकृष्ण से मारा गया।
सुहोत्र–(१) भरत वंश राजा सुधन्व के पुत्र, इनके पुत्र च्यवन थे। [२] भरत वंश के राजा भूमन्यु और पुष्करणी के पुत्र, सुहवि के भाई। ये एक दानशील राजा थे। [३] सहदेव और मद्र राजकन्या विजया के एक पुत्र [४] एक राक्षस (५)एक महर्षि।
सूहन–भरतवंश के राजा सुतपा अपुत्र थे। उनकी प्रार्थना पर मुनि दीर्घतमा ने नियोग की विधि से राजपत्नी में पुत्रोत्पादन किया और छः पुत्र हुए। उनमें से एक।
सूकर–[१] वराह [२] एक प्रकार का हरिण [३] एक नरक।
सूकरभूति–वराहावतार।
सूक्ष्म–[१] सर्वव्यापक सूक्ष्म तत्व, परब्रह्म, परमात्मा। [२] कश्यप ऋषि और दनू का पुत्र एक दुष्ट दानव।
सूक्ष्म प्रकृति–दे. प्रकृति।
सूक्ष्म शरीर–लिंग शरीर जो सूक्ष्म पांच महाभूतों से बना है।
सूची–एक प्रकार का सैनिक व्यूह।
सूचीमुख–[१] एक नरक [२] सफेद कुशा।
सूत–ये महर्षि लोमहर्षण के पुत्र और वेदव्यास के शिष्य थे। विरक्त, नित्य ब्रह्मचारी व्यास पुत्र शुक ब्रह्मर्षि के साथ व्यास महर्षि से सूत ने भी सब पुराणों को सीख लिया। वे पुराणों को सुरीले स्वर से पढ़ कर व्याख्या करने में निपुण थे। नैमिषारण्य में लोक कल्याण के लिए अनेक ऋषि मुनि एकत्रित होकर दीर्घ सत्र कर रहे थे। सूत वहां पहुँचे और शौनकादि मुनियों ने उनको सम्मान्य स्थान देकर सत्कार किया और अष्टादश पुराणों की व्याख्या करने की प्रार्थना की। सूत-शौनक के संवाद के रूप में ये पुराण प्राप्त हैं। भारत युद्ध के समय तीर्थयात्रा करते बलभद्र नैमिषारण्य में आये और सब ऋषिमुनियों ने उठ कर उनका स्वागत किया। ऊँचे आसन पर बैठे सूत को सत्कार करते न देख वे कुपित हुए और उनका सिर काट डाला। [२] ब्राह्मण स्त्री में क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न पुत्र जो प्रायः सारथ्य का काम करता है। बन्दीजन।
सूत्र–वेद सूत्र, संक्षेप रचना।
सूत्रात्मा–परमात्मा।
सूनृत–कृपालु भगवान विष्णु।
सूर—सूर्य।
सूरदास–श्रीकृष्ण के परमभक्त एक कवि जिन्होंने सूर सागर की रचना कर अमर हुए। श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन इतना हृदयस्पर्शी है कि पढ़ते समय पाठकों को ऐसा अनुभव होता है कि बालकृष्ण और बलराम की लीलायें आंखों के सामने हो रही हों। वे हिन्दी साहित्य नभोमण्डल के सूर्य के समान सुशोभित हैं।
सूरि–[१]जैन मताचार्यों का सम्मानसूचक पद [२] श्रीकृष्ण का नाम।
सूरी–[१] सूर्य की पत्नी। [२] कुन्ती का विशेषण।
सूर्य–कश्यप प्रजापति अदिति के पुत्र, द्वादशादित्यों में से एक। भिन्न-भिन्न पुराणों में इनके नाम भी भिन्न भिन्न हैं। ये सब सूर्य के अपर नाम भी माने जाते हैं। सूर्यपुत्र वैवस्वत मनु से सूर्यवंश चला। आकाश मण्डल में स्थित प्रकाशमान पदार्थों के ईश सूर्य अपने ताप से तीनों लोकों को गरम रखते हैं और प्रकाश से तीनों लोकों को प्रकाशित करते हैं। आकाश का तेजोमय गोल है सूर्य। मन्द, शीघ्र, समान गति से उत्तरायन और

दक्षिणायन मार्गों से आकाश मण्डल में एक छोर से दूसरे छोर तक जाता है। सूर्य के उदय पर भूमण्डल पर प्रकाश और अस्त होने पर रात होती है। उत्तरायण में दिन बड़े और रात छोटी और दक्षिणायन में रात बड़ी और दिन छोटे होते हैं। विद्वानों का कहना है कि मानसोत्तर पर्वत पर चक्कर काटते सूर्य ७६ करोड़ ८ लाख मील चलता है। विष्णु की शक्ति ऋक्, यजुः, साम तीन वेद-स्वरूप है। यह शक्ति सूर्य में निहित है। यही शक्ति सूर्य में स्थित होकर लोक के अन्धकारमय पाप को दूर करती है और उसे प्रकाशमय करती है। इसी से सूर्य अत्यन्त उज्ज्वल और प्रकाशमय है। विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा सूर्य की पत्नी थी जिससे सूर्य के मनु और यम नामक दो पुत्र और यमी नाम की एक पुत्री हुई। संज्ञा की छाया से सूर्य के शनैश्चर, मनु, तपती नामकी तीन सन्तान, और अश्वरूपिणी संज्ञा से अश्विनीकुमार हुए। सुग्रीव, कालिन्दी, कर्ण ये भी सूर्य की सन्तान थी। युधिष्ठिर की तपस्या पर सन्तुष्ट सूर्य देव ने वन में रहते पाण्डवों को अक्षय पात्र दिया। सत्राजित को स्यमन्तक मणि दिया। सूर्य के आदित्य, दिवाकर, भास्कर, मार्तण्ड, अर्क, विवस्वान, भानु, कर्मसाक्षी, अंशुमालि आदि अनेक नाम हैं। [२] एक प्रधान ग्रह जिसके चारों ओर सोम, मंगल आदि ग्रह घूमते हैं।

सूर्यकान्त–एक स्फटिक मणि।

सूर्यकेतु–एक दैत्य। इस दैत्य ने एक बार देवलोक पर आक्रमण किया था। इससे युद्ध करने अयोध्या नरेश पुरञ्जय गये थे (दे: पुरञ्जय, ककुत्स्थ)

सूर्यग्रहण–चन्द्रमा की छाया पड़ने से सूर्य का छिप जाना (दे: ग्रहण)

सूर्यतीर्थ–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य तीर्थ।

सूर्यदत्त–विराट राजा के भाई। इनका अपर नाम शतानीक था। ये कुरुक्षेत्र में द्रोणाचार्य से मारे गये।

सूर्यपुत्र–सुग्रीव, यम, शनैश्चर, कर्ण आदि का विशेषण।

सूर्यपुत्री–यमुना।

सूर्यभानु–अलका पुरी का एक द्वारपाल।

सूर्यवर्चा–कश्यप और मुनि के पुत्र एक गन्धर्व।

सूर्यवंश–प्राचीन भारत के चक्रवर्तियों का एक प्रबल और प्रसिद्ध राज वंश। कश्यप प्रजापति और अदिति के पुत्र विवस्वान से यह वंश चला। सूर्य से वैवस्वत मनु, मनु से इक्ष्वाकु जन्में। इस वंश में इक्ष्वाकु, ककुत्स्थ, रघु, अज, दशरथ, श्रीराम आदि लोक प्रसिद्ध अनेक शूर वीर धर्मनिष्ठ महाराज हुए।

सूर्यरथ–सूर्य अपने रथ पर चढ़ कर आकाश मार्ग पर पूरब से पश्चिम की ओर जाते हैं। ज्ञानियों का कहना है कि सूर्यरथ का एक चक्र एक संवत्सर के समान है जिसके बारह महीने रूप बारह हिस्से हैं। छः ऋतुओं रूप छः हिस्सों की एक नेमी है। उसका एक अक्ष मेरु पर्वत पर टिका है और दूसरा छोर मानसोत्तर के ऊपर अन्तरिक्ष में। तैल यन्त्र के समान सूर्य मानसोत्तर पहाड़ पर घूमते हैं। इस चक्र की परिधि एक करोड़ सत्तावन लाख पचास हजार योजना है। इससे भिन्न दूसरा चक्र पहले से चौथा है। रथ के अन्दर का भाग दो करोड़ तीस लाख मील लम्बा और उससे चौथा चौड़ा है। अरुण सारथी है। वेद के सात छन्दों के नाम से, गायत्री, बृहति, उष्णिक, जगति, त्रिष्टुभ, अनुष्टुप और पंक्ति नाम से सात घोड़े इस रथ से बन्धे हैं जिसके अन्दर सूर्य भगवान विराजमान हैं। सारथी के रूप में अरुण सूर्य की अवहेलना न हो इस विचार से, सूर्य की ओर मुह कर बैठते हैं। सूर्य के सामने सूर्य की स्तुतिगान करते हुए

वालखिल्य नामक साठ हजार ऋषि जो अंगुष्टमात्र हैं, सूर्य की स्तुति करते हैं। इसी तरह और भी ऋषि-मुनि, गन्धर्व, अपसराएँ, नाग, यक्ष यातुधान आदि सप्त गुणों के चौदह चौदह लोग महीने के अनुसार भिन्न-भिन्न नामों से भगवान की सेवा में रहते हैं। ऋषि भगवान की स्तुति करते हैं, गन्धर्व उनके सामने गाते हैं, अपसराएँ नाचती हैं। अश्वों के साथ नाग भी रथ को खींचते हैं, यक्ष टोग पकड़ते हैं, वालखिल्य सूर्य को घेर कर बैठते हैं।

सूर्या—सूर्य की पत्नी।

सृञ्जय—[१] वसुदेव के भाई। इनकी पत्नी उग्रसेन की पुत्री राष्ट्रपाली थी जिससे इनके वृष, दुर्मर्षण आदि पुत्र हुए। [२] एक सूर्यवंशी राजा जो श्विति के पुत्र थे। दीर्घकाल तक ये अपुत्र रहे। मुनियों की कृपा से इनके सुवर्णष्टीव नामक एक पुत्र हुआ जिसके छूने से सभी वस्तुएँ स्वर्णमय हो जाती थीं। इन्द्र के माया प्रयोग से शिशु जब चार साल का हुआ, मृत्युग्रस्त हो गया। राजा सृञ्जय इससे अत्यन्त दुःखी हुए और नारद मुनि के उपदेश से सात्वना पायी। [३] शर्याति महाराजा के पुत्र अनु के वंशज कालनर के पुत्र। इनके पुत्र जनमेजय थे।

सृष्टि—महाप्रलय के अन्त में ब्रह्म का पहला दिन शुरु होता है, जब कि जगत् की सृष्टि शुरू होती है। प्रलय के समय यह व्यक्त और अव्यक्त प्रपञ्च नहीं रहता। भगवान की त्रिगुणात्मिका माया समावस्था को प्राप्त कर भगवान में लीन रहती है। एकार्णव में केवल सच्चिदानन्दस्वरूप भगवान रहते हैं। काल की गति पाकर सृष्टि करने की ईक्षणा क्रिया जब भगवान करते हैं, तब माया त्रैलोक्य रूप में परिणित होने के लिए समावस्था को छोड देती है और क्षुब्ध हो जाती है। माया के गुण सत्व, रज, तम विकसित होते हैं, और सृष्टि का आरम्भ होता है। परब्रह्म परमात्मा की शक्ति होने पर भी माया से वे परे हैं, वे साक्षी रूप ही रहते हैं। त्रिगुणात्मिका माया से महत् तत्व, उससे अहंकार जो सत्व, रज, तमो गुणों के अनुसार वैकारिक, तैजस और तापस अहंकार ये तीन अवस्थाओं को प्राप्त होती हैं। सात्विकाअहंकार से इन्द्रियों और अन्तःकरण के अधिष्ठान देवताओं की (दिक्, वायु आदित्य आदि) सृष्टि हुई। सात्विकाहंकार से भगवान की प्रेरणा से मन, बुद्धि अहंकार युक्त चित्त या अन्तःकरण की सृष्टि हुई। राजसाहंकार से दशेन्द्रिय, तामसाहंकार से शब्द, शब्द से क्रमशः आकाश, स्पर्श, वायु रूप, अग्नि, रस, जल, गन्ध, भूमि इत्यादियों की सृष्टि हुई। इन सबको मिलाकर इनमें चेष्टा करने की शक्ति देकर हिरण्मय रूप ब्रह्माण्ड की सृष्टि की। अनेक काल कारण जल में रह कर उस ब्रह्माण्ड से चौदह लोकों से युक्त भगवान के विराट रूप शरीर की सृष्टि हुई। पाद से लेकर सिर तक चौदह लोक हैं। विराट रूप के केश मेघ हैं, भौंहें ब्रह्मा का गृह, अक्षिरोम दिन रात, नेत्र सूर्य चन्द्र, कर्ण दिशायें, नासाद्वार अश्विनी देव, दांत नक्षत्र समूह, दष्ट्र यम, मन्दस्मित माया, श्वास वायु, जिह्वा जल, स्वर, सिद्ध, हाथ देव, स्तन, धर्मदेव, मन चन्द्र, कुक्षिसमुद्र, वस्त्र दोनों सन्ध्या, पैर के नख हाथी, ऊँट आदि जानवर मुख, हाथ, जांघ पैर—चारों वर्ण हैं।[ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र]। भगवान का पराक्रम असुर, अस्तियां पर्वत नाड़ी नदियों, रोम वृक्ष आदि हैं। दूसरे मत के अनुसार प्रलय काल में कारण जल में शेषशायी महाविष्णु ही थे। प्रलय के अन्त में सृष्टि की इच्छा जब भगवान में हुई उनके नाभिकमल से एक दिव्य पद्म का आविर्भाव हुआ जिसमें से ब्रह्मा

का जन्म हुआ। अपने उत्पत्ति स्थान का पता लगाने के लिए ब्रह्मा ने चारों तरफ घूम कर देखा और उनके चार मुख हुए। उसके बाद उस कमल का उद्गम स्थान देखने के लिये कमल नाल के एक सुषिरों में से गये, लेकिन अन्त न पाकर वापस आये। तब 'तप तप' की आवाज सुनाई दी। अनेक काल ब्रह्मा ने तपस्या की और भगवान के दर्शन हुए और सृष्टि करने की शक्ति मिली। ब्रह्मा ने उसी पद्म से त्रैलोक्य की सृष्टि की। पहले स्थावर जंगम की सृष्टि की। फिर भगवान का स्मरण कर मन से सनक, सनन्द, सनातन और सनत्कुमार की सृष्टि की। नित्य ब्रह्मचारी रहे, प्रजासृष्टि में पिता का योग न देने के कारण ब्रह्मा को कोप हुआ और उस क्षणिक कोप से भगवान के अंशावतार रुद्र का जन्म हुआ। रुद्र ने ब्रह्मा की इच्छा से भूत गणों की सृष्टि की जिससे लोक भर गया। ब्रह्मा ने रुद्र को मना किया। फिर सृष्टि की चिन्ता करते हुए उनके शरीर के अवयवों से मरीचि, अत्रि, अंगिरा, क्रतु, पुलह, पुलस्त्य, भृगु, वशिष्ठ, दक्ष आदियों का जन्म हुआ जो प्रजापति कहलाये और इनसे सृष्टि की वृद्धि हुई। धर्मदेव और कर्दम प्रजापति की सृष्टि भी ब्रह्मा ने की।

सेतु–(१) दक्षिण समुद्र में रामेश्वर के पास नल-नील और अन्य वानरों के द्वारा श्रीराम का बनवाया गया पुल। यह पुण्य स्थान माना जाता है। सेतु स्नान पुण्य देनेवाला है। इससे श्रीराम और लक्ष्मण समुद्र पार कर लंका में गये थे। (२) संसार समुद्र को पार करने के लिए सेतुरूप भगवान् विष्णु (३) भरत वंश के तभ्रू के पुत्र।

सेनाचित–(१) भरत वंश के राजा विशद के पुत्र, इनके पुत्र रुचिराश्व थे।

सेनजित्–(१) दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज विशद के पुत्र। रुचिराश्व, दृढ़हनु, काश्य, और वत्स इनके पुत्र थे। (२) इक्ष्वाकु वंश के कृशाश्व के पुत्र। इनके पुत्र युवनाश्व थे।

सेनानि–धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीमसेन से मारा गया।

सेनामुख–एक सैन्य विभाग जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नौ घोड़े और पन्द्रह पदाति हैं।

सेनाबिन्दु–पाण्डवों का बन्धु एक पांचाल राजा।

सैकत–रेतीला तट।

सैन्धव–(१) सिन्धु देश के निवासी (२) सिन्धु देश के अश्व (३) सिन्धु नदी में उत्पन्न (४) शौनक मुनि के एक शिष्य।

सैन्धवारण्य–भारत का एक प्राचीन पुण्य स्थान।

सैरन्ध्र–दस्यु जाति के पुरुष और अयोगव जाति से उत्पन्न सन्तान।

सैरन्ध्री–(१) अन्तःपुर की दासी (२) विराट देश में अज्ञातवास के समय द्रौपदी इस नाम से विराट राज पत्नी की सखी बन कर रही।

सोक्रटिस–प्राचीन ग्रीस देश के एक लोक प्रसिद्ध तत्व चिन्तक जिन्होंने अपने युग के विचारों में क्रान्ति सी पैदा की थी। ये एथेन्स में एक शिल्पि के पुत्र थे। वे एक सत्यान्वेषक थे और अपने विचारों को निर्भय प्रकट करते थे। आत्मा के अनित्यत्व और पुनर्जन्म पर वे विश्वास करते थे। उनके कई शिष्य थे और बहुत से शत्रु भी। बहुतों ने उनको पागल समझ लिया था। वे समाजद्रोही, क्रान्तिकारी, युवकों को पथभ्रष्ट करने वाले माने गये और ग्रीस के उस युग के सिद्धान्तों और मताचारों पर विश्वास न करने वाले घोषित कर न्यायालय ने उनको वध की सजा दी। उनको विष पिलाया गया। उनकी मृत्यु के कई साल बाद ग्रीसवासियों ने सोक्रटिस की महिमा और उनके सिद्धान्तों को मान लिया।

सोम–(१) देवताओं का पेय अमृत जो सोम नामक पौधे का रस है (२) एक पौधा जो प्राचीन काल में यज्ञ में आहुति देने के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता था। (३) सोम यज्ञ के अधिष्ठान देवता (४) अष्टवसुओं में से एक (५) मगध देश के राजा जरासन्ध के पुत्रों में से एक। जरासन्ध के सोम, सहदेव तुर्य और श्रुतायु नाम के चार पुत्र थे (६) चन्द्रमा जो अत्रि महर्षि की आंख से निकले माने जाते हैं। दूसरे मत के अनुसार समुद्र मंथन के समय समुद्र से निकले भी माने जाते हैं। इनकी पत्नियां दक्ष की २७ पुत्रियां (२७ नक्षत्र) हैं। इनमें रोहिणी से अधिक अनुराग रखने से दक्ष ने क्षयरोग से ग्रस्त होने का शाप दिया था। बाद में शाप मोक्ष मिला, किन्तु इनकी कलाओं की वृद्धि और क्षय होती रहती है जिससे शुक्ल पक्ष और कृष्णपक्ष होते हैं। इनके पुत्र बुद्ध थे। [७] एक ग्रह जो सूर्य मण्डल से आठ लाख मील की दूरी पर सूर्य से भी शीघ्र गति से घूमता है और एक मास मे उतनी दूरी तय करता है जितनी सूर्य एक वर्ष मे। सर्व जीवलोक का प्राण स्वरूप है। इसलिए औषधीश नाम भी है। [८] एक वार का नाम।

सोमक–पांचाल राजा मैत्रेयु के पुत्र। च्यवन, सुदास और सहदेव इनके भाई थे। इनके सौ पुत्र थे जिनमें जन्तु थे और पृषद सबसे छोटे थे। ये महादानी थे।

सोमगिरि–एक पुण्य पर्वत।

सोमग्रहण–चन्द्र ग्रहण।

सोमतीर्थ–कुरुक्षेत्र का एक पुण्य तीर्थ।

सोमदत्त–[१] शन्तनु के बड़े भाई वाल्हीक के पुत्र [२] एक पांचाल राजा कुशाश्व के पुत्र थे।

सोमनाथ–प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर का शिव-लिंग। इस मन्दिर की धनराशि और ऐश्वर्य से आकृष्ट महम्मद गज़नी ने सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा और खजाने को उठा ले गया।

सोमप–[१] एक विश्वदेव।

सोमपद–एक पुण्य स्थान जहां स्नान करने स अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

सोमपुत्र–बुद्ध का विशेषण।

सोमयज्ञ–एक याग।

सोमलता–सोम का पौधा।

सोमश्रवा--एक महर्षि।

सोमसिन्धु--विष्णु का विशेषण।

सोमा- एक अप्सरा।

सोमापि–जरासन्ध के पुत्र सहदेव के पुत्र। इनके पुत्र श्रुतदेव थे।

सौगत--बुद्ध के अनुयायी।

सौगन्धिक--सफेद कुमुद जिसकी अत्यधिक सुगन्ध है। कुबेर की राजधानी अलकापुरी का बगीचा। यहां के सौगन्धिक फूलों की सुगन्ध बहुत दूर तक फैल जाती है। इसी फूल की खुशबू से आकृष्ट होकर द्रौपदी के लिये सौगन्धिक फूल लाने भीमसेन गये और उनका मिलन अपने भाई हनुमान से हुआ।

सौगन्धिक वन–एक पुण्य स्थल जहां देव, सिद्ध, गन्धर्व, नाग, किन्नर आदि रहते हैं।

सौत्र- ब्राह्मण।

सौदामिनी--बिजली।

सौदास–कोसल के राजा सुदास के पुत्र। इनको मित्रसह और कल्मापपाद भी कहते हैं। इनकी पत्नी मदयन्ती थी। वशिष्ठ के शाप से ये राक्षस बने। राक्षस के जन्म में इन्होंने एक ब्राह्मण को मार खाया जिससे काम पीड़ित ब्राह्मण की पत्नी ने शाप दिया कि स्त्रीप्रसंग करने पर उनकी मृत्यु होगी। बारह साल के बाद राक्षस जन्म से मुक्ति पा ली। ब्राह्मण स्त्री के शाप को जानकर मदयन्ती ने उनको स्त्री सुख से रोक लिया। इससे वे

विरक्त हो गये। वंश-वृद्धि के लिये वसिष्ठ ने मदयन्ती में गर्भदान किया। सात साल के बाद भी जब शिशु बाहर नहीं आया तब वसिष्ठ ने एक पत्थर मार कर शिशु को बाहर किया। इससे शिशु का नाम अश्मक हो गया।

सौनन्द–बलराम का मूसल।

सौप्तिक पर्व–महाभारत का एक पर्व।

सौवल–शकुनी का नाम, सुबल का पुत्र।

सौभ–(१) हरिश्चन्द्र का नगर (२) साल्व राजा का प्रसिद्ध विमान। साल्व शिशुपाल के बड़े मित्र थे। शिशुपाल की मृत्यु के बाद यादव वंश का नाश करने के उद्देश्य से उन्होंने शिव की तपस्या की और उनके प्रसाद से नगर के समान एक विमान मिला। यह सौभ इच्छानुसार कहीं भी ले जा सकते थे, यह देवता, मनुष्य, राक्षस, गन्धर्व आदि किसी से भी नष्ट नहीं हो सकता था। मय ने इसका निर्माण किया था। वह जादुमय अद्भुत था। श्रीकृष्ण के साथ साल्व का तुमुल युद्ध हुआ। भगवान के गदा प्रहारों से साल्व का अमोघ सौभ टुकड़े-टुकड़े होकर समुद्र में गिर पड़ा।

सौमग–उपेन्द्र (वामन) के पुत्र बृहद्श्लोक के पुत्र।

सौभद्र–सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का विशेषण।

सौभर–एक अग्नि।

सौभरी–एक महर्षि जो यमुना के जल के अन्दर रह कर कठिन तप करते रहे। जलान्दर भाग में मछलियों की काम-क्रीडा देख कर दाम्पत्य जीवन बिताने की इच्छा मुनि में पैदा हुई। इसलिये उन्होंने सूर्यवंशी राजा मान्धाता के पास जाकर एक पुत्री को पत्नी रूप में मांगा। राजा की पचास कुमारियाँ थीं। राजा ने कहा कि जो कुमारी आपको वरण करेगी उसको स्वीकार कीजिए। ऋषि को मालूम हो गया कि जल के अन्दर रहने से उनकी कुरूपता, जरा और वृद्धावस्था देख कर कोई कन्या पसन्द न करेगी, ऐसा सोचकर राजा ने यह उत्तर दिया है। महर्षि अपने तप:बल से एक अतीव रूपवान युवक बने और अन्तःपुर मे जाने पर एक की जगह सभी राजकुमारियों ने उनको पति रूप में वरण किया। राजा ने अपनी कन्याओं का विवाह महर्षि से कर दिया। अनेक काल सुखपूर्वक गृहस्थ जीवन बिताकर एक-एक पत्नी से सौ-सौ पुत्रों का जन्म होने पर भोग विलासों से वे अत्यन्त विरक्त हो गये और कठिन तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया। उनकी पत्नियों ने भी उनके उपदेशानुसार तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया।

सौभाग्य–अच्छा भाग्य, सुहाग।

सौभाग्य सुन्दरी–देवी का विशेषण।

सौभाग्य सूत्र–मंगल सूत्र।

सौमदत्ति–बाह्लीक के पुत्र सोमदत्त के पुत्र। इनका अपर नाम भूरिश्रवा था। ये बड़े ही धर्मात्मा, युद्ध-कला मे कुशल, शूर और महारथी थे। इन्होने बड़ी-बड़ी दक्षिणावाले अनेक यज्ञ किये थे। ये महाभारत युद्ध में सात्यकि के हाथ से मारे गये।

सौमना–(१) अष्ट दिक्गजों में से एक (२) एक पर्वत का शिखर जिस पर वामनावतार मे तीन कदम भूमि नापने के लिये भगवान ने कदम रखा था।

सौमिक–सोमरस से मनुष्ठित यज्ञ।

सौमित्र–सुमित्रा का पुत्र, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का विशेषण।

सौम्य–(१) मृदुल, कोमल (२) चन्द्र से सम्बन्धित (३) बुधग्रह।

सौम्यग्रह–शान्त और शुभग्रह जैसे बुद्ध।

सौर–सूर्य सम्बन्धी।

सौर मण्डल–सूर्य मण्डल। भगवान कालचक्र

रूप सौर मण्डल में स्वर्ग और भूमि के बीच आकाश में राशि रूप मेषादि बारह मासों का अतिक्रमण करते हैं और बारहों राशियों से हो कर एक संवत्सर में जाते हैं। सूर्य के मध्य बिन्दु से आठ लाख मील दूरी पर चन्द्र है जो एक महीने में उतनी ही दूरी तय करता है जितनी एक वर्ष में सूर्य करता है। चन्द्र से चौबीस लाख दूर पर नक्षत्र मण्डल है। इससे सोलह लाख मील दूरी पर चन्द्र-पुत्र बुधग्रह है। बुध से परे सोलह लाख मील ऊँचाई पर अङ्गारक है। बुध अधिकतर शुभ करने वाला है। अङ्गारक मंगलग्रह होने पर भी कभी-कभी अमंगल करता है। मंगल ग्रह से सोलह मील दूरी पर शुभग्रह बृहस्पति है जो एक-एक राशि को एक-एक वर्ष में पार करता है। बृहस्पति से सोलह मील ऊँचाई पर एक-एक राशि को तीस महिनों में तय करता हुआ शनैश्चर ग्रह है जो अशान्तिकर है। शनि ग्रह से ८८ लाख मील ऊँचाई पर सप्तर्षि है जो ध्रुवनक्षत्र की प्रदक्षिणा करते रहते हैं और सब जीवों की भलाई करते हैं। सप्तर्षियों से १०४ लाख मील ऊँचाई पर ध्रुव नक्षत्र है। यही सौर मण्डल है।

सौराष्ट्र–एक देश का नाम, आधुनिक गुजरात।

सौवीर–सिन्धुनदी, के पास एक देश। यहाँ के राजा रहूगण ने जड़भरत से तत्वोपदेश लिया था।

सौवीरी–पूरु चक्रवर्ति के पौत्र मनस्यु की पत्नी।

सौश्रुति–त्रिगर्त के राजा सुशर्मा के भाई, भारत युद्ध में अर्जुन से मारे गये।

सौहृद–दक्षिण भारत का एक प्राचीन पुण्य देश।

स्कन्द–(१) स्वामी कार्तिकेय रूप भगवान विष्णु। (२) शिव और श्रीपार्वती के पुत्र स्कन्द देव के जन्म के सम्बन्ध में महाभारत और अन्य पुराणों में विचित्र कथाएँ प्रतिपादित हैं। शिवजी को अनेक काल की कठिन तपस्या के बाद ही श्री पार्वती से विवाह हुआ। शिव का शुक्ल देवी वहन न कर सकी। तब अग्नि ने उसको ले लिया। कई साल बीतने पर उस वीर्य के तेज से अग्नि का तेज मन्द पड़ा। तब अग्नि ने उसको गंगा जल में डाल दिया। कई हजार वर्ष बीतने पर भी जब पुत्र जन्म न हुआ तब ब्रह्मा के उपदेश से गंगा ने उसको उदय पर्वत के शरवण वन में डाल दिया। अनेक वर्ष बीत जाने पर बालार्क की कान्तिवाले एक बालक का जन्म हुआ। उस समय उधर से जाती हुई छः कृत्तिकाओं ने उस दिव्य बालक को देखा। बालक को लेने में उनमें वाद-विवाद हुआ। बालक ने उनको बारी-बारी से देखा जिससे उनके छः मुख हो गये और उनके षड़ानन, षण्मुख नाम पड़े। एक-एक मुख से एक-एक कृत्तिका का स्तन्य-पान किया जिसके वे कार्त्तिकेय कहलाने लगे। शरवण वन में जन्म होने से शरवणभव हुआ। श्री पार्वती, अग्नि, गंगा और शिव सभी ने बालक को अपना पुत्र माना। इसलिये वे स्कन्द, महासेन, कुमार, गुह आदि नामों से प्रसिद्ध हो गये। शिशु को देव, गान्धर्व, किन्नर आदि गणों के सेनानायक के रूप में ओजसतीर्थ में अभिषेक हुआ। उन दिनों कश्यप और दनु के पुत्र वज्रांग और वरांगी का पुत्र तारकासुर ने ब्रह्मा से वर पाया था कि सात दिन का बच्चा ही उसे मार सकेगा और वह भी शिव वीर्य से जन्मा हो। इससे मदान्ध होकर वह तीनों लोकवासियों को सताने लगा। शिव सती के विरह में कठिन तपस्या कर रहे थे। पार्वती का जन्म हिमालय पर्वत के यहां हुआ। भगवान विष्णु के आदेश से देवताओं की प्रार्थना पर

शिव ने श्री पार्वती से विवाह किया और कार्तिकेय का जन्म हुआ। देवासुर युद्ध में बालक स्कन्द के सेनापतित्व में नये जोश और उत्साह से देवता लोग लड़े, और उस ओर उस भयङ्कर युद्ध में स्कन्द ने तारकासुर का वध किया। स्कन्द ने शूर पद्म का भी वध किया। देवसेना और वल्ली इनकी पत्नियाँ हैं; मयूर वाहन; शूल और शक्ति आयुध हैं। संसार के समस्त सेनापतियों में प्रधान हैं।

स्कन्दधर–धर्मपथ को धारण करने वाले भगवान विष्णु।

स्कन्दपुराण–अष्टादश पुराणों में से एक।

स्कन्दषष्टि–चैत्र मास का छठा दिन जो स्कन्द के लिए मुख्य पर्व है। इस दिन व्रत रखकर सुब्रह्मण्य का अभिषेक, पूजा आदि करने से पुण्य मिलता है।

स्तम्भ–स्वारोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

स्तवप्रिय–स्तुति से प्रसन्न होने वाले भगवान विष्णु।

स्तव्य–सब के द्वारा स्तुति किये जाने योग्य भगवान स्तो-जिनके द्वाराभगवान के गुण प्रभाव का कीर्तन किया जाता है वह स्तोत्र।

स्तोत्र–यज्ञ, सूक्त, स्तुति।

स्त्रीपर्व–महाभारत का एक प्रधान पर्व।

स्थण्डिल–वेदि।

स्थण्डिलेयु–पूरु महाराजा के पुत्र रौद्राश्व और मिश्र केशी नामकी अपसरा के पुत्र।

स्थपति–बृहस्पति यज्ञ करने वाला।

स्थविष्ट–विराट रूप में स्थित भगवान।

स्थाणु–[१] स्थिर भगवान् [२] ब्रह्मा के पुत्र शिव का नाम [३] एकादश रुद्रों में से एक [४] एक ऋषि [५] औषधि या सुगन्ध द्रव्य।

स्थाण्डिल–यज्ञ भूमि पर बिना बिस्तर के सोने वाला संन्यासी या धार्मिक भिक्षु।

स्थाणुतीर्थ–कुरुक्षेत्र का पुण्य क्षेत्र।

स्थानद–ध्रुवादि भक्तों को स्थान देने वाले भगवान विष्णु।

स्थावर स्थाणु–स्वयं स्थितिशील रह कर पृथ्वी आदि स्थितिशील पदार्थों को अपने में स्थित रखने वाले विष्णु।

स्थावर–पहाड़, जड़, अचर।

स्थितप्रज्ञ–जब मुमुक्षु की बुद्धि समाधि में अर्थात् परमात्मा में अचल भाव से ठहर जायगी, जिस काल में वह सिद्ध पुरुष मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को भली भाँति त्याग देता है, आत्मा से आत्मा मे ही सन्तुष्ट रहता है, जो सुख–दुःख आदि द्वन्दों मे समान रहता है जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गये हों, इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हैं, ऐसा सिद्ध पुरुष स्थितप्रज्ञ कहलाता है।

स्थिर चित्त–विचार का पक्का, दृढ सकल्प।

स्थूण–विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्र।

स्थूण कर्ण–एक मुनि।

स्थूल शरीर–मज्जा, अस्थि, मेद, माँस, रक्त, चर्म और त्वचा इन सात धातुओं से बने हुए तथा पैर, जंघा, वक्षःस्थल (छाती) भुजा, पीठ और मस्तक आदि अङ्गों से युक्त मैं और मेरा' रूप से प्रसिद्ध इस मोह के आश्रय रूप देह को स्थूल शरीर कहते हैं। आकाश, वायु तेज, जल और पृथ्वी-ये सूक्ष्म भूत हैं। इनके अंश परस्पर मिलने से स्थूल होकर स्थूल शरीर के हेतु होते हैं। इन्हीं की तन्मात्राएँ भोक्ता जीव के भोगरूप सुख के लिये शब्दादि पाच विषय हो जाते हैं। [शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध]। अपने अपने कर्म के अनुसार जीव उत्तमाधम योनियों में जन्म लेकर कर्मफल भोगने के उपयुक्त शरीर धारण करता है। पञ्चभूतों का बना स्थूल शरीर और मन–बुद्धि आदि सत्रह तत्वों का का बना सूक्ष्म शरीर दोनों ही दृश्य और

जड़ है। यह नश्वर होता है।

स्थूलाक्ष–[२] एक राक्षस जो पञ्चवटी में श्रीराम से मारा गया। [२]एक दिव्य ऋषि

स्थैर्य–सहनशीलता।

स्नातक–ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्ययन समाप्त कर गुरुकुल से अभी लौटा ब्रह्मचारी।

स्नुषा–पुत्रवधू।

स्पर्शेन्द्रिय–स्पर्श का ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय।

स्पृहा–प्रबल कामना।

स्मर–[१] कामदेव [२] प्रेम।

स्मर शासन–शिव का विशेषण।

स्मार्त–[१] परंपरा प्राप्त धर्म का विशेषज्ञ ब्राह्मण (२) स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक सम्प्रदाय।

स्मृति–(१) धर्म संहिता, स्मृति ग्रन्थ (२) ऋषि अंगिरा की पत्नी। इनके सिनीवाली, कुहू, राका, अनुमती नाम की चार पत्रियाँ थीं।

स्मृति विरोध–धर्म का वैपरीत्य।

स्यमन्तक–सत्राजित को सूर्य भगवान से प्राप्त दिव्य रत्न जिससे प्रति दिन आठ भार स्वर्ण मिलता था और जो सब प्रकार के संकट और अपशकुनों से रक्षा करता था। (दे: सत्राजित)।

स्यमन्तपञ्चक–दे: समन्तपञ्चक।

स्रज–एक विश्वदेव।

स्रुवा–लकडी का बना एक प्रकार का चमचा जिसके द्वारा यज्ञाग्नि में घी की आहुति दी जाती है।

स्रोतस–सरिता, नदी।

स्रोतसांपति–सागर।

स्रोतस्विनी–नदी।

स्वक्ष–मनोहर कृपा कटाक्ष से युक्त परम सुन्दर आंखों वाले भगवान् विष्णु।

स्वङ्ग–अतिशय कोमल परम सुन्दर मनोहर अङ्गों वाले भगवान्।

स्वधा–(१) पितृगणों की पत्नी। पितृगणों की सृष्टि कर ब्रह्मा ने उनका आहार तर्पण पूर्ण श्राद्ध की व्यवस्था की जिसका अनुष्ठान ब्राह्मणों को करना था। लेकिन जब पिण्ड भाग पितरों को नहीं मिला तब उनके आहार की व्यवस्था के लिए रूपवती, गुणवती, ज्ञानवती युवती स्वधा की सृष्टि की और ब्राह्मणों को आदेश दिया कि स्वधा मन्त्र से पितृगणों का तर्पण करें। इससे उनको आहार मिलने लगा। इनकी मेना और धारिणी नाम की दो पुत्रियाँ हुईं जो ज्ञानी और ब्रह्मवादिनी थीं। (२) अन्न या आहुति। (३) सांसारिक भ्रम।

स्वन–सत्य नाम अग्नि का पुत्र।

स्वप्न–(१) जीव की चार अवस्थाओं में से एक। इस अवस्था में स्थूल शरीर का अस्तित्व, ज्ञान नहीं रहता। (२) स्वप्न दो प्रकार के हैं सुस्वप्न और दुस्वप्न। स्वप्न में मलिन वस्त्र धारण करना, तेल लगाना, विवाहित होना, सर्पों को मारना, नग्नता, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदियों का उत्पाद देखना ये सब दुस्वप्न हैं। इसके दोष का परिहार है स्वप्न की बात किसी से नहीं कहना, इष्टदेव का नाम जपना, स्वप्न देखने के बाद फिर सोना या स्नान करना आदि अच्छा है। सफेद पुष्प, गाय, भैंस, हाथी आदि को देखना, सुरापान, मद्यपान, दुग्धपान, जराग्रस्त होना, कच्चा मांस, रक्त आदि देखना सुस्वप्न माने जाते हैं। अरुणोदय में देखे स्वप्नों का फल शीघ्र मिलता है।

स्वयंप्रभा–विन्ध्य पर्वत में ऋषिबिल नामक गुफा थी। वहाँ अनेक प्रकार के फल वृक्षों और फूल पौधों से युक्त सुन्दर उद्यान थे। कहीं सोने के बर्तन की ढेर, कहीं अमूल्य रत्न सम्पत्ति जिसके प्रकाश से सारी गुफा प्रकाश-

मय थी। वहाँ अनेक प्रकार की अद्‌भुत वस्तुएँ थीं। वहाँ स्वयंप्रभा नाम की एक ब्रह्मचारिणी तपस्विनी रहती थी। वह वल्कल और कृष्णाजिन पहनती थी और तपस्या से अति उज्ज्वल थी। वह सुवर्णमय गुफा मय ने बनायी थी। अनेक काल तपस्या कर मय ने ब्रह्मा से अतुल सम्पत्ति और सिद्धि पायी। हेमा नाम की अपसरा उसकी पत्नी थी और उसके साथ यहां रहता था। इन्द्र ने मय का वध किया। ब्रह्मा ने यह सुवर्ण महल हेमा को दिया। हेमा नाच गान में चतुर थी। उसकी सखी स्वयंप्रभा मेरु सावर्णि की पुत्री थी। हेमा के स्वर्ग वापस जाने पर स्वयंप्रभा यहां रहती थी। अंगद, हनुमान आदि वानर सीता की खोज में इधर आये थे। वानरों से उनका चरित सुनकर स्वयंप्रभा ने उनको गुफा से बाहर कर दिया और फिर गुफा में लौटकर तपस्या करने लगी।

स्वयंभू–(१) स्वयं उत्पन्न होने वाले भगवान विष्णु। (२) ब्रह्मा का नाम। (३) शिव का नाम।

स्वयंवर–प्राचीन काल में कन्या (प्रायः राजकुमारियाँ) अपने वर को स्वय चुन लेती थी। इसको स्वयंवर कहते है। स्वयंवर दो प्रकार के होते थे, एक इच्छा स्वयंवर जिसमें कन्या अपनी इच्छा के अनुसार पति को चुन लेती थी। दूसरा सव्यवस्था स्वयंवर जिसमें कन्या को पाने की कुछ व्यवस्था होती थी जैसे सीता स्वयंवर में शैवचाप संधाना, द्रौपदी स्वयंवर में लक्ष्य वेध करना।

स्वर्ग–वैकुण्ठ, इन्द्र का स्वर्ग। भूलोक में कामना सहित सत्कर्म करने वालों का अस्थायी आवास जहाँ अपने सत्कर्मों का फल भोगते है। यहाँ अधि-व्याधि, जरा-मरा, दुःख आदि कुछ नहीं है। सर्वत्र सर्वथा सुख सम्पत्ति है। सुर सुन्दरियों के साथ विहार कर सकते हैं। यह भुवर्लोक और महर्लोक के बीच में स्थित है यह विराट पुरुष का वक्षःस्थल माना जाता है।

स्वर्गतीर्थ–नैमिषारण्य का एक पुण्य तीर्थ।

स्वर्गद्वार–(१) स्वर्ग का दरवाजा। (२) कुरुक्षेत्र का एक पुण्य स्थान।

स्वर्गपति–इन्द्र।

स्वरगंगा–स्वर्ग में बहने वाली गंगा की धारा, मन्दाकिनी।

स्वर्गारोहण–मृत्यु, सत्कर्म करने वाले मृत्यु पर स्वर्ग चले जाते हैं।

स्वर्गीय–स्वर्ग का, दिव्य, मृत।

स्वर्णकाय–गरुड़ का विशेषण।

स्वर्णपक्ष–गरुड़ का विशेषण।

स्वर्णपुष्प–चम्पक, वृक्ष।

स्वर्णरोम–एक सूर्यवंशी राजा जो महारोम के पुत्र थे। इनके पुत्र प्रस्थरोम थे।

स्वर्भानु–कश्यप और दनु का पुत्र एक दानव। इसका दूसरा नाम राहु है। अमृत मंथन के बाद भगवान मोहिनी का वेष धारण कर देवताओं को अमृत बांट रही थी। स्वर्भानु वेष बदल कर देवताओं की पंक्ति में बैठ गया और अमृतपान किया। उसी समय सूर्य और चन्द्र ने भगवान को यह बात बतायी और भगवान ने चक्र से उसका सिर काट डाला। अमृत पीने से सिर का हिस्सा अमर हो गया और राहु नाम का ग्रह बना। (२) श्रीकृष्ण और सत्यभामा का एक पुत्र।

स्वर्वीथी–ध्रुव के पुत्र वत्सर की पत्नी। इनके छः पुत्र थे पुष्पार्ण, तिग्मकेतु, ईश, ऊर्ज, वसु और जय।

स्वस्ति–(१) कल्याणरूप भगवान विष्णु (२) मन्त्र पाठ या प्रायश्चित द्वारा पाप को कटाना। (३) दान स्वीकार करने के बाद ब्राह्मण का धन्यवाद देना।

स्वस्तिक–(१) एक मंगल चिह्न (२) एक

योगासन (३) एक नाग ।

स्वस्तिकृत–आश्रित जनों का कल्याण करने वाले भगवान् ।

स्वस्तिद–परमानन्द रूप मंगल देने वाले भगवान विष्णु ।

स्वस्ति दक्षिण–कल्याण करने में समर्थ और शीघ्र कल्याण करने वाले भगवान ।

स्वस्तिभुक–भक्तों के परम कल्याण की रक्षा करने वाले विष्णु ।

स्वस्तिमुख–(१) ब्राह्मण (२) स्तुति पाठक ।

स्वस्तिवाचन–(१) यज्ञ या कोई मांगलिक कार्य आरम्भ करते समय किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य । (२) फूलों द्वारा आशीर्वाद देना ।

स्वह्न–आकूति और रुचि प्रजापति के पुत्र यज्ञ को स्वायंभू मनु ने पुत्रिका रूप में स्वीकार किया था । उनकी पुत्री रुचि की पुत्री होकर रही । यज्ञ और दक्षिणा के बारह पुत्रों में से एक स्वह्न थे जो स्वारोचिष मन्वन्तर में अपने भाइयों के साथ तुषित नाम का देवगण बने ।

स्वाति–(१) एक शुभ नक्षत्र (२) चाक्षुष मनु के पुत्र उरु और आत्रेयी के पुत्र ।

स्वात्मारामा–स्वात्मा में आनन्द लेने वाली देवी ।

स्वाधिष्ठानाम्बुज–लिंग स्थान में छः दलों वाला कमल ।

स्वाधीनवल्लभा–(१) पति जिनके स्वाधीन में है ऐसी देवी । (२) देवी की उपासना से पति जिसके स्वाधीन हो गया हो ऐसी नारी ।

स्वायम्भुव-मनु–ब्रह्मा के पुत्र प्रथम मनु । ब्रह्मा दो रूपों में हो गये एक मनु और स्त्रीरूप शतरूपा । ब्रह्मा ने मनु से प्रजासृष्टि करने को कहा । मनु ने शतरूपा को अपनी पत्नी बनायी और मैथुन कर्म से सबसे पहले सृष्टि होने लगी । उनके प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र और आकूति, प्रसूति और देवहूति नाम की तीन पुत्रियाँ हुईं । सृष्टि विस्तार के लिए मनु ने प्रसूति का विवाह दक्ष प्रजापति से, आकूति का रुचि प्रजापति से और देवहूति का कर्दम प्रजापति से किया । इस मन्वन्तर में विविध प्रकार की सृष्टि हुई । मनु की सबसे पहले इला नाम की पुत्री हुई जिसने मनु की वृहस्पति से प्रार्थना करने पर पुरुषत्व प्राप्त किया था ।

स्वारोचिष–दूसरे मन्वन्तर के मनु । ये अग्नि के पुत्र थे । द्युमान, सुषेण, रोचिष्मान आदि इनके पुत्र थे । इस मन्वन्तर में रोचन इन्द्र थे; ताप, प्रतोष, सन्तोष, भद्र, शान्ति, इडस्पति, इध्म, कवि, विभु, स्वह्न और सुदेव (भगवान् यज्ञ और दक्षिणा के पुत्र) तुषित नाम के देवगण थे । ऊर्ज (वसिष्ठ के पुत्र), स्तम्भ (कश्यप प्रजापति के पुत्र) प्राण, वृहस्पति, अग्नि, दत्त, और च्यवन सप्तर्षि थे । महर्षि वेदशिर और उनकी पत्नी तुषिता के पुत्र विभु नाम से भगवान ने जन्म लिया और नित्य ब्रह्मचारी रहे ।

स्वास्य–सुन्दर मुख वाले भगवान विष्णु ।

स्वाहा–(१) यागादियों में देवताओं के उद्देश्य से आहुति देते समय मन्त्र के अन्त में बोले जाने वाला शब्द । (२) अग्नि की पत्नी स्वाहा देवी और दहन शक्ति । इनके तीन पुत्र पावक, पवमान और शुचि थे । (३) वह्निमूर्ति शिव की पत्नी । (४) महेश्वरी पीठ की अधिष्ठात्री । (५) वृहस्पति की पुत्री ।

स्वेदज–एक असुर ।

स्वैरिणी–व्यभिचारिणी ।

ह

हंस–(१) पक्षियों की एक श्रेष्ठ जाति राजहंस या मराल। कवियों के लिए अत्यन्त प्रिय है। यह ब्रह्मा का वाहन कहा जाता है और ऐसा विश्वास है कि मानसरोवर में रहता है दूध पानी मिला हुआ हो तो अलग कर सकता है। (२) परमात्मा, परब्रह्म (३) आत्मा (४) विष्णु का नाम।

हंसकाय–एक क्षत्रिय जाति।

हंसकूट–एक पर्वत जो हस्तिनापुर और शतशृङ्ग पर्वत के बीच में स्थित है।

हंसचूड़–एक यक्ष।

हंसगामिनी–हंस की सी सुन्दर गति वाली स्त्री।

हंसपथ–एक पुराण प्रसिद्ध जनपद।

हंसवक्त्र–स्कन्ददेव का एक वीर योद्धा।

हंसवाहन–महाराजा भगीरथ की पुत्री कौत्स नामक ऋषि से हुआ।

हंसिका–सुरभी की एक पुत्री एक गाय जो दक्षिण दिशा में खड़ी है।

हठयोग–योग की एक विशेष रीति। इसका अभ्यास बहुत कठिन है।

हतभाग्य–भाग्यहीन।

हनुमान्–हनुमान् शिव जी के बीज से उत्पन्न हुए थे। एक बार शिवजी और श्री पार्वती वानरों के रूप मे खेलते समय देवी गर्भिणी हुई। वानर शिशु की माँ बनने की देवी की इच्छा नहीं थी। शिव ने गर्भस्थ शिशु को योग शक्ति से वायु को दिया और वायु उसको लेकर घूमते रहे। उस समय अपुत्र दुःख से पीड़ित वानर श्रेष्ठ केसरी और अञ्जना को देखा। वायु ने गर्भ को अञ्जना के उदर में रखा। अञ्जना ने हनुमान् को जन्म दिया और उनका आञ्जनेय नाम पड़ा। ये वायु के पुत्र भी माने जाते हैं, इसलिए वायु पुत्र, मारुति आदि भी नाम है। पैदा होने के बाद आकाश-मण्डल पर प्रज्वलित सूर्य को देख कर कोई फल समझ कर हनुमान ऊपर को कूदे। इन्द्र ने डर के मारे वज्र प्रहार किया जिससे घायल होकर हनुमान नीचे गिरे। अपने पुत्र की दशा देख कर कोप ताप से पीड़ित वायु पुत्र के साथ पाताल में जा छिपे। वायु के बिना तीनों लोकों में जीना मुश्किल हो गया। ब्रह्मादि देवताओं ने वायु से प्रार्थना की और हनुमान को अमरत्व, अतुल्य बल, भगवान विष्णु में अनन्य भक्ति आदि कई वर दिये। हनु लगने से हनुमान नाम पड़ा। सूर्य से सभी वेद और शास्त्र बड़ी श्रद्धा भक्ति से सीखी। सूर्य भगवान के आदेश से सूर्य पुत्र सुग्रीव के मित्र और मन्त्री बन गये। ऋष्यमूक पर्वत पर श्रीराम और लक्ष्मण से मुलाकात हुई और अपने इष्टदेव को पहचान कर श्रीराम की सेवा मे रहे। उनकी जिह्वा पर हमेशा श्रीराम नाम रहता है हृदयान्तर भाग मे सीता समेत श्रीरामचन्द्र विराजमान हैं। सीता की खोज मे हनुमान ने मुख्य भाग लिया। समुद्र लांघ कर लंका में सीता का पता लगाया। श्रीराम जानते थे कि हनुमान ही सीता का पता लगायेंगे, इसलिए मुद्रांगुलीय उनको दिया था। लंका मे जाकर अपनी शक्ति दिखाने के लिए लंका का दहन किया। श्रीराम के जीवन काल भर उनकी पाद सेवा करते रहे। द्वापर युग में इन वृद्ध वानर को न पहचान कर मारुत पुत्र भीमसेन अपने बल के गर्व से उनकी अवहेलना की। बल परीक्षण में एक वृद्ध वानर से पराजित होने पर वे अत्यन्त दुःखी हुए। अन्त में अपने भाई को पहचान लिया। भीमसेन की अमानुषिक शक्ति से संतुष्ट

होकर भारत युद्ध में अर्जुन के ध्वजा पर बैठकर पाण्डवों को प्रोत्साहन देने का वचन हनुमान ने दिया । वे आज भी कैलाश पर्वत पर कदली वन में श्री राम के ध्यान में निमग्न रहते हैं । किम्पुरुष वर्ष में किम्पुरुषों के साथ गन्धर्वों का गान सुनते हुए श्री रामचन्द्र की स्तुति करते रहते हैं ।

हयग्रीव–गत कल्प के नैमित्तिक प्रलय के समय जब ब्रह्मा निद्राधीन हो रहे थे हयग्रीव नामक असुर ने उनके मुख से वेद छीन लिये । यह कश्यप प्रजापति और दनु का पुत्र था । बचपन में ही तपस्या कर देवी से वर प्राप्त किया था कि हयग्रीव से ही मृत्यु होगी । वर लाभ से क्रूर उसकी दुश्चेष्टाओं से तीनों लोकों के निवासी त्रस्त हो गये । विष्णु भगवान से युद्ध हुआ, लेकिन वह पराजित नहीं हुआ । थके भगवान धनुष के सहारे लेटे थे जब कि धनुष की डोर के टूटने से उसके अग्र से सिर कट गया । विश्वकर्मा ने एक अश्व का सिर जोड़ दिया । हय शिर होकर हयग्रीव से लड़े और उसका वध कर वेदों और देवों की रक्षा की । भद्राश्व वर्ष में भगवान के हय ग्रीव मूर्ति की उपासना होती है । (२) जनक वंश के एक राजा (३) नरकासुर का एक पुत्र ।

हयशिर–भगवान विष्णु का नाम ।

हयशिरा-कश्यप प्रजापति और दनु के पुत्र वैश्वानर की चार लड़कियों में से एक–उपदानवी, हयशिरा, पुलोमा, और कालका । ये चारों अति रूपवती थी । यह क्रतु की पत्नी थी ।

हर–(१) शिव, एकादश रुद्रों में से एक ।(२) अग्नि ।

हरि–(१) भगवान विष्णु का नाम, दुःखों को हरण करने वाले । चौथे मन्वन्तर में गजेन्द्र को मगर से छुड़ाकर उनका दुःख निवारण करने के लिये महाविष्णु ने हारिणी और हरिमेधा के पुत्र हरि नाम से जन्म लिया ।(२) वानर (३)तारकाक्ष का पुत्र एक असुर(४) धर्मदेव और दक्षपुत्री का एक पुत्र (५) तामस मन्वन्तर का एक देव गण (६) अश्वों का एक विभाग । (७) सूर्य का नाम (८) इन्द्र का नाम ।

हरिचन्दन–(१) एक प्रकार का पीला चन्दन (२) स्वर्ग के पांच वृक्षों में से एक ।

हरिण–(१)एक नाग जो जनमेजय के सर्प सत्र में जल मरा था । (२) विष्णु का नाम(३) शिव ।

हरिणाक्षी–मृग की जैसी सुन्दर आंखों वाली स्त्री ।

हरिणाश्व–एक राजा जिनको रघु महाराज से एक तलवार मिली थी ।

हरिणी–(१) चौथे मन्वन्तर में भगवान हरि के नाम से इनके पुत्र होकर जन्में ।

हरिताश्व–सूर्यवंश के एक राजा जो गान विद्या में अति निपुण थे, देवताओं को भी पराजित किया था । देवताओं की प्रार्थना पर ये अन्धकासुर से लड़ने गये । असुर के उदर में एक माहेश्वर विग्रह था जिसके प्रभाव से कोई उसे न मार सकता था । अगस्त्य से यह रहस्य मालूम कर हरिताश्व ने बाण प्रयोग से पहले उस विग्रह को हटाया फिर असुर को मारा ।

हरिप्रद–एक नाग ।

हरिद्रान्न–हल्दी मिलाकर बना अन्न जो देवी को प्रिय है ।

हरिमित्र–एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण जिनके संग में रह कर पापी विकुण्डल दो माघ मास में कालिन्दी के पुण्य तीर्थ में स्नान किया था । पापी होने पर भी सत्संग से माघ स्नान करने से उसको स्वर्ग प्राप्त हुआ ।

हरिमेधा–[१] तामस मन्वन्तर में गजेन्द्र को मोक्ष देने के लिये महाविष्णु ने हरिमेधा के

हरिके नामसे जन्म लिया।[२]एक प्राचीन ऋषि।

हरिवंश–महाभारत का एक भाग जिसमें महाविष्णु की स्तुति गायी गयी है। इसमें हरिवंश पर्व, विष्णु पव और भविष्यत् पर्व नामक तीन भाग हैं।

हरिवर्ष–[१]जम्बूद्वीप का एक विभाग, निषाद पर्वत उसके उत्तर की ओर स्थित है। [२] अग्नीन्ध्र और पूर्वचित्ती का एक पुत्र।

हरिश्चन्द्र—एक सूर्यवंशी राजा जो सत्य सन्धता के लिये प्रसिद्ध थे। सत्य का पालन करने के लिए उनको अपने तक को बेचना पड़ा। ये त्रिशकु के पुत्र थे। सत्य का पालन करने के लिये राजा ने विश्वामित्र को अपना राज्य दान कर दिया। विश्वामित्र सर्वस्व दान मांगते थे। राजा ने अपने पुत्र रोहिताश्व और पत्नी चन्द्रमती को भी बेचा। दान की दक्षिणा देने में असमर्थ राजा ने अपने आप को एक चाण्डाल के हाथ बेच दिया और श्मशान की रखवाली करने लगे। चन्द्रमती और उनका पुत्र एक ब्राह्मण को बेचे गये थे। उनको अनेक कठिनाइयाँ सहनी पड़ीं, राजा को बहुत कष्ट उठाने पड़े, लेकिन अपने वचन के पक्के रहे। सांप के काटने से रोहित की मृत्यु हुई। अनाथ रानी ब्राह्मण के घर से रात तक छुट्टी न पा सकी। रात होने पर पुत्र का संस्कार करने के लिए शव को लेकर श्मशान गयी। हरिश्चन्द्र ने पत्नी को नहीं पहचाना और अपने मालिक की आज्ञा के अनुसार दाह क्रिया का शुल्क लिये बिना संस्कार करने नहीं दिया। बेचारी रानी के पास पैसा नहीं था। तब हरिश्चन्द्र ने कहा कि गले का मंगल सूत्र बेच कर शुल्क देने को। रानी को आश्चर्य हुआ क्योंकि वह चिह्न केवल हरिश्चन्द्र ही देख सकते थे। दोनों ने एक दूसरे को पहचाना। वह चण्डाल धर्मदेव थे। हरिश्चन्द्र की सत्यसन्धता देखकर भगवान वहां प्रत्यक्ष हुए। राजा को अपना राज्य, सम्पत्ति और वैभव वापस मिला। रोहित पुनर्जीवित हो गया।

हर्यश्व–दक्ष प्रजापति और पांचजनी के दस हजार पुत्र जो सब के सब धर्मशील और रूप गुण मे समान थे। पिता के आदेश से ये प्रजा सृष्टि के उद्देश्य से भगवान की उपासना करने पश्चिम की ओर गए और नारायण सर में गए। उसमे स्नान मात्र से हृदय परिशुद्ध होता है। एकाग्र मन से कठिन तपस्या करते समय नारद–ऋषि ने वहां आकर उनको संसार की अनित्यता, नित्यमुक्ति आदि के बारे में उपदेश दिया। वे विरक्त हो गए और घर को न लौट कर तपस्या कर मुक्त हो गए। [२] इन्द्र का विशेषण। [३] शिव [४] इक्ष्वाकुवश के राजा घृतास्य के पुत्र। इनके पुत्र निकुम्भ थे। [५] मान्धाता के वंश मे राजा अनरण्य के पुत्र। इनके पुत्र अरुण थे। [६] एक काशी राजा।

हर्ष–[१] [१] धर्मदेव का एक पुत्र। [२] बारहवीं शताब्दी के एक संस्कृत कवि। ये कन्नौज के राजा जयचन्द्र की राजसभा के आस्थान कवि थे। इन्होंने नैषध नामक एक महाकाव्य रचकर बड़ी प्रशस्ति पायी।

हर्षण–कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

हलधर–बलभद्र का दूसरा नाम।

हला–मदिरा, पृथ्वी।

हलायुध–बलराम का विशेषण।

हलाहल–कालकूट विष। [दे: कालकूट]

हलीक–एक नाग।

हवन–[१] यज्ञ [२] अग्नि में वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ देवों की प्रीति के लिए आहुतियाँ देना[३] एकादश रुद्रों में से एक।

हविर्धान–पृथु पुत्र अन्तर्धान और उनकी पत्नी नभस्वती के पुत्र। राज-कार्य को क्रूर समझ कर उन्होंने दीर्घसत्र करने के बहाने छोड़ दिया

और आत्मा में विराजमान भगवान की उपासना कर उनके पद को प्राप्त किया। हविर्धान के उनकी पत्नी हविर्धानी से बर्हिष, गय, शुक्ल, कृष्ण, सत्य, जयव्रत नाम के छः पुत्र हुए ।

हविर्धानी–दे: हविर्धान ।

हविर्भू–ब्रह्मा के मानस पुत्र पुलस्त्य की पत्नी। इनके पुत्र महातपस्वी अगस्त्य और विश्रवा थे ।

हविष्मती–अंगिरा की एक पुत्री ।

हविष्मान्–एक महर्षि ।

हविष्य–आहुति देने योग्य कोई भी वस्तु ।

हविष्यान्न–व्रत और अन्य पर्वों के अवसर पर खाने योग्य सात्विक भोजन ।

हविस्–आहुति या हवनीय द्रव्य ।

हव्य–आहुति के रूप मे दिया जाने वाला पदार्थ ।

हव्यकव्य–देवों और पितरों को आहुति ।

हव्यवाहन–आहुतियों को ले जाने वाला, अग्नि।

हस्त–वसुदेव और रोचना के एक पुत्र ।

हस्ति–दुष्यन्त पुत्र भरत के वंशज वृहत क्षत्र के पुत्र । इन्होंने हस्तिनापुर की नगरी बनायी इनके अजमीढ़, द्विमीढ़, और पुरुमीढ़ नाम के पुत्र हुए।

हस्ति कश्यप–एक महर्षि ।

हस्ति मल्ल–(१) ऐरावत (२) गणेश ।

हस्तिनापुर–कौरवों की राजधानी (दे: हस्ति)

हस्तिभद्र–एक नाग ।

हस्तिसोमा–एक पुण्य नदी ।

हाकिनी–मज्जायोगिनी, देवी का विशेषण ।

हाटक–(१) अतल में प्राप्त जोश, उत्साह आदि पैदा करने का एक प्रकार का रसायन। इसका पान कर स्त्री पुरुष का मासक्त होते हैं। इसके पान से मनुष्य अपने को अतिशय बलवान, सब प्रकार से पूर्ण समझता है। (२) हिमालय का उत्तर प्रदेश (३) सुवर्ण।

हाटकगिरि–सुमेरु पर्वत ।

हाटकी–वितल में भगवान शिव भव के नाम से अपनी प्रिया श्री पार्वती और अन्य भूत गणों के साथ प्रजा सृष्टि की वृद्धि के लिए रहते हैं। इन दोनों के वीर्य से युक्त हाटकी नदी यहाँ बहती है। यहां अग्नि वायु की सहायता से उस नदी का पानी सोख लेता है और फेन के रूप में फेंका जाने पर हाटक नामक सोना बनता है। इससे असुर और असुर स्त्रियों के आभूषण बनते हैं ।

हाटकेश्वर–वितल में भगवान शिव इस नाम से रहते हैं ।

हार–(१) एक प्राचीन देश (२) मोतियों की माला ।

हारित–(१) एक असुर (१) विश्वामित्र का एक पुत्र (३) एक प्रकार का कबूतर ।

हार्दिक–हृदीक के पुत्र थे ।

हाला–मदिरा ।

हासिनी–अलकापुरी की एक अप्सरा ।

हाहा–कश्यप और प्राधा का पुत्र एक गन्धर्व ।

हिंसक–अथर्ववेद में निपुण ब्राह्मण ।

हिडिम्ब–एक राक्षस जिसको भीमसेन ने मारा था ।

हिडिम्बी–हिडिम्ब नामक राक्षस की बहन जो भीमसेन को देखकर उन पर अनुरक्त हो गयी। भीम ने पहले उसको अस्वीकार किया, पीछे माता के आदेश से हिडिम्बी से विवाह किया और उनका घटोत्कच नामक पुत्र हुआ ।

हिडिम्बवन–वह वन जहाँ हिडिम्ब रहता था।

हितोपदेश–पञ्चतन्त्र के आधार पर रचित कथाओं का समाहार ।

हिम–(१) सर्द ऋतु (२) चन्दन की लकड़ी।

हिमगिरि–हिमालय पहाड़ ।

हिमद्युति–चन्द्रमा ।

हिमशैल–हिमालय पर्वत ।

हिमांशु–चन्द्रमा ।

हिमाद्रि–हिमालय पर्वत ।

हिमालय–भारत की उत्तर सीमा पर स्थित एक कुल पर्वत । हिमवान् को देवता रूप मानते हैं और दिव्यत्व कल्पित किया गया है । हिमवान् की पत्नी मेना है और पुत्री श्री पार्वती । पुराणों में हिमालय का विशेष स्थान है । यहाँ अनेक पुण्य स्थान, तीर्थ और नदियाँ हैं । बदरीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ, ऋषीकेश आदि लोक प्रसिद्ध मन्दिरों से अति पावन समझा जाता है । युग-युगान्तर से यहाँ का कण-कण अनेक दिव्य ऋषि मुनियों के पवित्र पादस्पर्श से अति पावन हो गया है । यहां का जल, वायु, फूल, पत्ते सब पवित्र हैं । आज भी ब्रह्म साक्षात्कार करने के इच्छुक अनेक ऋषि मुनि और तपस्वी यहां की गुफाओं मे तपस्या करते है । यहा से ही गंगा, यमुना, अलकनन्दा आदि पुण्य नदियां निकलती है ।

हिरण्मय–ब्रह्मा ।

हिरण्मय वर्ष–जम्बू द्वीप का एक प्रधान विभाग जो इलाव्रत के उत्तर मे स्थित है जिसकी सीमा पर नील, श्वेत, शृङ्गवान नामक पर्वत है ।

हिरण्यकशिपु–कश्यप और दिति के दो पुत्र थे- हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष । देवताओं का वैभव देख कर दुःखी दिति ने सुद्वेषी पुत्र की कामना से सन्ध्या के समय अपने पति कश्यप के पास गई । कश्यप ने दिति की हठ पर पुत्रोत्पादन किया; लेकिन शाप दिया कि घोर वेला में पुत्रोत्पादन होने से पुत्र भी घोर दानव बनेंगे । दिति की प्रार्थना पर यह वर दिया कि दोनों अति बलवान होंगे और भगवान विष्णु के हाथ से ही मरेंगे । ये दोनों भाई भगवान के शापग्रस्त पार्षद जय और विजय के पुर्नजन्म थे । दोनों भाइयों ने तपस्या कर ब्रह्मा से अनेक वर पाये । हिरण्यकशिपु को वर मिला कि मनुष्य, पक्षी, जानवर, देव, गन्धर्व, किन्नर, यक्ष आदि कोई भी उसे न मारेगा, न दिन न रात, भूमि या आकाश में न अन्दर या बाहर उसकी मृत्यु होगी । इस अनोखे वर को प्राप्त कर उसने अपने भाई के घातक विष्णु भगवान से बदला लेना चाहा । भगवान की शक्ति यज्ञ हवनादियों में जान कर यह घोषणा की कि कोई भी यज्ञ, हवन, पूजा पाठ न करें, यदि करना हो तो हिरण्यकशिपु को सर्वेश्वर मान कर उसके नाम का जप करें । उसकी पत्नी कयाधु थी जिससे उसके सह्लाद, अनुह्लाद, ह्लाद और प्रह्लाद नाम के चार पुत्र हुए । हिरण्यकशिपु सज्जनों पर अत्याचार करने लगे । ऋत देवता ने जब महाविष्णु की शरण ली तब भगवान् ने कहा जब मेरे भक्त प्रह्लाद पर किये अत्याचारों की सीमा पहुँचेगी तब मैं उसका निग्रह करूँगा । गर्भस्थ अवस्था में नारद से सीखे धर्मोपदेशों और तत्वों को प्रह्लाद नहीं भूले और बचपन से ही भगवान के अनन्य भक्त बने । उनको ठीक रास्ते पर लाने के लिये हिरण्यकशिपु ने शुक्र पुत्र षण्ड और अमर्क को गुरु बनाया । गुरु के उपदेशों को प्रह्लाद ने नहीं माना । पिता ने अनेक कठिन दण्ड दिये जैसे पहाड़ के ऊपर से गिराना, अग्नि मे डालना, मदमस्त हाथियों से कुचलवाना आदि । हर अवसर पर भगवान ने भक्त की रक्षा की । अन्त मे अत्यन्त कुपित हिरण्यकशिपु ने अपने प्रिय पुत्र की जान लेने पर तुले हो गये और कहा कि यदि तुम्हारे भगवान सभी चराचर वस्तुओं में हैं तो इस खम्भे मे होंगे, और तुम्हारी रक्षा करेंगे । ऐसा कह कर ज्यों ही प्रह्लाद को मारने के लिए तलवार उठाकर वार किया, त्यों ही एक अति भीषण शब्द से वह खम्भा टूट गया । इस शब्द से अण्डकटाह

फटा, ब्रह्मादि देवताओं ने अपने-अपने धाम का नाश समझ लिया। हिरण्यकशिपु ने भी उस अभूतपूर्व अद्भुत शब्द को सुना और उस स्तम्भ से एक अदृष्टपूर्व सत्व को निकलते देखा जो न मनुष्य था न जानवर। भगवान दुष्ट निग्रह और भक्त की रक्षा के लिए नरसिंह की मूर्ति के रूप में निकले जिनकी आंखें पिघले सोने के समान उज्ज्वल थीं। भगवान ने ब्रह्मा के वर को सत्य बनाने के लिए यह रूप धारण किया और असुर का पकड़ कर सभा द्वार पर बैठकर गोद में उसको लिटा कर सन्ध्या के समय अपने नखों से उसका उदर फाड़कर मारा।

हिरण्यगर्भ–(१) महाविष्णु का विशेषण (२) सोने के अंडे से पैदा होने के कारण ब्रह्मा का नाम।

हिरण्यधनु–एक भील राजा जिसके पुत्र एकलव्य थे।

हिरण्यनाभ–(१) हितकारी और रमणीय नाभि वाले भगवान विष्णु (२) इक्ष्वाकु वंश के विधृत के पुत्र थे जो योगाचार्य थे और जैमिनि ऋषि के शिष्य थे। कोशल देश के याज्ञवल्क मुनि ने उनसे संसार बन्धन का नाश करने वाले और मुक्ति प्रदान करने वाले योग की शिक्षा ली। हिरण्यनाभ के पुत्र पुष्य थे।

हिरण्यपुर–दैत्यों की नगरी जिसको कालका ने अपने पुत्रों के लिए ब्रह्मा से वरदान में पाया था। यह रत्नपूर्ण, सुख-भोगों की सामग्रियों से भरा,आकाश में स्वच्छन्द विहार कर सकने वाला नगर है। यहां कालका के पुत्र और अन्य दैत्य नाग आदि रहते थे। कालका के पुत्र कालकेयों को वर मिला था कि उनकी मृत्यु मनुष्य से ही होगी। इसलिए इन्द्र ने अर्जुन को स्वर्ग बुलाया। अर्जुन ने कालकेयो का वध कर हिरण्यपुर का ध्वंस किया।

हिरण्यबाहु–(१) शिव का विशेषण (२) एक नाग। (३) सोन नदी।

हिरण्य बिन्दु–हिमालय का एक पुण्य स्थान।

हिरण्यरेता– (१) मनु पुत्र प्रियव्रत और बर्हिष्मती के दस पुत्रों में से एक। ये अग्नि देव के नामों से पुकारे जाते थे–अग्नध्र, इध्मजीव, यज्ञबाहु, महावीर हिरण्यरेता, घतपृष्ट, सवन, मेधातिथि, वीतिहोत्र और कवि। (२) सूर्य (३) शिव।

हिरण्यरोमा–दाक्षिणात्य देशों के अधिपति एक विदर्भ राजा।

हिरण्य वर्मा–दशार्ण देश के राजा। उनकी कन्या का विवाह पाञ्चाल राजकुमार शिखण्डि से हुआ था।

हिरण्यशृङ्ग–कैलास पर्वत के उत्तर में स्थित एक पर्वत। यहां रत्नों की खानें हैं।

हिरण्यहस्त–एक महर्षि, राजा मदिराश्व की पुत्री इनकी पत्नी थी।

हिरण्याक्ष–कश्यप प्रजापति और दिति का एक पुत्र, हिरण्यकशिपु का भाई। ब्रह्मा से वर प्राप्त कर यह अत्यन्त बलशाली, पराक्रमी वीर बना। अपने अनुयोग्य शत्रु की खोज में घूमते इसने भूमि देवी को समुद्र के अन्दर छिपा लिया। वरुण ने कहा कि तुम्हारे बराबर के शत्रु महाविष्णु है। वे तुम्हारे दर्प को चूर्ण करेंगे। मनु ने जन्म के बाद प्रजा सृष्टि के लिये ब्रह्मा से स्थल मांगा। पृथ्वी को जल में निमग्न जानकर वे कुपित हुए और उनके नासा द्वार से एक कीकट निकला यही वराह मूर्ति थे। वराह मूर्ति भगवान की जलान्दर भाग में भूमि का उद्धार करके आते समय हिरण्याक्ष से भेंट हुई। उन दोनों में घोर युद्ध हुआ और भगवान ने हिरण्याक्ष का वध किया। (दे: हिरण्याक्ष वराहवतार)

हिल्वला–मृगसिरा नक्षत्र के सिर के पास पांच छोटे तारे।

हीन–सोम वंश के राजा अनेन के वंशज सहदेव के पुत्र । इनके पुत्र जयसेन थे ।
हीर–(१) सिंह (२) इन्द्र का वज्र ।
हुण्ड–विप्रचित्ति का पुत्र एक राक्षस ।
हुत–(१) आहुति (२) शिव का नाम ।
हुताशन–अग्नि ।
हुहु–एक गन्धर्व ।
हूण–असभ्य या जंगलि जाति के लोग ।
हूहू–कश्यप ऋषि और प्राधा का पुत्र एक गन्धर्व ।
हृदयग्रन्थि–'मैं' और 'मेरे' की कल्पित गाँठ जो जीव को वार-वार संसार में जन्म लेने को विवश करती है । भगवान की एकाग्र भक्ति से आराधना करने से यह ग्रन्थि टूट जाती है ।
हृदयस्था–हृदय मे स्थित देवी या हृदय जगत का बीज है, इसलिये उसमें जगत रूप में स्थित देवीं ।
हृदीक–यदुवंश के राजा स्वयंभोज के पुत्र । देवबाहु, शतधन्वा, और कृतवर्मा इनके पुत्र थे ।
हृद्य–(१) रुचिर, प्रिय (२) एक महर्षि ।
हृद्या-(१) मुनियों के हृदय में सदा विराजमान देवी (२) रमणीय रूपा देवी ।
हृद्पुण्डरीक–हृदय एक कमल है, वह शरीर के अन्दर इस प्रकार स्थित है । मानो उसकी डण्डी तो ऊपर की ओर है और मुँह नीचे की ओर है । मुमुक्षु पुरुष को ऐसा ध्यान करना चाहिए कि उसका मुख ऊपर की ओर खिल जाय । उसके आठ दल (पंखुड़ियाँ) हैं, और उनके बीचों बीच पीली-पीली अत्यन्त सुकुमार कर्णिका है । कर्णिका पर क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का ध्यान करना चाहिए । तत्पश्चात् अग्नि के अन्दर भगवान के स्वरूप का स्मरण करना चाहिए ।
हृषीक–ज्ञानेन्द्रिय ।
हृषीकेश–महाविष्णु का विशेषण ।
हृति–(१) एक असुर (२) सूर्य की किरण ।
हेतु–संसार के निमित्त और उपादान कारण भगवान ।
हेम–अनु के वंशज रुशद्रथ के पुत्र, इनके पुत्र सुतपा थे ।
हेमकूट–इलाव्रत का एक प्रमुख पर्वत । निषद, हेमकूट और हिमालय पूर्व से पश्चिम को फैलकर हरिवर्ष किम्पुरुष और वर्ष भारत वर्ष की सीमा बनाते हैं ।
हेमगान्धिनी–रेणुका नामक गन्ध द्रव्य ।
हेमगिरि–सुमेरु पर्वत ।
हेमगुह–एक नाग ।
हेमज्वाला–अग्नि ।
हेमनेत्र–एक यक्ष ।
हेमपुष्प–अशोक वृक्ष ।
हेमन्त–छः ऋतुओं में से एक, मार्गशीर्ष और पौष के दो महीने ।
हेममालि–(१) सूर्य (२) कुबेर का मालि । यह कुबेर के शाप से कुष्ट रोगी बन कर अठारह साल पीड़ित रहा । उसके बाद हेमाद्रि में मार्कण्डेय मुनि के आदेश से आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का व्रत रख कर कुष्ट से और पाप से भी मुक्त हो गया ।(२) द्रुपद महाराजा के एक पुत्र जो अश्वत्थामा से मारे गये ।
हेमरथ–सूर्यवंश के राजा क्षेपापि के पुत्र । इनके पुत्र सत्यरथ थे ।
हेरम्ब–गणेश का नाम ।
हेरम्बक–दक्षिण भारत का एक जनपद ।
हेहय–एक वंश के लोग ।
हैमवत–हिमालय प्रान्तों का एक पुण्य देश ।
हैमवती–(१) श्रीपार्वती का नाम (२) विश्वामित्र की पत्नी (३) एक प्रकार की औषधि ।
हैहय–(१) शर्याति के वंशज एक राजा (२) एक देश और उसके निवासियों का नाम (३) कार्तवीरार्जुन जिसकी एक हजार भुजाएँ थीं

और जिसका वघ परशुराम ने किया था।

होता-(१) यज्ञ के चार कर्मचारियों में से एक-होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा (२) यज्ञकर्ता, यजमान।

होत्र-(१) हवन में आहुति दी जाने वाली सामग्रि (२)राजा पुरुरवा के वंशज काञ्चन के पुत्र, इनके पुत्र जन्हु थे।

होत्रा-यज्ञ।

होत्रीय-देवों को उद्देश्य करके आहुति देने वाले ऋत्विक।

होम-(१) देवयज्ञ (२) यज्ञाग्नि में घी की आहुति देना। (३) भरत वंश के कुशद्रथ के पुत्र, इनके पुत्र सुतपा थे।

होमकुण्ड-होम करने का कुण्ड, हवन कुण्ड, यह जमीन पर वनाया जा सकता है या ताम्बे का वनाया हुआ होता है।

होमर-ग्रीक साहित्य के वड़े प्रसिद्ध कवि।

होरा-(१) एक प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ (२) राशि का उदय।

होलिका-(१) होलि, वसन्त ऋतु में मनाया जाने वाला एक उत्सव, फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होलि मनायी जाती है। एक दूसरे पर गुलाल और अन्य रंग डाल कर स्त्री पुरुष, वालक-वालिकायें खेलते हैं। (२) एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की वहन है।

ह्रस्वरोमा-जनक वंश के राजा स्वर्गरोमा के पुत्र। इनके पुत्र सीता देवी के पिता सीरध्वज थे।

ह्लादिनी-एक नदी।

ह्लाद-हिरण्य कशिपु का एक पुत्र। ह्लाद की पत्नी धमनी थी और इनके वातापि और इल्वल नाम के दो पुत्र हुए। इसी इल्वल ने वातापि को शश के रूप में ब्राह्मणों को खिलाकर उनको मारा था, अगस्त्य महर्षि ने इसको मारा।

ह्लीङ्कारी-(१) लज्जा को पैदा करने वाली देवी। (२) सृष्टि, स्थिति और संहार करने वाली देवी। (३) ह्लीङ्कार वीज स्वरूपिणी अर्थात् भुवनेश्वरी देवी।

ह्लीमती—लज्जायुक्त देवी।

क्ष

क्षण-निमिष।

क्षण भंगुर-नश्वर, क्षण भर में नष्ट होने वाला जैसा संसार।

क्षत्रदेव-शिखण्डि का पुत्र जो वड़ा वीर योद्धा था।

क्षत्रधर्म-धृष्टद्युम्न का पुत्र जो भारत युद्ध में द्रोणाचार्य से मारा गया।

क्षत्रवृद्ध-महाराजा पुरुरवा के पुत्र, आयु के पुत्र थे। इनके पुत्र सुहोत्र थे।

क्षत्रिय-हिन्दुओं के चार वर्णों में से दूसरे वर्ण के लोग।

क्षपणक-एक वौद्ध भिक्षु।

क्षम-समस्त कार्यों में समर्थ भगवान विष्णु।

क्षमा-(१) प्रजापति पुलह की पत्नी, कर्दम प्रजापति और देवहूति की पुत्री (२) सहिष्णुता (३) पृथ्वी (४) दुर्गा।

क्षयिष्णु-नश्वर संसार का विशेषण।

क्षर-नश्वर संसार में नाशवान (क्षर), और अविनाशी (अक्षर) ये दो प्रकार के, पुरुष हैं सम्पूर्ण भूत प्राणियों के शरीर नाशवान और उनमें विराजमान जीवात्मा अविनाशी है।

क्षारोद-जम्बू द्वीप को घेर कर उतना ही चौड़ा

(४००,००० मील) क्षारोद या लवण सागर। इस सागर को घेर कर इससे दुगुना चौड़ा प्लक्षद्वीप है।

क्षिप्रप्रसादी–शिव का विशेषण।

क्षीणचन्द्र–कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा।

क्षीण पुण्य–जिसने अपने पुण्य कर्मों का फल भोग चुका है।

क्षीरज–चन्द्रमा, अमृत, ऐरावत, उच्चैश्रवा आदि।

क्षीरतनया–लक्ष्मी का विशेषण।

क्षीरद्रुम–अश्वत्थ वृक्ष।

क्षीरनिधि–क्षीर सागर।

क्षीरोद–क्षीर सागर, क्रौंच द्वीप को चारों ओर से वेष्टित उतना ही चौड़ा (१,२८,००,००० मील) क्षीर सागर है। इसको घेर कर इससे दुगुना चौड़ा शाकद्वीप है।

क्षुत्क्षामा–श्रीकृष्ण के सहपाठी, मित्र, अनन्य भक्त सुदामा की साध्वी पत्नी। इसका वास्तविक नाम सुशीला था, किन्तु दारिद्र के कारण कृश और क्षीण रहने से क्षुत्क्षामा नाम पड़ा।

क्षुद्रक–इक्ष्वाकु वंश के अन्तिम राजाओं में प्रसेनजित के पुत्र। इनके पुत्र रणक थे।

क्षेत्र–(१) मन्दिर जहाँ देवताओं की प्रतिष्ठा कर पूजा की जाती है। भारत में अनेक प्रसिद्ध क्षेत्र हैं जहां असंख्य भक्तजन इकट्ठे होकर देव की पूजा करते हैं। (२) खेत (३) शरीर जैसे खेत में बोये हुए बीजों का उनके अनुरूप फल समय पर प्रकट होता है। वैसे ही इस शरीर में बोये हुए कर्म-संस्कार रूप बीजों का फल भी समय पर प्रकट होता रहता है। इसलिये इसे क्षेत्र कहते हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिक्षण इसका क्षय होता रहता है, इसलिये भी इसे क्षेत्र कहते हैं।

क्षेत्रपाल–शिव का विशेषण। गाँवों और नगरों की रक्षा के लिये क्षेत्रपाल की प्रतिष्ठा होती है। इनका आयुध शूल है, तीन आँखें हैं।

क्षेमक–[१] एक नाग [२] एक राक्षस।

क्षेमगिरि–भद्रकाली का एक नाम।

क्षेमदर्शी–कौसल देश के एक राजा।

क्षेमधन्वा–कौरवों का मित्र एक वीर योद्धा।

क्षेमधि–जनक वंश के राजा चित्ररथ के पुत्र। इनके पुत्र समर्थ थे।

क्षेमवृद्धि–साल्व राजा के मन्त्री।

क्षोणी–पृथ्वी।

क्ष्मा–पृथ्वी।

क्ष्मापति–राजा।

—(:o:)—